श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-रामायण ।

प्रस्तावना

इस समय इस भारतवर्षमें श्रीमत् परमपूज्य श्री गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायणके समान भाषामें और कोई ऐसी मनोहारिणी कविता नहीं है कि, जिसके पाठ करनेसे बालकोंसे लेकर वृद्धपर्यन्त अपनी २ ज्ञानशक्तिके अनुसार आनंद प्राप्त करते हैं. और यह कैसे चमत्कारकी बात है कि, जितना २ अभ्यास इस पुस्तकमें करतेजाओ उतनाहीं नवीन अलौकिक आशय प्रतीत होताजाता है. वास्तवमें इस पुस्तकमें चार वेद, छैः शास्त्र, अठारह पुराणोंका आशय कहीं कहीं गोस्वामीजीने यथावत् झलकाया है. जिसको कि, बुद्धिमान् लोग यथावत् जान सक्ते हैं. और कहीं कहीं ऐसे गूढ आशय कहे हैं कि, जिनका विचार अत्यन्त सूक्ष्मदृष्टिसे हो सक्ता है और बहुतसे महात्माओंने इसका टीकाभी किया है और क्षेपक कथाभी मिलाई हैं परंतु क्षेपक कथाओंके न्यूनाधिक होनेसे पढनेवालोंकी बुद्धि संशययुक्त रहती है मैंनेभी इस ग्रन्थमें बाल्यावस्थासे परिश्रमकिया है और बहुतसी प्राचीन लेखकी तथा यंत्रोंकी छपी पुस्तकें संग्रह की हैं, किन्तु बहुधा पाठभेद तो सबमें पाया जाता है इस समय श्रीयुत वैश्यकुलकमलदिवाकर सद्गुणाकर गुणिगणमंडलीमंडन श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज ने इस पुस्तकके शोधने तथा कठिन कठिन स्थलोंके टीका करनेकी आज्ञा दी. मैं ने उसे अंगीकारकर शोधकर इस मनोहारिणी कथाके श्लोकार्थ गूढार्थ स्तुत्यर्थ शंका समाधान और सम्पूर्ण इतिहास यथाक्रम मिश्रित करदिये हैं और क्षेपक कथायें "वाल्मीकि, बृहद्रामायण, अग्निवेशकृत रामायण, अवधखण्ड, सत्योपाख्यान, हनुमन्नाटक" आदि संस्कृत ग्रंथोंसे आशय लेकर लिखी हैं. यह तो देखनेहीसे विदित हो जायगा कि, क्षेपक कथा इस्से अधिक किसी पुस्तकमें अबपर्यन्त नहीं लिखीगई. और कठिन कठिन स्थलोंका तिलक भी ऐसा स्पष्ट करदिया है कि, सरलतासे पाठक गण जिसको समझ सकेंगे. यदि इस ग्रंथके पढनेसे पाठक गणोंको कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल जानूंगा ॥

क्षेपक कथाओंके नाम ।

वंशोत्पत्ति, हनुमानजीका जन्मचरित्र, रावणका श्वेतद्वीपमें मानमर्दनहोना, विश्वावसुका गान, विराध वध, सुग्रीव और वालिका जन्मचरित्र, ताल वृक्षकी कथा, हनुमानजीका चारों दिशाओंमें बंदरोंको बुलाने जाना, गज गवाक्षका सीताकी खोजमें फिरना, बंदरोंका समुद्र उल्लंघन विषय अपनी अपनी उडानशक्तिवर्णन, कुंभकर्णका स्वरूपवर्णन, लंकादहन विषे पुरकी व्यवस्था, शुकसारनको रावणप्रति बंदरोंका कटक दिखलाना व बलवर्णन, सुलोचनाका सती होना, अहिरावणका जन्मचरित्र तथा राम लक्ष्मणको हर लेजाना, तथा हनुमानजीकरके उसका वध, नरांतकके जन्मकी उत्पत्ति, तथा संग्राम और दधिमुखकरके उसका वध, विद्युन्मतीका सती होना, सिवाय इसके संस्कृतके कठिन कठिन शब्दोंकी टिप्पणी भी पण्डित कृष्णबिहारी शुक्ल बदर्का निवासीने अत्यंत सरल प्राकृत भाषामें किया है. संख्या टिप्पणी काण्ड काण्डकी निम्न लिखित हैं ॥ बालकाण्ड १२५६ अयोध्याकाण्ड ७२० आरण्यकाण्ड १८७ किष्किन्धाकाण्ड १०७ सुंदरकाण्ड ११ लंकाकाण्ड ७१९ उत्तरकाण्ड ६००सम्पूर्ण ३८००

जो जो विषय प्रसंगवशसे इसमें अधिक किये गये हैं वे संक्षेपसे लिखेजाते हैं.

१ बालकाण्डमें—प्रथम श्लोकसे मानससरोवरपर्यन्त तिलक, रावणका जन्म, विवाह, पिताके निकट कुबेरका अधिक सन्मान देखकर उससे पुष्पक-विमानका छीनना, इंद्रसे युद्ध, राजा बलिके यहाँ रावणका जाना और कनककशिपुके कवच न उठनेसे लज्जित होना और शिवकी तपस्या करना अहिरावणका जन्म, पाताललोकमें अहिरावणका जाना, तपस्याकर काम-दादेवीको प्रसन्नकर राज्य पाना, रावणका राजा दिलीपके पास बल देखनेको जाना और उनका प्रभाव देख घरको भागना, दिलीपका बाण छोडना, मन्दोदरीकी स्तुति करनेपर बाणका निवृत्त होना, फिर रघु, अज दशरथसे हारकर, तपस्याकर, यह वरदान माँगना कि, "दशरथके वीर्यसे कोई पुत्र नहो" फिर कौशल्याको पिताके यहाँसे चुरा लाना, समुद्रमें राघव मच्छको सौंपना, ब्रह्माका रावणका रूप धर कौशल्याको राघव मच्छसे लाना, मार्गमें

धर देना, सुमंत्रका देखना, उसके पिताके पास पहुँचाना, दशरथसे व्याह करना, जानकीका जन्म, जनकको तपस्या करके धनुष पाना और जानकीका उसे उठाना, जनककी प्रतिज्ञा, ब्रह्मस्तुतिका अर्थ, गर्भस्तुतिका तिलक, रामचन्द्रका वानरके अर्थ मचलना, महावीरका बुलाना, रामजीका पतंग उड़ाना, जयन्तकी स्त्रीका पकडना, दर्शनोंकी प्रतिज्ञापर छोडना, महावीरका गमन और इतिहास जो चौपाइयोंमें है उनका सविस्तर वर्णन किया गया है इतनी कथायें बालकाण्डमें और और रामायणोंसे संग्रह की गई हैं गंगादि कथा तो पहलेहीसे विद्यमान थीं ॥

२ अयोध्याकाण्डमें–प्रथम श्लोकार्थ, विश्वावसु गंधर्वका कैकेयीके पास आनकर गाना, कैकेयीका उसे अपने यहाँ रहनेको कहना, इन्द्रका इसपर बुरा मानना और सरस्वतीको भेज कैकेयीके शिर कलंक लगवाना, सरवनकी कथा और जो इतिहास इस काण्डमें अधिकतासे आये हैं उनको भारत भागवतादि ग्रन्थोंसे निकाल कर स्पष्टरीतिसे लिखदिया है इतनी अयोध्याकाण्डमें अधिकता कीगई है ॥

३ आरण्यकाण्डमें–श्लोकार्थ, रामचन्द्रके पास जयन्तकी स्त्रीका आना भक्तिवरदान पाकर जाना और जयन्तका इस बातसे रिसाना, अत्रिकृत स्तुतिका अर्थ, सुतीक्ष्णकृत स्तुतिका अर्थ, जटायुकृत स्तुतिका अर्थ, कबन्धका वृत्तान्तादि विषय सविस्तर वर्णन किये हैं ॥

४ किष्किन्धाकाण्डमें–श्लोकार्थ, वालि सुग्रीवका जन्म, वालि,सुग्रीवका विरोध, वालिको मतंग ऋषिका शाप, ताडकी कथा, वालिका वध, रामका प्रवर्षणपर वास, रामका रोष, कपिका त्रास,सुग्रीवका दूतोंको वानरोंके बुलानेको भेजना, सर्व दिशाओंसे वानरोंका आना, उन स्थानोंके नाम, तथा सब वानरोंको पृथक् पृथक् जानकीके ढूंढनेको भेजना, महावीरादिका बिलमें प्रवेश, बिलस्थ स्त्रीका वृत्तान्त, सम्पातीका अपने पुत्र रावणको पकडनेका वृत्तान्त कहना, महावीरका जन्म, सब वानरोंका बल कथन करना इत्यादि अधिक विषय वर्णन किये गये हैं यह काण्ड तो ऐसा आजतक छपा ही नहीं.

५ सुन्दरकाण्डमें-श्लोकार्थ, लंकापुरी जलानेका वृत्तान्त, रावणका यमराज तथा मेघोंको हनुमान्‌जीको मारने तथा लंका बुझानेको भेजना हनुमान्‌जीका यमराजको गालमें धरना, देवताओंकी विनयपर यमराजको छोडना इत्यादि प्रसंग अधिक लिखेगये हैं ॥

६ लङ्काकाण्डमें-श्लोकार्थ, शुकका सैन्य दिखाना, महावीरका बलकथन कर ओषधीको लाना, मकरीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त, शापमोचन, हनुमान्‌का भरतसे मिलना तथा कौशल्या सुमित्रासे लक्ष्मणका वृत्तान्त कहना, और उनका दुःखित होना, सुलोचना सती, अहिरावण नरान्तकका माराजाना रावणके युद्धके दिनोंकी संख्या, शिव ब्रह्मा इन्द्रकृत स्तुतियोंके अर्थ, इतने विषय इसकाण्डमें अधिक वर्णन किये गये हैं ॥

७ उत्तरकाण्डमें-श्लोकार्थ, महावीरको हारप्रदान, महावीरका उसमें रामनाम नहीं लिखित होनेसे मणियोंको तोडना, अपने शरीरके भीतर रामनामांकित अस्थियोंका दिखाना, वेदस्तुति तथा ब्राह्मणकृत शिव स्तुतियोंके अर्थ, इतने विषय इसमें प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार अधिक वर्णन किये गये हैं ।

अबकी बार पंचमावृत्तिमें एक अत्युत्तम सूर्यवंशका वृक्ष (वंशावली) और एक श्रीहनुमान्‌जीका सुन्दर चित्र विशेष लगाया है ॥

यह पुस्तक भारतके रसिक ग्राहकोंको सर्वोपरि प्रियहुई है इससे यह आवृत्तिसे लगाकर द्वादश आवृत्ति तक लक्षों पुस्तक ग्राहकोंने हाथों हाथ लगाली अब यह त्रयोदशावृत्ति और भी शुद्धता पूर्वक छपी है.

इति प्रस्तावना समाप्ता ।

दोहा-राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा विस्तार ॥
सुनि आश्चर्य न मानिहैं, जिनके विमल विचार ॥

संशोधक-पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष-बंबई.

श्रीजानकीवल्लभोजयति ।

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीका-

जीवनचरित्र.

दोहा—वेङ्कटेशपदपद्म नमि, उरधर तुलसीदास ॥
जन्मचरित वर्णन करूं, सुनतहोत दुखनाश ॥ १ ॥

सोरठा—वंदौंसीताराम, विमलचारुपदकमलयुग ॥ जेहिप्रभावत्रैधाम, पूरिततुलसीकेचरित ॥ १ ॥ जगतभयोनहिं कोय, गोस्वामीतुलसीसरिस ॥ दियोअधर्महिखोय, रामायणरचिसुरसरी ॥ २ ॥ आदिअंतलगितासु, तुलसीदासचरित्रको ॥ रसनाकरनविकासु, मेरेशक्तिकछूनहीं ॥ ३ ॥ पैविंशतिइतिहास, प्रियादासनाभाकथित ॥ सतमुखकछुकप्रकाश, तौनरीतिवर्णनकरौं ॥ ४ ॥

चौ०राजापुरयमुनाकेतीरा । तुलसीतहाँबसैमतिधीरा ॥ पंडितसकलशास्त्रविज्ञाता । विद्यामेंविश्वासअघाता ॥ भोविवाहआईजबनारी । तासोंअतिशयनेहपसारी ॥ आयोतियहिलेवावनभाई । करीनतुलसीतियाहिबिदाई ॥ नैहरहितिरियाविरझानी । तदपिनकह्योतासुकछुमानी । आयगयेकछुकाजबजारा । तबभाईलैभगिनिसिधारा ॥ आयेपुनितुलसीजबगेहू । विकलभयेतियविनवशनेहू ॥ वर्षनलगोमेहअधराता । बाढयोयमुनप्रवाहअघाता ॥ भैविभावरीभूरिअँधेरी । करहुपसारेपरतनहेरी ॥ अर्द्धरात्रितेहिकामसतायो । चल्योश्वशुरगृहतियमनलायो । बढयोयमुनकरबडोप्रवाहा । पैरिपन्योनहिंभैतुरमाहा ॥ अर्द्धनिशागोश्वशुरदुवारा । लगेरहैंचहुँवोरकेवारा ॥

दोहा—गयोपछीतीचढनहित, झूलतरहै भुजंग ॥
ताहिपकरिऊपरगयो, रँग्योकामकेरंग ॥ २ ॥

चौ०जायनारिढिगदियोजगाई । भ्रथमैंरहीनारिचौआई । चीन्हिबहुरिशंकाअतिकीन्ही ॥ गिराबाणसमसोहनिदीन्ही ॥ धिगधिगधिगतोहिंप्राणपियारे । चामहाडअतिनिरतहमारे ॥ ऐसोमनजोलागतरामै । तौसुधरततिहरेसबकामै ॥ नारिवैनशरसमउरलागे । पूरवसकलपुण्यफलजागे ॥ तुलसिदासकहमानिगलानी ॥

हँसतिहँसतितियतुववानी ॥ बहुरेतुरतभूकक्कीनाई । गेकाशीतजिभवनगोसाईं ॥ विनतीकियविश्वेश्वरपाहीं। रामभक्तिदीजेमोहिंकाहीं ॥ शूकरक्षेत्रगयोपुनिसोई। गुरुकियोतहँअतिमुदमोई ॥ गुरुकोअतिसेवनतहँठायो । रामायणअध्यात्महि पायो ॥ तुलसिदासआयेपुनिकाशी । भेअनन्यरघुनाथउपासी । भजनकरतबीत्योबहुकाला । भेप्रसन्नतापरशशिभाला ॥

दोहा–रामायणजहँहोयतहँ, सुननहेतुनितजाय ॥
कथासमापतह्वैगये, तहाँनपुनिठहराय ॥ ३ ॥

चौ०नहिरभूमिहितदूरिहिजाहीं ॥ लियेकमंडलुयककरमाहीं ॥ शौचक्रियाकरवचैजोनीरा। वदरीतरुडारैमतिधीरा। रहेएकतेहिप्रेतपुराने । अशुचिनीरलहिसोसुखमाने॥ यहिविधिवीतिगयोकछुकाला। यकदिनबोल्योप्रेतकराला ॥ तोपरअहौंप्रसन्नगोसाँई। मांगैअबअपनीमनभाई ॥ तबसुनितुलसिदासकहबानी। अहोकौनतुमपरैनजानी॥ सोसाप्येजानहुमोहिंप्रेता। यहिवदरीतरुमोरनिकेता॥ यहिपरजौनसलिलतुमडाऱ्यो। मैंनिजसेवताहिविचाऱ्यो ॥ तुलसीदासकहातुमप्रेता । प्रेतकहाअनुजनकहँदेता ॥ जाननचहौंजोममनकेरी । तौगुनियेंमैंकहौंनिवेरी॥ जोरघुवीरदरशमैंपाऊँ। जियतअयंततोरयशगाऊँ॥ औरकछूमेरेनाहिंआशा । कह्योप्रेततवभरोहुलासा ॥

दोहा–रामदरशकरवाथलो, मोरजोरकछुनाहिं ॥
पैसहायहितकछुकहौं, यहउपायतुमकाहिं ॥ ४ ॥

चौ०जहँरामायणसुननसिधारो । सबकेपाछेजाहिनिहारो ॥ अतिनिरधनीदुखीअतिदीना । पूरितरोगनयनतेहीना ॥ उठैसकलश्रोतनकेपाछे । मंदचलतचिरकुटकटिकाछे॥ सोहैसांचोपवनकुमारा । तेहिरामायणसुनवअहारा॥ नेमपवनसुतअसनितधरहीं। श्रवणसदारामायणकरहीं॥ मिलैतुम्हैंकानहूउपाई। रामदरशकीकरैंसहाई॥ प्रेतवचनसुनितुलसीदासा। उरमेंउमँग्योअमितहुलासा ॥ ताहिगुरुसुणिभवनसिधारे। कथासुननहिततुरतपधारे । कथासुनततहँलख्योप्रवीना । अतिकुरूपतनुछामलीना । दूरीबैठोआँधरऐसो । नैनोलख्योप्रेतकहँजैसो ॥ ह्वैगइकथासमापतजवहीं । श्रोताचलेभवनकहँतबहीं ॥ रहेपारकछुबैठगोसाईं । चल्योपवनसुतजडकीनाईं ॥

दोहा–तुलसिदासएकांतलहि, दौरिगह्योपदजाय ॥

छाँडुछाँडुमोहिंमातिछुवै, सोअसकह्योसुनाय ॥ ५ ॥

चौ०—तुलसीकह्योछुटननपैहो । लेहौप्राणदरशकीदैहो ॥ कियोछोड़ावन विविधउपाई । चपरिगह्योतुलसीबरियाई ॥ प्रेमप्रसन्नतबपवनकुमारा । माँगुमाँगुअसवचनउच्चारा ॥ तुलसिदासकहरूपदेखावहु । मेरेशीशपाणिनिजलावहु ॥ मेरेऔरकछूनहिंआसा । होनचहौंरघुपतिकरदासा ॥ रामदरशमोहिंदेहुकराई । तुमसमर्थसबविधिकपिराई ॥ तबमारुतनिजरूपदेखायो । तुलसिदासकहँवचनसुनायो ॥ चित्रकूटकहँचलहुप्रवीना । पैहौरामदरशसुखभीना ॥ असकहिकपिनिजरूपदुरायो । तुलसिदासनिजआश्रमआयो । कछुदिनमेंमनमहँअसभयऊ । अबैनशिवदर्शनह्वैगयऊ ॥ गयोविश्वेश्वरनाथमंदिरै । लखनरूपचहचूडचंदिरै ॥ पैनहिंदरशनदियोपुरारी । तुलसिदासतजिआशासिधारी ॥

दोहा—चित्रकूटकहँचढ़चल्यो, पुरकेबाहिरआइ ॥
● मिल्योयेकमहिसुरतहाँ, बोल्योवचनबोलाइ ॥ ६ ॥

चौ०—काशीछोड़िअनतमतिजाहू । इततेगयेनतोरनिबाहू । तुलसिदासकह कियसेवकाई । प्रेमप्रसन्ननहिंशंभुगोसाँई ॥ सोकहसत्यशंभुमैंअहहूं । काशीछोड़िअनतनहिंरहहू ॥ असकहिहरनिजरूपदेखायो । तुलसिदासचरणनशिरनायो । बहुरिवचनबोल्योकृतिवासा । चित्रकूटचलुतुलसीदासा ॥ कह्योपवनसुतहैसतसोई । रामदरशपैहैमुदमोई । रचिहैरामायणसुखश्रेणी । अधमउधारनयथात्रिवेनी । तुलसिदासतबभयोनिहाला । चल्योचित्रकूटहितेहिकाला ॥ शंकरअपनोरूपछिपायो । तुलसीचित्रकूटकहँआयो ॥ फटिकशिलापरबैठेजाई । राम लषणलालसाबढ़ाई ॥ ताहीसमयतुरंगसँवारे । कढ़ेशिकारीद्वैधनुडारे ॥ रपटत मृगनशरनकहँमारे । हरितवसनसुंदरतनुधारे ॥

दोहा—जानिशिकारीभूपसुत, रामरामकहिवैन ॥
तुलसिदासपछितायके, मूँदिलियेदोउनैन ॥ ७ ॥

चौ० निकसिगयेजबयुगलसवारा । आयकह्योतबपवनकुमारा ॥ प्रभुदर्शनपायोकीनाहीं ॥ दोऊरामलषणतेआहीं ॥ तुलसिदासकहजानिशिकारी । हाय नयनमैंलियोनिहारी ॥ अबैनपूरभईअभिलाषा । जैसोपवनतनयतुमभाषा ॥ तबहनुमानकह्योअसवानी । रामघाटचलुकाल्हिविज्ञानी ॥ भोरभयेतबतुलसीदासा । रामघाटगोभरोहुलासा ॥ गारनलग्योन्हायतहँचंदन । आयगयेदोउदशरथनंदन ॥ कह्योदेउचंदनमोहिंबाबा । तुलसिदासतबसहजहिगावा ॥ चंदन

देखुचरन्हिअँगमाहीं ॥ रामलषणतुमहोकीनाहीं ॥ बालककहेसाधुजगजेते । रामलषणकीमूरतितेते ॥ देचंदनदोउबालसिधारे । पाछेपवनकुमारपधारे ॥ बोलेपावनदरशतुमपाये । तुलसिदासयहदोहागाये ॥

दोहा-चित्रकूटके घाटमें, भै साधुनकी भीर ॥
तुलसिदासप्रभुचंदनगारे, तिलककरेरघुबीर ॥ ८ ॥
बहुरिकह्योकरजोरिकै, सुनियेपवनकुमार ॥
देखौचारौबंधुको, सहितराजसंभार ॥ ९ ॥

चौ०-पवनतनयकहकलियुगमाहीं । असदरशनहोतेकहुँनाहीं । तुलसिदासकहछुपातिहारी ॥ मोहिंनअचरजपरतनिहारी । कहकपीशक्रायतासिधारी । देहुकाल्हिरामवरधारी । असकहिकपिअंतर्हितभयऊ । भोरहोततुलसीतहँगयऊ ॥ दैख्योयुगलपहरपरयंता । आयोदरशदेनसियकंता ॥ घनदविशारहिधूरिनुपूरी । भोप्रकाशदशआसहुपूरी ॥ अगणितमत्तमतंगतुरंगा । सोतहँविविधभाँतिरथसंगा ॥ बोलतवहुनकीचगणसोरा । याकोकोशलकंतकिशोरा ॥ रथसवारप्रभुचारिकुमाई । करतपवनसुतपदसेवकाई ॥ तुलसिदासतवआरतिसाजा । लख्योनयनधरिरघुकुलराजा । देपरदक्षिणविह्वलभयऊ । रघुपतिकरपंकजशिरदयऊ ॥ यहिविधिप्रभुदरशतनपायो । औरनकोनहिंभेदलखायो ॥

दोहा-यहिविधितुलसीदासप्रभु, श्रीहनुमानसहाय ॥
रामदरशपायोप्रगट, रह्योसुयशजगछाय ॥ १० ॥
रामउपासकअतिअचल, नाशकजगजनत्रास ॥
कियेहुलासीवासकिय, काशीतुलसीदास ॥ ११ ॥
भगव्योमहामहत्वतहँ, जुरैरोजजनभीर ॥
पच्योरहैचरणननृपति, आवैंवुधअतिधीर ॥ १२ ॥

चौ०-कछुदिनकियकाशीमहँवासा । गयेअवधपुरतुलसीदासा ॥ तहँअनेककीन्हींसतसंगा । निशिदिनरँगेरामरतिरंगा ॥ सुखदरामनौमीजबआई । चैतमासअतिआनँदपाई ॥ संवतसोरहसैयकतीसा । सादरसुमिरिजानुकुलईसा ॥ दासरथौमसुखितचितचायन । कियअरंभतुलसीरामायन ॥ बालकांडतहँपूरणकरिकै । आयेपुनिकाशीसुखभरिकै । विनयआदिगीतावलिग्रंथा । रचेरुचिरसूचकसुपंथा ॥ वाराणसीवस्योसुखछायो । एकप्रबलपंडिततबआयो ॥ काशीजी-

तनकोमनकीन्हे । बजवावतदुंदुभीप्रवीने ॥ काशिराजतबसभाबोलायो ॥ सब पंडितनसमाजकरायो ॥ तबजोकाशीजीतनआयो । सोपंडितअसवचनसुनायो॥ येकमुख्यसनमेंकरिदीजै । हारजीतताकेशिरकीजै ॥

दोहा–पंडितकोअसबैनसुनि, कासीवासीविप्र ॥
मानिमहाभ्रमचित्तमें, कहेवचनअतिछिप्र ॥ १३ ॥

चौ०–उत्तरदेबकाल्हियहिकेरो । असकहिगेद्विजनिजनिजडेरो । कियोधरनवि श्वेश्वरअयना । मर्यादातुवहाथत्रिनयना ॥ रातिस्वप्नशंकरअसभाषो । तुलसी-शीशअजयजयराषो ॥ पंडितमुदितभूपगृहआये । सोपंडितसूँवचनसुनाये॥तुल-सिदाससबमाहिंप्रधानो । जयहुपराजैतेहिंशिरआनो ॥ भूपकह्योकिमिसकैंबो-लाई । तुलसिदासगृहचलोसिधाई ॥ यहसुनिलैपंडितनसमाजा । आयोतुलसि-दासगृहराजा ॥ सबनिकियेसत्कारगोसाई। येकशिष्यकोकह्योबोलाई॥ ये तां-बूलपाँचलैजाहू । देहुमुदितपंडितसबकाहू ॥ शिष्यतुरततांबूलहिबाँटा । बचे-पाँचकोहुपन्योनघाटा ॥ यहप्रभुतालखिपंडितसोई ॥ वादकरनकीआश्रय खोई ॥ तुलसिदासपंडितहिबोलाई । देरामायणकह्योबुझाई ॥

दोहा–खंडन मंडन पक्ष जो, सो देखहु यहि माहिं ॥
जो न होय तौ आइइत, वादकरहु हमपाहिं ॥ १४ ॥

चौपाई–पंडितरामायणलैलीन्हों । डेराचलिअवलोकनकीन्हों ॥ सम्मत शास्त्रपुराणनकेरो । रामायणमहँपंडितहेरो ॥ जौनपक्षपंडितमनभयऊ । समा-धानतेहिमहँमिलिगयऊ ॥ जोश्लोकवंदनामाहीं । ताकीहानिभईकछुनाहीं ॥

श्लोक–नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्यतोपि। स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबद्धमतिमंजुलमातनोति १॥

चौ०–पंडितगृहपरिक्रमादयऊ । तुलसिदासपदरजशिरधरयऊ ॥ निजअपराधहिक्षमाकरायो । सभामध्यश्लोकसुनायो ॥

श्लोक–आनंदकाननेकोपितुलसीजंगमस्तरुः ॥
यत्काव्यमंजरीभावाद्रामभ्रमरभूषितः ॥ २ ॥

चौ०–तुलसीशिष्यभयोपुनिसोई । अरप्योसकलवस्तुबहुतोई ॥ रामभक्ति कोकरिउपदेशा ॥ गयोगर्वतजिकौशलदेशा ॥ पुनिचेटकीएकतहँआयो । यक्ष यक्षिणीसिद्धिकरिल्यायो ॥ तेहिबलसबथलनगरपुजायो । महामहत्वजननसों

पायो । यकवैष्णवकोउगयोसकामा । राख्योसिद्धताहिनिजधामा ॥ सिद्धना-रिसोंभईमिताई । साधुगयोलैताहिपराई ॥

दोहा—उठ्योचेटकीभोरजब, लख्योनारिनहिंधाम ॥
बोलियक्षिणीकोतुरत, कीन्होंकोपअछाम ॥ १५ ॥

चौ०—यहिक्षणनगरभूपगहिल्यावै । साधुनारिलैजाननपावै ॥ सुनियक्षि-णीतुरंतहिधाई । युतपरयंकभूपगहिल्याई ॥ कह्योयक्षिणीभूपहिंवैना । काशी महँकोउसाधुरहैना ॥ तिलकधोवायमालसवटोरी । धरिदीजैममकुंडवटोरी ॥ जोअसकरिहौनरपतिनाहीं । तौजानौवरयमपुरमाहीं ॥ नरपतिकह्योभवनपहुँ-चावहु । काल्हिहितेनिजहुकुमकरावहु ॥ तुरतभवनभूपहिपठवायो । भोरभूप शासनप्रगटायो ॥ साधुनगलकंठीसवतोरी । धोयतिलककरिकैवरजोरी ॥ सिद्ध-कुंडदीजैपहुँचाई । दूजीबातनवनैवनाई ॥ यहसुनिनृपदलकियोतयारी ॥ धोवनलगेतिलकलैवारी ॥ तोरितोरिकंठीनहुतेरी । भर्योसिद्धकेकुंडहिटेरी ॥ हाहाकारमच्योसबकाशी । भयेसंतसबजीवनिराशी ॥

दोहा—कह्योधूर्तकोउजायकै, तुरतचेटकीकाहिं ॥
तुलसिदासमालातिलक, तुमटोरौकतनाहिं ॥ १६ ॥

चौ०—सुनिचेटकीसैन्यसवसाजे । चल्योकोपिवजवावतवाजे ॥ नगरलो-गसवदेखनधाये । कोउवैष्णवतुलसीढिगगाये ॥ मालाकंठीटोरनहेतू । आवत कियेचेटकीचेतू ॥तुलसिदासतवगिराबखानी । जाकरमालतिलकसोजानी ॥ जवचेटकीकुटीनियरायो । तवयकघोरवंडरआयो ॥ परीफौजउडिसुरसरि माहीं । रहीचेटकीतनुसुधिनाहीं ॥ रुधिरवमतबूडतभयिधारा । जसतसकैसो लग्योकिनारा ॥ त्राहिकहततुलसीपदगिरेऊ । मैंअजानसंतनसोंभिरेऊ ॥ क्षमा-करहुअपराधहमारा । तुलसीकरुणापारावारा ॥ वचनकह्योमुसकाइगोसाईं । संतसेउलघुजनकीनाईं ॥ खाहुवर्षभरिसाधुनजूँठो । तवह्वैहौशुचिहैनहिंझूँठो ॥ कियोचेटकीतैसाहिआई । तरीयक्षिणीसंगतिपाई ॥

दोहा—संतचरणजलपानकरि, साधुजूठनितखाय ॥
भयोचेटकीरामको, दाससुवासाविहाय ॥ १७ ॥

चौ०—भईरामनौमीयककाला । जुरीकुटीमहँसंतनमाला ॥ उत्सवकियो महासुखछायो । सिगरीराज्यविभूतिबोलायो ॥ भईभीरभारीतेहिठामा । छा-

यरह्योयकरामहिनामा ॥ तहँयकडोमअवधपुरकेरो । आयोतुरतउछाहघनेरो ॥ महावीरवशदर्शनपायो । जन्ममनोरथबोलिसुनायो ॥ तुलसिदासपहँकोउकह आई । तुरतगयोप्रभुकाजविहाई ॥ पूछ्योहैतुकहाँकोवासी । सोकहकोशलनगरनिवासी ॥ अवधनिवासीसुनतकृपाला । भरिआएदोउनयनविशाला ॥ उरलगायमिलिकुटीलैआई । बारबारतेहिकह्योवुझाई ॥ यहविभूतिकीप्रभुरघुराई । जनिभाषियोअवधपुरजाई ॥ मैंचेरोरघुपतिपदकेरो । वाराणसीकसौंकरिडेरो ॥ ऐसोहैतुलसीपरभाऊ । कहेमोहिंनहिंहोतअघाऊ ॥

दोहा—येकसमयश्रीअवधको, लैसँगसंतसमाज ॥
नावहिनावहिचलतभये, नावभरायेसाज ॥ १८ ॥

चौ०—सरयूगंगासंगमजहँई । पहुँचेजबैगोसाईंतहँई ॥ भूपघाटघाटीअनुआमा । पूछ्योतुलसीचारिहुँनामा ॥ कहेलोकचालिकैशिरनावत । रामसिंहइतनृपतिकहावत ॥ रामदासघाटीकरनाऊँ । तथारामपुरबाजतगाऊँ ॥ रामघाटयहगुण्योगोसाँई । लगतजगातइतैवरिआई ॥ बिनकरदेकोउजाननपावै । तुमहुँकोदेवउचितइतभावै ॥ राममयेगुणिनामसबनके । सजलकोरभेप्रभुनयनके ॥ तुलसिदासबोलेमुसकाई ॥ देजगातहैमोरजवाई ॥ सुन्योगोसाँईंआगमराजा । आयोतुरतहिसहितसमाजा ॥ बंद्योतुलसिदासपदकंजन । लियउपदेशकुमतिद्दगअंजन ॥ विनयकियोभरिआनँदभारा । होयनाथइतहीभंडारा ॥ मेरेकंठदेहुप्रभुकंठी । कीजैमोहिंवसिंदविकुंठी ॥

दोहा—तुलसिदासकरिकैकृपा, भंडारातहँदीन ॥
भूपहुद्रव्यलगायके, अतिउत्सवतहँकीन ॥ १९ ॥
तुलसिदासउपदेशते, भूपसहितसबदेश ॥
रघुपतिभक्तअनन्यभो, सेयोसंतहमेश ॥ २० ॥
तुलसिदासकीपादुका, धन्योभूपगृहमाहिं ॥
इष्टदेवसमपूजिकै, पायोमोदसदाहिं ॥ २१ ॥

चौ०—येकदिनानिवसततेहिकाशी । येकचरित्रभयोसुखराशी ॥ भैरवनाथप्रभावअपारा । सोमनमेंअसकियोविचारा ॥ मोहिंगोसाइंपूजतनाहीं । दरशाऊँप्रभावयहिकाहीं ॥ असगुणितुलसिदासकेबाहू । दुसहपीरप्रगट्योमददाहू ॥ होतभईअतिपीरतहाँहीं । छूटतजान्योनिजतनुकाहीं ॥ जतनकोटिकीन्होम-

तिधीरा । तबहुँनमिटीबाहुकीपीरा ॥ तबबाहुककोरच्योगोसाईं । मिटिगैपी-रसबमकीनाईं ॥ भैरवपरकोप्योहनुमाना । भैरवसोंशिवनचनबखाना ॥ देहिराम दासनदुखनाहीं । तेमोहिंप्रियप्राणहुतेआहीं ॥ सबमेंतुलसीसोंशिवभाष्यो । मैंभैरवहिमुख्यगणराष्यो । इनहूँकोवंदनतुमकीजै । मोरिप्रीतिअतिशयगनि-लीजै ॥ तुलसिदासतबआनँदपाईं । भैरवकीवंदनाबनाईं ॥

दोहा—रच्योकवित्तउदग्रअति, बाहुकचौआलीस ॥
तासुप्रभावप्रत्यक्षअति, अबलौंआँखिनदीस ॥ २२ ॥
जो चौआलिसादिवसलगि, हनुमतमंदिरजाय ॥
पाठकरैबाहुकसुचित, बैठिसनेमसोहाय ॥ २३ ॥
तासुप्रेतबाधासकल, तनकीमनकीपीर ॥
मेटिदेतमारुतसुवन, यहप्रापैंमतिधीर ॥ २४ ॥

चौ०—येकसमयतुलसीभंडारे । जुरीभेटजनदियेअपारे ॥ चोरचोरावनकें हितआये । अर्द्धनिशानिजघातलगाये ॥ जबहींचोरचोरावनआवैं । द्वैबालक धनुशरलैधावैं ॥ यहिविधिसिगरीरातिसिरानी । चोरनउरतेकुमतिपरानी ॥ दौरचोरतुलसीकेपाँयन । परेआयचितमेंअतिचायन ॥ पूछ्योकोबालकप्रभु दोऊ । इतनैआवनपावतकोऊ ॥ तुलसिदासपूछ्योवृत्तांता । चोरकहेसिगरेह्वै शांता ॥ धन्यधन्यकहिपुलकिगोसाँईं । गहेचोरपाँयनबरियाईं ॥ ह्वैगेशिष्यतुरं-तहिचोरा । तुलसिदासउरभोदुखभोरा ॥ संपतिधरबउचितइतनाहीं । रामलष-णताकैंधनकाहीं ॥ धिगतेहिजेहिप्रभुपरिश्रमभयऊ । अबलौंमोरकपटनहिंगयऊ ॥ असगुणिसंपतिदियेलुटाई । करकरवाकोपीनविहाई ॥

दोहा—काशीमेंपुनियकसमय, मर्‍योविप्रकोउयेक ॥
सतीहोनहिततासुतिय, बाँध्योजतनअनेक ॥ २५ ॥

चौ०—न्हायपहिरिपटनरियरलैकै । चलीदेवदरशनसुखछैकै ॥ तुलसीदास आश्रमहुँगवनी । वंद्योचरणविप्रकीरवनी ॥ ध्यानकरततहँरहेगोसाईं । बोले वचनसहजकीनाईं ॥ होसौभाग्यवतीतैंनारी । सुनिसहगामिनिगिराउचारी ॥

साखी-दोहा-तुलसीआवतदेखकरि, सतीनवायोशीश ॥
जबतुलसीऐसेकह्यो, अमरचूडआशीश ॥ २६ ॥
पतीहमारे चलिगये, हमहूँ चलनेहार ॥

तुलसीतुम्हरेवचनको, होसीँकवनहवाल ॥ २७ ॥

चौ०—सत्यकरोअपनीप्रभुवानी । सतीहोनहितअहौंपयानी ॥ लख्योगोसाईंनयनउघारी । किहहतीतियसतीतयारी ॥ अपनेवचनसत्यकेहेतू । गयेजहँमृतदाहननेतू ॥ नयनमूँदिदोउभुजापसारहु । जयजयसीतारामउचारहु ॥ मृतकओरचितईजोकोई । आँधरसोविशेषकैहोई ॥ जनसमाजतैसहिसबकीन्हे । सीतारामुदितकहिदीन्हे ॥ जससबबोलेरामदोहाई । मृतकहुबोल्योहाथउठाई ॥

दोहा—तुलसीरामबोलाइकै, मस्तकधारयोहाथ ॥
हमतौकछुजानैंनहीं, तुमजानौरघुनाथ ॥ २८ ॥
दौरिगह्योतुलसीचरण, जैजैमाच्योसोर ॥
कोइकमूँद्योनयननहिं, भयोअंधतेहिठौर ॥ २९ ॥

चौ०—गह्योआयपदलाकीनारी । हरहुनाथयकआँखिहमारी ॥ येकआँखिपतिकीप्रभुदीजै । अपनोवचनसत्यकरिलीजै ॥ एवमस्तुकहिदियोगोसाईं । तैसहिभयोतुरततेहिठाईं ॥ पुनिकाशीमहँकौनेहुकाला ॥ गोहत्याकहुँलगीकराला ॥ दियेकुटुंबतासुतबत्यागी । आयेसोतुलसीपदलागी ॥ कह्योजोरकरसुनहुउदारा।लखैलोगनहिंवदनहमारा ॥ तुलसिदासबोलेतबवैना। रामकहततनुपापरहैना ॥ हमकुटुंबसबदेवमिलाई । रामरामतैंकहुरटलाई ॥ तेहिमुखरामराम रटलागी । तनुतेगोहत्याद्रुतभागी ॥ तुलसीतासुकुटुंबबोलायो । मंजुलवचन सबनसोंगायो ॥ रामकहतगोवधअघभाग्यो । याकोवृथासबैतुमत्याग्यो ॥ जेहिप्रतीतिअबहोयतिहारी । सोकरिलेहुपरीक्षाभारी ॥

दोहा—कह्योकुटुंबीतासुसब, जोनंदीशिवभौन ॥
याकेकरकोखायकछु, तौसँदेहहैकौन ॥ ३० ॥

चौ०—तबविश्वेश्वरमंदिरमाहीं । गयेगोसाईंलैतेहिंकाहीं ॥ नंदीश्वरसोंविनय सुनायो । नामप्रभावतुम्हींसबगायो ॥ रामनामकोयथाप्रभाऊ । तुमसमानकोउ जाननकाऊ ॥ रामकहतजोअघरहिजावै । तौ यहिकरप्रभुकछूनपावै । असकहिकरद्विजकरक्तपेरा । धरिदीन्होंनंदीश्वरनेरा ॥ देकैंवारबाहिरप्रभुबैठे । कौतुकलखनजुरेजनतैठे ॥ लखैंकेंवारखोलिजबजाई । लीन्होंनंदीपेराखाई ॥ यकमुखमहँप्रतीतिहितराख्यो । काशीवासीजयजयभाष्यो ॥ लियकुटुंबसबलाहिमिलाई । तुलसिदासमहिमामुखगाई ॥ येकसमयपुनितुलसीदासा । कछुदिन

कियोअवधपुरवासा ॥ येकविप्रबालकतहँमरेऊ । तुलसीचरणआयसोगिरेऊ ॥ लोकरीतितुलसीसमुझायो । ताकेमनमेंकछूनआयो ॥

दोहा—लोथिडारिकैसोगयो, तुलसिदासकेद्वार ॥
खानपानसंध्यानकिय, तुलसीकियोसँभार ॥ ३१ ॥

चौ०—सुमिरणकीन्होंपवनकुमारा । अहोनाथतुममोहिंअधारा ॥ हनूमान कहस्वमेआई । येहिपरयमकीन्हेंजबराई ॥ पैयाकोहमअवशिजिऐहैं । रामभक्तकोशोकमिटैहैं ॥ असकहियमपुरगयोकपीशा । यमबोल्योपदनावतशीशा ॥ यमपुरविप्रबालजियनाहीं । खोजिलेहुसिगरेपुरमाहीं ॥ खोज्योकपिपायोनहिं जीवा । तबयमपुरकरिकोपअतीवा ॥ सुमिरिरामपदमहिमासिगरी । लियेलपेटिलंगूरसोनगरी ॥ बोल्योयमसूँपवनकुमारा । देहुनियाइविप्रकोबारा ॥ नातोतेहिसँगयमपुरजैहैं । ममप्रभुतुवसमऔरबनैहैं ॥ तबयमप्रभारिकह्योकरजोरी । भाग्यमिटावनशक्तिनमोरी ॥श्लोक ॥ लिखिताचित्रगुप्तेनललाटाक्षरमालिका ॥ तत्रचालयितुंशक्याअसुरैस्त्रिदशैरपि ॥ ६ ॥ पुराणांतरे ॥ वायुसुवनतबकहमुसकाई । यहसातिरघुपतिभक्तिविहाई ॥ तामेंसुनयमराजप्रमाना । कियोसनातनवेदबखाना ॥ श्लोक ॥ यद्धात्रालिखितंभालेतन्मृषानैवजायते ॥ ऋतेश्रीरामदासानांप्रेमनिर्भरचेतसाम् ॥ ४ ॥

दोहा—तबयमराजडेरायकै, लैद्विजबालकप्रान ॥
अरप्योआइकपीशको, राख्योअपनोथान ॥ ३२ ॥

चौ०—दियकपीशद्विजपुत्रजियाई । सकलअवधपुरबजीबधाई । तुलसिदासअतिआनँदपायो । तहाँबसतकछुकालवितायो ॥ आयोयेकवणिकपुनिकोऊ । रामदरशलालचअतिसोऊ ॥ तुलसिदासतबकहमुसकाई । यहतोबातमहाकठिनाई ॥ सहजहिरामदरशनहिंहोई । कोटिनजन्मजातहैंखोई ॥ वनिककह्योहैकौनउपाई । तुलसिदासतबकह्योबुझाई ॥ बरछीगाडिभूमिमहँनेहू । तापरकूदहुतजितनुनेहू ॥ यहिविधिदरशहोइतौहोई । औरजतनकछुफैलजोई ॥ वणिकक्ह्योयहतौनअसतिहै ॥ तुलसिदासकहसातिसातिहै ॥ वणिकगाडिबरछीमहिमाहीं । चढ्योजाइतरुकूदनकाहीं ॥ मरनभीतिकूद्योनाहिंजाई ॥ बनियावारवारपछिताई ॥

दोहा—कोउ क्षत्रिय तेहि पंथहो, लख्यो तमाशो जाइ ॥

कह्योवनिकसोंकाहयह, वैश्यकह्योसबगाइ ॥ २३ ॥

चौ०—क्षत्रियकह्योउतरितुमआवहु । कौनहेतुतनुवृथागवाँवहु ॥ मोसों लेहुकछुकधनभाई । करहुजायरोजगारबनाई ॥ वनिकमानिक्षत्रियकेवैना । लैधनतुरतगयोनिजऐना ॥ क्षत्रियलियोमनहिंअनुमानी । मृषानतुलसिदासकी वानी ॥ तरुपरचढिकूद्योवरछीपर । ऊपरहिरोंकिलियोतेहिरघुवर॥ वजेनगरदुंदुभीअपारा । भयोसुयशसिगरेसंसारा ॥ तामेंप्रमाणगोसाँईजीकी । मैलिखिदेहौंसोईनीकी ॥ "कौनिहुँसिद्धिकिबिनविश्वासा । बिनहरिभजननभवभयनासा" ॥ यकदिनगुरुजूगयेनहाने । मज्जनहितजबनीरसमाने ॥ तबयकतियबिनवसननहाती । कह्योलाजभरिसोविलखाती ॥ करिममओरपीठियहि ठांई । ठाढोरहुतोहिंरामदोहाई ॥ तियमज्जनकरिकैघरआई । तुलसिदाससुनि रामदोहाई ॥ रहेठाढतेहिदिनतेहिठाई । शपथबहोरवतियाबिसराई ॥ भयोशोरसिगरेपुरमाँहीं । आईसोतियबहुरितहाँहीं ॥

दोहा—तुलसिदाससों वचनकहि, रामशपथ तुमकाहिं ॥
जाहुआपनेभवनको, इतैकाजकछुनाहिं ॥ २४ ॥
तुलसिदास जलतेनिकासि, तब आयोनिजभौन ॥
जलचरपगपलनोचिलिय, कियोनयकपदगौन ॥ २५ ॥
रामशपथ यहिभाँतिकी, ताहि मंदमतिलोग ॥
रामद्रोहिभासतरहैं, करिकैमृषाप्रयोग ॥ २६ ॥

चौ०—तुलसिदासकरबढ्योप्रभाऊ । भयोविदितपुहुमीसबठाऊ ॥ बादशाहदिल्लीकोवासी । सुनिकीरतिअतिआनँदरासी ॥ निजनायककोकह्योबोलाई । तुलसीकोल्याइयेलेवाई ॥ नायकचल्योबनारसआयो । तुलसिदासके पदशिरनायो ॥ हजरततुम्हैंबोलायोसाईं । चल्योदूतकहिकैतेहिठाईं ॥ तुलसिदासतबकियोविचारा । कौनशाहतेहेतुहमारा ॥ पैजोहमदिल्लीनहिंजैहैं । शाहअवशिदर्शनहितऐहैं ॥ तौजीवनकोअतिदुखहोई । उचितपरैचालिबोमोहिं जोई ॥ तुलसिदासलैसाधुसमाजा । दिल्लीगयेसुमिरिरघुराजा ॥ शाहकियोसादरसतकारा । पुनिबोल्योअपनेदरबारा ॥तुमहिंसुन्योसाहबहिमिलापी । अजमतदेहुदेखायप्रतापी ॥ तुलसीकह्योरामहमजाने । दूसरसाहबओरनमाने ॥

दोहा—अजमत देखन हेतु तहँ, कीन्होंहठ शठशाह ॥

तुलसिदास अजमतकरन, कियो न मनमें चाह ॥ २७ ॥

चौ०—शाहसकोपकह्योतबबानी । तूखिलाफअजमतअभिमानी । कारागारकैदयहिकीजे । रामकरतकासोलखिलीजे ॥ सुनतशाहशासनमजबूता । कारागारगयेलैदूता ॥ तुलसिदासतबकियोविचारा । मोरसहायकपवनकुमारा ॥ सुमरयोपदरचिकैहनुमाना । सोपदश्रोतासुनहुसुजाना ॥

पद—"ऐसो तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले ॥
हाँक सुनत दशकंधके भये बंधन ढीले" ॥

चौ०—तुलसिदासयहपदरचिगायो । तबहनुमतउरअमरषआयो ॥ होतभोर दिल्लीपुरमाहीं ॥ कोटिनमर्कटविकटदेखाहीं ॥ कोटकँगूरनऔरहवेली । कलशा दियोअनेकनठेली ॥ शाखामृगयकयकघरमाहीं । भविशतलाखनलुरतदेखाहीं ॥ लालकिलामधिशाहमकाना । तहँबाँदरभविशेसहसाना ॥ तोपनतुपकनयद्यपिमारा । तदपिकीशनहिंहटेहजारा ॥ घुसेकीशमहुशाहजनाने । पकरिबेगमनकोअनखाने

दोहा—फारिवसन पटहीन किय, चीथि चीथि सब अंग ॥
हाहाकार मचायदिय, रँगे कोपके रंग ॥ २८ ॥

चौ०—रहैंजोनदिल्लीकेवासी । भयेसकलतेजीवनिरासी ॥ लखिदुर्दशाशाहघबराना । सकलवजीरनकोद्रुतआना ॥ शासनदीन्होंकरहुविचारा । केहिहित माच्योजुल्मअपारा ॥ हाफिजवृद्धरह्योतहँएका । सोकहकीन्होअनिअविवेका ॥ यकफकीरकोकैदकरायो । सोअपनीअजमतदरशायो ॥ करतशाहकेयहीविचारा । दिल्लीमाच्योहाहाकारा ॥ यकयकपुरुषनारिपरकीशा । लाखनलपटिगयेकररीशा ॥ भागींबेगमविनसुथनीया । कहतखोदायनपगपैंजनिया ॥ नोचहिं नारिनकेशनकीशा । भागतगिरीं फूटिगेशीशा ॥ मातुसुतापितुसुततजिभागे । कोउकोउसंगनलियभयपागे ॥ दिल्लीप्रलयहोतिसोंदीसे । हल्लाकियोमहल्लाकीसे ॥ कारागारजायतबशाहा । गिरयोतुरततुलसीपदमाहा ॥

दोहा—विनयकियो करजोरिकै, अजमत लीन्हों देखि ॥
अब वानरन समेटिये, प्रलयहोतिसी लेखि ॥ २९ ॥

चौ०—तुलसिदासकहअजमतदेखौ । रामचरित्रसकलजियलेखौ ॥ जोचाहोआपनीभलाई । तौफेरहुपुररामदोहाई ॥ यहदिल्लीओहनुमतथाना । बसतुजाय रचिद्वितियमकाना ॥ शाहमानिशासनशिरनाई । दिल्लीफेरयोरामदोहाई ॥ बंद-

रखंदगयेजोहिंकालै । तुलसीकोल्यायोनिजआलै ॥ कियोगोसाँईकोसतकारा । दिल्लीदूसररच्योभुवारा ॥ रामघाटरचियमुनामाहीं । दिल्लीअर्पिसुतुलसीकाहीं ॥ बस्योसुचितचितबादशाहतहँ । तुलसीकोराख्योतेहिपुरमहँ । सुन्योसूरकीरति तेहिभाँती । दर्शनअभिलाषाअधिकाती । पठैबुद्धिमाननब्रजकाँहीं । आन्योसूरदासपुरमाँहीं ॥ तुलसीसूरसगागमभयऊ । रामकृष्णमयपुरह्वैगयऊ ॥ दोऊगये शाहदरबारा । बादशाहकियअतिसतकारा ॥

दोहा—शाह कह्यो तब सूरसों, दीजे चरित देखाय ॥
सूर कह्यो तुलसी चरित, लखि नहिं गये अघाय ॥ ४० ॥

चौ०—बेटीतुवजोबसैजनाने । तासुचरितसुनियेदोउकाने । कृष्णरासकी सखीसुहाई । कौनेहुपापभवनतुवआई ॥ ताहिपठावहुब्रजतुरंता । रासकरतजहँराधाकंता ॥ जोपरतीतिहोयनहिंतेरे । तौमानियेवयनअसमेरे ॥ तासुवामजंघा तिलहोई । मूरतिश्यामकपोलहिजोई ॥ शाहसुनतउठिगयो जनाने । बेटीकोसो वचनबखाने ॥ सुनतहिसुतासूरढिगआई । दैतलमुखतनुदियेबिहाई ॥ तासुजंघतिललख्योअमोला । श्यामस्वरूपहुलख्योकपोला ॥ अचरजगुणिपूँछ्योतब सूरै । हेतुबखानिहरहुभ्रमपूरै ॥ सूरकह्योयहसखीरासकी । मानकियोपियमिलनआशकी ॥ मैंहींगयोमनावनयाको । मान्योनाहिंमनायकैथाको ॥ तबमैंकह्यो वियोगिनिह्वैहै । सोउकहतुहूँवियोगहिपैहै ॥

दोहा—आय गये तहँ मिलनहित, तुरतहि मदनगोपाल ॥
करगहि जंघा धरि छरी, चूमि कपोल विशाल ॥ ४१ ॥

चौ०—लियोलेवायमनायप्रियाको । जान्योसबवृत्तांततहाँको ॥ मोहिंकह्यो तैंप्रगटजगतमें । तारैजननविराजिभगतमें ॥ सखीहोयगीशाहकुमारी । तोहिंमिलिह्वैतबतनुतजिडारी ॥ सोअबरूपरमोहितलमान्यो । तनुतजियदुपतिधामसिधान्यो । छरीचिह्नजंघातिलसोई । चुंबनकीन्हकपोलहिजोई ॥ शाहसत्यगुणिअचरजत्यागा । बारहिबारसूरपगलागा ॥ रहेबहुतदिनसूरगोसाँई । करिसतसंगतमोदअघाई ॥ यकदिनदोउबजारमहँबैठे । करिसतसंगमोदरसपैठे । शाहमत्तमातंगमहाना । आवतचलोदुहुँनदरशाना ॥ लोगनकह्योपरावतुरंता । नातोकरनचहतगज अंता ॥ सूरकह्योमैंजाहुँगोसाँई । मैंरहिसकौंनअबयाहिठाँई ॥ मेरोनंदलालअतिबालक । किमिह्वैहैं दुर्धरगजघालक ॥ तूबैठेतौबैठभलाई । धनुधरतेरोनाथगोसाँई ॥

दोहा—भगे सूर अस कहि तहाँ, लीन्हें अंक गोपाल ॥
तुलसिदास मुसकाइकै, बैठ सुमिर रघुलाल ॥ ४२ ॥

चौ०—धायेतुलसीसन्मुखनागा । आकस्मात्शीशशरलागा ॥ मऱ्योनाग करिघोरचिकारा । भोवृत्तांतविदितसंसारा ॥ तुलसीसूरसमागमकरिकै । काशीआवतभेमुदभरिकै ॥ एकसमयनाभाजूज्ञानी । जिनयहभक्तमालनिर्मानी ॥ तेसवसंतननेउतादीन्हो । सिगरेसंतपयानोकीन्हो ॥ तुलसिदासकोन्योतोआयो तवमनमेंविचारअसल्यायो ॥ पंगतिमेंकछोपकवाना । द्विजकोखैबोउचितन जाना ॥ यहविचारकरितहाँनगयऊ । पवनसुवनतासोंकहिदयऊ ॥ भक्तराज आज्ञाकोजानो । तुरतहितहँकोकरोपयानो ॥ हनुमतशासनसुनतगोसाँई । चले तुरतभिक्षुककीनाँई ॥ नगरओडछेढिगतवगयऊ । कौतुकतहाँमाँचियहरहेऊ ॥ तहँकोइंद्रजीतजोराजा । सोजोन्योवहुकविनसमाजा ॥

दोहा—कविसमाज शिरताज किय, श्रीकवि केशवदास ॥
रामचंद्रिका जो विमल, कीन्हों जगतप्रकास ॥ ४३ ॥

चौ०—कविमंडलीविलोकिनरेशा । दीन्होंत्रिभननवलनिदेशा ॥ यहसवक-विमंडलीसदाही । रहैकौनविधिममढिगपाही ॥ मंत्रशास्त्रविधिकहअसवानी । प्रेतयज्ञकीजैविधिठानी ॥ यहिविधितेयहकविनसमाजा । रहैसहसवर्षहुलगि राजा ॥ इंद्रजीततवअतिसुखपायो । प्रेतयज्ञविधिसहितकरायो ॥ सोकविमं-डलियुतनरनाथा । भयेप्रेततनुतजियकसाथा ॥ रामचंद्रिकाकेशवकीन्हो । पूरणभईनतनुतजिदीन्हो ॥ यहवृत्तांतसकलकोउपाई । तुलसिदासकोदियोसु-नाई ॥ सोइकविकेशववटतरुमाँहीं । अवलोंकरतपुकारसदाँहीं ॥ रामचंद्रिका कोलेजाई । ल्यावैतुलसीसोंशोधवाई ॥ यहसुनितुलसिदासतहँगयऊ । केशवक-हतपुकारतभयऊ ॥ केशवतरुतेउतरितुरंता । तुलसीपदपकऱ्योहरपंता ॥

दोहा—नाथ उधारो मोहिं अब, ग्रंथ सुधारो सोय ॥
नहिं बाँच्यो मम कोउ कुमति, हाऱ्यो बहुविधि रोय ॥ ४४ ॥

चौ०—तुलसीकह्योविहँसिअसवानी । रामचंद्रिकापढहुसुखखानी ॥ केशव रामचंद्रिकापढेऊ । तुलसीसुनिशोधनमुदवढेऊ ॥ रामचंद्रिकापूरीजवहीं । केशवतन्योजयतिकहितवहीं ॥ नाभानिकटगोसाँईगवने । पंगतिसमयपहुँचिसु-खसमने ॥ लखिनाभाकछुकह्योनवानी । लखनरीतितेहिसुमतिलोभानी ॥ तु-

लसीबैठेपंगतिछोरा। परीपातरीनीचेठोरा ॥ साधुउपानतपातरिनीचे। धरिकीन्होंसमअतिसुखसींचे ॥ नाभानिरखिभावअसताको। मिल्योजायकरगहिसुखछाको ॥ ताहिमध्यपंगतिबैठायो। वारवारचरणनशिरनायो ॥ कछुदिनकीन्होतहाँनिवासा। करिसतसंगहिलह्योहुलासा ॥ नाभातासुविमलमतिहेरा। भक्तमालमहँकियेसुमेरा ॥ पुनिब्रजमंडलयात्राकरने। तुलसिदासगवन्योसुखभरिने ॥

दोहा—नाभाजू छप्पय लिख्यो, भक्तमालमें जौन ॥
मैं सो इत लिखिदेतहौं, श्रोता समुझौ तौन ॥ ४५ ॥

छप्पय—त्रेताकाव्य निबंध कियो शतकोटिरमायन।
इक अक्षर उच्चरे ब्रह्महत्यादि परायन ॥
अब भक्तन सुखदेन बहुरि लीला विस्तारी।
रामचरण रसमत्त रहत अह निशि व्रतधारी ॥
संसार अपारके पारको सुगमरूप नौका लयो।
कलि कुटिलजीव निस्तारहित वाल्मीकि तुलसीभयो ॥ १ ॥

दोहा—तुलसिदास यात्रा करी, ब्रज चौरासी कोश ॥
राम कृष्ण वपु भेद विन, भरि आनँद उर कोश ॥ ४६ ॥

चौ०—बहुरिजबैवृंदावनआये। घाटघाटमज्जनकरिआये ॥ सबमंदिरनदरशकरिलीन्हों। ज्ञानगूदरीडेराकीन्हों ॥ परशुरामतहँरह्योमहंता। कृष्णउपासकभावकरंता ॥ लख्योगुसाईंकीसबरीती। बढ़ीकरनसतसंगहिप्रीती ॥ तुलसिदासकोकरिसतसंगा। नवनवबढतप्रेमरसरंगा ॥ परशुरामकेमंदिरमाहीं। कृष्णरूपश्रीनाथसोहाहीं ॥ वंशीलकुटकाछनीकाछे। मुकुटमाथमालाउरआछे ॥ सोहतिमूरतिललितत्रिभंगी। हरनहाराहियराधासंगी ॥ यकदिनतहँसबदिनकीनाईं। दरशहेतुचलिगएगोसाईं ॥ परशुरामतहँरह्योमहंता। तासुपरीक्षाचह्योकरंता ॥ तुलसीकरनदंडवतलागे। तबमहंतबोल्योअनुरागे ॥ मेरेवचनकछुकसुनिलेहू। फेरिद्वारदंडवतकरेहू ॥

दोहा—अपने अपने इष्टके, नमन करै सब कोय ॥
परशुराम विन इष्टके, नवै सो मूरख होय ॥ ४७ ॥
परशुरामके वचन सुनि, मानत हिये हुलास ॥
सीतारमण सँभारिके, बोल्यो तुलसीदास ॥ ४८ ॥

कहाकहौं छवि आजुकी, भले बनेहो नाथ ॥
तुलसी मस्तक तब नवै, धरो धनुष शरहाथ ॥ ४९ ॥
मुरली लकुट दुरायके, धऱ्यो धनुष शरहाथ ॥
तुलसी लखि रुचि दासकी, नाथ भये रघुनाथ ॥ ५० ॥

चौ०—यहभत्यक्षदेखसंसारा । वृंदावनमाच्योजयकारा ॥ परशुरामतुलसीपदगहेऊ । धन्यधन्यकहिआनँदलहेऊ ॥ यकदिनज्ञानगूदरीमाँहीं । होतीहरिकीकथासदाहीं ॥ गयेगोसांईश्रवणउमाहा । निरखेसंतमहंतनकाँहा ॥ कोउ गद्दीमहँबैठमहंता । कोउउच्चासनमहँदिलसंता ॥ गद्दीमहँबैठावनलागे । भूमहँबैठिगयेअनुरागे ॥ कह्योगोसाँईसवनसुनाई । कथाश्रवणकेदोपगनाई ॥ कथासुनतवीराजेखाँहीं । तेमलभक्षतनरकनमाँहीं ॥ कथासुनतबैठेंउच्चासन । तेअर्जुनतरुहोतपापसन ॥ कथासुनहिंजेविनाप्रणामा । तेविषवृक्षहोतअघधामा ॥ कथा सुनतजेसोवतजानी । तेअजगरहोतेअभिमानी ॥ जेवाचकसमआसनबैठे । तेगुरुतल्पपापफलपैठे ॥

दोहा—जे निंदैं यदुपति कथा, अघहरनीमनहारि ॥
ते शत जन्म प्रयंत लगि, श्वान होत दुखकारि ॥ ५१ ॥

चौ०—कथाहोतजेकरैंविवादा । तेखरशरठहोतमरयादा ॥ जेहरिकथासुनतशठनाहीं । होतनरकलहिकोलवनाहीं ॥ कथाविघ्नकरतेजेद्रोही । नरकभोगिपुरसूकरहोही ॥ येदशदोषतुरंतविहाई । श्रीहरिकथासुनहुसबभाई ॥ सुनिकेतुलसिदासकेबैना । भरिआयेजलप्रेमिनिनैना ॥ तुंगासनसबदियोविहाई । बैठेभूमिकथा शिरनाई ॥ ह्वैगैकथासमापतजबहीं । बोल्योसंतएकअसतबहीं ॥ षोडशकला कृष्णसुखसारा । द्वादशकलारामअवतारा ॥ षोडशतजिद्वादशकसभजहू । समाधानकरुनहिंघरब्रजहू ॥ यहसुनितुलसिदाससुखछाके । भयेमिलमहारेवसुधाके ॥ रहीदंडद्वैलगिसुधिनाँहीं ॥ सींचेसंतसलिलतिनकाँहीं ॥ गईखबरितबउठेगोसाँई । पूछेसंतभेदवरियाई ॥

दोहा—तुलसिदास बोल्यो वचन, यदपि कहब नहिं योग ॥
तद्यपि कहहुँ प्रसंग वश, सुनहु भेद सब लोग ॥ ५२ ॥

चौ०—रामहिजान्योंमैंलगिआजू । अतिकृपालुकोशलमहराजू ॥ तुमतौबारहिकलाबताये । ईश्वरकोअतिभावदढ़ाये ॥ महाराजपुनिईश्वररामा । अबकिमि

तजौंतासुमैंनामा॥ यहसुनिजानिअनन्यउपासी। गहेचरणसबसंतहुलासी। यहि विधिकरतविविधसतसंगा। तुलसीविपिनबसेरतिरंगा॥ पुनिकछुकालमाहँचलि काशी। तुलसिदासआयेसुखराशी॥ विनयपत्रिकाजौनबनायो। ताकोमंदिरमध्य धरायो॥ विनयकियोसन्मुखकरजोरी। सत्यहोयविनतीजोमोरी॥ तौयहि माहिंसहीपरिजावै। मोरदुसहदुखद्रुतमिटिजावै॥ असकहिकीन्होबंदकेंवारा। भयोबहुरिजबभोभिनसारा॥ तुलसीपुस्तकगहिजबहेरी। मिलीसहीरघुपति-करकेरी॥ विनयमाहँतबपदयहकीन्हो। सोमैंइतनेपुकलिखिदीन्हो॥

पद—तुलसी अनाथकी परी रघुनाथ हाथ सही है॥
दोहा—पुनि अति दुस्तर काल लखि, रामधामको जान॥
तुलसीदास विचार किय, बोल्यो सबन सुजान॥ ५३॥
सहि न जात रघुपति विरह, जान चहौं हरिधाम॥
यह सुनिके अति व्यथितभे, सकलसंत मतिधाम॥ ५४॥
तिनहिं दियो उपदेश मम, ग्रंथ वेद परयादि॥
रामायण गीतावली, विनयपत्रिका आदि॥ ५५॥
तिनहिं सुनहु समुझहु सुरुचि, चलहु ग्रंथ अनुसार॥
अंत समय हठि मिलहिंगे, दशरथ राजकुमार॥ ५६॥
असकहि सहजाहि आगये, असी वरुणके तीर॥
नयन मूंदि तनु अचल किय, भई संतकी भीर॥ ५७॥
बजे नगारे गगनमें, देखो परो विभास॥
दामिनिसों चहुँवोरमें, चमक्यो चपल प्रकास॥ ५८॥
संवत सोरहसै असी, असी वरुणके तीर॥
श्रावणशुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर॥ ५९॥
भवसागरमें नाव सम, विरचि ग्रंथ मतिधीर॥
चढ़ विमान गमनत भयो, जहँनिवसत रघुवीर॥ ६०॥

इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीका जीवनचरित्र संपूर्णम्।



श्रीगणेशायनमः ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत—

रामायणमाहात्म्यप्रारंभः ।

दोहा—गुरुहरिहरगणईशधी, सुमिरोंतुलसीदास ॥ करतगोपालमहात्म्यश्री, रामायणसुखरास ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रामायणसुरतरुकीछाया । दुखभयेदूरिनिकटजोआया ॥ सप्तकाण्डस्तंभसुहाई । दोहा लघुशाखाछविछाई ॥ शुचिसोरठासीटकाकोई । पत्रीबहुचौपाईजोई ॥ छंदनकीशोभाअतिरूरी । जनुनवीनअंकुरछविपूरी ॥ अक्षरसुमनरहेगहगाई । अतिअद्भुतसुगन्धकविताई ॥ विविधप्रकारअर्थसोईफल । श्रोतासुमतिस्वादुजानैभल ॥ भक्तिज्ञानवैराग्यसरसरस । वीजदोयनिर्गुणसगुणअस ॥ मुनिभुशुंडशिवप्रथमहिगाई । सोइगाईजगहेतुगोसाँई ॥ दोहा—तुलसीदासरामायण, नहिंकरतेपरचार ॥ कलिकेकुटिलजीवये, कोकरतोनिस्तार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रामायणसुरधेनुसमाना । दायकअभिमतफलकल्याना ॥ गुणसमूहकविसकैकौनगानि । जासुप्रभावसरिसचिंतामनि ॥ रामअयनरामायणआही । वर्णिपारपावैकोताही ॥ रामायणअद्भुतफुलवारी । रामभ्रमरभूषितरुचिभारी ॥ श्रीरामायणजेहिघरमाहीं । भूतप्रेततहँभूलिनजाहीं ॥ नहिंगतितहांदरिद्रहुकेरी । तहँश्रीमहावीरकीफेरी ॥ यंत्रमंत्रसगुनोतीजेती । रामायणमहँजानियतेती ॥ प्रीतिकरैरामायणमाहीं । तेहिसमभाग्यवंतकोउनाहीं ॥ दोहा—रामायणसमनहिंकोऊ, सबउपमाउपमेय ॥ उपमाभाषाऔरकी, कैसे कोउकविदेय ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ त्रेतामहँभयेवाल्मीकिमुनि । तेकलियुगभयेतुलसिदासपुनि ॥ सतकरोरिरामायणभाषी । इनमथिसारसुसूक्षमराखी ॥ प्रथमकाण्डहैबालरसीला । जन्मविवाहरामकीलीला ॥ द्वितियअयोध्याकाण्डप्रकासा । पितुआज्ञारघुवरवनवासा ॥ पुनिअरण्यकिष्किन्धाभाष्यो । तहँसुग्रीवशरणमहँराख्यो ॥ सुन्दरसुन्दरकांडसुहावन । युद्धकांडमहँमारेउरावन ॥ सप्तमउत्तरपरमअनूपा । उत्सवप्रभुकौशलपुरभूपा ॥ तुलसीकृतरामायणये

ती। विविधप्रकारकथाहैकेती ॥ दोहा ॥ जगवारिधिकोपारनाहिं, ऐसोहैफैलाव ॥ तुलसीदासकृपाकरी, रचिरामायणनाव ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ श्रीरामायणस्वर्गनिसेनी। भक्तजननकहँआनँददेनी॥ श्रीरामायणसद्गुणमाता। अज्ञजाहिपढिहोहिंसुज्ञाता ॥ पापसमूहतूलकीरासी। रामायणधनंज्यकनकाशी॥ मोहपुंजतमकिरणितमारी। कामअग्निकहँशीतलवारी॥ रामायणशशिकिरणिसुहाई। संतचकोरनकहँसुखदाई ॥ धन्यधन्यश्रीतुलसिदासधनि। जगहितरामायणराखीभनि॥ नीचऊंचजेतेनरनारी। श्रीरामायणसबकहँप्यारी॥ रामायणसोंनेहलगावैं। अधनअपत्यसोवितसुतपावैं॥ दोहा॥ रामायणसोंनेहकिय, सिद्धहोतसबकाम॥ हैसबकोकल्याणदा, पढ़सुनलहुविश्राम॥ ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ निगमादिकतेब्रह्मकमंडल। रामायणास्थितगंगाजल ॥ भागीरथसमतुलसिदासमुनि। भाषाप्रकटकीनजनुसुरधुनि॥ होतिरहैयककठावँरामायण। तेहिमगआवतपापपरायण॥ कछुककालमहँपरिगइबाता। चलतपंथकहुं भयोपपाता॥ गिरतहिसुरतछूटितनुगयऊ। तहँअद्भुतइकअचरजभयऊ॥ ताहिलेनआयेयमदूता। निजपाशनबाँध्योमजबूता॥ अतिआतुरहरिजनतहँआये। छीनिलीनबहुत्रासदिखाये॥ रामायणपैसुनियहकाना। लैजेहैंबैठारिविमाना॥ दोहा ॥ रामायणपरतापसों, गयोपारषदनसाथ ॥ दूतचलेयमकेसदन, खीझतमीजतहाथ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ निजदूतनदेखेउविलखाता। पूछीभानुतनयकुशलाता ॥ किनतुमकहँदीन्होदुखभाई। चारचतुरतुमदेहुबताई॥ कहाकहैंतुमसोंमहाराजा। पूछततुमहिं नआवतलाजा॥ कोउयकमृत्युलोकबड़भागी। तुलसीदासभयोवैरागी॥ रामकथारामायणभाषी। सोलोगनघरघरधरिराखी॥ जेजेविविधभांतिकेपापी। मांसाहारीऔरसुरापी॥ तेसबमिलिरामायणसुनिहैं। कहिहैंलिखिहैं पढिहैं गुनिहैं॥ तेनहिंएहैंसदनतुम्हारे॥ सत्यसत्यनृपवचनहमारे॥ दोहा ॥ लेहुपाशयेआपने, राखहुअपनेपास ॥ अमहुतुम्हारोठठोअब, सुनियमभयेउदास ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ अपनीव्यथाकहनिनहिंपाये। तबलगिदूतऔरतहँआये॥ कहनलगेराति

सुतसोंरोई । तबचाकरीनहमसोंहोई ॥ जगमेंकहूँनकछुअतिहारो । यह सुनियमजकिरहेउविचारो ॥ अहोदूतमोहिंकहो बुझाई । किनदीन्हीमिमहछुकुसउठाई ॥ कहाकहैंकछुकहीनजाई ॥ तुलसिदासयक भयोगोसाँई ॥ तिनकीरामायणजगव्यापी । तेइँकीन्हेंपवित्रसबपापी । गेहमएकअधमगृहमाहीं । अतिदुखभयोजातकाहिनाहीं ॥ तहँदेखेउँइक कपिबलवाना । उग्ररूपसहशहनुमाना ॥ दोहा ॥ प्राणनकोगाहक भयो, तबहमभेअतिदीन ॥ शरणशरणतवशरणहैं, स्तुतिबहुविधकीन ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ तबतोहेप्रसन्नकपिराई, हमसनपुनिपरतीतिकराई ॥ धरीहोयरामायणजहँवा । कबहूँभूलिनजायहुतहँवा ॥ जे श्रोतावक्तारामायण । कबहूंमतिजायहुतेहिआयन ॥ असहमसोंकपि शपथकराई । तबछूटनपायोंसुनुराई ॥ सुनियमराजबहुतघबराये । निकटबुलायदूतसमुझाये ॥ नामरूपगुणकथारामकी । कियउनफेरीतोनधामकी ॥ अजामीलकीसुरतिकरोजू । औरनकछुचितमाँझधरोजू ॥ थकिसोरहेदूतसुनिवानी । धनिश्रीरामायणमहारानी ॥ दोहा ॥ रामायणतेजश्वरी, सतभाषाशिरमोर ॥ यमपुरजाकोशोरहै, समता कोनहिंऔर ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ पातकमहाकल्योकिनहोई । रामायण सुनिरह्योनकोई ॥ चाहेचारोंफलकोसाधन । करुरामायणकोअवराधन ॥ रामायणसुनिपापपराने । जिमिहिमनःतुमहंमशकनशाने ॥ कलियुगतरनउपायनकोई । रामभजनरामायणदोई ॥ कथारामायण कीजहँहोई । सोगृहधरमतिजानेकोई ॥ सोधरतीर्थरूपसमभासे ॥ तहाँगयेसबपातकनासे ॥ पापबासदेहीमहँतबलग । श्रीरामायणसुनेनजबलग ॥ उदयपुरानीपुण्यहोयजब । रामायणमहँमनलागतब ॥ दोहा ॥ रामायणकेसुनतही, छूटिजायभ्रतत्व ॥ जाकेपदेसुनेते, सूझतहेपरतत्व ॥ १० ॥ चौपाई ॥ कोजानेरामायणकोरस । यहतोहैसंतनकोसरवस ॥ वनजसनेही अलिगणजैसे । भक्तनप्रियरामायणतैसे ॥ त्यागिभक्तजनग्रंथअनेकू । धारणकियरामायणएकू ॥ भक्तनकहँहै भक्तिअनूपा । रसिकजननकहँहैरसरूपा ॥ ज्ञानमयीतिनकहँजे ज्ञानी । तुलसीतारनतरनबखानी ॥ कामक्रोधरुजवशसंसारा । औषधिरामायणअनुसारा ॥ रामायणमहँनेहनजाको । जीवतशवसमजा

नियताको ॥ रामायणजाकहँग्रंथनाहीं । वृथाजन्मताकोजगमाहीं ॥ दोहा ॥ रामायणअमृतकथा, लेतनताकोस्वाद ॥ तिनकोनिश्चयजानिये, हैंपूरेदनुजाद ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ रामायणविधिकहौंविशारद । सनत्कुमारसोंभाषीनारद ॥ सहितविधानसुनैजोकोई । सहजमुक्ति पावैनरसोई ॥ कार्तिकमाघचैत्रचितलाई । नवदिनकहैकथासुखदाई॥ ब्रह्ममुहूर्तसमयह्वोजबहीं । कर्मकरैशौचादिकतबहीं ॥ करैदंतधावन लटजीरा । मज्जनकरैधरैमनधीरा ॥ पुनिरामायणपुस्तकअरचै । प्रेम सहितगंधादिकचरचै ॥ ॐनमोनारायणमंत्रभनीजे । तीनआहुती होमकरीजे ॥ मनवचकर्मपापतनुकेरे । छूटिजातनहिंआवतनेरे ॥ दोहा ॥ याविधिरामायणविधीहिं, जेकरिहहिंचितलाय ॥ रामधामते जाइहैं, संश्रितदुखहिमिटाय ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ जोकछुकारजकहँ कोइजाई । सुमिरिचलैसोयहचौपाई ॥ प्रविशिनगरकीजैसबकाजा । हृदयराखिकोशलपुरराजा ॥ जोविदेशचाहैकुशलाई । तोयहसुमिरिचलैचौपाई ॥ रथचढिसियसहितदोउभाई चलेवनहिंअवधहिं शिरनाई ॥ भूतपिशाचजाहिजबलागे । यहसोरठापढेसोभागे ॥ सोरठा ॥ वंदौंपवनकुमार, खलवनपावकज्ञानघन, जासुहृदयआगार, बसहिंरामशरचापधर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शत्रुनिवारणचहोजु भाई । भावसहितजपुयहचौपाई ॥ जाकेसुमिरणतेरिपुनाशा । नाम शत्रुहनवेदप्रकाशा ॥ यहचौपाईजपैजुकोई । ब्रह्मआदिदुखताहिन होई ॥ विश्वभरणपोषणकरजोई । ताकरनामभरतअसहोई ॥ जोउत्सवचहविविधप्रकारा । करुयहचौपाईअनुसारा ॥ जबतेरामब्याहि घरआये । नितनवमंगलमोदबधाये ॥ जोचाहोजगमहँजयभाई । स्थिरह्वैजपुयहचौपाई ॥ सखाधर्ममयअसरथजाके । जीतनकहँनक तहँरिपुताके ॥ हैंबहुभाँतिकार्यजगमाहीं । रामायणसोंसबह्वैजाहीं ॥ दोहा—सकलभाँतिमनकामना, यहदोहादातार ॥ रामायणमहँखोजि करि, करुयाकोअनुसार ॥ १३ ॥ महशोभाजुसमाजसुख, कहतनप नेखगेश ॥ वरणेशारदशेषपुनि, सोरसजानमहेश ॥ चौपाई ॥ वर्णौ एकरुचिरइतिहासा । तुलसिदासजोकीनतमासा ॥ द्राविडअरुकाशी महिपाला । कहुँएकत्ररहेकछुकाला ॥ अतिशयप्रीतिबढीदुहुँमाहीं ।

मनमेंकपट लेशकछुनाहीं ॥ गर्भवतीदोऊनृपनारी । चलीबातदुहुँहुन कहिडारी ॥ द्रावडकहीबातसुखरासी । सुनहुनृपतिकाशीकेवासी ॥ जन्मैंतवसुतसुताहमारे । अथवाममसुतसुतातिहारे ॥ अससंयोग होइजोनाहू । हमतुमकरहिं विवाहउछाहू ॥ सोहैंकारियहबातह ढाई । संततप्रीतिरहीअबभाई ॥ सुखदसमयआयोजबकोऊ ॥ निजनिजभवनगयेनृपदोऊ ॥ सोरठा ॥ कन्याभइदुहुँओर, जानीजातनदैवगति ॥ कहिपठयोसुतओर, द्रवडदूतकाशीगये ॥ ॥ २ ॥ चौपाई ॥ यहछलहोतभयोजिहिलाई । सोवहहेतु कहौंमैंगाई ॥ द्राविडपतिनिजगृहआयोजब । रानीसों असकहतभयो तब ॥ जोहोईकन्या दुहुँओरा । तौमैंप्राणतजबवरजोरा ॥ सुनिरानीरा- जासुखवानी । मनमहँ बहुत भाँतिभयमानी । उपरोहितकोलिहिसिबु लाई । नृपदुराययहबातबुझाई ममअहिवाततुम्हारेहाथा । नहिंतो प्रभुमैंहोबअनाथा ॥ रानीद्रव्यदीन्हनहिं थोरी । भइमायावशाद्विज मतिभोरी सेवकसेवकायनवशकीन्हेसि । आदरमानदानबहुदीन्हे सि ॥ दोहा ॥ सेवकएकदीनतोहिं, वाराणसीबसाय ॥ तेहितेपाइसि खबरिसब, तबयहकिहिसिउपाय ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ पुत्रनामधरियु सरखायो । द्वादशवर्षनद्वारदिखायो ॥ विदुषनकेहेउनकोऊपोपे । व्याहसमयसबकोऊदेखे ॥ मित्रमिलनहितचितअनुराग्यो । लेगीपठै व्याहपुनिमाँग्यो ॥ अतिआनंदचल्योसगवेगी । काशीनृपपहँआयेने गी ॥ नृपमनमुदितपत्रिकाबांची । लैआवोबरातरँगराची ॥ आयो व्याहनद्राविडराजा । खुलीबातउपजीअतिलाजा ॥ क्रोधातुरकाशी अवनीशा । कहकटिहौंद्राविडकरशीशा ॥ यहसुनिद्रावडअधिकडरा नेउ । निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ ॥ दोहा—अतिसभीतअ तिदीनह्वै, गयोजहँतुलसीदास ॥ पाहिपाहिकहिपाँयपरि, कहेउकरो दुखनास ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तबकाशीनृपकहँबुलवायो । तुलसि दासहितकरसमुझायो सुतकहिसुताजोव्याहनआयो । होयपुत्रतोहो यवधायो ॥ जोयहपुत्रहोयमहराजा । करहिंविवाहसाजिसबसाजा तुलसीदासवेदिविरचाई । तहँगणेशगौरीपधराई ॥ सिंहासनपैधरिरा मायण । नवदिनभरकीन्हींपारायण ॥ जोकन्यावरवेषबतायो । ठाढी कोसन्मुखबैठायो ॥ वक्ताआपसोश्रोताभई । दुनियातहँदेखनसबगई ॥

कथासकलजबबाँचिसुनाई । तासुशीशकरधरेउगोसाँई ॥ दोहा ॥ अरुयहचौपाईपढ़ी । रामसुमिरिप्रसन्न ॥ तिहिअवसरवरह्वैगयो, श्री रामायणधन्य ॥ १६॥ चौपाई ॥ मंत्रमहामणिविषयव्यालके । मेट तकठिनकुअंकभालके ॥ रामायणजबकहीगुसाँई । प्रगटनहितका शीफिरआई ॥ आदरकीन्हनपंडितकाऊ । कहैंजोहमसोकरोउपाऊ॥ जहिंस्थानकहैंतहँजाहू । पोथीअबनदेखावहुकाहू ॥ श्रीआनंदकान्ह ब्रह्मचारी । हमशिरमौरसुमहिमाभारी ॥ जोयाकोवेआदरकरिहैं । तोहमसबलैशीशहिधरिहैं ॥ गयेआनंदकान्हपहँतत्पर । करतप्रशंस प्रसन्नपरस्पर ॥ पोथीकीचर्चाधुनि कीन्ही । देखनहेतुसोलैधरिलीन्ही ॥ कछुदिनपढीसहितअनुरागन । गयेगोसाँईपोथीमाँगन ॥ दोहा ॥ पो थीदइअरुअसकहेउ, होईआदरलोक ॥ निजप्रमाणकरिलिखिदियो, यहअद्भुतश्लोक ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ आनंदकाननेह्यस्मिञ्जङ्गमस्तु लसीतरुः ॥ कवितामञ्जरीयस्यरामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥ छंद ॥ ध निधन्यतुलसीदासाजिनजगहेतुरामायणभनी । माहात्म्यअमितनक हिसकौंरसविषयमहँमोमतिसनी ॥ निजबुद्धिकेअनुसारकहिगोपाल सद्गुरुकीदया । रघुवीरयशकीअधिकताश्रीसंतजनकरिहहिंमया॥१॥ दोहा ॥ श्रीमततुलसीदासजी, ह्वैप्रसन्नवरदेहु ॥ रामायणमाहात्म्य सों, हरिजनकरहिंसनेहु ॥ १८॥ संवत्वसुनभनंदकु १९०८ मार्ग शुक्लगुरुवार ॥ एकादशिकहँकीन्हहै, अपनीमतिअनुसार ॥ १९ ॥ रामकोटश्रीअवधपुर, स्वामीरामप्रसाद ॥ तिनकीमहिमाकोकहै, वि श्वविदितमरयाद ॥२०॥ तिनतेगादीपांचई, सोस्वामीमैंदास ॥ लख णपुरीममजन्मक्षिति, रामनगरकेपास ॥२१॥ भोजनगरपरसिद्धद्विज, उत्तमपूरणदास ॥ तस्यात्मजगोपालकृत,यहमहात्म्यइतिहास॥२२॥

इति श्रीगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाड़ी–बंबई.

श्रीगणेशायनमः ।

अथ

तुलसीकृत रामायणस्य विषयानुक्रमणिका प्रारंभः ।

विषयाः	पृष्ठांकाः	विषयाः	पृष्ठांकाः

अयोध्याकाण्ड २.

इति।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-



बालकाण्डम् १.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

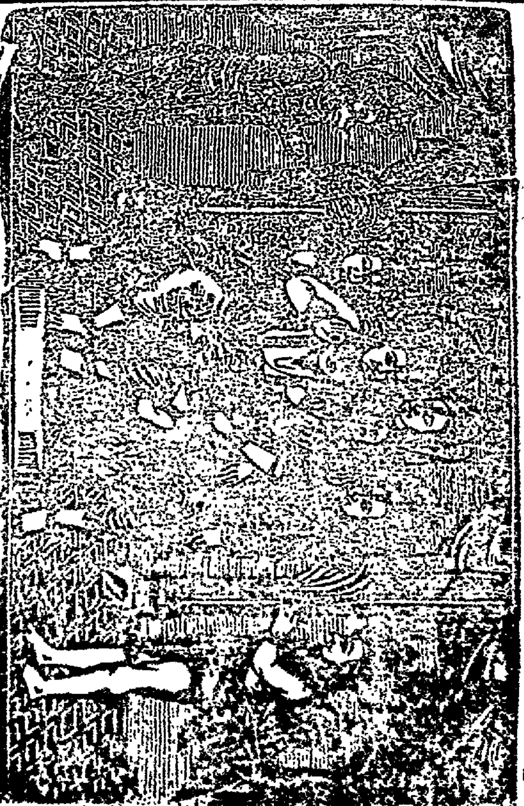
खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया.

❀ श्रीरामपञ्चायतन. ❀



❀ बालकाण्डम् १. ❀

दोहा—रामचरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥



चौपाई—मनकामना सिद्धि नरपावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्वेङ्कटेशो विजयतेतराम्।

अथ तुलसीकृतरामायणे बालकाण्डम्।

दोहा–शिवको पाणिग्रहण अरु, दशमुख जन्म महान ॥
रामजन्म अरु व्याह यह, बालकाण्डमें जान ॥ १ ॥

श्लोकाः–वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि॥ मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीताराम गुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम् ॥५॥ यन्मायावशवर्त्तिवि-

श्लोकार्थ–वर्णों और अर्थके समूहों और रसों छन्दों और मंगलोंकेभी करनेवाले गणेश सरस्वतीकी मैं वन्दना करताहूं ॥ १ ॥ जो श्रद्धा और विश्वासके रूपहैं जिन दोनोंके विना सिद्धलोग अपने अन्तःकरणमें स्थित ईश्वरको नहीं देखसक्ते ऐसे भवानी शंकरकी मैं वन्दना करताहूं ॥ २ ॥ ज्ञानस्वरूप और नाशरहित शंकररूपी गुरुकी वंदना करताहूं. जिनके आश्रितहोके टेढ़ा चन्द्रमाभी सर्वत्र वंदनीयहै ॥ ३ ॥ सीता रामके गुणोंका समूह जो पुण्यका वनहै उसमें विहार करनेवाले वाल्मीकि और महावीरकी मैं वंदना करताहूं ॥ ४ ॥ उत्पत्ति, पालन, प्रलयकी करनेवाली सब आनंदकी देनेहारी रामचंद्रकी प्यारी श्रीजानकीजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ५ ॥ जिनकी मायाके वशमें सम्पूर्ण संसार ब्रह्मादिक

श्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा यत्सत्त्वादमृषैव भा-
ति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेव भाति
हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारण
परं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिग-
मागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतो
ऽपि ॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषा
निबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०-जेहिसुमिरतसिधिहोइ, गणनायककरिवरवदन॥
करौअनुग्रहसोइ, बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥ १ ॥
मूक होहिं वाचाल, पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन ॥
जासुकृपासुदयाल, द्रवौसकलकलिमलदहन॥ २ ॥
नीलसरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिजनयन ॥
करौ सो मम उर धाम, सदाक्षीरसागरशयन ॥ ३ ॥
कुन्दइन्दु सम देह, उमारमण करुणाअयन ॥
जाहि दीनपर नेह, करहु कृपा मर्दनमयन ॥ ४ ॥
वन्दौं गुरुपद कंजं, कृपासिन्धु नररूप हरि ॥
महामोह तमपुंजं, जासु वचन रविकर निकर ॥ ५॥

देवता वर्त्ततेहैं ॥ जिनकी सत्यतासे यह नाशवान् जगत् सत्यसा प्रतीत हो-
ताहै. जैसे कि रस्सीके भ्रममें सर्प और भवसागरसे पार होनेकी इच्छा करने
वालोंको जिनके चरण नौकारूपी शोभायमानहैं वह सब कारणोंसे परे ईश्वर
जिनका राम नाम है तिनको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ६ ॥ अठारह पुराण-
चार वेद, छः शास्त्रोंका जो सम्मतहै वह इस रामायणमें कहाहै कहीं अन्यसे
भी अपने अंतःकरणके सुखके निमित्त तुलसीदास रघुनाथकी कथाको भा-
षामें निबंधकर कोमल विस्तार करतेहैं ॥ ७ ॥

---

१ हाथीकी शुण्ड तद्वत् । २ मुख । ३ कृपा । ४ घर । ५ गूँगे । ६ वक्ता । ७ गम्भीर ।
८ पाप । ९ कामदेवशिव । १० कमलवत् । ११ अंधकारसमूह । १२ समूह ।

वन्दौं गुरुपद पद्म परागा ❀ सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
अमिय मूरि मय चूरण चारू ❀ शमन सकल भव रुज परिवारू ॥
सुकृत शम्भु तनु विमल विभूती ❀ मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरणी ❀ किये तिलक गुणगण वशकरणी ॥
श्रीगुरुपद नख मणि गण ज्योती ❀ सुमिरत दिव्य दृष्टि हियहोती ॥
दलन मोह तम सोसु प्रकासू ❀ बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिं विमल विलोचन हियके ❀ मिटहिं दोष दुख भव रजनीके ॥
सूझहिं रामचरित मणिमानिक ❀ गुप्तप्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥

दोहा—यथा सुअंजन आंजिदृग, साधक सिद्धसुजान ॥
कौतुक देखहिं शैल वन, भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन ❀ नयन अमिय दृग दोष विभंजन ॥
तेहिकरि विमल विवेक विलोचन ❀ वर्णौं रामचरित भवमोचन ॥
वन्दौं प्रथम महीसुर चरणा ❀ मोहजनित संशय सब हरणा ॥
सुजन समाज सकल गुणखानी ❀ करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥
साधुचरित शुभ सरिस कपासू ❀ निरसविशदगुणमयफलजासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ वन्दनीय जेहि जग यशपावा ॥
मुद मंगलमय संत समाजू ❀ जौं जग जंगम तीरथराजू ॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा ❀ सरस्वति ब्रह्मविचार प्रचारा ॥
विधि निषेधमयकलिमलहरणी ❀ कर्मकथा रविनंदिनि वरणी ॥
हरि हर कथा विराजत वेनी ❀ सुनत सकल मुदमंगल देनी ॥
वट विश्वास अचल निज धर्म्मा ❀ तीरथराज समाज सुकर्म्मा ॥
सबहिं सुलभ सब दिन सब देशा ❀ सेवत सादर शमन कलेशा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥

दो०—सुनिसमुझहिंजनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग ॥
लहहिंचारिफलअछततनु, साधुसमाजप्रयाग ॥ २ ॥

मज्जन फल देखिय ततकाला ❀ काकहोहिंपिक बकहु मराला ॥

१ रज । २ पवित्र । ३ निर्मल । ४ आँख । ५ तमासा । ६ गंगाजी । ७ यमुनाजी ८ नाश । ९ प्रयागजी । १० स्नान । ११ कौवा । १२ हंस ।

मुनिआश्चर्य करहिं जनिकोई ❀ सतसंगति महिमा नहिंगोई ॥
वाल्मीकि नारद घटयोनी ❀ निजनिजमुखनकहीनिजहोनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना ❀ जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई ❀ जब जेहि यतन जहां जेहि पाई ॥

* वाल्मीकिजीने रामजीसे कहा कि, मैं पहिले व्याधेका काम करके अनेक जीवोंका घात किया करता और उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुंबका पालन करता था. एक दिन ऋषियोंसे अकस्मात् मार्गमें भेंट भई सो उनका भी जीवघात करनेके लिये मैं तत्परहुवा तब उन्होंने कहा कि जिन्होंने तुझको इस घोर कर्ममें प्रवृत्त कर रक्खाहै वोह तेरे पापके भी साझीहैं कि नहीं. तब मैं यह वार्ता सुन कुटुंबके लोगोंसे पूँछने गया उन्होंने कहा हम पापमें साझी नहीं तब मैं बडा दुःखी हो फिर ऋषियोंके पास गया उन्होंने मुझे अत्यन्त आतुर समझकर शिक्षादी उनके उपदेशसे आपका नाम विपरीत मरा मरा जपते २ मैं इस स्वधर्मगतिको प्राप्त हुवा कि आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थान पर पधारे। जब वेदव्यास पुराणोंको बना चुके और उन्हें संतोष न आया तब नारदजीसे कहा कि महाराज इसका कारण क्या? नारदजी बोले सुनो मैं पूर्वमें दासी पुत्र रहा परन्तु मेरी माता जिसके यहां काम करतीथी वह साधुसेवीथे उनके स्थानमें साधुलोग आवें तब साधुओंका जूंठा भोजन जो शेषरहै उसे मैं खाऊं और उनकी सेवा किया करूं उससे मेरी बुद्धि ऐसी निर्मल हुई कि माताके परलोक जानेके अनंतर मैं तपस्या करने चलागया अन्तमें शरीर त्यागकर इस गतिको पहुँचा कि ब्रह्मा का पुत्रहुवा यह सत्संगतिकी महिमा है इससे तुम अब कछु भगवद्यश कहो तो संतोष होगा तब व्यासजीने श्रीमद्भागवत बनाया। अगस्त्यजीने महादेवजीसे कहा कि मेरे पिता मित्रावरुण तप करतेथे कि आकाश मार्गमें रंभा शृंगार किये जातीथी सो उनकी दृष्टि उसपर पड़ी काम उत्पन्न भया. तब मित्रावरुणजीने वीर्यको घटमें रखदिया उससे मेरी उत्पत्ति हुई इससे मैं घटज हुआ सो ऐसी नीचबुद्धि और नीचस्थानसे उत्पन्न हुआ परन्तु सत्संगसे इस दशाको प्राप्त हुआ ॥

१ छिपी । २ अगस्त्यजी । ३ अपने अपने । ४ मूर्ख—स्थावर ।

सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❀ लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ॥
बिन सतसंग विवेक न होई ❀ रामकृपा बिन सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद मंगल मूला ❀ सोइफलसिधिसबसाधनफूला ॥
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई ❀ पारस परशि कुधातु सुहाई ॥
विधिवश सुजन कुसंगति परहीं ❀ फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं॥
विधि हरि हर कवि कोविद बानी ❀ कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मोहिंसन कहिजात न कैसे ❀ शाकवणिकमणिगुणगणजैसे ॥
दोहा-वन्दौं संत समान चित, हित अनहित नहिं कोउ॥
अंजलिगत शुभ सुमनजिमि, समसुगंध करदोउ ॥३॥
संत सरलचित जगतहित, जानि स्वभाव सनेहु ॥
बालविनय सुनि करिकृपा, रामचरणरति देहु ॥ ४ ॥
बहुरि वंदि खलगण सतिभाये ❀ जे बिनकाज दाहिनेहुँ बाये ॥
परहित हानि लाभ जिनकेरे ❀ उजरे हर्ष विषाद बसेरे ॥
हरि हर यश राकेश राहुसे ❀ पर अकाज भट सहसबाहुसे ॥
जे परदोष लखहिं सहसाखी ❀ परहित घृत जिनके मनमाखी ॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा ❀ अघ अवगुण धन धनिक धनेशा
उदय केतु समहित सबहीके ❀ कुम्भकर्ण सम सोवत नीके ॥
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं ❀ जिमि हिमउपल कृषीदलगरहीं॥
वन्दौं खल जस शेष सरोषा ❀ सहसवदन वर्णै परदोषा ॥
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना ❀ पर अघ सुनै सहसदश काना ॥
बहुरि शक्र सम विनवौं तेही ❀ संतत सुरानीक हित जेही ॥
वचन वज्र जेहिं सदा पियारा ❀ सहसनयन परदोष निहारा ॥
दोहा-उदासीन अरि मीत हित, सुनतजरहिंखलरीति॥
जानु पाणि युग जोरिकरि, विनती करौं सप्रीति ॥५॥
मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा ❀ तिन निज ओर न लाउब भोरा॥
वायस पालिय अति अनुरागा ❀ होहि निरामिष कबहुँ किकागा ॥

१ ज्ञान। २ लोहा। ३ पुष्प। ४ चंद्र। ५ पाला। ६ खेती। ७ इन्द्र। ८ काक। ९ मांस।

वंदौं संत असज्जन चरणा ❋ दुखप्रद उभय बीच कछुवरणा ॥
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं ❋ मिलत एक दारुण दुख देहीं ॥
उपजहिं एक संग जलमाहीं ❋ जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❋ जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती ❋ लहत सुयश अपलोक बिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ❋ गरलअनलकलिमलसरिव्याधू ॥
गुण अवगुण जानत सब कोई ❋ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दोहा-भले भलाईपै लहहिं, लहहिं निचाई नीच ॥
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच ॥ ६ ॥

खलगह अगुण साधु गुणगाहा ❋ उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहिते कछु गुण दोष बखाने ❋ संग्रह त्याग न बिन पहिंचाने ॥
भलेउ पोच सब विधि उपजाये ❋ गणि गुण दोष वेद बिलगाये ॥
कहहिं वेद इतिहास पुराना ❋ विधि प्रपंच गुण अवगुण साना ॥
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती ❋ साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू ❋ अमिय सजीवन माहुर मीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीशा ❋ लक्षि अलक्षि रंक अवनीशा ॥
काशी मग सुरसरि कर्मनाशा ❋ मरु मालव महिदेव गवासा ॥
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा ❋ निगमागम गुण दोष विभागा ॥

दोहा-जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार ॥
संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ॥७॥

अस विवेक जब देहि विधाता ❋ तब तजि दोष गुणहिं मनराता ॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई ❋ भलेउ प्रकृति वश चूक भलाई ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं ❋ दलि दुख दोष विमल यश देहीं ॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू ❋ मिटहि न मलिन स्वभाव अभंगू
कर सुवेष जगवंचक जेऊ ❋ वेष प्रताप पूजियत तेऊ ॥
उघरहिं अन्त न होइ निबाहू ❋ कालनेमि जिमि रावण राहू ॥

१ अमृत । २ मदिरा । ३ कर्मनाशा । ४ विष । ५ अथाह । ६ संसार । ७ नाश ।

किये कुवेष साधु सनमानू ❀ जिमि जग जाम्बवन्त हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ❀ लोकहु वेद विदित सब काहू ॥
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा ❀ कीचइ मिलइ नीच जल संगा ॥
साधु असाधु सदेनशुकसारी ❀ सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई ❀ लिखिय पुराण मंजु मसि सोई ॥
सोइ जल अनलअनिल संघाता ❀ होइ जलद जगजीवनदाता ॥

दोहा-ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग ॥
होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग॥८॥
सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ॥
शशिपोषकशोषकसमुझि, जगयशअपयशदीन्ह॥९॥
जड़ चेतन जग जीवजे, सकल राममय जानि ॥
वन्दौं सबके पदकमल, सदा जोरि युग पानि ॥१०॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ॥
वन्दौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥११॥

आकर चारि लाख चौरासी ❀ जातिजीव नभ जल थल वासी ॥
सियाराममय सब जगजानी ❀ करौं प्रणाम जोरि युग पानी ॥
जानि कृपा करि किंकर मोहू ❀ सब मिलि करहु छांड़िछल छोहू
निज बुधि बल भरोस मोहिनाहीं ❀ ताते विनय करउँ सब पाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुणगाहा ❀ लघुमति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ❀ मन अतिरंक मनोरथ राऊँ ॥
मति अतिनीच ऊंच रुचि आछी ❀ चहिय अमिय जग जुरै न छाछी ॥
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालवचन मन लाई ॥
ज्यों बालक कह तोतरिबाता ❀ सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता
हँसिहहिं क्रूर कुटिल कुविचारी ❀ जे परदूषण भूषण धारी॥
निजकवित्त केहि लाग न नीका ❀ सरस होइ अथवा अति फीका ॥
जे परभणित सुनत हरषाहीं ❀ ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥

१ आकाश। २ गृह। ३ ओषध। ४ दोनोंहाथ। ५ निशाचर। ६ कंगाल। ७ राजा। ८ कविताई।

जग बहु नर सर सरि समभाई ❀ जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृतसिन्धु[1] सम कोई ❀ देखि पूर विधु[4] बाढ़हि जोई ॥

दोहा-भाग छोट अभिलाष बड़, करउँ एक विश्वास ॥
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन, खल करिहैं उपहास ॥ १२ ॥

खल परिहास होत हित मोरा ❀ काक कहहिं कल कंठ कठोरा ॥
हंसहिं बक दादुर[5] चातकही ❀ हँसहिं मलिनखलविमलबतकही ॥
कवित रसिक न रामपद नेहू ❀ तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषा भणित मोरिमति भोरी ❀ हँसिबे योग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी ❀ तिनहिंकथा सुनिलागिहिफीकी ॥
हरि हर पदरति मति नकुतरकी ❀ तिन कहँ मधुर कथारघुवरकी ॥
रामभक्ति भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीना ❀ सकल कला सब विद्या हीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना ❀ छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा ❀ कवित दोष गुण विविध प्रकारा ॥
कवित विवेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहौं लिखि कागज कोरे ॥

दोहा-भणित मोर सब गुणरहित, विश्वविदितगुणएक ॥
सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिनके विमलविवेक[6] ॥ १३ ॥

यहि महँ रघुपति नाम उदारा ❀ अतिपावन पुराण श्रुति सारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भणित विचित्रसुकविकृतजोऊ ❀ राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥
विधुवदनी सब भाँति सँवारी ❀ सोह न वसन विना वर नारी ॥
सबगुण रहित कुकविकृतबानी ❀ राम नाम यश अंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुधताही ❀ मधुकर सरस सन्त गुण ग्राही ॥
यदपि कवित गुण एको नाहीं ❀ रामप्रताप प्रगट इहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग बड़ापन पावा ॥
धूमउ तजे सहज करुआई ❀ अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई ॥

१ तालाब । २ नदी । ३ समुद्र । ४ पूर्णमासीकाचन्द्रमा । ५ मेंढक । ६ निर्मलज्ञान ।

भणित भदेसवस्तुभलिवरणी ❀ रामकथा जग मंगलकरणी ॥
छं.-मंगलकरनिकलिमलहरनि,तुलसीकथारघुनाथकी॥
गति कूर कवितासरितकीज्योंपरमपावन पाथकी ॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलि,होइहिसुजनमनभावनी॥
भवभूतिअंगमशानकी,सुमिरतसुहावनिपावनी ॥१॥
दो.-प्रियलागहिंअतिसबहिंमम, भणितरामयशसंग ॥
दारु विचार कि करइ कोउ, वन्दिय मलयप्रसंग ॥
श्याम सुरभिपयविशदअति,गुणदकरहिंतेहिपान ॥
गिराग्रामसियरामयश, गावहिं सुनहिं सुजान॥१५॥
मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी ❀ अहिगिरिगज शिर सोह न तैसी ॥
नृप किरीट तरुणी तनु पाई ❀ लहहिं सकल शोभा अधिकाई ॥
तैसहि सुकवि कवित बुध कहहीं ❀ उपजहिं अनत अनत छविलहहीं
भक्तहेतु विधि भवन विहाई ❀ सुमिरत शारद आवत धाई ॥
रामचरित सर विनु अन्हवाये ❀ सो श्रम जाइ न कोटि उपाये ॥
कवि कोविद अस हृदय विचारी ❀ गावहिं हरिगुण कलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृत जन गुणगाना ❀ शिरधुनिगिरा लागिपछिताना ॥
हृदय सिन्धु मति सीप समाना ❀ स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो वरषै वर वारि विचारू ❀ होहिं कवित मुक्तामणिचारू ॥
दोहा-युक्ति वेधि पुनि पोहिये, रामचरित वर ताग ॥
पहिरहिं सज्जन विमलउर,शोभा अतिअनुराग॥१६॥
जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब वायस वेष मराला ॥
चलत कुपंथ वेदमग छांडे ❀ कपट कलेवर कलिमल भांडे ॥
वञ्चक भक्त कहाइ रामके ❀ किंकर कंचन कोह कामके ॥
तिनमहँ प्रथमरेख जगमोरी ❀ धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी ॥
जो अपने अवगुण सब कहऊं ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं ॥

---

१ फूहर। २ कलियुगके पापहरनहारी। ३ टेढी। ४ नदी। ५ जलकेसंयोगते। ६ महादेव ७ काष्ठ। ८श्यामगाय। ९श्वेतदूध। १० मुकुट। ११कौवा। १२। हंस १३छली। १४पाखण्डी।

तातें मैं अति अल्प[1] बखाने ❀ थोरेमहँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझि विविधविधि विनती मोरी ❀ कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी[2] ॥
एतेहुपर करिहहिं जे शंका ❀ मोहिंते अधिक तेजड़मतिरंका[3] ॥
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊं ❀ मति अनुरूप रामगुण गाऊं ॥
कहँ रघुपतिके चरित अपारा ❀ कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं ❀ कहहु तूँल[4] केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई ❀ करत कथा मन अति कदराई ॥

दोहा-शारद शेष महेश विधि[5], आगम निगम पुरान ॥
नेति नेतिकहि जासु गुण, करहिं निरन्तरगान ॥ १७ ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❀ तदपि कहे बिन रहा नकोई ॥
तहां वेद अस कारण राखा ❀ भजन प्रभाव भांति बहु भाखा ॥
एक अनीह अरूप अनामा ❀ अज सच्चिदानन्द परधामा ॥
व्यापक विश्वरूप भगवाना ❀ तेइँ धरिदेह चरित कृत नाना ॥
सो केवल भक्तनहित लागी ❀ परम कृपालु प्रणत अनुरागी ॥
जेहि जनपर ममता अरु छोहू ❀ तेहि करुणानिधिकीन्हनकोहू ॥
गई बहोरि गरीबनिवाजू ❀ सरल सबल साहब रघुराजू ॥
बुधवर्णहिं हरियश असजानी ❀ करहिं पुनीत सफल निजबानी ॥
तेहि बल मैं रघुपति गुणगाथा ❀ कहिहौं नाइ रामपद माथा ॥
मुनिनप्रथम हरि कीरति गाई ❀ तेहिमग चलत सुगममोहिं भाई ॥

दोहा-अति अपार जे सरितवर, जोनृप सेतु कराहिं ॥
चढिपिपीलिका[6]परमलघु, बिनुश्रमपारहिजाहिं ॥ १८ ॥

यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई ❀ करिहौं रघुपति कथा सुहाई ॥
व्यासआदिकवि पुंगव नाना ❀ जिन सादर हरिचरित बखाना ॥
चरणकमल वन्दौं सब केरे ❀ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कविन करौं परणामा ❀ जिन वरणे रघुपति गुणग्रामा ॥
जे प्राकृतकवि परमसयाने ❀ भाषा जिन हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे ❀ प्रणवउँ सबहि कपट छलत्यागे ॥

१ सूक्ष्म । २ खोरि । ३ अल्पबुद्धि । ४ रुई । ५ ब्रह्मा । ६ चींटी ।

होउ प्रसन्न देहु वरदानू ❀ साधु समाज भणित सनमानू ॥
जो प्रबन्ध बुध नाहिं आदरहीं ❀ सोश्रम वादि बाल कवि करहीं ॥
कीरतिभणितभूति भलि सोई ❀ सुरसरि सम सबकहँ हितहोई ॥
राम सुकीरति भणित भदेशा ❀ असमंजस अस मोहिं अँदेशा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सब मोरे ❀ सियनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जियजानी ❀ विमलयशहि अनुहरहुसुबानी ॥

दोहा-सरलकवितकीरतिविमल, सोइआदरहिंसुजान ॥
सहज वैर बिसराइ रिपु, जोसुनि करहिं बखान ॥१९॥
सोनहोइविनु विमल मति, मोहिं मतिबलअतिथोर ॥
करहुकृपा हरियशकहौं, पुनिपुनिसबहिंनिहोर ॥२०॥
कवि कोविद रघुवर चरित, मानस मंजु मराल ॥
बालविनयसुनि सुरुचिलखि, मोपर होहुकृपाल ॥२१॥

सो०-वन्दौं मुनिपदकंज, रामायण जिन निर्मयउ ॥
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित ॥६॥
वन्दौं चारौ वेद, भववारिधि वोहित सरिस ॥
जिनहिं नसपनेहुखेद, वर्णत रघुपति विशदयश ॥७॥
वन्दौं विधि पद रेणु, भवसागर जिन कीन यह ॥
सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष बारुणी ॥८॥

दोहा-विबुध विप्र बुध गुरुचरण, वन्दिकहौं करजोरि ॥
होइप्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि ॥२२॥

पुनि वन्दौं शारद सुर सरिता ❀ युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका ❀ कहत सुनत यक हर अविवेका ॥
गुरु पितु मातु महेश भवानी ❀ प्रणवौं दीनबन्धु दिन दानी ॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके ❀ हित निरूप सब विधि तुलसीके ॥
कलि विलोकि जगहित हर गिरिजा ❀ शाबरमंत्र जालजिन सिरिजा ॥

१ बड़ाई । २ कविताई । ३ सम्पत्ति । ४ गंगाजी । ५ कृपा । ६ स्वाभाविकवैर । ७ संसार-सागरके तरनेको नौकासमान । ८ श्रम । ९ अमृत । १० चन्द्रमा । ११ गाय ।

अनमिल आखर अर्थ न जापू ❀ प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला ❀ करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ ❀ वरणौं राम चरित चित भाऊ ॥
भणित मोरि शिवकृपा विभाती ❀ शशिसमाज मिलि मनहुँ सुराती
जो यह कथा सनेह समेता ❀ कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता॥
हैहहिं रामचरण अनुरागी ❀ कलिमल रहित सुमंगल भागी ॥

दोहा-स्वप्नहु सांचहु मोहिंपर, जो हरि गौरि पसाउ ॥
तो फुर होउ जो कहहुँ सब, भाषा भणित प्रभाउ॥२३॥

वन्दौं अवधपुरी अति पावनि ❀ सरयूसरि कलिकलुप नशावनि॥
प्रणवौं पुर नर नारि वहोरी ❀ ममता जिनपर प्रभुहि नथोरी ॥
सियनिंदक अघ ओघ नशाये ❀ लोक विशोक वनाइ वसाये ॥
वन्दौं कौशल्या दिशि प्राची ❀ कीरति जासु सकल जगमाची ॥
प्रगट्यो जहँ रघुपति शशि चारू ❀ विश्व सुखद खलकमल तुषारू ॥
दशरथ राउ सहित सब रानी ❀ सुकृत सुमंगल मूरति जानी ॥
करौं प्रणाम कर्म मन वानी ❀ करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥
जिनहिं विरचि बड़ भयउ विधाता ❀ महिमा अवधि राम पितु माता॥

सो०-वन्दौं अवध भुआल, सत्य प्रेम जेहि राम पद ॥
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृणइव परिहरेउ ॥ ९ ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू ❀ जाहि रामपद गूढ सनेहू ॥

* अयोध्यामें जब श्रीरामचंद्र राजा रहे तब एक रजककी स्त्री विना पतिकी आज्ञा पिताके भवन चलीगई तीन दिनके उपरान्त जब वह पतिके गृह फिर आई तब उससे रजक बोला कि तू मेरे घरसे जा मैं तुझे घरमें नहीं रक्खूंगा मैं राम नहींहूं कि जो सीता ११ ग्यारहमहीना रावणके घर रहीं फिर उसे अपने घरमें रखके रानी बनालिया ऐसा व्यंग्य वचन कहके स्त्रीको निकाल दिया इसकोसुन रामचन्द्रजीने सीताकोतपोवनकोभेजदिया और अयोध्यापुरीमें वसनेसे रजकको सीताकी निन्दाकेपापसेक्षमाकरकेपरमधामदिया।

१ शोभित। २ पूर्णमासी। ३ पूर्वदिशा। ४ पाला। ५ जनकजी।

योग भोग महँ राखेउ गोई ❀ राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरतके चरणा ❀ जासु नेम व्रत जाइ न वरणा ॥
रामचरण पंकज मन जासू ❀ लुब्ध[1] मधुप[2] इव तजै न पासू ॥
वन्दौं लक्ष्मण पद जलजाता ❀ शीतल सुभग भक्त सुखदाता ॥
रघुपति कीरति विमलपताका ❀ दण्डसमान भयो यशजाका ॥
शेषसहस्र शीश जगकारन ❀ जो अवतरेउ भूमिभयटारन ॥
सदासो सानुकूल रह मोपर ❀ कृपासिन्धु सौमित्र[3] गुणाकर ॥
रिपुसूदन[4] पद कमल नमामी ❀ शूर सुशील भरत अनुगामी ॥
महावीर विनवौं हनुमाना ❀ राम जासु यश आपु बखाना ॥

सोरठा–वन्दौं पवनकुमार, खल वन पावक ज्ञान घन ॥
जासु हृदय आगार, वसहिं राम शरचापधर ॥ १० ॥

कपिपति ऋक्ष निशाचर राजा ❀ अंगदादि जे कीश समाजा ॥
वन्दौं सबके चरण सुहाये ❀ अधम शरीर राम जिन पाये ॥
रघुपति चरण उपासक जेते ❀ खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
वन्दौं पद सरोज सब केरे ❀ जे बिनु काम रामके चेरे ॥
शुक सनकादि आदि मुनिनारद ❀ जे मुनिवर विज्ञान विशारद[5] ॥
प्रणवौं सबहिं धरणि धरि शीशा ❀ करहु कृपा जन जानि मुनीशा॥
जनकसुता जगजननि जानकी ❀ अतिशयप्रिय करुणानिधानकी
ताके युगपद कमल मनाऊं ❀ जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक ❀ चरणकमल वन्दौं सबलायक ॥
राजिवनयन धरे धनु शायक ❀ भक्त विपति भंजनसुखदायक ॥

दोहा–गिराअर्थजलबीचिसम, कहियतभिन्न न भिन्न ॥
वन्दौं सीताराम पद, जिनहिं परम प्रिय खिन्न[6] ॥ २४॥

वन्दौं राम नाम रघुवरके ❀ हेतु कृशानु[7] भानु[8] हिमकरके ॥
विधि हरि हर मय वेद प्राणसे ❀ अगुण अनूपम गुणनिधानसे ॥
महामंत्र जो जपत महेशू ❀ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥

१ लोभित।२भौंरा ।३सुमित्रानंदन ।४शत्रुहन ।५प्रवीण। ६ दीन। ७अग्नि। ८ सूर्य।

महिमा जासु जान गणराऊ ❀ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जानि आदिकवि नाम प्रतापू ❀ भयउ शुद्धकरि उलटा जापू ॥
×सहसनाम सम सुनि शिव बानी ❀ जपि जेई शिव संग भवानी ॥
हर्षे हेतु हेरि हरहीको ❀ किय भूषण तिय भूषण तीको॥

*ब्रह्माने सब देवतों से कहा कि प्रथम पूज्यपदके योग्य कौनहै ? सो यह सुन सब देवता आपसमें कलह करनेलगे तब ब्रह्माजी बोले तुम सबसे पृथ्वीकी परिक्रमा करके जो मेरे पास पहले आवेगा उसीको हम प्रथम पूज्य पद देवैंगे. यह सुन सब देवता अपने २ वाहन पर चढ दौडे पर गणेशजी मूषक वाहन होनेसे पीछे रहगये और बडे व्याकुल हुए. तब नारदजी उनको मिले और इनके परितापका कारण सुन कहा कि तुम पृथ्वीमें रामका नाम लिखकर प्रदक्षिणा करो और ब्रह्माके पास चले जाओ तब गणेशजी वैसा ही कर ब्रह्माके निकट गये जब और सब देवभी ब्रह्माके सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवतोंने मिलकै श्रीरामनामकी महिमा समझ गणेशजीको प्रथम पूज्य पद दिया इससे रामनामकी बड़ी महिमा है ॥

महादेवजीने स्वामिकार्त्तिक और गणेशजी दोनों पुत्रोंसे कहा कि जो पृथ्वीकी परिक्रमा करके पहले मेरे पास आवै उसका हम प्रथम पूज्य पद देवैंगे. ऐसेसुन कार्त्तिकेय मोरपर बैठ आगे गये और गणेशजी मूसेपर पीछे रहगये तहां अपनेको हारा मान नारदके उपदेशसे नामकी परिक्रमाकर महादेवजीके पास गये तब शिवजीने ध्यानपूर्वक विचारकर श्रीरामनामकी महिमा स्मरणकर गणेशजीको प्रथम पूज्यपद दिया ॥

×एक समय महादेवजी पाक बनाय थालमें परोस पार्वतीको पुकारा प्रिये ! आओ भोजन करो तब पार्वती बोलीं कि, मैं विष्णुसहस्रनामका पाठकर तब प्रसाद पातीहूं सो अभी पाठ नहीं किया तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! श्रीरामका नाम विष्णुके सहस्रनाम की तुल्यहै सो एकवार रामनाम उच्चारण कर आयकै भोजनकरो. तब पार्वती जीने वैसाही किया महादेवजी इनके मनकी प्रीति निश्चयपूर्वक और अपने वचन का विश्वास देखकै अति प्रसन्न होय पतिव्रता शिरोमणि किया और ऐसाभी है कि गौरी शंकर अर्द्धांगी स्वरूप तभीसे हुआ ॥

नाम प्रभाव जान शिवनीके ❀ कालकूट फल दीन्ह अमीके ॥
दोहा-वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥
रामनाम वर वर्ण युग, श्रावण भादों मास ॥ २५ ॥
अक्षर मधुर मनोहर दोऊ ❀ वर्ण विलोचन जनजिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सबकाहू ❀ लोकलाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके ❀ राम लषण सम प्रिय तुलसीके ॥
वर्णत वरण प्रीति बिलगाती ❀ ब्रह्मजीव सम सहज सँघाती ॥
नरनारायण सरिस सुभ्राता ❀ जगपालक विशेष जनत्राता ॥
भक्ति सुतिय कल करण विभूषण ❀ जगहित हेतु विमलविधुपूषण ॥
स्वादु तोष सम सुगति सुधाके ❀ कमठ शेष सम धर वसुधाके ॥
जनमन मंजु कंज मधुकरसे ❀ जीह यशोमति हरि हलधरसे ॥
दोहा-एक छत्र यक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ॥
तुलसी रघुवर नामके, वर्ण विराजत दोउ ॥ २६ ॥
समुझत सरस नाम अरु नामी ❀ प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप द्वौ ईश उपाधी ❀ अकथ अनादिसुसाधु झिसाधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू ❀ सुनि गुण भेद समुझि हैं साधू ॥
देखिय रूप नाम आधीना ❀ रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ॥
रूप विशेष नाम विनु जाने ❀ करतलगत न परहिं पहिंचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप विनु देखे ❀ आवत हृदय सनेह विशेषे ॥
नामरूपगति अकथ कहानी ❀ समुझत सुखद नजात बखानी ॥

* जब विष्णुने कच्छपावतार लेकर समुद्रको मथा तब उसमेंसे चौदह रत्न निकले सो सब देवता प्रसन्न होय अपनी २ इच्छाके अनुसार तेरह रत्नको बांटलिया और चौदहवां रत्न जो कालकूट अर्थात् हलाहल उसके निमित्त सब देवता महादेवजीका स्मरणकर उनसे कहने लगे कि महाराज ! इससे बचाइये नहींतो यह विष अपनी ज्वाला से तीनों लोकको भस्म कर देगा तब महादेवजीने श्रीराम यह शब्द मुँहसे उच्चारणकर उठायके विष पीगये उस के प्रतापसे उस विषने अमृतका फल दिया कि अमर होगये ॥

१धान। २श्रावणमास। ३ भादवँमास। ४ पवित्र। ५ विग्रहपरमदिव्यरूपरामस्वरूप।

अगुण सगुण बिच नामसुसाखी ❋ उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ॥
दोहा–राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार ॥२७॥
नाम जीहजपि जागहिं योगी ❋ विरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिंअनूपा ❋ अकथ अनामय नाम नरूपा ॥
जाना चहहिं गूढगति जेऊ ❋ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लवलाये ❋ होहिं सिद्धअणिमादिकपाये ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी ❋ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भक्त जग चारि प्रकारा ❋ सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहुँचतुरन कहँ नाम अधारा ❋ ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा ॥
चहुँयुग चहुँश्रुति नाम प्रभाऊ ❋ कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥
दोहा–सकल कामना हीनजे, राम भक्ति रसलीन ॥
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद, तिनहुँ किये मनमीन ॥ २८ ॥
अगुणसगुणदोउ ब्रह्मस्वरूपा ❋ अकथअगाध अनादिअनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते ❋ कियज्यहियुगनिजवशनिजबूते ॥
प्रौढसुजनजन जानहिं जनकी ❋ कहहुँप्रतीति प्रीतिरुचिमनकी ॥
एक दारुगत देखिय एकू ❋ पावक युग सम ब्रह्म विवेकू ॥
उभय अगम युगसुगमनामते ❋ कहउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी ❋ सत चेतन घन आनँदराशी ॥
असप्रभुहृदयअछतअविकारी ❋ सकलजीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपण नाम यतनते ❋ सोउ प्रकटत जिमिमोलरतनते ॥
दोहा–निर्गुण ते इहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार ॥
कहउँ नाम बड़ रामते, निज विचार अनुसार ॥२९॥
राम भक्तहित नरतनु धारी ❋ सहिसंकट किय साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा ❋ भक्तहोहिं मुद मंगल वासा ॥
राम एक तापस तिय तारी ❋ नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
ऋषिहित रामसुकेत सुताकी ❋ सहितसेन सुत कीन्ह बेबाकी ॥

१ वैराग्य । २छुटनाताहै । ३प्रवीण । ४ लकड़ी । ५अग्नि । ६षड्विकाररहित । ७ निर्गुणब्रह्म

सहित दोष दुख दास दुराशा ❀ दलै नाम जिमि रवि निशिनाशा॥
भंज्यो राम आप भवचापू ❀ भवभय भंजन नाम प्रतापू॥
दण्डकवन प्रभु कीन्ह सुहावन ❀ जनमन अमित नाम कियपावन॥
निशिचर निकर दले रघुनंदन ❀ नाम सकलकलिकलुषनिकंदन॥

दोहा–शबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ॥
नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुणगाथ॥३०॥

राम सुकण्ठ विभीषण दोऊ ❀ राखे शरण जान सब कोऊ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे ❀ लोक वेद वर विरद विराजे॥
राम भालु कपि कटक बटोरा ❀ सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं ❀ करहु विचार सुजन मनमाहीं॥
राम सकुल रण रावण मारा ❀ सीय सहित निजपुर पगुधारा॥
राजाराम अवध रजधानी ❀ गावत गुण सुर मुनि वर वानी॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिन श्रम प्रबल मोहदल जीती॥
फिरत सनेह मगन सुख अपने ❀ नाम प्रताप शोच नहिं सपने॥

दोहा–ब्रह्मरामते नामबड़, वरदायक वरदानि॥
रामचरितशतकोटिमहँ, लियमहेशजियजानि॥३१॥

नामप्रताप शम्भु अविनाशी ❀ साज अमंगल मंगलराशी॥
शुक सनकादि सिद्धि मुनियोगी ❀ नामप्रसाद ब्रह्मसुख भोगी॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू ❀ जगप्रियहरि हर हरि प्रिय आपू॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू॥
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू ❀ पायउ अचल अनूपम ठामू॥

* स्वायम्भुवमनु अरु शतरूपा इनके पुत्र राजा उत्तानपादकी दो स्त्री थीं तिसमें बड़ी रानीके पुत्र ध्रुव भए सो एक समय राजाकी छोटी रानी जिसपर राजाकी अत्यन्त प्रीतिथी उसके पास बैठेथे उस समय ध्रुव जाके पिताकी गोदमें बैठगये तब छोटी रानीने ध्रुवको गोदीसे उतार यह कहा कि मेरे पेट से जन्मलेते तब इस गोदीके अधिकारी होते इस बातको सुन ध्रुव ग्लानिसे

१ रीछ। २ बंदर। ३ देवता। ४ महादेवजी। ५ सौलक्षका एककोटि ऐसे एकसौ कोटि।

सुमिरि पवनसुत पावननामू * अपने वश करि राख्योरामू ॥
अपर*अजामिल गज गणिकाऊ * भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई * राम न सकहिं नाम गुणगाई ॥
दोहा-राम नाम को कल्पतरु, कलिकल्याण निवास ॥
जो सुमिरत भये भाँगते, तुलसी तुलसीदास ॥ ३२ ॥
चहुँ युग तीन काल तिहुँ लोका * भये नाम जपि जीव विशोका ॥
वेद पुराण सन्त मत येहू * सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मख विधि दूजे * द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मलमूलमलीना * पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
नाम कामतरु कालकराला * सुमिरत शमन सकल जगजाला ॥
रामनाम कलि अभिमतदाता * हितपर लोक लोक पितुमाता ॥
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू * रामनाम अवलम्बन एकू ॥
कालनेमि कलिकपट निधानू * रामसुमति समरथ हनुमानू ॥
दोहा-रामनाम नरकेसरी, कनककशिपु कलिकाल ॥
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालहिं दलि सुरसाल ॥ ३३ ॥
भाव कुभाव अनख आलसहू * नाम जपत मङ्गल दिशि दशहू ॥
सुमिरि सो रामनामगुणगाथा * करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारहिं सो सब भाँती * जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
राम सुस्वामि कुसेवक मोसे * निजदिशि देखि दयानिधि पोसे ॥

अपनी मातासे जाय कहकै तप करनेको चले पीछे राजाने ध्रुवको आय बहुत समझाया राज्य देने कहा परन्तु ध्रुव नहीं फिरे वहां नारदने ज्ञान उपदेश दिया सो जप करके ध्रुव अचललोकके अधिकारीहुए ।

*अजामिल मरते समय पुत्र नारायणको पुकार मुक्तिको प्राप्तहुआ, गजेन्द्रमोक्ष की कथा प्रसिद्धहै गणिका पिंगलाके यहां आधीरात तक कोई पुरुष न आया तब भगवान्में मनलगा पार हुई ।

१ हनुमान् । २ पापकीजड़ । ३ मछली । ४ वांछित आनंद व मोक्ष फल दाता है । ५ सहाय । ६ नृसिंह । ७ ईर्षा ।

लोकहुँ वेद सुसाहेब रीती ❀ विनय सुनत पहिंचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर ❀ पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकविकुकविनिजमतिअनुसारी ❀ नृपहि सराहत सब नरनारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला ❀ ईश अंश भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहिं सबन सुबानी ❀ भणित भक्तिमतिगतिपहिचानी॥
यह प्राकृत महिपाल स्वभाऊ ❀ जानिशिरोमणि कोशलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोते ❀ को जग मन्द मलिन मतिमोते ॥

दोहा-शठसेवककी प्रीतिरुचि, रखिहहिं रामकृपालु ॥
उपल[1]कियेजलयान[2]जेहि, सचिवसुमतिकपिभालु ३४
हमहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ॥
साहब सीतानाथसे, सेवक तुलसीदास ॥ ३५ ॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई[3]खोरी ❀ सुनि अघ नरकहुनाकसिकोरी॥
समुझिसहमिमोहिं अपडर अपने ❀ सोसुधि राम कीन्ह नहिं सपने ॥
सुनि अवलोकि सुचितचखु[4]चाही ❀ भक्ति मोरि मति स्वामि सराही॥
कहत नशाइ होइ अतिनीकी ❀ रीझत राम जानि जनजीकी ॥
रहत न प्रभु चितचूक कियेकी ❀ करत सुरत सौ बार हियेकी ॥
जेहिअघवधेउ व्याधजिमिबाली ❀ फिरिसुकंठ[5]सोइ कीन्हकुचाली ॥
सोइ करतूति विभीषण केरी ❀ स्वप्नेहु सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने ❀ राजसभा रघुवीर बखाने ॥

दोहा-प्रभु तरु तर कपिडार पर, ते किय आप समान॥
तुलसी कहूँ न रामसे, साहब शीलनिधान ॥ ३६ ॥
राम निकाई[6] रावरी, है सबहीको नीक ॥
जो यह सांचीहै सदा, तौ नीको तुलसीक ॥ ३७ ॥
यहिविधिनिजगुणदोषकहि, सबहिं बहुरिशिरनाय ॥
वरणौंरघुवरविशदयश, सुनिकलिकलुष[7]नशाय॥३८॥

---

१ पत्थर । २ नौका । ३ लागि । ४ हृदयके नेत्र । ५ सुग्रीव । ६ निर्म्मल । ७ पाप ।

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई ❀ भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥
कहिहौं सोइ सम्बाद बखानी ❀ सुनहु सकल सज्जन सुखमानी ॥
शम्भुकीन्ह यह चरित सुहावा ❀ बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा॥
सो शिव काकभुशुण्डहि दीन्हा ❀ रामभक्त अधिकारी चीन्हा ॥
तेहिसन याज्ञवल्क्य मुनिपावा ❀ तिन पुनि भरद्वाजप्रतिगावा ॥
ते श्रोता वक्ता समशीला ❀ समदरशी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना ❀ करतल[1]गत आमलक[2] समाना ॥
औरौ जे हरिभक्त सुजाना ❀ कहहिंसुनहिंसमुझहिंविधिनाना॥

दोहा-मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सु सूकरखेत[3] ॥
समुझ नहीं तसु बालपन, तब अति रहेहुँअचेत॥ ३०॥

दोहा-श्रोता वक्ता ज्ञाननिधि, कथा रामकी गूढ ॥
किमि समुझै यह जीवजड़, कलिमल ग्रसितविमूढ ॥

यदपि कही गुरु बारहिंबारा ❀ समुझिपरी कछु मति अनुसारा॥
भाषा बन्ध करब मैं सोई ❀ मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बलमोरे ❀ तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरणी ❀ करौं कथा भव सरिता[4] तरणी ॥
बुधे[5] विश्राम सकल जन रंजनि[6] ❀ रामकथा कलिकलुष विभंजनि[7]॥
रामकथा कलि पन्नग भरणी ❀ पुनि विवेक पावक कहँ अरणी[8] ॥
रामकथा कलि कामदगाई ❀ सुजन सजीवन मूरि सुहाई ॥
सोइ वसुधा[9]तल सुधातरंगिनि ❀ भवभंजनि भ्रमभेकैं[10] भुवंगिनि[11] ॥
असुर सेनसम नरक निकंदिनि ❀ साधु विबुध कुलहितगिरिनंदिनि[12]॥
सन्तसमाज पयोधि रमासी[13] ❀ विश्व भारधर अचल क्षमासी[14] ॥
यमगणमुँहमसि जग यमुनासी ❀ जीवनमुक्ति हेतु जनु काशी ॥
रामहि प्रियपावनि तुलसीसी ❀ तुलसिदास हित हियहुलसीसी॥

---

१ हथेली । २ आँरा । ३ बाराहक्षेत्र अयोध्याजीके पश्चिम तीन योजन सरयू तटपरहै । ४संसाररूपीनदीकोनौकासदृश।५ज्ञानी। ६ आनंददाता। ७ नाशकर्ता८लकडी। ९ पृथ्वी १० मेढक ११ सर्पिणि। १२ पार्व्वती। १३ लक्ष्मी। १४ धरती।

शिवप्रिय मेकल शैलसुतासी ❀ सकल सिद्धिप्रद संपतिरासी ॥
सद्गुणसुरगण अम्ब अदितिसी ❀ रघुवर भक्ति प्रेम परमितिसी ॥

दोहा—रामकथामंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह वन, सिय रघुवीर विहारु ॥४१॥

रामचरित चिन्तामणि चारू ❀ सन्तसुमति तिय शुभगशृँगारू ॥
जगमंगल गुणग्राम रामके ❀ दानि मुक्ति धन धर्म्म धामके ॥
सद्गुरु ज्ञान विराग योगके ❀ विबुध वैद भव भीम रोगके ॥
जननि जनक सियराम प्रेमके ❀ बीज सकल व्रत धर्म्म नेमके ॥
शमन पाप सन्ताप शोकके ❀ प्रियपालक परलोकलोकके ॥
सचिव सुभट भूपति विचारके ❀ कुम्भज लोभ उदधि अपारके ॥
काम कोह कलिमलकरिगणके ❀ केहरि शावक जन मन वनके ॥
अतिथिपूज्य प्रीतम पुरारिके ❀ कामदघन दारिद दवारिके ॥
मंत्र महामणि विषयव्यालके ❀ मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
हरण मोहतम दिनकरकरसे ❀ सेवक शालिपाल जलधरसे ॥
अभिमतदानि देवतरुवरसे ❀ सेवत सुलभ सुखद हरिहरसे ॥
सुकवि शरद नभ मनउडुगणसे ❀ राम भक्त जनजीवनधनसे ॥
सकल सुकृत फल भूरिभोगसे ❀ जगहित निरुपधि साधुलोगसे ॥
सेवक मन मानस मरालसे ❀ पावन गंग तरंग मालसे ॥

दोहा—कुपथकुतर्ककुचालिकलि, कपटदम्भपाषण्ड ॥
दहन राम गुण ग्राम इमि, ईंधन अनल प्रचण्ड ॥४२॥
रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद सब काहु ॥
सज्जन कुमुदचकोर चित, हित विशेष बड़लाहु ॥४३॥

कीन्ह प्रश्न जेहि भाँति भवानी ❀ जिहि विधि शंकरकहाबखानी ॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❀ कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिं होई ❀ जनि आश्चर्य्य करैं सुनिसोई ॥

१ हाथी। २ सिंह। ३ सूर्य्यनारायण। ४ धान। ५ मेघ। ६ कल्पवृक्ष। ७ नक्षत्र।

कथा अलौकिकसुनहिंजेज्ञानी ❀ नहिंआश्चर्य्य करहिं असजानी ॥
रामकथाकी मिति जगनाहीं ❀ असप्रतीति जिनके मनमाहीं ॥
नानाभाँति राम अवतारा ❀ रामायण शत कोटि अपारा ॥
कल्पभेद हरि चरित सुहाये ❀ भाँति अनेक मुनीशनगाये ॥
करिय न संशय अस उर आनी ❀ सुनिय कथा सादररतिमानी ॥
दोहा-राम अनन्त अनन्तगुण, अमितकथाविस्तार ॥
सुनि आश्चर्य्य न मानिहहिं, जिनके विमल विचार ॥
इहि विधि सब संशय करिदूरी ❀ शिरधरि गुरु पद पंकज धूरी ॥
पुनि सबही विनवौं करजोरी ❀ करत कथा जेहि लाग न खोरी ॥
सादर शिवहि नाइ पदमाथा ❀ वरणौं विशद रामगुण गाथा ॥
सम्वत सोरहसै इकतीसा ❀ करौं कथा हरिपद धरि शीशा ॥
नौमी भौमवार मधुमासा ❀ अवधपुरी यह चरित प्रकाशा ॥
जेहि दिनरामजन्म श्रुतिगावहिं ❀ तीरथसकल तहां चलि आवहिं ॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा ❀ आय करहिं रघुनायकसेवा ॥
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना ❀ करहिंराम कलकीरति गाना ॥
दोहा-मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु, पावनसरयूनीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यानउर, सुन्दर श्याम शरीर ॥ ४५ ॥
दरश परश मज्जन अरु पाना ❀ हरै पाप कह वेद पुराना ॥
नदीपुनीतअमितमहिमा अति ❀ कहिनसकै शारदाविमलमति ॥
रामधामदापुरी सुहावनि ❀ लोक समस्त विदितजगपावनि ॥
चारिखानि जगजीव अपारा ❀ अवध तजे तनु नहिंसंसारा ॥
सबविधि पुरी मनोहरजानी ❀ सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी ॥
विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा ❀ सुनत नशाहिं काममददम्भा ॥
रामचरित मानस यह नामा ❀ सुनत श्रवण पाइय विश्रामा ॥
मनकरिविषय अनल बनजरई ❀ होइ सुखी जो इहि सर परई ॥
रामचरित मानस मुनिभावन ❀ विरचेउ शम्भु सुहावनपावन ॥

१ दुर्लभ । २ भीति । ३ । निर्मल । ४ सुंदर । ५ स्नान । ६ कान । ७ अग्नि

त्रिविधदोष दुख दारिद दावन ❀ कलिकुचालिकलिकलुषनशावन
रचिमहेश निज मानसराखा ❀ पाइ सुसमय शिवासन भाखा ॥
ताते रामचरित मानसवर ❀ धरेउनाम हिय हेरि हरषिहर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ❀ सादर सुनहु सुजन मनलाई ॥

दोहा—जसमानस जेहिविधि भयो, जगप्रचारजेहिहेतु॥
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा वृषकेतु ॥

शम्भुप्रसाद सुमति हियहुलसी ❀ रामचरित मानस कवि तुलसी ॥
करउँ मनोहर मति अनुहारी ❀ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू ❀ वेद पुराण उदधि घन साधू ॥
वर्षहिं राम सुयश वरवारी ❀ मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुण जो कहहिं वखानी ❀ सोइ स्वच्छता करै मलहानी ॥
प्रेमभक्ति जो वरणि न जाई ❀ सोइ माधुरता शीतलताई ॥
सोजल सुकृत शालि हित होई ❀ रामभक्त जगजीवन सोई ॥
मेधा महिगत सो जलपावन ❀ सिमिटि श्रवणमगचलेउसुहावन॥
भरेउ सुमानस शिथिल थिराना ❀ सुखद शीत रुचि चारु चिराना॥

दोहा—सुठि सुन्दर सम्बाद वर, विरचेउ बुद्धि विचारि ॥
ते यहि पावन सुभगसर, घाट मनोहर चारि ॥४७॥

सप्तप्रवन्ध सुभग सोपाना ❀ ज्ञान नयन निरखतमनमाना ॥
रघुपतिमहिमा अगुण अवाधा ❀ वर्णब सो वर वारि अगाधा ॥
रामसीययश सलिल सुधासम ❀ उपमा वीचि विलासमनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❀ युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ❀ सोइ वहुरंग कमल कुल सोहा ॥
अर्थ अनूप स्वभाव सुभासा ❀ सोइ पराग मकरन्द सुवासा ॥
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला ❀ ज्ञान विराग विचार मराला ॥
धुनि अवरेव कवित गुणजाती ❀ मीन मनोहर ते वहुभाँती ॥

---

१ काम, क्रोध, लोभ। २ पार्वती। ३महादेव। ४ समुद्र। ५ बादल। ६श्रेष्ठपानी। ७शिव-पार्वती, कागभुशुण्डि—गरुड, याज्ञवल्क्य—भरद्वाज, गुसाईजीकेगुरुअरु गोसाईंजीकासम्वाद।

अर्थ धर्म कामादिक चारी ❀ कहव ज्ञान विज्ञान विचारी ॥
नवरस जप तप योग विरागा ❀ ते सव जलचर चारु तडागा ॥
सुकृती साधु नाम गुण गाना ❀ तेविचित्र जल विहँग समाना ॥
संत सभा चहुँदिशि अँवराई ❀ श्रद्धाऋतु वसंत समगाई ॥
भक्ति निरूपण विविधविधाना ❀ क्षमा दया द्रुम लता विताना ॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना ❀ हरिपद रति रस वेद वखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा ❀ तेइ शुक पिक वहु वरण विहंगा॥

दोहा–पुहुप वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु ॥
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचनचारु ॥ ४८ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❀ ते यहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❀ ते सुरवर मानस अधिकारी ॥
अतिखल जे विषयी वक कागा ❀ इहिसर निकटनजाहिं अभागा॥
शंबुक भेक शिवार समाना ❀ इहां न विषय कथा रसनाना ॥
तेहि कारण आवत हिय हारे ❀ कामी काक वलाक विचारे ॥
आवत इहिसर अतिकठिनाई ❀ राम कृपा विनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❀ तिनके वचन व्याघ्र हरि व्याला॥
गृहकारज नाना जंजाला ❀ तेइ अति दुर्गम शैल विशाला ॥
वन वहु विषय मोहमदमाना ❀ नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥

दोहा–जे श्रद्धा शम्बँल रहित, नहिं संतन कर साथ ॥
तिनकहँ मानस अगम अति, जिनहिंनप्रियरघुनाथ ॥

जोकरि कष्ट जाइ पुनि कोई ❀ जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जडताजाड विषम उर लागा ❀ गयहु न मज्जन पाप अभागा ॥
करिनजाइ सर मज्जन पाना ❀ फिरि आवैं समेत अभिमाना ॥
जो वहोरि कोउ पूछन आवा ❀ सरनिंदा करि ताहि सुनावा ॥
सकल विघ्न व्यापहिं नहिंतेही ❀ राम कृपाकरि चितवहिं जेही ॥

१ अपनीउपासनाअनुकूलवेद संत गुरुवाक्यकोनिजअनुभवकीएकताकरकेमतीतिकरना। २ वृक्ष। ३ पक्षी। ४ पुष्प। ५ घोंघा। ६ मेढक। ७ सम्पत्ति।

सोइ सादर सरमज्जन करहीं ❀ महाघोर त्रयताप न जरहीं ॥
तेनर यह सर तजहिं न काऊ ❀ जिनके रामचरण भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह इहि सर भाई ❀ सो सतसंग करै मन लाई ॥
अस मानस मानसचखुचाही ❀ भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥
बढ्यो हृदय आनंद उछाहू ❀ उमँगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरितासों ❀ राम विमल यश जल भरितासों ॥
सरयूनाम सुमंगल मूला ❀ लोक वेद मत मंजुलकूला ॥
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि ❀ कलिमलतटतरु मूलनिकंदिनि ॥

दोहा—श्रोता त्रिविध समाजपुर, ग्राम नगर दुहुँकूल ॥
संत सभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल ॥५०॥

रामभक्ति सुरसरि तहँ जाई ❀ मिली सुकीरति सरयु सुहाई ॥
सानुज रामसमरँ यशपावन ❀ मिलेउ महानदशोण सुहावन ॥
युग बिच भक्ति देवधुनिधारा ❀ सोहतिसहितसुविरति विचारा ॥
त्रिविधतापत्रासक त्रिमुहाँनी ❀ रामस्वरूप सिंधु समुहानी ॥
मानसमूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजन मनपावन करिही ॥
बिच बिच कथा विचित्र विभागा ❀ जनु सरि तीर तीर वन बागा ॥
उमा महेश विवाह बराती ❀ ते जलचर अगणित बहुभाँती ॥
रघुबर जन्म अनन्द बधाई ❀ भँवर तरंग मनोहरताई ॥

दोहा—बाल चरित चहुँ बंधुके, बनज विपुल बहुरंग ॥
नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर बारिविहंग ॥५१॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छविछाई ॥
नदी नाव बटु प्रश्न अनेका ❀ केवट कुशल उतर सविवेका ॥
सुनि अनुकथन परस्परहोई ❀ पथिक समाज सोह सरिसोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबन्ध राम वर बानी ॥
सानुँजराम विवाह उछाहू ❀ सोशुभ उमँग सुखद सबकाहू ॥

१ अधिभूत,अध्यात्म, अधिदैव। २ हृदयके नेत्र। ३ संग्राम। ४ सरयू गंगा सरस्वती जीकासंगम। ५ ब्रह्मचर्यसहविद्यार्थी। ६ ज्ञानवान् पण्डित। ७ भाइयोंसहित।

कहत सुनत हर्षहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती जन मुदित नहाहीं ॥
राम तिलक हित मंगल साजा ❀ पर्वयोग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति कैकयी केरी ❀ परीजासु फल विपति घनेरी ॥
दोहा-शमन अमित उत्पात सब, भरत चरित जप याग॥
कलिअघखलअवगुणकथन, तेजलमलबककाग ५२
कीरति सरित छहूँ ऋतु रूरी ❀ समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिम शैलसुता शिवब्याहू ❀ शिशिरसुखदप्रभु जन्म उछाहू॥
बरणब राम विवाह समाजू ❀ सो मुद मंगलमय ऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू ❀ पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
वर्षा घोर निशाचररारी ❀ सुरकुल शालि सुमंगलकारी ॥
राम राज्य सुख विनय बडाई ❀ विशद सुखद सोइ शरदसुहाई ॥
सती शिरोमणि सिय गुणगाथा ❀ सोइगुण अमल अनूपम पाथा ॥
भरत स्वभाव सुशीतल ताई ❀ सदा एकरस बरणि न जाई ॥
दोहा-अवलोकनि बोलनि मिलनि,प्रीति परस्परहास॥
भायप भलि चहुँ बंधुकी, जल माधुरी सुवास ॥ ५३ ॥
आरति विनय दीनता मोरी ❀ लघुता ललित सुवारि न थोरी ॥
अद्भुत सलिलसुनतगुणकारी ❀ आस पियास मनोमलहारी ॥
राम सुप्रेमहि पोषतपानी ❀ हरतसकल कलिकलुषगलानी॥
भवश्रम शोषक तोषक तोषा ❀ शमन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
काम क्रोध मद मोह नशावन ❀ विमल विवेक विराग बढावन ॥
सादर मज्जन पान कियेते ❀ मिटत पाप परिताप हियेते ॥
जिन यहिबारि न मानसधोये ❀ तिन कायर कलिकाल बिगोये ॥
तृषित निरखि रविकर भवबारी ❀ फिरहिं मृगा जिमि जीवदुखारी ॥
दोहा-मतिअनुहारिसुवारिवरगुण, गणमन अन्हवाय ॥
सुमिरि भवानी शंकरहि, कहकविकथासुहाय॥५४॥
अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धारि पाय प्रसाद ॥

१ शोभित । २ पवित्र । ३ घाम । ४ लीन । ५ पियासे । ६ अनुसार ।

कहौं युगल मुनिवर्य्य कर, मिलन शुभग सम्वाद५५
भरद्वाज जिमिप्रश्नकिय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय॥
प्रथम मुख्य सम्वाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय॥५६॥
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ❀ जिनहिं रामपद अति अनुरागा॥
तापस शम दम दयानिधाना ❀ परमारथ पथ परम सुजाना॥
माघ मकरगत रवि जब होई ❀ तीरथपतिहिं आव सब कोई॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी॥
पूजहिं माधवपद जलजाता ❀ परशि अक्षयवट हर्षित गाता॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन ❀ परमरम्य मुनिवर मनभावन॥
तहां होइ मुनि ऋषय समाजा ❀ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परस्पर हरि गुणगाहा॥
दोहा-ब्रह्मनिरूपण धर्म विधि, वर्णहिं तत्त्व विभाग॥
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग॥५७॥
इहिप्रकार भरि मकर नहाहीं ❀ पुनिसब निज निज आश्रमजाहीं॥
प्रति सम्वत असहोइ अनन्दा ❀ मकरमज्जि गवनहिं मुनिवृन्दा॥
एकबार भरि मकर नहाये ❀ सब मुनीश आश्रमनि सिधाये॥
याज्ञवल्क्यमुनि परम विवेकी ❀ भरद्वाज राखेउ पद टेकी॥
सादर चरण सरोज पखारे ❀ अति पुनीत आसन बैठारे॥
करिपूजा मुनि सुयशबखानी ❀ बोले अति पुनीत मृदुबानी॥
नाथ एक संशय बड़ मोरे ❀ करतल वेद तत्त्व सब तोरे॥
कहत मोहिं लागत भय लाजा ❀ जो न कहौं बड़ होइ अकाजा॥
दोहा-सन्त कहहिंअसनीतिप्रभु, श्रुतिपुराणजोगाव॥
होइ न विमल[1] विवेक[2] उर, गुरुसन किये दुराव॥५८॥
अस विचारि प्रगट्यो निजमोहू ❀ हरहुनाथ करि जन पर छोहू॥
रामनाम कर अमित प्रभावा ❀ सन्त पुराण उपनिषद गावा॥
सन्तत[3]जपत शम्भु अविनाशी ❀ शिव भगवान ज्ञान गुणराशी॥

---

१ निर्मल। २ ज्ञान। ३ निरंतर।

आकरचारि जीव जग अहहीं ❀ काशी मरत परमपद लहहीं ॥
सोपि राम महिमा मुनिराया ❀ शिव उपदेश करत करिदाया ॥
रामकवन प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं ॥
एक राम अवधेश कुमारा ❀ तिनकर चरित विदित संसारा ॥
नारि विरह दुख लहेउ अपारा ❀ भये रोष रण रावण मारा ॥

दोहा-प्रभुसोइरामकिअपरकोउ, जाहिजपतत्रिपुरारि॥
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ॥ ५९ ॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी ❀ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ❀ तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई ॥
रामभक्त तुम मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
चाहहु सुना राम गुण गूढा ❀ कीन्हेउ प्रश्न मनहु अतिमूढा ॥
तात सुनहु सादर मनलाई ❀ कहहुँ रामकी कथा सुहाई ॥
महामोह महिषेश विशाला ❀ रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा शशि किरणसमाना ❀ सन्तचकोर करहिं तेहिपाना ॥
ऐसे संशय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी ॥

दोहा-कहौंस्वमतिअनुहारिअब, उमाशम्भुसम्वाद ॥
भयउसमयजेहिहेतुयह, सुनिमुनिमिटहिंविषाद ६०

एक बार त्रेता युग माहीं ❀ शम्भु गये कुम्भजऋषि पाहीं ॥
संगसती जगजननिभवानी ❀ पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी ॥
रामकथा मुनिवर्य्य बखानी ❀ सुनी महेश परम सुखमानी ॥
ऋषिपूंछी हरि भक्ति सुहाई ❀ कही शम्भु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति गुणगाथा ❀ कछु दिन तहां रहे गिरिनाथा ॥
मुनिसन विदा मांगि त्रिपुरारी ❀ चले भवन सँग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा ❀ हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा ॥
पिता वचन तजि राज्य उदासी ❀ दण्डकवन विचरत अविनाशी ॥

१ खानि । २ प्रकट । ३ नारिश्रीसीताजी । ४ महिमा । ५ भवानी । ६ चन्द्र । ७ जगन्माता । ८ पृथ्वीकाभार उतारनेको ।

दोहा-हृदयविचारतजातहर, केहि विधि दरशन होइ॥
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सब कोइ॥ ६१ ॥
सो०-शंकर उर अतिक्षोभ, सती न जानहिं मर्म सोइ॥
तुलसी दरशन लोभ, मनडर लोचन लालची॥ ११ ॥
रावण मरण मनुज कर यांचा ❀ प्रभु विधि वचनकीन्हचहसाँचा॥
जोनहिं जाउँ रहै पछितावा ❀ करतविचार न बनत बनावा॥
यहि विधि भये शोचवशईशा ❀ ताही समय जाय दशशीशा॥
लीन्ह नीच मारीचहिसंगा ❀ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा॥
करिछल मूढ हरी वैदेही ❀ प्रभुप्रताप उर विदित न तेही॥
मृगवधि बन्धुसहित हरिआये ❀ आश्रमदेखि नयन जल छाये॥
विरह विकल नरइव रघुराई ❀ खोजत विपिनं फिरत दोउभाई॥
कबहूं योग वियोग न जाके ❀ देखा प्रगट विरह दुख ताके॥
दोहा-अतिविचित्र रघुपति चरित, जानहिं परमसुजान
जेमतिमन्द विमोह वश, हृदयधरहिंकछुआन॥६२॥
शम्भुसमय तेहि रामहिं देखा ❀ उपजा हिय अति हर्ष विशेषा॥
भरि लोचन छवि सिंधु निहारी ❀ कुसमयजानि न कीन्ह चिन्हारी॥
जय सच्चिदानन्द जगपावन ❀ असकहिचलेउमनोजनशावन॥
चलेजात शिव सती समेता ❀ पुनिपुनिपुलकित कृपानिकेता॥
सती सो दशा शम्भुकी देखी ❀ उर उपजा संदेह विशेखी॥
शंकर जगत वन्द्य जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावतशीशा॥
तिन नृपसुतहि कीन्ह परणामा ❀ कहि सच्चिदानन्द परधामा॥
भये मगन छवि तासुविलोकी ❀ अजहुँ प्रीति उर रहति नरोकी॥
दोहा-ब्रह्म जोव्यापकविरजअज, अकलअनीहअभेद
सोकि देह धरि होइनर, जाहि न जानत वेद ॥६३॥
विष्णुजो सुरहित नरतनु धारी ❀ सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी॥

१ रावण। २ सीताजी। ३ कपटमृगमारीच। ४ बन। ५ कामदेव। ६ शोभा।
७ देखकर। ८ व्याप्त। ९ कलारहित।

खोजत सोकि अज्ञ इव नारी ❀ ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी ॥
शम्भु गिरा पुनि मृषा नहोई ❀ शिव सर्वज्ञ जान सब कोई ॥
असंसंशय मन भयउ अपारा ❀ होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी ❀ हर अन्तर्यामी सब जानी ॥
सुनहु सती तव नारि स्वभाऊ ❀ संशय अस न धरिय उर काऊ ॥
जासु कथा कुंभजऋषि गाई ❀ भक्ति जासु मैं मुनिहि सुनाई ॥
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ❀ सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छंद-मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेहिध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुराण आगमजासुकीरतिगावहीं॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्मभुवननिकायमायापतिधनी ॥
अवतरेउ अपने भक्तहित निजतंत्रनितरघुकुलमनी॥

सो०-लाग न उर उपदेश, यदपि कहेउ शिवबार बहु॥
बोले बिहँसि महेश, हरिमाया बल जानि जिय॥१२॥

जो तुम्हरे मन अति सन्देहू ❀ तौ किन जाइ परीक्षा लेहू ॥
तबलगि बैठि रहौं वट छाहीं ❀ जबलगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं ॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करहु सो यत्न विवेक विचारी ॥
चली सती शिव आयसु पाई ❀ करहिं विचार करौं का भाई ॥
यहां शम्भु अस मन अनुमाना ❀ दक्षसुता कर नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहे न संशय जाहीं ❀ विधि विपरीत भलाई नाहीं ॥
होइहै सोइ जो रामरचिराखा ❀ को करि तर्क बढावहि शाखा ॥
अस कहि जपनलगे हरि नामा ❀ गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

दोहा-पुनिपुनिहृदयविचारकरि, धरिसीताकररूप ॥
आगे है चलिपंथ तेहि, ज्यहि आवत सुरभूप ॥ ६४ ॥

लक्ष्मण दीख उमाकृत वेषा ❀ चकित हृदय भ्रम भयउविशेषा॥
कहिनसकत कछु अतिगंभीरा ❀ प्रभुप्रभाव जानत मतिधीरा ॥

१ अज्ञान। २ वाणी। ३ असत्य।४ अन्तर्यामी। ५ आज्ञा। ६ मार्ग। ७ स्वाभाविक सामान्य एक गुण श्रीरामचन्द्रजीको।

सतीकपट जानेउ सुरस्वामी ❀ समदर्शी सब अन्तर्यामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ❀ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहाँ दुराऊ ❀ देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ ॥
निजमाया बल हृदय बखानी ❀ बोले बिहँसि राम मृदुबानी ॥
जोरिपाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू ❀ पिता समेत लीन्ह निजनामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू ❀ विपिन अकेलि फिरहु केहिहेतू ॥

दोहा—रामवचन मृदु गूढ सुनि, उपजा अति संकोच ॥
सती सभीत महेश पहँ, चलीं हृदय बड़शोच ॥६५॥

मैं शंकरकर कहा न माना ❀ निज अज्ञान राम पहँ आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा ❀ उर उपजा अति दारुण दाहा ॥
जाना राम सती दुखपावा ❀ निजप्रभाव कछु प्रगटजनावा ॥
सती दीख कौतुक मगजाता ❀ आगे राम सहित सियभ्राता ॥
फिरि चितवा पाछे प्रभुदेखा ❀ सहित बंधु सिय सुंदरवेषा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना ❀ सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना ॥
देखे शिव विधि विष्णु अनेका ❀ अमित प्रभाव एकते एका ॥
वन्दत चरण करत प्रभुसेवा ❀ विविध वेष देखे सब देवा ॥

दोहा—सती विधात्री इन्दिरा, देखीं अमित अनूप ॥
जेहिजेहिवेषअजादिसुर, तेहितेहितनुअनुरूप ॥६६॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❀ शक्तिन सहित सकल सुर तेते ॥
जीव चराचर जे संसारा ❀ देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा ❀ रामरूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❀ सीता सहित न वेष घनेरे ॥
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मण सीता ❀ देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदयकम्प तनु सुधि कछु नाहीं ❀ नयन मूँदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी ❀ कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा ❀ चली तहाँ जहँ रहे गिरीशा ॥

१ हाथ। २ पुनि। ३ बन। ४ तमाशा। ५ बेसाहीं।

दोहा--गई समीप महेश तब, हँसि पूँछी कुशलात ॥
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सब बात॥६७॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ ❀ भयवश शिवसन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं ❀ कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहिनाईं ॥
जो तुम कहा सो मृषा नहोई ❀ मोरे मन प्रतीति असि सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरिध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरितसबजाना ॥
बहुरि राम मायहि शिरनावा ❀ प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना ❀ हृदयविचारत शम्भु सुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कृत वेषा ❀ शिवउर भयउ विषादविशेषा ॥
जो अब करौं सतीसन प्रीती ❀ मिटै भक्तिपथ होइ अनीती ॥

दोहा--परमप्रेम नहिं जाइ तजि, किये प्रेम बड़ पाप ॥
प्रगट न कहत महेशकछु, हृदयअधिकसंताप॥६८॥

तबहिं शम्भु प्रभुपद शिरनावा ❀ सुमिरत राम हृदय अस आवा ॥
यहि तनु सतिहि भेंट मोहिंनाहीं ❀ शिवसंकल्प कीन्ह मनमाहीं ॥
असविचारि शंकर मतिधीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥
चलत गगन भइ गिरा सुहाई ❀ जयमहेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
अस प्रण तुम बिन करै को आना ❀ रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सती उरशोचू ❀ पूँछा शिवहि समेत सँकोचू ॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
यदपि सती पूँछा बहुभाँती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दोहा--सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ ॥
कीन्ह कपट मैं शंभुसन, नारि सहज जड़ अज्ञ॥६९॥

सो०-जलपयसरिसबिकाय, देखहुप्रीतिकिरीतिभलि ॥
बिलग होत रसजाय, कपट खटाई परतही ॥१२॥

हृदय शोच समुझत निजकरणी ❀ चिन्ता अमित जाइनहिंवरणी॥
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा ❀ प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥

१ दुःख । २ भोग । ३ मण । ४ गृह-कैलास । ५ आकाश । ६ वाणी ।
७ कथा । ८ अन्तर्यामिन् ९ दूध ।

शंकररुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभुमोहिंतजेउ हृदयअकुलानी ॥
निज अघसमुझिनकछुकहिजाई ❀ तपै अवां इव उर अधिकाई ॥
सतिहिं सशोच जानि वृषकेतू ❀ कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू ॥
वर्णत पंथ विविध इतिहासा ❀ विश्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँ पुनि शंभु समुझि प्रण आपन ❀ बैठे वटतर करि कमलासन ॥
शंकर सहज स्वरूप सँभारा ❀ लागि समाधि अखंड अपारा ॥
दोहा-सतीबसहिं कैलासतब, अधिकशोच मनमाहिं ॥
मर्म्मनकोऊजानकछु, युगसमदिवससिराहिं ॥७०॥
नित नव शोच सती उरभारा ❀ कब जैहौं दुखसागर पारा ॥
मैंजु कीन्ह रघुपति अपमाना ❀ पुनि पति वचन मृषाकरिजाना ॥
सोफल मोहिं विधातादीन्हा ❀ जोकछु उचित रहा सो कीन्हा ॥
अब विधिअसबूझियनहिंतोहीं ❀ शंकरविमुख जिआवहु मोहीं ॥
कहिनजाइ कछु हृदय गलानी ❀ मनमहँरामहिं सुमिरि सयानी ॥
जोप्रभु दीनदयालु कहावा ❀ आरतहरण वेद यश गावा ॥
तो मैं विनय करौं कर जोरी ❀ छूटै वेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरे शिवचरण सनेहू ❀ मन क्रम वचन सत्यव्रतयेहू ॥
दोहा-तौ समदर्शी सुनिय प्रभु, करौ सो वेगि उपाइ ॥
होइमरणजेहिबिनहिंश्रम, दुस्सहविपतिविहाइ ॥७१॥
यहिविधि दुखित प्रजेशकुमारी ❀ अकथनीय दारुणदुख भारी ॥
वीते सम्वत् सहस सतासी ❀ तजी समाधि शंभु अविनाशी ॥
रामनाम शिव सुमिरण लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ शम्भुपद वन्दन कीन्हा ❀ सन्मुख शंकर आसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला ❀ दक्षप्रजेश भये तेहिकाला ॥
देखा विधि विचारि सबलायक ❀ दक्षहि कीन्ह प्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा ❀ अति अभिमान हृदय तबआवा ॥
नहिं कोउ अस जन्मेउ जग माहीं ❀ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

१ दुखि । २ पाप । ३ भेद । ४ एक एक दिन एक एक युगके समान युग कहिये सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग । ५ बोझसा । ६ असत्य ।

दोहा–दक्षलिये मुनिबोलि तब, करन लगे बड़याग ॥
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मखभाग ॥ ७२ ॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा ❀ वधुँन समेत चले सुर सर्वा ॥
विष्णु विरञ्चि महेश विहाई ❀ चले सकल सुर याने बनाई ॥
सती विलोके गगने विमाना ❀ जात चले सुन्दर विधिनाना ॥
सुर सुन्दरी करहिं कलगाना ❀ सुनत श्रवण छूटहिंमुनिध्याना ॥
पूँछेउ तब शिव कहेउ बखानी ❀ पितायज्ञ सुनिकै हरषानी ॥
जो महेश मोहिं आयसुदेहीं ❀ कछुदिन जाइ रहौं मिसुएहीं ॥
पति परित्याग हृदयदुखभारी ❀ कहै न निज अपराधविचारी ॥
बोली सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेमरस सानी ॥

दोहा–पिताभवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ ॥
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥ ७३ ॥

कहेउ नीक मोरे मनभावा ❀ यह अनुचित नहिंनेवतपठावा ॥
दक्ष सकल निजसुता बुलाई ❀ हमरे बैर तुम्हें बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना ❀ तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना ॥
जो बिन बोले जाहु भवानी ❀ रहै न शील सनेह न कानी ॥
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा ❀ जाइय बिनु बोले न सँदेहा ॥
तदपि विरोधमान जहँ कोई ❀ तहाँगये कल्याण न होई ॥
भाँति अनेक शम्भु समुझावा ❀ भावीवश न ज्ञान उरआवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये ❀ नहिं भलिबात हमारे भाये ॥

❀ महादेवजी कहतेहैं हे सती ! ब्रह्माकी सभामें विष्णु आदि सब देवतोंके साथ हम बैठे रहे सो उससमयमें दक्ष तुम्हारे पिता आये, सो उन्हें देख सब देवता उठे परन्तु मैं और मेरे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय उस सभामें हमें शापदिया और कहा यज्ञमें भाग तुमको आजसे न मिलेंगे और तभीसे द्वेषमान मेरी प्रतिष्ठा हीन करनेमें उद्यतरहे इसीकारण अपने यज्ञमें हमें न्योता नहीं दिया ॥

१ स्त्रिय । २ छोड़कर । ३ विमान । ४ आकाश । ५ देववधू । ६ सुंदरगान । ७ कान । ८ बिषोण । ९ बेटी । १० मध्यींस ।

दोहा-कहि देखा हर यत्न बहु, रहै न दक्षकुमारि ॥
दिये मुख्यगण संग तब, बिदाकियेत्रिपुरारि॥७४॥

पिताभवन जब गई भवानी ❀ दक्षत्रास काहु न सनमानी ॥
सादर भलेहि मिली इकमाता ❀ भगिनी मिली बहुत मुसुकाता ॥
दक्ष न कछु पूँछी कुशलाता ❀ सतिहि बिलोकि जरे सबगाता ॥
सती जाइ देखेउ तब यागा ❀ कतहुँ न दीख शंभुकर भागा ॥
तब चित चढेउ जो शंकर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ ॥
पाछिल दुख न हृदय असब्यापा ❀ जस यह भयउ महा परितापा ॥
यद्यपि जग दारुण दुख नाना ❀ सबते कठिन जाति अपमाना ॥
समुझिशोचतिहिंभाअतिक्रोधा ❀ बहु विधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥

दोहा-शिवअपमाननजाइसहि, हृदयनहोतप्रबोध ॥
सकलसभहिंहठिहटकितब, बोलींवचनसक्रोध॥७५॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा ❀ कही सुनी जिन शंकरनिंदा ॥
सो फल तुरत लहब सबकाहू ❀ भली भाँति पछिताब पिताहू ॥
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा ❀ सुनिय जहाँ तहँ अस मर्य्यादा ॥
काटिय तासु जीभ जुबसाई ❀ श्रवणमूँदि नहिं चलिय पराई ॥
जगदात्मा महेश त्रिपुरारी ❀ जगतजनक सबके हितकारी ॥
पिता मन्दमति निन्दत तेही ❀ दक्षशुक्र सम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❀ उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू ॥
असकहि योग अग्नि तनु जारा ❀ भयउ सकल मख हाहाकारा ॥

दोहा-सतीमरणसुनिशम्भुगण, लगेकरनमखखीशँ ॥
यज्ञविध्वंसविलोकिभृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश ॥ ७६ ॥

समाचार जब शंकर पाये ❀ वीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञविध्वंस जाय तिन्ह कीन्हा ❀ सकलसुरन्हविधिवतफलदीन्हा॥
भइ जग विदित दक्ष गति सोई ❀ जस कछु शम्भु विमुखकी होई॥
यह इतिहास सकल जग जाना ❀ ताते मैं संक्षेप बखाना ॥

१ बहिन । २ अत्यंत दुःख । ३ कठिन । ४ उपदेश । ५ निंदा । ६ जगत्पिता । ७ भंग ।

सती मरत हरिसन वरमांगा ❀ जन्म जन्म शिवपद अनुरागा ॥
तेहिकारण हिमगिरि गृहजाई ❀ जन्मी पार्वती तनु पाई ॥
जबते उमा शैलगृह आई ❀ सकल सिद्धि सम्पति तहँछाई ॥
जहँ तहँ मुनिन सुआश्रमकीन्हे ❀ उचित वास हिमभूधर दीन्हे ॥

दोहा--सदासुमनफलसहितसब, द्रुमनवनानाजाति ॥
प्रकटींसुन्दरशैलपर, मणिआकरबहुभाँति ॥ ७७ ॥

सरिता सब पुनीत जल बहई ❀ खग मृग मधुप सुखी सब रहई ॥
सहज वैर सब जीवन त्यागा ❀ गिरिपरसकलकरहिं अनुरागा ॥
सोह शैल गिरिजा गृहआये ❀ जिमि नर रामभक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृहतासू ❀ ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार सब पाये ❀ कौतुक हिमगिरि गेहं सिधाये ॥
शैलराज बड आदर कीन्हा ❀ पदपखारि वर आसन दीन्हा ॥
नारिसहित मुनिपद शिरनावा ❀ चरणसलिल सबभवनसिंचावा ॥
निजसौभाग्य बहुत गिरिवरणा ❀ सुता बोलि मेली मुनि चरणा ॥

दोहा--त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहुसुताकेदोषगुण, मुनिवरहृदयविचारि ॥ ७८ ॥

कह मुनि विहँसि गूढ मृदुवानी ❀ सुता तुम्हारि सकलगुणखानी ॥
सुन्दरिसहज सुशील सयानी ❀ नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी ❀ होइहि सन्ततं पियहि पियारी ॥
सदा अचल इहिकर अहिवाता ❀ इहिते यश पैहहिं पितुमाता ॥
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं ❀ इहि सेवत कछु दुर्लभनाहीं ॥
इहिकर नाम सुमिरि संसारा ❀ तियचढिहहिंपतिव्रतअसिधारा ॥
शैल सुलक्षण सुता तुम्हारी ❀ सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी ॥
अगुण अमान मातु पितु हीना ❀ उदासीन सब संशय छीना ॥

दोहा--योगी जटिल अकाम तनु, नग्न अमंगलभेश ॥

१ मीति । २ पर्व्वत । ३ नदियां । ४ पवित्र-निर्मल । ५ पक्षी । ६ हरिण । ७ भ्रमर । ८ घर । ९कोमल । १० सदैव । ११ जिनके नराग नद्वेष नसंशय ।

अस स्वामी इहिकहँमिलिहि, परीहस्तअसरेख॥७९॥
सुनि मुनि गिरा सत्य जियजानी ❀ दुख दम्पतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहू यह भेद न जाना ❀ दशा एक समुझत बिलगाना ॥
सकल सखी गिरिजागिरिमयना ❀ पुलक शरीर भरे जलनयना ॥
होय न मृषा देवऋषि भाषा ❀ उमा सो वचन हृदयधरिराखा ॥
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू ❀ मिलन कठिन मनभा संदेहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई ❀ सखिउछंग बैठी पुनि जाई ॥
झूँठि नहोइ देवऋषि बानी ❀ शोचहिं दम्पति सखी सयानी ॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ ❀ कहहुनाथ का करिय उपाऊ ॥
दोहा--कहमुनीशहिमवंतसुनु, जोविधिलिखालिलार ॥
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार ॥ ८० ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई ❀ होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस बर मैं बरणेउँ तुमपाहीं ❀ मिलिहिउमहिंकछुसंशयनाहीं ॥
जे जे वरके दोष बखाने ❀ ते सब शिवपहँ मैं अनुमाने ॥
जो विवाह शंकर सन होई ❀ दोषौ गुण सम कह सब कोई ॥
जो अहिसेज शयन हरिकरहीं ❀ बुधकछु तिनकहँ दोष न धरहीं ॥
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं ❀ तिनकहँमन्द कहतकोउनाहीं ॥
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं ❀ सुरसरिकोउ न अपावन कहहीं ॥
समरथ कहँ नहिं दोष गुसाँई ❀ रवि पावक सुरसरि की नाईं ॥
दोहा--जो अस ईर्षा करहिं नर, जड़विवेक अभिमान ॥
परहिं कल्पभरिनरक महँ, जीव कि ईश समान॥८१॥
सुरसरि जलकृत वारुणिजाना ❀ कबहुँ न संत करहिं तिहिपाना ॥
सुरसरि मिले सुपावन जैसे ❀ ईश अनीशहिं अन्तर तैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना ❀ इहिविवाह सब विधि कल्याना ॥
दुराराध्यपै अहहिं महेशू ❀ आशुतोष पुनि किये कलेशू ॥
जो तप करै कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी ॥

---

१ वाणी। २ माता-पिता। ३ दुश्चित्त। ४ गोद। ५ नाथ। ६ सूर्यनारायण।
७ अग्नि। ८ दुस्तरजिनकीआराधना।

यद्यपि वर अनेक जगमाहीं ❀ इहिकहँ शिव तजि दूसरनाहीं ॥
वरदायक प्रणतारत भंजन ❀ कृपासिन्धु सेवक मन रंजन ॥
इच्छितफल बिनु शिवआराधे ❀ लहइ न कोटि योग जप साधे ॥
दोहा-असकहिनारदसुमिरि हरि, गिरिजहिदीन्हअशीश ॥
होइहिसबकल्याण अब, संशय तजहु गिरीश ॥८२॥
कहिअस ब्रह्म भवन मुनिगयऊ ❀ आगिलचरितसुनहुजस भयऊ ॥
पतिहिइकांत पाय कह मयना ❀ नाथ न मैं समुझेउँ मुनिवयना ॥
जो घर वरै कुल होइ अनूपा ❀ करिय विवाह सुता अनुरूपा ॥
नतु कन्या वरु रहै कुमारी ❀ कन्त उमा मम प्राण पियारी ॥
जो न मिलिहि वर गिरिजहियोगू ❀ गिरि जड़ सहज कहहिसबलोगू ॥
सोविचारि पति करहु विवाहू ❀ जेहि न बहोरि होइ उरदाहू ॥
असकहि परी चरण धरिशीशा ❀ बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
बरु पावक प्रगटै शशि माहीं ❀ नारद वचन अन्यथा नाहीं ॥
दोहा-प्रियाशोचपरिहरहुसब, सुमिरहुश्रीभगवान ॥
पार्वती जिन निर्म्मयेउ,सोइ करिहहिं कल्यान॥८३॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ❀ तो असजाय सिखावन देहू ॥
करै सो तप ज्यहि मिलहिं महेशू ❀ आन उपाय न मिटहिं कलेशू ॥
नारद वचन समुझि सबहेतू ❀ सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू ॥
अस विचारि तुम तजि सबशंका ❀ सबहि भाँति शंकर अकलंका ॥
सुनि पतिवचन हर्ष मनमाहीं ❀ गई तुरत उठि गिरिजापाहीं ॥
उमहि विलोकि नयन भरिवारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहिंबार लेति उरलाई ❀ गद्गद कण्ठ न कछु कहिजाई ॥
जगतमातु सर्वज्ञ भवानी ❀ मातु सुखद बोली मृदुबानी ॥
दोहा-सुनहु मातु मैं दीख अस, स्वप्न सुनाऊं तोहिं ॥
सुन्दर गौर सु विप्रवर, अस उपदेशेउ मोहिं ॥८४॥

१ हिमवान् पर्वत । २ दुःख । ३ अग्नि । ४ चन्द्रमा । ५ । असत्य । ६ उत्पन्न । ७ शिव । ८ साधु-भाव । ९ अन्तर्यामी १० ब्राह्मण ।

करहु जाय तप शैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य विचारी ॥
मातु पितहि पुनि यहमतभावा ❀ तपसुखप्रद दुख दोष नशावा ॥
तपबल रचै प्रपंच विधाता ❀ तपबल विष्णु सकलजगत्राता ॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा ❀ तपबल शेष धरहिं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी ❀ करहु जाइ तप अस जियजानी ॥
सुनत वचन विस्मित महतारी ❀ स्वप्न सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥
मातु पितहिं बहुविधि समुझाई ❀ चली उमा तपहित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❀ भयेविकल मुख आव न बाता ॥

दोहा–वेदशिरामुनिआइतब, सबहिंकहासमुझाइ ॥
पार्वती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ८५ ॥

उरधरि उमा प्राणपति चरणा ❀ जाइ विपिनं लागीं तप करणा ॥
अतिसुकुमारि न तनु तप योगू ❀ पतिपद सुमिरितजेउसबभोगू ॥
नित नव चरण उपज अनुरागा ❀ विसरी देह तपहि मन लागा ॥
संवत सहस मूल फल खाये ❀ शाक खाइ शत वर्ष गँवाये ॥
कछु दिन भोजन बारि बतासा ❀ कियेकठिनकछुदिनउपवासा ॥
बेल पात महि परे सुखाई ❀ तीनि सहस संवत सो खाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा ❀ उमा नाम तब भयउ अपर्णा ॥
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥

दोहा–भयउमनोरथसफलतव, सुनुगिरिराजकुमारि ॥
परिहरिदुसहकलेशसब, अबमिलिहहिंत्रिपुरारि ॥ ८६ ॥

अस तप काहु न कीन्ह भवानी ❀ भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म वर बानी ❀ सत्य सदा सन्तत शुचि जानी ॥
आवैं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घर जायहु तबहीं ॥
मिलहिं तुमहिं जबसप्तऋषीशा ❀ जानेहु तब प्रमाण वागीशा ॥
सुनत गिरा विधि गगनबखानी ❀ पुलकिगात गिरिजा हरषानी ॥
उमाचरित मैं सुन्दर गावा ❀ सुनहु शम्भुकर चरितसुहावा ॥

१ सुखदायक । २ सृष्टि । ३ पालक । ४ धर । ५ वपुष । ६ आकाशवाणी ।
७ त्यागि । ८ पर्णी । ९ आकाश ।

जबते सती जाइ तनु त्यागा ❀ तबते शिव मन भयउ विरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं राम गुणग्रामा ॥
दोहा-चिदानंद सुखधामशिव, विगतमोहमदकाम ॥
विचरहिंमहिधरिहृदयहरि,सकललोकअभिराम ८७
कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना ❀ कतहुँ राम गुण करहिं बखाना ॥
यदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भक्त विरह दुख दुखित सुजाना ॥
यहि विधि गयउ काल बहुबीती ❀ नितनव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा ❀ अविचलहृदय भक्तिकी रेखा ॥
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला ❀ रूप शील निधि तेज विशाला ॥
बहुप्रकार शंकरहि सराहा ❀ तुम बिनु अस व्रत को निरबाहा ॥
बहुविधि राम शिवहि समुझावा ❀ पार्वती कर जन्म सुनावा ॥
अति पुनीत गिरिजाकी करणी ❀ विस्तरसहित कृपानिधिवरणी ॥
दोहा-अबविनतीममसुनहु शिव, जो मोपरनिजनेहु ॥
जाइ विवाहहु शैलजहि, यह मोहिं मांगे देहु ॥ ८८ ॥
कहशिव यदपि उचितअसनाहीं ❀ नाथ वचन पुनि मेटि नजाहीं ॥
शिरधरि आयसुकरिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभुकी बानी ❀ बिनहिंविचारकरियशुभजानी ॥
तुम सब भाँति परमहितकारी ❀ आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना ❀ भक्ति विवेक धर्मयुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ ❀ अब उर राखेउ जो हम कहेऊ ॥
अन्तर्द्धान भये अस भाषी ❀ शंकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँ आये ❀ बोले प्रभु अस वचन सुहाये ॥
दोहा-पार्वती पहँ जाय तुम, प्रेम परीक्षा लेहु ॥
गिरिहि प्रेरि पठवहु भवनँ, दूर करहु संदेहु ॥ ८९ ॥
'सुनि शिववचन परमसुख मानी ❀ चले हर्षि जहँ रहीं भवानी' ॥

१ रहित । २ पृथ्वी । ३ पवित्र । ४ पार्वती । ५ आज्ञा । ६ हृदय । ७ गृह ।

ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी ❀ मूरतिवन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी ❀ करहु कवन कारण तप भारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू ❀ हमसन सत्य मर्म सब कहहू ॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी ❀ बोली गूढ मनोहर बानी ॥
कहतमर्म मन अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ॥
मनहठ परा न सुनै सिखावा ❀ चहत बारिपर भीति उठावा ॥
नारदकहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना ॥
देखिय मुनि अविवेक हमारा ❀ चाहत पति शंकर अविकारा ॥

दोहा–सुनत वचन विहँसे ऋषय, गिरि संभव तवदेह ॥
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसे को गेह ॥९०॥

❀दक्षसुतन उपदेशिनजाई ❀ तिन फिरि भवन न देखाआई ॥
×चित्रकेतुकर घर उनघाला ❀क+नककशिपुकर पुनिअसहाला ॥

❀ जब दक्षप्रजापतिने प्रथम बहुतसे पुत्र उत्पन्न करके आज्ञा दिया कि, सृष्टि करो तब वे सृष्टिके अर्थ तप करनेको गये वहां नारदने उन सबोंको ऐसा ज्ञान दिया कि, वे सबके सब विरक्त होय वनमें तप करने लगे. दक्षके गृहमें फिर नहीं आये तब दक्षने कन्या उत्पन्न करके सृष्टिको वढाया और नारदजीको शाप दिया कि, तुम दो घडीसे अधिक कहीं न ठहरसकोगे सो हे पार्वती ! नारद शिक्षा सुन घर छोड वे भिखारी हुये ॥

×आगे फिर चित्रकेतु राजाका समाचार सुनो, चित्रकेतु राजाके कोटि स्त्री थीं परन्तु लडका एक नहीं तब किसी मुनिके आशीर्वादसे छोटी रानीके एक पुत्र उत्पन्न भया जब वह लडका वर्षभरका भया तब शेष सब रानियोंने उस लडकेको विष देके मारडाला. तब उस मृतक लडकेको राजा गोदमें लिये विलाप करने लगा इतनेमें नारदजी आय राजाको ज्ञानउपदेश करने लगे, परन्तु राजाको ज्ञान न हुआ. तब नारदजीने उस लडकेका आत्मा बुलाय उस्से कहा देखो राजा तुम्हारे शरीर छोडनेसे अत्यन्त व्याकुल हैं तब वह बोला कौन किसका पुत्र यह असत्य है संसार कर्मानुसार है. सुनो पहिले-जन्ममें मैंभी राजा था राज्य से विरक्त हो वनमें जाय भिक्षा मांग हरि

☞ १ भेद । २ पानी । ३ मूढता । ४ विकार रहित । ५ घर । ६ प्रह्लादकापिता ।

नारदशिख जु सुनहिं नर नारी ❀ अवशिभवनतजिहोहिंभिखारी ॥
मनकपटी तनु सज्जन चीन्हा ❀ आप सरिस सबहीं चह कीन्हा ॥
तेहिके वचन मानि विश्वासा ❀ तुम चाहहु पति सहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुवेषकपाली ❀ अकुल अगेह दिगम्बर व्याली ॥
कहहु कवन सुख अस बर पाये ❀ भल भूलिहु ठगके बौराये ॥
पंचकहे शिव सती विवाही ❀ पुनि अव डेरि मराइन ताही ॥

दोहा–अब सुखसोवतशोचनहिं, भीखमांगिभवखाहिं॥
सहज एकाकिनके भवन, कबहुँकिनारिखटाहिं॥९१॥

अजहूं मानहु कहा हमारा ❀ हम तुमकहँ बर नीक विचारा॥
अति सुंदर शुचि सुखद सुशीला ❀ गावहिं वेद जासु यश लीला ॥
दूषण रहित सकल गुणराशी ❀ श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी ॥
असबर तुमहिं मिलाउबआनी ❀ सुनतवचनकहविहँसिभवानी ॥
सत्य कहहु गिरि भवत नएहा ❀ हठ न छूट छूटे बरु देहा ॥
कनँको पुनि पषाणते होई ❀ जारेउ सहज न परिहर सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं ❀ बसौ भवन उजरो नहिं डरऊं ॥
गुरुके वचन प्रतीति न जेही ❀ स्वप्नेहु सुगम न सुख सिधि तेही॥

भजन करता था एक दिन एक स्त्रीने मुझे गोलागोइठा दिया उसके भीतर चिउँटी थीं अग्निके संस्कारसे सब मरगईं सो वोह चिउँटी यह तुम्हारी स्त्री हैं और जिसने मुझे गोलागोइठा दिया सो यह मेरी माता है और मैंने उस पापसे इसके उदरमें जन्म लिया है सो ये कोटि स्त्रियोंने आनिके पूर्वजन्मका बदला लिया यह कह लडका मरगया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड वनमें तप करने को चलागया ॥

+आगे कनककशिपुकी स्त्री कयाधू जब गर्भवती थी तब नारदजीने उसको ज्ञानउपदेश किया सो गर्भहीमें प्रह्लादको ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञानसे विष्णु नृसिंहरूपधर हिरण्यकशिपुका वधकर प्रह्लादको राजतिलक दिया नारदके उपदेशसे दैत्यकुलका नाश भया ॥

१ मनको भेम संकल्प विकल्प ताको कपटिलीन । २ कुंभकाळनिकाभूषण । ३ समकानवासी । ४ संसार । ५ पवित्र । ६ शोभित । ७ स्वर्ण । ८ पर्वत-पत्थर । ९ निवास ।

दोहा-महादेव अवगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम ॥
जेहिकरमनरम जाहिसन, ताहिताहिसनकाम ॥९२॥

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा ❀ सुनतिउँशिखतुम्हारिधरिशीशा॥
अब मैं जन्म शम्भुहित हारा ❀ को गुण दोषहि करै विचारा ॥
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी ❀ रहि न जाइ बिनु किये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं ❀ बर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी ❀ बरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू ❀ आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पापरौं कहै जगदम्बा ❀ तुम गृह गवनहु भयउ विलंबा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी ❀ जयजयजय जगदम्ब भवानी ॥

दोहा-तुम मायाभगवान शिव, सकलजगतपितुमात ॥
नायचरणशिरमुनिचले, पुनि पुनि हर्षित गात॥९३॥

जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये ❀ करि विनती गिरिजहिगृहलाये॥
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई ❀ कथा उमाकी सकल सुनाई ॥
भये मग्न शिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तब शंभुसुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना ॥
तारक असुर भयउ तेहिकाला ❀ भुज प्रताप बल तेज विशाला ॥
ते सब लोक लोकपति जीते ❀ भये देव सुख सम्पति रीते ॥
अजर अमर सो जीति नजाई ❀ हारे सुर करि विविध लराई ॥
तब विरंचि सन जाइ पुकारे ❀ देखे विधि सब देव दुखारे ॥

दोहा-सबसन कहा बुझाइ विधि, दनुजनिधनतबहोइ॥
शंभु शुक्र सम्भूतसुत, इहि जीतै रण सोइ ॥९४॥

मोरकहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहि ईश्वर करिहि सहाई ॥
सती जो तजी दक्ष मख देहा ❀ जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥
तेहँ तप कीन्ह शंभु पतिलागी ❀ शिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
यदपि अहै असमंजस भारी ❀ तदपि बात इक सुनहु हमारी ॥

१ तमासगीर । २ हीन । ३ ब्रह्मा ।

पठवहु काम जाइ शिवपाहीं ❀ करै क्षोभ शंकर मनमाहीं ॥
तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई ❀ करवाउब विवाह बरिआई ॥
यहिविधि भले देव हितहोई ❀ मति अति नीक कहा सबकोई ॥
अस्तुति सुरन्ह कीन्ह अतिहेतू ❀ प्रगट्यो विषम बाण वृषकेतू ॥

दोहा-सुरनकहीनिजविपतिसब,सुनिमनकीन्हविचार॥
शंभुविरोधनकुशलमोहिं,बिहँसिकहेउअसमार॥९५॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा ❀ श्रुति कह परम धर्म उपकारा ॥
परहित लागि तजै जो देही ❀ सन्तत संत प्रशंसहिं तेही ॥
असकहि चलेउ सबहिं शिरनाई ❀ सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥
चलत मार अस हृदय विचारा ❀ शिव विरोध ध्रुव मरण हमारा ॥
तब आपन प्रभाव विस्तारा ❀ निजवश कीन्ह सकल संसारा ॥
कोपेउ जबहिं बारिचर केतू ❀ क्षणमहँमिटेउ सकल श्रुतिसेतू ॥
ब्रह्मचर्य व्रत संयम नाना ❀ धीरज धर्म्म ज्ञान विज्ञाना ॥
सदाचार जप योग विरागा ❀ सभय विवेक कटक सब भागा ॥

छंद--भागेविवेकसहायसहितसोसुभटसंयुगमहिमुरे ॥
सद्ग्रन्थपर्वत कन्दरनमहँजाइ तेहिअवसरदुरे ॥
होनिहार का करतारको रखवार जग खरभर परा ॥
दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिकहँकोपिधनुशरकरधरा ॥

दोहा--जे सजीव जग अचर चर, नारिपुरुषअसनाम ॥
ते निज निजमर्याद तजि, भयेसकल वशकाम ॥९६॥

सबके हृदय मदन अभिलाखा ❀ लता निहारि नवहिं तरु शाखा ॥
नदी उमँगि अंबुधि कहँ धाई ❀ संगम करैं तलाव तलाई ॥
जहँ अस दशा जड़नकी वरणी ❀ को कहिसकै सचेतन करणी ॥
पशु पक्षी नभ जल थल चारी ❀ भये कामवश समय बिसारी ॥
मदन अन्ध व्याकुल सबलोका ❀ निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका॥
देव दनुज नर किन्नर व्याला ❀ प्रेत पिशाच भूत वैताला ॥

१ कामदेव । २ वेद । ३ सदैव । ४ पुष्प । ५ वसंतऋतु इत्यादि । ६ कामदेव ।
७ वेद मर्यादा । ८डालें । ९ वृक्ष । १० समुद्र ।

इनकी दशा न कहेउँ बखानी ❀ सदा कामके चेरे जानी ॥
सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी ❀ तेपि कामवश भये वियोगी ॥
छंद—भये कामवश योगीश तापस पामरनकीकोकहै॥
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखतरहे ॥
अबला विलोकहिं पुरुषमय जगपुरुषसबअबलामयं॥
दुइदण्डभरिब्रह्मांडभीतर कामकृत कौतुक अयं॥४॥
सोरठा—धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे ॥
जेहि राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महँ ॥१४॥
उभय घरी अस कौतुक भयऊ ❀ जबलगि काम शंभुपहँ गयऊ ॥
शिवहि विलोकि सशंकेउमारू ❀ भयउ यथाथित सब संसारू ॥
भये तुरत जगजीव सुखारे ❀ जिमिमद उतरिगये मतवारे ॥
रुद्रहिं देखि मदन भयमाना ❀ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु कहि नहिंजाई ❀ मरणठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा ❀ कुसुमित नवतरु राजबिराजा ॥
वन उपवन वाटिका तडागा ❀ परमसुभगसबदिशाविभागा ॥
जहँतहँ जनु उमँगत अनुरागा ❀ देखिमुयहुमनमनसिज जागा ॥
छंद—जागेउ मनोभव मुये मन बन सुभगता नपरैकही॥
शीतल सुगंध सुमन्द मारुत मदनअनल सखासही ॥
विकसे सरनि बहुकंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननाचहिंअप्सरा५॥
दोहा—सकल कलाकर कोटि विधि,हारेउ सेन समेत ॥
चलीनअचलसमाधिशिव,कोपेउहृदयनिकेत॥१७॥
देखि रसाल विटप वरशाखा ❀ तेहिपर चढेउ मदनमनमाखा ॥
सुमनचाप निजशर सन्धाने ❀ अतिरिसताकिश्रवणलगितानें ॥
छांडे विषम विशिख उरलागे ❀ छूटि समाधि शम्भु तबजागे ॥

---

१ स्त्री । २ कामदेव । ३ दोघरी । ४ पवन । ५ फूले । ६ तालाब । ७ कमल ।
८ भ्रमर । ९ बाण ।

भयउ ईश मन क्षोभ विशेषी ❋ नयन उघारि सकल दिशि देखी ॥
सौरभ पल्लव मदन विलोका ❋ भयउ कोप कम्पेउ त्रयलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा ❋ चितवत कामभयउजरिछारा ॥
हाहाकार भयउ जगभारी ❋ डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥
समुझि काम सुख शोचहिं भोगी ❋ भये अकंटक साधक योगी ॥

छं.-योगीअकंटकभयेपतिगतिसुनतिरतिमूर्च्छितभई ॥
रोदति वदति बहुभाँति करुणा करति शंकर पहँ गई ॥
अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधिजोरिकरसन्मुखरही ॥
प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबलानिरखि बोलेसही ॥६ ॥

दोहा--अबते रति तवनाथ कर, होइहि नाम अनंग ॥
विनुवपुव्यापिहिसबहिपुनि, सुनुनिजमिलनप्रसंग ९८

जब यदुवंश कृष्ण अवतारा ❋ होइहिं हरण महा महिभारा ॥
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा ❋ वचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि शंकर बानी ❋ कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन समाचार जब पाये ❋ ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये ॥
सब सुर विष्णु विरंचिसमेता ❋ गये जहां शिव कृपानिकेता ॥
पृथकपृथक तिन कीन्हप्रशंसा ❋ भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु वृषकेतू ❋ कहहु अमर आयहु केहि हेतू ॥
कह विधि तुम प्रभुअन्तर्यामी ❋ तदपि भक्तिवशविनवउँस्वामी ॥

दोहा-सकल सुरनके हृदय अस, शंकर परम उछाह ॥
निज नयनन देखा चहहिं, नाथ तुम्हार विवाह ॥९९॥

यह उत्सव देखिय भरि लोचन ❋ सो कछु करियमदनमदमोचन ॥
कामजारि रति कहँ वरदीन्हा ❋ कृपासिंधु यह अतिभलकीन्हा ॥
शासितिकरि पुनि करहिंपसाऊ ❋ नाथ प्रभुनकर सहज स्वभाऊ ॥
पार्वती तप कीन्ह अपारा ❋ करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनि विधि वचन समुझि प्रभुवानी ❋ ऐसोइ होइ कहा सुखमानी ॥

१ संदेह-मोह । २ देखा । ३ नेत्र । ४ मनुष्य । ५ मिथ्या । ६ कामदेवके मदके नाश-कर्त्ता महादेव । ७ अयोग्यताकोदण्डदेकर । ८ कृपा । ९ महाप्रीति ।

तब देवन दुन्दुभी बजाई ❀ बरषि सुमन जय जय सुरसाई॥
अवसर जानि सप्तऋषि आये ❀ तुरतहिंविधि गिरि भवन पठाये॥
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी ❀ बोले वचन मधुर छल सानी॥

दोहा–कहा हमार न सुनेहु तब, नारद कर उपदेश॥
अबभाझूंठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश॥१००॥

सुनि बोलीं मुसुकाय भवानी ❀ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी॥
तुम्हरे जान काम अब जारा ❀ अबलगि शंभु रहे सविकारा॥
हमरेजान सदा शिव योगी ❀ अजे अनवद्य अकाम अभोगी॥
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी ❀ प्रीति समेत कर्म्म मन वानी॥
तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा ❀ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा॥
तुम जो कहा हर जारेउ मारा ❀ सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा॥
तात अनलकर सहज स्वभाऊ ❀ हिम तेहि निकट जाइ नहिंकाऊ॥
गये समीप सो अवशि नशाई ❀ जस मन्मथ महेशकी नाई॥

दोहा–हिय हरषे मुनिवचन सुनि, देखिप्रीति विश्वास॥
चले भवानिहि नाइ शिर, गये हिमाचल पास॥१०१॥

सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा ❀ मदनदहनसुनि अति दुखपावा॥
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना ❀ सुनि हिमवन्त बहुतसुखमाना॥
हृदय विचारि शंभु प्रभुताई ❀ सादर मुनिवर लिये बुलाई॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई ❀ वेगि वेद विधि लगन धराई॥
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्ही ❀ गहिपद विनय हिमाचल कीन्ही॥
जाय विधिहि तिन दीन्ह सोपाती ❀ बांचत प्रीति न हृदय समाती॥
लगन बांचि अज सबहि सुनाई ❀ हरषे मुनि सब सुर समुदाई॥
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल कलश दशहु दिशि साजे॥

दोहा–लगे सँवारन सकल, सुर, वाहन विविध विमान॥
होहिं शकुन मंगल शुभग, करहिंअप्सरा गान॥१०२॥

शिवहि शंभुगण करहिं शृंगारा ❀ जटा मुकुट अहिमौर सँवारा॥

१ कामासक्त। २ अजन्मा। ३ मूर्खता। ४ अग्नि। ५ पाला। ६ काम। ७ पुष्प। ८ आकाश। ९ देवता। १० सर्पोंकामौर।

कुंडल कंकण पहिरे व्याला ❋ तनु विभूति पट केहरि छाला ॥
शशि लिलाट सुन्दर शिर गंगा ❋ नयन तीनि उपवीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर शिरमाला ❋ अशिव भेष शिवधामकृपाला ॥
करत्रिशूल अरु डमरु विराजा ❋ चले वसहँ चढि बाजहिं बाजा ॥
देखिशिवहि सुरत्रियमुसकाहीं ❋ वर लायक दुलहिन जगनाहीं ॥
विष्णु विरंचि आदि सुरव्राता ❋ चढि चढि वाहन चले वराता ॥
सुरसमाज सब भाँति अनूपा ❋ नहिं वरात दूलह अनुरूपा ॥

दोहा—विष्णुकहा अस विहँसि तब, वोलि सकल दिशिराज॥
विलगविलगहोइचलहुसब,निजनिजसहित समाज १०२॥

वर अनुहार वरात न भाई ❋ हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
विष्णु वचन सुनि सुर मुसकाने ❋ निजनिज सेनसहित विलगाने ॥
मनहींमन महेश मुसुकाहीं ❋ हरिके व्यंग्य वचन नहिं जाहीं॥
अतिप्रिय वचन सुनतहरिकेरे ❋ भृङ्गी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासन सुनि सब आये ❋ प्रभुपद जलज शीश तिन नाये॥
नाना वाहन नाना भेखा ❋ विहँसे शिव समाज निज देखा॥
कोउमुखहीन विपुलमुखकाहू ❋ विनुपद कर कोउ बहुपद बाहू॥
विपुलनयन कोउ नयनविहीना ❋ हृष्टपुष्ट कोउ अति तनुक्षीना ॥

छंद—तनुक्षीणकोउ अतिपीनपावन कोउ अपावन गतिधरे॥
भूषणकराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनुभरे ॥
खर श्वान सुअर शृगाल मूषक वेष अगणितको गनै॥
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनि भाँतिवरणतनहिंवनै॥

सोरठा—नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अति विपरीत,बोलहिंवचनविचित्र विधि॥१०॥

जस दूलह तस बनी वराता ❋ कौतुक विविध होहिं मग जाता॥
यहां हिमाचल रचेउ विताना ❋ अतिविचित्र नहिं जाय वखाना ॥
शैलसकल जहँलगिजगमाहीं ❋ लघुविशाल नहिंवरणिसिराहीं ॥

१ वाघम्बर । २ जनेऊ । ३ विष । ४ वृषभ । ५ योग्य । ६ रुधिर ।
७ गर्दभ । ८ कुत्ता । ९ भयंकर । १० विवाहमंडप ।

वन सागर सब नदी तलावा ❀ हिमगिरि सबकहँ नेवत पठावा ॥
कामरूप सुन्दर तनुधारी ❀ सहित समाज सहित बरनारी ॥
गे सब तुरत हिमाचल गेहा ❀ गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृहसँवराये ❀ यथायोग्य जहँ तहँ सब छाये ॥
पुरसोभा अवलोकि सुहाई ❀ लागै लघु विरंचि निपुणाई ॥
छंद-लघुलागविधिकीनिपुणताअवलोकिपुरशोभासही
वन बाग कूप तडाग सरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं
दोहा-जगदम्बा जहँ अवतरी, सो पुर वरणि नजाइ ॥
ऋद्धिसिद्धिसम्पति सकल,नितनूतन अधिकाइ १०४
नगर निकट बरात जब आई ❀ पुरसोभा खरभर अधिकाई ॥
करि बनाव सजि बाहननाना ❀ चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हरषे सुरसेन निहारी ❀ हरिहिं देखि अति भये सुखारी॥
शिव समाज जब देखनलागे ❀ बिडरि चले बाहन सबभागे ॥
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❀ बालक सब ले जीव पराने ॥
गये भवन पूंछहिं पितु माता ❀ कहहिं वचन भयकंपित गाता ॥
कहियकहा कहिजाइ न बाता ❀ यमकैधार किधौं बरियाता ॥
बर बौराह बरद असवारा ❀ व्याल कपाल विभूषण छारा॥
छंद-तनुछारव्यालकपालभूषणनगनजटिलभयंकरा॥
सँग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकटमुख रजनीचरा॥
जो जियतरहिहि बरातदेखत पुण्यबड तिनकर सही॥
देखहिं सो उमा विवाह घर घरबात असलरिकनकही
दोहा-समुझिमहेशसमजसब,जननिजनकमुसकाहिं॥
बाल बुझाये विविध विधि, निडर होउडरनाहिं॥१०५

१ करतूति। २ तितिरवितिर। ३ गृह। ४ बदन। ५ यमराजकीसेना।
६ उन्मत्त। ७ निशाचर। ८ माता। ९ पिता।

लै अगवान बरातहि आये ❀ दिये सबहिं जनवास सुहाये ॥
मयनां शुभ आरती सँवारी ❀ संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह वर पानी ❀ परिछन चलीं हरहि हरपानी ॥
विकट भेष जब रुद्रहि देखा ❀ अबलन उर भय भयउविशेषा ॥
भागि भवन पैठीं अतित्रासा ❀ गये महेश जहां जनवासा ॥
मयना हृदय भयो दुखभारी ❀ लीन्ही बोलि गिरीश कुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी ❀ श्याम सरोज नयन भरिवारी ॥
जेहिं विधि तुमहिंरूपअसदीना ❀ तेइँ जड वर बाउर कस कीन्हा ॥
छंद–कसकीन्ह बरबौराहविधिजेइँतुमहिसुंदरतादई ॥
जो फल चहिय सुरतेरुहि सो बरबस बबूरहि लागई ॥
तुम सहितगिरितेगिरौं पावकजरौंजलनिधि महँ परौं॥
घरजाउ अपयशहोउ जग जीवतविवाहनहौंकरौं१०॥
दोहा–भईविकलअबलासकल, दुखितदेखिगिरिनारि॥
करि विलाप रोदति वदति,सुता सनेह सँभारि॥१०६॥
नारदकर मैं कहा बिगारा ❀ भवन मोर जिन बसत उजारा॥
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा ❀ बौरे बरहि लागि तपकीन्हा ॥
सांचेहु उनके मोह न माया ❀ उदासीन धन धाम न जायां ॥
परघर घालक लाज न भीरा ❀ बांझ कि जान प्रसवकी पीरा॥
जननिहिं विकलविलोकिभवानी ❀ बोलीं युतविवेकँ मृदुबानी ॥
असविचारि शोचहु मतिमाता ❀ सो नटरै जो रचेउ विधाता ॥
कर्म्म लिखा जो बाउरनाहू ❀ तौ कत दोष लगाइय काहू ॥
तुमसनमिटहिँकिविधिके अंका ❀ मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥
छंद–जनि लेहुमातुकलंक करुणापरिहरहुअवसरनहीं॥
दुख सुख जोलिखालिलाट हमरेजाब जहँपाउबतहीं॥
सुनि उमावचनविनीतकोमलसकलअबलाशोचहीं॥
बहु भाँति विधिहिलगाइ दूषणनयन वारिविमोचहीं॥

१ पार्वतीकीमाता । २ कल्पवृक्ष । ३ समुद्र । ४ स्त्री । ५मयना । ६ स्त्री ।
७ ज्ञानसंयुक्तकोमलवाणी ।

दोहा--तेहि अवसर नारदऋषय,औ ऋषि सप्तसमेत॥
समाचार सुनि तुहिनगिरि,गवने तुरत निकेत॥१०७॥

तब नारद सबही समुझावा ❀ पूरबकथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु ममबानी ❀ जगदम्बा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि ❀ सदा शंभु अर्द्धंगनिवासिनि ॥
जगसंभव पालन लयकारिणि ❀ निज इच्छा लीला वपु धारिणि ॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई ❀ नाम सती सुन्दर तनु पाई ॥
तहउँ सती शंकरहि विवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एकबार आवत शिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा ॥
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रम वश वेष सीयकरलीन्हा ॥

छंद--सियवेषसतीजोकीन्हतेहिअपराधशंकरपरिहरी
हर विरह जाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगानल जरी ॥
अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतपकिया॥
असजानिसंशयतजहुगिरिजासर्वदाशंकरप्रिया१२॥

दोहा--सुनिनारदके वचन तब, सबकर मिटा विषाद ॥
क्षण महँव्यापेउ सकल पुर, घर घरयहसंवाद॥१०८॥

तब मयना हिमवंत अनन्दे ❀ पुनि पुनि पारवती पद वन्दे ॥
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबहिं हाटकघटनाना ॥
भांति अनेक भई ज्यवनारा ❀ सूप शास्त्र जसकछु व्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन जेहिं मातुभवानी ॥
सादर बोले सकल बराती ❀ विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥
विविध भाँति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुण सुआरा ॥
नारि वृन्द सुर जेंवत जानी ❀ लगीं देन गारी मृदुबानी ॥

छंद--गारीमधुरसुरदेहिंसुन्दरिव्यंग्यंवचनसुनावहीं॥

१ पर्वतकेभीतरनिवासमें।२ अजन्मा। ३ संसारको उत्पन्न करतीहैं पालतीहैं संहारकर्ता-हैं। ४ कठिन। ५ दुःख।६ व्यंग्य अर्थात् अपने पुरुष और देवताओंकी स्त्रियोंकासम्बन्ध ।

भोजनकरहिंसुरअतिविलंबविनोदसुनिसुखपावहीं ॥
जेंवत जो बढ्यो अनन्द सो मुखकोटिहू नपरै कह्यो॥
अचवाइ दीन्हें पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥१३॥

दोहा–बहुरि मुनिन हिमवन्तकहँ, लग्नजनाईआइ ॥
समय विलोकि विवाह कर, पठये देवबुलाइ॥१०१॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ❀ सबहिं यथोचित आसन दीन्हे॥
वेदी वेद विधान सँवारी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अति दिव्य सुहावा ❀ जाइ न वरणि विरंचि बनावा ॥
बैठे शिव विप्रन शिरनाई ❀ हृदय सुमिरि निज प्रभुरघुराई॥
बहुरि मुनीशन उमाँ बुलाई ❀ करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहै ❀ वरणै छबि अस जग कवि कोहैं॥
जगदम्बिका जानि भवबामा ❀ सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा॥
सुन्दरता मर्य्याद भवानी ❀ जाइ न कोटिहु वदन बखानी ॥

छंद–कोटिहुवदननहिंबनैवरणतजगजननिशोभामहा
सकुचहिं कहतश्रुतिशेष शारद मंदमतितुलसी कहा॥
छबिखानिमातुभवानि गवनीमध्य मंडपशिवजहाँ॥
अवलोकिसकहिंनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकर तहाँ॥

दोहा–मुनि अनुशासनगणपतिहिं, पूजे शंभुभवानि ॥
कोउ सुनि संशय करै जनि, सुर अनादि जिय जानि॥

जसविवाहकी विधि श्रुति गाई ❀ महा मुनिन सो सब करवाई॥
गहि गिरीश कुश कन्या पानी ❀ शिवहि समर्पी जानि भवानी॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा ❀ हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
वेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं ❀ जय जय जय शंकरसुर करहीं॥
बाजहिंबाजन विविधविधाना ❀ सुमनवृष्टि नभभै विधिनाना ॥
हरगिरिजा कर भयउ विवाहू ❀ सकल भुवनभरि रहा उछाहू॥

१देवता । २ ब्रह्मा । ३ पार्वती । ४ मुख । ५ जगत्माता श्रीपार्वती । ६ भ्रमर । ७ आज्ञा । ८ वेद । ९ चौदहोंलोक । १० आनंद ।

दासी दास तुरँग¹ रथ नागा² ❀ धेनु³ वसन मणि वस्तुविभागा ॥
अन्न कनक भाजन भरियाना ❀ दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥
छंद–दाइजदियोबहुभाँति पुनि करजोरिहिमभूधरकह्यो॥
कादेउँ पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो ॥
शिवकृपासागरश्वशुरकरपरितोषसबभांतिनकियो ॥
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरण हियो ॥
दोहा–नाथ उमा मम प्राण सम, गृह किंकरी करेहु ॥
क्षमेहु सकलअपराधअब, होइ प्रसन्नवरदेहु ॥१११॥
बहुविधि शंभु सासु समुझाई ❀ गवनी भवन चरण शिरनाई ॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही ❀ लै उँछंग⁴ सुन्दर शिखदीन्ही ॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा ❀ नारि धर्म्म पतिदेव न दूजा ॥
वचन कहति भरि लोचनवारी ❀ बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी ॥
कतविधिसिरजि नारिजगमाहीं ❀ पराधीन स्वप्नेहु सुख नाहीं ॥
भै अति प्रेम विकल महतारी⁵ ❀ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी ॥
पुनिपुनिमिलति परतिगहिचरणा ❀ परम प्रेम कछु जाइ न वरणा ॥
सब नारिन मिलि भेंट भवानी ❀ जाइ जननि उर पुनि लपटानी॥
छंद–जननिहिंबहुरिमिलिचलींउचितअशीशसबकाहूदई॥
फिरि फिरिविलोकतिमातुतनतबसखीलैशिवपहँगई॥
याचक⁶ सकल सन्तोषि शंकरउमा सहभवनहिं चले॥
सब अमर⁷हर्षेसुमनबर्षिनिशान⁸नभबाजहिंभले॥१६॥
दोहा–चले संग हिमवंत तब, पहुँचावन अति हेतु ॥
विविधभाँतिपरितोष⁹ करि, विदा कीन्ह वृषकेतु११२॥
तुरत भवन आयो गिरिराई ❀ सकल शैल सर लिये बुलाई ॥
आदर दान विनय बहु माना ❀ सब कहँ विदा कीन्ह हिमवाना॥
जबहिं शम्भु कैलासहिआये ❀ सुरसब निज निज धाम¹⁰सिधाये ॥

---

१ घोड़े । २ हाथी । ३ गौ । ४ गोद । ५ माता । ६ भिक्षुक । ७ देवता ।
८ नगाडा । ९ समाधान । १० गृह ।

जगत मातु पितु शम्भुभवानी ❋ तेहि शृंगार न कहौं बखानी ॥
करहिं विविधविधिभोगविलासा ❋ गणनसमेत बसहिं कैलासा ॥
हर गिरिजा विहार नितनयऊ ❋ इहिविधिविपुलकालचलिगयऊ॥
तब जन्मे षट्वदन कुमारा ❋ तारक असुर समर जिनमारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❋ षण्मुख जन्म कर्म जगजाना॥

छंद–जगजान षटमुखजन्म कर्म प्रतापपुरुषारथ महा॥
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहि कहा ॥
यहउमाशम्भुविवाह जे नर नारि सुनहिंजे गावहीं ॥
कल्याण काजविवाहमंगल सर्वदासुख पावहीं ॥१७॥

दोहा–चरित सिन्धु गिरिजा रमण, वेद न पावहिं पार ॥
वरणै तुलसीदासकिमि, अतिमतिमन्दगँवार॥११३॥

शम्भु चरितसुनि सरससुहावा ❋ भरद्वाज मुनि अतिसुखपावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढी ❋ नयन नीर रोमावलि ठाढी ॥
प्रेम विवश मुख आव न वाणी ❋ दशादेखि हरषे मुनिज्ञानी ॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा ❋ तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा ॥
शिवपदकमल जिनहिंरतिनाहीं ❋ रामहिं ते स्वप्नेहु न सुहाहीं ॥
विनु छल विश्वनाथ पदनेहू ❋ राम भक्त कर लक्षण येहू ॥
शिव सम को रघुपति व्रतधारी ❋ विनु अघतजी सती असिनारी॥
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढाई ❋ को शिवसम रामहिं प्रियभाई ॥

दोहा–प्रथम कहेउँ मैं शिवचरित, बूझा मर्म्म तुम्हार ॥
शुचिसेवक तुम रामके, रहित समस्तविकार॥११४॥

मैं जाना तुम्हार गुण शीला ❋ कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला ॥
सुनु मुनि आजु समागमतोरे ❋ कहि नजाइ जससुखमनमोरे ॥
रामचरित अति अमित मुनीशा ❋ कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा॥
तदपियथाश्रुति कहौं बखानी ❋ सुमिरि गिरापति प्रभुधनुपानी॥
शारद दारु नारि समस्वामी ❋ रामसूत्र धर अन्तर्यामी॥

१ कार्तिकेय । २ प्रीति । ३ भेंट ।

जेहिपर कृपा करहिं जनजानी ❀ कविउर अजिरनचावहिंबानी ॥
प्रणवहुँ सोइ कृपालु रघुनाथा ❀ बरणौं विशदं जासु गुणगाथा ॥
परमरम्यं गिरिवरं कैलासू ❀ सदा जहां शिव उमा निवासू ॥
दोहा--सिद्ध तपोधन योगि जन, सुर किन्नर मुनिवृन्दं ॥
बसहिं तहां सुकृती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द ११५॥
हरि हर विमुख धर्मरत नाहीं ❀ ते नर तहां न स्वप्नेहुँ जाहीं ॥
तेहि गिरिपर वटविटप विशाला ❀ नित नूतनं सुन्दर सब काला ॥
त्रिविध समीर सुशीतलछाया ❀ शिव विश्राम विटप श्रुति गाया॥
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ ❀ तरुविलोकिउरअतिसुखभयऊ॥
निज कर डासि नागरिपुछाला ❀ बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला ॥
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा ❀ भुज प्रलम्ब परिधन मुनिचीरा॥
तरुण अरुण अंबुजसम चरणा ❀ नखद्युतिभक्तहृदयतमहरणा ॥
भुजंग भूति भूषण त्रिपुरारी ❀ आनन शरद चन्द्र छबिहारी ॥
दोहा-जटा मुकुट सुर सरितशिर, लोचन नलिन विशाल॥
नीलकंठलावण्य निधि, सोह बाल विधुभाल ॥११६॥
बैठे सोह कामरिपु कैसे ❀ धरे शरीर शान्तरस जैसे ॥
पार्व्वती भल अवसर जानी ❀ गईं शम्भु पहँ मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरअतिकीन्हा ❀ वाम भाग आसन हर दीन्हा ॥
बैठीं शिव समीप हरषाई ❀ पूरब जन्म कथा चितआई ॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी ❀ विहँसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥
कथा जो सकल लोकहितकारी ❀ सोइ पूंछन चहै शैलकुमारी ॥
विश्वनाथ ममनाथ पुरारी ❀ त्रिभुवन महिमाविदिततुम्हारी॥
चर अरु अचर नाग नर देवा ❀ सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥
दोहा--प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव, सकल कला गुणधाम ॥
योग ज्ञान वैराग्य निधि, प्रणत कल्पतरु नाम ॥ ११७॥

---

१ हृदयरूपीआंगन। २ उज्ज्वल। ३ परमरमणीक। ४ पर्व्वत।५ निकाय--झुंड। ६ बरगदकावृक्ष। ७ नितनया। ८ सिंह। ९ विशाल। १० पहरे। ११ कमल। १२ प्रकाश। १३ अंधकार। १४ सर्प। १५ मुख।

जो मोपर प्रसन्न सुखराशी ❀ जानियसत्य मोहिं निजदासी ॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ❀ कहि रघुनाथ कथा विधि नाना॥
जासु भवन सुरतरु तरहोई ❀ सह कि दरिद्र जनित दुख सोई॥
शशिभूषण अस हृदय विचारी ❀ हरहु नाथ ममंमति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथवादी ❀ कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी॥
शेष शारदा वेद पुराना ❀ सकल करहिं रघुपति गुणगाना॥
तुम पुनि राम नाम दिनराती ❀ सादर जपहु अनंग अराती ॥
राम सो अवध नृपति सुतसोई ❀ की अज अगुणअलखगतिकोई॥

दो.–जो नृपतनय तो ब्रह्मकिमि, नारिविरह मति भोरि॥
देखिचरितमहिमासुनत, भ्रमितबुद्धिअतिमोरि११८

जोअनीह व्यापक विभु कोऊ ❀ कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ ॥
अज्ञ जानि रिसि जनि उरधरहू ❀ जेहिविधिमोह मिटैसोइकरहू ॥
मैं वन दीख राम प्रभुताई ❀ अतिभयविकलनतुमहिंसुनाई॥
तदपि मलिनमन बोध न आवा ❀ सो फल भलीभाँति मैं पावा ॥
अजहूं कछु संशय मन मोरे ❀ करहुकृपा विनवउँ करजोरे ॥
प्रभु तव मोहिं बहु भांति प्रबोधा ❀ नाथसो समुझिकरहुजनिक्रोधा॥
तब कर अस विमोहमोहिं नाहीं ❀ राम कथा पर रुचि मन माहीं॥
कहहु पुनीत रामगुण गाथा ❀ भुजगराज भूषण सुरनाथा ॥

दोहा-वन्दौं पदधरि धरणि शिर, विनय करौं कर जोरि॥
वर्णहु रघुवर विशद यश, श्रुति सिद्धांत निचोरि॥११९॥

यदपि योषिताअन अधिकारी ❀ दासी मन क्रम वचन तुम्हारी ॥
गूढ़ो तत्त्व न साधु दुरावहिं ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥
अति आरत पूंछौं सुरराया ❀ रघुपति कथा कहहु करि दाया॥
प्रथम सो कारण कहहु विचारी ❀ निर्गुण ब्रह्म सगुण वपुधारी ॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ❀ बाल चरित पुनि कहहु उदारा॥
कहहु यथा जानकी विवाहा ❀ राज्य तजा सो दूषण काहा॥

१ ब्रह्मवेत्ता। २ आदर प्रीतिपूर्वक। ३ चेष्टारहित। ४ अबोध। ५ शेषजी। ६ वेदांत। ७ गूढ कही जो तत्त्वमें छिपो है अनुभवते प्रत्यक्ष है।

वन बसि कीन्हेउ चरित अपारा ❀ कहहु नाथ जिमि रावणमारा ॥
राज्य बैठि कीन्ही बहु लीला ❀ सकल कहहु शंकर सुखशीला॥
दोहा-बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्हजोअचरजराम॥
प्रजासहितरघुवंशमणि, किमिगवनेनिजधाम॥१२०॥
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्वबखानी ❀ जेहि विज्ञान मगन मुनिज्ञानी॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❀ पुनि सबवरणहु सहितविभागा॥
औरौ राम रहस्य अनेका ❀ कहहुनाथअतिविमलविवेका ॥
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई ❀ सोउ दयालु राखहु जनि गोई ॥
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना ❀ आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमाके सहज सुहाये ❀ छलविहीनसुनि शिवमनभाये ॥
हर हिय रामचरित सब आये ❀ प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा ❀ परमानन्द अमित सुखपावा ॥
दोहा-मग्न ध्यान रस दण्ड युग, पुनिमनबाहरकीन्ह ॥
रघुपति चरित महेश तब, हर्षितवरणैलीन्ह ॥१२१॥
झूँठौ सत्य जाहि विनुजाने ❀ जिमि भुजंगविनुरजुपहिंचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई ❀ जागे यथा स्वप्न भ्रमजाई ॥
वंदौं बालरूप सोइ रामू ❀ सबविधिसुलभजपतजहिनामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ द्रवौ सो दशरथ अजिर विहारी॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी ❀ हर्षि सुधा सम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ❀ तुम समान नहिं कोउ उपकारी ॥
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ❀ सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम रघुवीर चरणअनुरागी ❀ कीन्हेउ प्रश्न जगत हितलागी ॥
दोहा-राम कृपाते पार्वति, स्वप्नेहु तव मन माहिं ॥
शोक मोह संदेह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ॥ १२२ ॥
तदपि अशंका कीन्हेउ सोई ❀ कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन हरिकथा सुनीनहिं काना ❀ श्रवणरन्ध्र अहिभवन समाना ॥

१ रहस्य कही श्रीरामचन्द्रजीको स्वभाव, कृपा, करुणा, दया, उदारपना, सदाप्रसन्नता एक रस अरु यावल्लीलाहैं सो सब। २ कानोंके छेद।

नयनन सन्त दरश नहिं देखा ❋ लोचन मोर पंख कर लेखा ॥
ते शिर कटु तूमर सम तूला ❋ जे न नमत हरि गुरु पद मूला ॥
जिनहरिभक्तिहृदय नहिं आनी ❋ जीवत शव[1] समान ते प्रानी ॥
जे नहिं करहिं राम गुण गाना ❋ जीहै[2] सु दादुर[3] जीह समाना ॥
कुलिश कठोर निठुर सोइछाती ❋ सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम कीलीला ❋ सुरहित दनुज विमोहन शीला ॥

दोहा-रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि ॥
सन्त सभा सुरलोक सम, कोनसुनैअसजानि॥१२३॥

रामकथा सुन्दर करतारी ❋ संशय विहँग[4] उड़ावनहारी ॥
रामकथा कलि विटपकुठारी ❋ सादरसुनु गिरिराज कुमारी ॥
रामनाम गुण चरित सुहाये ❋ जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये ॥
यथा अनन्त राम भगवाना ❋ तथा कथा कीरति गुणनाना ॥
तदपियथाश्रुति जसमतिमोरी ❋ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई ❋ सुखदसन्तसम्मत मुहिं भाई ॥
एक बात नहिं मोहिं सुहानी ❋ यदपि मोहवश कहेउभवानी ॥
तुमजो कहा राम कोउ आना ❋ जेहिं श्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना॥

दो.-कहहिंसुनहिंअसअधमनर, ग्रसेजोमोहपिशाच ॥
पाखण्डी हरिपद विमुख, जानहिं झूठ नसाँच॥१२४॥

अज्ञ[5] अकोविद[6] अन्ध अभागी ❋ काई विषय मुकुर[7] मनलागी ॥
लम्पट[8] कपटी कुटिलविशेषी ❋ स्वप्नेहु सन्त सभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते वेद असम्मत बानी ❋ जिनहिं न सूझ लाभनहिंहानी ॥
मुकुर मलिन अरु नयन विहीना ❋ रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
जिनके अगुण[11] न सगुण[12] विवेका ❋ जलपहिं[9] कलिपत वचन अनेका ॥
हरि मायावश जगत भ्रमाहीं ❋ तिनहिं कहत कछुअघटितनाहीं॥
वातुल भूत विवश मतवारे ❋ तेनहिं बोलहिं वचन सँभारे ॥

१ मृतक । २ जिह्वा । ३ मेढक । ४ संशयरूपीपक्षी । ५ अज्ञानी । ६ मूर्ख । ७ दर्पण । ८ परधन परदारामें लीन । ९ कहते हैं आन करते हैं आन । १० विशेषकरकेसबमकारतेंटेढ़ेहैं । ११ निर्गुण ब्रह्मका विचार । १२ किन्तुभक्तनकेहेतुगुणनकोग्रहण करिकै विग्रहवान होतहैं ताको सगुण कही ।

जिनकृत महा मोह मदपाना ❀ तिनकरकहाकरिय नहिंकाना ॥
सो०-असनिजहृदयविचारि, तजिसंशयभजरामपद॥
सुनुगिरिराजकुमारि, भ्रमतमरविकरवचनमम॥११६॥
सगुणहिं अगुणहिंनहिं कछु भेदा ❀ गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा ॥
अगुण अरूप अलख अजोई ❀ भक्त प्रेम वश सगुण सो होई ॥
जो गुण रहित सगुण सो कैसे ❀ जल हिम उपल बिलगनहिंजैसे॥
जासुनाम भ्रम तिमिर पतंगा ❀ तिहि किमिकहियविमोहप्रसंगा॥
रामसच्चिदानन्द दिनेशा ❀ नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा ॥
सहजप्रकाश रूप भगवाना ❀ नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना ❀ जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
रामब्रह्म व्यापक जगजाना ❀ परमानंद परेश पुराना ॥
दोहा-पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रगट परावर नाथ ॥
रघुकुलमणिममस्वामिसोइ, कहिशिवनायउमाथ१२५
निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं जड़प्रानी ॥
यथा गगन घन पटल निहारी ❀ झम्पेउ भानु कहैं कुविचारी ॥
चितवतलोचन अंगुलि लाये ❀ प्रकट युगल शशितेहिकेभाये॥
उमाराम विषयिक अस मोहा ❀ नभ तम धूम धूरि जिमिसोहा ॥
विषय[1] करण[2] सुर जीव समेता ❀ सकल एकते एक सचेता ॥
सबकर परम प्रकाशक जोई ❀ राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगतप्रकाश्य प्रकाशक रामू ❀ मायाधीश ज्ञान गुण धामू ॥
जासु सत्यतास जड़ माया ❀ भास सत्य इव मोह सहाया ॥
दोहा-रजत सीप महँ भासजिमि, यथाभानुकर वारि॥
यद्यपि मृषातिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकैकोउटारि१२६
इहिविधि जग हरिआश्रित रहई ❀ यदपि असत्य देत दुख अहई ॥
ज्यों स्वप्ने शिर काटै कोई ❀ बिनुजागे दुख दूरि नहोई ॥

१शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पांच ज्ञानेंद्रियकेविषयहैं। २ करणकही इन्द्रिय श्रवण, त्वक, नयन, जीभ, नासिका ये ज्ञानइन्द्रिय-पग, गुदा, मुख, हाथ, ये कर्मेन्द्रिय।

जासु कृपा अस भ्रम मिटिजाई ❀ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा ❀ मति अनुमान निगम असगावा॥
पदबिनु चलै सुनै बिनु काना ❀ कर बिनु कर्म करै विधिनाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी ❀ बिनु वाणी वक्ता बड़ योगी ॥
तनु बिनु परश नयन बिनु देखा ❀ ग्रहैघ्राण बिनु बास अशेषा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी ❀ महिमा जासु जाय नहिं वरणी ॥
दोहा–जेहिइमिगावहिंवेदबुध, जाहिधरहिंमुनिध्यान॥
सोइदशरथसुतभक्तहित,कोशलपतिभगवान ॥१२७॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी ❀ जासु नाम बल करौं विशोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❀ रघुवर सब उर अन्तरयामी ॥
विवशहु जासु नाम नर कहहीं ❀ जन्म अनेक संचित अघ दहहीं॥
सादर सुमिरण जो नर करहीं ❀ भव[1]वारिधि गोपद इव तरहीं ॥
रामसो परमातमा भवानी ❀ तहँ भ्रम अतिअविहित[2]तवबानी॥
अस संशय आनत उर माहीं ❀ ज्ञान विराग सकल गुण जाहीं ॥
सुनि शिवके भ्रम भंजन वचना ❀ मिटिगइ सब कुतर्ककी रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती ❀ दारुण असम्भावना[3]बीती ॥
दोहा–पुनिपुनि प्रभुपद कमलगहि,जोरिपंकरुह[4]पानि॥
बोलीगिरिजावचनवर, मनहुँप्रेमरससानि ॥ १२८ ॥
शशिकरसमसुनि गिरा तुम्हारी ❀ मिटा मोह शरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ ❀ रामस्वरूप जानि मोहिं परेऊ ॥
नाथ कृपा अब गयउ विषादा[5] ❀ सुखी भइउँ प्रभु चरण प्रसादा ॥
अबमोहिं आपनि किंकरिजानी ❀ यदपिसहजजड़ नारिअयानी ॥
प्रथम जो मैं पूंछा सो कहहू ❀ जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
रामब्रह्म चिन्मय[6] अविनाशी ❀ सर्वरहित सब उर पुरवासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू ❀ मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू ॥
उमा वचन सुनि परम विनीता ❀ रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

१ संसारसागर । २ अशास्त्र । ३ नोमपरपदार्थमेंअपरपदार्थकीभावनाकरना । ४ कर-कमल । ५ शोच । ६ सच्चिदानन्द ।

दोहा—हिय हर्षे कामारि तब, शंकर सहज सुजान ॥
बहुविधि उमहि प्रशंसिपुनि, बोले कृपानिधान १२९ ॥
सो०—सुन शुभ कथा भवानि, रामचरितमानस विमल॥
कहा भुशुण्ड बखानि, सुना विहँग नायक गरुड़॥१७॥
सोइ सम्वाद उदार, जेहि विधि भा आगे कहब ॥
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥१८॥
हरिगुण नाम अपार, कथा रूप अगणित अमित ॥
मैं निजमति अनुसार, कहा उमा सादर सुनहु ॥१९॥
सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये ❀ विपुल विशद निगमागम गाये ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई ❀ इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क बुद्धि मन बानी ❀ मत हमार अस सुनहु भवानी ॥
तदपि सन्त मुनि वेद पुराना ❀ जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥
तसमैं सुमुखि सुनावौं तोहीं ❀ समुझि परै जस कारण मोहीं ॥
जब जब होइ धर्मकी हानी ❀ बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइ नहिं वरणी ❀ सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी ॥
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥
दोहा—असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निज श्रुति सेतु॥
जग विस्तारहिं विशद यश, रामजन्म कर हेतु ॥१३०॥
सोइ यश गाइ भक्त भवतरहीं ❀ कृपासिन्धु जन हित तनु धरहीं॥
राम जन्मके हेतु अनेका ❀ परम विचित्र एकते एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी ❀ सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरिके प्रिय दोऊ ❀ जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥
विप्र शापते दोनों भाई ❀ तामस असुर देह तिन पाई ॥
कनककशिपु अरु हाटकलोचन ❀ जगतविदित सुरपति मद मोचन ॥
विजयी समर वीर विख्याता ❀ धरि वराह वपु एक निपाता ॥

१ निर्मल । २ वेदपुराण । ३ इदमित्थं कहि कि जो इतनेही कारण प्रभुके अवतारहैं सो नहीं कहाजाइहै क्योंकि अनेक कारणहैं । ४ पीडादेइँ । ५ ब्राह्मण । ६ गौ । ७ देवता। ८ भूमि । ९ कारण । १० सुंदर । ११ इन्द्र १२ युद्ध । १३ शरीर । १४ नाशकिया ।

हुइ नरहरि वपु दूसर मारा ❀ जन प्रहलाद सुयश वि॰ ॥
दोहा-भये निशाचर जाइते, महाबीर बलवान ।
कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुर विजयी जगजान ॥ १३१ ॥
मुक्त न भयउ हते भगवाना ❀ तीन जन्म द्विजवचनप्रमाना ॥
एकबार तिनके हित लागी ❀ धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यप अदिति तहाँ पितु माता ❀ दशरथ कौशल्या विख्याता ॥
एककल्प यहिविधि अवतारा ❀ चरित पवित्र किये संसारा ॥
एककल्प सुर देखि दुखारे ❀ समर जलन्धर सन सब हारे ॥
शम्भुकीन्ह संग्राम अपारा ❀ दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिप नारी ❀ तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥
दोहा-छलकर टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥
जब तेइँ जानेउ मर्म सब, शाप कोपकर दीन्ह ॥ १३२ ॥
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना ❀ कौतुकनिधि कृपालु भगवाना ॥
तहां जलंधर रावण भयऊ ❀ रणहति राम परमपद दयऊ ॥
एकजन्म कर कारण एहा ❀ जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी ❀ मुनि सुनु वरणी कविन घनेरी ॥
नारद शाप दीन्ह यक बारा ❀ कल्प एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकितभई सुनि वानी ❀ नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी ॥
कारण कौन शाप मुनि दीन्हा ❀ का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी ❀ मुनि मन मोह सो अचरज भारी ॥
दोहा-बोले बिहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि क्षण होइ ॥
सो॰-कहौं राम गुण गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ॥
भव भंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मोह मद ॥ २० ॥
हिमगिरिगुहा एक अतिपावनि ❀ वह समीप सुरसरित सुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देवऋषि मन अतिभावा ॥
निरखि शैलसरि विपिन विभागा ❀ भयउ रमापतिपद अनुरागा ॥

सुमिरतहरिहि श्वासगति बांधी ❀ सहज विमलमन लागि समाधी ॥
मुनि गति देखि सुरेश डराना ❀ कामहि बोलि कीन्ह सन्माना ॥
सहित सहाय जाहु ममहेतू ❀ चलेउ हर्षि हिय जलचरकेतू ॥
सुनासीर मन महँ अतित्रासा ❀ चहत देवऋषि ममपुर वासा ॥
जेकामी लोलुप जगमाहीं ❀ कुटिल काक इव सबहिं डराहीं॥

दोहा-सूख हाड़ ले भागशठ, श्वाननिरखिमृगराज ॥
छीनिलेइजनिजानजड़, तिमिसुरपतिहि नलाज १२४॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ ❀ निज माया बसन्त निर्मयऊ ॥
कुसुमित विविध विटप बहुरङ्गा ❀ कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृङ्गा ॥
चली सुहावन त्रिविध बयारी ❀ काम कृशानु बढ़ावन हारी ॥
रम्भादिक सुरनारि नवीना ❀ सकल असमशरकलाप्रवीना ॥
करहिं गान बहु तानतरंगा ❀ बहुविधि क्रीडहिं पाणि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना ❀ कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधिनाना ॥
कामकलाकछु मुनिहिनव्यापी ❀ निजभयडरेउ मनोभवपापी ॥
सीमाकिचापि सकै कोउतासू ❀ बड़ रखवार रमापति जासू ॥

दोहा-सहितसहायसभीतअति, मानिहारिमनमैन ॥
गहेसिजाइमुनिवरचरण, कहिसुठिआरतबैन १२५ ॥

भयउ न नारदमन कछु रोषा ❀ कहि प्रियवचन कामपरितोषा ॥
नाइचरण शिर आयसुपाई ❀ गयउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुशीलता आपनिकरणी ❀ सुरपतिसभा जाइ सबवरणी ॥
सुनि सबके मन अचरज आवा ❀ मुनिहिं प्रशंसि हरिहि शिरनावा॥
तब नारद गवने शिवपाहीं ❀ जीतिकाम अहमिति मनमाहीं ॥
मारचरित शंकरहि सुनावा ❀ अतिप्रिय जानि महेशसिखावा ॥
बार बार विनवउँ मुनितोहीं ❀ जिमि यहकथा सुनायउ मोहीं ॥
तिमि जनि हरिहि सुनायहुकबहूँ ❀ चलेहु प्रसंग दुरायउ तबहूँ ॥

१ इन्द्र। २ कामदेव। ३ इन्द्र। ४ नारदमुनि। ५ झूँठे-लालची। ६ कुत्ता। ७ सिंह। ८ प्रफुल्लित। ९ वृक्ष। १० भ्रमर। ११ शीतल-मंद-सुगंध। १२ कामाग्नि। १३ काम। १४ दुःखित। १५ माया। १६ गर्व।

दोहा-शम्भु दीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहिं सुहान ॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरि इच्छा बलवान ॥ १३६ ॥
राम कीन्ह चाहैं सोइ होई ❀ करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
शम्भुवचन मुनिमनहिं न भाये ❀ तब विरंचिके लोक[1] सिधाये ॥
"तहँपुनिकछुकदिवसमुनिराया ❀ रहे हृदय अहमिति अधिकाया"
एकबार करतल वर बीणा ❀ गावत हरिगुण गान प्रवीणा ॥
क्षीरसिंधु गवने मुनिनाथा ❀ जहँबसिश्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥
हर्षि मिले उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन ऋषिहि समेता ॥
बोले बिहँसि चराचर राया ❀ बहुत दिनन कीन्ही मुनिदाया ॥
कामचरित नारद सब भाषे ❀ यद्यपि प्रथम बरजि शिव राखे ॥
अति प्रचंड[2] रघुपतिकी माया ❀ जेहि नमोह असको जगजाया ॥
दोहा-रूख बदन करि वचन मृदु, बोले श्रीभगवान ॥
तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं, मोह मार मद मान ॥ १३७ ॥
सुनु मुनि मोह होइ मन ताके ❀ ज्ञान विराग हृदय नहिंजाके ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रत रति मतिधीरा ❀ तुमहिं कि करै मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना ❀ कृपातुम्हारि सकल भगवाना ॥
करुणानिधि[3] मन दीख विचारी ❀ उर अंकुरेउ गर्व[4] तरु भारी ॥
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी ❀ प्रण हमार सेवक हितकारी ॥
मुनिकरहित मम कौतुक होई ❀ अवशि उपाय करब मैं सोई ॥
तब नारद हरिपद शिरनाई ❀ चले हृदय अहमिति अधिकाई ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❀ सुनहु कठिन करणी तेहि केरी ॥
दोहा-विरचेउ मगमहँनगर तेहि, शतयोजन विस्तार।
श्रीनिवासपुरतेअधिक, रचनाविविधप्रकार ॥ १३८ ॥
बसहिं नगर सुंदर नर नारी ❀ जनु बहु मनसिज[5] रति[6] तनु धारी ॥
तेहिपुरबसै शीलनिधि राजा ❀ अगणित हय[7] गज सेनसमाजा ॥
शतसुरेशसम[8] विभवविलासा[9] ❀ रूप तेज बल नीति निवासा ॥

१ ब्रह्मलोक। २ तीक्ष्ण। ३ दयासागर। ४ अभिमान। ५ कामदेव। ६ स्त्री। ७ अश्व। ८ सौ इन्द्र। ९ ऐश्वर्य।

विश्वमोहिनी तासु कुमारी ❀ श्रीविमोह जेहि रूप निहारी ॥
सो हरिमाया सब गुणखानी ❀ शोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयम्बर सो नृपबाला ❀ आयेतहँ अगणित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ ❀ पुरवासिन सन बूझत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूप गृहआये ❀ करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥

दोहा-आनि देखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ॥
कहहुनाथगुणदोषसब, इहिकरहृदयविचारि ॥१३९॥

देखिरूप मुनि विरति बिसारी ❀ बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु विलोकि भुलाने ❀ हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो इहि बरै अमर सो होई ❀ समरभूमि तेहि जीत नकोई ॥
सेवहि सकल चराचर ताही ❀ बरै शीलनिधि कन्या जाही ॥
लक्षण सब विचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं ❀ नारद चले शोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ यतन विचारी ❀ जेहि प्रकार मोहिं बरै कुमारी ॥
जप तप कछु नहोइयहिकाला ❀ हेविधिमिलै कवन विधि बाला ॥

दोहा-इहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूपविशाल ॥
जो विलोकि रीझै कुँवरि, तो मेलै जयमाल ॥१४०॥

हरिसन मांगौं सुन्दरताई ❀ होइहि जात गहरु अतिभाई ॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ ❀ इहिअवसर सहाय सो होऊ ॥
बहुविधि विनयकीन्हतेहिकाला ❀ प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु विलोकि मुनिनयनजुड़ाने ❀ होइहि काज हिये हर्षाने ॥
अति आरत कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ॥
आपन रूप देव प्रभु मोहीं ❀ आनभाँति नहिं पावहुँ ओही ॥
जेहि विधि नाथ होइ हितमोरा ❀ करौ सो वेगि दास मैं तोरा ॥
निज मायाबल देखि विशाला ❀ हियँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

दोहा-जेहि विधिहोइहिपरमहित, नारदसुनहुतुम्हार ॥

१ मृत्युते रहित । २ संग्राममें । ३ स्थावर-जंगम । ४ विलम्ब । ५ कृपाकेस्थान । ६ आंखें । ७ हृदय ।

सोइहमकरबनआनकछु, वचननमृषाहमार॥१४१॥
कुपथ मांगु रुजं व्याकुल रोगी ❀ वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी॥
यहिविधिहित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहिअस अन्तरहित प्रभुभयऊ॥
माया विवश भये मुनि मूढा ❀ समुझी नहिं हरि गिरा निगूढा॥
गमने तुरत तहाँ ऋषिराई ❀ जहाँ स्वयम्वर भूमि बनाई॥
निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे ❀ मोहिंतजिआनवरिहिनहिंभोरे॥
मुनिहित कारण कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा ❀ नारद जानि सबन्हि शिरनावा॥

दोहा-रहे तहाँ दुइ रुद्रगण, ते जानहिं सब भेउ॥
विप्र भेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ॥१४२॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदय रूप अहमिति अधिकाई॥
तहँ बैठे महेश गण दोऊ ❀ विप्रभेष गति लखै न कोऊ॥
करहिं कूठ नारदहि सुनाई ❀ नीकि दीन्ह हरि सुन्दरताई॥
रीझिहि राजकुँवरि छबिदेखी ❀ इनहिं बरिहि हरिजानिविशेषी॥
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये ❀ हँसहिं शंभुगण अति सचुपाये॥
यदपिसुनहिंमुनि अटपटिबानी ❀ समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी॥
काहुनलखा सो चरित विशेषी ❀ सो स्वरूप नृप कन्या देखी॥
मर्कट बदन भयंकर देही ❀ देखत हृदय क्रोधभा तेही॥

दोहा-सखी संग लेकुँवरि तब, चलि जनु राजमराल॥
देखत फिरै महीपसब, कर सरोज जयमाल॥१४३॥

जेहि दिशि बैठे नारद फूली ❀ सो दिशितेहिनविलोकेउभूली॥
पुनिपुनिमुनिउसकहिंअकुलाहीं ❀ देखि दशा हरगण मुसुकाहीं॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला ❀ कुँवरि हर्षि मेली जयमाला॥
दुलहिनि लेगये लक्ष्मिनिवासा ❀ नृपसमाज सबभयउ निरासा॥
मुनिअतिविकलमोहमति नाठी ❀ मणि गिरिगई छूटि जनुगांठी॥

१असत्य। २ रोग। ३ वाणी। ४ बन्दरके सरीखामुख। ५ हंस। ६ राजा जोस्वयंवरमें आयेथे। ७ करकमल। ८ मोहने मति हरली॥

तब हरगण बोले मुसुकाई ❀ निजमुख मुकुर[1] विलोकहु जाई ॥
असकहि दोउ भागे भय भारी ❀ वदन दीख मुनि वारि[2] निहारी ॥
भेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा ❀ तिनहिं शाप दीन्हा अति गाढ़ा ॥

दोहा–होहु निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोउ ॥
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोउ १४४

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदय सन्तोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं ❀ सपदि[3] चले कमलापतिपाहीं ॥
देहौं शाप कि मरिहौं जाई ❀ जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी ❀ संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर वचन सुरसांई ❀ मुनिकहँ चले विकलकी नाईं ॥
सुनतवचन उपजा अतिक्रोधा ❀ मायावश न रहा मनबोधा ॥
परसम्पदा सकहु नहिं देखी ❀ तुम्हरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिन्धु रुद्रहि बौरायहु ❀ सुरन प्रेरि विष पान करायहु ॥

दोहा–असुरसुरा[4] विष शंकरहि, आपु रमा मणि चारु ॥
स्वारथ साधन कुटिल तुम, सदा कपट व्यवहारु १४५

परम स्वतंत्र न शिरपर कोई ❀ भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहि मन्द मन्दहि भल करहू ❀ विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू ॥
डहँकि डहकि[6] परके सब काहू ❀ अति अशंक मन सदा उछाँहू[7] ॥
कर्म्म शुभाशुभतुमहिंनबाधा ❀ अबलगि तुमहिं न काहूसाधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा ❀ पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
वंचेहु[8] मोहिं जवन धरि देहा ❀ सोइ तनु धरहु शाप मम येहा ॥
कपि[10] आकृतितुमकीन्हहमारी ❀ करिहहिं कीशँ सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार[11] कीन्ह तुम भारी ❀ नारि विरह तुम होहु दुखारी ॥

दोहा-शाप शीश धरि हर्षि हिय, प्रभु सुर कारज कीन्ह॥
निज मायाकी प्रबलता, कर्षि कृपानिधि लीन्ह ॥१४६॥

---

१ दर्पण। २ पानीमें। ३ शीघ्र। ४ वारुणी-मदिरा। ५ पवित्र। ६। छांट छांट। ७ आनन्द। ८ ठगेहु। ९ सकल। १० बंदर। ११ निरादर।

जब हरि माया दूरि निवारी ❀ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
तब मुनि अतिसभीतहरिचरणा ❀ गहे पाहि प्रणतारति हरणा ॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला ❀ मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे ❀ कह मुनि पाप मिटहिं किमिमेरे॥
जपहु जाइ शंकर शतनामा ❀ होइहि हृदय तुरतविश्रामा ॥
कोउनहिं शिवसमान प्रियमोरे ❀ असप्रतीति त्यागहु जनिभोरे ॥
जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी ❀ सो न पाव मुनि भक्ति हमारी ॥
अस उरधरि महिविचरहुजाई ❀ अब न तुमहिं माया नियराई ॥

दोहा-बहु विधि मुनिहि प्रवोधि प्रभु,तव भये अंतर्द्धान॥
सत्यलोक नारद चले, करत राम गुणगान ॥ १४७ ॥

हरगण मुनिहि जात पथ देखी ❀ विगत मोह मन हर्ष विशेषी ॥
अति सभीत नारद पहँ आये ❀ गहि पद आरत वचन सुनाये ॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया ❀ वड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥
शाप अनुग्रह करहु कृपाला ❀ वोले नारद दीनदयाला ॥
निशिचर[३] जाइ होउ तुम दोऊ ❀ वैभव[४] विपुल तेज वल होऊ ॥
भुजवलविश्व जितवतुमजहिया ❀ धरिहैंविष्णु मनुजतनु तहिया ॥
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा ❀ होइहहु मुक्त न पुनि संसारा ॥
चले युगल[६] मुनि पद शिरनाई ❀ भये निशाचर कालहि पाई ॥

दोहा-एककल्प इहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार ॥
सुररंजन[७] सज्जन सुखद, हरि भंजन भूभार[८] ॥ १४८ ॥

इहि विधि जन्म कर्म हरि केरे ❀ सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्प प्रति प्रभुअवतरहीं ❀ चारुचरित नानाविधि करहीं ॥
तव तव कथा मुनीशन गाई ❀ परम विचित्र प्रवन्ध वनाई ॥
विविधप्रसंग अनूप वखाने ❀ करहिं न सुनि आश्चर्यसयाने ॥
हरिअनंत हरिकथा अनंता ❀ कहहिंसुनहिंवहुविधिश्रुतिसन्ता ॥
रामचंद्रके चरित सुहाये ❀ कल्पकोटि लगि जाहिं न गाये ॥

१ महादेव । २ पृथ्वी । ३ राक्षस । ४ संपदा-ऐश्वर्य । ५ बहुत । ६ दोनों । ७ देवतोंको आनंददाता । ८ पृथ्वीका बोझा ।

यह प्रसंग मैं कहा भवानी ❀ हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु कौतुकी प्रणतहितकारी ❀ सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥
सो०सुरनरमुनिकोउनाहिं, जेहिनमोहमायाप्रबल ॥
अस विचारि मनमाहिं, भजियमहा मायापतिहि२१
अपर हेतु सुनु शैलकुमारी ❀ कहौं विचित्र कथा विस्तारी ॥
जेहि कारण अज अगुण अनूपा ❀ ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा ॥
जो प्रभु विपिन फिरत हम देखा ❀ बन्धु समेत किये मुनि वेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी ❀ सती शरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुँ न छाया मिटत तुम्हारी ❀ तासुचरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा ❀ सोसब कहिहौं मति अनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि शंकरबानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥
लगे बहुरि वरणे वृषकेतू ❀ सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥
दोहा–सो मैं तुमसन कहौं सब,सुनु मुनीश मन लाइ ॥
राम कथा कलिमल हरणि,मङ्गल करणिसुहाइ१४९
स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा ❀ जिनते भै नर सृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्म्म आचरण नीका ❀ अजहुँ गावश्रुतिजिनकीलीका॥
नृप उत्तानपाद सुत जासू ❀ ध्रुव हरिभक्त भये सुत तासू ॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही ❀ वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
देवहुती पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनिकर्दमकी प्रियनारी ॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला ❀ जठरधरेउ जेहि कपिलकृपाला॥
सांख्यशास्त्र जिन प्रगट बखाना ❀ तत्त्वविचार निपुण भगवाना ॥
तेहि मनुराज कीन्ह बहुकाला ❀ प्रभुआयसु बहुविधिप्रतिपाला ॥
सो०–होइ न विषय विराग,भवन बसत भा चौथपन ॥
हृदय बहुत दुख लाग,जन्म गयउ हरिभक्ति बिन२२
बरबश राज्य सुतहि तब दीन्हा ❀ नारि समेत गवन वन कीन्हा ॥
तीरथवर नैमिष विख्याता ❀ अति पुनीत साधक सिधिदाता॥

१ इतिहास-कथा । २ दीन । ३ अरण्य । ४ महादेवजी । ५ वेद । ६ पेट ।

बसहिं तहां मुनि सिद्धसमाजा ❀ तहँ हिय हर्षि चले मनुराजा ॥
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा ❀ ज्ञानभक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा ❀ हर्षि नहाने निर्म्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी ❀ धर्म्मधुरन्धर ऋषि मुनि जानी ॥
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये ❀ मुनिन सकल सादर करवाये ॥
कृशशरीर मुनिपट परिधाना ❀ सन्तसभा नित सुनहिं पुराना ॥

दोहा—द्वादश अक्षर मन्त्रबर, जपहिं सहित अनुराग ॥
वासुदेवपदपंकरुह, दम्पति मन अति लाग ॥ १५० ॥

करहिं अहार शाक फल कन्दा ❀ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❀ वारि अहार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई ❀ देखिय नयन परम प्रिय सोई ॥
अगुर्ण अखण्ड अनन्त अनादी ❀ जेहि चिंतहिं परमारथ वादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा ❀ चिदानंद निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना ❀ उपजहिं जासु अंशते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं ❀ भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो यह वचन सत्य श्रुतिभाषा ❀ तौ हमार पूजहिं अभिलाषा ॥

दोहा—इहिविधि बीते वर्षषट, सहस वारि आहार ॥
सम्वत सप्तसहस्र पुनि, रहे समीर अधार ॥ १५१ ॥

वर्षसहसदश त्यागेउ सोऊ ❀ ठाढे रहे एक पद दोऊ ॥
विधि हरि हर तप देखि अपारा ❀ मनु समीप आये बहु बारा ॥
माँगहु वर बहुभाँति लुभाये ❀ परमधीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होय रहे शरीरा ❀ तदपि मनागपि नहिं मन पीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी ❀ गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
मांगु मांगु वर भै नभ वानी ❀ परम गँभीर कृपामृत सानी ॥
मृतक जिआवनि गिरासुहाई ❀ श्रवणरन्ध्र होइ उर जब आई ॥

* ओंनमोभगवते वासुदेवाय, यह मन्त्रहै ।
१ गोमतीनदी । २ जल । ३ दूबर । ४ भोजपत्र । ५ चरणकमल । ६ स्त्री पुरुष । ७ पानी । ८ गुणोंसे रहित । ९ जिसकाखंडन नहो । १० जिसकाअंत नहींहै । ११ जिसकी उपमा दूसरी नहो । १२ छःहजार । १३ वायु ।

हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये ❀ मानहुँ अबहिं भवनते आये ॥
दोहा-श्रवणसुधासमवचनसुनि, पुलकप्रफुल्लितगात॥
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात ॥१५२॥
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ❀ विधि हरि हर वन्दित पद रेनू ॥
सेवतसुलभ सकल सुखदायक ❀ प्रणतपाल सचराचरनायक ॥
जो अनाथ हित हमपर नेहू ❀ तौ प्रसन्न होय यह वरदेहू ॥
जोस्वरूप वस शिव मनमाहीं ❀ जेहि कारण मुनि यतन कराहीं ॥
जो भुशुण्डि मनमानस हंसा ❀ सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा॥
देखहिं हम सो रूप भरिलोचन ❀ कृपा करहु प्रणतारतिमोचन ॥
दम्पति वचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल विनीत प्रेमरस पागे ॥
भक्तवछल[1] प्रभु कृपानिधाना[2] ❀ विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥
दोहा-नीलसरोरुह[3] नीलमणि, नीलनीरधर[4] श्याम ॥
लाजहिंतनुशोभानिरखि,कोटिकोटिशतकाम॥१५३॥
शरदमयंक[5] वदन छवि सींवा ❀ चारुकपोल[6] चिबुक[7] दर[8] ग्रीवा[9] ॥
अधरअरुण रद सुन्दर नासा ❀ विधुकर निकरविनिन्दक हासा ॥
नवअम्बुज अम्बुक छविनीकी ❀ चितवन ललित भावतीजीकी ॥
भृकुटि मनोज चाप छविहारी ❀ तिलकललाटपटलद्युतिकारी ॥
कुण्डलमकरमुकुट शिरभ्राजा ❀ कुटिलकेश जनु मधुप समाजा ॥
उरश्रीवत्स रुचिर वनमाला ❀ पदिकहार भूषण मणिजाला ॥
केहरि कन्धर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकरसरिस सुभगभुजदण्डा ❀ कटिनिषंग करशर कोदण्डा ॥
दोहा-तड़ितविनिन्दक पीतपट, उदर रेख वर तीनि ॥
नाभिमनोहरलेतिजनु,यमुनभँवरछबिछीनि॥१५४॥
पदराजीववरणि नहिं जाहीं ❀ मुनिमन मधुप बसहिंजेहिमाहीं ॥
वामभाग शोभित अनुकूला ❀ आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला॥

---

१ भक्तोंके रक्षक। २ कृपाकेस्थान। ३ नीलकमल। ४ नीलमेघ। ५ शरदपूनोंकेचन्द्रमा समानमुख। ६ सुंदरगाल। ७ ठोडी। ८ शंख। ९ कंठ॥

जासुअंश उपजहिं गुणखानी ❀ अगणित उमा रमा ब्रह्मानी ॥
भ्रुकुटि विलास जासु जग होई ❀ राम वामदिशि सीता सोई ॥
छवि समुद्र हरिरूप विलोकी ❀ इकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनु शतरूपा ॥
हर्ष विवश तनु दशा भुलानी ❀ परे दण्डइव गहि पदपानी ॥
शिरपरसे प्रभु निज करकंजा ❀ तुरत उठाये करुणापुंजा ॥

दोहा—बोले कृपानिधान पुनि, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
मांगहुवरजोइभावमन, महादानिअनुमानि ॥ १५५ ॥

सुनिप्रभुवचन जोरि युगपानी[1] ❀ धरिधीरज बोले मृदुवानी ॥
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे ❀ अव पूजे सव काम हमारे ॥
एकलालसा[2] बड़ि मनमाहीं ❀ सुगम अगम कहिजातसोनाहीं ॥
तुमहिंदेत अतिसुगम गुसांई ❀ अगमलागिमोहिं निजकृपणाई[3] ॥
यथा दरिद्र विबुधतरु[4] जाई ❀ बहु सम्पति मांगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जाने सोई ❀ तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अंतर्यामी ❀ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच विहाइ मांगु नृप मोहीं ❀ मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं ॥

दोहा—दानिशिरोमणि कृपानिधि, नाथकहौं सतभाव ॥
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभुसन कवन दुराव ॥ १५६ ॥

देखिप्रीति सुनि वचन अमोले ❀ एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहँ जाई ❀ नृप तव तनँय[7] होव मैं आई ॥
शतरूपहिं विलोकि कर जोरे ❀ देवि मांगु वर जो रुचि तोरे ॥
जो वर नाथ चतुर नृप माँगा ❀ सोइकृपालुमोहिंअतिप्रियलागा ॥
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई ❀ यदपि भक्त हित तुमहिं सुहाई ॥
तुमब्रह्मादि जनक जगस्वामी ❀ ब्रह्म सकल उर अंतरयामी ॥
अस समुझत मन संशय होई ❀ कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई ॥
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं ❀ जो सुख पावहिं सो गति लहहीं ॥

१ दोनोंहाथ। २ अभिलाष। ३ दरिद्रता। ४ कल्पवृक्ष। ५ ऐश्वर्य। ६ त्याग। ७ पुत्र।

दो०-सोइसुखसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरणसनेहु॥
सोइविवेकसोइरहनिप्रभु, मोहिंकृपाकरिदेहु॥१५७॥
सुनि मृदु[१] गूढ रुचिर वर रचना ❀ कृपासिन्धु बोले मृदु वचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं ❀ मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं ॥
मातु विवेक[२] अलौकिक[३] तोरे ❀ कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
वन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी ❀ और एक विनती प्रभु मोरी ॥
सुत विषयक तव पद रति[४] होऊ ❀ मोहिं बरु मूढ कहै किन कोऊ ॥
मणिबिनुफणिजिमि जल बिनमीना ❀ममजीवनतिमितुमहिंअधीना॥
अस वर माँगि चरण गहिरहेऊ ❀ एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ ॥
अब तुम मम अनुशासन मानी ❀ बसहुजाइ सुरपतिरंजधानी[५] ॥
सो०-तहँ करि भोग विशाल, तात गये कछु काल पुनि॥
होइहहु अवध भुआल, तब हम होब तुम्हार सुत ॥२३॥
इच्छामय नर वेष सँवारे ❀ होइहौं प्रकट निकेत[६] तुम्हारे ॥
अंशन सहित देह धरि ताता ❀ करिहौं चरित भक्त सुखदाता ॥
जेहि सुनि सादर नर बडभागी ❀ भव[७] तरिहहिं ममता मद त्यागी॥
आदिशक्ति जेहिं जगउपजाया ❀ सोउअवतरहि मोरि यहमाया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❀ सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि असकहि कृपानिधाना ❀ अन्तर्द्धान भये भगवाना ॥
दम्पतिउरधरि भक्ति कृपाला ❀ तेहि आश्रम निवसे कछुकाला ॥
समय पाय तनुतजि अनयासा[८] ❀ जाइकीन्ह अमरावति वासा ॥
दोहा-यहइतिहासपुनीतअति, उमहिं कहेउ वृषकेतु॥
भरद्वाज सुन अपर पुनि, रामजन्म करहेतु॥१५८॥
सुनु मुनि कथा पुनीतपुरानी ❀ जोगिरिजा प्रति शम्भुबखानी ॥
विश्व विदित इक केकय देशू ❀ सत्यकेतु तहँ बसे नरेशू ॥
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना ❀ तेज प्रताप शील बलवाना ॥

१ कोमल। २ ज्ञान। ३ जो लोकमेंनहींहै। ४ चरणोंमें प्रीति। ५ इन्द्रपुरी। ६ गृह। ७ संसार। ८ बेप्रयास-बेकष्ट।

तेहिके भये युगल सुत वीरा ❀ सब गुण धाम महा रणधीरा ॥
रजधानी जेठे सुत आही ❀ नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपरसुतहि अरिमर्दन नामा ❀ भुजबल अतुल अचलसंग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम सुनीती ❀ सकल दोष छल वर्जित प्रीती ॥
जेठेसुतहि राज्य नृपदीन्हा ❀ हरिहित आपु गवन वन कीन्हा ॥
दोहा-जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश ॥
प्रजापाल अति वेदविधि, कतहुँ नहीं अघलेश ॥ १५९ ॥
नृपहितकारक सचिवसुजाना ❀ नाम धर्मरुचि शुक्र समाना ॥
सचिवसयान बन्धु बलवीरा ❀ आपु प्रतापपुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा ❀ अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन विलोकि राउ हरषाना ❀ अरु बाजे गहगहे निशाना ॥
विजयहेतु कटकाइ बनाई ❀ सुदिन शोधि नृप चल्यो बजाई ॥
जहँ तहँ परीं अनेक लड़ाई ❀ जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्तद्वीप भुजबल वश कीन्हा ❀ लैलै दण्ड छाँड़ि नृप दीन्हा ॥
सकलअवनिमण्डलतेहिकाला ❀ एक प्रतापभानु महिपाला ॥
दोहा-स्ववश विश्व करिबाहुबल, निजपुरकीन्हप्रवेश ॥
धर्म अर्थ कामादि सुख, सेवहिं सबै नरेश ॥ १६० ॥
भूप प्रतापभानु बल पाई ❀ कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख वर्जित प्रजासुखारी ❀ धर्मशील सुन्दर नर नारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपदप्रीती ❀ नृपहित हेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर संत पितर महिदेवा ❀ करै सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूप धर्म्म जे वेद बखाने ❀ सकल करै सादर सुखमाने ॥
दिनप्रतिदेइ विविधविधिदाना ❀ सुनै शास्त्र वर वेद पुराना ॥
नाना वापी कूप तडागा ❀ सुमनवाटिका सुन्दर बागा ॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये ❀ सब तीरथन विचित्र बनाये ॥
दोहा-जहँलगि कहे पुराण श्रुति, एक एक सब याग ॥
बार सहस्रसहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥ १६१ ॥

हृदय न कछुफलअनुसंधाना ❀ भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म्मकर्म्म मन बानी ❀ बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढि वर बाजि बार इक राजा ❀ मृगयाकर सब साज समाजा ॥
विन्ध्याचल गँभीर बन गयऊ ❀ मृगपुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत विपिन नृप दीख बराहू ❀ जनु वन दुरेउ शशिहिं ग्रसि राहू ॥
बड़विधु नाहिं समात मुखमाहीं ❀ मनहुँ क्रोधवश उगिलत नाहीं ॥
कोल कराल दशन छवि गाई ❀ तनु विशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये ❀ चकित विलोकत कान उठाये ॥
दोहा—नील महीधर शिखर सम, देखि विशालबराह ॥
चपरिचलेउहयसुटिकनृप,हांकिनहोइनिबाह॥१६२॥
आवत देखि अधिक रव बाजी ❀ चला बराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप शरसन्धाना ❀ महिमिलिगयउविलोकतबाना ॥
तकि तकि तीर महीश चलावा ❀ करि छल सुवर शरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाइ मृगभागा ❀ रिसवश भूप चलेउ सँगलागा ॥
गयउ दूरि बन गहन बराहू ❀ जहां नाहिं गज बाजि निबाहू ॥
अति अकेल बनविपुलकलेशू ❀ तदपि न मृग मग तजे नरेशू ॥
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा ❀ भागि पैठु गिरि गुहा गँभीरा ॥
अगमदेखि नृप अति पछिताई ❀ फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥
दोहा—खेद खिन्न तृषित क्षुधित, राजा बाजि समेत ॥
खोजतव्याकुलसरितसर, जलबिनुभयउअचेत१६३
फिरतविपिन आश्रम इकदेखा ❀ तहँबसनृपतिकपट मुनि वेषा ॥
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई ❀ समर सेन तजि गयउ पराई ॥
समय प्रतापभानुकर जानी ❀ आपन अति असमय अनुमानी ॥
गयउ नगृह मन बहुत गलानी ❀ मिला नराजहि नृप अभिमानी ॥
रिसिउर मारि रंकजिमिराजा ❀ विपिन बसै तापसके साजा ॥
तासु समीप गवन नृपकीन्हा ❀ यह प्रतापरवि तेहँ तबचीन्हा ॥

१ चाहा। २ श्रेष्ठघोड़ेपर। ३ शिकारखेलनेको। ४ हरिण। ५ आहट। ६ गम्भीर। ७ सुअर। ८ दुःखी। ९ दुर्बल। १० पियासा। ११ भूखा। १२ राजा। १३ भाग। १४ लज्जा। १५ दलिद्री। १६ निकट।

राउतृषितनहिं सो पहिचाना ❁ देखि सुवेष महामुनि जाना ॥
उतरितुरँगते कीन्ह प्रणामा ❁ परम चतुर न कहेउ निजनामा ॥
दोहा–भूपति तृषित विलोकितेइँ, सरवँरदीन्हदिखाइ॥
मज्जन पान समेत हय, कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ १६४॥
गइश्रम सकल सुखी नृपभयऊ ❁ निज आश्रम तापस लैगयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्तरविजानी ❁ पुनि तापस बोला मृदुवानी ॥
को तुम कस वन फिरहु अकेले ❁ सुन्दर युवा जीव पर हेले ॥
चक्रवर्तिके लक्षण तोरे ❁ देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अवनीशा ❁ तासु सचिवँ मैं सुनहु मुनीशा ॥
फिरत अहेरहि परेउँ भुलाई ❁ बड़े भाग्य देखेउँ पद आई ॥
हम कहँ दुर्लभ दरशतुम्हारा ❁ जानतहौं कछु भल होनहारा ॥
कहमुनि तात भयउ अँधियारा ❁ योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥
दोहा–निशाघोर गम्भीर वन, पंथँ न सूझ सुजान ॥
बसहुआजुअस जानितुम, जायहुहोतविहान॥१६५॥
तुलसी जस भवितव्यता, तैसिहि मिलै सहाय ॥
आपु न आवै ताहि पहँ, ताहि तहां लैजाय ॥ १६६ ॥
भलेहिनाथ आयसु धरिशीशा ❁ बांधि तुरँग तरु बैठ महीशा ॥
नृप सबभांति प्रशंसेउ ताही ❁ चरणवन्दि निजभाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई ❁ जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी ❁ नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहिनजाननृप नृपहिसोजाना ❁ भूपसुहृदय सो कपट सयाना ॥
वैरी पुनि क्षत्रिय पुनिराजा ❁ छल बल कीन्ह चहै निज काजा ॥
समुझिराज्यसुखदुखितअराती ❁ अँवा अनलइव जरै सुछाती ॥
सरलै वचन नृपके सुनि काना ❁ वैर सँभारि हृदय हरषाना ॥
दोहा–कपट बोरि वाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत ॥

१ पियासा । २ घोड़ा । ३ अपना । ४ तालाब । ५ स्नान । ६ श्रीसूर्यनारायण । ७ मंत्री । ८ शिकारखेलते । ९ रात्रि । १० मार्ग । ११ होनहार । १२ मधुरवचन । १३ सीधे ।

नाम हमारभिखारि अब, निर्धन रहितनिकेत[1] ॥१६७॥

कह नृप जे विज्ञान निधाना ❀ तुम सारिखे गलित[2] अभिमाना ॥
सदा अपनपौ रहहिं दुराये ❀ सबविधि कुशल कुवेष बनाये ॥
तेहिते कहहिं संत श्रुति टेरे ❀ परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
तुमसम अधन भिखारि अगेहा ❀ होत विरंचि शिवहि सन्देहा ॥
योसिसोसि तवचरण नमामी ❀ मोपर कृपा करिय अब स्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति की देखी ❀ आप विषे विश्वास विशेषी ॥
सब प्रकार राजहिं अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला ❀ यहां बसत बीते बहुकाला ॥

दोहा-अबलगिमोहिंनमिलेउकोउ, मैंनजनायहुकाहु ॥
लोकमान्यताअनलसम, करितपकाननदाहु ॥१६८॥

सोरठा-तुलसी देखि सुवेष, भूलहिं मूढ न चतुर नर ॥
सुन्दर केकी[3] पेख, वचन सुधा[4] सम अशन[5] अहि[6] ॥२४॥

ताते गुप्त रहौं जग माहीं ❀ हरितजि किमपिप्रयोजन नाहीं ॥
प्रभु जानत सब बिनहि जनाये ❀ कहहु कवन सिधि लोक रिझाये ॥
तुम शुचि[8] सुमतिपरमप्रियमोरे ❀ प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे ॥
अब जो तात दुरावों[9] तोही ❀ दारुणदोष बढ़ै अति मोही ॥
जिमिजिमितापस कथै उदासा ❀ तिमितिमि नृपहिं होइविश्वासा ॥
देखा स्ववश कर्म्म मन बानी ❀ तब बोला तापस बक ध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पद शिरनाई ॥
कहहु नामकर अर्थ बखानी ❀ मोहिं सेवक अतिआपन जानी ॥

दोहा-आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उत्पति भइ मोरि ॥
नाम एक तनु हेतु त्यहि, देह न धरी बहोरि[10] ॥१६९॥

जानि आश्चर्य करहु मन माहीं ❀ सुत[11] तपते दुर्लभ कछुनाहीं ॥
तप बलते जग[12] सृजे[13] विधाता[14] ❀ तप बल विष्णु भये परित्राता[15] ॥

---

१ स्थान-किन्तु गृह । २ रहित । ३ मोर । ४ अमृत । ५ भोजन । ६ सर्प ।
७ दूसरेकिसीसे । ८ पवित्र । ९ छिपावों । १० दूसरी । ११ पुत्र । १२ संसार ।
१३ रचैं । १४ ब्रह्मा । १५ रक्षक ।

तप बल शम्भु करहिं संहारा ❀ तप बल शेप धरैं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भुआरा ❀ तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा ❀ कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
धर्म्म कर्म्म इतिहास अनेका ❀ करै निरूपण विरति विवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी ❀ कहेसि अमित आश्चर्य बखानी ॥
सुनि महीश तापस वश भयऊ ❀ आपन नाम कहन तब लयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोहीं ❀ कीन्हेउ कपट लाग्यु भल मोहीं ॥

सो०-सुनु महीश अस नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ॥
मुहिं तुहिं पर अति प्रीति, परम चतुरता निरखि तव ॥ २५ ॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेशा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेशा ॥
गुरु प्रसाद सब जानौं राजा ❀ कहौं न आपन जानि अकाजा ॥
देखि तात तव सहज सुधाई ❀ प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई ॥
उपजि परी ममता मन मोरे ❀ कहेउँ कथा निज पूछे तोरे ॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं ❀ मांगु जो भूप भाव मन माहीं ॥
सुनि सुवचन भूपति हरषाना ❀ गहि पद विनय कीन्ह विधि नाना ॥
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे ❀ चारि पदारथ करतल मोरे ॥
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न विलोकी ❀ माँगि अगमवर होउँ विशोकी ॥

दोहा-जरा मरण दुख रहित तनु, समर न जीतै कोउ ॥
एक छत्र रिपुहीन महि, राज्य कल्पशत होउ ॥ १७० ॥

कह तापस नृप ऐसहिं होऊ ❀ कारण एक कठिन सुन सोऊ ॥
कालौ तव पद नाइहि शीशा ❀ एक विप्रकुल छाँड़ि महीशा ॥
तप बल विप्र सदा बरियारा ❀ तिनके कोप न कोउ रखवारा ॥
जो विप्रन वश करहु नरेशा ❀ तौ तव वश विधि विष्णु महेशा ॥
चल न ब्रह्मकुल से बरिआई ❀ सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ॥
विप्र शाप विनु सुनु महिपाला ❀ तोर नाश नहिं कवनिहुँ काला ॥
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू ❀ नाथ नहोइ मोर अब नासू ॥

१ नाश। २ दुर्लभ। ३ प्रीति। ४ उत्पन्नहोना। ५ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। ६ हथेली। ७ बुढापा। ८ युद्ध। ९ पृथ्वी।

तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❀ मोकहँ सर्व्वकाल कल्याना ॥
दोहा—एवमस्तु कहि कपट मुनि, बोलाकुटिलबहोरि ॥
मिलबहमारभुवालजनि,कहहुतोमोरिनखोरि॥१७१॥
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा ❀ कहे कथा तव परम अकाजा ॥
छटें श्रवणं यह परत कहानी ❀ नाश तुम्हार सत्य मम बानी ॥
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा ❀ नाश तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
आन उपाय निधन तव नाहीं ❀ जो हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥
सत्यनाथ पद गहि नृप भाषा ❀ द्विज गुरु कोप कहहु को राखा॥
राखै गुरु जो कोपविधाता ❀ गुरु विरोध नहिं कोउ जगत्रांता॥
जो न चलब हम कहे तुम्हारे ❀ होइ नाश नहिं शोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा ❀ प्रभु महिदेव शाप अतिघोरा ॥
दोहा—होहिं विप्रवशकवन विधि, कहहुकृपाकरि सोउ॥
तुम तजि दीनदयालुनिज, हितू नदेखौंकोउ॥१७२॥
सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं ❀ कष्टसाध्यपुनि होहिंकिनाहीं ॥
अहै एक अति सुगम उपाई ❀ तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई ❀ मोर जाब तव नगर नहोई ॥
आजु लगे अरु जबते भयऊं ❀ काहूके गृह ग्राम न गयऊं ॥
जो न जाब तौ होइ अकाजू ❀ बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीप बोले मृदुबानी ❀ नाथनिगम असनीतिबखानी ॥
बड़े सनेह लघुनपर करहीं ❀ गिरि निज शिरनसदातृणधरहीं॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू ❀ सन्तत धरणि धरत शिररेनू ॥
दोहा—अस कहि गहे नरेश पद, स्वामी होहु कृपालु ॥
मोहिंलागिदुखसहियप्रभु, सज्जनदीनदयालु॥१७३॥
जानि नृपहिंआपनआधीना ❀ बोला तापस कपट प्रवीना ॥
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं ❀ जगमहँ नहिं दुर्लभ कछु मोहीं॥

१ कान। २ ब्राह्मण। ३ रक्षक। ४ ब्राह्मण। ५ पर्वत। ६ गहरेसमुद्र। ७ ऊपर।
८ सदा। ९ भूमि। १० रेणुका। ११ वश। १२ चतुर।

अवशि काज मैं करिहौंतोरा ❀ मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा ॥
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ ❀ फलै तबहिं जब करिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करउँ रसोई ❀ तुम परसहु मोहिं जान नकोई ॥
अन्नसो जोइ जोइ भोजन करई ❀ सोइसोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई ❀ तव वश होय भूप सुनु सोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप येहू ❀ सम्वंत भरि संकल्प करेहू ॥

दोहा–नितनूतनद्विजसहसशत, बरेहुसहितपरिवार ॥
मैंतुम्हरेसंकल्पलगि, दिनहिंकरबजेवनार ॥ १७४ ॥

इहिविधि भूप कष्ट अति थोरे ❀ होइहहिं सकल विप्र वश तोरे ॥
करिहहिं विप्र होम मख सेवा ❀ तेहि प्रसंग सहजहिं वश देवा ॥
और एक तोहिं कहौं लखाऊ ❀ मैं यहि वेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया ❀ हरिआनव मैं करि निजमाया ॥
तपबल तेहिकरि आपुसमाना ❀ रखिहौं इहां वर्ष परमाना ॥
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा ❀ सवविधि तोर सँवारब काजा ॥
गैनिशिबहुत शयन अब कीजै ❀ मोहिं तोहिं भूप भेंटदिनतीजे ॥
मैं तप बल तोहिं तुरँग समेता ❀ पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता ॥

दोहा–मैं आउब सोइ वेष धरि, पहिचानेहु तव मोहिं ॥
जब एकांत बुलाइ सब, कथा सुनाऊं तोहिं ॥ १७५ ॥

शयन कीन्ह नृप आयसुमानी ❀ आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई ❀ सो किमि सोव शोचअधिकाई ॥
कालकेतु निशिचर तहँ आवा ❀ जेहि शूकर होइ नृपहिंभुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा ❀ जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहिके शत सुत अरु दशभाई ❀ खल अति अजय देवदुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❀ विप्र सन्त सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिल वैरसँभारा ❀ तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥
जेहिरिपुक्षयसोइ रचेसि उपाऊ ❀ भावीवश न जान कछुराऊ ॥

दोहा–रिपु तेजसी अकेल अति, लघु करिगनिय न ताहु ॥

१ एकवर्ष । २ सौकड़के । ३ संग्राममें । ४ शत्रुकानाश । ५ छोटा ।

अजहुँ देत दुखरविशशिहिं, शिरअवशेषितराहु॥१७६॥
तापसनृप निजसखहिं निहारी ❀ हर्षिमिलेउ उठि भयउसुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई ❀ यातुधान बोला सुखपाई ॥
अब साधेउ रिपु सुनहु नरेशा ❀ जो तुमकीन्ह मोर उपदेशा ॥
परिहरि शोच रहहु तुमसोई ❀ बिनु औषधहिंव्याधिविधिखोई॥
कुल समेत रिपु मूल बहाई ❀ चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी ❀ चला महा कपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि वाजि समेता ❀ पहुँचायसि सोवतहिं निकेता ॥
नृपहिं नारि पहँ शयन कराई ❀ हयगृहबांधेसि वाजि बनाई ॥
दोहा-राजाके उपरोहितहिं, हरिले गयउ बहोरि ॥
लैराखेसिगिरिखोहमहँ, मायाकरिमतिभोरि॥१७७॥
आपु विरचि उपरोहित रूपा ❀ परा जाय तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनुभयउ बिहाना ❀ देखि भवन अति अचरजमाना॥
मुनिमहिमा मनमहँ अनुमानी ❀ उठे गवँहिं जेहि जान नरानी ॥
काननं गयउ वाजि चढि तेही ❀ पुर नर नारि न जानेउ केही ॥
गये याम युग भूपति आवा ❀ घर घर उत्सव बाजु बधावा ॥
उपरोहितहिं दीख जब राजा ❀चकितविलोकिसुमिरिसोइकाजा॥
युग सम नृपहिं गये दिन तीनी ❀ कपटी मुनि नृपमति हरि लीनी॥
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहि मतो सबकहि समुझावा ॥
दोहा-नृप हर्षे पहिचानि गुरु, भ्रम वश रहा नचेत ॥
बरे तुरत शतसहस वर, विप्र कुटुम्ब समेत ॥ १७८ ॥
उपरोहित जेवनार बनाई ❀ छरस चारि विधि जस श्रुतिगाई॥
मायामय तेहँ कीन्हि रसोई ❀ व्यंजन बहु गनि सकै न कोई ॥
विविध मृगनकर आमिषरांधा ❀ तेहिमहँ विप्रमांस खलसांधा ॥
भोजन कहँ सब विप्र बुलाये ❀ पदपखारि सादर बैठाये ॥

१ शिररहित किन्तुरुंडमात्र। २ निशिचर। ३ शिक्षा। ४ दिन। ५ घोडा। ६ घर। ७ रानी। ८ अश्वशाला। ९ निकेत। १० तडके। ११ वन। १२ दोपहर। १३ मांस।

परसनलाग जबहिं महिपाला ❀ भइ अकाशवाणी तेहिकाला ॥
विप्रवृन्द उठि उठि गृहजाहू ❀ हैबड़िहानि अन्न जनि खाहू ॥
भयउ रसोईं भूसुरं मांसू ❀ सब द्विज उठे मानि विश्वासू ॥
भूपविकलमति मोह भुलानी ❀ भावीवश न आव मुखवानी ॥
दोहा—बोले विप्र सकोप तब, नहिं कुछ कीन्ह विचार ॥
जाइ निशाचर होहु नृप, मूढ सहित परिवार ॥१७९॥
क्षत्रबन्धु तैं विप्र बुलाई ❀ घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा ❀ जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संवत् मध्य नाश तव होऊ ❀ जलदाता न रहहि कुल कोऊ ॥
नृप सुनि शाप विकल अति त्रासा ❀ भइ बहोरिवेरगिरा अकाशा ॥
विप्रहु शाप विचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चकितविप्र सब सुनि नभवानी ❀ भूप गये जहँ भोजनखानी ॥
तहँ न अशन नहिं विप्रसुआरा ❀ फिरेउ राउ मन शोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई ❀ त्रसित परेउ अवनी अकुलाई ॥
दोहा—भूपति भावी मिटै नहिं, यदपि न दूपणतोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्रशाप अतिघोर ॥१८०॥
"जो करि कपट छलै जग काहू ❀ देइहि ईश अधम गति वाहू ॥
विप्रवचनसुनि नृप अकुलाना ❀ उठिपुनिविनयकीन्हविधिनाना ॥
पुनि पुनि पदगहिकहेउभुआला ❀ शापअनुग्रह करहु कृपाला ॥
जब तुम होब निशाचर जाई ❀ ब्रह्मवंश तामस तनुपाई ॥
अजर अमर अतुलित प्रभुताई ❀ जगविख्यात वीर दोउ भाई ॥
होइहि जबहि पराभव चारी ❀ तब तुम सेउब देवपुरारी ॥
शिवप्रसाद वर पाइ बहोरी ❀ होइहै सब जग प्रभुता तोरी ॥
मिलहिंतोहिं जब सनतकुमारा ❀ तब तुम समुझब शाप हमारा ॥
दोहा—तुम पूछब निस्तारनिज, सादरसुनहु नरेश ॥
सब परिवार उधार तब, होइहै मुनि उपदेश ॥१८१॥"

१ द्विज। २ श्रेष्ठवाणी। ३ भोजन। ४ रसोइयां। ५ पृथ्वी। ६ विदित।

असकहि सब महिदेव सिधाये ❀ समाचार पुरलोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं ❀ विरचत हंस काक किय जेहीं ॥
उपरोहितहिं भवन पहुँचाई ❀ असुर तापसिहि खबरि जनाई ॥
तेहिखल जहँ तहँ पत्रपठाये ❀ सजिसजि सेन भूप सबआये ॥
घेरिन्हि नगर निशान बजाई ❀ विविध भांति नितहोतिलराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करणी ❀ बन्धु समेत परे नृप धरणी ॥
सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा ❀ विप्र शाप किमि होइ असांचा ॥
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई ❀ निज निज पुरगे जययशपाई ॥

दोहा–भरद्वाज सुनु जाहिजब, होत विधाता बाम ॥
धूरि मेरु[1]सम जनक[2]यम, ताहिव्याल[3]सम दाम[4] ॥१८२॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा ❀ भयउ निशाचर सहितसमाजा ॥
दश शिर ताहि बीस भुज दण्डा ❀ रावण नाम बीर बरिबण्डा ॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा ❀ भयउ सो कुम्भकर्ण बलधामा ॥
सचिव जोरहा धर्मरुचि जासू ❀ भयउ बिमात्र बन्धु लघुतासू ॥
नाम विभीषण जेहि जगजाना ❀ विष्णुभक्त विज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृपकेरे ❀ भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिस अनेका ❀ कुटिल भयंकर विगत विवेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी ❀ बरणि न जाइ विश्व परितापी ॥

दोहा–उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावनअमलअनूप ॥
तदपि महीसुर शापवश, भये सकल अघरूप ॥१८३॥

कीन्ह विविध तप तीनों भाई ❀ परम उग्र सो बरणि न जाई ॥
गयउ निकट तप देखि विधाता ❀ माँगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि विनती पदगहि दशशीशा ❀ बोलेहु वचन सुनहु जगदीशा ॥
हम काहू कर मरहिं न मारे ❀ वानर मनुज जाति दुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा ❀ मैं ब्रह्मा मिलि तोहिं बरदीन्हा ॥

१ पर्वतसम। २ पितायम। ३ सर्प। ४ रस्सी। ५ अतिबली। ६ कठिन। ७ ब्रह्मा।
८ तुमपर-किन्तु पुत्र।

पुनि प्रभु कुम्भकर्ण पहँ गयऊ ❀ तेहि विलोकिमनविस्मयभयऊ॥
जो यह खल नितकरब अहारा ❀ होइहि सब उजारि संसारा॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ❀ मांगेसि नींद मास षटकेरी॥
दोहा–गयउ विभीषण पास तब, कहा पुत्र वर मांग॥
तेहि मांगेउ भगवन्तपद, कमलअमलअनुराग॥ १८४॥
तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये ❀ हर्षित ते अपने गृह आये॥
मयतनुजा मन्दोदरि नामा ❀ परमसुन्दरी नारि ललामा॥
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी ❀ भई सो यातुधान पति रानी॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई ❀ पुनि दोउ बन्धु विवाहेसि जाई॥
गिरि त्रिकूट इकसिन्धु मझारी ❀ विधिनिर्मित दुर्गम अति भारी॥
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा ❀ कनकरचितमणि भवन अपारा॥
भोगवती जस अहिकुलवासा ❀ अमरावति जस शक्रनिवासा॥
तिनते अधिक रम्य अति बंका ❀ जग विख्यात नाम तेहि लंका॥
दोहा–खाईसिंधुगँभीरअति, चारिहुदिशि फिरिआव॥
कनककोटमणिखचितदृढ़,वरणिनजायबनाव १८५॥
हरिप्रेरित तेहि कल्प जोइ, यातुधान पति होय॥
शूर प्रतापी अतुल बल, दलसमेत बससोय॥ १८६॥
रहे तहां निशिचर भटभारे ❀ ते सब सुरन समर संहारे॥
अब तहँ रहहिं शक्रके प्रेरे ❀ रक्षककोटि यक्षपति केरे॥
दशमुख कतहुं खबरि असि पाई ❀ सेन साजि गढघेरेसि जाई॥
देखि विकट भट बडि कटकाई ❀ यक्ष जीव लै चले पराई॥
फिरि सब नगर दशानन देखा ❀ गयउ शोच सुख भयउविशेषा॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ❀ कीन्ह तहां रावण रजधानी॥
ज्यहि जस योग बांटिगृहदीन्हे ❀ सुखीसकल रजनीचर कीन्हे॥
एक बार कुवेर पहँ धावा ❀ पुष्पकयान जीति लै आवा॥
दोहा–कौतुकही कैलास तब, लीन्हेसि जाइ उठाइ॥

१ संदेह। २ छःमास। ३ प्रीति। ४ रावण। ५ कठिन। ६ सुवर्ण। ७ इन्द्र। ८ परमसुन्दर रमनकरने योग्य।

मनहुँ तौलि भट बाहुबल, चला अधिक सुखपाइ १८७

सुख सम्पति सुत सेन सहाई ❀ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई॥
अतिबल कुम्भकर्ण अस भ्राता ❀ ज्यहिकहँनाहिंप्रतिभटजगजाता॥
करि मदपान सोव षटमासा ❀ जागत होइ तिहूंपर त्रासा ॥
जो दिनप्रति अहार करु सोई ❀ विश्व बेगि सब चौपट होई ॥
समरधीरनहिं जाइ बखाना ❀ त्यहिसमअधिकनकोउबलवाना॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू ❀ भटमहँ प्रथमलीक जगजासू॥
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई ❀ सुरपुर नितहिं परावन होई ॥

दोहा–कुमुख अकम्पन कुलिशरद, धूम्रकेतुअतिकाय॥
एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय ॥१८८॥

कामरूप जानहिं सब माया ❀ स्वप्नेहुँ जिनके धर्म न दाया ॥
दशमुख बैठि सभा इकबारा ❀ देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुत समूह जन परिजन नाती ❀ गनैको पार निशाचर जाती ॥
सेन विलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला वचन क्रोध मद सानी ॥
सुनहु सकल रजनीचर यूथा ❀ हमरे वैरी विबुध वरूथा ॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई ❀ देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥
तिनकर मरण एकविधि होई ❀ कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विज भोजन मख होम सराधा ❀ सबकर जाइ करहु तुमबाधा ॥

दोहा–क्षुधा क्षीणबलहीनसुर, सहजहिंमिलिहहिंआइ॥
तब मारिहौं कि छांड़िहौं, भलीभांति अपनाइ ॥१८९॥

मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा ❀ दीन्ह सीख बल वैर बढावा ॥
जे सुर समर धीर बलवाना ❀ जिनके लरिबे कर अभिमाना ॥
तिनहिं जीतिरण आनिसि बांधी ❀ उठिसुतपितुअनुशासन साधी ॥
इहिविधि सबही आज्ञादीन्हा ❀ आपुनचलेउ गदा कर लीन्हा ॥
चलत दशानन डोलत अवनी ❀ गर्जत गर्भ स्रवत सुररमनी ॥

१ ज्यहिसमान जगत्में दूसरा योद्धा न जन्मा। २ डर। ३ संसार। ४ मेघनाद। ५ अनेक। ६ देवता। ७ विघ्न। ८ देवतोंकी स्त्रियां।

रावण आवत सुनेउ सकोहा ❀ देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालनके लोक सिधाये ❀ सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी ❀ देइ देवतन गारि प्रचारी ॥
रण मदमत्त फिरै जगधावा ❀ प्रति भट खोजत कतहुँ नपावा ॥

अथ क्षेपक ॥

दोहा-सप्तद्वीप नव खंड लगि, सप्त पताल अकास ॥
कंपमान धरणीधसत, सरितपतिन्ह मनत्रास ॥ १९० ॥

नारदमिले कहिसि मुसुकाई ❀ देव कहां मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अत्रख नारदहि नभावा ❀ श्वेतद्वीप तेहि तुरत पठावा ॥
सागर उतारि पार सो गयऊ ❀ नारिवृन्द तहँ देखत भयऊ ॥
तिन्हसन कहा पतिन पहँ जाहू ❀ कहेउ किआव निशाचर नाहू ॥
तबमैं तिनहिं जीति संग्रामा ❀ लै जैहौं तुमकहँ निजधामा ॥
सुनत वचन यक जरैठरिसानी ❀ धाइ चरण गहि गगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि धरि झकझोरा ❀ डारिसि सिन्धु मध्य अतिजोरा॥

दोहा-गयो पताल अचेत ह्वै, मरै न विप्र प्रसाद ॥
सावधान उठि चलेउ पुनि, हिये न हर्ष विषाद १९१॥

जीतेसि नाग नगर सब झारी ❀ गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
वैरोचन सुत आदर दयऊ ❀ कुशल बूझि तब बोलत भयऊ॥
तुमहू निज शत्रुहि गहि लीजे ❀ चलिमहिलोकराज्यनिजकीजे ॥
कहबलिकनककशिपुकेमंडन ❀ पहरि लेहु तुम सुख दुख खंडन॥
लाग उठावन उठा नकोई ❀ याही पौरुषते जय होई ॥
जिन यह भूषण अंगन धारे ❀ ते भट गे यक क्षणमें मारे ॥
तेहिते भवन जाहु लै आना ❀ चला तुरत मनमाहिं लजाना ॥
वामन रावण आवत जाना ❀ किये देवऋषि सन अपमाना ॥
खेलत रहे नगर शिशुनाना ❀ निजबल तिनहिं दीन भगवाना॥
धाइ धरा तिन पुर लै आये ❀ नगर नारि नर देखन धाये ॥

१ स्त्रियोंके झुंड । २ बुढ़िया । ३ आकाश । ४ समुद्र ।

बीस बाहु दशकंधर भाई ❀ विधि यह गढ़नि कहांकी आई ॥
राखिनि बाँधि खिझावहिं भारी ❀ नाम न कहै सहै बरु मारी ॥
वामन दीख बहुत सकुचाना ❀ तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरन्त निशाचर नाहा ❀ लाज शंक कछु नहिं मनमाहा ॥
दोहा-अति निर्लज्ज दयारहित, हिंसापर अतिप्रीति ॥
रामविमुखदशकन्ठशठ, तापरचाहत जीति १९२ ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता बाम ॥
मणिहुँकांचहोइजाइतब, लहै न कौड़ी दाम ॥१९३॥
जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै ❀ दण्ड लेय बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरण फिरै दिनराती ❀ महामलिन मन खलउतपाती ॥
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा ❀ बालि नाम कपिपति जिहिंठावा॥
अवलोकसि इक सरवर शोभा ❀ जिहिमन महामुनिनकरलोभा ॥
तहां कपीश करै निज ध्याना ❀ दशकन्धरहि देखि मुसुकाना ॥
धाइ ठाढ़ तहँ भा रजनीशा ❀ ठोंकि बाहु गर्जित भुजवीशा ॥
तब रावण बोला करि क्रोधा ❀ बकध्यानी कपि शठ बिनबोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउँ धाई ❀ देकपि युद्ध छांडि कदराई ॥
दोहा-मोहिं जीते बिनु समरसुनु, वृथा ध्यान तव कीश
कटकटाइ कह रजनिचर, रँदनतीनसैवीश ॥ १९४ ॥
तब बाली बोला मुसकाई ❀ बल तुम्हार ऐसोही भाई ॥
रवि अंजलि मैं देउँ सप्रीती ❀ ठाढ होहु जायहु मोहिं जीती ॥
तबहिं कीशपति मनहिंविचारा ❀ शिव वर दीन्ह मरै नहिं मारा ॥
दशकंधर घर जाहु विचारी ❀ अजयतुम्हारि सुनी विधिचारी॥
बहुतभाँति असुरहि समुझावा ❀ कौनिहुँ भाँति बोध नहिं आवा ॥
तब सकोप होइ धरा कपीशा ❀ हढगहि कांख चापि दशशीशा ॥
अंजलि दीन्ह रविहि मनबानी ❀ अचई सप्तउदधि करपानी ॥
जपा आदि शंकर मन बानी ❀ तिहिं क्षण संध्या वंदि सिरानी ॥
दोहा-आवा घरहि कपीश तब, कांख रहा लंकेश ॥

१ तालाब । २ बालि । ३ रावण । ४ दांत । ५ श्रीसूर्यनारायण । ६ सातोंसागर । ७

यहि विधि बीते मास षट, पायेबहुतकलेश ॥१९५॥
तेइ कलेश वश करै उपाई ❀ तहँ न चलै कछु आतुरताई ॥
बहु प्रस्वेद[1] कखरी महँ जामा ❀ अती कुवास तहाँ भइ धामा[2] ॥
कलमलाइ रिसि दशनन काटा ❀ कचकर जीव मनहुँ अस चाटा ॥
एक दिवस रवि अंजलि साजा ❀ कांखतेनिसरि महाध्वनिगाजा ॥
तब पुनि धरि कपीश सो बांधा ❀ लै आये अंगदके रांधा ॥
बीश भुजा दशशीश सुधारा ❀ चरण दोउ पुनि धरि उरपारा ॥
धरि समेटि झूमरि सम कीन्हा ❀ बाँधि सेज पर शोभा दीन्हा ॥
अंगद खेलि लात शिर मारा ❀ किलकिलाइ किलकै किलकारा ॥
दोहा-तारा चीन्हेउँ रावणहिं, तेहि क्षण दीन्ह छुड़ाइ ॥
जाहुतुरतलंकेश गृह, बहुरिधरहिकपिराइ ॥ १९६ ॥
पुनि रावण आवा तेहि ठाईं ❀ सहसबाहु जहँ रास बनाईं ॥
जलक्रीडासु करहिं सबनारी ❀ विविध भाँति शोभा अतिभारी ॥
आसरास मंडल जहँ रेवा ❀ सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावण सुख नाना ❀ हर्ष समेत हृदय सुख माना ॥
तहँ लंकेश जाइ शिव[4] देखा ❀ मनहुँ विरंचि रचे बहु रेखा ॥
तुलसी कमलपत्र सब आना ❀ बिल्वपत्र अरु पुष्प प्रमाना ॥
जाके जल क्षोभेउ दशशीशा ❀ पढै मंत्र सुमिरै गौरीशा ॥
निलजअशंक आव पुनि तहँवां ❀ करभुजकेलि सहसभुज जहँवां ॥
दोहा-क्षोभेउ जल भुज बीस बल, बूड़न लगी समाज ॥
सहसबाहुअतिक्रोधमन, मोहिंसमआनकोआज १९७
जाइ दीख तहँ रावण ठाढा ❀ जासु विपुल भुज बल जल बाढा ॥
धावा प्रबल महाबल भारी ❀ लंकेश्वर कहँ धरिसि प्रचारी[6] ॥
निरखितिंयन आचरजविशाला ❀ बांधिराखि कछु दिन हर्यशाला[8] ॥
लज्जित दुष्ट मष्ट करि रहई ❀ रिसि उर मारि कष्ट बहु सहई ॥

❀ वाल्मीकिमें लेखहै कि चारवडी कांखमें रहा सोसत्यहै ।

१ मैल-पसीना । २ घर । ३ रोंका । ४ महादेव । ५ अत्यंत । ६ हांक देकर । ७ त्रिन । ८ घोडशाला ।

सकल आइ देखहिं नर नारी ❀ मारहिं लात हँसैं दे गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना ❀ बहुविधि पूछे नृपति सुजाना ॥
नृत्य करैं रम्भादिक नारी ❀ दशहु माथ दश दीपक बारी ॥
मुनिपुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा ❀ पुनिनलशापआय तिहि पावा ॥

दोहा–मारग जात दीख अति, अनुपम सुन्दरि नारि ॥
चन्दन पुष्प पत्र कर, पूजन चलि त्रिपुरारि ॥१९८॥

देखि उर्वशी मन सकुचानी ❀ तब रावण बोला मृदुवानी ॥
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा ❀ लज्जा वश तिहि उतर नदीन्हा ॥
मन मदमत्त विचार न करेऊ ❀ धनपति पुत्रवधू कर धरेऊ ॥
चीन्ह ताहि पुनि शंका आई ❀ घाटि कर्म्म कीन्ही पछिताई ॥
मन पछिताय शोच उर भयऊ ❀ लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ ॥
विकल उर्वशी अलकैंहिं आई ❀ नलकूबर सन बात जनाई ॥
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा ❀ रावण वंश होहु क्षयकारा ॥
चली शाप लंका कहँ आई ❀ दशकन्धर बैठा जिहिं ठाईं ॥
आगे आइ ठाढि भइ शापा ❀ निरखिदशानन अतिभयकांपा ॥

दोहा–शापहि अंगीकारकरि, मन महँ कीन्ह विचार ॥
दण्डऋषिन्हसेलीन्हनहिं, रोषेउलंकभुवार ॥१९९॥

दूत चारि पठये ऋषि आश्रम ❀ निरखिबिसारिगेमुनिअधिआतम ॥
तिनसन सब पूछहिं मुनि हाला ❀ कहहु कुशल लंकेश भुआला ॥
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा ❀ कर तुम सन चाहत दशशीशा ॥
मुनि सो वचन महा भय पाई ❀ करहि विचार विरंतिविसराई ॥
जेहिं दरबार नीति नहिं भाई ❀ खल मण्डली जुरी तहँ आई ॥
कछुविन दिये नहीं गति आछी ❀ घटभरिरुधिर दियेतनुपाछी ॥
दूतन्ह सौंपि कहा मुनिज्ञानी ❀ भूपहिं कहेउ जाइ यह बानी ॥

दोहा–घट उघरत क्षय होइहहु, सहित सकल परिवार ॥
दूत तुरत घट लेगये, लंकापति दरबार ॥ २०० ॥

रावण घट लखि परम हुलासा ❀ तब दूतन मुनि वचनप्रकाशा ॥

---

१ दिया। २ कुबेरकीपतोहू। ३स्थान। ४ज्ञान-ध्यान-उपासना-जप-तप-।५ लोहू। ६नाश

सुनि मुनि शाप उपज उरदाहू ❀ बोला घट ले उत्तर जाहू ॥
यत्न समेत धरणि धरि एहू ❀ जानि न पाव बात यह केहू ॥
ले घट जनकनगर तेगये ❀ गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये ॥
शंभु सभा श्रुतिवाद मझारा ❀ प्रथमे रहा जनकते हारा ॥
तेहि रिसते तहँ कुंभ पठावा ❀ जनकराज कर देश सुहावा ॥
हरिइच्छा तहँ परयो दुकाला ❀ विन जलभे सब जीव विहाला ॥
जनकयज्ञ रचना तहँ ठयऊ ❀ चामीकर हल कर्षत भयऊ ॥
प्रगट अवनिते ऋषयकुमारी ❀ कन्या कहि लीन्ही उर धारी ॥

दोहा-चार सखी चारों तरफ, कर मुरछलसुखखान ॥
मध्यविराजतभूमिजा, निमिवंशिनसुखदान॥२०१॥
पुनि विदेहकी विनयसों, भई जानकी बाल ॥
अंतर्हित सिंहासन, सुख मानो भूपाल ॥२०२॥

देखत ताहि सुनयना रानी ❀ कन्या कह लीनी सुखमानी ॥
नाम जानकी परम पुनीता ❀ नारद आइ कहा पुनि सीता ॥
पुनि नारद कह सुनहु नृपाला ❀ विष्णु वरहि भगवानकृपाला ॥
पुनि नृप सीय पढन बैठाई ❀ कछु दिनमें विद्या सब पाई ॥

दोहा-एक समय मिथिलेश अति, शंकरकोतप कीन॥
आय कह्योशिवमांगु वर, बोलेनृपतिप्रवीन ॥ २०३ ॥
कह्यो नृपति जो देतवर, जेहि श्रुति नेति बखान ॥
तेहि देखों भरि नयनमें, यह वर देहु न आन ॥२०४॥

सुन शिव एक धनुष तब दयऊ ❀ पूजनकरहु मुदित नृप भयऊ ॥
याहीसे पूरै अभिलाषा ❀ भये प्रसन्न भूप जय भाषा ॥
गृह आये प्रमुदित अनुरागे ❀ नित्य नेम करि पूजनलागे ॥
यकदिन सिय सेवाढिग जाई ❀ लीलहि लीनो धनुष उठाई ॥
देख जनक अति अचरज माना ❀ तेहिक्षण तहां कठिन प्रण ठाना ॥
जो लेई शिव चाप चढाई ❀ सो नृप मम कन्या वर पाई ॥
बहुविधि शिल्पी लिये बुलाई ❀ रंगभूमि सुंदर ❀ बनवाई ॥

देश देश प्रति पत्र पठाये ❀ सुनि सुनि भूप अनेकन आये ॥
वन उपवन पुर पंथ निकेता ❀ उतरे निज निज सेन समेता ॥
कहि सु कथा ऋषि राउ सिधाये ❀ बहुरि दूत लंकापुर आये ॥
चारि ठांव हारा लंकेशा ❀ देवनको बहु देत कलेशा ॥

॥ इति क्षेपक ॥

रवि शशि पवन वरुण धनुधारी ❀ अग्निकाल यम सब अधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❀ हठि सबही के पंथहि लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहँलगि तनुधारी ❀ दशमुख वशवर्त्ती नरनारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता ❀ नवहिं आइ नित चरणविनीता॥
दोहा–भुजबलविश्ववश्यकरि,राखेसिकोउ न स्वतंत्र ॥
मण्डलीक महिरावण, राज्य करै निजमंत्र ॥ २०५ ॥
देव यक्ष गन्धर्व नर, किन्नर नागकुमारि ॥
जीति बरीं निज बाहुबल, बहुसुन्दरि बर नारि ॥ २०६ ॥
इन्द्रजीतसन जो कछु कहेऊ ❀ सो सब जनु पहिलेकरि रहेऊ ॥
प्रथमहिं जिनकहँ आयसुदीन्हा ❀ तिनके चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
देखत भीमरूप सबपापी ❀ निशिचर निकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुर निकाया ❀ नानारूप धरहिं करि माया ॥
ज्यहि विधि होइ धर्म्मनिर्मूला ❀ सो सबकरहिं वेद प्रतिकूला ॥
ज्यहिज्यहिदेश धेनुद्विजपावहिं ❀ नगरग्रामपुर आगि लगावहिं ॥
शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई ❀ वेद विप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप दाना ❀ स्वप्न्यहु सुनिय न वेद पुराना ॥
छं०जपयोगविरागातपमखभागाश्रवणसुनैदशशीशा॥
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा ॥
अति भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनै नहिं काना ॥
तेहि बहुविधि त्रासै देश निकासै जोकहवेदपुराना १८
सो०–वरणि न जायअनीति, घोरनिशाचर जोकरहिं ॥

१ सम्पूर्ण पृथ्वीमें। २ निज इच्छासे। ३ भयानक। ४देवताओंको दुःख देनेवाले। ५ विपरीत। ६ गाय। ७ ब्राह्मण। ८ कानोंसे। ९ बिगाडदे।

हिंसापर अति प्रीति, तिनके पापहिं कवन मिति २६

बाढ़े बहु खल चोर जुआरी ❀ जे लम्पट परधन परनारी ॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ❀ साधुनसों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी ❀ तेजानहु निशिचर सम प्रानी ॥
अतिशय देखि धर्मकी हानी ❀ परम सभीत धरा अकुलानी ॥
गिरि सर सिंधु भार नहिं मोही ❀ जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही ॥
सकल धर्म्म देखहिं विपरीता ❀ कहि नसकै रावण भय भीता ॥
धेनु रूप धरि हृदय विचारी ❀ गई तहां जहँ सुरमुनिझारी ॥
निज सन्ताप सुनायसि रोई ❀ काहूते कछु काज न होई ॥

छं०सुरमुनिगन्धर्वामिलिकरिसर्वागयेविरंचिकेलोका ॥
सँग गोतनुधारीभूमि विचारीपरमविकलभयशोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ॥
जाकरि तैं दासी सो अविनाशीहमरोतोरसहाई ॥१९॥

सो०-धरणि धरहु मन धीर, कहविरंचिहरिपदसुमिरि ॥
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण विपति ॥२७॥

बैठे सुर सब करहिं विचारा ❀ कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा ॥
पुर वैकुंठ जान कह कोई ❀ कोइ कह पयनिधि महँ बससोई ॥
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ❀ प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती ॥
तेहिसमाज गिरिजा मैं रहऊं ❀ अवसर पाय वचन इक कहऊं ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना ❀ प्रेमते प्रकट होहिं मैं जाना ॥
देश काल दिशिविदिशिहुमाहीं ❀ कहहुसो कहां जहां प्रभुनाहीं ॥
अगजगमय सबरहितविरागी ❀ प्रेमते प्रभु प्रगटैं जिमि आगी ॥
मोर वचन सबके मनमाना ❀ साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दोहा-सुनि विरंचि मन हर्ष तनु, पुलकि नयनबहनीर ॥
अस्तुतिकरतसजोरि कर, सावधानमतिधीर ॥२०७॥

---

१ हत्या। २ ठीक। ३ झूठे। ४ पृथ्वी। ५ गौकास्वरूप। ६ दुःख। ७ ब्रह्मा। ८ नाशरहित। ९ क्षीरसमुद्र। १० अचल। ११ जंगम। १२ व्यापक। १३ रागद्वेषसे रहित। १४ विधि। १५ जल। १६ हाथ।

छं० जयजयसुरनायकजनसुखदायकप्रणतपालभगवंता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता ॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ॥
जो सहजकृपालादीनदयाला करोअनुग्रहसोई २०।१
जय जय अविनाशी सबघट वासी व्यापकपरमानंदा
अविगत गोतीता,चरित पुनीता मायारहितमुकुन्दा॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृंदा
निशिवासर ध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ॥
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति नपूजा
जो भवभयभंजन जनमनरंजन गंजन विपतिवरूथा
मनवचक्रमवानीछांडिसयानीशरणसकलसुरयूथा२२।३
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहँ कोउ न जाना
जेहि दीनपियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्रीभगवाना ॥

छन्दार्थ–देवताओंके स्वामीजनोंके सुखदाता दीनोंके पालनहारे भगवान् तुम्हारी जयहो गो ब्राह्मणके हितकरनेहारे असुरोंको मारनेवाले लक्ष्मीके प्यारे आपकी जयहो सुर धरणीके पालनेवाले अद्भुत जिनकी करणी और मर्म कोईभी जिनका नहीं जानताहै जो स्वभावसेही दयालु तथा दीनोंके ऊपर कृपा करनेहारे सो हमारे ऊपर अनुग्रहकरो ॥ १॥ हेअविनाशी ! सबके हृदयमें वास करनेहारे सबमें व्यापक परमानंदरूप अद्वितीय गति इन्द्रियोंसे परे पवित्र चरित्रवाले मायारहित और मुकुंद अर्थात् मोक्षदाताहो जिसके वास्ते वैरागी अतिप्रेमसे मोह त्यागकर रातदिन ध्यान करतेहैं और आपके गुण गातेहैं हेसच्चिदानंद तुम्हारी जयहो ॥ २ ॥ जिसने दूसरेकी सहायता विना सृष्टि उपजाकर सत, रज, तम, तीन प्रकारकी बनाई सोहेपापनाशक हमारी सुधलो हम तुम्हारी भक्ति और पूजा नहीं जानतेहैं सो संसारके भयदूर करनेहारे जनोंके मनका आनंद देनेहारे विपत्ति दूर करनेहारे मन वचन कर्म वाणीसे चतुरता छोडकर देवता सब आपकी शरणहैं ॥ ३ ॥ सरस्वती शेष

भववारिधि मन्दरसबविधि सुन्दर गुणमंदिर सुखपुंजा
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा२।३।४

दोहा-जानि सभय सुर भूमि सुनि, वचन समेत सनेह
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरणि शोक सन्देह॥२०८॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा ❀ तुमहिं लागि धरिहौं नर भेशा॥
अंशनसहित मनुज अवतारा ❀ लेहौं दिनकरवंश उदारा॥
कश्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिनकहँ मैं पूरब वर दीन्हा॥
ते दशरथ कौशल्या रूपा ❀ कोशलपुरी प्रगट नर भूपा॥
तिनके गृह अवतरिहौं जाई ❀ रघुकुल तिलक सोचारिउ भाई॥
नारद वचन सत्य सब करिहौं ❀ परम शक्ति समेत अवतरिहौं॥
हरिहौं सकल भूमि गरुआई ❀ निर्भय होहु देवसमुदाई॥
गगन ब्रह्मवाणी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना॥
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा ❀ अभय भई भरोस जिय आवा॥

दोहा-निज लोकहि विरंचि गये, देवन्ह इहै सिखाय॥
वानर तनु धरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय॥२०९॥

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित पाये विश्रामा॥
जो कछु आयसु ब्रह्मे दीन्हा ❀ हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा॥
वनचर देह धरी क्षिति माहीं ❀ अतुलित बल प्रताप तिनपाहीं॥
गिरि तरु नख आयुध सब वीरा ❀ हरि मारग चितवहिं रणधीरा॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरिपूरी ❀ रह निज निज अनीकरचिरूरी॥

सम्पूर्ण ऋषि जिसको कोई नहीं जानता जिसको दीन पियारेहैं ऐसा वेद पुकारताहै सो भगवान् हमारे ऊपर कृपाकरो संसारसमुद्रके मथनेको मंदराचल गुणोंके मंदिर सुखके ढेरहो मुनि, सिद्ध, देवता सब परमभयातुरहो आपके चरणकमलको नमस्कार करतेहैं॥ ४॥

* किसीसमय कश्यप अदितिने तपस्याकर विष्णुसे यह वर मांगा कि जब जब आप अवतार लेवैं तब तब हमहीं आपके माता पिता होवें इसलिये प्रत्येक अवतारमें यही माता पिताहुये यहांभी दशरथ कौशल्यामें इनका अंश दिखलाकर पूर्व वरदानको सिद्ध किया॥

---

१ आकाशवाणी। २गोरूपपृथ्वी। ३ वंदरोंकी। ४ भूमि। ५ऐश्वर्य। ६पर्वत७वृक्ष। ८ शस्त्र।

अथ क्षेपक।

यह सब चरित सुना विबुधारी ❀ अपने मन यों कही विचारी ॥
रहत सकल मम वश रविवंशी ❀ ते का सकिहैं मोहिं विध्वंसी ॥
भये दिलीप भूप जब आई ❀ खबर दूतसे रावण पाई ॥
तुरत चला बल देखन आवा ❀ द्विज लख नृप शनिन बैठावा ॥
पूजत पग प्रकटेसि निज रूपा ❀ भागीं भवन भीरु मणिभूपा ॥
तब रावण सरयूतट आयो ❀ अर्चत तंदुल नृपति चलायो ॥
पूँछा लोगन ते तब कहेऊ ❀ धेनुहिं हरि इक मारन चहेऊ ॥
सुमिरत सोइ शालिमें प्रेरे ❀ शत शर ह्वै लागे हरिकेरे ॥
सुनि दशमुख मन अचरजआवा ❀ देखा जाय मृतक वन पावा ॥
समुझि प्रताप गयो निज धामा ❀ नृपते बात कही नृपवामा ॥

दोहा-रावणकृतसुनिअवधपति, चंग़ुलभरिजललीन ॥
पवनमंत्र पढि क्रोधयुत, दक्षिणदिशितजदीन ॥२१०॥
भये विशिख दशलाख लखि,कह नृपलंकहि जाहु ॥
सहितत्रिकूटसमुद्र महँ, बोरिफिरहुतेहिनाहु ॥२११॥

सो०-चले पवनगति मोरि,करन लगे विध्वंस गढ़ ॥
मयतनया कर जोरि, दीन दुहाई नृपतिकी ॥२८॥

राजा कोउ रहै ह्यां नाहीं ❀ लौट गये शर तब नृप पाहीं ॥
पुनि बहु दिन उपरान्त सुहावन ❀ रघुराजा जन्मे जगपावन ॥
मारुतबाणं लंक गृह ढाये ❀ मयजावचन सुनत फिर आये ॥
पुनि अज भये लरनको आवा ❀ बाण प्रेरि गढलंक पठावा ॥
अनिलअस्त्रते कटक समेता ❀ दीन ताहि पहुँचाय निकेता ॥
तेजवान लखि रहा चुपाई ❀ ता पाछे दशरथ भये आई ॥

दोहा-सुनि रावण निज दूतमुख, माँग पठायो दंड ॥
हरि शर प्रेरे भूप कहँ, जड्यो कपाट प्रचंड ॥२१२॥

रावण जो पट लेइ उघारी ❀ तौ हम कर देवहिं त्रिपुरारी ॥

---

१ चावल। २ सिंह। ३ बाण। ४ मन्दोदरी। ५ राजादिलीपकी। ६ पवनवाण। ७ अग्निवाण। ८ सेना। ९ घर। १० किंवार। ११ लड़ाई।

मंदिर द्वार गये सब मूँदी ❀ रहा उघार असुरपति खूँदी ॥
टसको पट न भटन सुख मोरे ❀ मिलीमार्ग मयजा कर जोरे ॥
तब रावण तप हेत सिधायो ❀ वरहित पितामहा तहँ आयो ॥
वरंब्रूहि ब्रह्मा कह वानी ❀ सुन रावण बोला सुखमानी ॥
दशरथ नृपति वीर्यते सोई ❀ जगमें पुत्र न प्रगटे कोई ॥

दोहा-सुनि ब्रह्मा दुख मानकर, एवमस्तु उच्चार ॥
गयो भवनदशकंठतब, मनमहँ कीन विचार ॥२१३॥

तब दशमुख कोशलपुर जाई ❀ कौशल्या हरि ली बरिआई ॥
सहित मँजूषा सागर जाई ❀ राघो गच्छ दिहसि सौंपाई ॥
चतुरानन धर रावणरूपा ❀ लाये मांग सुता सोइ भूपा ॥
वनमें धरि विधिगये विधिलोका ❀ तहँ सुमंत्रपट खोल विलोका ॥
तब कौशल्या गिरा उचारी ❀ हमहैं कोशल राजकुमारी ॥
नहिं जाना को वन में लावा ❀ सुनि सुमंत्र तुरते उठ धावा ॥
लेआये कोशलपुर तामा ❀ रोदन होत रहा नृपधामा ॥
जाय मँजूषा भूपहि दीन्हा ❀ जोहिविधिमिलासोवर्णनकीन्हा ॥
बोले नृप तुमको हो ताता ❀ कहै सुमंत सुनिय प्रभु बाता ॥
अवधपुरी दशरथ सुखदानी ❀ ताकर मैं मंत्री सज्ञानी ॥
तब राजा अतिशय सुख पाई ❀ कन्या दशरथको दइजाई ॥
यह सब रुचिरचरित मैं भाषा ❀ अब सो सुनहु जो वीचहि राखा ॥

इति क्षेपक ।

अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ ❀ वेदविदित तेहि दशरथ नाऊ ॥
धर्मधुरंधर गुणनिधि ज्ञानी ❀ हृदय भक्ति मति शारँगपानी ॥

दोहा-कौशल्यादिक नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत ॥
पति अनुकूलप्रेमदृढ़, हरिपद कमलविनीत ॥२१४॥

एक बार भूपति मन माहीं ❀ भै गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गये तुरत महिपाला ❀ चरणलागिकरिविनयविशाला ॥
निजदुखसुख नृपगुरुहिं सुनायो ❀ कहिवशिष्ठ बहुविधि समुझायो ॥

१ ब्रह्मा । २ देखा । ३ बाणी । ४ पवित्र । ५ लज्जा ।

धरहु धीर होइहैं सुतचारी ❀ त्रिभुवन विदित भक्त भयहारी ॥
शृङ्गीऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा ❀ पुत्रलागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्ति सहित मुनि आहुतिदीन्हे ❀ प्रगटे अगिनि चारु चरुलीन्हे ॥
बोले अनल प्रेमयुतवानी ❀ अति प्रसन्न नहिं परै बखानी ॥
जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा ❀ सकल काज भा सिद्धतुम्हारा ॥
यह हवि बाँटि देहु नृपजाई ❀ यथायोग्य जेहिं भाग बनाई ॥

दोहा–तब अदृश्यपावकभये, सकल सभहिसमुझाय॥
परमानन्द मगन नृप, हर्ष न हृदय समाय ॥ २१५ ॥

"गुरुपद वंदि भूप गृह आये ❀ मंजुल मंगल मोद बधाये ॥"
तबहिं राउ प्रियनारि बुलाई ❀ कौशल्यादि तहां चलि आई ॥
अर्द्धभाग कौशल्यहिं दीन्हा ❀ उभयभाग आधे कर कीन्हा ॥
कैकेयी कहँ नृप लै दयऊ ❀ रहेउ सो उभयभाग पुनि भयऊ॥
कौशल्या कैकयी हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
यहिविधि गर्भसहित सबनारी ❀ भयउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जादिनते हरि गर्भहि आये ❀ सकललोक सुख संपति छाये ॥
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी ❀ शोभा शील तेजकी खानी ॥
सुख युत कछुक कालचलिगयऊ ❀ जेहि प्रभुप्रगटसोअवसरभयऊ ॥

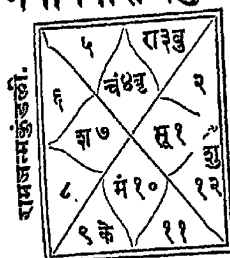
दोहा–योग लग्न ग्रह बार तिथि, सकलभये अनुकूल॥
चर अरु अचर हर्षयुत, रामजन्म सुखमूल ॥ २१६॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीता ❀ शुक्लपक्ष अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्य दिवस अतिशीत न घामा ❀ पावनकाल लोक विश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि वह बाउ ❀ हर्षित सुर सन्तन मन चाऊ ॥
वन कुसुमित गिरिगणमणियारा ❀ स्रवहिं सकल सरितामृतधारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुरसाजि विमाना ॥
गगन विमल संकुल सुर यूथा ❀ गावहिं गुण गन्धर्व वरूथा ॥
वर्षहिं सुमन सु अंजलि साजी ❀ गहगह गगन दुन्दुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहुविधिलावहिं निजनिजसेवा ॥

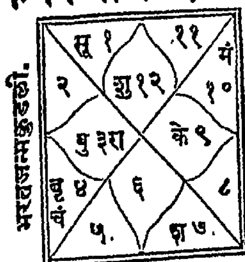
---

१ हविका पिंड । २ अन्तर्द्धान । ३ अग्नि । ४ दोभाग । ५ चैत्रकामहीना । ६ पवित्रकाल । ७ सुंगधित । ८ हवा । ९ वनफूलोंसे प्रफुल्लित । १० मणियोंकी खानि ।

दोहा-सुर समूह बिनती करी, पहुँचे निजनिजधाम ॥
जगनिवास प्रभु प्रगटे, अखिल लोक बिश्राम॥२१७॥







लक्ष्मण और शत्रुघ्नजीकी कुंडली रामजीके समान है।

छं.-भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी॥
हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी
भूषणवनमालानयनविशालाशोभासिंधुखरारी २४।१
कहदुहुँकरजोरीअस्तुतितोरीकेहिविधिकरौंअनन्ता॥
माया गुण ज्ञानातीतअमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागरसबगुणआगरज्यहिंगावहिंश्रुतिसंता॥
सोममहितलागीजनअनुरागीप्रगटभयेश्रीकंता २५।२
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेद कहै
ममउरसोबासी यहउपहासी सुनतधीर मतिथिरनरहै
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसकानाचरितबहुतविधिकीन्हचहै
कहिकथासुनाईमातुबुझाईजेहिप्रकारसुतप्रेमलहै२६॥३

छन्दार्थ-वोह दीनदयालु कृपालु कौशल्याके हितकारी प्रगटहुये तब महतारी मुनियोंकाभी मन हरनेहारा अद्भुतरूप देखकर प्रसन्नहुई कैसेहैं प्रभु जिनके मनोहर नयन घनश्याम शरीर चार भुजा शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित भूषण वनमाला चरण तक लंबायमान बड़े २ नेत्र शोभाके समुद्र राक्षसोंके मारनेहारेहैं ॥ १ ॥ हाथ जोड बोली कि हे अनन्त! तेरी स्तुति किस प्रकार करूं? माया गुण ज्ञानसेपरेहो मानरहितहो ऐसा वेद पुराण कहते हैं दया और गुणोंके समुद्र सब गुणोंमें श्रेष्ठ जिसको वेद और संत गाते हैं सो मेरे कारण प्रेमकर लक्ष्मीपति प्रगट हुये ॥ २ ॥ बहुतसे ब्रह्मांड मायासे निर्मित आपके रोम रोममें हैं ऐसा वेद कहतेहैं सो मेरे हृदयमें वास करताहुआ यह बड़ी हँसी की बात है इसे सुनकर धीरोंकी मति भी स्थिर नहीं रहती. जब कौशल्याको ज्ञान उपजा तो रामचंद्र हँसे क्योंकि बहुत प्रकारके चरित करना चाहतेथे पूर्व जन्मकी कथा कह माताको समझाया जिससे पुत्रका प्रेम बढ़े ॥ ३ ॥

माता पुनि बोली सोमति डोली तजहु तात यह रूपा॥
कीजैशिशुलीलाअतिप्रियशीलायहसुखपरमअनूपा॥
सुनिवचन सुजाना रोदनठाना होइबालकसुरभूपा ॥
यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकूपा२७४॥
दोहा-विप्र धेनु सुर संतहित, लीन्ह मनुज अवतार ॥
निजइच्छा निर्म्मित तनु, माया गुणगोपार ॥२१८॥
सुनि शिशु रुदन परमप्रियवानी ❀ सम्भ्रम[1] चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित जहँ तहँ धाईं दासी ❀ आनँद मगन सकल पुरवासी ॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना ❀ मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ❀ चाहत उठन करत मतिधीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई ❀ मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मनराजा ❀ कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु वसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ❀ आये द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि न जाई ❀ रूपराशि गुण कहि न सिराई ॥
दोहा--तब नाँदीमुख श्राद्धकरि जातकर्म सब कीन्ह ॥
हाटक[2] धेनु वसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह॥२१९॥
ध्वज पताक तोरण पुर छावा ❀ कहिनजाय ज्यहिभाँतिबनावा ॥
सुमनवृष्टि आकाश ते होई ❀ ब्रह्मानंद मगन सब कोई ॥
वृंद[3] वृंद सब चलीं लुगाईं[4] ❀ सहज[5] शृंगार किये उठि धाईं ॥
कनककलश मंगल भरि थारा ❀ गावत पैठहिं भूपदुआरा ॥
करि आरती निछावरि करहीं ❀ बार बार शिशु[6] चरणन परहीं ॥

फिर जब यह मति डोली तो माताने कहा पुत्र ! यह रूप तजो बाललीला जो परम सुखदायक है सो करो यह वार्ता सुन वे चतुर सुजान देवताओंके राजा बालकहो रोदन करने लगे, इस चरित्रको जो गाते हैं वे संसाररूपी कूपमें नहीं पड़ते अन्तमें नारायणके लोकको जावेंगे ॥ ४ ॥

१ शंका सहित भ्रम । २ सोना । ३ झुंडके झुंड । ४ स्त्रियां । ५ जो जैसा शृंगार कियेथीं शीघ्रतासे वैसेहीचली । ६ बालकरूपधारीरामचंद्र पूर्णब्रह्मपरमेश्वर ।

मागध सूत वंदि गुणगायक ❀ पावनगुण गावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सबकाहू ❀ ज्यहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चन्दन कुंकुम सींचा ❀ मची सकल वीथिन्हबिच कीचा ॥
दोहा—गृह गृह बाज बधाव शुभ, प्रगट भये सुखकन्द ॥
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नरवृन्द ॥ २२० ॥
केकयसुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुंदरसुत जन्मत भईं सोऊ ॥
वह सुख सम्पति समय समाजा ❀ कहिनसकै शारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहिभाँती ❀ प्रभुहिमिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी सन्ध्याअनुमानी ॥
अगर धूप जनु बहु अँधियारी ❀ उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी ॥
मन्दिरमणि समूह जनु तारा ❀ नृप गृह कलश सो इंदु उदारा ॥
भवनवेदध्वनि अति मृदुवानी ❀ जनु खग मुखरसमयसुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना ❀ एकमास तेहि जात न जाना ॥
दोहा—मास दिवसका दिवस भा, मर्म न जानै कोइ ॥
रथ समेत रवि थाकेउ, निशा कौन विधि होइ ॥ २२१ ॥
यह रहस्य काहू नहिं जाना ❀ दिनमणिचले करत गुणगाना ॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❀ चले भवन वर्णत निजभागा ॥
औरो एक कहौं निज चोरी ❀ सुनु गिरिजाअतिदृढमतितोरी ॥
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ ❀ मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम सुख फूले ❀ वीथिन फिरहिं मगन मन भूले ॥
यह सब चरित जानपै सोई ❀ कृपा रामकी जापर होई ॥
त्यहिअवसरजोज्यहिविधिआवा ❀ दीन्ह भूप जो ज्यहि मनभावा ॥
गज रथ तुरँग हेम गो हीरा ❀ दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥
दोहा—मन सन्तोष सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश ॥
सकल तनय चिरजीवहु, तुलसिदासके ईश ॥ २२२ ॥
कछुक दिवस बीतेयहिभांती ❀ जात न जानहिं दिन अरु राती ॥

१ कस्तूरी। २ हरएकगलीमें। ३ चन्द्रमा। ४ सूर्यनारायण। ५ एकमहीना। ६ वहदिनबढकरएकमहीनाकेतुल्यहोगया। ७ भेद। ८ रात्रि। ९ चरित्र। १० श्रीसूर्यनारायण। ११ स्वर्ण।

नामकरणकर अवसर जानी ❀ भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा ❀ धरिय नाम जो मुनिगुनिराखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा ❀ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥
जो आनन्द सिंधु सुखराशी ❀ सीकरते त्रैलोक्य प्रकाशी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा ❀ अखिललोकदायक विश्रामा ॥
विश्व भरण पोषण करु जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥

दोहा--लक्षण धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार ॥
गुरु वसिष्ठ त्यहिंराख्यऊ, लक्ष्मणनामउदार॥२२३॥

धन्यउ नाम गुरु हृदय विचारी ❀ वेदतत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजन धन सर्वस शिव प्राना ❀ बालकेलि रस तेहिं सुख माना ॥
बारहिंते निज हित पति जानी ❀ लक्ष्मण रामचरण रति मानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❀ प्रभु सेवक जस प्रीति बढाई ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ❀ निरखहिंछविजननी तृणतोरी ॥
चारिउ शील रूप गुणधामा ❀ तदपि अधिकसुखसागरराम ॥
हृदय अनुग्रह इन्दुप्रकाशा ❀ सूचत किरण मनोहरहासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ वरपलना ❀ मातु दुलार करहिं प्रियललना ॥

दोहा--व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण विगत विनोद ॥
सो अज प्रेम भक्तिवश, कौशल्याकी गोद ॥ २२४ ॥

काम कोटि छवि श्याम शरीरा ❀ नीलकंज वारिद गंभीरा ॥
अरुणचरण पंकज नखजोती ❀ कमलदलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुशसोहै ❀ नूपुरध्वनि सुनि मुनि मन मोहै ॥
कटिकिंकिणी उदरत्रयरेखा ❀ नाभि गँभीर जान जेहि देखा ॥
भुजविशाल भूषणयुत भूरी ❀ हिय हरिनख शोभा अति रूरी ॥
उरमणिहार पदिककी शोभा ❀ विप्रचरण देखत मन लोभा ॥
कम्बुकंठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमितमदन छविछाई ॥

१ सीकर अर्थात् एक पानीके बूंदसे तीनों लोक अर्थात् संपूर्ण ब्रह्मांडको प्रकाश करने हारा । २ प्रीति । ३ माता ।

दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे ❀ नाशा तिलकको बरणे पारे ॥
सुन्दरश्रवण सुचारु कपोला ❀ अतिप्रिय मधुर सुतोतरि बोला॥
नीलकमल दोउनयनविशाला ❀ बिकटभृकुटिलटकनवर भाला॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे ❀ बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीतझिंगुलिया तनुपहिराये ❀ जानु पाणि विचरत महिभाये ॥
रूप सकहिंनहिंकहि श्रुतिशेषा ❀ सोजाने स्वप्नेहु जिन देखा ॥

दोहा-सुखसन्दोह मोहपर, ज्ञान गिरा गोतीत ॥
दम्पति परम प्रेम वश, करि शिशुचरितपुनीत२२५॥

इहि विधि राम जगत पितु माता ❀ कोशलपुर वासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरणरति मानी ❀ तिनकी यह गति प्रगट भवानी॥
रघुपतिविमुख यतन कर कोरी ❀ कवन सकै भवबन्धन छोरी ॥
जीव चराचर वश करिराखे ❀ सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
भृकुटि विलास नचावै ताही ❀ असप्रभुछांडिभजियकहुकाही॥
मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई ❀ भजतहिं कृपा करैं रघुराई ॥
इहिविधिशिशुविनोदप्रभुकीन्हा ❀ सकलनगरवासिन्हसुखदीन्हा ॥
लै उछंग कबहूं हलरावैं ❀ कबहुँ पालने घालि झुलावैं ॥

दोहा-प्रेममगन कौशल्या, निशि दिन जात न जान ॥
सुत सनेह वश मातुसब, बालचरितकर गान॥२२६॥

एक बार जननी अन्हवाये ❀ करि शृंगार पलँग पौढाये ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढावा ❀ आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवाँ चलि आई ❀ भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइ जननी शिशुपहँ भयभीता ❀ देखा बाल तहां पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई ❀ हृदय कम्प मन धीर नहोई ॥
यहां वहां दुइ बालक देखा ❀ मतिभ्रम मोरि कि आनविशेषा॥
देखि रामजननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसि दीन मधुरमुसुकानी॥

१ आनंदके समुद्र। २कारण मायासेपरे। ३वाणी। ४इन्द्रियनतेपरे। ५ भीगावसी। ६भक्तिहीन

दोहा–दिखरावा मातहि निज, अद्भुतरूप अखण्ड ॥
रोम रोम प्रति राजहिं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ॥ २२७ ॥

अगणितरविशशिशिवचतुराननं ❀ बहुगिरिसरितसिंधुमहिकाननं ॥
काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ ❀ सो देखा जो सुना नकाऊ ॥
देखी माया सबविधि गाढ़ी ❀ अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावै जाही ❀ देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनुपुलकितमुखवचन नआवा ❀ नयनमूंदि चरणन शिरनावा ॥
विस्मयवंत देखि महतारी ❀ भये बहुरि शिशुरूप खरारी ॥
अस्तुति करिनजाय भयमाना ❀ जगतपिता मैं सुतकरिजाना ॥
हरिजननिहिबहुविधि समुझाई ❀ यहजनि कतहुँ कहसिसुनुमाई ॥

दोहा–बार बार कौशल्या, विनय करै करजोरि ॥
अबजनि कबहूं व्यापई, प्रभु मोहिं माया तोरि २२८ ॥

बालचरितहरि बहुविधिकीन्हा ❀ अति आनँद दासनकहँ दीन्हा ॥
कछुककाल बीते सब भाई ❀ बड़े भये परिजनसुखदाई ॥
चूड़ाकरण कीन्ह गुरु आई ❀ विप्रन्ह बहुत दक्षिणा पाई ॥
परममनोहर चरित अपारा ❀ करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम वचन अगोचर जोई ❀ दशरथ अजिरे विचर प्रभु सोई ॥
भोजन करत बुलावत राजा ❀ नहिंआवहिं तजि बालसमाजा ॥
कौशल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमकिठुमकि प्रभुचलहिं पराई ॥
निगम नेति शिव अन्त न पावा ❀ ताहि धरै जननी हठि धावा ॥
धूसर धूरि भरे तनु आये ❀ भूपति विहँसि गोद बैठाये ॥

दोहा–भोजन करत चपल चित, इत उत अवसर पाइ ॥
भाजि चलैं किलकत वदन, दधि ओदनं लपटाइ २२९

बालचरित अतिसरल सुहाये ❀ शारद शेष शम्भु श्रुति गाये ॥
जिनकर मन इनसन नहिंराता ❀ ते जगवंचक किये विधाता ॥

---

१ विराट्रूप। २ चन्द्र। ३ ब्रह्मा ४ पर्व्वत। ५ नदियां। ६ समुद्र। ७ पृथ्वी। ८ वन ९ चतुर। १० आश्चर्ययुक्त। ११ मूंडन-कर्णवेध। १२ आंगन। १३ नंगेबिनावस्त्र। १४ भात। १५ ध्म

भये कुमार[1] जबहिं सब भ्राता ❀ दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरु गृह गये पढन रघुराई ❀ अलपकाल विद्या सब पाई ॥
जाकी सहज श्वास श्रुति चारी ❀ सो हरि पढ यह कौतुक भारी ॥
विद्या विनय निपुण गुणशीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
करतल बाण धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा ॥
जेहि वीथिन विचरहिं सबभाई ❀ थकितहोहिंलखि लोगलुगाई ॥
दोहा--कोशलपुरवासीनर, नारि वृन्द अरु बाल ॥
प्राणहुंते प्रिय लागहीं, सबकहँ राम कृपाल ॥ २३० ॥

अथ क्षेपक ॥

यक दिन एक सलूका आवा ❀ नृपके द्वारे कीश[2] नचावा ॥
देखि राम ठानी मचिलाई ❀ कहेउ मोहिं कपि देउ मँगाई ॥
भूप मँगाय देन बहु[3] लागे ❀ तदपि न लेत रुदत पुनि आगे ॥
तब नृप भाष्यो गुरुते जाई ❀ सुनि वशिष्ठ बोले हरषाई ॥
जेहिहित हठ ठानत सुखदानी ❀ सो कपि और सुनो मम बानी ॥
केशरिपुत्र नाम हनुमाना ❀ पंपापुरमें जिनकर थाना ॥
सो सुग्रीव निकट नृपराई ❀ दूत पठावहु लेहु बुलाई ॥
तुरत भूप भट भूरि पठाये ❀ सकल सुकंठ[4] पास चलि आये ॥
दोहा--कह्यो नृपति संदेश जब, तुरत दिये कपिराय ॥
आये रघुपति ढिग जबै, लीनो हृदय लगाय ॥ २३१ ॥
जहँ जहँ खेलैं राम सुरंगा ❀ तहँ तहँ कपि राखैं निज[5] संगा ॥
यक दिन राम पतंग उड़ाई ❀ देवलोकसो पहुँची जाई ॥
तहँ हरिसुत जयंतकी नारी ❀ अति विचित्र सो चंग[6] निहारी ॥
कियो विचार पतंग जासुकर ❀ सो जन कैसोहै सुंदरवर ॥
पकर लई तब प्रभुने जानी ❀ बोले महावीरसों बानी ॥
किन पकरी यह चंग हमारी ❀ देखहु जाय छुड़ाउ विचारी ॥
तुरत पवनसुत जाय निहारी ❀ देहु छांडि पुनि गिरा[7] उचारी ॥
बोली जासु चंग यह आही ❀ दरशन तासु कीन हम चाही ॥

१ आठवर्षस उपरांत कौमारअवस्था कहतेहैं । २ बंदर । ३ अनेक । ४ सुग्रीव । ५ अपने । ६ पतंग । ७ वाणी ।

ताहीते याको हम गहेऊ ❀ आय पवनसुत प्रभुते कहेऊ ॥
सुनि प्रभु कहा कहो तुमजाई ❀ चित्रकूट महँ देब दिखाई ॥
दोहा-जाय कही हनुमान पुनि, छोड़दीन सुखपाय ॥
खैंची राम पतंग तब, रहे मोद मन छाय ॥ २३२ ॥

॥ इति क्षेपक ॥

बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई ❀ वन मृगया[1] नित खेलहिं जाई ॥
पावनमृग[4] मारहिं जिय जानी ❀ दिनप्रति नृपहिं देखावहिं आनी ॥
जे मृग राम बाणके मारे ❀ ते तनु[5] तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज[6]सखासँग भोजनकरहीं ❀ मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥
ज्यहिविधि सुखीहोहिंपुरलोगा ❀ करहिंकृपानिधि सोइ संयोगा ॥
वेद पुराण सुनहिं मनलाई ❀ आपु कहहिं अनुजहिं समुझाई ॥
प्रातकाल उठिके रघुनाथा ❀ मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसुमांगि करहिं पुरकाजा ❀ देखि चरित हर्षहिं मन राजा ॥
दोहा-व्यापक अकल[7]अनीह[8] अज[9], निर्गुण नाम नरूप ॥
भक्त हेतु नाना विधिहि, करत चरित्रअनूप ॥ २३३ ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई ❀ आगिल कथा सुनहु मन लाई ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❀ बसहिंविपिनशुभआश्रमजानी ॥
तहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं ❀ अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं ❀ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
गाधितनय[10] मन चिन्ताव्यापी ❀ हरि विनु मरहिं न निशिचरपापी ॥
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा ❀ प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा ॥
यहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई ❀ करि विनती आनौं दोउ भाई ॥
ज्ञान विराग सकलगुणअयनौ[11] ❀ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥
दोहा-यहिविधि करत मनोरथ, जात न लागी बार ॥
करि मज्जन सरयू सलिल[12], गये भूप दरबार ॥ २३४ ॥
मुनि आगमन सुना जब राजा ❀ मिलन गयउ लै विप्र[13] समाजा ॥

१ एकत्र। २ आनंद। ३ शिकार। ४ हरिण। ५ शरीर। ६ भाई। ७ सम्पूर्णकलाते रहित। ८ चेष्टारहित। ९ अजन्मा। १० विश्वामित्र। ११ धाम। १२ जल। १३ ब्राह्मण।

करि दण्डवत मुनिहिं सनमानी ❀ निज आसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा ❀ मोसम धन्य आजु नहिं दूजा ॥
विविध भाँति भोजन करवावा ❀ मुनिवरहृदय हर्ष अति छावा ॥
पुनि चरणन मेले सुतचारी ❀ राम देखि मुनि देह विसारी ॥
भये मगन देखत मुख शोभा ❀ जनु चकोर पूरण शशि लोभा ॥
तब मन हर्ष वचन कह राऊ ❀ मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ॥
केहिकारण आगमन तुम्हारा ❀ कहहु सो करत नलाउब वारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं ❀ मैं याचन आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❀ निशिचर वध मैं होब सनाथा ॥

दोहा–देहु भूप मन हर्षित, तजहु मोह अज्ञान ॥
धर्म्मसुयशनृप तुम कहँ, इनकहँ अति कल्यान २३५

सुनि राजा अति अप्रियवानी ❀ हृदयकम्पमुखद्युतिकुम्हिलानी॥
चौथेपन पायउँ सुत चारी ❀ विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी ॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा ❀ सर्वस देउँ आजु सहरोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउमुनि देउँनिमिष इक माहीं॥
सबसुत प्रिय मोहिं प्राणकिनाईं ❀ राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा ❀ कहँ सुंदरसुत परम किशोरा ॥
सुनि नृपगिरा प्रेमरससानी ❀ हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब वसिष्ठ बहुविधि समुझावा ❀ नृप संदेह नाश कहँ पावा ॥
अति आदर दोउ तनय बुलाये ❀ हृदय लाइ बहुभाँतिसिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ ❀ तुम मुनि पिता आननहिं कोऊ

दोहा–सौंपे भूपति ऋषिहि सुत, बहुविधि देइ अशीश॥
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पदशीश ॥ २३६ ॥

सो०–पुरुषसिंह दोउ वीर, हर्षि चले मुनि भय हरण॥
कृपासिंधुमतिधीर, अखिलविश्व कारण करण॥२९॥

चलत विदा कीने हनुमाना ❀ मिलिहैं वनहिं कहीं भगवाना ॥

१ राजादशरथ । २ निकाय । ३ लक्ष्मणजी । ४ कांति । ५ वृद्धापा । ६ राम लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न । ७ सयाना । ८ पल । ९ सम्पूर्णविश्व ।

अरुणनयन उर बाहु विशाला ❀ नीलजलजतनुश्याम तमाला ॥
कटि पटपीत कसे वरभांथा ❀ रुचिर चाप सायक दुहुँहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउभाई ❀ विश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्यदेव मैं जाना ❀ मोहिं हित पिता तजे भगवाना ॥
चलेजात मुनि दीन्ह दिखाई ❀ सुनि ताडका क्रोध करि धाई ॥
एकहि बाण प्राण हरिलीन्हा ❀ दीनजानि त्यहि निजपददीन्हा ॥
तब ऋषि निजनाथहिंजियचीन्हा ❀ विद्यानिधिकहँ विद्या दीन्हा ॥
जाते लागि न क्षुधा पियासा ❀ अतुलितबल तनु तेजप्रकाशा ॥

दोहा–आँयुध सकल समर्पिके, प्रभु निज आश्रम आनि ॥
कन्द मूल फल भोजन, दिये भक्तहित जानि॥२३७॥

प्रातकहा मुनिसन रघुराई ❀ निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी ❀ आपु रहे मखकी रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर कोँही ❀ लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
बिनुफर बाण राम तेहि मारा ❀ शतयोजन गा सागर पारा ॥
पावकशर सुबाहु पुनि मारा ❀ अनुजनिशाचर कटक सँहारा ॥
मारिअसुर द्विज निर्भयकारी ❀ अस्तुति करहिं देवमुनिझारी ॥
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन विप्रन पर दाया ॥
भक्तिहेतु बहु कथा पुराना ❀ कहैं विप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई ❀ चरित एक प्रभु देखिय जाई ॥
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा ❀ हर्षि चले मुनिवरके साथा ॥
आश्रम एक दीख मगमाहीं ❀ खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं ॥
पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी ❀ सकलकथाऋषिकहीविशेषी ॥

*किसी समय ब्रह्माने एक कन्या उत्पन्न कर उसका नाम अहल्याधरा जिसको परम सुंदरी देख सब सुर मुनि मोहित हो इच्छा करनेलगे. ब्रह्माजीने वह कन्या गौतमजीको धरोहरकी नाईं सौंपकर चलेगये. कुछ काल उपरांत जब फिर ब्रह्माजी आये मुनिसे पूंछा वह कन्या क्या की मुनिने कहा लीजिये. ऐसा कह सन्मुख उपस्थित करदी तब पितामहने उनकी जितेन्द्रिय

१ श्रेष्ठतरकस। २ बला अतिबला दौविद्या जिनते सब ज्ञज उत्पन्नभयेहैं। ३ यज्ञ। ४ क्रोध करके। ५ अग्निबाण। ६ दिन। ७ पक्षी।

दोहा-गौतमनारी शापवश, उपल देह धरि धीर ॥
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर ॥२३८॥

छंद मात्रात्रिभंगी ॥

परसतपदपावन शोकनशावन प्रगट भई तपपुंजसही ॥
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही ॥
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवैवचनकही ॥
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारवही
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपाभक्तिपाई ॥
अतिनिर्मलवानी अस्तुतिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई ॥
मैंनारि अपावनिप्रभुजगपावन रावणरिपुजनसुखदाई ॥
राजीवविलोचनभवभयमोचन पाहिपाहिशरणहिंआई ॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ॥
देखेउँभरिलोचन हरिभवमोचन यहैलाभशंकरजाना ॥
विनती प्रभुमोरी मैंमति भोरी नाथ न वरमांगौं आना ॥
पदकमलपरागा रस अनुरागा ममनमधुपकरैपाना ॥
जेहिपद सुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईशिवशीशधरी ॥

तासे सन्तुष्ट होकर वह कन्या उन्हींको प्रदान करदी तब इन्द्रको बडा क्षोभ हुआ. एक दिन गौतमजी तो घर नहींथे तब इन्द्र गौतमजीका स्वरूप धर द्वारपर पुकार अहल्यासे कहा कि हम कामातुर हैं तब अहल्याने कहा महाराज इस वेलामें आपका ज्ञान कहांगया ? उत्तर दिया कि तू पतिव्रता है पतिके वचनको मान. तब वह आज्ञाभंग नकरसकी और कार्यकी सिद्धिमें तत्पर हुई उसी समय गौतमऋषिने द्वारपर पुकारा पतिका शब्द पुनः सुन चितामें होय कोपकर इंद्रसे पूँछा कि सत्य बोल तू कौन है ?-तब इन्द्रने डरकर नाम कहदिया अहल्या इंद्रको छिपाय किवाड खोलनेगई तब ऋषिने पूंछा इतनी देर कैसे हुई तब अहल्याने झूंठ बोला. ऋषिने ध्यानसे सब चरित जान इन्द्रको शापदिया कि तेरे शरीरमें सहस्र भग होजायँगी और अहल्याको साप दियाकि तू शिलाहो जब रामचंद्र आवेंगे तब पुनः अपने शरीरको प्राप्तहोगी ॥

सोईपदपंकजज्यहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी
यहिभाँतिसिधारी गौतमनारी बारबारहरिचरणपरी ॥
जोअतिमनभावासोवरपावागइपतिलोकअनन्दभरी॥

दोहा–अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहित कृपाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छांडि कपट जंजाल २३९

चले राम लक्ष्मण मुनिसंगा ❀ गये जहाँ जगपावनि गंगा ॥
अनुज सहित प्रभुकीन्हप्रणामा ❀ बहुप्रकार सुख पायउ रामा ॥
पुनि सुरसरि उत्पति रघुराई ❀ कौशिकसन पूछा शिरनाई ॥

अथ कथा क्षेपक–गंगाजीकी उत्पत्तिकी ।

कह मुनि प्रभु तव कुल इकराजा ❀ नाम सगर तिहुँलोक विराजा ॥
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी ❀ केशिनि ज्येष्ठ सुमति लघुप्यारी॥
सबप्रकार सम्पति सुरभ्राजा ❀ सुतविहीन मनविस्मय राजा ॥
एकसमय भामिनि दोउ साथा ❀ गये वन तनयहेतु रघुनाथा ॥
सघन सफल तरु सुन्दर नाना ❀ तहँ भृगुमुनि तपतेजनिधाना ॥

दोहा–सहितनारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शतएक ॥
कीन्हें तप बल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक २४०

कहि निजदुख प्रणामनृपकीन्हा ❀ दै अशीश तब मुनि वर दीन्हा॥
नृपरानीसन मुनि अस भाषा ❀ लेहु सोवर जोजेहि अभिलाषा॥
सुनि मुनिवचन शीशतिननावा ❀ देहुनाथ जो अति मनभावा ॥
एकहि कह्यो एकसुत होना ❀ दूसरि साठिसहस गुण लोना॥
हर्षित भयो सुभग वर पाई ❀ पाणि जोरि चरणन शिरनाई ॥
सहित भामिनी अवधहिं आये ❀ हर्ष सहित कछुदिवस गँवाये ॥
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई ❀ तब केशिनि असमंजस जाई ॥
सुमति प्रसव यक तुम्बरि सोई ❀ भये सुत प्रकट कहे मुनि जोई॥
निरखे सुत हरषित सब होई ❀ मंगलचार किये सब कोई ॥
हर्ष सहित दिये दान नरेशू ❀ पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू ॥
घृतघट सुन्दर विविध मँगाये ❀ ते सब सुत नृपतिन महँ नाये ॥

१ गंगाजी। २ दोनों। ३ पुत्र। ४ चिंता। ५ वृक्ष। ६ हाथ। ७ त्रिन। ८ उत्पन्न किया।

दोहा-यहि विधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम॥
जाइँ दिवस निशि हर्ष वश,सुनहु राम घनश्याम२४१
परिजन पुरजन घरनि नरेशू ❀ अति आनँद तनु मिटा अँदेशू॥
बालकेलि कर भये कुमारा ❀ लीला करैं अगम संसारा॥
होइँसोकाज सकल मनचीते ❀ यहिसुख बसत बहुत दिन बीते॥
सरयू नदी अवध जो अहई ❀ विमल सलिल उत्तर तट बहई॥
प्रजालोकके बालक नाना ❀ नित उठि तहां करैं अस्नाना॥
असमंजस तहँ तरणी आनी ❀ तिनहिं चढ़ाइ बोरि निजपानी॥
भये प्रजा सब परम दुखारी ❀ बालक वधँ सुनि सुनहु खरारी॥
सकल गये जहँ बैठ नृपाला ❀ बोले वचन नाइ पद भाला॥
तुम नृप चहहु प्रजाप्रतिपाला ❀ सुत तुम्हार भा सबकर काला॥
तजब देश तव सुनहु नरेशू ❀ विनातजे नहिं मिटै कलेशू॥
दोहा-तव सुत कीन्हें पाप बहु, मारे बालक वृन्द॥
तुमकहँ प्राण समान यह,सकलप्रजन कहँ मन्द२४२
प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा ❀ सुतहि देशते बाहर कीन्हा॥
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ ❀ गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ॥
बसत हृदय नृपके सो कैसे ❀ फणिमणि मीन सलिल रहजैसे॥
गये प्रजा सब निजनिजधामा ❀ भये विलोकि मनहिं विश्रामा॥
बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा ❀ आइ भयोपन चौथ हमारा॥
द्विजमंत्री गुरुसुतहु बुलाये ❀ हिमगिरि विन्ध्यमध्यतब आये॥
रुचिर वेदिका एक बनाई ❀ देखत बनइ बरणि नहिं जाई॥
मखं अरम्भ छांडे तब तुरंगा ❀ वेगवन्त जिमि देखिय उरगा॥
दोहा-सुरपति सुनि भय दारुणहिं,मनमहँकरिअनुमान
आन तुरँग तबलीन्हेंउ,मर्म न काहू जान॥२४३॥
राखे आनि कपिल मुनि पाहीं ❀ कोउ न जान काहुहि गमनाहीं॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने ❀ लेत तुरग तिनहूँ नहिं जाने॥

१रानियां। २ आठवर्षके। ३ निर्मल। ४ जल। ५ नाव। ६ अपनेहाथसे। ७ नाश। ८ श्रीरामचंद्र। ९ मस्तक। १० यज्ञ। ११ घोड़ा। १२ सर्प।

तिन सब आय कहा नृप पाहीं ❀ महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरँग को जान न कोई ❀ कहा करिय जो आयसु होई ॥
सुनत वचन नृप विस्मय पाये ❀ सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये ॥
जाहु तुरँग तुम हेरहु जाई ❀ सकल चले चरणन शिरनाई ॥
सुरपति सम देखिय सब वीरा ❀ सकल धनुर्द्धर अति रणधीरा ॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई ❀ बलि पशु जीव भये सब आई ॥
सुमनवाटिका उपवन बागा ❀ सरित कूप वापिका तडागा ॥
नगर गाँव मुनीश थल नाना ❀ गिरिकन्दर कानन अस्थाना ॥

दोहा-इहिविधि खोजेहु तुरँग तिन,आयेभूपति पाहिं॥
चरणन माथहि नाइ कहि, खोजअश्वकीनाहिं२४४॥

खोदहु महि सुत फेरि पठाये ❀ चले सकल पूरवदिशि आये ॥
तिनकेकर जिमिकुलिशसमाना ❀ योजन भरि खोदहिं बलवाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने ❀ करहिं कहा सकल सकुचाने ॥
शोधत महि पताल सब आये ❀ दिग्गज देखि एक शिरनाये ॥
तिहिंपूछा सबकथा सुनाये ❀ बहुरि सकल दक्षिणदिशिआये ॥
इहिविधि पुनि दूसर गज देखा ❀ अतिउतंगगुण विमल विशेषा ॥
ताहू कहँ प्रणाम तिन कीन्हें ❀ चले खनत पश्चिम चित दीन्हें ॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्हा ❀ पुनिउत्तरदिशि शोधहिलीन्हा ॥
दिग्गज श्वेत निरखि सुखपाये ❀ सकलकपिलमुनिपहँपुनिआये ॥
खोदत मही पार नहिं पावा ❀ सोइभाचहुँदिशिजलधिसुहावा ॥

दोहा-देखिनि आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास ॥
बोले वचन सकोप करि,भाचहु सबकर नाश॥२४५॥

खोदीमहि हम चारिउ कोधा ❀ रेरे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई ❀ इहिसम छली और नहिं कोई ॥
परधन लै पताल पुनि आये ❀ तस्कर मुनिवर वेष बनाये ॥

---

१ इन्द्र । २ फुलवारी । ३ नदी । ४ तलाव । ५ वन । ६ ऊंचा । ७ दिशाओंके उन्मत्तहाथी । ८ समुद्र । ९ घोड़ा । १० चोर ।

कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं ❀ समुझि देखि लक्षण मन माहीं ॥
कोउ कह बक तप कीन्ह अपारा ❀ अहो दुष्ट है तुरँग हमारा ॥
सुनत वचन मुनि चितवा जबहीं ❀ भये भस्म सब क्षणमें तबहीं ॥
उमावचन जेहि समुझि नबोला ❀ सुधाहोइ विष तिक्तमओला ॥
पावकजानि धरहिं कर प्रानी ❀ जरहिंकाहिनहिं तेअभिमानी ॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं ❀ सुनहु राम ते काहे न मरहीं ॥
क्रोधकियो तिनकिये विचारा ❀ भये सकल तेहिते जरिक्षारा ॥
इहाँ नृपति अँशुमान बुलाये ❀ नहिं आये सब तिनहिं पठाये ॥
दोहा-दीन्हीं नृपति अशीश तब, अतिहितबारहिंबार ॥
बेगि फिरहुले तुरँग सुत, मेरे प्राणअधार ॥ २४६ ॥
चले नाइ पद शीश कुमारा ❀ विष्णुभक्त दुहुँ कुलउजियारा ॥
जहँ तहँ देखि मुनिनके धामा ❀ पूछि खबरि करि दण्डप्रणामा ॥
पन्नगे अहिसन पाइ अशीशा ❀ चहुँदिग्गज कहँ नायउ शीशा ॥
यहिविधि शोधत मगमहँ जाता ❀ मिलेगरुड सुमतीकर भ्राता ॥
चरण परत तब आशिष दयऊ ❀ जरेसकल जेहिविधि सोकहेऊ ॥
सुनतहि वचन सोचभाभारी ❀ दिये खगेश दिखाय सुवारी ॥
अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा ❀ क्रमक्रमसबहिंजलांजलिदीन्हा ॥
बहुरि गरुड़ बोले सुन भ्राता ❀ मैं तोहिं कहौं करिय यक बाता ॥
सो०-करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि महँ ॥
दरशनते अघ जाय, मज्जन कीन्हें परमसुख ॥ २४७ ॥
षष्टिसहस तरिहैं येही विधि ❀ गंगा पाय परम पावननिधि ॥
सुनि अस वचन हृदयमनभाये ❀ सहित गरुड़ मुनिवर पहँआये ॥
तब खगेश मुनि चरणन नायउ ❀ पूरुबकथा सकल मुनि गायउ ॥
आशिष दइ तुरँग मुनि दीन्हा ❀ हर्षिहृदय निजअश्वहिचीन्हा ॥
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई ❀ गये भवन निज तब रघुराई ॥
यहा तुरँगले नृप शिरनाई ❀ षष्टिसहस मुनि कथा सुनाई ॥

१ पार्वती। २ अमृत। ३ अग्नि। ४ विष। ५ शेषनाग।

विस्मय हर्षविवश नृप भयऊ ❀ कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुविधि नृपति राजपुनि कीन्हा ❀ प्रजालोगकहँ अतिसुखदीन्हा ॥
दोहा-अंशुमानहित राजदे, निज मन हरिपद लाग ॥
गयउसगरतपकाजवन, हृदयअधिकअनुराग २४८
तासु तनय दिलीपनृप भयऊ ❀ वन तप हेतु उतरदिशि गयऊ ॥
वहां अगम तप कीन्ह नृपाला ❀ भये कालवश गयेकछुकाला ॥
किहिविधि कहुँ दिलीप प्रभुताई ❀ सेवैं सकल नृपति जेहि आई ॥
जुवत जासु मुख सुरपतिरहहीं ❀ महिमातासुकौनिकविकहहीं ॥
भागीरथ अस सुत भयो जासू ❀ पितुसमप्रीति अधिकउरतासू ॥
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू ❀ आपचले उठि तपके काजू ॥
मनमहँ करत पंथ अनुमाना ❀ सुरसरि आव तजउँ नतु प्राना ॥
मम पितु तनु दीन्हेउ तिसिदेऊं ❀ फिर निज नगरकनामनलेऊं ॥
सो०-यहि विधिकरत विचार, नृपकीन्हेंतपप्रबलतब॥
बीते कछु यक काल, देह तजीकोउप्रगटनाहिं ॥३०॥
जेहिसुरसरिलगितजितनुभूपा ❀ सोतजि मूढ पियाहिं जलकूपा ॥
इहाँ भगीरथ असमन भयऊ ❀ पितुनआव बहुदिनचलिगयऊ॥
काकुत्स्थनामतनययक रहेऊ ❀ दीन्हा राजनीति बहु कहेऊ ॥
कहि सब पूर्वकथा सुतपाहीं ❀ दीन्ह अशीश चले नरनाहीं ॥
निकसत नगर शकुन भल पाये ❀ अतिदिनिविडवनजहँ नृप आये॥
देखि भगीरथ वन सुख पावा ❀ सुरसरि हित तपकहँ मनलावा ॥
एकचरण दोउ भुजा उठाये ❀ रविसन्मुख चितवहिं मनलाये ॥
वर्षसहस बीते यहि भाँती ❀ जात न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्रतप अजचलिआये ❀ बोले वचन नृपहिं मन भाये ॥
चाहहु नृप सु लेहु वरदाना ❀ बोले नृप करि अजहिं प्रणामा ॥
जो मांगौं सो जानत अहहू ❀ मोसनमांगनप्रभुकिमि कहहू ॥
दोहा-तदपि कहौं प्रभु देहु वर, सब सन्तनकहँवृद्धि ॥

१श्रीगंगाजी । २ कुवाँ । ३ सुत । ४ सघन । ५ दारुण । ६ ब्रह्माजी ।

दूसर मांगों जोरि कर, गंगा आवहिं निद्धि ॥ २४९ ॥
एवमस्तु कहि पुनिविधिकहही ❀ सुरसरि देहुँ राखि को सकही ॥
छूट जाइ पुनि तुरत रसातल ❀ फिरहिननृपति बहुरिसनुभूतल॥
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं ❀ अति दयालु शंकर मनमाहीं ॥
सोइशिव रखहिं देवसरि आजू ❀ उनहिंजपे तव होइहै काजू ॥
असकहि विधि अन्तरहितभये ❀ बहुरि भगीरथ शिवपहँ गये ॥
विबुधवर्ष अंगुष्ठ अधारा ❀ बार बार शिव नाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रगटे तब आई ❀ हाथ जोरि नृप विनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कह ईशा ❀ बहुरि रमापति ध्यान करीशा ॥
दोहा-वहाँदेवसरि शिववचन,सुनि मन कीन्ह विचार॥
जाउँ रसातल शिव सहित,जात न लावौं बार॥२५०॥
अन्तर्यामी शिवहि उपाई ❀ निज शिर जटा सु अगम बनाई ॥
यहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्हीं ❀ सुनिमृदुगिराछाँडिविधिदीन्हीं॥
छूटत शोर भयउ जग भारी ❀ चकित देव अहि दिग्गज चारी ॥
सुरसरि पुनि हरजटा समानी ❀ वर्ष एक तहँ रहीं भवानी ॥
कौतुक देखि सकल सुर हरषे ❀ कह जय जयति सुमनबहुवरषे ॥
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा ❀ शिव तब डारिबुन्द इकदीन्हा॥
तेहिते भई तीनि पुनि धारा ❀ एक गई नभ एक पतारा ॥
गइ नभ सोइ भई अघनाशिनि ❀ देवन धरा नाम मन्दाकिनि ॥
दोहा-दूसरि गई पतालमें, नाम प्रभावति हरण दुख ॥
तीसरि भइगंगासोई,सबसन्तनकोकरनसुख॥२५१॥
जलप्रवाह निरखत नृपति, उर अति भयउ अनन्द ॥
जैसेउमड़तासिन्धुतब, पूर्णकला लख चन्द ॥ २५२ ॥
आय भगीरथ पुनि शिरनाये ❀ बोली सुरसरि वचन सुहाये ॥
वेगवन्त नृप रथ तैं आनू ❀ मरुततुरँग रथगति जिमि भानू ॥
तेहिरथ चढि नृपचढु मम आगे ❀ चलिहौं मैं तव पाछे लागे ॥

१ पातालोक । २ पृथ्वी-मृत्युलोक । ३ सूर्य ।

सुनि नृप दिव्यतुरँग रथ आना ❀ चले हृदय सुमिरतभगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहि सुरसरी ❀ देवन मुदित सुमन झरि करी ॥
चलत तेज कछु वरणिनजाई ❀ टूटहिं गिरि तरु शिला सुहाई ॥
करैं कुलाँहल वहु जिय जाती ❀ कमठ नक्र व्याकुल बहु भांती॥
मज्जन करहिं देवता आई ❀ मुनि गण सिद्ध रहे तहँ छाई ॥
सोरठा--तर्पण कर मनलाय,हर्षहृदय नहिं जातकहि ॥
दरशनते अघँ जाय, तरैं सकल मुनि जन कहैं ॥ ३१ ॥
मज्जन कर हरषाय, सुर अजादि सनकादिऋषि ॥
पान करत अघजाय,अस मत सब कोऊ कहैं ॥ ३२ ॥
करै जो मज्जन जप मन लाई ❀ तिनकी महिमा कहिनसिराई ॥
रथपर जात सोह नृप कैसे ❀ तेजवन्त रवि देखिय जैसे ॥
लांघत शैल सुहावन देशा ❀ पाछे सुरसरि अग्र नरेशा ॥
हरिद्वार समीप जब आई ❀ तीर्थ देखि सुरसरि मनभाई ॥
तीरथ हूँ मनभा सुखभारी ❀ आदिप्रयाग पहुँचि अघहारी ॥
तहँ मज्जन कीन्हें दुखजाई ❀ बहुरि देवसरि काशी आई ॥
सो शिवपुरी सहज सुखदाई ❀ वरणि नजाइ मनोहरताई ॥
औरौ तीर्थ विविधविध जानी ❀ गई तहाँ किमि कहौं बखानी ॥
मगंलोगन कहँ करत सनाथा ❀ जाइचली इहिविधि रघुनाथा ॥
दोहा-मिलीजाइपुनिउदधिमहँ, उदधिहृदयसुखमान॥
लगे कहन भागीरथहि, तुम समधन्यनआन ॥२८३॥
कीन्हों अस जस करहि नकोई ❀ तप महिमा बल कस नहिंहोई ॥
सगर तनय तारे ततकाला ❀ हर्षवन्त तब भयो नृपाला ॥
औरौ रहेजे कुलमहँ कोऊ ❀ तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
सकल सुरन सँग तहाँ विधाता ❀ नृपसन आय कही असि बाता॥
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ ❀ तुम समान नृप और नभयऊ ॥

१ पर्वत । २ वृक्ष । ३ पत्थर । ४ हल्ला । ५ कछुआ । ६ स्नान । ७ पाप । ८ पीनेसे ।
९ पर्वत । १० रास्ता । ११ समुद्र । १२ दूसरे । १३ ब्रह्मा । १४ राजा ।

आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ ❀ सम्मत वेद जनन सुख दयऊ ॥
गंगसागर २ सब कोइ कहहीं ❀ अब उलूक देखत रवि डरहीं ॥
भागीरथी नाम अस कहहीं ❀ मुनि सुर सिद्ध नाग यश लहहीं ॥
असविधिकहिनिजलोकहि आये ❀ यहाँ भगीरथ अति सुखपाये ॥
छं०पायो अमित सुख बहुरिपूजासुरसरिहिमनलाइकै ॥
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृपगये सुखपाइकै ॥
इहि भाँति सुनि गंगा कथा तब राम ऋषिचरणन नये ।
कहदासतुलसी रामलषणहिंमहामुनिआशिषदये २५
दोहा-कौशिक आशिष अमियसम, पायहर्ष रघुनाथ ॥
प्रभु सुखपाइ कहा बहुरि, वेगि चलिय मुनिनाथ २५४
॥ इति क्षेपक ॥
गाधितनय सब कथा सुनाई ❀ ज्यहिप्रकार सुरसरि महिआई ॥
तबप्रभु ऋषिन्ह समेत नहाये ❀ विविधदान महिदेवन १ पाये ॥
हर्षि चले मुनिवृन्दसहाया ❀ वेगि विदेह नगर २ नियराया ॥
पुररम्यता राम जब देखी ❀ हर्ष अनुज समेत विशेखी ॥
वापी कूप सरित सर नाना ❀ सलिल सुधासम मणिसोपाना ३ ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृङ्गा ४ ❀ कूजत कल बहु वरण विहङ्गा ॥
वरण वरण विकसे जलजाता ५ ❀ त्रिविधसमीर ६ सदा सुखदाता ॥
दोहा-सुमनवाटिका बाग वन, विपुल विहंग निवास ॥
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँ पास ॥ २५५ ॥
बने न वर्णत नगर निकाई ❀ जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई ॥
चारु बजार विचित्र अटारी ❀ मणिमयविधिजनुस्वकरसँवारी ॥
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❀ सन्तत रहहिं सुगन्ध सिचाई ॥

१ ब्राह्मण । २ जनकपुरी । ३ सिढ़ी । ४ भ्रमर । ५ कमल । ६ शीतल-मंद-सुगन्ध, वायु ।

धनिकवणिकवर धनद समाना ॥ बैठे सकल वस्तु ले नाना ॥
मंगलमय मन्दिर सब केरे ॥ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥
पुर नर नारि सुभग शुचि संता ॥ धर्म्म शील ज्ञानी गुणवंता ॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू ॥ विथकहिंविबुधविलोकिविलासू ॥
होतचकितचितकोट विलोकी ॥ सकल भुवन शोभाजनुरोकी ॥

दोहा–धवल धाम मणि पुरटपट्ट, सुघटितनानाभाँति ॥
सियनिवाससुंदरसदन, शोभाकिमिकहिजाति २५६

सुभगद्वार सब कुलिश कपाटा ॥ भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनीविशाल बाजि गजशाला ॥ हयगयरथ संकुल सबकाला ॥
शूर सचिव सेनप बहुतेरे ॥ नृप गृह सरिस सदनं सबकेरे ॥
पुरबाहर सर सरित समीपा ॥ उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अमराई ॥ सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोर मन माना ॥ इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना ॥
भलेहिनाथ कहि कृपानिकेता ॥ उतरे तहँ मुनि वृन्द समेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये ॥ समाचार मिथिलापति पाये ॥

दोहा–संगसचिव शुचि भूरि भट, भूसुर वर गुरुज्ञाति ॥
चलेमिलनमुनिनायकहि, मुदितराउइहिभाँति २५७

कीन्ह प्रणाम धरणिधरि माथा ॥ दीन्ह अशीशमुदितमुनिनाथा ॥
विप्रवृन्द सब सादर वन्दे ॥ जानि भाग्य बड़ि राउ अनन्दे ॥
कुशल प्रश्न कहि बारहिंबारा ॥ विश्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई ॥ गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा ॥ लोचन सुखद विश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये ॥ विश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भेसबसुखी देखि दोउ भ्राता ॥ वारिविलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी ॥ भयउ विदेहँ विदेह विशेषी ॥

दोहा–प्रेममगन मनजानिनृप, करि विवेक धरि धीर ॥

१ कुबेर । २ कामदेव । ३ वज्रकेकिंवार । ४ घर । ५ कृपाकेस्थान । ६ पवित्रमंत्री ।
७ बहुतसेयोद्धा । ८ ब्राह्मण । ९ पास । १० राजाजनक ।

बोलेउ मुनिपद नाइशिर, गद्गद गिरा गँभीर ॥२५८॥
कहहु नाथ सुन्दरदोउबालक ❀ मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक ॥
ब्रह्मजो निगम नेति कहिगावा ❀ उभय भेषधरि की स्वइआवा ॥
सहज विराग रूप मन मोरा ❀ थकित होत जिमि चंद्र चकोरा ॥
ताते प्रभु पूँछौं सदभाऊ ❀ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहिं विलोकतअतिअनुरागा ❀ बरबशब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥
कहमुनिविहँसिकहेउनृपनीका ❀ वचनतुम्हार नहोइ अलीका ॥
येप्रियसबहिं जहाँलगि प्राणी ❀ मनमुसुकाहिं राम सुनिवाणी ॥
रघुकुलमणि दशरथके जाये ❀ ममहित लागि नरेश पठाये ॥
दोहा-राम लषण दोउ बंधुवर, रूप शील बलधाम ॥
❀ मखराखेउ सब साखि जग,जीतिअसुर संग्राम२५९
मुनि तवचरण देखि कह राऊ ❀ कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनँदहूके आनँद दाता ॥
इनकीप्रीति परस्पर पावनि ❀ कहि न जाइ मन भाव सुहावनि॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू ❀ ब्रह्मजीव इव सहज सनेहू ॥
पुनिपुनि प्रभुहि चितवनरनाहू ❀ पुलकगात उर अधिक उछाहू॥
मुनिहि प्रशंसि नाइ पद शीशा ❀ चले लिवाइ नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला ❀ तहाँ वास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब विधि सेवकाई ❀ गयउ राउ गृह विदा कराई ॥
दोहा-ऋषय संग रघुवंशमणि, करि भोजन विश्राम॥
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवसरहा भरियाम॥२६०॥
लषण हृदय लालसा विशेषी ❀ जाइ जनकपुर आइय देखी ॥
प्रभु भय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं ❀ प्रकट न कहहिंमनहिं मुसुकाहीं॥
राम अनुज मनकी गतिजानी ❀ भक्तवछलता हियहुलसानी ॥
परमविनीत सकुचि मुसुकाई ❀ बोले गुरु अनुशासनपाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं ❀ प्रभु सकोचडर प्रगट न कहहीं॥

१ पुलकितवाणी । २ प्रीति । ३ पवित्र । ४ मनुष्यनमेंजैसेसिंह । ५ आनंद ।
६ पृथ्वीपतिराजा जनक । ७ एकमहर ।

जो राउर अनुशासन पाऊं ❀ नगर देखाइ तुरत लै आऊं ॥
सुनिमुनीश कह वचन सप्रीती ❀ कस न राम राखहु तुम नीती ॥
धर्म्मसेतु पालक तुम ताता ❀ प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥
दोहा--जाइ देखि आवहु नगर, सुख[1]निधान दोउ भाइ ॥
करहु सफल सबकेनयन, सुन्दरवदनदिखाइ ॥ २६१ ॥
मुनि पदकमल वन्दि दोउ भ्राता ❀ चले लोकलोचनसुखदाता ॥
बालक वृन्द देखि अतिशोभा ❀ लगे संग लोचन मनलोभा ॥
पीत वसन परिकर कटि भाथा ❀ चारु चाप शर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी ❀ श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरिकन्धर[2] बाहु विशाला ❀ उरअतिरुचिरनागमणि[3]माला ॥
सुभग[4]श्रवण सरसीरुह लोचन ❀ वदनमयंकतापत्रय मोचन ॥
कानन कनकफूल छबिदेहीं[5] ❀ चितवत चित्त चोरजनुलेहीं ॥
चितवनिचारु भृकुटिवरबाँकी ❀ तिलकरेख शोभा जनुचाँकी ॥
दोहा--रुचिर चौतनी[6] सुभग शिर, मेचक[7] कुंचित[8]केश ॥
नखशिखसुन्दरबन्धुदोउ, शोभासकलसुदेश ॥ २६२ ॥
देखन नगर भूपसुत आये ❀ समाचार पुरवासिन पाये ॥
धाये धाम[9] काम सब त्यागे ❀ मनहु रंक[10] निधि[11] लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दर दोउभाई ❀ होहिं सुखी लोचन[12] फलपाई ॥
युवती[13] भवन झरोखनिलागी ❀ निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती ❀ सखिइन कोटिकामछबिजीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनिमाहीं ❀ शोभाअसकहुँ सुनियत नाहीं ॥
विष्णुचारिभुज विधि मुखचारी ❀ विकट वेष मुखपञ्च पुरारी ॥
अपरदेव अस को जग आही ❀ यह छबि सखि पटतरिये[14]जाही ॥
दोहा-वय किशोर सुखमासदन, श्याम गौर सुखधाम ॥
अंग अंग पर वारिये, कोटि कोटि शत काम ॥ २६३ ॥

१ सुखकेस्थान। २ सिंह किशोरके ऐसे। ३ गजमुक्ता। ४ अतिसुंदरकान।
५ छापि दीहे। ६ पगडी। ७ श्यामसचिक्कन। ८ टेढेघुंघुवारेकेश। ९ गृह।
१० दलिद्री। ११ यावत्पदार्थ। १२ नेत्र। १३ स्त्रियां। १४ उपमा।

कहहु सखी अस को तनुधारी ❋ जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ❋ जोमैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
येदोउ नृप दशरथके ढोटा ❋ बाल मरालनके कलजोटा ॥
मुनि कौशिक मखके रखवारे ❋ जिन रण अजय निशाचरमारे॥
श्यामगात कलकंजविलोचन ❋ जो मारीच सुभुजमदमोचन ॥
कौशल्यासुत सो सुखखानी ❋ नाम राम धनु सायक पानी ॥
गौर किशोर वेष वर काछे ❋ करशर चाप रामके पाछे॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता ❋ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता॥

दोहा-विप्र काज करि बन्धु दोउ, मगमुनिबधूउधारि॥
आये देखन चापमख, सुनि हरषीं सबनारि ॥ २६४ ॥

देखिरामछवि सखि यककहई ❋ योग्यजानकी यह वर अहई ॥
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू ❋ प्रण परिहरि हठि करहिबिवाहू॥
कोउ कह इनहिं भूप पहिचाने ❋ मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई ❋ विधिवश हठिअविवेकहिभजई॥
कोउ कह जो भलअहै विधाता ❋ सबकहँसुनियउचितफलदाता॥
तौ जानकिहि मिलिहि वर एहू ❋ नाहिन आली यह सन्देहू ॥
जो विधिवश अस बनै सँयोगू ❋ तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे अति आरति ताते ❋ कबहुँक ए आवहिं यहिनाते ॥

दोहा-नाहितहमकहँ सुनहु सखि, इन्हकरदर्शन दूरि॥
यह संघटतब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि ॥ २६५ ॥

बोली अपर कह्यउसखिनीका ❋ यह विवाह अतिहितसबहीका ॥
कोउकह शंकरचाप कठोरा ❋ ये श्यामल मृदुगात किशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी ❋ यह सुनि अपर कहैं मृदुबानी ॥
सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं ❋ बड़प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पदपंकज धूरी ❋ तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥
सोकि रहैं बिनु शिव धनु तोरे ❋ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे॥

१ पुत्र । २ बालहंस । ३ अहल्या । ४ सम्बन्ध । ५ पूर्वजन्म । ६ बहुत । ७ धनुष । ८ कोमल । ९ पापोंसे भरी ।

जेहिविरंचि रचि सीय सँवारी ❀ तेहिश्यामलवररचेउ विचारी ॥
तासु वचन सुनि सबहरषानी ❀ ऐसेइ होउ कहहिंमृदुबानी ॥
दोहा-हियहरषहिंवर्षहिंसुमन, सुमुखिसुलोचनिवृंद ॥
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द ॥२६६॥
पुर पूरबदिशि गे दोउभाई ❀ जहाँ धनुष मख भूमि बनाई ॥
अति विस्तार चारु गच ढारी ❀ विमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥
चहुँदिशि कंचनमंच विशाला ❀ रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
त्यहि पाछे समीप चहुँ पासा ❀ अपर मंच मण्डली विलासा ॥
कछुक ऊँच सब भाँति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग जहँ आई ॥
तिनके निकट विशाल सुहाये ❀ धवल धाम बहु वरण बनाये ॥
जहँ बैठी देखहिं पुर नारी ❀ यथायोग्य निजकुल अनुहारी ॥
पुरबालक कहिकहि मृदुवचना ❀ सादर प्रभुहि दिखावहिं रचना ॥
दोहा-सबशिशुमिसुइहिप्रेमवश, परसिमनोहरगात ॥
तनुपुलकहिंअतिहर्षहिय,देखिदेखिदोउभ्रात॥२६७॥
शिशु सब राम प्रेम वश जाने ❀ प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निजनिजरुचि सबलेहिं बुलाई ❀ सहितसनेह जाहिंदोउ भाई ॥
राम दिखावहिं अनुजहिंरचना ❀ कहि मृदुमधुर मनोहर वचना ॥
लवनिमेष महँ भुवन निकाया ❀ रचै जासु अनुशासन माया ॥
भक्तहेतु सोइ दीनदयाला ❀ चितवतचकितधनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❀ जानि विलम्ब त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डरकहँ डर होई ❀ भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातें मृदु मधुर सुहाईं ❀ किये बिदा बालक बरिआईं ॥
दोहा-सभयसप्रेमविनीतअति,सकुचसहितदोउभाइ॥
गुरु पदपंकज नाइशिर,बैठे आयसु पाइ ॥२६८॥
निशिप्रवेश मुनि आयसुदीन्हा ❀ सबहीं संध्या वंदन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी ❀ रुचिर रजनि युगयाम सिरानी ॥

१ पुष्प । २ कन्या । ३ बालक । ४ मन्दिरनकीशोभा । ५ भाईलक्ष्मणजी ।
६ चरणकमल । ७ रात्रि ।

मुनिवर शयनकीन्ह तबजाई ❀ लगे चरण चापन दोउ भाई ॥
जिनके चरणसरोरुह लागी ❀ करतविविध जप योग विरागी ॥
तेदोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ❀ गुरुपद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा ❀ रघुवर जाइ शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरण लषण उर लाये ❀ सभय सप्रेम परम सचुपाये ॥
पुनिपुनि प्रभुकह सोवहु ताता ❀ पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥
दोहा-उठेलषणनिशिविगतसुनि,अरुणशिखाध्वनिकान ॥
गुरुते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान ॥ २६९ ॥
सकल शौचकरि जाय नहाये ❀ नित्यनिवाहि गुरुहिंशिरनाये ॥
समय जानि गुरु आयसुपाई ❀ लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूप बाग वर देख्यउ जाई ❀ जहँ वसन्तऋतु रहै लुभाई ॥
लागे विटप मनोहर नाना ❀ वरण वरण वरबेलि वितान ॥
नवपल्लव फल सुमन सुहाये ❀ निजसम्पति सुरतरुहिं लजाये ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा ❀ कूजत विहँग नचत कलमोरा ॥
मध्यबाग सर सुभग सुहावा ❀ मणि सोपान विचित्र बनावा ॥
विमलसलिल सरसिजबहुरंगा ❀ जल खग कूजत गुंजत भृंगा ॥
दोहा-बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हर्षे बन्धु समेत ॥
परमरम्य आराम यह, जो रामहिं सुखदेत ॥२७०॥
चहुँदिशि चितैपूँछिमालीगन ❀ लगेलेन दल फूल मुदितमन ॥
त्यहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहरबानी ॥
सर समीप गिरिजा गृह सोहा ❀ वरणि न जाय देखि मन मोहा ॥
मज्जनकरि सर सखी समेता ❀ गई मुदित मन गौरि निकेता ॥
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभग वर मांगा ॥
एक सखी सिय संग विहाई ❀ गई रही देखन फुलवाई ॥
तेइँ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई ❀ प्रेम विवश सीता पहँ आई ॥

१ मुर्गा । २ पुष्प । ३ वृक्ष । ४ छत्र । ५ नवीनपात । ६ तालाब । ७ पार्वती ।

दोहा–तासु दशा देखी सखिन, पुलकगातजलनयन ॥
कहुकारणनिजहर्षकर, पूँछहिंसबमृदुवयन ॥२७१॥

देखन बाग कुँवर दुइ आये ❀ वय किशोर सबभाँति सुहाये ॥
श्याम गौर किमि कहौं बखानी ❀ गिराअनयन नयन बिनु बानी ॥
सुनिहरषीं सब सखी सयानी ❀ सियहिय अतिउतकण्ठाजानी ॥
एककहहिं नृपसुत ते आली ❀ सुने जे मुनि सँग आये काली ॥
जिन निज रूप मोहनी डारी ❀ कीन्हें स्ववश नगर नर नारी ॥
वर्णत छवि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवशि देखिये देखन योगू ॥
तासु वचनअति सियहि सुहाने ❀ दरशलागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्रकरि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातन लखै नकोई ॥

दोहा–सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीतिपुनीत ॥
चकितविलोकतिसकलदिशि, जनुशिशुमृगीसभीत२७२

कंकणकिंकिणिनूपुरध्वनिसुनि ❀ कहतलषणसनरामहृदयगुनि ॥
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही ❀ मनसा विश्व विजय कहँ कीन्ही ॥
असकहिफिरिचितयेत्यहिओरा ❀ सियमुखशशिभयेनयनचकोरा ॥
भयेविलोचन चारु अचंचल ❀ मनहुँसकुचिनिमितजेउदृगंचल ॥
देखि सीय शोभा सुखपावा ❀ हृदय सराहत वचन न आवा ॥
जनु विरंचि सब निज निपुणाई ❀ विरचि विश्वकहँ प्रगट दिखाई ॥
सुन्दरताकहँ सुन्दर करई ❀ छवि गृह दीप शिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरिय विदेहकुमारी ॥

❀ एक समय जानकीजी गिरिजा पूजनके निमित्त जातीथीं तहां मार्गमें
नारदजी मिले जानकीजीने दण्डवत्कर कहा कि, महाराज! देवीकी पूजा कर-
नेको जातीहूं तब नारदजीने प्रसन्नहो आशीर्वाददिया कि हेजानकी! इसी गिरि-
जाबारीमें श्रीरामचन्द्र तुम्हारे पति तुमको मिलेंगे तब जानकीजीने पूँछा कि,
महाराज! हम कैसे चीन्हैंगी तब नारदबोले इस बगीचेमें जिसको देखनेसे तुम्हा-
रा मन प्रसन्नहोजाय और लुभायजाय उसीको जानना कि यह मेरे पतिहैं ॥

१ न्यहिको सुनिकैमिलिबेको अतिआतुरताहोइ।

दोहा–सिय शोभाहियवर्णिप्रभु, आपनि दशाविचारि॥
बोले शुचिमनअनुजसन, वचनसमयअनुहारि २७३

तात जनकतनया यह सोई ❀ धनुपयज्ञ ज्यहि कारण होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई ❀ करति प्रकाश फिरति फुलवाई॥[१]
जासुविलोकि अलौकिकशोभा ❀ सहजपुनीत मोरमन क्षोभा ॥
सोसब कारण जान विधाता ❀ फरकहिं शुभग अंग सुन भ्राता ॥
रघुवंशिनकर सहज स्वभाऊ ❀ मनकुपंथ पग धरैं नकाऊ ॥
मोहिं अतिशयप्रतीतिजियकेरी ❀ ज्यहिस्वप्नेहु परनारि नहेरी ॥
जिनके लहहिं न रिपुरण पीठी ❀ नहिं लावहिं परतिय मन डीठी॥
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं ❀ तेनरवर थोरे जग माहीं ॥

दोहा–करत बतकही अनुजसन, मनसियरूपलुभान॥
मुखसरोजमकरन्दछबि, करतमधुपइवपान ॥२७४॥

चितवतिचकित चहूँदिशिसीता ❀ कहँगये नृपकिशोर मनचीता ॥[२]
जहँ विलोकि मृगशावकनयनी ❀ जनुतहँवरषकमलसितश्रयनी ॥
लता ओट तब सखिन लखाये ❀ श्यामल गौर किशोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हर्षेजनु निजनिधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपति छवि देखी ❀ पलकनहूं परिहरी निमेखी ॥
अधिकसनेह देह भइभोरी ❀ शरदशशिहिजनुचितवचकोरी॥
लोचन मगु रामहिं उर आनी ❀ दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन प्रेमवश जानी ❀ कहिनसकहिं कछुमनसकुचानी॥

दोहा–लताभवनते प्रगटभए, त्यहि अवसर दोउभाइ॥
निकसेजनुयुगविमलविधु, जलदपटलबिलगाइ २७५

शोभासींव शुभग दोउ वीरा ❀ नील पीत जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके ❀ गुच्छा बिच बिच कुसुमकलीके॥[३]
भालतिलक श्रमविन्दु सुहाये ❀ श्रवणशुभम भूषण छविछाये ॥
विकट भ्रुकुटि कच घुंघुरवारे ❀ नवसरोज लोचन रतनारे ॥

१ ब्रह्माके सृष्टिकेलोकनविषे ऐसी शोभा नहींहै । २ चित्त विषे आतुर । ३ बारनके पट्टाकोवनकेसेपक्षनयामसचिक्कन ।

चारु चिबुक नासिका कपोला ❀ हास विलास लेत जनु मोला ॥
मुखछबिकहि नजाहि मोहिंपाहीं ❀ जो बिलोकि बहु काम¹लजाहीं ॥
उरमणिमाल कम्बुकलग्रीवा ❀ कामकलभकर भुजबलसींवा ॥
सुमन समेत वामकर दोना ❀ साँवर कुँवर सखी सुठि लोना ॥
दोहा—केहरि कटि पटपीत धर, सुखमा शीलनिधान ॥
देखि भानुकुल भूषणहिं, बिसरा सखिन अपान २७६
धरि धीरज इक सखी सयानी ❀ सीता सन बोली गहिपानी ॥
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू ❀ भूप किशोर देखिकिनलेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सन्मुख दोउ रघुवंश निहारे ॥
नखशिख देखि रामकी शोभा ❀ सुमिरिपिताप्रणमनअतिक्षोभा॥
परवश सखिन लखी जब सीता ❀ भई गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब इहि बिरियां काली ❀ असकहि मनविहँसीइकआली ॥
गूढ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भयउ विलम्ब मातु भयमानी ॥
धरि बड़ि धीर राम उर आनी ❀ फिर आपन प्रणपितुवशजानी ॥
दोहा—देखन मिसु मृग विहँगतरु, फिरतिबहोरिबहोरि॥
निरखि निरखि रघुवीर छबि, बाढ़ी प्रीति नथोरि२७७
जानि कठिन शिवचापबिसूरति ❀ चलीराखि उरश्यामलमूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह शोभा गुणखानी ॥
परमप्रेममय मृदु मसि कीन्ही ❀ चारु चित्र भीतरलिखिलीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी ❀ वन्दि चरण बोली कर जोरी ॥
जय जय जय गिरिराज किशोरी ❀ जयमहेश मुखचन्द्र चकोरी ॥
जयगजवदन षडानन माता ❀ जगतजननि दामिनि द्युतिगाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना ❀ अमित प्रभाव वेद नहिं जाना ॥
भवंभवविभवपराभवकारिणि ❀ विश्वविमोहनिस्ववशविहारिणि॥
दोहा—पतिदेवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तवरेख ॥
महिमा अमितनकहिसकहिं, सहसशारदाशेष २७८

१ संसार। २ उत्पन्नकरतीहो। ३ पालनकरतीहो। ४ नाशकरतीहो। ५ स्वतंत्र।
६ पतिव्रताओंमें।

सेवततोहिं सुलभ फलचारी ❀ वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी ॥
देविपूजि पदकमल तुम्हारे ❀ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके ❀ बसहु सदा उरपुर सबहीके ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेही ❀ असकहि चरण गहे वैदेही ॥
विनय प्रेमवश भई भवानी ❀ खसीमाल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसाद उरधरेऊ ❀ बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनुसियसत्य अशीश हमारी ❀ पूजहि मन कामना तुम्हारी ॥
नारदवचन सदा शुचि साँचा ❀ सोवरमिलिहि जाहि मनराँचा॥

छंदहरिगीतिका।

मन जाहि राचो मिलिहि सोवर सहज सुन्दर साँवरो॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहिभाँतिगौरि अशीशसुनिसियसहितहियहर्षितअली
तुलसीभवानिहि पूजिपुनिपुनिमुदितमनमन्दिरचली

सो०--जानि गौरि अनुकूल,सिय हियहर्षनजायकहि॥
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥ ३३ ॥

हृदय सराहत सीय लुनाई ❀ गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं ❀ सरल स्वभावछुआ छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही ❀ पुनि अशीश दोउ भाइनदीन्ही॥
सफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे ❀ राम लषण सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी ❀ लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
विगत दिवस मुनि आयसुपाई ❀ सन्ध्या करन चले दोउभाई ॥
प्राचीदिशि शशि उग्यउसुहावा ❀ सियमुख सरिस देखिसुखपावा ॥
बहुरिविचार कीन्ह मनमाहीं ❀ सीयवदन सम हिमकरनाहीं ॥

दोहा--जन्म सिन्धुपुनिबन्धुविष,दिनमलीनसकलंक ॥
सिय मुख समता पावकिमि,चन्द्र बापुरोरंक॥२७१॥

घटै बढ़ै विरहिनि दुखदाई ❀ ग्रसै राहुनिज सन्धिहि पाई ॥

१ सुंदरता। २ पूर्वदिशा। ३ चन्द्र।

कोक शोकप्रद पंकज द्रोही ❀ अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥
वैदेही मुख पटतर दीन्हे ❀ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सियमुखछबिबिधुव्याजबखानी ❀ गुरुपहँचले निशा बड़िजानी ॥
करि मुनिचरणसरोजप्रणामा ❀ आयसुपाय कीन्ह विश्रामा ॥
बिगतनिशा रघुनायक जागे ❀ बन्धुबिलोकि कहन असलागे ॥
उगेउ अरुण अवलोकहुताता ❀ पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लषण जोरि युग पाणी ❀ प्रभु प्रभाव सूचक मृदुवाणी ॥
दोहा-अरुणोदयसकुचेकुमुद, उडुगणज्योतिमलीन ॥
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भयेनृपतिबलहीन २८०
नृप सब नखतकरहिं उजियारी ❀ टारिनसकहिं चाप तम भारी ॥
कमलकोक मधुकर खगनाना ❀ हरषे सकल निशा अवसाना ॥
ऐसेहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे ❀ होइहैं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु बिनुश्रमतमनाशा ❀ दुरे नखत जगतेज प्रकाशा ॥
रविनिज उदय व्याज रघुराया ❀ प्रभुप्रतापसब नृपन दिखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी ❀ प्रगटी धनु विघटन परिपाटी ॥
बन्धुबचनसुनि प्रभु मुसुकाने ❀ होइशुचिसहज पुनीत अन्हाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आये ❀ चरणसरोज सुभग शिरनाये ॥
सतानन्द तब जनक बुलाये ❀ कौशिकमुनि पहँ तुरत पठाये ॥
जनकविनयतिनआय सुनाई ❀ हर्षे बोलि लिये दोउ भाई ॥
दोहा-सतानन्द पदवन्दि प्रभु, बैठे गुरुपहँ जाइ ॥
चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बुलाइ २८१
सीय स्वयम्बर देखिय जाई ❀ ईश काहिधौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यश भाजनसोई ❀ नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनि बरबानी ❀ दीन्ह अशीश सबहि सुखमानी ॥
पुनि मुनिवृन्द समेत कृपाला ❀ देखन चले धनुष मखशाला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई ❀ असशुधि सब पुरवासिन पाई ॥

१ कमल। २ नक्षत्र। ३ राजा। ४ उद्योत करनेको उदयाचलकीबाटी।
५ नाशहेतु। ६ विश्वामित्र। ७ जहांराजालोगोंके बैठनेकेलिये
विचित्ररचनाथी किन्तुरङ्गबंदरभूमि।

चले सकल गृहकाज बिसारी ❀ बालक युवा जरठे नरनारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी ❀ शुचि सेवक सब लिये हँकारी ॥
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू ❀ आसन उचित देहु सब काहू ॥
दोहा—कहि मृदु वचन विनीत तिन, बैठारे नर नारि ॥
उत्तम मध्यमनीचलघु, निज निजथलअनुहारि २८२
राजकुँवर त्यहि अवसर आये ❀ मनहु मनोहरता छवि छाये ॥
गुणसागर नागर वरवीरा ❀ सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राजसमाज विराजत रूरे ❀ उडुगणं महँ जनु युग विधु पूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी ❀ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महा रणधीरा ❀ मनहुँ वीररस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिल नृपप्रभुहिनिहारी ❀ मनहुँभयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृप वेषा ❀ तिन प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई ❀ नरभूषण लोचन सुखदाई ॥
दो०-नारिविलोकहिंहर्षिहिय, निजनिजरुचिअनुरूप ॥
जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥ २८३ ॥
विदुषन प्रभु विराटमय दीशा ❀ बहु मुख कर पग लोचन शीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे ❀ सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित विदेह विलोकहिं रानी ❀ शिशु सम प्रीति न जाइ वखानी ॥
योगिन परमतत्त्व मय भासा ❀ सन्त शुद्ध मन सहज प्रकाशा ॥
हरिभक्तन देखेउ दोउभ्राता ❀ इष्टदेव इव सब सुखदाता ॥
रामहिंचितव भाव ज्यहि सीया ❀ सोसनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उरअनुभवति नकहिसकसोऊ ❀ कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥
ज्यहिविधिरहा जाहिजसभाऊ ❀ त्यहितस देख्यहु कोशल राऊ ॥
दोहा-राजत राज समाजमहँ, कोशलराज किशोर ॥
सुन्दर श्यामल गौरतनु,विश्वविलोचन चोर ॥ २८४ ॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ ❀ कोटिकाम उपमा लघु सोऊ ॥

१ बूढे । २ नक्षत्र । ३ चन्द्र । ४ पण्डितन ।

शरदचन्द्र निन्दक मुखनीके ❀ नीरज[1] नयन भावते जीके ॥
चितवनि चारु[3] मार मद हरणी ❀ भावत हृदय जाइ नहिं वरणी ॥
कलकपोल[4] श्रुति[5] कुंडल लोला ❀ चिबुक अधर सुन्दर मृदुबोला ॥
कुमुद[6] बन्धुकर निन्दक हासा ❀ भृकुटी विकट मनोहर नासा ॥
भालविशाल तिलकझलकाहीं ❀ कच[7]विलोकिअलि[8]अवलि[9]लजाहीं ॥
पीत चौतनी शिरन सुहाई ❀ कुसुमकली बिच बीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा ❀ जनु त्रिभुवन सुखमाकी सीवा ॥

दोहा–कुंजर मणि कंठा कलित, उर तुलसीकी माल ॥
वृषभकन्धकेहरिठवनि, बलनिधिबाहुविशाल ॥२८५॥

कटि तूणीर पीतपट बाँधे ❀ करशर धनुष वाम वर काँधे ॥
पीतयज्ञ उपवीत सुहाये ❀ नख शिख मंजु महाछवि छाये ॥
देखि लोग सब भये सुखारे ❀ इकटक लोचन टरहिं नटारे ॥
हर्षे जनक देखि दोउ भाई ❀ मुनि पदकमल गहे तब जाई ॥
करिविनती निजकथा सुनाई ❀ रंगअवनि[10] सब मुनिहि दिखाई ॥
जहँ जहँ जाहिं कुँवर वर[11] दोऊ ❀ तहँ तहँचकितचितवसबकोऊ ॥
निज निज रुचि रामहिं सब देखा ❀ कोउनजान कछु मर्म[12]विशेषा ॥
भलिरचना नृपसन मुनिकहेऊ ❀ राजामुदितपरमसुख लहेऊ ॥

दोहा–सब मंचनते मंच इक, सुन्दर विशद विशाल ॥
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ, बैठारे महिपाल ॥२८६॥

प्रभुहिं देखि सब नृप हियहारे ❀ जिमि राकेश[13] उदय भये तारे ॥
असि प्रतीति तिनके मन माहीं ❀ राम चाँप[14] तोरब शक नाहीं ॥
विन भंजेहु भवधनुषविशाला ❀ मेलिहि सीय राम उरमाला ॥
अस विचारि गवनहु घर भाई ❀ यश प्रताप बल तेज गँवाई ॥
विहँसे अपर भूप सुनि बानी ❀ जे अविवेक अधम अभिमानी ॥
तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा[15] ❀ विनु तोरे को कुँवरि विवाहा ॥

---

१ कमलनयन । २ पवित्र । ३ सुंदर । ४ गाल । ५ कान । ६ कमल । ७ बाल । ८ भ्रमर । ९ पंक्ति । १० रंगभूमि । ११ श्रेष्ठ । १२ भेद । १३ पूर्णमासीकाचन्द्रमा । १४ धनुष । १५ दुर्लभ ।

एकबार कालहु किन होई ❀ सिय हित समर जितब हम सोई ॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धर्म शील हरिभक्त सयाने ॥
सो०-सीय बिआहब राम, गर्ब दूर करि नृपन्ह कर ॥
जीतिको सक संग्राम, दशरथके रणबाँकुरे ॥ ३४ ॥
बृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मनमोदक नहिं भूख बुताई ॥
सिख हमारि सुनु परम पुनीता ❀ जगदम्बा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी ❀ भरिलोचन छबि लेहु निहारी ॥
सुन्दर सुखद सकल गुणराशी ❀ येदोउ बन्धु शम्भु उरवासी ॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई ❀ मृगजल निरखि मरहु कत धाई ॥
करहु जाय जाकहँ जोइ भावा ❀ हमतो आजु जन्मफल पावा ॥
असकहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना ❀ बर्षहिं सुमन करहिं कलगाना ॥
दोहा-जानि सुअवसर सीय तब, पठवा जनक बुलाइ ।
चतुर सखी सुन्दरि सकल, सादर चलीं लिवाइ ॥ २८७ ॥
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदम्बिका रूप गुण खानी ॥
उपमा सकल मोहिं लघु लागी ❀ प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥
सीय बरणि त्यहि उपमा देई ❀ को कवि कहै अयशको लेई ॥
जो पटतरिय तीय सम सीया ❀ जग असि युवति कहाँ कमनीया ॥
गिरा मुखर तनु अर्द्ध भवानी ❀ रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥
बिष बारुणी बन्धु प्रिय जेही ❀ कहिय रमा सम किमि बैदेही ॥
जो छबि सुधा पयोनिधि होई ❀ परम रूप मय कच्छप सोई ॥
शोभा रजु मन्दर शृंगारू ❀ मथै पाणि पंकज निज मारू ॥
दोहा-इहिबिधि उपजै लक्षि जब, सुन्दरता सुखमूल ।
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय सम तूल ॥ २८८ ॥
चली संग लै सखी सयानी ❀ गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवलतनु सुन्दरि सारी ❀ जगतजननि अतुलित छबि भारी ॥

१ मिथ्यावककर । २ मनमें लड्डू खानेसे । ३ मधुरगान ।
४ शारद-वाक्यचंचल । ५ विनेदह ।

भूषण सकल सुदेश सुहाये ❀ अंग अंग रचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगुधारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई ❀ वर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणि सरोज सोह जयमाला ❀ औचक चितै सकल महिपाला ॥
सीय चकित चित रामहिंचाहा ❀ भये मोहवश सब नरनाहा ॥
मुनि समीप बैठे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधिपाई ॥
दोहा-गुरुजनलाज समाज बड़ि, देखिसीयसकुचानि ॥
लगीविलोकनसखिनतन, रघुवीरहिउरआनि ॥२८९॥
रामरूप अरु सिय छबि देखी ❀ नर नारिन परिहरी निमेखी ॥
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ❀ विधिसन विनय करहिंमनमाहीं ॥
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई ❀ मति हमारि असि देहु सुहाई ॥
बिन विचार प्रणतजिनरनाहू ❀ सीय रामकर करै विवाहू ॥
जगभलकहहि भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हें उर अन्तर दाहू ॥
यह लालसा मगन सब लोगू ❀ बरसाँवरो जानकी योगू ॥
तब बंदीजन जनक बुलाये ❀ बिरदावली कहत चलि आये ॥
कह नृप जाइ कहहु प्रणमोरा ❀ चले भाट हिय हर्ष नथोरा ॥
दोहा-बोले वन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल ॥
प्रणविदेहकरकहहिंहम, भुजाउठाइविशाल ॥२९०॥
नृपभुजबल विधु शिवधनु राहू ❀ गरुअ कठोर विदित सबकाहू ॥
रावण बाण महाभट भारे ❀ देखि शरासन गवहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारिकोदण्ड कठोरा ❀ राजसमाज आजु जोइ तोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही ❀ बिनहिं विचार वरै हठि तेही ॥
सुनिप्रण सकल भूप अभिलाषे ❀ भटमानी अतिशय मनमाषे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन शिरनाई ॥
तमकिताकितकिशिवधनुधरहीं ❀ उठैनकोटिभाँति बल करहीं ॥
जिनके कछुविचार मनमाहीं ❀ चाप समीप महीप नजाहीं ॥

१ पुष्प। २ करकमल। ३ भाट। ४ कुलकी कीर्तिगातेहुये। ५ बाणासुर। ६ धनुष। ७ महादेव। ८ पटुका।

दोहा-तमकिधरहिंधनुमूढनृप, उठयनचलहिंलजाय॥
मनहुपायभटबाहुबल, अधिकअधिकगरुआय॥२९१॥

भूपसहसदश[1] एकहि बारा ❀ लगे उठावन टरै न टारा॥
डगै न शम्भु शरासन कैसे ❀ कामी वचन सती मन जैसे॥
सब नृप भये योग उपहासी ❀ जैसे विनु विराग संन्यासी॥
कीरति विजय वीरता भारी ❀ चले चाप कर सरवस हारी॥
श्रीहत भये हारि हियराजा ❀ वैठे निज निज जाइ समाजा॥
नृपन विलोकि जनक अकुलाने ❀ बोले वचन रोष जनुसाने॥
द्वीप द्वीपके भूपति नाना ❀ आये सुनि हम जो प्रणठान्हा॥
देव दनुज धरि मनुजशरीरा ❀ विपुल वीर आये रणधीरा॥

दो०-कुँवरि मनोहरि विजयबड़ि, कीरतिअतिकमनीय[2]॥
पावनहार विरंचि जनु, रच्यउनधनुदमनीय॥२९२॥

कहहु काहि यह लाभ नभावा ❀ काहुन शंकर चाप चढावा॥
रहेउ चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिलभरि भूमि नसकयछुड़ाई॥
अबजनि कोउ माषै भटमानी ❀ वीर विहीन मही मैं जानी॥
तजहुआश निज निज गृहजाहू ❀ लिखा न विधि वैदेहिविवाहू॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं ❀ कुँवरि कुँवारि रहैकाकरऊं॥
जो जनत्यउँ विनुभटमहिभाई ❀ तौ प्रणकरिकरत्यउँनहँसाई॥
जनकवचनसुनि सब नरनारी ❀ देखि जानकी भये दुखारी॥
सुनतहिलषण कुटिल भइँभौहैं ❀ रदपुट[3] फरकत नयन रिसौहैं॥

दोहा-कहि नसकत रघुवीर डर, लगे वचन[4] जनु वाण॥
नाइ राम पद कमल शिर, बोले गिरा प्रमाण॥२९३॥

रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहि समाज अस कहै नकोई॥
कहीजनक जस अनुचितवानी[5] ❀ विद्यमान रघुकुलमणिजानी[6]॥
सुनहु भानुकुल पंकजभानू ❀ कहौं स्वभावनकछुअभिमानू॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ ❀ कन्दुँकइव[7] ब्रह्माण्ड उठाऊँ॥

१ दशहजारराजा। २ सुन्दरता। ३ ओष्ठ। ४ यथार्थवचन। ५ अयोग्यवचन।
६ श्रीरामचन्द्रको प्रत्यक्षजानकर। ७ गेंदकीतुल्य।

काचेघट जिमि डारौं फोरी ❀ सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि असआयसु होऊ ❀ कौतुककरौं विलोकियसोऊ ॥
कमलनालइमि चाप चढावों ❀ शतयोजन प्रमाण लैधावों ॥

दोहा–तोरौं छत्रकदंड जिमि, तव प्रताप बल नाथ ॥
जो नकरौं प्रभुपदशपथ, पुनिनधरौंधनुहाथ ॥२९४॥

लषण सकोष वचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोक सब भूप डराने ❀ सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने ॥
गुरुरघुपति सब मुनिमनमाहीं ❀ मुदित भये पुनिपुनिपुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषण निवारे ❀ प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभजानी ❀ बोले अतिसनेह मृदु बानी ॥
उठहु राम भंजहु भव चापा ❀ मेटहु तात जनक परितापा ॥
सुनि गुरु वचन चरण शिरनावा ❀ हर्ष विषाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ भये उठि सहज सुभाये ❀ ठवनि युवा मृगराज लजाये ॥

दोहा–उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बालपतंग ॥
विकसे सन्त सरोज सब, हर्षे लोचन भृंग ॥ २९५ ॥

नृपनकेरि आशा निशिनाशी ❀ वचन नखत अवलीन प्रकाशी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये विशोक कोक मुनि देवा ❀ वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरुपद वन्दि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिनसन आयसु मांगा ॥
सहजहिंचले सकल जगस्वामी ❀ मत्तमंजु कुंजर वरगामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी ❀ पुलक पूरि तनु भये सुखारी ॥
वन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे ❀ जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे ॥
तौ शिव धनुष मृणाल किनाईं ❀ तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥

दोहा–रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ ॥
सीता मातु सनेहवश, वचनकहैबिलखाइ ॥ २९६ ॥

१ मूरी । २ धनुष । ३ कमलकीडंडी । ४ दुःख । ५ सिंह । ६ बालसूर्य्य । ७ पांति । ८ हाथी ।

सखि सब कौतुक देखन हारे ❀ जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं ❀ ये बालक अस हठ भल नाहीं ॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुँवर कर देहीं ❀ बाल मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी ❀ सखिविधिगतिकछुजायनजानी ॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी ❀ तेजवन्त लघु गणिय नरानी ॥
कहँकुम्भज कहँ सिंधु अपारा ❀ शोष्यउ सुयश सकल संसारा ॥
रविमंडल देखत लघुलागा ❀ उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ॥

दोहा—मंत्र परम लघु जासु वश, विधिहरि हर सुरसर्व ॥
महामत्त गजराजकहँ, वशकरअंकुशखर्व ॥ २१७ ॥

काम कुसुमधनु सायक लीन्हे ❀ सकल भुवन अपने वश कीन्हे ॥
देवि तजिय संशय अस जानी ❀ भंजब धनुष राम सुनु रानी ॥
सखी वचन सुनि भइ परतीती ❀ मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती ॥
तब रामहिं बिलोकि वैदेही ❀ सभयहृदयविनवतिज्यहितेही ॥
मनहींमन मनाय अकुलानी ❀ होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सफल आपनि सेवकाई ❀ करि हित हरहु चाप गरुआई ॥
गणनायक वरदायक देवा ❀ आज लगे कीन्ही तव सेवा ॥

* एकसमय किसी चिडियेके तीन बच्चे समुद्र बहा लेगया तब वोह प्रतिदिन अपनी चोंचसे पानी भर भर कर बाहर फेंका करै यही इच्छा कि समुद्रको उलीच डालूंगा अगस्त्यऋषिने यह समाचार देख उससे पूँछा तब पक्षीने कारण कहा यह सुन दयायुक्तहो ऋषिने कहा यह समुद्र जड निर्दयी है इसका दंड हम करैंगे यह कह चलेगये. एक दिन समुद्रके किनारे जप पूजा करतेथे कि, समुद्र लहरसे पूजाकी सामग्री बहाय लेगया तब वोह पक्षीकीबात स्मरण करके तीन अंजलिमें अर्थात् राघवायनमः, केशवायनमः, वासुदेवायनमः ऐसा उच्चारणकर पीगये तब वोह बहुत कालतक सूखा पड़ा रहा, फिर देवतोंने कुंभजऋषिसे बहुत निवेदन किया तब लघुशंकाकरके फिर भर दिया ॥

१ अगस्त्यमुनि। २ ओंकार। ३ अत्यन्तछोटा। ४ फूलोंकाधनुषबाण। ५ चौदहोंलोक।

बार बार विनती सुनिमोरी ❀ करहु चाप गरुता अति थोरी ॥
दोहा—देखिदेखि रघुवीर तन, सुर मनाव धरि धीर ॥
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ॥ २९८ ॥
नीकेनिरखि नयन भरि शोभा ❀ पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनक्षोभा ॥
अहह तात दारुण प्रण ठानी ❀ समुझत नहिं कछु लाभनहानी ॥
सचिव सभय सिखदेइनकोई ❀ बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥
कहँ धनुकुलिशहु चाहि कठोरा ❀ कहँश्यामलमृदुगात किशोरा ॥
विधि केहिभाँतिधरौंउरधीरा ❀ सिरँससुमन किमि बेधहि हीरा ॥
सकलसभाकी मतिभइ भोरी ❀ अबमोहिं शंभु चाप गति तोरी ॥
निज जडता लोगन पर डारी ❀ होहुहरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परंताप सीय मनमाहीं ❀ लवनिमेष युग सम चलिजाहीं ॥
दोहा—प्रभुहि चितै पुनि चितै महि, राजतलोचनलोल ॥
खेलत मनसिज मीन युग, जनु विधुमण्डलडोल २९९
गिराअलिनि मुख पंकज रोकी ❀ प्रगट न लाज निशाअवलोकी ॥
लोचन जलरह लोचन कोना ❀ जैसे परमकृपणकर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बडिजानी ❀ धरिधीरज प्रतीति उरआनी ॥
तन मन वचन मोरप्रणसांचा ❀ रघुपति पदसरोज मनरांचा ॥
तौ भगवान सकल उरवासी ❀ करहिंमोहिं रघुपतिकी दासी ॥
जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू ❀ सोतेहि मिलत न कछु सन्देहू ॥
प्रभुतनचितै प्रेमप्रण ठाना ❀ कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहिविलोकितक्यउधनुकैसे ❀ चितवगरुडलघुव्यालहिजैसे ॥
दोहा—लषणलख्यउरघुवंशमणि, ताक्यउ हरकोदण्ड ॥
पुलकिगात बोलेवचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥ ३०० ॥
दिशिकुंजरहु[11] कमठ[12] अहि[13] कोला[14] ❀ धरहुधरणि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं शंकरधनु तोरा ❀ होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप राम जब आये ❀ नरनारिन सुर सुकृत मनाये ॥

---

१ नेत्र । २ सन्देह ३ पिता । ४ मंत्री । ५ पण्डित । ६ वज्र । ७ सिरसकाफूल । ८ हलका । ९ दुःख । १० पलकलगना । ११ चारोंदिशाकेहाथी । १२ कच्छप । १३ शेषजी । १४ वाराह ।

सबकर संशय अरु अज्ञाना ❀ मन्द महीपनकर अभिमाना ॥
भृगुपति केरि गर्व गरुआई ❀ सुर मुनि वरन केरि कदराई ॥
सियकरशोच जनक परितापा ❀ रानिनकर दारुण दुख दापा ॥
शम्भुचाप बड बोहित पाई ❀ चढे जाइ सब संग बनाई ॥
राम बाहु बल सिंधु अपारा ❀ चहतपार नहिं कोउकनहारा ॥

दोहा–राम विलोके लोग सब, चित्र लिखेसे देखि ॥
चितई सीय कृपायतन,जानी विकलविशेपि ॥ ३०१ ॥

देखी विपुल विकल वैदेही ❀ निमिप विहात कल्प सम तेही ॥
तृषितवारिविनु जोतनु त्यागा ❀ मुये करै का सुधा तडागा ॥
का वर्षा जव कृषी सुखाने ❀ समय चूक पुनि का पछिताने ॥
अस जियजानि जानकी देखी ❀ प्रभु पुलके लखिप्रीति विशेपी ॥
गुरुहिप्रणाम मनहिं मन कीन्हा ❀ अति लाघव उठाय धनुलीन्हा ॥
दमक्यउदामिनिजिमिघनलयऊ ❀ पुनिधनुनभमण्डलसमभयऊ ॥
लेत चढावत खैंचत गाढे ❀ काहु न लखा देखसब ठाढे ॥
त्यहि क्षण मध्य राम धनु तोरा ❀ भरचउभुवनध्वनि घोरकठोरा ॥

छन्द–हरिगीतिका ।

भरिभुवन घोरकठोर रव रविवाजि तजि मारग चले ॥
चिक्करहिं दिग्गज डोलमहि अहि कोलकूरमकलमले ॥
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलविकल विचारहीं ॥
कोदंड भंज्यउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ॥

सो०–शंकर चाप जहाज, सागर रघुपति बाहुबल ॥
बूडे सकल समाज, चढे जे प्रथमहिंमोहवश ॥ ३५ ॥

प्रभु दोउखंड चाप महि डारे ❀ देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौशिकरूप पयोनिधि पावन ❀ प्रेमवारि अवगाह सुहावन ॥
रामरूप राकेश निहारी ❀ बढी बीचि पुलकावलि भारी ॥
बाजे नभ गहगहे निशाना ❀ देववधू नाचहिं करि गाना ॥

---

१ खेती । २ शीघ्रही । ३ बिजली । ४ शब्द । ५ दिशाओंकेहाथी । ६ पृथ्वी । ७ शेषनाथ । ८ वाराह । ९ तरंग । १० आकाश । ११ जोरशोरसे । १२ देवताओंकीस्त्रियां ।

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा ❀ प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा ॥
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला ❀ गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
रही भुवनभरि जयजय बानी ❀ धनुषभंग ध्वनिजात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी ❀ भंज्यउ राम शम्भुधनु भारी ॥

दोहा—बन्दी मागध सूतगण, विरद वदहिं मतिधीर ॥
करहिंनिछावरिलोगसब,हयगजधनमणिचीर॥३०२॥

झाँझ मृदंग शंख सहनाई ❀ भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❀ जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये ॥
सखिनसहित हर्षित अति रानी ❀ सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनक लह्यउ सुख शोच बिहाई ❀ पैरत थके थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे ❀ जैसे दिवस दीप छवि छूटे ॥
सियहियसुखवरणियकेहिभाँती ❀ जनु चातक पाये जलस्वाती ॥
रामहिं लषण विलोकत कैसे ❀ शशिहि चकोर किशोरक जैसे ॥
शतानन्द तब आयसु दीन्हा ❀ सीता गमन रामपहँ कीन्हा ॥

दोहा—संगसखी सुन्दर चतुरि, गावहिं मंगलचार ॥
गवनी बालमरालगति, सुखमा अंग अपार ॥ ३०३॥

सखिनमध्य सिय सोहति कैसी ❀ छविगण मध्य महाछवि जैसी ॥
कर सरोज जयमाल सुहाई ❀ विश्व विजय शोभा जनु छाई ॥
तनुसकोच मन परम उछाहू ❀ गूढ प्रेम लखि परै नकाहू ॥
जाय समीप रामछवि देखी ❀ रहिजनु कुँवरि चित्र अवरेखी ॥
चतुरसखी लखि कहा बुझाई ❀ पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई ❀ प्रेम विवश पहिराइ न जाई ॥
सोहतजनु युगजलज सनाला ❀ शशिहि सभीत देत जयमाला ॥
गावहिं छवि अवलोकि सहेली ❀ सिय जयमाल राम उर मेली ॥

सो०—रघुवर उर जयमाल, देखि देव वर्षहिं सुमन ॥
सकुचेसकलभुआल,जनुविलोकिरविकुमुदगण॥३६॥

१ बालहंस। २ सुन्दरता। ३ दोनोंहाथसे। ४ कमल। ५ डंडी। ६ शोभा ७ राजा।

पुर अरु व्योम बाजने बाजे ❀ खल भये मलिन साधु सब राजे ॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा ❀ जय जय सब कहि देहिं अशीशा ॥
नाचहिं गावहिं विबुधवधूटी ❀ बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहँ तहँ विप्र वेदध्वनि करहीं ❀ बन्दी विरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक यश व्यापा ❀ रामवरी सिय भंज्यउ चापा ॥
करहिं आरती पुरनरनारी ❀ देहिं निछावरि वृत्ति बिसारी ॥
सोहत सीय रामकी जोरी ❀ छवि शृंगार मनहुँ इकठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता ❀ करतिनचरणपरसअतिभीता ॥

दोहा—गौतमतियगतिसुरतिकरि, नहिंपरसतिपदपानि
मन बिहँसे रघुवंशमणि, प्रीतिअलौकिकजानि ॥ ३०४ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❀ कूर कुपूत मूढ मन माषे ॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ❀ जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छुड़ाय सीय कह कोऊ ❀ धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई ❀ जीवत हमहिं कुँवरिको बरई ॥
जो विदेह कछु करै सहाई ❀ जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी ❀ राजसमाजहि लाज लजानी ॥
बल प्रताप वीरता बड़ाई ❀ नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ शूरता कि अब कहुँपाई ❀ असबुधितौविधिमुँहमसिलाई ॥

दोहा—देखहु रामहिं नयन भरि, तजि ईर्षा मद मोहु ॥
लषणरोष पावकप्रबल, जानि शलभ जनि होहु ॥ ३०५ ॥

वैनतेय बलि जिमि चह कागा ❀ जिमि शशचहहिंनागअरिभागा ॥
जिमिचहकुशल अकारणकोही ❀ सुखसम्पदा चहहिं शिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई ❀ अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपदविमुख परमगति चाहा ❀ तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी ❀ सखी लिवाइ गईं जहँ रानी ॥
रामस्वभाय चले गुरु पाहीं ❀ सिय सनेह वर्णत मन माहीं ॥

१ अप्सरा। २ सघनपुष्पोंकी वर्षा। ३ बक्तर। ४ पतंग। ५ गरुड। ६ खरगोश। ७ सिंह।

रानिन सहित शोच वश सीया ❀ अबधौं विधिहि कहा करणीया ॥
भूप वचन सुनि इत उत तकहीं ❀ लषण रामडर बोलि न सकहीं ॥
दोहा-अरुणनयनभ्रुकुटी कुटिल, चितवतनृपनसकोप ।
मनहुँ मत्तगजगणनिरखि, सिंहकिशोरहिचोप ॥ ३०६ ॥
खरभर देखि विकल नर नारी ❀ सब मिलि देहिं महीपन गारी ॥
तेहि अवसर सुनि शिवधनु भंगा ❀ आये भृगुकुलकमलपतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जिमिलवाँलुकाने ॥
गौरशरीर भूति भलि भ्राजा ❀ भालविशाल त्रिपुण्ड्र विराजा ॥
शीश जटा शशिवदन सुहावा ❀ रिसिवश कछुक अरुण है आवा ॥
भ्रुकुटीकुटिल नयन रिसिराते ❀ सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥
वृषभ कन्ध उर बाहु विशाला ❀ चारुजनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनिवसन तूण दुइ बांधे ❀ धनुशर कर कुठार कल कांधे ॥
दोहा-सन्तभेष करणी कठिन, वरणि न जाइ स्वरूप ॥
धरि मुनि तनु जनु वीररस, आयेजहँसबभूप ॥ ३०७ ॥
देखत भृगुपतिवेष कराला ❀ उठे सकल भयविकल भुआला ॥
पितु समेत कहि कहि निजनामा ❀ लगे करन सब दण्ड प्रणामा ॥
ज्यहिसुभायचितवहिंहितजानी ❀ सोजाने जनु आयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिरनावा ❀ सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी ❀ निज समाज लैगईं सयानी ॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई ❀ पदसरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथके [illegible] ❀ दीन्ह अशीष जानि भल जोटा ॥
रामहिं चितय रहे थकि [illegible] अपार मारमदमोचन ॥
दोहा-बहुरि विलोकि [illegible], कहहु कहा अति भीर ॥
पूंछत जानि अजान [illegible], व्यापेउकोपशरीर ॥ ३०८ ॥
समाचार कहि जनक सुनाये ❀ ज्यहिकारण महीप सब आये ॥
सुनत वचन फिरि अनतनिहारे ❀ देखे चाप खण्ड महि डारे ॥

१ परशुराम । २ बटर । ३ मस्त [illegible] ५ लाल । ६ भू । ७ टेढ़ी । ८ बैल ।
९ पवित्र सुन्दर । १० भा[illegible] [illegible] तरकश । १२ पुत्र ।

अति रिस बोले वचनकठोरा ❀ कहुजड़जनक धनुष क्यहितोरा॥
वेगि दिखाउ मूढ नतु आजू ❀ उलटौं महि जहँ लगि तव राजू॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं ❀ कुटिल भूप हरषे मनमाहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी ❀ शोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछताति सीय महतारी ❀ विधि सँवारि सब बात बिगारी॥
भृगुपति कर स्वभाव सुनि सीता ❀ अर्द्धनिमेष कलपसम बीता॥

दोहा-सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीर॥
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्रीरघुवीर॥ ३०९॥

नाथ शम्भुधनु भंजनहारा ❀ होइहि कोउइक दास तुम्हारा॥
आयसु कहा कहिय किन मोही ❀ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही॥
सेवक सो जो करै सेवकाई ❀ अरिकरणी[१] करिकरिय लराई॥
सुनहु राम ज्यहिं शिवधनु तोरा ❀ सहसबाहुसम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाइ विहाइ समाजा ❀ नतु मारे जैहैं सब राजा॥
सुनि मुनिवचन लषण मुसुकाने ❀ बोले परशुधरहि[२] अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरी लरिकाई ❀ कबहुँ न असरिसि कीन्हगुसाई॥
यहि धनुपर ममता केहि हेतू ❀ सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू॥

दोहा-रेनृप बालक कालवश, बोलत तोहि न सँभार॥
धनुही सम त्रिपुरारि[३]धनु, विदितसकलसंसार॥ ३१०॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना ❀ सुनहु देव सब धनुषसमाना॥
का क्षति[४] लाभ जीर्ण[५] धनु तोरे ❀ देखा राम नयेके भोरे॥
छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू ❀ मुनि विनुकाजकरियकतरोषू॥
बोले चितय परशुकी ओरा ❀ रेशठ सुनेसि स्वभाव न मोरा॥
बालक जानि वधौं नहिं तोहीं ❀ केवल मुनिजड जानेसि मोहीं॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही[६] ❀ विश्वविदित[७] क्षत्रियकुलद्रोही॥
भुजबल भूमि भूप विनु कीन्ही ❀ विपुलबार महिदेवन दीन्ही॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा ❀ परशु विलोकु महीपकुमारा॥

१ शत्रुकी करणी। २ परशुरामजी। ३ श्रीशिव। ४ हानि। ५ पुराना। ६ कोपित। ७ संसार।

दोहा-मातुपितहिजनिशोचवश, करसिमहीपकिशोर॥
गर्भनके अर्भकदलन, परशु मोर अतिघोर ॥३११॥
विहँसि लषण बोले मृदुबानी ❀ अहो मुनीश महा भट मानी ॥
पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा ❀ चहत उड़ावन फूँकि पहारा ॥
यहां कुम्हड़ बतिया कोउनाहीं ❀ जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी ❀ जोकछु कहहु सहौं रिसरोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ❀ हमरे कुल इनपर न शुराई ॥
वधे पाप अपकीरति हारे ❀ मारतहू पाँ परिय तुम्हारे ॥
कोटिकुलिशसमवचन तुम्हारा ❀ वृथा धरहु धनुबाण कुठारा ॥
दोहा--जोविलोकिअनुचितकह्यउँ, क्षमहुमहा मुनिधीर
सुनि सरोषभृगुवंशमणि, बोले गिरा गँभीर ॥ ३१२॥
कौशिक सुनहु मन्दयहबालक ❀ कुटिलकालवशनिजकुलघालक॥
भानुवंश राकेश कलंकू ❀ निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥
कालकवर होइहि क्षण माहीं ❀ कहौं पुकारि खोरि मोहिंनाहीं ॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा ❀ कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषण कहा मुनिसुयशतुम्हारा ❀ तुमहिं अछत को वरणैपारा ॥
अपनेमुख तुम आपनि करणी ❀ बार अनेक भाँति बहु वरणी ॥
नहिं सन्तोष तो पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिसि रोंकिदुसहदुखसहहू॥
वीर वृत्ति तुम धीर अक्षोभा ❀ गारी देत न पावहु शोभा ॥
दोहा--शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिंआपु॥
विद्यमान रण पाइ रिपु, कायरकथहिं प्रलापु॥३१३॥
तुमतो काल हाँकि जनु लावा ❀ बार बार मोहिं लागि बुलावा ॥
सुनत लषणके वचन कठोरा ❀ परशु सुधारिधरयउ कर घोरा॥
अब जनि देहु दोष मोहिलोगू ❀ कटुवादी बालक वध योगू ॥
बाल विलोकि बहुत मैं बांचा ❀ अब यह मरणहारभा सांचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू ❀ बाल दोष गुण गणहिं न साधू ॥

कर कुठार मैं अकरण कोही ❀ आगे अपराधी गुरु द्रोही ॥
उतर देत छाँडौं बिनु मारे ❀ केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतु इहि काटि कुठार कठोरे ❀ गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रमथोरे ॥
दोहा-गाधिसुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरिअरे सूझ॥
अजगवखण्डयउ ऊखजिमि, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ २१४ ॥
कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा ❀ को नहिं जान विदित संसारा ॥
मातहिं पितहिं उऋण भये नीके ❀ गुरुऋण रहा शोच बड़ जीके ॥
सो जनु हमरे माथे काढा ❀ दिन चलिगये ब्याज बहु बाढा ॥
अब आनिय व्यवहरिया बोली ❀ तुरत देव मैं थैली खोली ॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा ❀ हाहाकार सब लोग पुकारा ॥
भृगुवर परशु देखावहु मोही ❀ विप्र विचारि बचौं नृप द्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रणगाढे ❀ द्विज देवता घरहिंके बाढे ॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सैनहि लषण निवारे ॥
दोहा-लषण उतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु॥
बढ़त देखि जलसम वचन, बोले रघुकुल भानु॥ २१५॥
नाथ करहु बालकपर छोहू ❀ शुद्ध दूध मुख करिय न कोहू ॥

❀ परशुरामके पिता जमदग्नि और माता रेणुका नहानेको गईं वहां जलमें मछलियों को क्रीडा करते देखके इच्छा भई कि, मैं भी घरजाय पतिके संग ऐसेही क्रीडाकरूं सो कामातुर आयके जमदग्निसे कहा कि, हमें ऐसी इच्छाहै. यह सुनि ऋषिको कोप उत्पन्न भया तब तीन बेटे जो औरथे उनसे कहाकि, इसको मारडालो उन्होंने आज्ञा नमानी तब ऋषिने परशुरामसे कहा कि, इन सबको मारडालो परशुरामने पिताकी आज्ञा सुनतेही उठकर फरसेसे माता और भाइयोंकाशिर काटडाला तब ऋषि प्रसन्न होय बोले कि, पुत्र वरमांगो तब परशुरामने मांगा कि तीनों भाई और माताको जिलायदीजै तो ऋषिनेप्रसन्न होय चारोंको जिलादिया और जमदग्निका शिर एक राजा सहस्रबाहुने काटडाला इस निमित्त सारे पृथ्वीके क्षत्रियोंका शिर इन्होंने काटा ॥

१ क्रोध। २ श्रीरामचन्द्रजी। ३ दया।

जोपै प्रभु प्रभाव कछु जाना ❀ तौकि बराबर करत अयाना ॥
जोलरिकाकछु अनुचितकरहीं ❀ गुरु पितु मातु मोदमन भरहीं ॥
करियकृपा शिशु सेवक जानी ❀ तुमसम शील धीर मुनि ज्ञानी ॥
राम वचनसुनि कछुक जुडाने ❀ कहिकछु लषणबहुरिमुसुकाने ॥
हँसतदेखिनखशिख रिसिव्यापी ❀ राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
गौर शरीर श्याम मन माहीं ❀ कालकूट मुख पयमुखनाहीं ॥
सहज टेढ अनुहरै न तोहीं ❀ नीचमीच सम लखै न मोहीं ॥

दोहा—लषण कहेउ हँसि सुनहुमुनि, क्रोध पापकरमूल॥
जेहिवशजनअनुचितकराहिं, चरहिंविश्वप्रतिकूल ३१६

मैंतुम्हार अनुचर मुनिराया ❀ परिहरि कोपकरिय अब दाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने ❀ बैठिय होइहि पाँय पिराने ॥
जो अति प्रिय तो करियउपाई ❀ जोरियकोउ बड़ गुणी बुलाई ॥
बोलत लषणहि जनकडराहीं ❀ मष्टकरहु अनुचित भलनाहीं ॥
थरथर कांपहिं पुर नर नारी ❀ छोटकुमार खोट अति भारी ॥
भृगुपतिसुनिसुनि निर्भयबानी ❀ रिस तनु जरै होय बल हानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा ❀ बचौं विचारि बन्धु लघु तोरा ॥
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे ❀ विषरस भरा कनकघटजैसे ॥

दोहा—सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम ॥
गुरुसमीप गवने सकुचि, परिहरि वाणी वाम॥३१७॥

अति विनीत मृदु शीतल वाणी ❀ बोले राम जोरि युगपाणी ॥
सुनहुनाथ तुम सहज सुजाना ❀ बालकवचन करियनहिं काना ॥
बररै बालक एक स्वभाऊ ❀ इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बन्ध गुसाईं ❀ मोपर करिय दासकी नाईं ॥
कहिय वेगि ज्यहि विधिरिसिजाई ❀ मुनिनायक सोइ करियउपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे ❀ अजहुँ बन्धु तव चितव अनैसे ॥

१ विष। २ दूधकामुख। ३ अयोग्य। ४ टहलुआ। ५ मुपरहहु। ६ स्वर्णकलश।
७ ततैया। ८ बन्धन।

इहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा ❀ तौमैं कहा कोपकरि कीन्हा ॥
दोहा-गर्भ स्रवहिं अवनीपरनि,सुनिकुठार गति घोर ॥
परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप किशोर ॥ ३१८ ॥
बहै न हाथ दहै रिस छाती ❀ भाकुठार कुंठित नृपघाती ॥
भयउवामविधि फिरयउस्वभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कसकाऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्रिविहँसि शिरनावा ॥
नाथ कृपा मूरति अनुकूला ❀ बोलत वचन झरत जनुफूला ॥
जोपै कृपा जरै मुनि गाता ❀ क्रोधभये तनु राखु विधाता ॥
देखु जनक हठि बालक एहू ❀ कीन्ह चहत जड यमपुरगेहू ॥
वेगि करहुकिन आंखिन ओटा ❀ देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
विहँसे लषण कहा मुनिपाहीं ❀ मूँदिय आंखि कतहुँ कोउनाहीं ॥
दोहा-परशुराम तब रामप्रति, बोले वचन सक्रोध ॥
शम्भु शरासन तोरि शठ, करसिहमार प्रबोध॥३१९॥
बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे ❀ तू छल विनय करसिकरजोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा ❀ नाहिंत छांडु कहाउब रामा ॥
छलतजि करहु समर शिवद्रोही ❀ बन्धु सहित नतुमारौंतोही ॥
भृगुपति तमकि कुठार उठाये ❀ मन मुसुकाहिं राम शिरनाये ॥
गुणहु लषणकर हमपर रोषू ❀ कतहुँ सुधाइहुते बड़दोषू ॥
टेढ जानि शंका सब काहू ❀ वक्र चन्द्रमहि ग्रसै नराहू ॥
राम कहा रिसि तजिय मुनीशा ❀ कर कुठार आगे यह शीशा ॥
ज्यहिरिस जाइ करिय सोइ स्वामी ❀ मोहिं जानि आपन अनुगामी ॥
दोहा-प्रभुहिं सेवकहिं समर कस,तजहु विप्र बर रोष ॥
भेष विलोकि कहेसि कछु,बालकहू नहिं दोष ॥ ३२० ॥
देखि कुठार बाण धनुधारी ❀ भैलरिकहि रिस वीर विचारी ॥
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा ❀ वंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा ॥
जो तुम अवतेहु मुनिकी नाईं ❀ पदरज शिर शिशु धरत गुसाईं ॥

१ राजाकी रानियोंके। २ विद्यमान। ३ खुंटा-गोठिला ४ लक्ष्मण। ५ घर। ६ टेढेचन्द्रमाको।

क्षमहु चूक अनजानत केरी ❀ चहिय विप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिं तुमहिं सरिबरिकसनाथा ❀ कहहु तो कहांचरणकहँ माथा॥
राम मात्र लघु नाम हमारा ❀ परशुसहित बड़ नाम तुम्हारा॥
देव एक गुण धनुष हमारे ❀ नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुमसन हारे ❀ क्षमहु विप्र अपराध हमारे ॥
दोहा–बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम ॥
बोलेभृगुपतिसरुषहुइ, तुहूंबन्धुसमवाम ॥ ३२१ ॥
निपटहि द्विजकरि जानहु मोहीं ❀ मैं जस विप्र सुनाऊं तोहीं ॥
चाप श्रुवा शर आहुति जानू ❀ कोप मोर अति घोर कृशानू ॥
समिधसेन चतुरंग सुहाई ❀ महामहीप भये पशु आई ॥
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हे ❀ समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हे ॥
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे ❀ बोलसि निदरि विप्रके भोरे ॥
भंज्यउ चाप दाप बड़ बाढा ❀ अहमिति मनहुँ जीतिजगठाढा॥
रामकहा मुनि कहहु विचारी ❀ रिसअतिबड़ि लघुचूकहमारी॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना ❀ मैं क्यहि हेतु करौं अभिमाना ॥
दोहा–जो हम निदरहिं विप्र वर, सत्यसुनहु भृगुनाथ ॥
तौअसकोजगसुभटज्यहि, भयवशनावहिंमाथ ३२२
देव दनुज भूपति भट नाना ❀ सम बल अधिक होउ बलवाना॥
जो रण हमहिं प्रचारै कोऊ ❀ लरहिं सुखेन काल किनहोऊ ॥
क्षत्रियतनुधरि समरसकाना ❀ कुलकलंक त्यहि पांवर जाना॥
कहौं स्वभाव नकुलहिं प्रशंसी ❀ कालहु डरहिं न रण रघुवंशी ॥
विप्रवंशकी असि प्रभुताई ❀ अभय होइ जो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदु गूढ वचन रघुपतिके ❀ उघरे पटल परशुधर मतिके ॥
राम रमापति कर धनु लेहू ❀ खैंचहु चाप मिटै संदेहू ॥
देतचाप आपुहि चढि गयऊ ❀ परशुराम मन विस्मय भयऊ ॥

१ कोमल, तपस्वी, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रियता, दानलेना तथा देना, सर्व दाता, दयालु किन्तु, सनेह । २धनुष ।३कारण ।४योद्धा ।५बराबर ।६नीच ।७परदे । ८ संदेह ।

दोहा-जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात ॥
जोरिपाणिबोलेवचन, प्रेम न हृदय समात ॥ ३२३ ॥
जय रघुवंश वनज वनभानू ❁ गहन दनुजकुल दहन कृशानू ॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी ❁ जय मद मोह कोह भ्रमहारी ॥
विनयशील करुणागुणसागर ❁ जयति वचनरचनाअतिनागर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा ❁ जय शरीर छवि कोटि अनंगा ॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा ❁ जय महेश मनमानसहंसा ॥
अनुचित बहुत कहउँ अज्ञाता ❁ क्षमहु क्षमा मन्दिरदोउ भ्राता ॥
कहि जयजयजयरघुकुलकेतू ❁ भृगुपति गये वनहिं तपहेतू ॥
अवभय कुटिल महीप डराने ❁ उठि उठि कायर गवहिं पराने ॥
दोहा-देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभु पर वर्षहिं फूल ॥
हर्षे पुर नर नारिसब, मिटा मोह भय शूल ॥ ३२४ ॥
अति गहगहे बाजने बाजे ❁ सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ❁ करहिं गानकलकोकिलवयनी ॥
सुख विदेह कर वरणि नजाई ❁ जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥
विगतत्रास भइ सीय सुखारी ❁ जनु विधु उदय चकोर कुमारी ॥
जनककीन्ह कौशिकहि प्रणामा ❁ प्रभु प्रसाद धनु भंज्यउरामा ॥
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दोउ भाई ❁ अब जो उचितसो कहियगुसाईं ॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना ❁ रहा विवाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ विवाहू ❁ सुर नर नाग विदित सब काहू ॥
दोहा-तदपि जाइ तुम करहु अब, यथा वंश व्यवहार ॥
बूझि विप्रकुलवृद्धगुरु, वेद विदितआचार ॥ ३२५ ॥
दूत अवधपुर पठवहु जाई ❁ आनैं नृप दशरथहिं बुलाई ॥
मुदितराउ कहिभलेहिकृपाला ❁ पठये दूत अवध त्यहिकाला ॥
बहुरिमहाजन सकल बुलाये ❁ आइ सबनि सादर शिरनाये ॥
हाट बाट मन्दिर पुर वासा ❁ नगर सँवारहु चारिहु पासा ॥

१ कमल । २ सूर्य्य । ३ कामदेव । ४ चन्द्र । ५ कृतार्थ ।

हरषि चले निज निज गृह आये ❀ पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रचहु विचित्र वितानबनाई ❀ शिरधरि वचन चले सचुपाई ॥
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना ❀ जो वितानविधि कुशल सुजाना॥
विधिहि वन्दि तिन्ह कीन्ह अरंभा ❀ विरचे कनक कदली खंभा ॥
दोहा—हरित मणिनके पत्र फल, पद्मरागके फूल ॥
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिके भूल॥३२६॥
वेणु हरित मणि मय सब कीन्हे ❀ सरल सपर्ण परहिं नाहिंचीन्हे ॥
कनक कलित अहिबेलि बनाई ❀ लखि नहिं परे सवर्ण सुहाई ॥
त्यहिके रचि पचि बंध बनाये ❀ बिच बिच मुकता दाम सुहाये ॥
माणिकमरकत कुलिशपिरोजा ❀ चीरकोर पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहु रंग विरंगा ❀ गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खम्भन गढ़ि काढी ❀ मंगल द्रव्य लिये सब ठाढी ॥
चौकें भांति अनेक पुराये ❀ सिन्दुर मणिमय सहज सुहाये ॥
दोहा—सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किये नीलमणि कोर ॥
हेम बौर मरकत घंवरि, लसत पाटमय डोर ॥३२७॥
रचे रुचिर वर बन्दन वारे ❀ मनहु मनोभव फंद सँवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये ❀ ध्वज पताक पट चमरसुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमय नाना ❀ जाइनवरणि विचित्र विताना ॥
ज्यहि मण्डप दुलहिनि वैदेही ❀ सोवरणै असिमति कवि केही ॥
दूलह राम रूप गुणसागर ❀ सो वितान तिहुँ लोक उजागर ॥
जनक भवनकी शोभा जैसी ❀ गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
ज्यहितिरहुतित्यहिसमयानिहारी ❀ त्यहिलघुलगे भुवनदशचारी ॥
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ❀ सो विलोकि सुरनायकमोहा ॥
दोहा—बसैं नगर ज्यहि लक्षि करि, कपट नारि वर वेष॥
त्यहि पुरकी शोभा कहत, सकुच शारदा शेष ॥३२८॥
पहुँचे दूत रामपुर पावन ❀ हर्षे नगर विलोकि सुहावन ॥

१ सेवक। २ मंडप। ३ केला। ४ सुंदर। ५ बांस। ६ पानकीवेलि। ७ आंवकेपत्ते।
८ सोनेकाबौर। ९ छोटी २ आँबियोंकागुच्छा। १० रेशम। ११ कामदेव।
१२ मिथिलापुरी। १३ लक्ष्मीजी।

भूपद्वार तिन खबरि जनाई ❀ दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही ❀ मुदित महीप आप उठि लीन्ही ॥
वारि विलोचन बांचत पाती ❀ पुलकगात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर करवर चीठी ❀ रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरिधीर पत्रिका बांची ❀ हरषी सभा बात सुनि सांची ॥
खेलत रहे तहांसुधि पाई ❀ आये भरत सहित दोउभाई ॥
पूँछत अति सनेह सकुचाई ❀ तात कहाँते पाती आई ॥
दो०-कुशलप्राणप्रियबन्धुदोउ, अहहिंकहहु क्यहि देश ॥
सुनि सनेह साने वचन, बाँची बहुरि नरेश ॥ ३२९ ॥
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेह समात नगाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देखी ❀ सकलसभासुखलह्यउविशेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर वचन उचारे ॥
भैया कहहु कुशल दोउ बारे ❀ तुमनीके निज नयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा ❀ वय किशोर कौशिकमुनिसाथा ॥
पहिंचानेउ तो कहहु स्वभाऊ ❀ प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ ॥
जादिनते मुनि गये लिवाई ❀ तबते आजु सांचि सुधि पाई ॥
कहहु विदेह कवन विधि जाने ❀ सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने ॥
दोहा-सुनहु महीपति मुकुटमणि, तुम समधन्यनकोउ
रामलषणजिनकेतनय, विश्वविभूषणदोउ ॥ ३३० ॥
पूँछन योग न तनय तुम्हारे ❀ पुरुष सिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥
जिनके यश प्रतापके आगे ❀ शशिमलीन रवि शीतल लागे ॥
तिनकहँकहिय नाथ किमिचीन्हे ❀ देखियरविहिकिदीपक लीन्हे ॥
सीय स्वयम्बर भूप अनेका ❀ सिमिटे सुभट एकते एका ॥
शम्भु शरासन काहु न टारा ❀ हारे सकल भूप बरियारा ॥
तीन लोक महँ जे भटमानी ❀ सबकी शक्ति शम्भु धनु भानी ॥
सके उठाइ सुरासुर मेरू ❀ सोउहिय हारि गयउ करि फेरू ॥
ज्यहि कौतुक शिव शैल उठावा ❀ सोउ त्यहि सभा पराभव पावा ॥

दोहा—तहाँ राम रघुवंश मणि, सुनिय महा महिपाल॥
भंज्यउ चापप्रयास विनु, जिमि गजपंकजनाल ३३१॥
सुनिसरोष भृगुनायक आये ❀ बहुत भाँतितिनआँखिदिखाये॥
देखिरामबल निजधनु दीन्हा ❀ करि बहुविनयगमनवनकीन्हा॥
राजेतराम अतुलबल जैसे ❀ तेजनिधान लषण पुनि तैसे॥
कम्पहिं भूप विलोकत जाके ❀ जिमिगजहरिकिशोरके ताके॥
देव देखि तव बालक दोऊ ❀ अवनि आँखतर आवनकोऊ॥
दूत-वचन रचना प्रियलागी ❀ प्रेम प्रताप वीररस पागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे ❀ दूतहिं देन निछावर लागे॥
कहि अनीति तेहिं मूँदेउ काना ❀ धर्म विचारि सबहिं सुखमाना॥
दोहा—तब उठि भूप वशिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ॥
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ॥ ३३२॥
सुनिबोले मुनि अतिसुख पाई ❀ पुण्य पुरुष कहँ महिसुखछाई॥
जिमिसरिता सागरमहँ जाहीं ❀ यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमिसुखसम्पति विनहिबुलाये ❀ धर्मशील पहँ जाहिं सुभाये॥
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी ❀ तस पुनीत कौशल्या देवी॥
सुकृती तुम समान जग माहीं ❀ भयउ नहै कोउ होन्यउ नाहीं॥
तुमतेअधिक पुण्य बड़काके ❀ राजन राम सरिस सुत जाके॥
वीर विनीत धर्मव्रतधारी ❀ गुणसागर बालक वरचारी॥
तुमकहँ सर्वकाल कल्याना ❀ सजहु बरात बजाइ निशाना॥
दोहा—चलयहुवेगिसुनि गुरुवचन, भलेहिनाथशिरनाइ॥
भूपति गवने भवन तब, दूतन बास दिवाइ॥३३३॥
राजा सब रनिवास बुलाई ❀ जनकपत्रिका बाँचि सुनाई॥
सुनि सन्देश सकल हरषानी ❀ अपर कथा सब भूप बखानी॥
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी ❀ मनहुँ शिखिनँ सुनि वारिदवानी॥
मुदित अशीश देहिं गुरुनारी ❀ बारहिं बार मगन महतारी॥

१ परशुराम। २ शोभित। ३ सिंहकाबच्चा। ४ पृथ्वी। ५नदियाँ। ६इच्छा।७मोर।८बादल।

लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती ❁ हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषणकी कीरति करणी ❁ बारहिं बार भूप वर बरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये ❁ रानिन तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनन्द समेता ❁ चले विप्र वर आशिष देता ॥
सो०-याचक लियेहँकारि, दीन्हनिछावरिकोटिविधि॥
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थके ॥ ३७ ॥
कहत चले पहिरे पट नाना ❁ हरषि हने गहगहे निशाना ॥
समाचार सब लोगन पाये ❁ लागे घर घर होन वधाये ॥
भुवन चारिदश भयउ उछाहू ❁ जनकसुता रघुवीर विवाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे ❁ मग गृह गली सँवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❁ रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई ❁ मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर[१] चारू ❁ छाये परम विचित्र बजारू ॥
कनककलशतोरण मणिजाला ❁ हरद दूब दधि अक्षत माला ॥
दोहा-मंगल मय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ॥
बीथी सींची चतुर सब, चौके चारु पुराइ ॥ ३३४ ॥
जहँतहँ यूथयूथ मिलि भामिनि ❁ सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि[२]॥
विधु बदनी[३] मृगशावकलोचनि[४] ❁ निजस्वरूपरतिमानविमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल बानी ❁ सुनि कलरव कलकंठ लजानी॥
भूपभवनकिमि जाइ बखाना ❁ विश्व विमोहन रचेउ विताना ॥
मंगल द्रव्य मनोहर नाना ❁ राजत बाजत विपुल निशाना ॥
कतहुँ विरद बन्दी उच्चरहीं ❁ कतहुँ वेदध्वनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता ❁ लैलै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा ❁ मानहुँ उमँगिचला चहुँ ओरा ॥
दोहा-शोभा दशरथ भवनकी, कोकवि बरणै पार ॥
जहाँसकलसुरशीशमणि,राम लीन्ह अवतार॥३३५॥

१ सोनेकेतारोंसेरचेहुयेवस्त्रकिंतुचमर । २ सोलहोंशृंगार। ३ चन्द्रमुखी।
४ मृगकेबच्चोंके ऐसेनेत्रवाली ।

भूप भरत पुनि लये बुलाई ❀ हय गय स्यन्दन साजहु जाई ॥
चलहु वेगि रघुवीर बराता ❀ सुनत पुलक पूरे द्वउ भ्राता ॥
भरत सकल सांहनी बुलाये ❀ आयसुदीन्ह मुदित उठिधाये ॥
रचिरुचितुरँगसाज तिनसाजे ❀ वर्ण वर्ण वरवाजि विराजे ॥
सुभग सकल सुठिचंचल करणी ❀ अयजिमिजरतधरतपगुधरणी ॥
नानाभाँति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवन जनु चहत उड़ाने ॥
तिन पर छयल भये असवारा ❀ भरत सरिस सब राजकुमारा ॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी ❀ करशर चाप तूण कटिभारी ॥

दोहा–छैरे छबीले छयल सब, शूर सुजान नवीन ॥
युग पदचर असवार प्रति, जेअसिकलाप्रवीन ॥ ३३६ ॥

बांधे विरद वीर रण गाढे ❀ निकसि भये पुरबाहरठाढे ॥
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना ❀ हर्षहिं ध्वनिसुनिपणवनिशाना ॥
रथ सारँथिन विचित्र बनाये ❀ ध्वज पताक मणि भूषणछाये ॥
चमरचारु किंकिणिध्वनिकरहीं ❀ भानु यान शोभा अपहरहीं ॥
श्यामकर्ण अगणित हय होते ❀ तेतिन्ह रथन सारथिनजोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं ❀ जिनहिं विलोकत मुनिमनमोहैं ॥
जेजलचलहिं थलहिंकी नाई ❀ टाप न बूड वेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साजसजाई ❀ रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दोहा–चढि चढि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात ॥
होतशकुनसुन्दरसुखद, जोज्यहिकारजजात ॥ ३३७ ॥

कलितकरिवरन परी अँबारी ❀ कहिनजाइ ज्यहिभाँतिसँवारी ॥
चले मत्तगज घण्ट विराजे ❀ मनहु सुभग सावन घन गाजे ॥
वाहनअपर अनेक विधाना ❀ शिबिका सुभग सुखासन याना ॥
तिन्हचढ़ि चले विप्र वर बृन्दा ❀ जनु तनु धरे सकल श्रुतिछन्दा ॥
मागध सूत बंदि गुणगायक ❀ चले यानचढिजोज्यहिलायक ॥
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती ❀ चले वस्तु भरि अगणितभाँती ॥

१ दरोगा। २ पतले। ३ सुन्दर। ४ तरवारचलानेमें चतुर। ५ ढोल। ६ नक्कारा। ७ रथ हांकनेवाले। ८ हाथी। ९ बादल। १० पालकी। ११ रथ। १२ खच्चर। १३ बैल।

कोटिन काँवरि चले कहारा ❀ विविध वस्तु को वरणै पारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई ❀ निज निज साज समाज बनाई ॥
दोहा-सबके उर निर्भय हरष, पूरित पुलक शरीर ॥
कबहिं देखिहैं नयनभरि, रामलषण दोउवीर ॥ ३३८ ॥
गर्जहिं गजघण्टा ध्वनिघोरा ❀ रथ रव बाजि हींस चहुँ ओरा ॥
निदरि घनहिं घूमरहिं निशाना ❀ निज पराव कछु सुनिय न काना ॥
महाभीर भूपतिके द्वारे ❀ रज हुइजाइ पषाणपँवारे ॥
चढीं अटारिन देखहिं नारी ❀ लिये आरती मंगलथारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अति अनन्द नहिं जाइ बखाना ॥
तब सुमन्त दुइस्यन्दनसाजी ❀ जोते रवि हय निन्दक बाजी ॥
दोउरथ रुचिर भूपपहँ आने ❀ नहिं शारद पति जाहि बखाने ॥
राजसमाज एकरथ भ्राजा ❀ दूसर तेज पुंज अति राजा ॥
दोहा-त्यहि रथ रुचिरवशिष्ठ कहँ, हरषिचढाइ नरेश ॥
आपु चढेउस्यंदनसुमिरि, हर गुरु गौरिगणेश ॥ ३३९ ॥
सहित वशिष्ठ सोह नृपकैसे ❀ सुरगुरु संग पुरन्दर जैसे ॥
करि कुलरीति वेद विधि राऊ ❀ देखि सबहिं सब भाँतिबनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई ❀ चले महीपति शंख बजाई ॥
हर्षे विबुध विलोकि बराता ❀ वर्षहिं सुमन सुमंगलदाता ॥
भयउ कोलाहल हय गजगाजे ❀ व्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घण्ट घंटि ध्वनि बरणिनजाई ❀ सरौं करहिं पायक फहराई ॥
करहिंविदूषक कौतुक नाना ❀ हास कुशल कलगान सुजाना ॥
दोहा-तुरँगनचावहिं कुँवर वर, अंकनि मृदँग निशान ॥
नागरनटचितवहिंचकित, डिगहिनतालविधान ३४०
बनै ७न वर्णत बनी बराता ❀ होइँ शकुन सुन्दर शुभदाता ॥
चारा चार्ष वाम दिशिलेई ❀ मनहु सकल मंगल कहि देई ॥

१ पत्थर। २ रथ। ३ घोडे। ४ सुंदर। ५ वृहस्पति। ६ इन्द्र। ७ चतुरनट। ८ नीलकण्ठ।

दाहिन काग सुखेत सुहावा ❀ नकुल दरश सब काहुनपावा ॥
सानुकूल बह त्रिविध बयारी ❀ सघट सवाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरिफिरिदरशदिखावा ❀ सुरभीसन्मुख शिशुहिपिआवा॥
मृगमालादाहिन दिशि आई ❀ मंगल गण जनु दीन दिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी ❀ श्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सन्मुख आयउ दधि अरु मीनाँ ❀ कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥

दोहा-मंगलमय कल्याण मय, अभिमत फल दातार॥
जनु सब साँचे होन हित, भये शकुन इकबार॥३४१॥

मंगल शकुन सुगम सबताके ❀ सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके ॥
राम सरिस वर दुलहिनिसीता ❀ समधी दशरथ जनकपुनीता ॥
सुनि असव्याह शकुन सब नाचे ❀ अबकीन्हे विरंचि हम साँचे ॥
इहिविधि कीन्ह बरात पयाना ❀ हय गज गाजहिं हनहिंनिशाना॥
आवतजानि भानुकुल केतू ❀ सरितन जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच वर बास बनाये ❀ सुरपुर सरिस सम्पदा छाये ॥
अशन शयन वरवसन सुहाये ❀ पावहिं सब निजनिजमनभाये॥
नितनूतनलखि सुख अनुकूला ❀ सकल बरातिन मन्दिर भूला ॥

दोहा-आवत जानि बरात वर, सुनि गहगहे निशान ॥
सजि गजरथ पदचर तुरँग, लेन चले अगवान॥३४२॥

कनककलश कल कोपर थारा ❀ भाजनललित अनेकप्रकारा ॥
भरेसुधासम सब पकवाना ❀ भाँति भाँति नहिंजाहिं बखाना॥
फल अनेक वरवस्तु सुहाई ❀ हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषण वसन महामणि नाना ❀ खग मृगहय गज बहुविधियाना॥
मंगल शकुन सुगन्ध सुहाये ❀ बहुत भाँति महिपालपठाये ॥
दधि चिवरा उपहार अपारा ❀ भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता ❀ उर आनन्द पुलक भर गाता ॥
देखिबनाव सहित अगवाना ❀ मुदित बरातिन हने निशाना ॥

१ लोखरी।२ गाय। ३हरिणोंकी पंक्ति। ४ मछली। ५ पुल। ६ भोजन। ७ नवीन। ८ झारी। ९ अमृत। १० राजाजनक। ११ फलाहारीवस्तु।

दोहा–हरषि परस्परमिलन हित, कछुक चले बगमेल ॥
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलत विहाय सुबेल॥३४३॥

बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं ❀ मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं ॥
वस्तुसकल राखी नृपआगे ❀ विनयकीन्हतिन्ह अतिअनुरागे॥
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा ❀ भइ बखशीश याचकन दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❀ जनवासे कहँ चलेलिवाई ॥
वसन विचित्र पाँवडे परहीं ❀ नृप दशरथ तापर पगधरहीं ॥
देखि धनेद[1] धनमद परिहरहीं ❀ बरषि सुमन सुर जयजयकरहीं ॥
अतिसुन्दर दीन्ह्यउजनवासा ❀ जहँ सबकहँसबभाँति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई ❀ कछुनिज महिमा प्रगटि जनाई॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि[2] बुलाई ❀ भूप पहुनई करन पठाई ॥

दोहा–सिय आयसुशिर सिद्धिधरि, गईजहां जनवास॥
लिये सम्पदा सकल सुख, सुरपुरभोगविलास३४४॥

निजनिज वास विलोकि बराती ❀ सुरसुखसकलसुलभसबभाँती ॥
विभवभेद[3] कछु काहुनजाना ❀ सकलजनककरकरहिंबखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी ❀ हर्षे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदय न अति आनन्द समाई ॥
सकुचत कहि नसकत गुरुपाहीं ❀ पितु दर्शन लालच मनमाहीं ॥
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी ❀ उपजा उर सन्तोष विशेषी ॥
हरषि बन्धु दोउ हृदयलगाये ❀ पुलक अंग लोचन जलछाये ॥
चले जहां दशरथ जनवासे ❀ मनहु सरोवर तक्यउ पियासे ॥

दोहा–भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत ॥
उठेहरषि सुख सिन्धु महँ, चले थाहसीलेत ॥ ३४५ ॥

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा ❀ बार बार पद रज धरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उरलाई ❀ दै अशीश पूँछी कुशलाई ॥
पुनि दण्डवत करत दोउभाई ❀ देखि नृपति उरसुख न समाई ॥

१ कुबेर । २सिद्धि ८ मकारकी–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, प्रभुत्व । ३ सम्पदाकाभेद ।

सुत हिय लाइ दुसह दुखमेंटे ❀ मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥
पुनि वशिष्ठ पद शिरतिननाये ❀ प्रेम मुदित मुनिवर उरलाये ॥
विप्र वृन्द वंदे दोउ भाई ❀ मनभावति अशीश तिन्ह पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा ❀ लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

दोहा-पुरजन परिजन जाति जन, याचक मंत्री मीत ॥
मिलेयथाविधिसबहिंप्रभु, परमकृपालुविनीत ॥३४६॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❀ प्रीति कि रीति न जाइ बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुतचारी ❀ जनु धन धर्मादिकतनुधारी ॥
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी ❀ मुदित नगर नरनारि विशेषी ॥
सुमनवरषि सुर हनहिंनिशाना ❀ नाकनटी[1] नाचहिं करिगाना ॥
सतानन्द अरु विप्र सचिवगन ❀ मागध सूत विदुष बन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना ❀ आयसु माँगि चले अगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई ❀ ताते पुर प्रमोद[2] अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द[3] लोग सब लहहीं ❀ बढहुदिवसनिशिविधिसनकहहीं ॥

दोहा-राम सीय शोभाअवधि, सुकृतअवधिदोउराज ॥
जहँतहँपुरजनकहहिंअस, मिलिनरनारिसमाज ३४७

जनक सुकृत मूरति वैदेही ❀ दशरथ सुकृतरामधरि देही ॥
इनसम काहु न शिव आराधे[4] ❀ काहु न इन समान फल साधे ॥
इनसमकोउनभयउ जगमाहीं ❀ है नहिं कतहूँ होन्यहु नाहीं ॥
हमसबसकल सुकृतकी राशी ❀ भये जगजन्मिजनकपुरवासी ॥
जिन जानकी रामछबि[5] देखी ❀ कोसुकृती हमसरिस विशेषी ॥
पुनि देखब रघुवीर विवाहू ❀ लेब भलीविधि लोचन लाहू[6] ॥
कहहिं परस्पर कोकिलवयनी ❀ यह विवाह बड़लाहुसुनयनी ॥
बड़े भाग्य विधि बात बनाई ❀ नयन अतिथि होइहैं दोउभाई ॥

दोहा-बारहिं बार सनेह वश, जनक बुलाउब सीय ॥

१ अप्सरा। २ आनंद। ३ ब्रह्म। ४ सेवा-पूजा। ५शोभा। ६ नेत्रोंकालाभ।

लेनआइहहिंबन्धुदोउ, कोटिकामकमनीय ॥ ३४८ ॥
विविध भाँति होइहि पहुनाई ❀ प्रिय न काहिअससासुरमाई ॥
तब तब रामलषणहिंनिहारी ❀ होइहहिं सब पुरलोगउखारी ॥
सखि जस राम लषणकर जोटा ❀ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
श्याम गौर सब अंग सुहाये ❀ ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
कहा एक मैं आजु निहारे ❀ जनु विरंचि निजहाथ सँवारे ॥
भरत राम एकहि अनुहारी ❀ सहसा लखि नसकहिंनरनारी ॥
लषण शत्रुसूदन इक रूपा ❀ नख शिख ते सब अंग अनूपा ॥
मनभावहिं सुख वरणि नजाहीं ❀ उपमाकहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥
छं०-उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुँ कविकोविदकहैं
बलविनय विद्या शील शोभा सिन्धु इन समयेअहैं ॥
पुर नारिसकलपसारिअंचलविधिहिविनयसुनावहीं॥
व्याहिय सुचारिउभाइ इहिपुरहमसुमंगलगावहीं ३५
सो०-कहहिंपरस्परनारि, वारि विलोचन पुलकतनु ॥
सखि सबकरवपुरारि,पुण्यपयोनिधि भूपदोउ ॥ ३४८ ॥
इहिविधि सकलमनोरथकरहीं ❀ आनँदउमँगिउमँगिउरभरहीं ॥
जे नृप सीय स्वयम्वर आये ❀ देखि बन्धु सब तिन सुखपाये॥
कहत रामयश विशद विशाला ❀ निज निज भवनगये महिपाला॥
गयेबीति कछुदिन यहिभाँती ❀ प्रमुदित पुरजन सकलबराती ॥
मंगलमूल लगनदिन आवा ❀ हिमऋतु अगहनमास सुहावा ॥
ग्रह तिथि नखत योगवरवारू ❀ लगनशोधिविधिकीन्हविचारू॥
पठैदीन नारद कर सोई ❀ गुणीजनकके गणकन जोई ॥
सुनी सकल लोगन यहबाता ❀ कहहिंज्योतिषीअहहिंविधाता ॥
दोहा-धेनु धूलि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल ॥
विप्रन कहउविदेहसन, जानिसमयअनुकूल ॥ ३४९ ॥
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ❀ अब विलम्ब करकारण काहा ॥

१ भीम । २ शत्रुघ्न । ३ पण्डित । ४ समुद्र । ५ निर्मल । ६ गृह । ७ ज्योतिषी ।

सतानंद तब सचिव बुलाये ❀ मंगलकलश साजि सबलाये ॥
शंख निशान पणव बहु बाजे ❀ मंगलकलश शकुन सब साजे ॥
सुभगसुआसिनि गावहिंगीता ❀ करहिं वेदध्वनि विप्र पुनीता ॥
लेन चले सादर इहिभाँती ❀ गये जहाँ जनवास बराती ॥
कोशलपति कर देखि समाजू ❀ अति लघु लगे तिनहिं सुरराजू ॥
भयउ समय अब धारिय पाऊ ❀ यह सुनिपरा निशानन घाऊ ॥
गुरुहिपूँछिकरि कुलविधिराजा ❀ चले संग मुनि साधु समाजा ॥

दोहा—भाग्यविभव अवधेश कर, देखि देव ब्रह्मादि ॥
लगे सराहन सहसमुख, जानिजन्मनिजवादि॥३५०

सुरन सुमंगल अवसर जाना ❀ वर्षहिं सुमन बजाइ निशाना ॥
शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा ❀ चढे विमानन नाना यूथा ॥
प्रेम पुलक तनु हृदय उछाहू ❀ चले विलोकन राम विवाहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे ❀ निजनिज लोक सबहिं लघुलागे॥
चितवहिंचकितविलोकिविताना ❀ रचनासकल अलौकिकनाना ॥
नगर नारि नर रूप निधाना ❀ सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सब सुर सुर नारी ❀ भयेनखत जनु विधु उजियारी ॥
विधिहिभयउ आश्चर्य विशेषी ❀ निजकरणी कछु कतहुँ नदेखी॥

दोहा-शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु ॥
हृदय विचारहु धीर धरि, सियरघुवीरविवाहु॥३५१॥

जिनकर नाम लेत जगमाहीं ❀ सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी ❀ ते सिय राम कहेउ कामारी ॥
यहिविधि शंभु सुरन समुझावा ❀ पुनि आगे वर वसहं चलावा ॥
देवन देखेउ दशरथ जाता ❀ महामोदमन पुलकित गाता ॥
साधु समाज संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिंसुरसेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥
मरकत कनक वरण वर जोरी ❀ देखि सुरन भइ प्रीति नथोरी ॥

१मंत्री । २ पुरकीलड़कियां । ३ छोटे । ४ इन्द्र । ५ बाजा । ६ यूथा । ७ ब्रह्मा ।
८ महादेव । ९ श्रेष्ठबैल-नन्दी । १० चारमकारकेमोक्ष । ११ नीलमणि ।

पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे ❀ नृपहि सराहि सुमन तिन्हवरषे ॥
दोहा-रामरूप नखशिख सुभग, बारहिं बारनिहारि ॥
पुलक गात लोचनसजल, उमासमेत पुरारि ॥ ३५२ ॥
केकि कण्ठद्युति श्यामल अंगा ❀ तडितविनिन्दकवसनसुरंगा ॥
ब्याहविभूषण विविध बनाये ❀ मंगलमय सब भाँति सुहाये ॥
शरदविमलविधुवदन सुहावन ❀ नयननवल राजीवलजावन ॥
सकल अलौकिक सुन्दरताई ❀ कहिनजाय मनहींमन भाई ॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुँवर बरबाजि नचावहिं ❀ वंश प्रशंसक बिरद सुनावहिं ॥
जेहितुरंग पर राम बिराजे ❀ गतिबिलोकि खगनायक लाजे ॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ❀ बाजि वेष जनु कामबनावा ॥
छंद-जनुबाजिवेषबनाइमनसिजराम हितअतिसोहहीं
अपनवय बपु रूप गुण गति सकल भुवन विमोहहीं ॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकलेहिलगे ॥
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे ॥
दोहा-प्रभुमनसहिंलवलीनमन, चलतबाजिछबिपाव ॥
भूषण उडुगणतडितघन, जनुबरबरहिंनचाव ॥ ३५३ ॥
ज्यहि बरबाजि राम असवारा ❀ त्यहि शारदहु न बरणै पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे ❀ नयन पंचदश अति प्रिय लागे ॥
हरिहित सहित राम जब जोहे ❀ रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि राम छवि विधि हरषाने ❀ आठहि नयनजानिपछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू ❀ विधिते डेवढे लोचन लाहू ॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना ❀ गौतमशाप परमहित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं ❀ आजु पुरन्दर सम कोउ नाहीं ॥
मुदित देवगण रामहिं देखी ❀ नृपसमाज दुहुँ हर्ष विशेषी ॥

१मोर। २ कांति-प्रकाश। ३बिजुली। ४कामदेव। ५अवस्था। ६देह। ७ इन्द्र। ८प्रसन्नयुत।

छंद-हरिगीतिका ।

अति हर्ष राजसमाजदुहुँदिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी ॥
वरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी ॥
इहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानीसुआसिनिबोलिपरिछनहेतुमंगलसाजहीं ॥ ३७ ॥

दोहा-सजि आरतीअनेक विधि, मंगलसकलसँवारि ॥
चलींमुदितपरिछनकरन, गजगामिनिवरनारि ३५४ ॥

विधुवदनी मृगशावकलोचनि ❀ सबनिजतनुछबिरतिमदमोचनि ॥
पहिरे वरण वरण वर चीरा ❀ सकल विभूषण सजे शरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये ❀ करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं ❀ चाल विलोकिकामगजलाजहिं ॥
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा ❀ नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
शची शारदा रमा भवानी ❀ जेसुर तिय शुचिसहजसयानी ॥
कपटनारि वरवेष बनाई ❀ मिलीं सकल रनिवासहि आई ॥
करहिं गान कलमंगल वानी ❀ हरष विवश सब काहु न जानी ॥

छंद-कोजान केहिआनन्द वश सबब्रह्मवरपरिछनचलीं
कलगान मधुरनिशान वर्षहिंसुमनसुर शोभाभलीं ॥
आनन्दकन्द विलोकिदूलहसकलहियहर्षितभईं ॥
अम्भोजअम्बकअम्बुउमँगिसुअंगपुलकावलिछईं ३८ ॥

दोहा-जोसुखभा सिय मातु मन देखि राम वर वेष ॥
सो न सकहि कहि कल्पशत, सहस शारदाशेष ॥ ३५५ ॥

नयन नीर हटि मंगल जानी ❀ परिछन करहिं मुदितमनरानी ॥
वेदविहित अरु कुलव्यवहारू ❀ कीन्हभलीविधिसब परिचारू ॥
पंचशब्द ध्वनि मंगल गाना ❀ पट पाँवडे परहिं विधि नाना ॥
करि आरती अर्घ्य तिन दीन्हा ❀ राम गमन मंडप तब कीन्हा ॥
दशरथसहित समाज विराजे ❀ विभँवविलोकिलोकपति लाजे ॥

१ नाशकर्त्ता । २ कोकिल । ३ कमल । ४ नेत्र । ५ जल । ६ तत, वितत, अनघ, घन, सुकिया । ७ ऐश्वर्य । ८ इन्द्र-वसु इत्यादि ।

समय समय सुर वर्षहिंफूला ❀ शांति पढहिं महिसुर अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपन पर कछु सुने न कोई ॥
इहिविधि राम मंडपहि आये ❀ अर्घ्यदेइ आसन बैठाये ॥
छंद–बैठारि आसन आरतीकरि निरखि वर सुखपावहीं
मणि वसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं ॥
अवलोकिरविकुलकमलरविछविसफलजीवनलेखहीं
दोहा–नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरिपाइ ॥
मुदित अशीषहिं नाइशिर, हर्ष न हृदय समाइ ३५६॥
मिले जनक दशरथ अतिप्रीती ❀ करिवैदिक लौकिक सबरीती ॥
मिलत यथादोउ राजविराजे ❀ उपमा खोजिखोजि कविलाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हियमानी ❀ इन सम यह उपमा उर आनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे ❀ सुमन वरषि यश गावन लागे ॥
जग विरंचि उपजावा जबते ❀ देखे सुने व्याह बहु तबते ॥
सकलभाँति समसाज समाजू ❀ सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा सुनि सुन्दर साँची ❀ प्रीति अलौकिकदुहुँ दिशिमाँची॥
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये ❀ सादर जनक मण्डपहि ल्याये ॥
छं०–मंडपविलोकिविचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे॥
निजपाणि जनकसुजान सबकहँआनिसिंहासनधरे ॥
कुलइष्ट सरिस वशिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही ॥
कौशिकहि पूजतपरमप्रीति कि रीतितौ न परैकही ४०
दोहा–वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश ॥
दियेदिव्यआसनसबहिं, सबसनलहीअशीश॥ ३५७॥
बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा ❀ जानि ईश सम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरिकर विनय बड़ाई ❀ कहि निज भाग्य विभवबहुताई॥
पूजे भूपति सकल बराती ❀ समधी सम सादर सब भाँती ॥

१ ब्राह्मण । २ वाणी । ३ विचित्र ।

आसन उचित दिये सबकाहू ❀ कहौं कहा मुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी ❀ दान मान विनती बरवानी ॥
विधि हरि हर दिशपतिदिनराऊ ❀ जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ ॥
कपट विप्रवर वेष बनाये ❀ कौतुक देखहिं अति सचुपाये ॥
पूजे जनक देव सम जाने ❀ दिये सुआसन बिन पहिंचाने ॥
छं०-पहिंचानकोक्यहिजानसबहिअपानसुधिभोरीभई
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ॥
अवलोकि सरलस्वभावप्रभुकोविबुधमनप्रमुदितभये
दोहा-रामचन्द्र मुखचन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर॥
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ॥ ३५८॥
समय विलोकि वशिष्ठबुलाये ❀ सादर सतानन्द मुनि आये ॥
वेगि कुँवरि अब आनँहु जाई ❀ चले मुदित मन आयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिनसमेत सयानी ॥
विप्रवधू कुलवृद्ध बुलाई ❀ करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारि वेष जे सुर बर वामा ❀ सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा ॥
तिनहिं देखि सुख पावहिंनारी ❀ विन पहिचान प्राणते प्यारी ॥
बार बार सन्मानहिं रानी ❀ उमा रमा शारद सम जानी ॥
सीय सँवारि समाज बनाई ❀ मुदित मण्डपहि चलीं लिवाई ॥
छंद-चलिल्याइसीतहिसखीसादरसजिसुमंगलभामिनी
नव सप्त साजे सुन्दरी सबमत्त कुंजर गामिनी ॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर बाजहीं४२॥
दोहा-सोहति वनिता वृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय॥
छबि ललनागनमध्यजनु, सुषमाअतिकमनीय३५९॥

१ स्त्रियोंके झुण्डमें। २ शोभा।

सिय सुन्दरता वरणि नजाई ❋ लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवत देखि वरातिन सीता ❋ रूपराशि सव भाँति पुनीता ॥
सबहिं मनहिं मन कीन्हप्रणामा ❋ देखि राम भये पूरण कामा ॥
हरषे दशरथ सुतन समेता ❋ कहि नजाइ उर आनँद जेता ॥
सुरप्रणाम करि वर्षहिं फूला ❋ मुनि अशीश ध्वनि मंगल मूला ॥
गान निशान कुलाहल भारी ❋ प्रेम प्रमोद नगर नर नारी ॥
इहिविधिसीय मण्डपहि आई ❋ प्रमुदित शान्ति पढहिं मुनिराई ॥
तेहिअवसर करि विधि व्यवहारू ❋ दुहुँ कुल गुरु सबकीनअचारू ॥
छंद-आचारकरि गुरु गौरिगणपतिमुदितविप्रपुजावहीं
सुर प्रकटि पूजा लेहिं देहिं अशीश अति सुखपावहीं ॥
मधुपर्क[1] मंगल द्रव्य[2] जो जेहि समय मुनि मनमें चहैं ॥
भरि कनक कोपर कलशसब करलियेपरिचारक[3]रहैं ॥
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादरकिये ॥
यहिभाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥
सिय राम अवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै ॥
मन बुद्धि वरवाणी अगोचर प्रकटकविकैसेकरै ॥ ४४ ॥
दोहा-होम समय तनुधरिअनल[4], अतिहित आहुतिलेहिं
विप्र वेष धरि वेद सब, कहि विवाह विधि देहिं ॥ ३६० ॥
सीयमातु किमिजाइ बखानी ❋ जनकपाटमहिषी जगजानी ॥
सुयश सुकृत सुख सुन्दर ताई ❋ सब समेटि विधि रची वनाई ॥
समय जानि मुनिवरनबुलाई ❋ सुनत सुवासिनि सादरल्याई ॥
जनकवामदिशि सोह सुनयना ❋ हिमगिरिसंग वनी जनुमयना ॥
कनककलश मणि कोपररूरे ❋ शुचि सुगन्ध मंगलजलपूरे ॥
निजकर मुदित राउ अरु रानी ❋ धरे रामके आगे आनी ॥
पढहिं वेद मुनि मंगल बानी ❋ गगन[5] सुमन[6] झरि अवसरजानी ॥

१ गोघृतमिश्रित-मिश्री । २ पूगीफल, पान, अक्षत, हरिद्रा रत्नादि अनेकद्रव्य । ३ शुचिसेवक । ४ अग्नि । ५ आकाश । ६ पुष्पवृष्टि ।

वर विलोकि दम्पति अनुरागे ❀ पाँय पुनीत पखारन लागे ॥
छंद-लागे पखारन पाँय पंकज प्रेमतनु पुलकावली ॥
नभनगरगाननिशानजयध्वनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली
जेपदसरोज मनोज अरिउर सर सदैव विराजहीं ॥
जेसुकृतसूरतिविमलतामनसकलकलिमलभ्राजहीं ॥
जेपरसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई ॥
मकरन्दजिनकोशम्भुशिरशुचिताअवधिसुरवरनई ॥
करिमधुपमनमुनियोगिजनजेहिसेइअभिमतगतिलहैं
तेपद पखारत भाग्य भाजनजनकजयजयसबकहैं ॥
वर कुँवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं॥
भयोपाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनँदभरैं
सुखमूलदूलह देखिदम्पति पुलकतनु हुलसैं हिये ॥
करिलोकवेदविधान कन्यादान नृप भूषणदिये॥४७॥
हिमवन्त जिमिगिरिजा महेशहिं हरिहिंश्रीसागरदई॥
तिमिजनकरामहिं सिय समर्पी विश्वकलकीरतिनई॥
किमि करैं विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति सांवरी ॥
करिहोमविधिवतगाँठिजोरीहोनलागी भाँवरी ॥४८॥
दोहा-जयध्वनि वन्दी वेदध्वनि, मंगलगाननिशान ॥
सुनिहरषहिंवरषहिंविबुध,सुरतरुसुमनसुजान॥३६१॥
कुँवरि कुँवर कल भाँवरि देहीं ❀ नयन लाभ सब सादर लेहीं ॥
जाइ न वरणि मनोहर जोरी ❀ जो उपमाकछु कहियसोथोरी ॥
राम सीय सुन्दर परिछाहीं ❀ जगमगाहिं मणि खंभन माहीं ॥
मनहुँमदनरति धरि बहु रूपा ❀ देखहिं राम विवाह अनूपा ॥
दरश लालसा सकुच न थोरी ❀ प्रकटत दुरत बहोरिबहोरी ॥

---

१ राजाजनक और सुनयना। २ महादेव । ३ वेदकी ऋचायें। ४ वशिष्ठ और सतानंद। ५ कल्पवृक्षके फूल।

भये मगन सब देखन हारे ❁ जनक समान अपान विसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भाँवरी फेरी ❁ नेगं सहित सब रीति निवेरी ॥
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं ❁ शोभाकहि नजात विधिकेहीं ॥
अरुणपराग जलजभरि नीके ❁ शशिहिंभूपिअँहिलोभअमीके ॥
बहुरि वशिष्ठ दीनअनुशासन ❁ वर दुलहिनि वैठे इकआसन ॥

छंद-बैठेबरासन रामजानकि मुदितमन दशरथभये॥
तनु पुलकि पुनिपुनि देखिअपनेसुकृतसुरतरुफलनये॥
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा॥
केहि भाँति वरणि सिरात रसना एकमुख मंगलमहा ॥
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारिके ॥
माण्डवी श्रुतिकीर्ति उर्म्मिला कुँवरि लईं हँकारिके ॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मई ॥
सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिदई॥५०॥
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै ॥
सो जनक दीन्हीव्याहिलषणहिसकलविधि सनमानिकै॥
ज्यहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥५१॥
अनुरूप वर दुलहिनिपरस्परलखि सकुचि हियहर्षहीं॥
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर वरण वर सह एक मण्डप राजहीं ॥
जनुजीवअरुचारिउअवस्थाविभुनसहितविराजहीं॥५२॥
दोहा-मुदितअवधपति सकलसुत,वधुन समेत निहारि॥
जनुपायेमहिपालमणि,क्रियँनसहितफलचारि ॥३६२॥
जसरघुवीर ब्याह विधिवरणी ❁ सकलकुँवर व्याहेत्यहिकरणी ॥

१ निछावर । २ लाकरज । ३ कमल । ४ सर्प । ५ अमृत । ६ जनकजीके छोटे भाईकी पुत्री मांडवी । ७ भक्ति, तपस्या, सेवा, श्रद्धा । ८ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ❀ रहा कनकमणि मण्डप पूरी ॥
कम्बेल बसन विचित्र पेटोरे ❀ भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥
गज रथ तुरँग दास अरु दासी ❀ धेनु अलंकृत कामदुहासी ॥
वस्तुअनेककरिय किमिलेखा ❀ कहिनजाइ जानहिंजिनदेखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❀ लीन्हअवधपति सब सुखमाने ॥
दीन्हयाचकन जोज्यहि भावा ❀ उबरासो जनवासहिं आवा ॥
तब करजोरि जनक मृदुवानी ❀ बोले सब बरात सनमानी ॥
छंद-सनमानिसकलबरातसादरदानविनयबड़ायकै ॥
प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै ॥
शिरनाइदेव मनाइ सबसन कहत करसंपुट किये ॥
सुरसाधुचाहतभावसिन्धुकितोषजलअंजलिदियेप५३ ॥
करजोरि जनक बहोरि बन्धुसमेत कोशलरायसों ॥
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों ॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये ॥
यहराज साज समेतसेवकजानिबी बिनुगथलये॥५४ ॥
ये दारिकाँ परिचारिकाँ करि पालबी करुणामयी ॥
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुतहौं ढीठो दयी ॥
पुनिभानुकुलभूषणसकलसन्मानविधिसमधीकिये ॥
कहिजातनहिं विनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहिये ॥५५ ॥
वृन्दारकाँ गण सुमन बरषहिं राउ जनवासहिं चले ॥
दुन्दुभीध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसुपाइकै ॥
दूलहदुलहिनिनसहितसुन्दरि चलींकुहबरँल्याइकै ॥
दो०-पुनि पुनिरामहिचितवसिय, सकुचतिमनसकुचैन

१ ऊनवस्त्र । २ रेशमी । ३ लड़कियां । ४ सेवकिन । ५ राजादशरथ । ६ देवता । ७ थाप ।

हरति मनोहर मीन छबि, प्रेमपियासे नैन ॥ ३६३ ॥
श्यामशरीर स्वभावसुहावन ❀ शोभा कोटिमनोजलजावन ॥
जावकयुत पदकमल सुहाये ❀ मुनिमन मधुपै रहत जहँ छाये॥
पीत पुनीत मनोहर धोती ❀ हरत बालरवि दामिनि ज्योती ॥
कलकिंकिणिकटिसूत्र मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
पीत जनेउ महाछवि देई ❀ कर मुद्रिका चोरि चितलेई ॥
सोहत व्याहसाज सब साजे ❀ उर आयत सब भूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती ❀ दुहुँ आचरन्हलगे मणिमोती ॥
नयनकमल कलकुंडल काना ❀ वदनसकलसौंदर्य्य निधाना ॥
सुन्दर भृकुटि मनोहरनासा ❀ भालतिलकशुचिरुचिरनिवासा॥
सोहत मौर मनोहर माथे ❀ मंगलमय मुक्तामणि गाथे ॥
छंद-गाथेमहामणि मौर मंजुल अंग सबचित चोरहीं ॥
पुरनारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखिछबि तृणतोरहीं
मणिवसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ॥
सुरसुमनवर्षहिं सूतमागधवन्दि सुयशसुनावहीं॥५७॥
कुहबरहिं आने कुँवर कुँवरिसुआसिनिन्ह सुखपाइकै॥
अति प्रीति लौकिकरीतिलागीं करन मंगल गाइकै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन शारद कहैं ॥
रनिवासहासविलासरसवशजन्मकोफलसबलहैं॥५८॥
निजपाणिमणिमहँदेखिप्रतिमूरतिस्वरूपनिधानकी ॥
चालतिनभुजवल्ली विलोकति विरहवशभइजानकी ॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम नजाइ कहि जानहिं अली ॥
वरकुँवरिसुन्दरसकलसखिनलिवाइजनवासहिंचली ॥
त्यहिसमय सुनिय अशीश जहँ तहँ नगर नभ आनँदमहा

१ महावरसहित । २ भ्रमर । ३ अतीचौड़ी । ४ छोर । ५ स्थान ।
६ रंगरंगकेअमोलचिन्तामणि । ७ अँगुली ।

चिरजियहुजोरीचारुचारिउमुदितमनसबहीकहा ॥
योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेव विलोकिप्रभुदुन्दुभिहनी ॥
चलेहरषिवरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी
दोहा–सहित बधूटिन कुँवर सब, तब आये पितुपास ॥
शोभामंगलमोदभरि,उमँग्यउजनुजनवास ॥३६४॥
पुनि जेवनार भयउ बहुभाँती ❀ पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पाँवडे वसन अनूपा ❀ सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सबके पाँव पखारे ❀ यथायोग्य पीढ़न बैठारे ॥
धोये जनक अवधपति चरणा ❀ शील सनेह जाहि नहिं वरणा ॥
बहुरि रामपदपंकज धोये ❀ जे हरहृदय कमलमहँ गोये ॥
तीनौं भाइ राम सम जानी ❀ धोये चरण जनक निज पानी ॥
आसन उचित सबहिंनृपदीन्हे ❀ बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे ❀ कनक कील मणिपरण सँवारे ॥
दोहा–सूपोदन सुरभीसरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत ॥
क्षण महँ सबके परसिगे,चतुर सुआर विनीत॥३६५॥
पंच कौर करि जेंवनलागे ❀ गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भाँति अनेक परे पकवाना ❀ सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना ॥
परुसनलगे सुआर सुजाना ❀ व्यंजन विविध नामको जाना ॥
चारि भाँति भोजन विधिगाई ❀ एक एक विधि वरणि नजाई ॥
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती ❀ एकएकरस अगणित भाँती ॥
जेवत देहिं मधुर ध्वनि गारी ❀ लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि विराजा ❀ हँसतराउ सुनि सहित समाजा ॥
यहि विधि सबही भोजन कीन्हा ❀ आदरसहित आचमनलीन्हा ॥
दोहा–देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज ॥
जनवासे गवने मुदित,सकल भूप शिरताज ॥ ३६६ ॥

१ स्त्रियोंसमेत। २ रसोईदारोंको। ३ दालभात। ४ गोघृत। ५ भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य,। ६ खट्टा मिट्ठा, चरपरा, कषाय-कटु, क्षार,।

अथ कथा क्षेपक।

(राम कलेवा.)

छंद–भोर भये अपने कुमारको जनक वेगि बुलवाये ॥
सुनिकै पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू ॥
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवधनरेशू ॥
विनय सुनाय राय दशरथसों पाय रजाय सचेतू ॥
आनहु चारिउ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ॥
सखनसमेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा ॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ॥
मृदु मुसकात बतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरँगते मिथिलापतिके बारे ॥
चारिहु सुत युत अवधराजको सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुखनिधिलक्ष्मीनिधिकोलखि सखनसहितसतकारे ॥
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिक्षण सानुजनिरखिरामछबि सखनसहितसुखमाने ॥
लक्ष्मीनिधि मुखदरश पायकै रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि कर जोरि भूपसों कोमल बैन उचारे ॥
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदुवचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ॥
चारिहु कुँवर बुलाय वेगही बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगरकी जान तयारी सेवक सब सुख पागे ॥
निज निज प्रभुहि सँवारन लागे लै भूषण वर बागे ॥
रघुनंदन शिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी ॥
तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रुचि रुचि पैंजनि साधी ॥

दोहा-वरणि सकै को रामको, अनुपम दूलह वेष ॥
जेहि लखिशिवसनकादिको, रहत न तनुहि सरेष ॥

छंद-इमि सजि अनुज सहित रघुनंदन चारौं राजदुलारे ॥
बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन वसन सँवारे ॥
जे रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राणपियारे ॥
चढ़े तुरंग संगतेउ गमने राम रंग मतवारे ॥
रामवामदिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखनसहित तेउसोहैं ॥
चंचल बागे किये तुरँगकी बातें करत हँसोहैं ॥
जगवंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदनको वाजी ॥
ताको गुण छवि कहँ लौं वरणौं जोहि होत मन राजी ॥
जित रुख पावै तित पहुँचावै छन आवै छन जावै ॥
जमिजमिथमिथमिथरकिभूमिपर गतिनततिनदरशावै ॥
फाँदत चंचल चारौं चौकड़ि चपलहुके चख झाँपै ॥
भरत कुँवरको तुरँग रँगोलो वरणि जाय कहु कापै ॥
चंपा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये ॥
सब समाजके आगे निरतै मोर कुरंगलजाये ॥
जो कहुँ नेकहुँ हाथ उठावत कई हाथ उठि जातो ॥
बार बार चुचुकारि दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
लक्खी घोड़ा लषण लालको बाँको निपट चलाको ॥
उड़ि उड़ि जात वायुमंडलको परत न पग महिताको ॥
तरफराय उड़िजाय परतहै लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ॥
उचित विचार हँसे रघुवंशी रामहु मृदु मुसकाहीं ॥
तकि तुरंगकी चंचलताई लषणकि देखि चढ़ाई ॥
निमिवंशी रघुवंशी सिगरे ठगिसे रहे बिकाई ॥
राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहैं ॥
रीझि रीझि तहँ लषण लालको बारहिं बार सराहैं ॥
इमि मग होत विलास विविधविधिविपुलबाजनेबाजे ॥

सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
कोउतियनिरखि वदनकी सुखमा अतिसुखमहँसोंपागी ॥
भरी सनेह देह सुधि नाहीं राम रूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनुभूला ॥
फूला नैन मैन मन भूला लागि प्रीति को हूला ॥
कोउ घूँघट पट खोलि सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी ॥
देखत दूलह रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा—कोउ मूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुखपाग ॥
माधुरि मूरतिमें पगीं, निजमूरति सुख त्याग ॥

छंद—कोउ रघुनन्दन छवि विलोकिके बोली सुन सखि वैना ॥
राजकुँवर ये करन कलेऊ जात जनकके ऐना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारहु वेटा ॥
रँगभीने रघुवंशी छैला दशरथ राज दुलेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारो प्यारी जिन भरि नैन निहारे ॥
नतु दर्शन दुर्लभ दूलहके रविकुल प्राणपियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेशकि बेटी ॥
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति जिन जिन भुज भर भेंटी ॥
बोली अपर सखी सुन सजनी भली बात बनि आई ॥
हमहुँ चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हें हँसाई ॥
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भईं प्रेमवश वामा ॥
सुनत जात मुसकात अनुज युत कृपासिन्धु श्रीरामा ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सँवारे ॥
राजकुँवर रघुवंशिनके तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उत रजाय लहि सियामातुकी नगर सुवासिन नारी ॥
कंचन कलश सजे शिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर करले कंचन थारी ॥

परछन चलीं हेतु रघुवरको बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि रामछवि दृग आनँद जल बाढ़ी ॥
छकितरहीं वर वदन विलोकत चकित रहीं तहँ ठाढ़ी ॥
राम रूप रँगि गईं रँगीली लखि दूलह सुखसारा ॥
तन मन रह्यो सरेख न काहू को करै मंगलचारा ॥
प्रेम प्रयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ॥
परछन अली भली विधि कीन्हों रोंकि विलोचन वारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँगते चारिव कुँवर उतारे ॥
पाणिपकरि रघुनन्दनजीको भीतर महल सिधारे ॥
जहँ पिकवैनी सब सुखऐनी बैठि सुनैना रानी ॥
इन्द्रानीकी कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
चन्द्रमुखी चहुँ ओर विराजैं कोउ कर चमर चलावै ॥
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावै ॥
तेहि छन तहाँ गये रघुनन्दन मन फंदन वर वेषा ॥
देखत उठीं सकल रनिवासैं रह्यो न तनुहिं सरेषा ॥
करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाँय पखारे ॥
चारि रंग के चारि सिंहासन चारिउ वर बैठारे ॥
लखि छबि ऐना सासु सुनैना एक न पलक तजैना ॥
भूली चैना बोलि सकैना कहत बनैना वैना ॥
तकिजकिरही तनक नहिं डोलै मगन महा मुदमाहीं ॥
राम रूप रँगि गईं रँगीली आँसु बहै दृग जाहीं ॥
इमि तहँ दशा विलोकि सासुकी राम गुणत मन माहीं ॥
काहभयो यह आजु रानिको पूँछत भे सकुचाहीं ॥
चतुर सखी चित चरचि रामसों बोली मधुरी बानी ॥
यह तुम्हार गुणहै सब लालन और न कछु उर आनी ॥
सुनत वचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी ॥

बार बार बहु लीन बलैया चूमि कपोलन पानी ॥
माधुरि मूरति साँवलि सूरतिकी तृण तोरति रानी ॥
रीझि रीझि तहँ राम रूपपै बिनही मोल बिकानी ॥
पुनि कर जोरि रामसों रानी बोली अति मृदु मोई ॥
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारहु राजदुलारे ॥
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निजकर पायँ पखारे ॥
रचना अधिक पदकके पीठण बैठारे सब भाई ॥
कंचनथारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत पवन डुलावै सासू ॥
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसैं बरणि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये ॥
बैठे पहिरि पोसाक सखन युत विविध सुगंध लगाये ॥

दोहा–राज ऐन सब चैन युत, राजैं राजकुमार ॥
जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखन मार ॥

छंद–तेहि औसर सुधिपाय सखीमुख लक्ष्मीनिधिकी नारी ॥
नाम सिद्धि परसिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुंदरि नव यौवन मतवारी ॥
रसिकनरीति प्रीति परवीनी रतिहि लजावनहारी ॥
अतिगुणवान निधानरूपकी सब विधि सुभगसयानी ॥
लक्ष्मीनिधिकी प्राणप्रियारी निमिकुलकी महरानी ॥
अलबेली सरहज रघुवरकी बड़ी सनेह शृंगारी ॥
प्रीतम/प्रीति निबाहन हारी रामरूप रिझवारी ॥
चंचल चपल चहूँ दिशि चितवति देखनको अतुराई ॥
भरी उमंग संग सखियनलै तुरत राम ढिग आई ॥
वदन चंद अरविंद लियेकर निरखत मंजुर सोहै ॥

राजकुँवरकर पकरि लाड़िली बोली तकि तिरछौं है ॥
अय चितचोर किशोर भूपके बड़े चोर तुम प्यारे ॥
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ॥
उलटी बात कहौ जिन प्यारी आपन दोष दुराई ॥
तुमही रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमारि अवाई ॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहि न पर्यो जनाई ॥
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई ॥
सुनत रामके वचन लाड़िली बोली मृदु मुसकाई ॥
तुमरे घरकी रीति लालजू यहाँ न चली चलाई ॥
सासु सुनैनाके समीप महँ देत जवाब बनैना ॥
पाणि पकर रघुनंदनजीको गइ लेवाय निज ऐना ॥
चारि सिंहासन दै तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ॥
बारहिं बार निहारि वदन छबि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकंठ मालती माला वसननि अतर लगायो ॥
अंचरसों मुख पोंछि रामको निज कर पान खवायो ॥
ललित लवंग कपूर संगधरि कोउ सखि पान लगावै ॥
कोउकर पीकदानलिये ठाढ़ी कोउसखि चमर डुलावै ॥
जे निमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी ॥
राम मिलनकी बड़ी लालसा कहि न सकैं सकुचारी ॥
तिन यह सुन्यो कि सिद्धिसदन में आये चारहु भाई ॥
तुरतहिं पहुँचीं सबही प्यारी जानि सबै सुखदाई ॥
देखी राजकुँवरि सब आईं राम दरशकी प्यासी ॥
अतिसन्मान कियो सबहीको सिद्धि सदन सुखरासी ॥
रामसुछबि देखन ते लागीं दृग आनँदजल बाढ़े ॥
चष झष परे रूप सागरमें कढहिं नहीं अकढ़े ॥
सुमन मौरपर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहै ॥
राजतियनकी कौन चलै है मुनिमनको मन मोहै ॥

दोहा-मन लोभा शोभा निरखि, भई विवश सुकुमारि ॥
चकित छकित सब रहगईं, तन मन दशा बिसारि ॥

छंद-जो तिय मान अनूप रूप निज रहीं स्वरूप गुमानी ॥
तेहिलखि रामवदनकी सुखमा विनही मोल बिकानी ॥
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ॥
तहँ प्यारी गारी रघुवरको देन दिवावन लागी ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ॥
काननसुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन तुम हमार ननदोई ॥
एक बात तुमसों हम पूँछैं लाल न राखहु गोई ॥
होत व्याह सम्बंध सबनको अपने जातिहिमाहीं ॥
निज बहिनी शृंगीऋषिको तुम कैसे दियो विवाही ॥
की उनको मुनीश लैभाग्यो की वोई सँगलागी ॥
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ॥
लषणकह्योयहसुनहुलाड़िलीजेहिविधि जहँलिखिदीना ॥
तहँ संयोगहोतहै ताको व्याह तौ कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी ॥
भयो हमारा व्याह तुम्हारे विधिगति गनैको भागी ॥
औरो एक हास उर आवै अचरज है सब काहू ॥
तुमतोहौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारिभो व्याहू ॥
एक सखीकह सुनहु लालजी तुमहिं सकहिकोजीती ॥
जाहिर अहै सकल जग माहीं तुमरे घरकी रीती ॥
अति उदार करतूतिदार सब अवध पुरीकी बामा ॥
खीर खाय पैदा सुतकरती पतिकर कछु नहिं कामा ॥
सखी बचन सुन तब रघुनंदन बोले मृदु मुसकातें ॥

आपन चाल छिपावहु प्यारी कहहु आनकी बातें ॥
कोउ नहिं जन्मे मात पिता बिन बँधी वेदकी नीती ॥
तुमरेतौ महिते सब उपजें अस हमरे नहिं रीती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि औसर परम चतुर सुकुमारी ॥
सिद्धि कुँवरिकी लहुरी भगनी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥
लरिकांईते रह्यो लालजी तुम तपस्विन सँग माहीं ॥
ये छलछंद फंद कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥
की मुनि नारिनके सँग सीखे की निज भगिनी पासें ॥
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिनचाखे नहिं भासें ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहु तौ अबै कुमारी ॥
वर्णहु पुरुष संगकी बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखनको सो सब सुने सुनाये ॥
कामिनि कामकला अब सीखन हम तुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुम न बखानौ ॥
तुमरी तौ गनती साधुनमें लोक बातका जानौ ॥
भरत कह्यो तुम सांचि कहत हौ हम साधू परकाजी ॥
ऐसी सेवा करो कामिनी जामें हों हम राजी ॥
आये अयन अपूरव योगी अस निज मन गुण लीजै ॥
अधर सुधारसको दै भोजन अतिथै पूजन कीजै ॥
एक सखीकह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ॥
ऋषि मखराखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधि पाई ॥
इनको सुन्दर देख कामवश तिया ताड़का आई ॥
सो करतूति नभई लालसों मारेहु तेहि खिसियाई ॥
बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ॥
जो करतूति बनी नहिं उनते सो हमसे भरि लीजै ॥

विन जाने करतूति सवनको तुम्हरे घर भो व्याहू ॥
सोउ पछिताव न रही पियारी अब करियेहु सराहू ॥
जाके हित तुम रोप बढ़ावहु सो मति करहु उपाई ॥
वैसिन सेवामें तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई ॥
सुनि वाणी रिपुदवन लालकी बोली कोउ सुकुमारी ॥
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल विचारी ॥
कीकहुँ मिली नारिगुणआगर की गणिकन सँगकीन्हो ॥
तीनों भाइन ते तुम्हरे महँ लखियतु चिह्न नवीनो ॥
रिपुहनकह भल कह्योभामिनी भेदियाभेदहिजाने ॥
गणिका नारिनहूंते सौ गुण तुम्हैं अधिक हम माने ॥
हमरो तुमरो चिह्न लाड़िली एके भाँति लखाई ॥
ताते सखी हमारि तुमारी चाही अवशि सगाई ॥
सुनि नव उक्ति युक्तिकी बातैं बोलीसिधि सुकुमारी ॥
सुनिये रसिकराय रघुनंदन आनँदकंद विहारी ॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी ॥
कैसे बची होयँगी तुमते अवधपुरीकी नारी ॥
योंकहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुखऐना ॥
ताको हाथ पकरि रघुनंदन बोले अति मृदुबैना ॥
दोहा—जस मर्यादा जगतकी, बाँधिदियो करतार ॥
राजा रंक यती सती, करत सोइ व्योहार ॥
छंद—अनुचित उचित विचारि लोग सव तहँ तस राखत भाव ॥
तुम तौ अपने कस जानतिहौ सवहीके रस चाव ॥
यह सुनि भरत लषण रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अतिभईसुखारी ॥
पुनि बोले रघुनाथ तुह्मारी सूरति की बलिहारी ॥

सिद्धि आदि तव राजकुमारी मोहिंप्राणहुँते प्यारी ॥
तुमरे हिय अभिलाषआजु जो सो सब भाँतिपुजैहौं ॥
लोककि लाजबचाय लाड़िली तुम ते विलग न ह्वैहौं ॥
हम सब भाँति तुम्हारे साँवलि तुम सब भाँतिहमारी ॥
सत्य सत्य ये सत्य वचन मम मानहु राजकुमारी ॥

दोहा-रघुनंदनके वचन सुनि, खुलगये कपट किंवार ॥
७ बढ्यो प्रेम सब तियनके, तनिकहु नहिं संभार ॥

छंद--पुनि धरि धीरज अली भली विधि जोरि पंकरुहपानी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुवानी ॥
धन्य भाग्य हमरे रघुनंदन हमते बड़ कोउ नाहीं ॥
बूडत रहीं जगतसागरमें राखिलीन्ह गहि बाहीं ॥
अति उपकार होत नहिं हमते जस तुम कीन्हेप्यारे ॥
चन्द्रसमान होयँ नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे ॥
जेहि जेहि योनि करमवशहमकोजनमविधातादेही ॥
तहँ तहँ रसिकराय रघुनंदन तुमहीं मिलहु सनेही ॥
बरु विधि कोटिन करै यातना या तनु छन छन छूटै ॥
हमरी तुमरी लगन लाड़िले कौनो जन्म न टूटै ॥
सुनि वाणी करुणारस सानी रघुवर अन्तरजानी ॥
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमलवानी ॥
सबसों विदामाँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगधारे ॥
निकसे मानहुँ ° सिद्धि महलते चारिचंद्रछविवारे ॥

दोहा-बिदा सासुसे होइ पुनि, आये सब जनवास ॥
बढ़त छिनहिं छिन [illegible]कपुर, आनँद परमहुलास ॥

इति रामकलेवा (क्षेपक) समाप्त ।

नितनूतन मंगल पुरमाहीं ❀ निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं॥
बडे भोर भूपति मणि जागे ❀ याचक गुणगण गावन लागे ॥
देखि कुँवर वर वधुन समेता ❀ किमिकहिजात मोदमन जेता॥
प्रातक्रियाकरि गे गुरु पाहीं ❀ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा करजोरी ❀ बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा ❀ भयउ आजु मम पूरण काजा ॥
अब सब विप्र बुलाइ गुँसाई ❀ देहु धेनु सब भाँतिबनाई ॥
सुनि गुरुकरि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥
दोहा-वामदेव अरु देवऋषि, बालमीकि जाबालि ॥
आये मुनिवरनिकरतब, कौशिकादितपशालि३६७॥
दण्डप्रणाम सबहिं नृप कीन्हा ❀ पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥
चारिलक्ष वरधेनु मँगाई ❀ कामसुरभि सम शील सुहाई ॥
सब विधि सकल अलंकृतकीन्हीं ❀ मुदितमहीपऋषिनकहँदीन्हीं ॥
करत विनय बहु विधि नरनाहू ❀ लहाउ आजु जगजीवन लाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा ❀ लिये बोलि पुनि याचकवृंदा ॥
कनकवसनमणि हयगजस्यंदन ❀ दिये बूझि रुचि रविकुलनंदन॥
चले पढत गावत गुण गाथा ❀ जयजयजय दिनकरकुलनाथा॥
इहि विधि राम विवाहउछाहू ❀ सकैं न वरणि सहसमुख जाहू ॥
दोहा-बार बार कौशिक चरण, शीशनाइ कह राउ ॥
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपा कटाक्ष प्रभाव३६८
जनक सनेह शील करतूती ❀ नृपसब भाँति सराह विभूती ॥
दिन उठि विदा अवधपतिमांगा ❀ राखहिं सहित जनक अनुरागा॥
नितनूतन आदर अधिकाई ❀ दिनप्रति सहस भाँति पहुनाई ॥
नितनव नगर अनन्द उछाहू ❀ दशरथ गमन सोहाइ न काहू॥
बहुत दिवस बीते इहि भाँती ❀ जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक सतानन्द तब जाई ❀ कहा विदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दशरथ कहँ आयसु देहू ❀ यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू ॥

भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये ❀ कहिजयजीव शीश तिननाये ॥
दोहा–अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव ॥
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्रसभासदराव॥३६९॥
पुरवासिन सुनि चली बराता ❀ पूँछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्यगवनसुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सीध चला बहुभाँती ॥
विविध भाँति मेवा पकवाना ❀ भोजन साज नजाइ बखाना ॥
भरि भरि वसंह अपार कहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा ❀ सकल सँवारे नख अरुशीशा ॥
मत्त सहसदश सिंधुर साजे ❀ जिनहिं देखि दिशि कुंजरलाजे॥
कनकवसनमणि भरिभरियाना ❀ महिषी धेनु वस्तु विधिनाना ॥
दो॰–दायज अमित न सकिय कहि, दीन्हविदेहबहोरि॥
जो अवलोकत लोकपति, लोकसम्पदाथोरि॥३७०॥
सब समाज इहिभाँति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्हपठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सबरानी ❀ विकलमीनगण जनुलघु पानी॥
पुनि पुनि सीय गोदकरलेहीं ❀ देइ अशीश सिखावन देहीं ॥
होइहहुसंतत पियहि पियारी ❀ चिर अहिवात अशीशहमारी॥
सासु श्वशुर गुरु सेवा करहू ❀ पतिरुखलखिआयसुअनुसरहू ॥
अतिसनेहवश सखी सयानी ❀ नारि धर्म सिखवहिं मृदुवानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाई ❀ रानिन बार बार उरलाई ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी ❀ कहहिं विरंचि रची कतनारी ॥
दोहा–त्यहि अवसरभाइनसहित, रामभानुकुल केतु ॥
चले जनक मन्दिर मुदित, बिदा करावनहेतु॥३७१॥
चारिउ भाइ स्वभाय सुहाये ❀ नगर नारि नर देखन धाये ॥
कोउकह चलन चहतहहिं आजू ❀ कीन्ह विदेह बिदाकर साजू ॥
लेहु नयनभरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥

१ बैल । २हाथी । ३ भैंसी । ४निरन्तर । ५ सुहाग । ६आज्ञा । ७कोमलवचन । ८हृदय ।

कोजानै केहि सुकृत सयानी ❀ नयन अतिथि कीन्हे विधिआनी॥
मरण शील जिमि पाव पियूषा ❀ सुरतरु लहै जन्मकर भूखा॥
पाव नारकी हरिपद जैसे ❀ इनकर दरशन हमकहँ तैसे॥
निरखि राम शोभा उर धरहू ❀ निजमन फणिमूरतिमणिकरहू॥
इहिविधि सबहि नयन फल देता ❀ गये कुँवर सब राजनिकेता॥

दोहा-रूपसिन्धु सब बन्धु लखि, हर्षिउठेउरनिवासु॥
करहिं निछावर आरती, महामुदित मन सासु॥३७२॥

देखि रामछवि अति अनुरागीं ❀ प्रेमविवश पुनि पुनि पदलागीं॥
रही न लाज प्रीति उरछाई ❀ सहज सनेह वरणि किमिजाई॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये ❀ छरस अशन अतिहेतु जिवाये॥
बोले राम सुअवसर जानी ❀ शील सनेह सकुचमयवानी॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये ❀ विदा होन हित हमहिं पठाये॥
मातु मुदित मन आयसु देहू ❀ बालक जानि करब नित नेहू॥
सुनत वचन बिलख्यउरनिवासू ❀ बोलिनसकहिं प्रेमवश सासू॥
हृदयलगाइ कुँवरि सब लीन्ही ❀ पतिनसौंपि विनती अतिकीन्ही॥

छंद-करिविनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहै
बलिजाउँतातसुजानतुमकहँविदितगतिसबकीअहै॥
परिवारपुरजनमोहिंराजहिंप्राणप्रियसियजानिबी॥
तुलसीसुशीलसनेहलखिनिजकिंकरीकरिमानबी६१

सो०-तुमपरिपूरण काम, ज्ञानशिरोमणि भाव प्रिय॥
जन गुण गाहकराम, दोषदलन करुणायतन॥३९॥

असकहि रही चरणगहि रानी ❀ प्रेमपंक जनु गिरासमानी॥
सुनि सनेह सानी वरवानी ❀ बहुविधि राम सासु सनमानी॥
राम विदा माँगत करजोरी ❀ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी॥
पाइ अशीश बहुरि शिरनाई ❀ भाइन सहित चले रघुराई॥
मंजु मधुर मूरति उरआनी ❀ भई सनेह शिथिल सब रानी॥

१ पुण्य। २ अमृत। ३ कल्पवृक्ष। ४ राजाजनकजीकेगृह। ५ षट्रसभोजन।
६ सेवकिन। ७ कृपाकेस्थान। ८ वाणी। ९ पुनि पुनि।

पुनि धीरजधरि कुँवरि हँकारी ❀ बार बार भेटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनिमिलति सखिनबिलगाई ❀ बालवत्स जनु धेनु लवाई ॥
दोहा—प्रेमविवश नरनारिसब, सखिनसहित रनिवास॥
मानहुँ कीन्ह विदेहपुर, करुणा विरह निवास॥३७३॥
शुक शारिक जानकी जिआये ❀ कनक पिंजरन राखि पढाये ॥
व्याकुल कहहिं कहा वैदेही ❀ सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये विकल खगमृगइहिभांती ❀ मनुज दशा कैसे कहि जाती ॥
बन्धु समेत जनक तब आये ❀ प्रेम उमँगि लोचनजल छाये ॥
सीय विलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम विरागी ॥
लीन्ह राउ उरलाइ जानकी ❀ मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥
समुझावत सब सचिव सयाने ❀ कीन्ह विचार अनवसर जाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई ❀ सजि सुन्दर पालकी मँगाई ॥
दोहा—प्रेम विवश परिवार सब, जानि सुलगन नरेश ॥
कुँवरि चढाई पालकी, सुमिरे सिद्ध गणेश ॥ ३७४ ॥
बहुविधि भूपसुता समुझाई ❀ नारि धर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे ❀ शुचिसेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीयचलत व्याकुल पुरवासी ❀ होहिं शकुन शुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा ❀ संग चले पहुँचावन राजा ॥
रथ गज वाजि बरातिन साजे ❀ सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे ❀ दान मान परिपूरण कीन्हे ॥
चरण सरोज धूरि धरि शीशा ❀ मुदित महीपति पाइ अशीशा ॥
सुमिरि गजानन कीन्हपयाना ❀ मंगलमूल शकुन भयेनाना ॥
दोहा—सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरागान ॥
चलेअवधपतिअवधपुर, मुदितबजाइनिशान॥३७५॥
नृपकरि विनय महाजन फेरे ❀ सादर सकल माँगने टेरे ॥

१ आपसमें । २ तोता और मैना । ३ सोना । ४ पक्षी ।

भूषण वसन वाजि गज दीन्हें ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हें ॥
बार बार विरदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कौशलपतिकहहीं ❀ जनक प्रेमवश फिरानचहहीं ॥
पुनि कह भूपति वचनसुहाये ❀ फिरिय महीप दूरि बड़ि आये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढे ❀ प्रेमप्रवाह विलोचन वाढे ॥
तब विदेह बोले करजोरी ❀ वचनसनेह सुधा जनु बोरी ॥
करौं कवन विधि विनयसुहाई ❀ महाराज मोहिं दीन्हबड़ाई ॥

दोहा–कोशलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति॥
मिलनपरस्परविनयअति, प्रीतिनहृदयसमाति ३७६॥

मुनिमण्डली जनकशिरनावा ❀ आशिर्वाद सबहिसन पावा ॥
सादर पुनि भेंटे जामाता ❀ रूप शील गुणनिधि सब भ्राता ॥
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये ❀ बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं क्यहि भाँति प्रशंसा ❀ मुनि महेश मनमानस हंसा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी ❀ कोहमोह ममता मदत्यागी ॥
व्यापकब्रह्म अलख अविनाशी ❀ चिदानन्द निर्गुण गुणराशी ॥
मनसमेतज्यहि जान न वानी ❀ तरकिनसकहिं सकल अनुमानी॥
महिमा निगमनेतिकरिकहहीं ❀ जो तिहुँकाल एकरस रहहीं ॥

दोहा–नयन विषय मोकहँ भयउ, सो समस्तसुखमूल॥
सबहिं लाभ जगजीव कहँ, भये ईश अनुकूल ॥३७७॥

सबहि भाँति मोहिं दीन्ह बड़ाई ❀ निजजनजानि लीन्ह अपनाई ॥
होइ सहसदश शारद शेषा ❀ करहिंकल्प कोटिक भरि लेखा॥
मोरभाग्य राउर गुणगाथा ❀ कहिनासिराहि सुनियरघुनाथा॥
मैं कछु कहौं एक बलमोरे ❀ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार मांगों कर जोरे ❀ मन परिहरै चरण जनि भोरे ॥
सुनि वर वचन प्रेमजल पोषे ❀ पूरण काम राम परितोषे ॥
करिवरविनय श्वशुर सनमाने ❀ पितुकौशिक वशिष्ठ सम जाने॥

१ क्रोध। २ गर्व्व। ३ वेद। ४ सहकारी। ५ श्रेष्ठवाणी।

विनती बहुरि भरतसन कीन्ही ❀ मिलिसप्रेमपुनिआशिषदीन्ही ॥
दोहा-मिले लषण रिपुसूदनहिं, दीन अशीश महीश ॥
भये परस्पर प्रेमवश, फिरि फिरि नावहिंशीश॥३७८॥
बार बार करि विनय बड़ाई ❀ रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौशिक पद जाई ❀ चरण रेणु शिर नयनन लाई ॥
सुनिय मुनीश दरशफलतोरे ❀ अगम नकछु प्रतीति मनमोरे ॥
जो सुखसुयशलोकपतिचहहीं ❀ करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभ मोहिंस्वामी ❀ सबविधि तवदर्शन अनुगामी ॥
कीन्ह विनय पुनिपुनि शिरनाई ❀ फिरेमहीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई ❀ मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्राम नरनारी ❀ पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
दोहा-बीच बीच बरवास करि, मग लोगन सुखदेत ॥
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँचीआयजनेत ॥३७९॥
हने निसान पणव बहु बाजे ❀ भेरि शंख ध्वनि हय गय गाजे ॥
झांझ मृदंग डिमडिमी सुहाई ❀ सरसराग बाजे सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनिबराता ❀ मुदित सकल पुलकावलिगाता ॥
निज निज सुन्दर सदन सँवारे ❀ हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगंजासिंचाई ❀ जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥
बना बजार न जात बखाना ❀ तोरण केतु पताक विताना ॥
सफल पुंगिफल कदलि रसाला ❀ रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरणी ❀ मणिमय आलबालकलकरणी ॥
दोहा--विविध भाँति मंगलकलश, गृहगृहरचेसँवारि ॥
सुरब्रह्मादिसिहाहिं सब, रघुवरपुरी निहारि ॥ ३८० ॥
भूपभवन त्यहि अवसरसोहा ❀ रचना देखि मदनमन मोहा ॥
मंगल शकुन मनोहरताई ❀ ऋधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये ❀ तनु धरि धरि दशरथ गृह आये॥

१दुर्लभ। २ढोल। ३ घोडे। ४ हाथी। ५सुनी। ६केसरआदिसुगन्धितचीजें। ७थलहा।

देखन हेतु राम वैदेही ❀ कहहु लालसा होइ न केही ॥
यूथयूथमिलिचलीं सुआसिनि ❀ निजछविनिदरहिंमदनविलासिनि॥
सकल सुमंगल सजे आरती ❀ गावहिं जनु बहु वेष भारती ॥
भूपति भवन कुलाहल होई ❀ जाइ न वरणि समय सुख सोई ॥
कौशल्यादि राम महतारी ❀ प्रेम विवश तनु दशा विसारी ॥

दोहा-दिये दान विप्रनविपुल, पूजि गणेश पुरारि ॥
प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइपदारथचारि ॥३८१॥

प्रेमप्रमोद विवश सब माता ❀ चलहिंनचरणशिथिलसबगाता॥
रामदरश हित अति अनुरागीं ❀ परिछन साज सजन सबलागीं ॥
विविध विधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पुंगिफल मंगलमूला ॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुलमंजरि तुलसि विराजा ॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये ❀ मदन शकुन जनु नीड़ बनाये ॥
शकुन सुगंध नजाहिं बखानी ❀ मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥
रची आरती विविध विधाना ❀ मुदितकरहिं कल मंगल गाना ॥

दो०-कनकथार भरिमंगलन्हि, कमलकरनलियेमात ॥
चलींमुदितपरिछनकरन,पुलकपल्लवितगात ॥३८२॥

धूप धूम नभ मेचक भयऊ ❀ सावन घन घमंड जनु छयऊ ॥
सुरतरु सुमन माल सुर वर्षहिं ❀ मनहुँवलाक अवलिमनकर्षहिं ॥
मंजुल मणिमय वन्दनवारा ❀ मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिंअटन्हपरभामिनि ❀ चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि ॥
दुन्दुभिध्वनि घन गरजहिं घोरा ❀ याचक चातक दादुर मोरा ॥
सुर सुगन्ध शुचि वरषहिं वारी ❀ सुखी सकल लखि पुर नर नारी ॥
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा ❀ पुरप्रवेश रघुकुल मणि कीन्हा ॥
सुमिरिशंभु गिरिजा गण राजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दोहा-होहिं शकुन वरषहिं सुमन,सुरदुन्दुभी बजाइ ॥

१ इच्छा। २ रति। ३ सरस्वती। ४ मूंग। ५ रोरी। ६ घर। ७ श्याम। ८ बगुला। ९ इन्द्रधनुष। १० मेढक।

विबुध वधू नाचहिं मुदित, मंजुलमंगल गाइ ॥ ३८३ ॥

मागध सूत वन्दि नट नागर ❀ गावहिं यश तिहुँलोक उजागर॥
जयध्वनिविमल वेदवर बानी ❀ दशदिशि सुनिय सुमंगलखानी॥
विपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभसुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती वरणि नजाहीं ❀ महामुदित मन सुख न समाहीं॥
पुरवासिन तब राउ जुहारे ❀ देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मणिगण चीरा ❀ वारि विलोचन पुलक शरीरा ॥
आरति करहिं मुदितपुरनारी ❀ हरषहिं निरखि कुँवर वर चारी॥
शिबिका सुभग उघारिउघारी ❀ देखि दुलहिनिन्ह होहिंसुखारी ॥

दोहा–इहिविधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ॥
मुदितमातुपरिछनिकरहिं, बधुनसमेतकुमार ॥ ३८४॥

करहिं आरती बारहिंबारा ❀ प्रेम प्रमोद लहै को पारा ॥
भूषण मणि पट नानाजाती ❀ करहिं निछावरि अगणितभाँती॥
वधुन समेत देखि सुत चारी ❀ परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीयरामछविदेखी ❀ मुदितसफल जगजीवन लेखी ॥
सखी सीयमुख पुनिपुनिचाही ❀ गायनकर निज सुकृत सराही ॥
वरषहिंसुमन क्षणहिंक्षण देवा ❀ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारयउ जोरी ❀ शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहि निपट लघु लागी ❀ इकटक रहीं रूप अनुरागी ॥

दोहा–निगम नीति कुलरीति करि, अर्घ्य पाँवडे देत ॥
वधुनसहितसुतपरछिसब, चलींलिवायनिकेत ॥ ३८५॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये ❀ जनु मनोज निजहाथ बनाये ॥
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे ❀ सादर पाँय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि ❀ पूजेवरदुलहिनि मंगल निधि ॥
बारहिंबार आरती करहीं ❀ व्यजन चारु चामर शिर ढरहीं॥
वस्तु अनेक निछावरिहोहीं ❀ भरी प्रमोद मातु सब सोहीं ॥

१ पवित्र। २ प्रवीण। ३ पालकी। ४ स्थानको। ५ काम। ६ पंखे। ७ मुरछल। ८ आनंदित।

पावा परमतत्त्व जनु योगी ❋ अमृतलहि जनु सन्तत रोगी ॥
जन्मरंके जनु पारस पावा ❋ अन्धहि लोचन लाभ सुहावा॥
मूकवदन जस शारद छाई ❋ मानहुँ समरशूर जय पाई ॥
दोहा—यहि सुखते शतकोटि गुण,पावहिं मातु अनंद ॥
भाइन सहित विवाहि घर,आये रघुकुल चंद ॥ ३८६ ॥
लोकरीति जननी करहिं, वर दुलहिनि सकुचाहिं ॥
मोदविनोद विलोकिबड़,राममनहिमुसुकाहिं॥ ३८७॥
देव पितर पूजे विधिनीकी ❋ पूजीसकल वासना जीकी ॥
सबहिंवन्दि मांगहिं वरदाना ❋ भाइन सहित राम कल्याना ॥
अन्तरहित सुर आशिष देहीं ❋ मुदित मातु अंचल भरिलेहीं ॥
भूपतिबोलि बरातिन्ह लीन्हे ❋ यान वसन मणि भूषण दीन्हे ॥
आयसुपाइ राखि उररामहिं ❋ मुदित गये सबनिज निज धामहिं॥
पुर नर नारि सकल पहिराये ❋ घरघर बाजहिं अनँद बधाये ॥
याचकजन याचहिं ज्वइजोई ❋ प्रमुदित राउ देइँ स्वइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियां नाना ❋ पूरण किये दान सनमाना ॥
दोहा—देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुणगणगाथ ॥
तब गुरु भूसुरसहितगृह, गमनकीन्हनरनाथ ॥ ३८८॥
जो वशिष्ठ अनुशासनदीन्हा ❋ लोक वेद विधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी ❋ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पायँपखारि सकल अन्हवाये ❋ पूजिभलीविधि भूप ज्यँवाये ॥
आदर दान प्रेम परिपोषे ❋ देत अशीश चले मन तोषे ॥
बहुविधिकीन्ह गाधिसुतपूजा ❋ नाथ मोहिं सम धन्य नदूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ❋ रानिन्ह सहित लीन्ह पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बरवासू ❋ मन जुगवत रह नृप रनिवासू ॥
पूजे गुरुपद कमल बहोरी ❋ कीन्ह विनय मन प्रीतिनथोरी ॥
दोहा—वधुन समेत कुमार सब,रानिन सहित महीश ॥

१ सदाकारोगी। २ जन्मका दलिद्री। ३ आँखें। ४ गुंगा। ५ माता। ६ विमान ७ मनमें सन्तुष्टहोकर। ८ विश्वामित्र। ९ बहुत।

पुनि पुनि वन्दत गुरुचरण, देत अशीश मुनीश ॥३८९॥
विनय कीन्ह उर अति अनुरागे ❀ सुत सम्पदा राखि सब आगे ॥
नेगमाँगि मुनिनायक लीन्हा ❀ आशिर्वाद बहुत विधि दीन्हा ॥
उरधरि रामहिं सीय समेता ❀ हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता ॥
विप्रवधू कुल वृद्ध बुलाई ❀ चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्ही ❀ रुचिविचारि पहिरावन दीन्ही ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥
प्रियपाहुने पूज्य जे जाने ❀ भूपति भलीभाँति सनमाने ॥
देवदेखि रघुवीर विवाहू ❀ वरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥
दोहा—चले निशान बजाइ सुर, निजनिजपुर सुखपाइ ॥
कहत परस्पर रामयश, हर्ष न हृदय समाइ ॥३९०॥
सबविधिसमदि मुदित नरनाहू ❀ रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहां पगुधारे ❀ सहित वधूटिन कुँवर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता ❀ को कहिसकै भयउ सुख जेता ॥
वधू सप्रेम गोद बैठारी ❀ बार बार हिय हरषि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू ❀ सबके उर आनन्द विलासू ॥
कह्यहुभूप जिमि भयउ विवाहू ❀ सुनि सुनि हर्ष होतसबकाहू ॥
जनकराज गुण शील बड़ाई ❀ प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुविधिभूप भाट जिमि वरणी ❀ रानी सब प्रमुदित सुनि करणी ॥
दोहा—सुतन समेत नहाइ नृप, बोलि लिये गुरुज्ञाति ॥
भोजन किये अनेकविधि, घरी पाँच गइ राति ॥३९१॥
मंगलगान करहिं वरभामिनि ❀ भइ सुखमूल मनोहर यामिनि ॥
अँचै पान सब काहुन पाये ❀ स्रग सुगन्ध भूषित छविछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई ❀ निज निज भवन चले शिरनाई ॥
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ❀ समय समाज मनोहरताई ॥
कहिनसकहिं श्रुति शारद शेषू ❀ वेद विरंचि महेश गणेशू ॥
सोमैं कहौं कवन विधि वरणी ❀ भूमि नाग शिर धरै कि धरणी ॥
नृप सबभाँति सबहि सनमानी ❀ कहि मृदुवचन बुलाई रानी ॥

१ उत्साह। २ सन्मान। ३ परमानन्द। ४ जातिकेलोगोंको। ५ स्नेह। ६ आनन्द। ७ लीला।

वधूलरिकिनी परघर आई ❀ राखयहुनयन पलककी नाई ॥
दोहा—लरिका श्रमित उनींदवश, शयन करावहुजाइ॥
असकहि गे विश्राम गृह, रामचरण चितलाइ॥ ३९२॥
भूप वचन सुनि सहजसुहाये ❀ जडितकनकमणिपलँगडसाये ॥
सुभग सुरभि पयफेनुसमाना ❀ कोमल ललित सुपेती नाना ॥
उपबर्हण[1] वर वरणि नजाहीं ❀ स्रगसुगन्ध[2] मणि मन्दिरमाहीं ॥
रत्नदीप सुठि चारु चँदोवा ❀ कहत न बनै जान जेहिजोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये ❀ प्रेम समेत पलँग पौढाये ॥
आज्ञा पुनि पुनि भाइनदीन्ही ❀ निजनिजसेजशयनतिनकीन्ही॥
देखि श्याम मृदुमंजुल गाता ❀ कहहिं सप्रेम वचन सबमाता ॥
मारग जात भयावनि भारी ❀ क्यहि विधितातताडकामारी ॥
दोहा—घोर निशाचर विकट भट, समर गनै नहिं काहु ॥
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीचसुबाहु ॥ ३९३॥
मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारे ❀ ईश[3] अनेक करवरे[4] टारे ॥
मख रखवारी करि दोउ भाई ❀ गुरु प्रसाद सब विद्यापाई ॥
मुनि तियतरी लगत पग धूरी ❀ कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ पीठ पवि कूट कठोरा ❀ नृपसमाज महँ शिवधनु तोरा ॥
विश्वविजययश जानकिपाई ❀ आये भवन व्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ❀ केवल कौशिक कृपासुधारे ॥
आजु सफल जग जन्महमारे ❀ देखितात विधु बदन तुम्हारे ॥
जेदिनगये तुमहिं बिनुदेखे ❀ तेविरंचि जनि पारहिं लेखे ॥
दोहा—राम प्रतोषीं[5] मातु सब, कहि विनीत वर बयन ॥
सुमिरि शंभु गुरु विप्रपद, किये नींदवशनयन॥ ३९४॥
नींदहु बदन सोह सुठि लोना ❀ मनहुँ सांझ सरसीरुह[6] सोना ॥
घर घर करहिं जागरण नारी ❀ देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरीविराजति राजति रजनी ❀ रानी कहहिं विलोकहु सजनी ॥
सुन्दर वधुन्ह सासुलै सोई ❀ फणिकन्हजनुशिरमणिउरगोई ॥

१ तकिया। २ चन्दन-केसर इत्यादि। ३ महादेव। ४ विघ्न। ५ सन्तुष्टकिया। ६ कमल। ७ शोभा। ८ रात्रि।

प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❀ अरुणचूड़ वर बोलन लागे ॥
बंदी मागध गुणगण गाये ❀ पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
वन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता ❀ पाइ अशीश मुदितसब भ्राता॥
जननिन्ह सादर वदन निहारे ❀ भूपति संग द्वार पगु धारे ॥
दोहा--कीन्ह शौचसबसहज शुचि, सरितपुनीतनहाइ॥
प्रातक्रिया करि तात पहँ, आयेचार्यउभाइ ॥३९५॥
भूप विलोकि लिये उरलाई ❀ बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी ❀ लोचन लाभ अवधि अनुमानी॥
मुनिवशिष्ठ मुनिकौशिकआये ❀ सुभग आसनन मुनि बैठाये ॥
सुतनसमेत पूजि पद लागे ❀ निरखि राम दोउ उर अनुरागे॥
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा ❀ सुनहिं महीप सहित रनिवासा॥
मुनिमनअगम गाधिसुतकरणी ❀ मुदितवशिष्ठविपुलविधिवरणी॥
बोले वामदेव सबसाँची ❀ कीरतिकलितलोकतिहुँमाँची ॥
सुनि आनन्द भयउ सबकाहू ❀ राम लषण उर अधिक उछाहू॥
दोहा-मंगल मोद उछाह नित, जाहिंदिवसइहिभाँति॥
उमँगीअवधअनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति ३९६
सुदिन साधि करकंकण छोरे ❀ मंगल मोद विनोद न थोरे ॥
नितनवसुख सुर देखि सिहाहीं ❀ अवधजन्मयाचहिं विधिपाहीं ॥
विश्वामित्र चलन नित चहहीं ❀ राम सप्रेम विनय वश रहहीं ॥
दिन दिन सद्गुणभूपतिभाऊ ❀ देखि सराह महामुनि राऊ ॥
माँगत विदा राउ अनुरागे ❀ सुतन समेत ठाढ भये आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी ❀ मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकनपर छोहू ❀ दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥
असकहि राउ सहितसुतरानी ❀ पर्यउचरण मुखआव न बानी॥
दीन्ह अशीश विप्र बहु भाँती ❀ चले न प्रीति रीति कहिजाती॥
राम सप्रेम संग सब भाई ❀ आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥
दोहा-रामरूप भूपतिभगति, ब्याह उछाह अनन्द ॥

१ मुर्गे। २ पिताकेसमीप। ३ विश्वामित्र। ४ सुन्दर। ५ विख्यात। ६ दिन। ७ आनन्द। ८ क्रीडा। ९ नवीन। १० मांगाहैं। ११ दया।

जातसराहतमनहिंमन,मुदितगाधिकुलचन्द॥३९७॥
वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी ❀ बहुरि गाधिसुत कथा बखानी॥
सुनिमुनिसुयशमनहिंमन राऊ ❀ वर्णत आपन पुण्य प्रभाऊ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ ❀ सुतन समेत नृपति गृह गयऊ॥
जहँ तहँ राम व्याह सब गावा ❀ सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा॥
आये व्याहि राम घर जबते ❀ बसे अनन्द अवध सब तबते॥
प्रभुविवाह जस भयउ उछाहा ❀ सकहिं नवरणिगिरांअहिनाहा॥
कविकुल जीवन पावन जानी ❀ राम सीययश मंगलखानी॥
त्यहिते मैं कछु कहा बखानी ❀ करण पुनीत हेतु निज बानी॥

हरिगीतिका छंद॥

निज गिरापावनकरनकारणरामयशतुलसी कह्यो॥
रघुवीर चरित अपार वारिधि पारकविकवनेलह्यो॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं॥
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं॥६२॥
सुनि गाय कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही॥
नितप्रीतिअनुपमसुनतहरिगुणभक्तिअनुपमतेलही॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई॥
यहजानितुलसीदासमनक्रमवचनहरिगुण गावई॥
दोहा-कठिनकालमलग्रसिततनु,साधनकछुकनहोइ॥
यह विचारिविश्वासकरि, हरि सुमिरैवुधिसोइ॥३९८॥
सो०-मन हरिपद अनुराग, करहु त्यागि नाना कपट॥
महामोह निशि जाग, सोवत बीते कालबहु॥४०॥
सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं॥
तिनकहँ सदा उछाह,मंगलायतन राम यश॥४१॥

इति श्रीतुलसीदासविरचिते श्रीरामचरितमानसे सकलक-
लिकलुषविध्वंसने, विमलवैराग्यविज्ञानसन्तोषसं-
पादनोनामबालकाण्डःप्रथमःसोपानः॥ १॥

१ विश्वामित्र। २ सरस्वती। ३ शेषनाग।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-



अयोध्याकाण्डम् २.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया.

दोहा—मुनि दुर्लभ हरि भक्तिनर, पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिश्वास ॥



चौ०—जे असि कथा पाय परि हरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृहत्यागी। खोजत आक फिरहिं पयलागी॥

❀ अयोध्याकाण्डम् ❀



❀ श्रीरामपंचायतन ❀

॥ श्रीः ॥

अथ रामायणे अयोध्याकाण्डम्

श्लोकाः—वामांकेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके
भालेबालविधुर्गलेच गरलंयस्योरसिव्यालराट् ॥
सोयंभूतिविभूषणःसुरवरःसर्वाधिपःसर्वदा शर्वःसर्व-
गतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां यो न गतो भिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवास
दुःखतः ॥ मुखाम्बुजं श्रीरघुनन्दनस्यमेसदास्तुवन्मं
जुलमंगलप्रदम् ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं
सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौमहासायकचारु
चापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दोहा—श्रीगुरुचरण सरोजरज, निजमन मुकुर सुधारि ॥
बरणौं रघुवर विमल यश,जो दायक फल चारि ॥ १ ॥
जब ते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नव मंगल मोद बधाये ॥

श्लोकार्थ—जिनके बाईं ओर पार्वती मस्तकमें गंगा माथेपर बालचंद्रमा गलेमें विष हृदयमें सर्पराज सो यह विभूतिसे भूषित देवताओंमें श्रेष्ठ सबके स्वामी सर्व रूपमय सर्वगत अर्थात् सबसे भिन्न और कल्याणरूप चंद्रमाके समान श्वेतवर्ण श्रीशंकर सर्वदा मेरी रक्षा करैं ॥ १ ॥

जो राज्य प्राप्त होनेसे प्रसन्न और वनवासके दुःखसे मलीन नहीं हुई ऐसी रामचन्द्रके मुखाम्बुजकी श्री मुझे सुंदर मंगल देनेवाली हो ॥ २ ॥

नील कमलके समान जिनके कोमल मंजुल अंग हैं जिनके वामभागमें श्रीजानकीजी विराजमानहैं हाथोंमें धनुषबाण धारण कियेहैं ऐसे रघुवंशनाथ रामको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३ ॥

१ निर्मलयश। २ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

भुवन चारि दश भूधर भारी ❀ सुकृत मेघ वरषहिं सुखवारी ॥
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई ❀ उमँगिअवधअम्बुधिकहँआई ॥
मणिगण पुर नर नारि सुजाती ❀ शुचि अमोलसुन्दरसबभाँती ॥
कहिनजाइ कछु नगर विभूती ❀ जनु इतनी विरंचि करतूती ॥
सबविधि सब पुरलोगसुखारी ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली ❀ फलित विलोकि मनोरथ वेली ॥
रामरूप गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रमुदित होहिं देखि सुनिराऊ ॥

दोहा—सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश
आप अछत युवराज पद, रामहिं देहिं नरेश ॥ २ ॥

अथ क्षेपक।

यक दिन विश्वावसु तहाँ, कियो गान गंधर्व ॥
सुनि प्रसन्नह्वै स्वपुर तेहि, कह्यो रहन हित सर्व ॥ १ ॥
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन, मैं न सकत रहि अन्त ॥
कह्यो कैकयी बसत है, हमरे बल सुर कन्त ॥ २ ॥
हमरे आवत रिस करत, अस तुम गये भुटाय ॥
पठइ पत्रिका बाँच कर, सुनि नृप रहे चुपाय ॥ ३ ॥
मनमें समुझे कैकयी, लिख पठये वच वंक ॥
हमरउ लागी घात तब, हमहू देब कलंक ॥ ४ ॥
लिख पठ्यो विश्वाबसुहि, करचो कहै नृप जोय ॥
विदा करें जब आइयो, समझ बूझ तुम सोय ॥ ५ ॥
वर्ष अठारह की सिया, सत्ताइस के राम ॥
कीनी मन अभिलाष तब, करनो है सुर काम ॥ ६ ॥

अति आनंद अवध पुरवासी ❀ भ्रातन सहित देखि सुखरासी ॥
एकबार जानकी समेता ❀ बैठे प्रभु निज रुचिरनिकेता ॥
भुजप्रलंब उर नयन विशाला ❀ पीत वसन तनु श्याम तमाला ॥

१ पर्वत । २ अयोध्यारूपीसमुद्र । ३ प्रसन्न ।

कोटि मनोज[1] देखि छबिमोहा ❀ सीता कर चामर वर सोहा ॥
त्यहिअवसर मुनिनारद आये ❀ सुरहित लागि बिरंचि[2] पठाये ॥
तेज पुंज[3] तनु करतल[4] वीणा ❀ हरि गुण गण गावतलवलीना ॥
देखि राम सहसा उठि धाये ❀ करत दंडवत मुनि उर लाये ॥
सादर निज आसन बैठारे ❀ जनकसुता तब चरण पखारे ॥
त्यहिचरणोदक भवनसिंचावा ❀ जगपावन हरि शीश चढावा ॥
सुन मुनि विषय निरतजेप्राणी ❀ हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिन कहँ सतसंगति जब होई ❀ करहिं कृपा जापर प्रभु सोई ॥
ता कहँ मुनि नाहिंनभवआगे ❀ ज्यहि बिनु हेतु संत प्रिय लागे ॥
ताते नारद मैं बड़भागी ❀ यद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥
दोहा-सुनिप्रभुवचनमधुरप्रिय, करिविचार मुनि धीर ॥
परम कृपालु लोकहित, कसन कहो रघुबीर ॥ ३ ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया ❀ मैं जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
वचन कह्यो प्राकृत की नाईं ❀ यामें नहिं कछु पच्यहु गुसाईं ॥
प्रभुयह तुमहिंसदा बनिआई ❀ निज लघुता जन केरि बड़ाई ॥
सहजस्वभाव प्रणतअनुरागी ❀ नरतनुधन्यउदासहित लागी ॥
माया गुण गो ज्ञान अतीता ❀ अजित नाम सो दासन्ह जीता ॥
ज्यहिप्रभुसम अतिशयकोउनाहीं ❀ व्यापक अज समान सबमाहीं ॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा ❀ अस्तन[5] पान लागि सोइरोवा ॥
नाम रूप वपु वर्ण न भेदा ❀ अविगत अकल नेति कह वेदा ॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई ❀ दशरथ सुत कहि गाइय सोई ॥
जप तप योग यज्ञ व्रत दाना ❀ विमल विराग ज्ञान विज्ञाना ॥
करहिं यत मुनि पावहिं कोई ❀ देखा प्रगट भक्त वश सोई ॥
हठ वश शठ बहुसाधन करहीं ❀ भक्ति हीन भवसिंधु न तरहीं ॥
दोहा-जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
मम हिय पंकज भृंग[6] इव, वसहु राम नर रूप ॥ ४ ॥

---

१ कोटिकामदेव । २ ब्रह्मा । ३ निधान । ४ हाथ । ५ शीम । ६ लीन ।

अस भुवन मैं रह्यों कृपाला ❀ गावत तव गुण दीनदयाला ॥
असि इच्छा उपजी मनमाहीं ❀ देख्यों चरण बहुत दिन नाहीं ॥
यद्यपि प्रभु सर्वत्र समाना ❀ सगुण रूप मोरे मन माना ॥
अवधचलतविरंचि मोहिंजाना ❀ कीन्हीं विनय लागियम काना ॥
प्रभु जानत सब अंतर्य्यामी ❀ भक्त वछल विनती यह स्वामी॥
ज्यहिहितलीन मनुजअवतारा ❀ नाथ ताहि अब करिय सँभारा ॥
सुनत वचन रघुपति मुसुकाने ❀ मुनि अजहूं विरंचि भय माने ॥
कहेहु तात अलहिं समुझाई ❀ कछु दिन गये देखिहैं आई ॥
बार बार चरणन शिरनाई ❀ ब्रह्मानंद न हृदय समाई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद ❀ चले करत गुण गान विशारद ॥
तब रघुपति सीतहि समुझाई ❀ पूर्व कथा सब हेतु सुनाई ॥
सुरहित लागि सोकरियउपाई ❀ जइये वन परिहरि ठकुराई ॥
दोहा—जग संभव स्थिति प्रलय, जाकी भृकुटिविलास॥
सो प्रभु यत्न विचारत, केहिविधि निशिचरनाश ॥५॥

इति क्षेपक ।

एकसमय सब सहित समाजा ❀ राजसभा रघुराज विराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू ❀ राम सुयश सुनिअतिहिउछाहू॥
नृपसबरहहिं कृपा अभिलाषे ❀ लोकपरहहिं प्रीति रुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं ❀ भूरिभाग्य दशरथ सम नाहीं ॥
मंगल मूल राम सुत जासू ❀ जोकछु कहिय थोर सब तासू ॥
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा ❀ वदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा ॥
श्रवण समीप भयेसितकेशा ❀ मनहुँ चौथ पन अस उपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहँ देहू ❀ जीवन जन्म सफल करि लेहू ॥
दोहा—असविचारि उर आनिनृप, सुदिनसुअवसरपाइ ॥
तनुपुलकितमनमुदितअति, गुरुहिंसुनायउजाइ ॥६॥
कहेउ भुआल सुनिय मुनिनायक ❀ भयेराम सवविधि सवलायक ॥

१ महाराजदशरथ । २ लोक- १४ अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल, भूः भुवःस्वः, महः, जनः, तपः, सत्यलोकोंके अध्यक्ष । ३ पाताल, मृत्यु, स्वर्ग । ४भूत, भविष्य, वर्तमान ।

सेवक सचिव सकलपुरवासी ❀ जे हमरे अरि मित्र उदासी ॥
सबहिंरामप्रिय ज्यहि विधि मोहीं ❀ प्रभुअशीश जनुतनुधरिसोहीं ॥
विप्र सहित परिवार गुसाईं ❀ करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं ❀ ते जनु सकल विभववश करहीं ॥
मोहिं समान अरु भयउनदूजे ❀ सब पायउँ प्रभु पदरज पूजे ॥
अब अभिलाष एक मन मोरे ❀ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❀ कहेउ नरेश रजायसु देहू ॥

दोहा–राउर राजन नाम यश, सब अभिमत दातार ॥
फल अनुगामी महिपमणि, मनअभिलाषतुम्हार ॥७॥

सब विधि गुरुप्रसन्न जिय जानी ❀ बोल्यउ राउ विहँसि मृदुवानी ॥
नाथ राम करिये युवराजू ❀ कहियकृपा करि करिय समाजू ॥
मोहिं अछत अस होउ उछाहू ❀ लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभु प्रसाद शिव सबै निवाहीं ❀ इहै लालसा यक मन माहीं ॥
पुनि न शोच तनु रहै किजाऊ ❀ ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दशरथ वचन सुहाये ❀ मंगल मूल मोद अति पाये ॥
सुनुनृपजासु विमुख पछिताहीं ❀ जासुभजनबिनु जरनिनजाहीं ॥
भये तुम्हार तनय सो स्वामी ❀ राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दोहा–वेगि विलम्ब न करियनृप, साजिय सबै समाज ॥
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज ॥८॥

मुदित महीपति मन्दिर आये ❀ सेवक सचिव सुमन्त बुलाये ॥
कहि जयजीव शीशतिननाये ❀ भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिं कहेउगुरुआजू ❀ रामहिं राज देहु युवराजू ॥
जो पांचहिं मत लागै नीका ❀ करहु हर्षि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी ❀ अभिमतबिरव परेउ जनुपानी ॥
विनती सचिव करहिं करजोरी ❀ जियहु जगतपतिवरपकरोरी ॥
जगमंगल भलकाज विचारा ❀ वेगहिं नाथ न लाइय वारा ॥
नृपहिं मोद सुनि सचिव सुभाषा ❀ बढत विटपजनु लहिसुशाखा ॥

१ तीनोंताप। २ सेवक। ३ प्रसन्नचित्त। ४ जयजीवकही सर्वजीवनके पालनकर्त्ता। ५वांछित।

दोहा-कहेउ भूप मुनिराजकर, जो जो आयसु होइ ॥
राम राज्य अभिषेक हित, वेगि करहु सोइ सोइ ॥९॥
हरषि मुनीश कहेउ मृदुवानी ❀ आनहु सकल सुतीरथपानी ॥
औषध मूल फूल फल नाना ❀ कहे नाम गणि मंगल जाना ॥
चांमर[1] चर्म्म[2] वसन[3] बहुभाँती ❀ रोम पाट पट अगणित जाती ॥
मणि गण मंगल वस्तु अनेका ❀ जो जग योग भूप अभिषेका ॥
वेद विहित कहि सकल विधाना ❀ कहेउ रचेहुपुर विविध विताना ॥
पनस[4] रसाल[5] पुंगिफल[6] केरा ❀ रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजु मणि चौके चारू ❀ कहेउ बनावन वेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरुकुल देवा ❀ सब विधि करहु भूमिसुर[7] सेवा ॥
दोहा-ध्वज पताक तोरण कलश, सजहुतुरंगरथनाग ॥
शिरधरिमुनिवरवचनसब, निजनिजकाजहिंलाग१०॥
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा ❀ सो जनुकाज प्रथम तेइँ कीन्हा ॥
विप्र साधु सुर पूजत राजा ❀ करत राम हित मंगल काजा ॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा ❀ बाजु गहागह अवध बधावा ॥
राम सीय तनु शकुन जनाये ❀ फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं ❀ भरत आगमन शूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी ❀ सगुण प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरतसरिस प्रियको जगमाहीं ❀ यहै शकुन फल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धु शोच दिन राती ❀ अंडन्ह कमठ हृदय त्यहिभाँती ॥
दोहा-त्यहि अवसर मंगलपरम, सुनि हरषेउरनिवास ॥
शोभितलखिविधुबढ़तजनु, वारिधिवीचिविलास ॥११॥
प्रथमजाइ त्यहिं वचन सुनावा ❀ भूषण वसन भूरि तिन्ह पावा ॥
प्रेम पुलकि तनु मन अनुरागीं ❀ मंगल साज सजन सब लागीं ॥
चौके चारु सुमित्रा पूरे ❀ मणिमयविविध भाँतिअतिरूरे ॥
आनँद मगन राम महतारी ❀ दिये दान बहु विप्र हँकारी ॥

१ चमर। २ मृगसिंहचर्म। ३ दुशाला, बनात, इत्यदि। ४ कटहर। ५ आंब। ६ सुपारी। ७ ब्राह्मण। ८ गम्भीर। ९ चिन्ता।

पूजेउ ग्राम देव सुर नागा ❀ कहेउ बहोरि देन बलि भागा ॥
जेहिविधिहोइ राम कल्याना ❀ देहु दयाकरि सो वरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल बयनी ❀ बिधुं वदनी मृगशावकनयनी ॥
दोहा-रामराज अभिषेक सुनि, हिय हरषीं वर नारि॥
लगीं सुमंगल सजनसब, विधिअनुकूल बिचारि ॥१२॥
तब नरनाह बशिष्ठ बुलाये ❀ राम धाम शिख देन पठाये ॥
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ❀ द्वार आइ नायउ पद माथा ॥
सादर अर्घ्य देइ गृह आने ❀ षोडश भाँति पूजि सनमाने ॥
गहे चरण सिय सहित बहोरी ❀ बोले राम कमल कर जोरी ॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू ❀ मंगल मूल अमंगल दमनूं ॥
तदपि उचित असबोलिसप्रीती ❀ पठइयनाथ काज असनीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्हसनेहू ❀ भयउ पुनीत आजु मम गेहूँ ॥
आर्यंसु होय सो करिय गुसाँई ❀ सेवक लहै स्वामि सेवकाई ॥
दोहा-सुनि सनेहसाने वचन, मुनि रघुवरहि प्रशंस ॥
राम कस न तुम कहहु अस, हंसं वंश अवतंसं ॥१३॥
वरणि राम गुण शील स्वभाऊ ❀ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ❀ चाहत देन तुमहिं युवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू ❀ जो विधि कुशल निबाहै काजू ॥
गुरु शिख देइ राउ पहँ गयऊ ❀ राम हृदय अस विस्मय भयऊ॥
जनमे एक संग सब भाई ❀ भोजन शयन केलि लरिकाई ॥
कर्णवेध उपवीत विवाहा ❀ संग संग सब भयउ उछाहा ॥
विमल वंश यह अनुचित एका ❀ अनुजविहाय बड़ेहिअभिषेका ॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❀ हरेहु भक्त मनकी कुटिलाई ॥
दोहा-त्यहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनंद ॥
सनमाने प्रियवचन कहि, रविकुल कैरवचंद ॥ १४ ॥
बाजहिंबाजन विविध विधाना ❀ पुर प्रमोद नहिं जाइबखाना ॥

१ चन्द्रवदनी । २ नाशकर्ता । ३ घर । ४ आज्ञा । ५ सूर्यवंश । ६ भूषण । ७ चिन्ता ।

भरतआगमन सकल मनावहिं ❀ आवहिं वेगि नयन फल पावहिं॥
हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परस्पर लोग लुगाई ॥
कालि लगन भल केतिकवारा ❀ पूजहिं विधि अभिलाष हमारा॥
कनक सिंहासन सीय समेता ❀ बैठहिं राम होइ चित चेता ॥
सकल कहहिंकबहोइहिकाली ❀ विघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिंसोहात न अवध वधावा ❀ चोरहि चांदनि राति न भावा ॥
शारद बोलि विनय सुर करहीं ❀ वारहिं वार पायँ लै परहीं ॥
दो०-बिपतिहमारिबिलोकिबड़ि, मातुकरियसोइआज ॥
राम जाहिं वन राजतजि, होइ सकल सुर काज ॥१५॥
सुनिसुरविनय ठाढि पछिताती ❀ भयउ सरोज विपिन हिमराती॥
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी ❀ मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी ॥
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ ❀ तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ ॥
जीवकर्म्मवश दुख सुख भागी ❀ जाइय अवध देव हित लागी ॥
बार बार गहि चरण सकोची ❀ चली विचारिविबुध मति पोची॥
ऊंच निवास नीच करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ विभूती॥
आगिल काज विचारि बहोरी ❀ करिहैं चाह कुशल कविसोरी॥
हरषि हृदय दशरथ पुर आई ❀ जनु ग्रह दशा दुसह दुखदाई ॥
दोहा—नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि कैकयी केरि ॥
अयश पिटारी ताहि करि,गई गिरा मति फेरि ॥ १६ ॥
देखि मन्थरा नगर बनावा ❀ मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥
पूँछिसि लोगन काह उछाहू ❀ रामतिलक सुनि भा उर दाहू॥
करै विचार कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाज कवन विधि राती ॥
देखिलागु मधु कुटिल किराती ❀ जिमिगँवतकेलेउँ क्यहिभाँती ॥
भरतमातु पहँ गइ विलखानी ❀ का अनमनि हँसिहँसि कह रानी॥
उतर न देइ सो लेइ उसांसू ❀ नारि चरित करि ढारति आंसू ॥
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे ❀ दीन्ह लखण शिख अस मन मोरे॥

---

१ सम्पदा । २ बाणी

तबहुँ न बोलिचेरिबड़िपापिनि ❋ छाँड़ैश्वास कारि जनु सांपिनि ॥
दोहा—सभयरानिकहकहसिकिन, कुशलराममहिपाल
भरतलषणरिपुदमनसुनि, भा कुबरी उर शाल ॥१७॥
कत शिषदेहि हमाहिं कोउमाई ❋ गालकरब केहि कर बल पाई ॥
रामहिंछांडि कुशल केहिआजू ❋ जाहि नरेश देत युवराजू ॥
भाकौशल्यहि विधि अतिदाहिन ❋ देखत गर्व रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सब शोभा ❋ जो अवलोकि मोर मन क्षोभा ॥
पूत विदेश न शोच तुम्हारे ❋ जानतिहो बश नाह हमारे ॥
नींद बहुत प्रियसेज तुराई ❋ लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनि प्रियवचनकुटिलमनजानी ❋ झुकीरानि तब मन अरगानी ॥
पुनिअसकबहुँ कहसि घरफोरी ❋ तो धरि जीह कढावों तोरी ॥
दोहा—काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ॥
तिय विशेष पुनिचेरि कहि, भरतमातु मुसुकानि ॥१८॥
प्रियवादिनि शिष दीन्हिउतोहीं ❋ स्वप्नेहु तोपर कोप न मोहीं ॥
सुदिन सुमंगलदायक सोई ❋ तोर कहा फुर जादिन होई ॥
ज्येठ स्वामि सेवकलघु भाई ❋ यह दिनकर कुलरीति सुहाई ॥
राम तिलक जो साँचहु काली ❋ माँगु देउँ मन भावत आली ॥
कौशल्या सम सब महतारी ❋ रामहिंसहज स्वभाव पियारी ॥
मोपर करहिं सनेह विशेषी ❋ मैं करि प्रीति परीक्षा देखी ॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू ❋ होहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्राणते अधिक राम सिय मोरे ❋ तिनके तिलक क्षोभकस तोरे ॥
दोहा—भरतशपथतोहिंसत्यकहु, परिहरिकपटदुराव ॥
हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥१९॥
"सुनत वचन मंथरा रिसानी ❋ बोली वचन कपट छल सानी" ॥
एकहिवार आश सब पूजी ❋ अबकछु कहब जीभ करिदूजी ॥
फोरे योग कपार अभागा ❋ भलो कहत दुख रौरेहु लागा ॥

१ नृपति-दशरथ। २ रजाई। ३ सिमिटिके चुपहे रही। ४ जिह्वा। ५ छोटा। ६ सन्देह।

कहइ झूंठ फुर बात बनाई ❀ सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई॥
हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती ❀ नाहिंतो मौन रहब दिनराती ॥
करिकुरूप विधि परवशकीन्हा ❀ वाचा शाल हमैं तिन्ह दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी ❀ चेरि छाँडि अब होब किरानी ॥
जारै योग स्वभाव हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा॥
ताते कछुक बात अनुसारी ❀ क्षमब देवि बड़ चूक हमारी ॥
दोहा-गूढ़कपटप्रियवचनसुनि, तियअधीरबुधिरानि ॥
सुरमायावशवैरिणिहि, सुहृदेजानिपतिआनि ॥ २० ॥
सादर पुनि पुनि पूँछति ओही ❀ शबरी नाद मृगी जनुमोही ॥
तस मतिफिरी अहै जसभावी ❀ रहँसी चेरि घात भलि फावी॥
तुम पूँछहु मैं कहत डराऊं ❀ धरेहु मोर घरफोरी नाऊं ॥
सजिप्रतीति बहुविधि गढिछोली ❀ अवधसाढसाती जनुबोली ॥
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी ❀ रामहिंतुम प्रिय सो फुरबानी ॥
रहे प्रथम दिन सो अब बीते ❀ समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुल पोषनि हारा ❀ बिनु जल जारि करै सो क्षारा॥
जर तुम्हारि चह सवति उपारी ❀ रूँधहुकरि उपाइ वरवारी ॥
दोहा-तुमहिं न शोच सुहाग बल, निज वश जानहु राव
मन मलीन मुँह मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव॥२१॥
चतुर गँभीर राम महतारी ❀ बीच पाइ निज काज सँवारी ॥
पठये भरत भूप ननिऔरे ❀ राम मातु मत जानव रौरे ॥
सेवहिंसकल सवति मोहिं नीके ❀ गर्वित भरत मातु बल पीके ॥
शाल तुम्हार कौशिलहिमाई ❀ चतुर कपट नहिं परत लखाई॥
राजहिं तुम पर प्रीति विशेषी ❀ सवति स्वभाव सकै नहिं देखी॥
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई ❀ राम तिलक हित लगनधराई॥
इहि कुल उचित रामकहँ टीका ❀ सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका॥
आगिलबात समुझि डरमोहीं ❀ दैव देव फल सो फिरि ओहीं ॥

१ मनास्थिर। २ मित्र। ३ किरातनी। ४ हर्षितहोती भई। ५ शनैश्वरकीदशा

दो॰-रचिपचिकोटिककुटिलपन, कीन्हेसिकपटप्रबोध ॥
कहेसि कथा शतसौतिकर, जाते बढ़ै विरोध ॥ २२ ॥
भावी वश प्रतीति उर आई ❀ पूँछिरानि निज शपथ दिवाई ॥
का पूँछहु तुम अजहुँ नजाना ❀ हितअनहितनिजपशुपहिचाना ॥
भये पाख दिन सजतसमाजू ❀ तुम सुधि पायहु मोसनआजू ॥
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे ❀ सत्य कहौं नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई ❀ तौविधि देइहिं मोहिं सजाई ॥
रामहितिलक कालिजोभयऊ ❀ तुमकहँ विपतिबीज विधिवयऊ ॥
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी ❀ भामिनि भइउ दूधकी माखी ॥
जोसुत सहित करहु सेवकाई ❀ तौघर रहहु न आन उपाई ॥
दोहा-कद्रू विनतहि दीन दुख, तुमहिं कौशला देब ॥
भरत वन्दि गृह सेइहैं, राम लषण कर नेब ॥ २३ ॥
केकयसुता सुनत कटु बानी ❀ कहि न सकै कछु सहमिसुखानी ॥
तनु पसेव[1] कदली[2] जनु कांपी ❀ कुबरी दशन[3] जीह तब चापी ॥
कहि कहि कोटिककपटकहानी ❀ धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
कीन्हसिकठिन पढाय कुपाठू ❀ जिमि न नवै फिरि उकठाकाठू ॥
फिरा कर्म प्रिय लागि कुचाली ❀ बकिहि[4] सराहत मनहुँ मराली ॥
सुन मंथरा बात फुर तोरी ❀ दहिनिआँखि नितफरकतिमोरी ॥
दिन प्रति देखों राति कुसपना ❀ कहौं न तोहिंमोह वश अपना ॥

* कश्यप मुनिकी दो स्त्री, तिसमें सर्पकी माता कद्रू और पक्षीकी माता विनता सो कद्रूने विनतासे पूँछा कि सूर्यके घोड़ेकी पूँछ कौन रंगकीहै विनताने उत्तरदिया कि उज्ज्वल कद्रू बोली नहीं श्याम रंगकी है इसमें दोनोंने प्रतिउत्तर करके यह बात ठहराई कि इसमें जो हारे सो दासी बनके रहै यह निश्चय करनेके निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रूकी आज्ञानुसार सर्प जायकै घोडोंकी पूंछमें लिपटगये तब कद्रूने छलसे विनताको दिखला दिया कि देखो पूंछकारंग कालाहै विनता लज्जितहोय दासभाव अंगीकारकर सेवामें रहनेलगी.

१ तनुमें पसीना चलाहै । २ केला । ३ दांत । ४ बकुली ।

काह कहौं सखि शुद्ध स्वभाऊ ❀ दहिन वाम नहिं जानौं काऊ ॥
दोहा-अपनेचलतनआजुलगि, अनभलकाहुककीन्ह॥
केहि अघ एकहि बार मोहिं, दैव दुसहदुख दीन्ह ॥२४॥
नैहर जन्म भरव वरु जाई ❀ जियत न करव सवति सेवकाई॥
अरि वश दैव जिआवै जाही ❀ मरण नीक त्यहि जियव न चाही॥
दीन वचन कह बहुविधिरानी ❀ सुनि कुवरी तिय माया ठानी ॥
असकसकहहु मानि मन ऊना ❀ सुख सुहाग तुम कहँ दिन दूना ॥
जोराउर अस अनभल ताका ❀ सो पाइहि यह फल परिपाका ॥
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि ❀ भूँख न वासर नींद न यामिनि ॥
पूँछा गुणिन्ह रेख तिन खांची ❀ भरत भुआल होव यह सांची ॥
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ ❀ हैं तुम्हरे सेवा वश राऊ ॥
दोहा-परौं कूप तव वचन लगि, सकौं पूतपतित्यागि ॥
कहसिमोरदुखदेखिबड़, कस न करबहित लागि॥२५॥
कुवरी करी कुवलि कैकेयी ❀ कपट छुरी उर पाहन टेयी ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे ❀ चरै हरित तृण बलि पशु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अन्त कठोरी ❀ देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं ❀ स्वामिनि कह्यहुकथामोहिंपाहीं॥

* एक समय दैत्यों ने लड़ाई करके इन्द्रको पराजय किया तब इंद्र राजा दशरथके पास आ इन्हें दैत्योंपर चढा लेगये तहां कैकेयीभी गई रही युद्धमें दशरथके रथका चक्रावलंब टूट गया कैकेयी यह देख रथपरसे उतर अपनी भुजापर चक्रका आधार करलिया जब दशरथ महाराजने दैत्योंको पराजय कर जय पाई तब कैकेयी बोली कि महाराज रथमेंसे उतरिये तब ज्योंही महाराज उतरे और कैकेयीने हाथ खींचलिया रथ टूट पड़ा यह समाचार देख दशरथने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायतासे हुई दो वर-दान जो तू मांगे सो हम देवैं तब कैकेयी बोली महाराज यह दोनों वरदान मेरा थाती रख छोडिये जब मुझे कार्य होगा तब मांग लूंगी ॥

१ शत्रुकेवश । २ हठकरिकै । ३ दिन । ४ रात्रि ।

दुइ वरदान भूप सन थाती ❀ माँगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहिं राज रामहिं वनवासू ❀ देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम शपथ जब करई ❀ तब माँग्यहु जेहिवचन न टरई॥
होइ अकाज आज निशिबीते ❀ वचन मोर प्रिय मानहु जीते ॥
दोहा—बड़कुघातकरि पातकिनि, कहेसिकोपगृहजाहु॥
काज सँवारहुसजगसब, सहसा जनि पतियाहु ॥२६॥
कुबरिहि रानि प्राण सम जानी ❀ बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा ❀ बहे जात कर भयसि अधारा ॥
जो विधि पुरव मनोरथ काली ❀ करौं तोहिं चख पूतरि आली॥
बहु विधि चेरिहि आदर देयी ❀ कोप भवन गवनी कैकेयी ॥
विपति बीज वर्षाऋतु चेरी ❀ भुइँ भइ कुमति कैकयी केरी॥
पाइ कपट जल अंकुर जामा ❀ वर द्वउदलफलदुखपरिणामा ॥
कोप समाज साज सजि सोई ❀ राज्यकरतत्यहिकुमतिविगोई ॥
राउर नगर कोलाहल होई ❀ यह कुचालकछु जान न कोई॥
दोहा—प्रमुदित पुर नर नारि सब,साजि सुमंगलचार ॥
इक प्रविशहिं इक निकसहीं,भीर भूप दरबार ॥२७॥
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं ❀ मिलि दश पाँचरामपहँजाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी ❀ बूझहिं कुशल क्षेम मृदुबानी ॥
फिरहिं भवन प्रभु आयसुपाई ❀ करत परस्पर राम बड़ाई ॥
को रघुवीर सरिस संसारा ❀ शील सनेह निबाहन हारा ॥
ज्यहिज्यहियोनि कर्मवशभ्रमहीं ❀ तहँ तहँ ईश देहिं यह हमहीं॥
सेवक हम स्वामी सिय नाहू ❀ देय ईश यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाष नगरसबकाहू ❀ केकय सुता हृदय अतिदाहू॥
को न कुसंगति पाइ नशाई ❀ रहै न नीच मते चतुराई ॥
दोहा—साँझ समय सानन्द नृप, गये कैकयी गेह ॥
गवन निठुरता निकट किय,जनु धरि देह सनेह ॥२८॥

१भरत। २ आनन्द। ३सौगंध—कसम। ४शीघ्र। ५ आंखकीपुतली। ६फल। ७ प्रसन्नचित्त।

कोप भवन सुनि सकुचे राऊ ❀ भय वश अगे परै न पाऊ ॥
सुरपति बसै बाहुबल जाके ❀ नरपतिरहहिं सकल रुखताके॥
सो सुनि तिय रिसि गये सुखाई ❀ देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
शूल कुलिश असिअँगवनिहारे ❀ ते रतिनाथ सुमनं शरमारे ॥
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ ❀ देखि दशा दुख दारुण भयऊ॥
भूमि शयन पट मोट पुराना ❀ दिये डारि तनु भूषण नाना ॥
कुमतिहि कस कुरूपता फाबी ❀ अनअहिवात सूच जनुभाबी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी ❀ प्राणप्रिया केहिहेतु रिसानी ॥
छं०-केहि हेतुरानि रिसानि परसतपाणिपतिहिनिवारई॥
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि विषम भाँति निहारई ॥
दोउ वासना रसना दशन वर मर्मठाहर देखई ॥
तुलसीनृपतिभवितव्यतावशकामकौतुक लेखई॥ १ ॥
सो०-बारबार कहराव, सुमुखिसुलोचनिपिकवचनि ॥
कारण मोहिंसुनाव, गजगामिनि निजकोपकर ॥ १ ॥
अनहिततोरप्रियाकेहि कीन्हा ❀ केहिदुइशिरकेहियमचहलीन्हा॥
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू ❀ कहु क्यहि नृपहिं निकारौं देशू॥
सकौं तोर अरि अमरहुं मारी ❀ कहा कीट वपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर स्वभाव वरोरू ❀ तुम मुख मम दृगचंद्रचकोरू॥
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे ❀ परिजन प्रजा सकलवशतोरे ॥
जो कछु कहौं कपट करितोहीं ❀ भामिनि राम शपथ शतमोहीं॥
विहँसि माँगु मनभावति बाता ❀ भूषण साजु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू ❀ वेगि प्रिया परिहरहु कुवेषू ॥
दो०-यहसुनिमनगुणिशपथबड़ि, विहँसिउठीमतिमन्द ॥
भूषणसजातिविलोकिमृग, मनहुँकिरातिनिफन्द ॥ २९ ॥
पुनि कहराउसुहृदजियजानी ❀ प्रेमपुलकि मृदुमंजुल बानी ॥

१ इन्द्र। २राजा। ३ कामदेव। ४ पुष्पबाण। ५ अशोभित। ६ विषवापन। ७भावितव्यता। ८ दलिद्रीको। ९देवता। १० श्रेष्ठहृदय किन्तु श्रेष्ठजंघावाली।

भामिनि भयउ तोरमनभावा ❀ घर घर बजत अनन्द बधावा ॥
रामहिं देउँ कालि युवराजू ❀ सजहु सुलोचनि मंगलसाजू ॥
दलकिउठी सुनि वचन कठोरा ❀ जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा ॥
ऐसी पीर विहँसि तेहि गोई ❀ चोर नारि जिमि प्रगट नरोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई ❀ कोटि कुटिल मति गुरूपढ़ाई ॥
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू ❀ नारि चरित जलनिधिअवगाहू ॥
कपट सनेह बढाइ बहोरी ❀ बोली विहँसि नयन मुखमोरी ॥

दोहा–माँगु माँगु पै कहहु पिय, कबहूँ देहु न लेहु ॥
देन कह्यउ वरदान दुइ, त्यउ पावत सन्देहु ॥ ३० ॥

जान्यउँ मर्म्म राउ हँसि कहई ❀ तुमहिंकोहाब परम प्रिय अहई ॥
थातीराखि न माँग्यउ काऊ ❀ बिसरि गयो मम भोर स्वभाऊ ॥
झूठहि दोष हमहिं जनिदेहू ❀ दुइके चारि माँगि किन लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलिआई ❀ प्राण जाइँ बरु वचन न जाई ॥
नहिं असत्यसम पातकपुंजा ❀ गिरिसम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
सत्य मूल सब सुकृत सुहाई ❀ वेद पुराण विदित मुनि गाई ॥
त्यहिपर रामशपथ करवाई ❀ सुकृतसनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसिबोली ❀ कुमति विहंग कुलह जनु खोली ॥

दोहा–भूप मनोरथ शुभग वन, सुख सुविहंग समाज ॥
भिल्लिनि जनु छाँडनचहत, वचन भयंकरबाज ॥ ३१ ॥

सुनहु प्राणपति भावति जीका ❀ देहु एक वर भरतहिं टीका ॥
दूसर वर माँगौं करजोरी ❀ नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
तापस वेष विशेष उदासी ❀ चौदह वर्ष राम वनवासी ॥
सुनितिय वचन भूप उरशोकू ❀ शशिकरछुवतविकलजिमिकोकू ॥
गये सहमि कछु कहि नहिं आवा ❀ जनुशचान वन झपट्यउ लावा ॥
विवरणभयउ निपट महिपालू ❀ दामिनि हनेउ मनहुँ तरुतालू ॥

१ छिपाई। २ अथाह। ३ भेद। ४ रत्ती। ५ मर्यादा। ६ [illegible]रण। ७ चकई-चकवा तथा कोकनद कमल। ८ बाज। ९ [illegible]टेर

माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन ❋ तनुधरि शोच लागुजनु शोचन॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूला ❋ फलत करिणि जनुहतेउसमूला॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी ❋ दीन्ह्यसि अचल विपति कैनेयी॥
दोहा–कवने अवसर का भयउ, गयउ नारि विश्वास॥
योगसिद्धफलसमयजिमि, यतिहि अविद्यानाश॥३२॥
इहि विधि राउ मनहिं मनदहई ❋ देखि कुभाँति कुमति असकहई॥
भरत कि राउर पूत न होहीं ❋ आनेहु मोल वेसाहि कि मोहीं॥
जो सुनि शरसम लाग तुम्हारे ❋ काहे न बोलहु वचन सँभारे॥
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं ❋ सत्यसिन्धु तुम रघुकुल माहीं॥
देन कह्यउ वर अब जनिदेहू ❋ तजहु सत्य जग अपयश लेहू॥
सत्य सराहि कह्यउ वर देना ❋ जान्यहु लेइहि माँगि चवेना॥
शिविदधीचिवलिजोकछुभाषा ❋ तनुधन तजेउ वचन प्रणराखा॥

❋ राजाशिवि जब ९२ यज्ञ करचुके और आगे फिर आरंभ किया तब इन्द्रको भय हुआ कि अब यह आठ यज्ञ कर मेरा पद लैंलेगे यह शोच अग्निको कपोत और आप बाज बन उसके मारनेको चला तब वोह भागा-हुआ राजाकी शरणमें गया राजाने उसका वचन सुन बाजको देख यज्ञशालामें अपनी गोदीमें छिपा लिया और बाजको निवारणकिया बाज बोला महाराज आप यह क्या अनर्थ करतेहैं कि मेरा आहार छीनलिया मैं भूखमें शरीरको छोड आपको पापका भागी करूंगा तब राजाने कहा इसे तो नहीं देंगे इसके पलटेमें जो मांगो सो दें बहुत झगडेके उपरान्त यह बात ठहरी कि राजा अपने शरीरका मांस कबूतरकी बराबर तौलदे तौ मैं कबूतरको छोडदूं इसबातसे राजा प्रसन्न होय तुला में एकओर कबूतरको बैठाय दूसरी ओर अपने शरीरका मांस काटकै चढाने लगे जब सब शरीरका मांस काटकाटकै चढाय दिया और वोह बराबर न हुआ तो जभी राजा गलेपर खड्ग चलानेको हुआ तौ त्योंही विष्णुने अपना दर्शन दे कृतार्थ कर मुक्तिदी.

+ जब वृत्रासुरके कष्टसे इंद्र देवोंके समेत अतिदुःखी होय विष्णुके पास गये तब उन्होंने उत्तर दिया कि राजर्षि दधीचिजी नैमिषारण्यमें तपस्या

१ कल्पवृक्ष २ हथिनी।

अति कटु वचन कहति कैकेयी ❀ मानहुँ लोन जरे पर देयी ॥
दोहा-धर्म्म धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ॥
शिर धुनि लीन्हउसासअति, मारेसिमोहिंकुदाउ॥३३॥
आगे देखि जरति रिसि भारी ❀ मनहुँ रोष तरवारि उघारी॥
मूढ कुबुद्धि धार निठुराई ❀ धरिकुबरी खर सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा ❀ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती ❀ वाणी विनय न ताहि सुहाती॥
प्रिया वचन कस कहसि कुभाँती ❀ रीति प्रतीति प्रीति करिघाती ॥
मोरे भरत राम दोउ आंखी ❀ सत्य कहौं करि शंकर साखी॥
अवशि दूत मैं पठउब प्राता ❀ ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिनसाधि सब साज सजाई ❀ देहौं भरतहिं राज्य बजाई ॥
दोहा--लोभ न रामहिं राज्य कर, बहुत भरतपरप्रीति ॥
मैं बड़ छोट विचार करि, करत रहेउँ नृपनीति ॥३४॥
राम शपथशत कहौं स्वभाऊ ❀ राम मातु मोहिं कहा न काऊ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूँछे ❀ ताते पय्यउ मनोरथ छूँछे ॥

करतेहैं उनका हाड तुम लोग लेआवो तब उस हाडसे शस्त्र बने उससे यह दैत्य पराजय होगा तब इंद्रने सब देवोंके समेत दधीचिऋषिके पास जाय निवेदन किया तब ऋषिने अपनी अस्थि देवताओंको दे प्रसन्नतासे शरीर छोडा इन्द्रने अस्थि ले वज्र बनाय दैत्योंको पराजय किया.

×जब राजा बलि त्रिलोकीके अधीश्वर हुये तब इंद्र व्याकुल हो विष्णुके पास गये तब भगवान्ने कहा धीरजधरो तुम्हारासज्य हम दिवादेंगे ऐसा कह अदितिसे जन्मले वामनरूप धारणकर राजा बलिके यज्ञमेंगये और राजाको वचनबंधकर तीनचरण पृथ्वी दान मांगी बलिने जल हाथमें ले संकल्प करदी तब वामनजीने विराट्रूप धारणकर दो पगमें ब्रह्मलोकपर्यन्त नाप-लिया पुनि राजासे कहा अब एक चरण जो शेष रहा सो लाइये तब राजाने कहा मेरी पीठ नाप लीजिये महाराज इनसे प्रसन्नहो बोले कि वर मांगो राजा बलिने यही वर मांगा कि वामनरूप आपका मेरे द्वारपर खडा रहै.

रिस परिहरि अब मंगल साजू ❀ कछु दिन गये भरत युवराजू ॥
एकहिं बात मोहिं दुख लागा ❀ बर दूसर असमंजस माँगा ॥
अजहूं हृदय दहत त्यहि आँचा ❀ रिस परिहास कि साँचहुसाँचा ॥
कहु तजि रोष राम अपराधू ❀ सब कोउ कहतराम सुठि साधू॥
तुमहुँ सराहसि करसि सनेहू ❀ अब सुनि मोहिं परम सन्देहू॥
जासुस्वभाव अरिहु अनुकूला ❀ सोकिमि करहिमातु प्रतिकूला॥
दोहा—प्रियाहास्य रिस परिहरहु, माँगुविचारि विवेक॥
ज्यहि देखों अब नयन भरि, भरतराजअभिषेक॥३५॥
जियै मीन वरु बारि विहीना ❀ मणि बिनु फणिकजियैदुखदीना
कहौं स्वभाव न छल मन माहीं ❀ जीवन मोर राम बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना ❀ जीवन दशरथ राम अधीना ॥
सुनि मृदुवचन कुमति अतिजरई ❀ मनहुँ अनल आहुति घृतपरई॥
कहहु करहु किन कोटि उपाया ❀ इहां न लागिहि राउर माया ॥
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं ❀ मोहिं न बहु परपंच सोहाहीं॥
राम साधु तुमसाधु सुजाना ❀ राम मातु तुम भलि पहिचाना॥
जस कौशला मोर भलताका ❀ तस फल देउँ उन्हेंकरि शाका ॥
दोहा—होत प्रात मुनि वेष धरि, जो न राम वन जाहिं ॥
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मन माहिं ॥
असकहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ❀ मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई ❀ भरी क्रोध जल जाइ न जोई॥
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा ❀ भवँर कूबरी वचन प्रचारा॥
ढाहति भूप रूप तरु मूला ❀ चली विपति वारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब साँची ❀ तिय मिसु मीच शीशपरनाची॥
गहि कर विनय कीन्ह बैठारी ❀ जनि दिनकर कुल होसिकुठारी॥
माँगु माथ अबहीं देउँ तोहीं ❀ राम विरह जनि मारसि मोहीं॥
राखुरामकहँ ज्यहित्यहिभाँती ❀ नाहिंत जरिहि जन्म भरिछाती

१ सर्प । २ अग्नि । ३ छलछन्द ।

दो.-देखीव्याधि असाध्यनृप, परयउधरणिधुनिमाथ ॥
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥ ३७ ॥

व्याकुल राउ शिथिल सब गाता ❀ करिणिंकलपतरुमनहुँनिपाता ॥
कण्ठ सूख मुख आव न वानी ❀ जिमि पाठीनं दीनविनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी ❀ मर्म पाछि जनु माहुरदेयी ॥
जो अन्तहु अस करतव रहेऊ ❀ माँगु माँगु केहिके बल कहेऊ ॥
दुइ कि होंइ इक संग भुआलू ❀ हँसव ठठाइ फुलाउव गालू ॥
दानि कहाउव अरु कृपणाई ❀ चाहिय क्षेम कुशल रौताई ॥
छाँडहु वचन कि धीरज धरहू ❀ जनि अवलाइव करुणा करहू ॥
तनु तिय तनय धाम धन धरणी ❀ सत्यसिंधु कहँ तृण सम वरणी ॥
दीन दान फिरि माँगहु राजा ❀ परिहरि लोक वेदकी लाजा ॥

दोहा-मर्मवचनसुनि राउ कह, कछुक दोषनहिं तोर ॥
लाग्यउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर ॥ ३८ ॥

चहत न भरत भूपपद भोरे ❀ विधि वश कुमतिवसीउरतोरे ॥
सो सब मोर पाप परिणामू ❀ कछु न बसाइ भयोविधिवामू ॥
सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई ❀ सब गुण धाम राम प्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई ❀ होइहै तिहुँपुर राम बड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुयउ मेटि नहिं जाइहि काऊ ॥
अब तोहिं नीक लागु करसोई ❀ लोचन ओट वैठु मुखगोई ॥
जौलौं जियौं कहौं करजोरी ❀ तौलौं जनि कछुकहसिबहोरी ॥
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी ❀ मारसि गाय नाहरू लागी ॥

दोहा-परयउ राउ कहिकोटिविधि,काहेकरसिनिदान
कपट चतुर नहिं कहति कछु,जागति मनहुँ मशान ३९

राम राम रटि विकल भुआलू ❀ जनु विनु पंख विहंग विहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई ❀ रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥

---

१ दुःखित वचन। २ हथिनी। ३ पढिनामछली। ४ भूलिहूकर। ५ फल।
६ आँखोंकी आड। ७ मुखछिपाकर।

उदय करहु जनिरविं रवि कुलगुर ❀ अवध विलोकिशूलहोइहिउर ॥
भूप प्रीति केकयि निठुराई ❀ उभय अवधि विधि रचीवनाई ॥
विलपत नृपहिं भयउ भिनुसारा ❀ वीणा वेणु शंख ध्वनि द्वारा ॥
पढहिं भाट गुणगावहिं गायक ❀ सुनतनृपहिलागतजनुशायक ॥
मंगल सकल सोहाइ न कैसे ❀ सहगामिनी विभूषण जैसे ॥
त्यहि निशि नींद परीनहिं काहू ❀ राम दरश लालसा उछाहू ॥
"कवहिं उदय रविहोहिं विहाना ❀ देखव नयनन कृपानिधाना ॥
गज आरूढ राम सिय संगा ❀ शोभातनु शतकोटि अनंगा ॥
करत मनोरथ रैनि सिरानी ❀ प्रात प्रकट जागे मुनिज्ञानी" ॥

दोहा–द्वार भीरसेवकसचिव, कहहिं उदय रवि देखि ॥
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेपि ॥४०॥

पिछले पहर भूप नित जागा ❀ आजु हमहिंवड़अचरजलागा ॥
जाहु सुमन्त जगावहु जाई ❀ कीजिय काज रजायसु पाई ॥
गे सुमन्त नृप मन्दिर माहीं ❀ देखि भयानक जात डराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जात न हेरा ❀ मानहुँ विपति विपाद वसेरा ॥
पूँछत कोउ न उतर कछु देई ❀ गे ज्यहि भवन भूप कैकेयी ॥
कहि जयजीव बैठि शिरनाई ❀ देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥
शोक विकल विवरणमहि परेऊ ❀ मानहु कमल मूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकहि नहिं पूँछी ❀ वोली अशुभ भरी शुभ छूँछी ॥

दोहा–परी न राजहिं नींद निशि, मर्म्म जानु जगदीश ॥
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश ॥ ४१ ॥

आनहु रामहिं वेगि बुलाई ❀ समाचार तव पूछहु आई ॥
चलयउसुमन्त राउ रुख जानी ❀ लखी कुचालिकीन्हकछु रानी ॥
शोच विवश मग परै न पाऊ ❀ रामहिं वोलि कहहिं का राऊ ॥
उर धरि धीरज गयउ दुआरे ❀ पूँछहिं सकल देखि मनमारे ॥
समाधान मन कर सवहीका ❀ गये जहाँ दिनकर कुलटीका ॥
राम सुमन्तहि आवत देखा ❀ आदर कीन्ह पिता सम लेखा ॥

निरखि वदन कहि भूप रजाई ❀ रघुकुल दीपहि चले लिवाई ॥
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं ❀ देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं[1] ॥
दोहा-जाइ दीखरघुवंश मणि, नरपति निपट कुसाज ॥
सहमिपरचउलखि सिंहनिहिं, मनहुँवृद्धगजराज॥४२॥
सूखे अधर[2] जरे सब अंगा ❀ मानहुँ दिनमणि हीन भुजंगा ॥
सरुष समीप देखि कैकेयी ❀ मानहुँ मृत्यु घरी गनि लेई ॥
करुणामय रघुनाथ स्वभाऊ ❀ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समय विचारी ❀ पूछा मधुर वचन महतारी ॥
मोहिं कहु मातु तात[3] दुखकारण ❀ करिय यत्न ज्यहिहोइ निवारण ॥
सुनहु राम सब कारण एहू ❀ राजहिं तुम पर बहुत सनेहू ॥
देन कह्यउ मोहिं दुइ वरदाना ❀ माँग्यउँ जो कछु मोहिंसुहाना ॥
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू ❀ छाँडि न सकहिं तुम्हार सँकोचू॥
दोहा-सुत सनेह इत वचन उत, संकट परयउ नरेश ॥
सकहु तो आयसु शीश धरि, मेटहु कठिन कलेश४३॥
निधरक बैठि कहति कटुबानी ❀ सुनत कठिनता अति अकुलानी॥
जीभकमान वचन शरजाना ❀ मनहुँ भूप मृदुलक्ष[4] समाना ॥
जनु कठोरपन धरे शरीरा ❀ सीख धनुष विद्या वरवीरा ॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई ❀ बैठी जनु तनु धरि निठुराई ॥
मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू ❀ राम सहज आनन्द निधानू ॥
बोले वचन विगत[5] सब दूषण ❀ मृदु मंजुल[6] जनु बाँग[7]विभूषण[8] ॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी ❀ जो पितु मातु वचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु पोषण हारा ❀ दुर्लभ जननी यह संसारा ॥
दोहा-मुनिगणमिलनविशेषवन, सबहिभाँतिभलमोर ॥
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि, सम्मत जननीतोर ॥४४॥
भरत प्राणप्रिय पावहिंराजू ❀ विधिसब विधिमोहिं सन्मुखआजू॥

१ दुःखितहोतेहैं। २ ओष्ठ। ३ पिता। ४ निशाना। ५ रहित। ६ निर्मल। ७ सरस्वती। ८ शृंगार।

जो नजाहुँ वंन ऐस्यहु काजा ❀ प्रथम गणिय मोहिंमूढसमाजा ॥
सेवहिं रंड कलपतरु त्यागी ❀ परिहरि अमियं लेहिं विप मांगी ॥
तेउ न पाइ अससमयचुकाहीं ❀ देखु विचारि मातु मन माहीं ॥
अम्बएकदुख मोहिं विशेखी ❀ निपट विकल नरनायक देखी ॥
थोरिहि वात पितहि दुखभारी ❀ होतप्रतीति न मोहिं महतारी ॥
राउ धीर गुणे उदधि अगाधू ❀ भामोते कछु बड़ अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहत कछुराऊ ❀ मोर शपथ तोहिं कहु सतिभाऊ ॥

दोहा-सहजसरलरघुवरवचन, कुमतिकुटिलकरिजान॥
चलै जोंकजिमि वक्र गति, यद्यपि सलिलसमान ॥४५॥

रहँसी रानि राम रुख पाई ❀ वोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हारि भरतके आना ❀ हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योग नहिं ताता ❀ जननी जनक वन्धुसुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछु कहहू ❀ तुम पितु मातु वचन रत अहहू ॥
पितहि बुझाय कहो वलि सोई ❀ चौथेपन अघ अयश न होई ॥
तुमसम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे ❀ उचित न तासु निरादर कीन्हे ॥
लागहिं कुमुखि वचन शुभ कैसे ❀ मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातु वचन सब भाये ❀ जिमि सुरसरि गत सलिलसुहाये॥

दोहा--गै मूर्च्छारामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवटलीन्ह
सचिव राम आगमन कहि, विनयसमयसमकीन्ह ॥

जब नृप अंकनि राम पगुधारे ❀ धरि धीरज तव नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे ❀ चरण परत नृप राम निहारे ॥
लिये सनेह विकल उर लाई ❀ गइमणिफणिक वहुरि जिमिपाई॥
रामहिं चितै रहे नरनाहू ❀ चला विलोचन वारि प्रवाहू ॥
शोक विकल कछु कहै न पारा ❀ हृदय लगावत वारहिं वारा ॥
विधिहि मनाव राउ मन माहीं ❀ ज्यहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेशहि कहहिं निहोरी ❀ विनती सुनहु सदाशिव मोरी ॥

१ अमृत । २ शील, शांति, शूरता, दया, उदारता, वैराग्य, ज्ञान, इत्यादिकगुणोंके समुद्रहैं । ३ पानी । ४ हृदयमें हर्षितभई । ५ सुमंतके वचन सुनिकर ।

आशुतोष तुम औढर दानी ❀ आरत हरहु दीन जन जानी ॥

दोहा–तुम प्रेरक सबकेहृदय, सो मति रामहिं देहु ॥
वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शील सनेहु ॥ ४७ ॥

अयश होहु वरु सुयश नशाऊँ ❀ नरक परौं वरु सुरपुर जाऊँ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं ❀ लोचन ओट राम जनि होहीं ॥
असमन गुणत राउ नहिं बोला ❀ पीपर पात सरिस मनडोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमवश जानी ❀ पुनि कछुकहेउ मातुअनुमानी ॥
देश काल अवसर अनुसारी ❀ बोले वचन विनीति विचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई ❀ अनुचित क्षमवजानिलरिकाई ॥
अति लघुबात लागि दुखपावा ❀ काहेन मोहिंकहिप्रथमजनावा ॥
देखि गुसाँइहि पूछेउँ माता ❀ सुनि प्रसंग भा शीतल गाता ॥

दोहा–मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात ॥
आयसु देइय हर्षि हिय, कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४८ ॥

धन्य जन्म जगतीतल तासू ❀ पितहि प्रमोद चरित सुन जासू ॥
चारिपदारथ करतल ताके ❀ प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके ॥
आयसु पालि जन्म फल पाई ❀ ऐहौं वेगहि होहु रजाई ॥
विदा मातुसन आवौं माँगी ❀ चलिहौं वनहिंबहुरि पगलागी ॥
अस कहि राम गवन तब कीन्हा ❀ भूप शोकवश उतर न दीन्हा ॥
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी ❀ छुवत चढी जनुसवतनुबीछी ॥
सुनि भये विकल सकल नरनारी ❀ वेलि विटप जनु लागि दवारी ॥
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई ❀ बड़ विषाद नहिं धीरज होई ॥

दोहा–मुख सूखहिं लोचनश्रवहिं, शोक नहृदयसमाय ॥
मानहुँ करुणारस कटक, उतरा अवध बजाय ॥ ४९ ॥

भलि बनाइ विधि बात विगारी ❀ जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥
यहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ ❀ छाय भवन पर पावक धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चहदीखा ❀ डारि सुधा विष चाहत चीखा ॥

---

१ ब्रह्मा । २ अग्नि । ३ अमृत ।

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी ❀ भइ रघुवंश वेणु वन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा ❀ सुखमहँ शोक ठाट इन ठाटा ॥
सदा राम इहि प्राण समाना ❀ कारण कवन कुटिलपनठाना ॥
सत्य कहहिं कवि नारिस्वभाऊ ❀ सब विधिअगमअगाधदुराऊ ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर[2] गहिजाई ❀ जानि नजाइ नारि गति भाई ॥

दोहा–कानहिं पावक जरिसकै, का न समुद्र समाइ ॥
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ॥५०॥

का सुनाय विधि काह सुनावा ❀ का दिखाइ चह काह दिखावा ॥
एक कहैं भल भूप न कीन्हा ❀ वरविचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा ॥
जोहठ भयो सकल दुख भाजन ❀ अबलाविवश ज्ञानगुणगाजन ॥
एक धर्मपर मिति पहिंचाने ❀ नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने ॥
शिवि दधीचि हरिचन्द्र कहानी ❀ एक एक सन कहहिं बखानी ॥

❀एक समय वशिष्ठजीने विश्वामित्रसे राजा हरिश्चंद्रकी बड़ाईकी कि रघुवंशमें ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्रने राजाकी परीक्षाके अर्थ तपबलसे स्वप्नमें राजासे राज्यभंडार सब संकल्प लेलिया और प्रातःकाल जायकै कहाकि आपने रात्रिको राज्य हमें संकल्प करदिया परन्तु उसकी दक्षिणा दीजिये और राज्य छोड़िये यह सुन राजाने विनती किया कि महाराज मेरे पास कुछ नहींहै इससे यह ऋण रहेगा हम उद्योग करके भरदेवैंगे ऐसा कह स्त्री पुत्रको ले राज्यछोड़ काशीको चले वाटमें विश्वामित्र ब्राह्मणका रूप धरके जो जो शरीर पोषणार्थ किसी उद्योगसे इनको मिले सो भोजन की बेला अपनेको मांगलेवैं इसप्रकार कष्ट सहते २ राजा काशीमें आये तब विश्वामित्रने कहा महाराज मेरी दक्षिणा दीजिये तब राजाने स्त्री पुत्रको एक ब्राह्मणके हाथ बेचडाला वह धनले विश्वामित्रको दिया शेष जो रहा उसके निमित्त आप मशानके अधिकारी के यहां अपनेको प्रतिनिधि किया तब उस मशानाधिकारीने राजाहरिश्चंद्रको मशान घाटपर कर लेनेको नियत किया वहां रहकै अपने स्वामीका काम धर्मपूर्वक किया करैं फिर विश्वामित्रने राजा हरिश्चंद्रके पुत्रको सर्प बन डसा तब उस

१ डार। २ दर्पण। ३ स्त्री।

एक भरत कर सम्मत कहहीं ❀ एक उदास मौन ह्वै रहहीं ॥
कान मूंद कर रद गहि जीहा ❀ एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे ❀ भरत राम कहँ प्राणपियारे ॥
दोहा–चन्द्र श्रवै वरु अनल कण, सुधा होइ विषतूल ॥
स्वप्नेहु कबहुँ न करहिं कछु, भरत रामप्रतिकूल ॥५१॥
एक विधातहि दूषण देहीं ❀ सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं ॥
खरभर नगर शोच सब काहू ❀ दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
विप्रवधू कुलमान्य जठेरी ❀ जेप्रिय परम कैकयी केरी ॥
लगीं देन शिख शील सराही ❀ वचन बाण सम लागहिं ताही ॥
भरत न प्रिय मोहिरामसमाना ❀ सदा कहहु यह सब जग जाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू ❀ केहि अपराध आजु वन देहू ॥
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेशू ❀ प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या अब काह बिगारा ❀ तुम ज्यहि लागि वज्र उर मारा ॥
दो.-सीयकिपियसँगपरिहरिहि, लषणकिरहिहहिंधाम ॥
भरतकि भूजबराजपुर, नृपकिजियहिंविनुराम ॥५२॥
असविचारि जिय छांडहुकोहू ❀ शोक कलंक कोर्ट जनिहोहू ॥
भरतहि अवशि देहु युवराजू ❀ कानन कौन रामकर काजू ॥

मुर्देको उसकी माता जलानेके लिये मशानघाट पर आई तब राजाने कहा यहां जो कर नियतहै सो दोगी तब फूकने पाओगी तब स्त्री रोकै बोलीं कि महाराज मैं तुम्हारी भार्य्याहूं और यह पुत्रहै दैवकी विपरीततासे इस दशाको प्राप्तहुईहूं अब मेरे पास एक कौड़ीभी नहीं हम कहांसे देवें इस बातको सुन राजा हरिश्चन्द्रने कहा मैं धर्मका निरादर नहीं करूंगा इससे विना कर दिये फूकने नहीं पावोगी तब रानी दुःखितहो अपने तनुका वस्त्र उतारनेके लिये हाथ बढानेलगी कि त्रिलोकी कांपगई इतनेमें देवताओं सहित विष्णुभगवान् आगये और कुँवर रोहिताश्वको जिवाय अयोध्याके राज्यपर पुनः स्थापितकिया अन्तमें सबको मुक्तिदी ॥

१ दशन। २ जीभ। ३ मिथ्या। ४ पुण्य। ५ पीडा। ६ राज्यकरहिंगे अर्थात् न करहिंगे। ७ क्रोध। ८ किला। ९ वनमें।

नाहिंन राम राज्यकरभूखे ❀ धर्मधुरीण विषयरस रूखे ॥
गुरुगृह बसहिं राम तजिगेहू ❀ नृपसन असवर दूसर लेहू ॥
रामसरिस सुत कानन योगू ❀ कहाकहहिं सुनि तुम कहँलोगू॥
जो न मानिहौ कहे हमारे ❀ नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे॥
जो परिहास कीन कछुहोई ❀ तो कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई ❀ जेहि विधि शोक कलंकनशाई॥
छंद-ज्यहि भाँतिशोककलंकजायउपायकरिकुलपालहू
हठिफेरुरामहिं जातवन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमिभानुबिनुदिनप्राणबिनुतनुचंद्रबिनुजिमियामिनी
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझुरीजियभामिनी
सो॰सखिनशिखावनदीन्ह,सुनतमधुरपरिणाम हित ॥
तेइँकछुकान नकीन्ह, कुटिलप्रबोधी कूबरी ॥ २ ॥
उतर न देइ दुसह रिस रूखी ❀ मृगिहिचितव जनुबाघिनि भूखी॥
व्याधिअसध्य जानितिनत्यागी ❀ चलींकहति मतिमन्द अभागी ॥
राज्य करत इहि दैव बिगोई ❀ कीन्हासि अस जस करै न कोई॥
इहिविधि विलपहिं पुर नरनारी ❀ देहिं कुचालिहि कोटिक गारी ॥
जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा ❀ कवनराम बिन जीवन आसा ॥
विकल वियोग प्रजा अकुलानी ❀ जिमि जलचरगण सूखत पानी ॥
अति विषाद वश लोग लुगाई ❀ गये मातु पहँ राम गुसाईं ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ ❀ मिटा शोच जनि राखहिं राऊ ॥
दोहा-नव गयन्द रघुवंशमणि, राज अलान समान ॥
छूटिजान वन गवन सुनि,उरआनँदअधिकान॥५३॥
रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा ❀ मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हे ❀ भूषण बसन निछावर कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता ❀ नयन नेह जल पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाये ❀ श्रवत प्रेम रस पयद सुहाये ॥

१ धर्मकी ध्वजाको धारणकरनेवाले । २ हँसी । ३ नवीन हाथीसम । ४ पैरकीबेड़ी ।

प्रेम प्रमोद न कछु कहिजाई ❋ रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर वदन निहारी ❋ बोली मधुर वचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी ❋ कबहिं लग्न मुद मंगलकारी ॥
सुकृत[2] शील सुखसीम[3] सुहाई ❋ जन्म लाभलहि अवधअघाई ॥
दोहा–ज्यहिचाहतनरनारिसब, अतिआरतइहिभाँति॥
जिमिचातकिचातक तृषित, वृष्टिशरदऋतुस्वाति५४॥
तात जाउँ बलि वेगि अन्हाहू ❋ जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितु समीप तब जायहु भैया ❋ भइ बड़ि वार जायबलि मैया॥
मातु वचन सुनि अति अनुकूला ❋ जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुखमकरन्द भरे श्रीमूला[4] ❋ निरखिराममन भँवर न भूला॥
धर्मधुरीण धर्मगति जानी ❋ कहेउ मातुसन अति मृदुवानी॥
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू ❋ जहँ सब भाँति मोर बड़काजू॥
आयसु देहु मुदित[5] मन माता ❋ ज्यहि मुद मंगल कानन जाता॥
जनि सनेह वश डरपसि भोरे ❋ आनँद मातु अनुग्रह[5] तोरे ॥
दोहा–वर्ष चारिदशविपिन[6] वसि, करिपितुवचनप्रमान॥
आय पाँयपुनिदेखिहौं, मन जनिकरसिमलान ॥५५॥
वचन विनीत मधुर रघुवरके ❋ शर सम लाग मातु उर करके॥
सहमि सूखि सुनि शीतल वानी ❋ जिमि जवास पर पावस पानी ॥
कहि न जाय कछु हृदय विषादू ❋ जनु सहमे करि[7] केहरि[8] नादू ॥
नयन सलिल तनु थरथर कांपी ❋ माँजा मनहु मीन कहँ व्यापी॥
धरि धीरज सुतबदन निहारी ❋ गदगद वचन कहतिमहतारी॥
तात पितहिं तुम प्राण पियारे ❋ देखि मुदितनितचरिततुम्हारे॥
राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा ❋ कह्यउजाय वनकेहि अपराधा॥
तात सुनावहु मोहिं निदान[9] ❋ कोदिनकर कुल भयउकृशानू॥
दोहा–निरखिरामरुखसचिवसुत, कारण कहेउबुझाइ॥

१ माता । २ पुण्य । ३ सुखकी मर्य्यादा । ४ सम्पदाको मूल । ५ कृपा । ६ वन ।
७ हाथी । ८ सिंह । ९ कारण ।

सुनि प्रसंग रहि मूकगति, दशा वरणि नाहिं जाइ ॥५६॥
राखि न सकहिं नकहिसक जाहू ❀ दुहूँ भाँति उर दारुण दाहू ॥
लिखत सुधाकर लिखिगा राहू ❀ विधि गतिवाम सदा सबकाहू ॥
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी ❀ भइ गति साँप छछूँदरि केरी ॥
राखौं सुतहि करौं अनुरोधू ❀ धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू ॥
कहौं जान वन तौ बड़ि हानी ❀ संकट शोच विकल भइ रानी॥
बहुरि समुझि तिय धर्म्मसयानी ❀ राम भरतदोउ सुत समजानी॥
सरल स्वभाव राम महतारी ❀ बोली वचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका ❀ पितुआयसु सब धर्म्मक टीका॥
दोहा—राज्य देन कह दीन्हवन, मोहिं न दुख लवलेश॥
तुमविनभरतहिभूपतिहि, प्रजहिं प्रचण्डकलेश ॥५७॥
जो केवल पितु आयसु ताता ❀ तो जनिजाहुजानि बड़ि माता॥
जो पितु मातु कहै वन जाना ❀ तौ कानन शत अवध समाना ॥
पितु वन देव मातु वनदेवी ❀ खग मृग चरण सरोरुह सेवी ॥
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू ❀ वय विलोकि हिय होत हरासू॥
बड़ भागी वन अवध अभागी ❀ जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी॥
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू ❀ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पुत्र परम प्रिय तुम सबहीके ❀ प्राण प्राण के जीवन जीके ॥
ते तुम कहहु मातु वनं जाऊं ❀ मैं सुनि वचन वैठि पछिताऊं ॥
दोहा—यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूँठ सनेह वढ़ाइ ॥
मानिमातुके नातबलि, सुरति विसारिजनिजाइ ॥ ५८ ॥
देव पितर सब तुमहिं गुसाँईं ❀ राखहिं नयन पलक की नाईं ॥
अवधिअम्बु प्रिय परिजन मीना ❀ तुम करुणाकर धर्म धुरीना ॥
अस विचारि सोइ करहु उपाई ❀ सबहि जियत जेहि भेंटहु आई॥
जाहु सुखेन वनहिं बलि जाऊं ❀ करि अनाथ जन परिजन गाऊं॥
सबकरआजु सुकृत फल बीता ❀ भये कराल काल विपरीता ॥

१ शोच । २ अवधि जो चौदह वर्षकी सोई पानी । ३ और प्रियवन्धुमछलीहैं । ४ कुटुंब ।

बहु विधि विलपि चरण लपटानी ❀ परम अभागिनि आपुहिजानी ॥
दारुण दुसह दाह उर व्यापा ❀ वरणि नजाइ विलाप कलापा ॥
राम उठाय मातु उर लावा ❀ कहि मृदुवचन बहुत समुझावा ॥

दोहा—समाचार तेहि समय सुनि, सीयउठी अकुलाय ॥
जाइसासुपग कमल युग, वन्दि बैठि शिरनाय ॥५९॥

दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी ❀ अति सुकुमारि देखिअकुलानी ॥
बैठि नमित मुख शोचति सीता ❀ रूपराशि पति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत वन जीवननाथा ❀ कवन सुकृत सन होइहि साथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राणा ❀ विधि करतब कछुजात न जाना ॥
चारु चरण नख लेखति धरणी ❀ नूपुर[1] मुखर मधुर कवि वरणी ॥
मनहुँ प्रेम वश विनती करहीं ❀ हमहिं सीयपद जनिपरिहरहीं ॥
मंजु विलोचन मोचति बारी ❀ बोली देखि राम महतारी ॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी ❀ सासु श्वशुर परिजनहिं पियारी ॥

दोहा—पिता जनक भूपालमणि, श्वशुर भानुकुल भान ॥
पति रविकुलकैरवविपिन, विधु गुण रूपनिधान ॥६०॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई ❀ रूप राशि गुण शील सुहाई ॥
नयन पुतरि इव प्रीतिबढ़ाई ❀ राखहुँ प्राण जानकिहि लाई ॥
कल्पवेलिजिमिबहुविधि लाली ❀ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयउ विधि वामा ❀ जानि न जाइ काहु परिणामा ॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा ❀ सिय नदीनपगु अवनि[2] कठोरा ॥
जिवन मूरि जिमि जुगवति रहेउं ❀ दीप बाति नहिं टारन कहेउं ॥
सोसियचहति चलन वन साथा ❀ आयसु काह होय रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरण रस रसिक चकोरी ❀ रविरुख नयन सकै किमि जोरी ॥

दोहा—करि केहरि निशिचर चरहिं, दुष्ट जन्तु वनभूरि ॥
विष वाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवन मूरि ॥६१॥

वन हित कोल किरातकिशोरी[3] ❀ रची विरंचि विषय रस भोरी[4] ॥

---

१. पायल । २ पृथ्वी । ३ पुत्री किन्तु षोडश वर्षकी आयु । ४ अज्ञान ।

पाहन कृमिजिमिकठिनस्वभाऊ ❀ तिनहिंकलेश न काननैकाऊ॥
की तापस तिय कानन योगू ❀ जिन तप हेतु तजा सब भोगू॥
सियवनवसिहितातक्यहि भाँती ❀ चित्रलिखितकपिदेखिडराती॥
सुरसर सुभग वनज वनचारी ❀ डावर योग कि हंस कुमारी॥
अस विचारि जस आयसु होई ❀ मैं शिख देउँ जानकिहि सोई॥
जो सिय भवनरहै कह अम्बा ❀ मो कहँ होय प्राण अवलम्बा॥
सुनि रघुवीर मातु प्रियवानी ❀ शील सनेह सुधा जनु सानी॥

दोहा—कहिप्रियवचनविवेकमय, कीन्हमातुपरितोप॥
लगेप्रबोधन जानिकिहि, प्रगट विपिनगुणदोष॥६२॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं ❀ बोले समय समुझि मनमाहीं॥
राजकुमारि शिखावन सुनहू ❀ आनभाँतिजियजनिकछुधरहू॥
आपन मोर नीक जो चहहू ❀ वचन हमार मानि घर रहहू॥
आयसु मोर सासु सेवकाई ❀ सब विधि भामिनिभवनभलाई॥
यहिते अधिक धर्म्मनहिं दूजा ❀ सादर सासु श्वशुर पदपूजा॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी ❀ होइहि प्रेम विकल मति भोरी॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी ❀ सुन्दरि समुझायहु मृदुवानी॥
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं ❀ सुमुखि मातुहित राखौं तोहीं॥

दोहा—गुरुश्रुति सम्मत धर्म फल, पाइय विनहिंकलेश॥
हठ वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश॥६३॥

❀ गालवऋषिने जब वियापढ विश्वामित्रसे कहा कि दक्षिणामांगो तब विश्वामित्र बोले कि दक्षिणा न लेंगे इसपर गालवने प्रत्युत्तर कर हठकिया तब विश्वामित्रने इनको हठीजान सहस्र श्यामैककर्ण घोडे मांगे यह सुन गालवऋषि घोडेकी खोजमें चले ढूँढते ढूँढते तीन राजाओंके यहां दो दो सौ घोडे मिले परन्तु उन राजाओंने कहा कि हमारे पुत्र नहीं है इस्से पुत्रके पलटे में घोडा देंगे फिर गालवने ययाति राजाके पास जाय एक कन्यामांगी उस

---

१ पत्थरके कीडे । २ वन ।

मैं पुनि करि प्रमाण पितुवानी ❀ वेगिफिरब सुनुसुमुखिसयानी॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा ❀ सुन्दरि शिखवन सुनहुहमारा ॥
जो हठ करहु प्रेमवश बामा ❀ तौ तुम दुख पाउब परिणामा॥
कानन कठिन भयंकर भारी ❀ घोर घाम हिम वारि बयारी ॥
कुशकंटक मग कंकर नाना ❀ चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥
चरण कमल मृदुमंजु तुम्हारे ❀ मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे ❀ अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ वृकं केहरि नागा ❀ करहिं नाद सुनि धीरज भागा॥
दोहा-भूमिशयनवल्कलवसन, अँशन कंद फल मूल ॥
तेकिसदासबदिनमिलहिं, समयसमयअनुकूल ॥६१॥
नर अहार रजनीचर करहीं ❀ कपट वेष वन कोटिनधरहीं ॥
लागै अति पहारकर पानी ❀ विपिनविपतिनहिं जातबखानी॥
व्याल कराल विहँग वन घोरा ❀ निशिचरनिकरनारिनर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ❀ मृगलोचनितुम भीरु स्वभाये॥
हंसगमनि तुम नहिं वन योगू ❀ सुनि अपयश देहहिंमोहिंलोगू॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली ❀ जियकी लवण पयोधि मराली॥
नव रसाल वन विहरण शीला ❀ सोहकिकोकिलविपिनकरीला॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी ❀ चन्द्र वदनि दुख काननभारी ॥
दोहा-सहजसुहृदगुरुस्वामिशिख, जोनकरैहितमानि॥
सो पछिताइ अघाइ उर, अवशि होइ हितहानि॥६५॥
सुनि मृदुवचन मनोहर पियके ❀ लोचन नलिन भरे जलसियके ॥

कन्याको वरथा कि चाहै जिस्से पुत्र उत्पन्न करले परन्तु वोह क्वाँरीही बनी रहै वोह कन्या लेजाय तीनों राजाओंको पुत्र उत्पन्न कराय छःसौ घोडे लैके शेषके लिये निराशहो विश्वामित्रके पास जाय निवेदन किया तब विश्वामित्रने दोसौ घोडेकी कीमत एक पुत्र जान उस कन्यामें दो पुत्र उत्पन्न किये और छःसौ घोडे ले गालव को आशीर्वाददे विदा किया ॥

---

१ फल। २ जूती। ३ रीछ। ४ भेडिये। ५ सर्प-हाथी। ६ भोजपत्र। ७ भोजन। ८ राक्षस। ९ लवणसमुद्र। १० हंसिनि।

शीतल शिख दाहक भइ कैसे ❀ चकइहि शरद चांदनी जैसे ॥
उतर न आव विकल वैदेही ❀ तजन चहत मोहिं परमसनेही ॥
वरवश रोकि विलोचन वारी ❀ धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासुपद कह करजोरी ❀ क्षमव मातु वड़ अविनय मोरी ॥
दीनप्राणपति मोहिं शिख सोई ❀ जेहि विधि मोर परमहित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं ❀ पियवियोग सम दुख जगनाहीं ॥
यहि विधि सिय सासुहि समुझाई ❀ कहति पतिहि वर विनय सुनाई ॥
दोहा-प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान ॥
तुम विनुरघुकुलकुमुद विधु, सुरपुरनरकसमान ॥६६॥
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ❀ प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु श्वशुर गुरु सुजन सहाई ❀ सुत सुन्दर सुशील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ❀ पियविनुतियहि तरणिते ताते ॥
तन धन धाम धरणि पुरराजू ❀ पति विहीन सव शोक समाजू ॥
भोग रोग सम भूषण भारू ❀ यमयातना सरिस संसारू ॥१
प्राणनाथ तुम विनु जग माहीं ❀ मोकहँ सुखदकतहुँकोउ नाहीं ॥
जिय विनु देह नदी विनु वारी ❀ तैसहि नाथ पुरुष विनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ❀ शरदविमलविधु वदन निहारे ॥
दोहा-खगमृगपरिजननगरवन, वलकल वसनदुकूल ॥
नाथ साथ सुर सदन सम, पर्णशाल सुखमूल ॥६७॥
वनदेवी वनदेव उदारा ❀ करिहैं सासु श्वशुर सम सारा ॥
कुश किशलय साथरी सुहाई ❀ प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कन्द मूल फल अमिय अहारू ❀ अवध सौध शत सरस पहारू ॥
क्षणक्षण प्रभुपद कमल विलोकी ❀ रहिहौं मुदित दिवसजिमिकोकी ॥
वन दुख नाथ कहेउ वहुतेरे ❀ भय विषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु वियोग लवलेश समाना ❀ सवमिलि होहिं न कृपानिधाना ॥

१ जब शरीरको त्यागजीव धर्मराजके पास जाताहै सो विनदेहदुःख सुखकौन भोगैइस-लिये अंगुष्ठमात्र शरीर धर्मराजकेयहां तैयार रहताहै. उसीको यमयातना कहतेहैं।

अस जियजान सुजानशिरोमनि ❀ लेइय संग मोहिंछाँड़ियजनि ॥
विनती बहुत करौं का स्वामी ❀ करुणामय उर अन्तरयामी ॥
दोहा--राखियअवधजोअवधिलगि,रहतजानियेप्रान ॥
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेह निधान ॥ ६८ ॥
मोहिं मग चलत न होइहि हारी ❀ क्षण क्षण चरणसरोज निहारी ॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं ❀ मारगजनित सकलश्रमहरिहौं ॥
पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं ❀ करिहौं वायु मुदित मनमाहीं ॥
श्रमकण सहित श्याम तनु देखें ❀ का दुख समय प्राणपति पेखें ॥
सम महि तृण तरु पल्लव डासी ❀ पाँय पलोटिहि सब निशिदासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही ❀ लागिहि ताप बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहिं चितवन हारा ❀ सिंहबधुहिजिमिशशकसियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू ❀ तुमहिं उचिततपमोकहँभोगू ॥
दोहा--ऐसहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदयबिलगान ॥
तौ प्रभु विषम वियोग दुख, सहिहैं पामर प्रान ॥ ६९ ॥
असकहि सीय विकल भइ भारी ❀ वचन वियोग न सकी सँभारी ॥
देखि दशा रघुपति जिय जाना ❀ हठराखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानुकुलनाथा ❀ परिहरि शोच चलहु वन साथा ॥
नहिं विषाद कर अवसर आजू ❀ वेगि करहु वन गवन समाजू ॥
कहि प्रिय वचन प्रियहि समुझाई ❀ लगे मातुपद आशिष पाई ॥
वेगि प्रजा दुख मेटहु आई ❀ जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दशाविधि बहुरिकिमोरी ❀ देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई ❀ जननी जियत वदन विधु जोई ॥
दोहा--बहुरि वत्स कहि लाल कहि, रघुपतिरघुवरतात ॥
कबहिं बुलाय लगाय उर, हरषि निरखिहौं गात ॥ ७० ॥
लखि सनेह व्याकुल महतारी ❀ वचन नआव विकल भइभारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह विधिनाना ❀ समय सनेह नजाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पगलागी ❀ सुनिय मातु मैं परम अभागी ॥

सेवा समय दैव वन दीन्हा ❀ मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ॥
तजब क्षोभ जनिछाँडब छोहू ❀ कर्म्मकठिन कछु दोषनमोहू ॥
सुनि सिय वचन सासु अकुलानी ❀ दशाकवन विधि कहौंबखानी ॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही ❀ धरि धीरज उर आशिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा ❀ जबलगि गंग यमुन जलधारा ॥

दोहा-सीतहिं सासु अशीश शिख, दीन्हअनेक प्रकार ॥
चली नाइ पदपद्म शिर, अतिहित बारहिं बार ॥ ७१ ॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये ❀ व्याकुलविलखिवदनउठिधाये ॥
कम्प पुलक तनु नयन सनीरा ❀ गहे चरण अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ❀ मीन दीन जनु जलते काढ़े ॥
शोच हृदय विधिका होनहारा ❀ सब सुख सुकृत सिरान हमारा ॥
मोकहँ काह कहब रघुनाथा ❀ रखिहैं भवन कि लेहहिं साथा ॥
राम विलोकि बन्धु करजोरे ❀ देह गेह सब तृण सम तोरे ॥
बोले वचन राम नयनागर ❀ शील सनेह सरल सुखसागर ॥
तात प्रेमवश जनि कदराहू ❀ समुझि हृदय परिणाम उछाहू ॥

दो.-मातुपितागुरुस्वामिशिख, शिरधरिकारियसुभाय ॥
लहेउ लाभ तिन जन्मकर, नतरु जन्मजगजाय ॥ ७२ ॥

अस जिय जानि सुनहु शिखभाई ❀ करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं ❀ राव वृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं वन जाउँ तुमहिं लै साथा ❀ होइहि सब विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा ❀ सब कहँ परै दुसह दुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू ❀ नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ❀ सो नृपअवशिनरकअधिकारी ॥
रहहु तात असनीति विचारी ❀ सुनतलषणभयेव्याकुलभारी ॥
सियरे वचन सूखि गे कैसे ❀ परसत तुहिन तामरस जैसे ॥

दोहा-उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ॥

१ सेवा । २ ठढे । ३ पाला । ४ कमल ।

नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तौ कहा बसाइ ॥७३॥
दीन्ह मोहिं शिख नीक गुसांई ❀ लागत अगम अपनि कदराई ॥
नर वर धीर धर्म्मधुर धारी ❀ निगम नीतिके ते अधिकारी ॥
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला ❀ मन्दर[2] मेरु कि लेइँ मराल[3] ॥
गुरु पितु मातु न जानों काहू ❀ कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई ❀ प्रीति प्रतीति निगम निज गाई ॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी ❀ दीनबन्धु उर अन्तरयामी ॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही ❀ कीरति भूति[4] सुगति प्रियजाही ॥
मन क्रम वचन चरण रति होई ❀ कृपासिन्धुपरिहरिय कि सोई ॥
दोहा–करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदुवचन विनीत॥
समुझाये उरलाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥ ७४ ॥
माँगहु विदा मातु सन जाई ❀ आवहु वेगि चलहु वन भाई ॥
मुदित भये सुनि रघुवरवानी ❀ भयउ लाभ बड़ मिटी गलानी ॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये ❀ मनहुँ अन्ध फिरि लोचनपाये ॥
जाइ जननि पद नायउ माथा ❀ मन रघुनन्दन जानकि साथा ॥
पूँछेउ मातु मलिन मन देखी ❀ लषण कहेउ सब कथा विशेखी॥
गई सहमि सुनि वचन कठोरा ❀ मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथआजू ❀ ये सनेह वश करब अकाजू ॥
माँगत विदा सभय सकुचाहीं ❀ जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं॥
दोहा–समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुशील स्वभाव ॥
नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिन कीन्ह कुदाव ७५॥
धीरज धर्यउ कुअवसर जानी ❀ सहज सुहृद बोली मृदुवानी ॥
तात तुम्हार मातु वैदेही ❀ पिता राम सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू ❀ तहाँ दिवस जहँ भानुप्रकाशू ॥
जोपै राम सीय वन जाहीं ❀ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं ❀ सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥

१ श्रेष्ठ। २ मन्दराचल पर्वत इत्यादि। ३ हंस। ४ सम्पदा।

राम प्राण प्रिय जीवन जीके ❀ स्वारथ रहित सखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँते ❀ मानहिं सकल रामके नाते ॥
अस जिय जानि संग वन जाहू ❀ लेहु तात जगजीवन लाहू ॥
दोहा-भूरिभाग्य भाजन भयउ, मोहिंसमेतबलिजाउँ॥
जो तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह राम पद ठाउँ ॥७६॥
पुत्रवती युवती जग सोई ❀ रघुवर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बाँझ भलि वादि बियानी ❀ रामविमुख सुतते हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम वन जाहीं ❀ दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फल सुत येहू ❀ राम सीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू ❀ जनि स्वप्नेहु इनके वश होहू ॥
सकल प्रकार विकार विहाई ❀ मन क्रम वचनकऱ्यहु सेवकाई॥
तुम कहँ वन सब भाँति सुपासू ❀ सँग पितु मातु राम सियजासू ॥
ज्यहि न राम वन लहहिं कलेशू ❀ सुत सोइ कऱ्यहु मोर उपदेशू॥
छं०उपदेश यहिजेहितात तुमतेराम सिय सुखपावहीं॥
पितु मातु प्रिय परिवार पुरसुखसुरतिवनविसरावहीं॥
तुलसी सुतहि शिख देइ आयसु देइ पुनिआशिषदई॥
रतिहोउ अविरलअमलसियरघुवीरपदनितनितनई२
सो०-मातुचरण शिरनाइ, चले तुरत शंकित हिये॥
वागुरि विषम तुराइ, मनहु भाग मृग भागवश ॥ ३॥
गये लषण जहँ जानकिनाथा ❀ भे मन मुदित पाइ प्रिय साथा ॥
वन्दि राम सिय चरण सुहाये ❀ चले संग नृप मन्दिर आये ॥
कहहिं परस्पर पुर नर नारी ❀ भलि बनाइ विधि बात बिगारी॥
तनु कृश मन दुख वदन मलीना ❀ विकल मनहुँ माखी मधु छीना॥
करमींजहिं शिरधुनि पछिताहीं ❀ जनु विनु पंख विहँग अकुलाहीं॥
भइ वड़ि भीर भूप दरबारा ❀ वरणि नजाइ विषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे ❀ कहि प्रिय वचन राम पगु धारे ॥

१ प्रीति। २ अचल। ३ निर्मल। ४ जाल। ५ हरिण।

सिय समेत दोउ तनय निहारी ❀ व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥
दोहा-सीयसहितसुतसुभगदोउ, देखिदेखिअकुलाइ ॥
बारहिंबार सनेहवश, राउ लेइ उरलाइ ॥ ७७ ॥
सके न बोलि विकल नरनाहू ❀ शोक विकल उर दारुण दाहू ॥
नाइ शीश पद अति अनुरागा ❀ उठि रघुनाथ विदा तब माँगा ॥
पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै ❀ हर्ष समय विस्मय कतकीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू ❀ यश जग जाइ होइ अपवादू ॥
सुनि सनेह वश उठि नरनाहू ❀ बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥
सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं ❀ राम चराचर नायक अहहीं ॥
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी ❀ ईश देइ फल हृदय विचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई ❀ निगम नीति अस कह सब कोई ॥
दोहा-और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग ॥
अतिविचित्र भगवन्तगति, को जग जाने योग ॥७८॥
राउ राम राखन हित लागी ❀ बहुत उपाय कीन्ह छलत्यागी ॥
लखे राम रुख रहत न जाने ❀ धर्म्म धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीनी ❀ अतिहितबहुतभाँतिशिखदीनी॥
कहि वनके दुख दुसह सुहाये ❀ सासु श्वशुर पितुसुख समुझाये॥
सियमन रामचरण अनुरागा ❀ घर न सुगम वन अगम न लागा॥
औरौ सबहि सीय समुझाई ❀ कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई॥
सचिव नारि गुरुनारि सयानी ❀ सहित सनेह कहहिं मृदुबानी ॥
तुम कहँ तौ नदीन्ह वनवासू ❀ करहुजोकहहिंश्वशुरगुरुसासू ॥
दो.-शिखिशीतलहितमधुरमृदु, सुनिसीतहिनसुहानि ॥
शरदचन्द्र चांदनि लगत, जनु चकई अकुलानि॥७९॥
सीय सकुच वश उतर न देई ❀ सोसुनि तमकि उठी कैकेयी ॥
मुनि पट भूषण भाजन आनी ❀ आगे धरि बोली मृदुबानी ॥
नृपहिं प्राण प्रिय तुम रघुवीरा ❀ शील सनेह न छाँड़हि भीरा ॥

१ राजा दशरथ। २ अनुचित। ३ निंदा।

सुकृत सुयश परलोक नशाऊ ❀ तुमहिजान वन कहहिं न राऊ ॥
अस विचारिसोइ करौ जो भावा ❀ रामजननिशिखसुनिसुखपावा ॥
भूपहि वचन बाण सम लागे ❀ करहिं न प्राण पयान अभागे ॥
शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू ❀ काह करिय कछु सूझ न काहू ॥
राम तुरत मुनि वेष बनाई ❀ चले जनक जननी शिरनाई ॥
दोहा-सजि वनसाज समाज सब, वनिता[1] बन्धु[2]समेत ॥
वन्दि विप्र गुरु चरणप्रभु, चले करि सबहिंअचेत॥८०॥
निकसि वशिष्ठ द्वार भये ठाढ़े ❀ देखे लोग विरह दव डाढ़े ॥
कहि प्रिय वचन सबहिं समुझाये ❀ विप्रवृन्द[3] रघुवीर बुलाये ॥
गुरुसन कहि वर्षाशन[4] दीन्हे ❀ आदर दान विनय बहु कीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे ❀ मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी ❀ गुरुहि सौंपि बोले करजोरी ॥
सब कर सार सँभार गुसाँईं ❀ करब जनक जननीकी नाईं ॥
बारहिं बार जोरि युग[5] पानी ❀ कहत राम सब सन मृदुवानी ॥
सोइ सब भाँति मोरहितकारी ❀ जेहिते रहैं भुआल सुखारी ॥
दोहा-मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिंदुखदीन ॥
सोउपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन ॥ ८१ ॥
इहि विधि राम सबहिं समुझावा ❀ गुरुपदपद्म हर्षि शिरनावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई ❀ चले अशीष पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयो विषादू ❀ सुनि न जाइ पुर आरतनादू ॥
कुशकुनलंक अवध अतिशोकू ❀ हर्ष विषाद विवश सुरलोकू ॥
गइ मूर्च्छा तब भूपति जागे ❀ बोलि सुमंत्र कहन असलागे ॥
राम चले वन प्राण न जाहीं ❀ केहि सुख लागि रहे तनु माहीं ॥
इहि ते कवन व्यथा बलवाना ❀ जो दुखपाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू ❀ लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥
दो०-सुठिसुकुमार कुमार दोउ, जनक सुता सुकुमारि ॥

१ श्री जानकीजी। २ लक्ष्मणजी। ३ ब्राह्मणोंके झुंडके झुंड। ४ एकएक वर्षका भोजन। ५ दोनों हाथ।

रथ चढ़ाइ दिखराइ वन, फिरहु गये दिन चारि ॥८२॥
जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ❀ सत्यासिन्धु दृढ़ व्रत रघुराई ॥
तौ तुम विनय करहु करजोरी ❀ फेरिय प्रभु मिथिलेश किशोरी॥
जब सिय कानन देखि डराई ❀ कहेउ मोर शिख अवसर पाई॥
सासु श्वशुर अस कहेउ सँदेशू ❀ पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू ॥
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी ❀ रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
इहि विधि करेहु उपाय कदंबा ❀ फिरइ तो होइ प्राण अवलंबा ॥
नहिंतो मोर मरण परिणामा ❀ कछु न बसाइ भयो विधि वामा॥
असकहि मूर्च्छि परेउ महिराऊ ❀ राम लषणसिय आनि दिखाऊ॥

दोहा—पायरजायसु नाइशिर, रथ अतिरुचिर बनाय ॥
गयहु जहाँ बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाय ॥८३॥

तब सुमंत्र नृप वचन सुनाये ❀ करि विनती रथ राम चढ़ाये ॥
चढि रथ सीय सहित दोउ भाई ❀ चले हर्षि अवधहिं शिरनाई ॥
चलत राम लखि अवध अनाथा ❀ विकल लोग लागे सब साथा ॥
कृपासिंधु बहुविधि समुझावहिं ❀ फिरहिंप्रेमवशपुनिफिरिआवहिं॥
लागत अवध भयानक भारी ❀ मानहु कालराति अँधियारी ॥
घोर जन्तु सम पुर नरनारी ❀ डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मशान परिजन जनु भूता ❀ सुत हित मीत मनहुँ यमदूता॥
बागन विटपबेलि कुम्हिलाहीं ❀ सरित सरोवर देखि न जाहीं ॥

दोहा—हय गय कोटिक केलिमृग, पुरपशु चातकमोर ॥
पिकरथांग शुक शारिका, सारस हंस चकोर ॥८४॥

राम वियोग विकल सब ठाढ़े ❀ जहँतहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥
नगर सकलवन गहवर भारी ❀ खग मृगविकल सकल नरनारी॥
विधि कैकयी किरातिनि कीनी ❀ जेहिदवदुसह दशहु दिशिदीनी॥
सहि न सके रघुवर विरहागी ❀ चले लोग सब व्याकुल भागी॥
सबहिं विचार कीन्ह मन माहीं ❀ राम लषणसियबिनु सुख नाहीं॥

---

१ सहारा। २ सुंदर। ३ घोडा ४ हाथी। ५ कोयल। ६ चकई-चकवा-किन्तु सारसको भी कहतेहैं। ७ वियोगकी अग्नि तेजमय।

जहां राम तहँ सकल समाजू ❀ विनु रघुवीर अवध केहि काजू॥
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई ❀ सुरदुर्लभ सुखसदन विहाई॥
रामचरण पंकज प्रिय जिनहीं ❀ विषयभोगवशकरै कि तिनहीं॥
दोहा-बालक वृद्ध विहाइ गृह, लगे लोग सब साथ॥
तमसा तीर निवास किय, प्रथम दिवसरघुनाथ॥८५॥
रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी ❀ सदय हृदय दुखभयउविशेषी॥
करुणामय रघुनाथ गुसाँई ❀ वेगि पाइ यह पीर पराई॥
कहि सप्रेम मृदुवचन सुनाये ❀ वहु विधि राम लोग समुझाये॥
किये धर्म उपदेश घनेरे ❀ लोग प्रेमवश फिरहिं न फेरे॥
शील सनेह छाँडि नहिं जाई ❀ असमंजस वश भये रघुराई॥
लोग शोक श्रमवश गये सोई ❀ कछुक देवमाया मति मोई॥
जवहिं यामयुग यामिनि वीती ❀ राम सचिव सन कहेउ सप्रीती॥
खोज मारि रथ हाँकहु ताता ❀ आन उपाय वनहिं नहि वाता॥
दोहा-राम लषण सियर्यानचढ़ि, शंभुचरणशिरनाइ॥
सचिव चलायउ तुरत रथ, इतउतखोजदुराइ॥८६॥
जागे सकल लोग भये भोरू ❀ गये रघुवीर भयो अति शोरू॥
रथकरखोज कतहुँ नहिं पावहिं ❀ रामरामकहि चहुँ दिशि धावहिं॥
मनहुँ वारिनिधि बूड जहाजू ❀ भयउ विकल जनुवणिकसमाजू॥
एकहि एक देहिं उपदेशू ❀ तजेउ राम हम जानि कलेशू॥
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना ❀ धृक जीवन रघुवीर विहीना॥
जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा ❀ तौ कस मरण न माँगे दीन्हा॥
इहिविधि करत प्रलाप कलापा ❀ आये अवध भरे परितापा॥
विषम वियोग न जाइ वखाना ❀ अवधि आश राखहिं सवप्राना॥
दोहा-रामदरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि॥
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि॥८७॥
सीता सचिव सहित दोउ भाई ❀ शृंगवेर पुर पहुँचे जाई॥

१ रथ। २ दिन। ३ दयावान्। ४ द्विविधा। ५ दो पहर रात्रि। ६ समुद्र।
७ दुःख। ८ श्रीसूर्य्यनारायण।

उतरे राम देवसरि देखी ❀ कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेषी ॥
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा ❀ सबहिं सहित सुख पायउ रामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला ❀ सब सुख करनि हरनि सब शूला ॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा ❀ राम विलोकत गंग तरंगा ॥
सचिवहिं अनुजहिं प्रियहि सुनाई ❀ विबुध नदी महिमा अधिकाई ॥
मज्जन कीन्ह पन्थ श्रम गयऊ ❀ शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटहिं भवभारू, ❀ तेहि श्रमयहलौकिकव्यवहारू ॥
दोहा—शुद्ध सच्चिदानन्दमय, राम भानुकुलकेतु ॥
चरित करत नर अनुहरत, संसृत सागर सेतु ॥ ८८ ॥
यहसुधि गुह निषाद जबपाई ❀ मुदित लिये प्रिय बन्धु बुलाई ॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा ❀ मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा ॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे ॥
सहज सनेह विवश रघुराई ❀ पूँछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे ❀ भयउँ भाग्य भाजन जन लेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा ❀ मैं जन नीच सहित परिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ ❀ थापिय जन सब लोग सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखासुजाना ❀ मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना ॥
दोहा—वर्ष चारिदश वास वन, मुनि व्रत वेष अहार ॥
ग्रामवासनहिं उचित सुनि, गुहहिं भयो दुख भार ॥ ८९ ॥
राम लषण सिय रूप निहारी ❀ कहहिं सप्रेम नगर नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❀ जिन पठये वन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा ❀ लोचन लाहु हमैं जिनदीन्हा ॥
तब निषाद पति उर अनुमाना ❀ तरु शिंशुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा ❀ कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जुहार गृह आये ❀ रघुवर सन्ध्या करन सिधाये ॥
गुह सँवारि साथरी बनाई ❀ कुशकिसलय मृदु परम सुहाई ॥

१ संसारका भार। २ शुद्ध और सत्य, चैतन्य, आनन्दरूप। ३ देखत। ४ शीशम।
५ कोमल पत्ता।

शुचि फल मूल मधुर मृदु जानी ❀ दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥
दोहा-सिय सुमंत्र भ्राता सहित, कन्द मूल फल खाइ ॥
शयन कीन्ह रघुवंश मणि, पाँय पलोटत भाइ ॥ ९० ॥
उठे लषण प्रभु सोवत जानी ❀ कहि सचिवहिं सोवनमृदुवानी ॥
कछुक दूरि सजि बाण शरासन ❀ जागन लगे बैठि वीरासन ॥
गुह बुलाय पाहरू प्रतीती ❀ ठाँव ठाँव राखे अतिप्रीती ॥
आप लषण पहँ बैठेउजाई ❀ कटि भाथा शर चाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहिं निहारि निषादा ❀ भयउ प्रेमवश हृदय विषादा ॥
तनु पुलकित लोचन जल बहई ❀ वचन सप्रेम लषण सन कहई ॥
भूपति भवन सुसहज सुहावा ❀ सुरपति सदन न पटतर आवा॥
मणिमय रचित चारु चौबारे ❀ जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥
दोहा-शुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमनसुगंधसुवास॥
पलँगमंजुमणि दीपजहँ, सब विधि सकल सुपास॥९१॥
विविध वसन उपधान तुराई ❀ क्षीर फेनु मृदु विषद सुहाई ॥
तहँ सिय राम शयन नित करहीं ❀ निज छविरति मनोज मदहरहीं ॥
ते सिय राम साथरी सोये ❀ श्रमित वसन विनजाहिं न जोये॥
मातु पिता परिजन पुरवासी ❀ सखा सुशील दास अरु दासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं ❀ महि सोवत सो राम गुसाईं ॥
पिता जनक जगविदित प्रभाऊ ❀ श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो वैदेही ❀ महि सोवत विधि वाम न केही॥
सिय रघुवीर कि कानन योगू ❀ कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ॥
दोहा-केकयिनन्दिनिमन्दमति,कठिनकुटिलपणकीन्ह॥
जेहिरघुनन्दनजानकिहि, सुखअवसरदुखदीन्ह॥९२॥
भइ दिनकर कुल विटप कुठारी ❀ कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी ॥
राम सीय महि शयन निहारी ❀ भयउ विषाद निषादहि भारी ॥
बोले लषण मधुर मृदुवानी ❀ ज्ञान विराग भक्ति रससानी ॥

१ तरकस । २ उपमामें । ३ कामदेव । ४ पवित्र । ५ सुन्दर । ६ तकिया । ७ रजाई ।

कोउ न काहु दुख सुख करदाता ❀ निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥
योग वियोग भोग भल मन्दा ❀ हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा॥
जन्म मरण जहँ लगि जग जालू ❀ सम्पति विपति कर्म अरु कालू॥
धरणि धाम धन पुर परिवारू ❀ स्वर्ग नरक जहँ लगि व्यवहारू॥
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं ❀ मोह मूल परमारथ नाहीं॥
दोहा-स्वप्ने होइ भिखारि[१] नृप, रंकै नाकपति[२] होइ॥
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जियजोइ॥९३॥
अस विचारि नहिं कीजिय रोषू ❀ वादि काहु नहिं दीजिय दोषू॥
मोहनिशा सब सोवनिहारा ❀ देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा॥
इहि जगयामिनि[३] जागहिं योगी ❀ परमारथी प्रपंच वियोगी॥
जानिय तबहिं जीव जगजागा ❀ जब सब विषय विलास विरागा॥
होइ विवेक मोह भ्रम भागा ❀ तब रघुवीर चरण अनुरागा॥
सखा परम परमारथ एहू ❀ मन क्रम वचन रामपद नेहू॥
राम ब्रह्म परमारथ[४] रूपा ❀ अविगत[५] अलख[६] अनादि[७] अनूपा॥
सकल विकार रहित गत भेदा ❀ कहि नित नेति निरूपहिं वेदा॥
दोहा-भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल॥
करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटै जगजाल॥९४॥
सखा समुझि अस परिहरि मोहू ❀ सिय रघुवीर चरणरति होहू॥
कहत राम गुण भाभिनुसारा ❀ जागे जग मंगल दातारा॥
सकल शौच करि राम अन्हावा ❀ शुचि सुजान वट क्षीर मँगावा॥
अनुज सहित शिरजटा बनाये ❀ देखि सुमंत्र नयन जलछाये॥
हृदय दाह अति वदन मलीना ❀ कह करजोरि वचन अतिदीना॥
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा ❀ लैरथ जाहु रामके साथा॥
वन दिखाइ सुरसरि[८] अन्हवाई ❀ आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई॥
लषण राम सिय आन्यहु फेरी ❀ संशय सकल सकोच निवेरी॥
दोहा-नृप अस कहउ गुसाँइ जस, कहिय करौं बलि सोइ॥

---

१ दरिद्री। २ स्वर्गपति। ३ जगवरूपीरात्रि। ४ मोक्षरूप। ५ जिनकी गति जाननेमें नहीं आती। ६ अर्थात् देखनेमें नहींआते। ७ जिनका आदि अन्त मध्यनहीं। ८ गंगाजी।

करिविनतीपाँयनपरचउ, दीन बाल जिमि रोइ ॥९५॥
तात कृपा करि कीजिय सोई ❀ जाते अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा ❀ तात धर्म मग तुम सब शोधा॥
शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा ❀ सहे धर्म हित कोटि कलेशा ॥
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना ❀ धर्म धरेउ सहि संकट नाना ॥
धर्म न दूसर सत्य समाना ❀ आगम निगम पुराण बखाना ॥
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा ❀ तजे सो तिहुँ पुरअपयशछावा॥
सम्भावित कहँ अपयश लाहू ❀ मरण कोटि सम दारुण दाहू ॥
तुम सन तात बहुत का कहऊं ❀ दिये उतर फिरि पातक लहऊं॥
दोहा–पितुपद गहि कहि कोटिविधि, विनयकरब करजोरि॥
चिन्ता कवनिहुँ बात की, तात करिय जनिमोरि ॥९६॥
तुम पुनि पितु समान हित मोरे ❀ विनती करौं तात कर जोरे ॥
सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारे ❀ दुख न पाव नृप शोच हमारे ॥
सुनि रघुनाथ सचिव संवादू ❀ भयउसपरिजन विकल निपादू॥
पुनि कछु लषण कही कटुवानी ❀ प्रभु वरजेउ बड़अनुचितजानी॥
सकुचि राम निज शपथ दिवाई ❀ लषण सँदेश कहब जनि जाई॥
कह सुमंत्र पुनि भूप सँदेशू ❀ सहिनसकहिंसियविपिनकलेशू ॥
जेहि विधि अवध आवफिरि सीया ❀ सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया॥
न तरु निपट अवँलंब विहीना ❀ मैं न जियब जिमि जल विनु मीना॥
दोहा–मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहाँ मन मान॥
तबतहँरहब सुखेनसिय, जब लगि विपति विहान॥९७॥
विनती कीन्ह भूप जेहि भाँती ❀ आरति प्रीति न सो कहि जाती॥
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना ❀ सियहिं दीन्ह शिपकोटिविधाना॥
सासु श्वशुर गुरु प्रिय परिवारू ❀ फिरहु तो सबकर मिटै खँभारू॥
सुनि पति वचन कहति वैदेही ❀ सुनहु प्राणपति परमसनेही ॥
प्रभु करुणामय परम विवेकी ❀ तनुतजि छाँह रहत किमि छेकी॥

१ सभाके बैठनेवाले पुरुष । २ कुटुंबसहित । ३ वन । ४ सहारा । ५ दुःख ।

प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई ❁ कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई ❁ कहत सचिव सन गिरा सुहाई ॥
तुम पितुश्वशुर सरिसहितकारी ❁ उतर देउँ फिर अनुचित भारी ॥
दोहा–आरतवश सन्मुख भइउँ, विलग नमानब तात ॥
आरज सुत पद कमल विनु, वाँदि जहाँलगनात ॥९८॥
पितुहि विभव विलास मैं दीठा ❁ नृपमणि मुकुट मिलत पद पीठा॥
सुखनिधान अस पितु गृहमोरे ❁ पति विहीन मनभाव न भोरे ॥
श्वशुर चक्रवै कोशलराऊ ❁ भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे हुइ ज्यहि सुरपति लेई ❁ अर्द्ध सिंहासन आसन देई ॥
श्वशुर एतादृश अवध निवासू ❁ प्रिय परिवार मातु सम सासू ॥
विनु रघुपति पद पद्म परागा ❁ मोहिंकोउ सपनेहुँ सुखद नलागा॥
अगम पन्थ वन भूमि पहारा ❁ करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग विहंगा ❁ मोहिं सब सुखद प्राणपति संगा॥
दोहा-सासु श्वशुर सन मोरिहुति, विनयकरब परिपाय॥
मोर शोचजनि करिय कछु, मैं वन सुखीस्वभाय॥९९॥
प्राणनाथ प्रियदेवर साथा ❁ वीर धुरीण धरे धनु भाथा ॥
नहिं मगु श्रम भ्रम दुख मन मोरे ❁ मोहिंलगि शोचकरियजनिभोरे॥
सुनि सुमंत्र सिय शीतल वानी ❁ भये विकलजनुफणिमणिहानी ॥
नयन न सूझ सुनै नहिं काना ❁ कहि न सकैकछु अतिअकुलाना॥
राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❁ तदपि होइ नहिं शीतल छाती ॥
यत्न अनेक साथ हित कीन्हें ❁ उचित उतर रघुनन्दन दीन्हें ॥
मेंटि जाय नहिं राम रजाई ❁ कठिन कर्म्मगति कछु न बसाई ॥
राम लषण सियपद शिरनाई ❁ फिरे वणिक जिमि मूरगँवाई ॥
दोहा–रथ हाँके हय रामतन, हेरि हेरि हिहनाहिं ॥
देखि निषादविषादवश, शिर धुनिधुनिपछिताहिं१००॥
जासु वियोग विकल पशुऐसे ❁ प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे ॥

१ किरणैं। २ मिथ्या। ३ सम्पदा। ४ सौदागर। ५ नमा। ६ अश्व।

बरबस राम सुमंत्र पठाये ❀ सुरसरि तीर आपु चलिआये ॥
माँगी नाव न केवट आना ❀ कहै तुम्हार मर्म मैं जाना ॥
चरणकमल रज कहँ सब कहई ❀ मानुष करणि मूरि कछु अहई ॥
छुवत शिला भइ नारि सुहाई ❀ पाहन ते न काठ कठिनाई ॥
तरणिउ मुनि घरनी होइ जाई ❀ बाट परै मोरि नाव उड़ाई ॥
यहि प्रतिपालौं सब परिवारू ❀ नहिं जानौं कछु और कवारू ॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू ❀ तौ पद पद्म पखारन कहहू ॥

छंद–पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ॥
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब साँचीकहौं
बरु तीर मारहिं लषण पै जब लगि न पाँव पखारिहौं ॥
तबलगि न तुलसीदास नाथकृपालुपार उतारिहौं॥४॥

सो०–सुनि केवटके वचन, प्रेम लपेटे अटपटे ॥
विहँसे करुणाअयन, चितै जानकी लषण तन ॥ ४ ॥

कृपासिन्धु बोले मुसुकाई ❀ सोइ करहु जेहि नाव न जाई ॥
वेगि आनि जल पाँव पखारू ❀ होत विलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत यक बारा ❀ उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा ❀ जे किय जग तिहुँ पगते थोरा ॥
पदनख निरखि देवसरि हरषी ❀ सुनि प्रभु वचन मोह मति करषी॥
केवट राम रजायसु पावा ❀ पानि कठवता भरि लै आवा ॥
अति आनंद उमँगि अनुरागा ❀ चरण सरोज पखारन लागा ॥
वर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं ❀ इहि सम पुण्य पुंज कोउ नाहीं ॥

दोहा–पद पखारि जलपान करि, आपु सहितपरिवार ॥
पितर पार करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लै पार १०१

उतरि ठाढ भये सुरसरि रेता ❀ सीय राम गुह लषण समेता ॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा ❀ प्रभु सकुचे कछु यहि नहिं दीन्हा॥
पिय हियकी सिय जाननि हारी ❀ मणि मुंदरी मन मुदित उतारी॥

१ हठकरकै। २ श्रीगंगाजीके तट। ३ मल्लाह। ४ भेद। ५ पत्थर अर्थात्-अहल्या गौतमकी नारि। ६ नाव। ७ अहल्या। ८ फूल।

कहेउ कृपालु लेहु उतराई ❀ केवट चरण गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काह न पावा ❀ मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
अमितकाल मैं कीन्ह मजूरी ❀ आजु दीन्ह विधिसबभरि पूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे ❀ दीनदयालु अनुग्रह तोरे ॥
फिरति बार जो कछु मुहिं देवा ❀ सो प्रसाद मैं शिरधरि लेवा ॥
दोहा-बहुत कीन्ह हठ लषण प्रभु, नहिं कछु केवटलेय॥
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्ति विमलवरदेय ॥१०२॥
तब मज्जन करि रघुकुल नाथा ❀ पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा करजोरी ❀ मातु मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
पति देवर सँग कुशल बहोरी ❀ आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सियविनय प्रेमरस सानी ❀ भइ तब विमल वारि वर बानी ॥
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही ❀ तव प्रभाव जग विदित न केही ॥
लोकप होहिं विलोकत तोरे ❀ तोहिं सेवहिं सबसिधि करजोरे ॥
तुम जु हमहिं बड़ि विनय सुनाई ❀ कृपा कीन्ह मोहिं दीन बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देब अशीशा ❀ सफल होन हित निज वागीशा ॥
दोहा-प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला आइ ॥
पूजहिंसबमन कामना, सुयश रहहि जग छाइ ॥१०३॥
गंग वचन सुनि मंगल मूला ❀ मुदित सीयसुरसरि अनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू ❀ सुनत सूख मुख भा उरदाहू ॥
दीन वचन गुह कह करजोरी ❀ विनयसुनियरघुकुलमणिमोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई ❀ करि दिन चारि चरण सेवकाई ॥
जेहि वन जाइ रहब रघुराई ❀ पर्णकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मोकहँ जस देब रजाई ❀ सो करिहौं रघुवीर दुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासू ❀ संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सबलीन्हे ❀ करिपरितोष विदा तब कीन्हे ॥
दोहा-तबगणपतिशिवसुमिरप्रभु,नाइसुरसरिहिमाथ॥

१ निर्मल । २ स्नान । ३ ऐश्वर्य । ४ लोकपाल राजा । ५ वाणी । ६ मार्ग ।
७ आज्ञा । ८ आदर-सन्मान ।

सखाअनुजासिय सहितवन, गमनकीन्हरघुनाथ१०४॥
त्यहिदिन भयउविटपतर बासू ❀ लषण सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई ❀ तीरथराज दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी ❀ माधव सरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारू ❀ पुण्य प्रदेश देश अति चारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा ❀ स्वप्नेहुँ जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा ॥
सैन सकल तीरथ वर वीरा ❀ कलुष अनीक दलन रणधीरा ॥
संगम सिंहासन सुठि सोहा ❀ छत्र अक्षय वट मुनि मन मोहा ॥
चमर यमुन जल गंग तरंगा ❀ देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥
दोहा-सेवहिं सुकृतीसाधु शुचि, पावहिंसब मनकाम ॥
बन्दी वेद पुराण गण, कहहिं विमल गुणग्राम ॥१०५॥
को कहिसकै प्रयाग प्रभाऊ ❀ कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा ❀ सुखसागर रघुवर सुख पावा ॥
कह सियअनुजहिसखहिसुनाई ❀ श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत वन बागा ❀ कहत महातम अति अनुरागा ॥
इहिविधि आइ विलोकेउ बेनी ❀ सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्ह शिव सेवा ❀ पूजि यथाविधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये ❀ करत दण्डवत मुनि उर लाये ॥
मुनिमन मोद न कछु कहिजाई ❀ ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई ॥
दोहा-दीन्हअशीशमुनीशउर,अतिआनँद अस जानि ॥
लोचन गोचर सुकृत फल,मनहुँकिये विधिआनि १०६
कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा ❀ पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके ❀ दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके ॥
सीय लषण जन सहितसुहाये ❀ अति रुचिराम मूल फल खाये ॥
भये विगत श्रम राम सुखारे ❀ भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सफल तप तीरथ त्यागू ❀ आजु सफल जप योग विरागू ॥

१ प्रयाग । २ भाटे । ३ सम्पूर्णपाप-मत्तहाथीसरीखेके नाशकरनेको सिंह । ४ नेत्र । ५ सम्मुख-पलक । ६ पुण्य । ७ ब्रह्मा । ८ अमृतसरीखे मीठे ।

सफल सकल शुभसाधन साजू ❀ राम तुमहिं अवलोकत आजू ॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी ❀ तुम्हरे दरश आश सब पूजी ॥
अब करिकृपा देहु वर येहू ❀ निजपदसरसिज सहज सनेहू ॥
दो०-कर्मवचनमनछाँड़िछल, जबलगिजननतुम्हार ॥
तबलगि सुखस्वप्नेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार ॥१०७॥
सुनि मुनि वचन राम सकुचाने ❀ भाव भक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुवर मुनि सुयशसुहावा ❀ कोटिभाँतिकहि सबहिंसुनावा ॥
सोबड़ सो सब गुणगण गेहू ❀ ज्यहि मुनीश तुम आदर देहू ॥
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं ❀ वचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी ❀ बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
भरद्वाज आश्रम सब आये ❀ देखन दशरथ सुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित भये लहि लोचन लाहू ॥
देहिं अशीश परमसुख पाई ❀ फिरे सराहत सुन्दरताई ॥
दोहा-राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात प्रयाग अन्हाइ॥
चलेसहितसियलषणजन, मुदितमुनिहिंशिरनाइ१०८॥
राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं ❀ नाथ कहहु हम केहि मग जाहीं॥
सुनि मुनि विहँसि रामसनकहहीं ❀ सुगमसकलमगुतुमकहँअहहीं ॥
साथ लागि मुनिशिष्य बुलाये ❀ सुनिमन मुदित पचाशक आये॥
सबहिं रामपद प्रेम अपारा ❀ सबहिं कहैं मगु दीख हमारा ॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे ❀ जिन बहुजन्म सुकृत फल कीन्हे॥
करि प्रणाम मुनि आशिष पाई ❀ प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई ❀ देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्मफल पाई ❀ फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥
दोहा-बिदा कीन्ह बहु विनयकरि, फिरेपाइमनकाम ॥
उतरि नहाये यमुनजल, जो शरीर समश्याम॥१०९॥
सुनत तीरवासी नर नारी ❀ धाये निज निज काज बिसारी ॥
लषण राम सिय सुन्दरताई ❀ देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥

१ उपाय । २ ब्रह्मचारी ।

अति लालसा सबहिं मन माहीं ❀ नाम ग्राम पूँछत सकुचाहीं ॥
जे तिन महँ वय वृद्ध सयाने ❀ तिन करि युक्ति राम पहिंचाने ॥
सकल कथा कहि तिनहिंसुनाई ❀ वनहिं चले पितु आयसु पाई ॥
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं ❀ रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
त्यहि अवसर तापस यक आवा ❀ तेज पुंज लघु वयस सुहावा ॥
कवि अलखित गति वेष विरागी ❀ मन क्रम वचन राम अनुरागी ॥

दोहा–सजलनयनतनुपुलकिनिज, इष्टदेवपहिंचान ॥
परेउधरणितलदण्डजिमि, दशा न जाइबखान॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा ❀ परमरंक जनु पारस पावा ॥
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ ❀ मिलत धरे तनुकह सब कोऊ ॥
बहुरि लषण पाँयन सो लागा ❀ लीन्ह उठाय उमँगि अनुरागा ॥
पुनि सिय चरण धूरिधरिशीशा ❀ जननि जानि सुत देहिं अशीशा ॥
कीन्ह निषाद दण्डवत तेहीं ❀ मिले मुदित लखि राम सनेही ॥
पियत नयन पुट रूप पियूखा ❀ मुदित सुअशनपाइजिमिभूखा ॥
"पुनि प्रभुपद सरोज शिरनावा ❀ देखि प्रीति रघुवर मन भावा ॥
उर धरि धीर रजायसु पाई ❀ चले मुदित मन अति हरषाई" ॥
राम लषण सिय रूप निहारी ❀ शोच सनेह विकल नर नारी ॥
ते पितु मातु कहो सखि कैसे ❀ जिन पठये वन बालक ऐसे ॥

दोहा–तब रघुवीरअनेकविधि, सखहिशिखावनदीन्ह॥
रामरजायसु शीशधरि, गवनभवनतिन्हकीन्ह॥१११॥

पुनि सिय राम लषण कर जोरी ❀ यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी ॥
गवने सीय सहित दोउ भाई ❀ रवितनया कर करत बड़ाई ॥
पंथिकअनेक मिलहिं मगुजाता ❀ कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राज सुलक्षण अंग तुम्हारे ❀ देखि शोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाये ❀ ज्योतिष झूठ हमारेहि भाये ॥
अगम पन्थ गिरि काननभारी ❀ तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥

१ अमृत । २ भोजन । ३ गृह । ४ श्रीयमुनाजी । ५ बटोही अर्थात् मार्ग चलनेवाले । ६ पर्वत । ७ वन ।

करि केहरि वन जाहिं न जोई ❀ हम सँग चलहिं जो आयसु होई॥
जाव जहाँलगि तहँ पहुँचाई ❀ फिरब बहोरि तुमहिं शिरनाई ॥

दोहा–इहि विधि बूझहिं प्रेमवश, पुलक गात जलनैन ॥
कृपासिन्धु फेरहिं तिनहिं, करि विनतीमृदुबैन ॥११२॥

जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं ❀ तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
केहिं सुकृती केहि घरी बसाये ❀ धन्य पुण्य मय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ राम चरण चलि जाहीं ❀ तेहि समान अमरावति नाहीं ॥
पुण्यपुंज मगु निकट निवासी ❀ तिनहिं सराहत सुरपुर वासी ॥
जेभरि नयन विलोकहिं रामहिं ❀ सीता लषण सहित घनश्यामहिं॥
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं ❀ तिनहिं देव सर सरित सराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई ❀ करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई ॥
परशि रामपद पद्म परागा ❀ मानति भूरि भूमि निज भागा ॥

दोहा–छाँहकरहिं घनविबुधगण, बरषहिं सुमन सिहाहिं
देखत गिरि वन विहँगमृग, राम चलेमगजाहिं ॥११३॥

सीता लषण सहित रघुराई ❀ गाँव निकट जब निसरहिं जाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृहकाज बिसारी ॥
राम लषण सिय रूप निहारी ❀ पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
सजल नयन अति पुलक शरीरा ❀ सब भये मगन देखि दोउ वीरा ॥
वरणि न जाय दशा तिन्ह केरी ❀ लही रंक जनु सुर मणि ढेरी ॥
एकहिं एक बोलि शिख देहीं ❀ लोचन लाहु लेहु क्षण एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे ❀ चितवत चले जात सँगलागे ॥
एक नयन मग छवि उर आनी ❀ होहिं शिथिल तनु मानस बानी ॥

दोहा–एक देखि बट छाँह भलि, डासि मृदुल तृण पात॥
कहहिं गँवाइय क्षणकश्रम, गवनब अबहिंकिप्रात ११४

एक कलश भरि आनहिं पानी ❀ अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी ॥
सुनि प्रियवचन प्रीति अति देखी ❀ राम कृपालु सुशील विशेषी ॥

---

१ हाथी । २ मेघ । ३ कोमल ।

जानी सीय श्रमित मन माहीं ❀ घरिक विलम्ब कीन्ह वट¹ छाहीं॥
मुदित नारि नर देखहिं शोभा ❀ रूप अनूप² देखि मन लोभा॥
इकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा॥
तरुण तमाल वरण तनु सोहा ❀ देखत काम कोटि मन मोहा॥
दामिनि वरण लषण सुठिनीके ❀ नख शिख सुभग भावते जीके॥
मुनिपट³ कटिन्ह कसे तूणीसे ❀ सोहत कर कमलन्ह धनु तीरा॥

दोहा—जटा मुकुट शीशन सुभग, उर भुज नयन विशाल॥
शरदपर्व⁴ विधु वदन वर, लसंत⁵ स्वेद कण⁶ जाल॥११५॥

वरणि न जाइ मनोहर जोरी ❀ शोभा अमित मोरि मति थोरी॥
राम लषण सिय सुंदरताई ❀ सब चितवहिं मन बुधि चितलाई॥
थके नारि नर प्रेम पियासे ❀ मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे॥
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं ❀ पूँछत अति सनेह सकुचाहीं॥
वार वार सब लागहिं पाये ❀ कहहिं वचन मृदु सरल सुहाये॥
राजकुमारि विनय हम करहीं ❀ तिय स्वभाव कछु पूँछत डरहीं॥
स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी ❀ विलग न मानव जानि गँवारी॥
राजकुँवर दोउ सहज सलोने ❀ इनते लहि द्युति मरकत सोने॥

दोहा—श्यामल गौर किशोर वर, सुंदर सुखमा ऐन॥
शरद शर्वरी नाथ मुख, शरद सरोरुह नैन॥११६॥

कोटि मनोज लजावनिहारे ❀ सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल वानी ❀ सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी॥
तिनहिं विलोकि विलोकेउ धरणी ❀ दुहुँ सकोच सकुचति वर वरणी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी ❀ बोली मधुर वचन पिकवयनी॥
सहज स्वभाव सुभग तनु गोरे ❀ नाम लषण लघु देवर मोरे॥
श्याम वरण विशाल भुजनैना ❀ अति सुंदर बोलनि मृदुबैना॥
बहुरि⁷ वदन विधु अंचल ढांकी ❀ पिय तन चितै द्दष्टि करि वांकी॥
खंजनमंजु⁸ तिरीछे नयननि ❀ निजपति कह्यो तिनहिं सिय सयननि⁹॥

१ बरगद। २ जिसकी उपमा देनेयोग्य दूसरा न हो। ३ भोजपत्र। ४ शरदऋतुकी-पूर्णमासीकी रात्रिका चन्द्रमा ऐसा निर्मल मुख। ५ शोभित। ६ पसीनेके कण। ७ बहुत। ८ मधुर। ९ देखि।

भईं मुदित सब ग्राम वधूटी ❀ रंकन्ह रतन राशि जनु लूटी ॥
दोहा–अति सप्रेम सियपाँयपरि, बहुविधि देहिं अशीश ॥
सदासुहागिनिरहहुतुम, जबलगिमहिअहिशीश ११७
पार्वती सम पति प्रिय होहू ❀ देवि न हम पर छांडबछोहू ॥
पुनि पुनि विनय करहिं करजोरी ❀ जोयहि मारग फिरिय बहोरी ॥
दरशन देव जानि निज दासी ❀ लखी सीय सब प्रेम पियासी ॥
मधुर वचन कहिकहि परितोषी ❀ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लषण रघुवर रुख जानी ❀ पूँछेउ मगु लोगन मृदु वानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी ❀ पुलकित अंग विलोचन वारी ॥
मिटामोद मन भयउ मलीने ❀ विधिनिधिदीन्हलीन्हजनुछीने ॥
समुझि कर्मगति धीरज कीन्हा ❀ शोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा ॥
दोहा–लषणजानकीसहितवन, गमन कीन्ह रघुनाथ ॥
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिये लाइमनसाथ ॥११८॥
फिरत नारि नर अति पछिताहीं ❀ दैवहि दोष देहिं मन माहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं ❀ विधि करतव सब उलटे अहहीं ॥
निपट निरंकुश निठुर निशंकू ❀ ज्यहिशशिकीन्हसरुजसकलंकू ॥
रूख कल्पतरु सागर खारा ❀ तेइ पठये वनराज कुमारा ॥
जोपै इनहिं दीन्ह वनवासू ❀ कीन्ह वादिविधिभोगविलासू ॥
ये विचरहिं मगु विनु पदत्राना ❀ रचेउ वादि विधि वाहन नाना ॥
ये महि परहिं डासि कुश पाता ❀ सुभग सेज कत कीन्ह विधाता ॥
तरुतर वास इनहिं विधि दीन्हा ❀ धवलधामरचिकतश्रमकीन्हा ॥
दोहा–जो ये मुनिपट धर जटिल, सुन्दर सुठिसुकुमार।
विविध भाँति भूषण वसन, वादि किये करतार ॥११९॥
जो ये कन्द मूल फल खाहीं ❀ वादि सुधादि अशन जग माहीं ॥
एक कहहिं यह सहज सुहाये ❀ आपु प्रगट भये विधि न बनाये ॥
जहँ लगि वेद कहैं विधि करणी ❀ श्रवण नयन मन गोचर वरणी ॥

१ ग्रामकी । २ नेत्र । ३ आनंद । ४ स्वतंत्र । ५ सरोग । ६ जूती । ७ भोजन । ८ कान ।

देखहु खोजि भुवन दश चारी ❀ कहँअसपुरुषकहाँअसिनारी ॥
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा ❀ पटतर योग बनावन लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये ❀ तेहि इरषा वन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ❀ आपुहि परम धन्य करि मानहिं॥
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे ❀ जे देखत देखिहिं जिन्ह देखे ॥
दो.-इहि विधि कहि कहि वचनप्रिय,लेहिंनयनभरिनीर ॥
किमि चलिहैंमारगअगम,सुठिसुकुमारशरीर॥१२०॥
नारि सनेह विकल सब होहीं ❀ चकई साँझ समय जिमि सोहीं ॥
मृदु पद कमल कठिन करजानी ❀ गहबरि हृदय कहहिं मृदुवानी॥
परसत मृदुल चरण अरुणारे ❀ सकुचति महि जिमिहृदय हमारे॥
जो जगदीश इनहिं वनदीन्हा ❀ कस न सुमनमय मारग कीन्हा॥
जो माँगे पाइय विधि पाहीं ❀ राखिय सखि इन्हआँखिन्ह माहीं॥
जे नर नारि न अवसर आये ❀ ते सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि स्वरूप पूँछहिं अकुलाई ❀ अब लगि गये कहाँ दोउ भाई ॥
समरथ धाइ विलोकहिं जाई ❀ प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई॥
दोहा-अबला बालक वृद्धजन, करमींजहिं पछिताहिं ॥
होहिं प्रेमवश लोग इमि, राम जहाँजहँ जाहिं॥१२१॥
गाँव गाँव अस होहि अनन्दा ❀ देखि भानुकुल कैरव चन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं ❀ ते नृप रानिहि दोष लगावहिं ॥
एक कहहिं अति भल नरनाहू ❀ दीन्ह हमहिं जिन्ह लोचन लाहू॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई ❀ बातैं सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये ❀ धन्य सो नगर जहाँते आये ॥
धन्य सो शैल देश वन गाऊं ❀ जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं ॥
सुख पायो विरंचि रचि तेही ❀ ये जिन्हके सब भाँति सनेही ॥
राम लषण सिय कथा सुहाई ❀ रही सकल मग कानन छाई ॥
दोहा-इहिविधिरघुकुलकमलरवि,मगलोगन्हसुखदेत॥

१ चौदहों लोक। २ स्त्री। ३ कुमुदिनी। ४ सीधी। ५ पर्वत। ६ ब्रह्मा।

जाहिंचले देखतविपिन, सियसौमित्रि समेत ॥१२२॥
आगे राम लषण पुनि पाछे ❀ तापस वेष विराजत काछे ॥
उभय मध्य सिय शोभाति कैसी ❀ ब्रह्मजीव विच माया जैसी ॥
बहुरि कहौं छवि जस मन बसई ❀ जनु मधु मदन मध्यराति लसई॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही ❀ जनु बुधविधुविच रोहिणिसोही॥
प्रभुपद रेख बीच विच सीता ❀ धरहिं चरणमग चलहिं सभीता॥
सीय रामपद अंक बराये ❀ लषण चलहिं मग दाहिन बाँये॥
राम लषण सिय प्रीति सुहाई ❀ वचनअँगोचर किमि कहिजाई॥
खग मृग मगन देखि छवि होहीं ❀ लिये चोर चित राम बटोहीं ॥
दो०-जिनजिनदेखेपथिकप्रिय, सीयसहितदोउभाइ ॥
भव मग अगम अनन्द ते, विनुश्रमरहेसिराइ ॥१२३॥
अजहुँ जासु उर स्वपनेहुँ काऊ ❀ बसहिं राम सिय लषण बटाऊ॥
राम धाम पथ जाइहि सोई ❀जो पदपाव कबहिं मुनि कोई॥
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी ❀ देखिनिकट वट शीतल पानी॥
तहँबासि कन्द मूल फल खाई ❀ प्रात अन्हाइ चले रघुराई ॥
देखत वन सर शैल सुहाये ❀ वाल्मीकि आश्रम प्रभुआये॥
राम देखि मुनि वास सुहावन ❀ सुन्दरगिरि काननजल पावन॥
सरनं सरोज विटंप वन फूले ❀ गुंजत मंजु मधुंप रस भूले ॥
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं ❀ रहित वैर प्रमुदित मनचरहीं॥
दोहा-शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हर्षे राजिवनैन ॥
सुनि रघुवर आगमन मुनि, आगे आये लैन ॥ १२४॥
मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा ❀ आशिर्वाद विप्र वर दीन्हा ॥
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❀ करि सन्मान आश्रमहि आने॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये ❀ मुनिवरअतिथि प्राण प्रिय पाये॥
कन्द मूल फल मधुर मँगाये ❀ सिय सौमित्रि राम फल खाये ॥
वाल्मीकि मन आनँद भारी ❀ मंगल मूरति नयन निहारी ॥

१ लक्ष्मणजी। २ वसन्त। ३ कामदेव। ४ वचनोंसे परे। ५ तालाबोंमें कमल। ६ वनमें वृक्षफूले हुयेहैं। ७ भ्रमर।

तब कर कमल जोरि रघुराई ❀ बोले वचन श्रवण सुखदाई ॥
तुम त्रिकालदरशी मुनिनाथा ❀ विश्ववदरजिमि तुम्हरे हाथा ॥
असकहि प्रभु सब कथा बखानी ❀ जेहि जेहि भाँति दीन्हवनरानी ॥
दोहा–तात वचन पुनि मातु मत, भाइ भरतअसराउ ॥
मोकहँ दरश तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्यप्रभाउ १२५ ॥
देखि पायँ मुनिराय तुम्हारे ❀ भये सुकृत सब सफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई ❀ मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ॥
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं ❀ ते नरेश विनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल विप्र परितोषू ❀ दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
अस जिय जानि कहिय सो ठाऊं ❀ सिय सौमित्रि सहिततहँ जाऊं ॥
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृणशाला ❀ वास करौं कछुकाल कृपाला ॥
सहज सरल सुनि रघुवर वानी ❀ साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ॥
कसन कहहु अस रघुकुल केतू ❀ तुम पालक सन्तत श्रुति सेतू ॥
छं०–श्रुति सेतुपालकरामतुम जगदीशमायाजानकी ॥
जोसृजति जगपालति हरति रुखपाइ कृपानिधानकी ॥
जो सहस शीशअहीश महिधर लषण सचराचरधनी ॥
सुरकाजहित नरराज तनुधरिचल्यहुमर्दन खलअनी ॥
सो०–राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर ॥
अविगतिअकथ अपार, नेतिनेति नित निगमकह ॥ ५ ॥
जग पेखन तुम देखन हारे ❀ विधि हरि शम्भु नचावन हारे ॥
तेउ नहिं जानहिं मर्म्म तुम्हारा ❀ और तुमहिं को जानन हारा ॥
सो जानै जेहि देहु जनाई ❀ जानत तुमहिं तुमहिं ह्वैजाई ॥
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन ❀ जानत भक्त भक्त उर चन्दन ॥
चिदानन्दमय देह तुम्हारी ❀ विगत विकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु सन्त सुरकाजा ❀ कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ❀ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥

१ संसारबेर । २ क्लेश । ३ वेदकी मर्यादाके पालनकर्ता । ४ आदिशक्ति । ५ स्वामी किन्तु सैन्य । ६ किसीके जाननेकीगति नहीं है ।

तुम जो कहहु करहु सब साँचा ❀ जस काछिय तस चाहिय नाचा ॥

दोहा–पूँछ्यउ मोहिं कि रहहुँ कहँ, मैं कहते सकुचाउँ ॥
जहँ न होहु तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावों ठाउँ ॥ १२६ ॥

सुनि मुनिवचन प्रेमरससाने ❀ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने ॥
वाल्मीकि हँसि कहहिं बहोरी ❀ वाणी मधुर अमियरस बोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता ❀ बसहु जहाँ सिय लषण समेता ॥
जिनके श्रवण समुद्र समाना ❀ कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे ❀ तिनके हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करि राखे ❀ रहहिं दरश जलधर अभिलाषे ॥
निदरहिं सिंधु सरित सर वारी ❀ रूप बिन्दु जल होहिं सुखारी ॥
तिनके हृदय सदन सुखदायक ❀ बसहु लषण सिय सह रघुनायक ॥

दोहा–यश तुम्हार मानस विमल, हंसनि जीहा जासु ॥
मुक्ताहल गुण गण चुगहिं, बसहु रामहियतासु ॥ १२७ ॥

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा ❀ सादर जासु लहै नित नासा ॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं ❀ प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं ॥
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ❀ प्रीति सहित करि विनय विशेषी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा ❀ राम भरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं ❀ राम बसहु तिनके मन माहीं ॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा ❀ पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा ॥
तर्प्पण होम करहिं विधिनाना ❀ विप्र जेंवाइ देहिं बहुदाना ॥
तुमते अधिक गुरुहि जिय जानी ❀ सकल भाव सेवहिं सनमानी ॥

दोहा–सब कर मांगहिं एक फल, रामचरण रतिहोउ ॥
तिनके मन मन्दिर बसहु, सियरघुनन्दनदोउ ॥ १२८ ॥

काम क्रोध मद मान न मोहा ❀ लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा ॥
जिनके कपट दम्भ नहिं माया ❀ तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी ❀ दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी ॥

१ स्थान । २ अनेकनदियां । ३ सुन्दर । ४ मेघ । ५ देवता । ६ ब्राह्मण । ७ हाथ ।
८ उत्तम । ९ भीति ।

कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी ❀ जागत सोवत शरण तुम्हारी ॥
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं ❀ राम बसहु तिनके उर माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी ❀ धन पराय विपते विप भारी ॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी ❀ दुखित होहिं परविपतिविशेषी ॥
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे ❀ तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे ॥
दोहा-स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके सब तुम तात ॥
तिनके मन मन्दिर बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥ १२९ ॥
अवगुण तजि सबके गुण गहहीं ❀ विप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुण जिनकी जगलीका ❀ घर तुम्हार तिनके मन नीका ॥
गुणतुम्हार समुझहिं निजदोसू ❀ जेहिं सब भाँति तुम्हार भरोसू ॥
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही ❀ तेहि उर बसहु सहित वैदेही ॥
जाति पाँति धन धर्म्म बड़ाई ❀ प्रिय परिवार सदन समुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लव लाई ❀ ताके हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना ❀ जहँ तहँ दीख धरे धनु बाना ॥
मन क्रम वचन जो राउर चेरा ❀ राम करहु ताके उर डेरा ॥
दोहा-जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेह ॥
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥ १३० ॥
इहिविधि मुनिवर धाम दिखाये ❀ वचन सप्रेम राम मन भाये ॥
कहमुनि सुनहु भानुकुल नायक ❀ आश्रम कहौं समय सुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू ❀ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन चारू ❀ करि केहरि मृग विहँग विहारू ॥
नदी पुनीत पुराण बखानी ❀ अत्रितीय निज तप बल आनी ॥
सुरसरि धार नाम मन्दाकिनि ❀ जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं ❀ करहिं योग जप तप तनु कसहीं ॥
चलहु सफल श्रम सब कर करहू ❀ राम देहु गौरव गिरि वरहू ॥
दोहा-चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय ॥

१ माताके तुल्य। २ जानकीजी। ३ बच्चोंको। ४ मान्य।

आइअन्हाने सरितवर, सीयसहित दोउभाय ॥१३१॥
रघुवर कहेउ लषण भल घाटू ❀ करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥
लषण दीख पर्य उतर करारा ❀ चहुँदिशिफिरचोधनुषजिमिनारा॥
नदी पनॅच शर शम दम दाना ❀ सकल कलुष कलिसाउज नाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी ❀ चूक न घात मारु मुठभेरी ॥
असकहि लषण ठाँव दिखरावा ❀ थल विलोकिरघुपतिसुखपावा ॥
रमेउ राम मन देवन जाना ❀ चले सहित सुरपति परधाना॥
कोल किरात वेष धरि आये ❀ रच्यो पर्ण तृण सदन सुहाये ॥
वरणि न जाइँ मंजु दुइ शाला ❀ एक ललित लघु एक विशाला॥

दोहा–लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्णनिकेत ॥
सोह मदन मुनि वेष जनु, रति ऋतुराज समेत ॥१३२॥

अमर नाग किन्नर दिगपाला ❀ चित्रकूट आये तेहि काला॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
वर्षि सुमन कह देव समाजू ❀ नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करि विनती दुख दुसह सुनाये ❀ हर्षित निज निज गेह सिधाये ॥
चित्रकूट रघुनंदन छाये ❀ समाचार सुनि सुनिसुनिआये ॥
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा ❀ कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा ॥
मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं ❀ सफल होनहित आशिष देहीं ॥
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं ❀ साधनसकलसफलकरिलेखहिं॥

दोहा– यथायोग्य सन्मानि प्रभु, विदाकिये मुनिवृन्द॥
करहिं योग जपयज्ञ तप, निज आश्रमस्वछन्द॥१३३॥

यह सुधि कोल किरातन पाई ❀ हर्षे जनु नव निधि घर आई ॥
कन्द मूल फल भरि भरि दोना ❀ चले रङ्क जनु लूटन सोना॥
तिन्ह महँ जिन देखे दोउ भ्राता ❀ और तिनहिं पूँछहिं मगु जाता॥
कहत सुनत रघुवीर निकाई ❀ आय सवन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे ॥

१ सामान । २ पयस्वनी नदी । ३ चिल्ला । ४ बाण । ५ पाप ।

चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े ❀ पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने ❀ कहि प्रियवचनसकलसनमाने ॥
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी ❀ वचन विनीत कहहिं करजोरी ॥
दोहा–अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाँय ॥
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय ॥१३४॥
धन्य भूमि वन पन्थ पहारा ❀ जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा ॥
धन्य विहँग मृग कानन चारी ❀ सफल जन्म भयेतुमहिं निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा ❀ देखि नयनभरिदरश तुम्हारा ॥
कीन्ह वास भल ठाँव विचारी ❀ इहाँ सकल ऋतु रहव सुखारी ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई ❀ करि केहरि अहि बाघ बराई ॥
वन वेहड़ गिरि कंदर खोहा ❀ सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खिलाउब ❀ सर निर्झर सब ठाँव दिखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथ न सकुचब आयसुदेता ॥
दोहा–वेद वचन मुनि मन अगम, ते प्रभु करुणाऐन ॥
वचनकिरातनकेसुनत, जिमि पितु बालक बैन ॥१३५॥
रामहिं केवल प्रेम पियारा ❀ जानिलेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल वनचर परितोषे ❀ कहि मृदुवचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किये शिरनाय सिधाये ❀ प्रभु गुण कहत सुनत घरआये॥
इहि विधि सीय सहित दोउ भाई ❀ बसहिं विपिनसुरमुनिसुखदाई ॥
जब ते आइ रहे रघुनायक ❀ तबते भो वन मंगलदायक ॥
फूलहिं फलहिं विटप विधि नाना ❀ मंजु ललित वर वेलि वितानाँ ॥
सुरतरु सरिस स्वभाव सुहाये ❀ मनहुँ विबुध वनपरिहरिआये ॥
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी ❀ त्रिविध बयारि बहै सुख देनी ॥
दोहा–नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर ॥
भाँतिभाँति बोलहिंविहँग, श्रवण सुखदचितचोर १३६॥
करि केहरि कपि कोल कुरंगा ❀ विगत वैर विहरहिं यक संगा ॥

१ हाथी। २ सिंह। ३ सर्प। ४ चंदोये। ५ कोकिल। ६ सुअर। ७ हरिण।

फिरत अहेर राम छवि देखी ❀ होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी॥
विबुध विपिनजहँलगजग माहीं ❀ देखि राम वन सकल सिहाहीं ॥
सुरसरि सरस्वति दिनकरकन्या ❀ मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सर सिन्धु नदी नद नाना ❀ मन्दाकिनिकर करहिं बखाना ॥
उदय अस्त गिरिवर कैलासू ❀ मन्दर मेरु सकल सुर बासू ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते ❀ चित्रकूट यश गावहिं तेते ॥
विन्ध्य मुदित मन सुख न समाई ❀ विनु श्रम विपुल बड़ाई पाई ॥
दोहा-चित्रकूटके विहँग मृग, बेलि विटप तृण जाति ॥
पुण्यपुंज सबधन्य अस, कहहिंदेव दिनराति ॥१३७॥
नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी ❀ पाइ जन्म फल होहिं विशोकी॥
परसि चरणरज अचर सुखारी ❀ भये परमपदके अधिकारी ॥
सो वन शैल सुभाय सुहावन ❀ मंगल मय अतिपावन पावन ॥
महिमा कहौं कवन विधि तासू ❀ सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
पयपयोधि तजि अवध बिहाई ❀ जहँ सिय राम लषण रहे आई ॥
कहि न सकहिंसुखभाजसकानन ❀ जो शतसहस होहिं सहसानन ॥
सो मैं वरणि सकौं विधि केहीं ❀ डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्म मन बानी ❀ जाइ न शील सनेह बखानी ॥
दोहा-क्षणक्षण सिय लखिरामपद, जानिआपुपरनेह॥
करतलषण स्वप्ने न चित, बन्धु मातु पितु गेह ॥१३८॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी ❀ पुर परिजन गृह सुरति बिसारी॥
क्षण क्षण पियविधु बदन निहारी ❀ प्रमुदित मनहु चकोर कुमारी ॥
नाह नेह नित बढ़त विलोकी ❀ हर्षितरहतिदिवसजिमिकोकी ॥
सिय मन रामचरण अनुरागा ❀ अवध सहस सम वन प्रियलागा ॥
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा ❀ प्रिय परिवार कुरंग विहंगा ॥
सासुश्वशुरसममुनितियमुनिवर ❀ अशनअमियसमकन्दमूलफर ॥

१ नर्मदा। २ एकलक्ष ३ शेषनाग। ४ गड्ढा। ५ कछुआ। ६ मन्दराचलपर्वत। ७ चंद्र। ८ मृग। ९ पक्षी। १० फल।

नाथ साथ साथरी सुहाई ❀ मयन शयन शत सम सुखदाई ॥
लोकप होहिं विलोकत जासू ❀ तेहि किमि मोहै विषय विलासू ॥
दोहा-सुमिरतरामहिंतजहिंजन,तृणसमविषयविलासु॥
रामप्रियाजगजननि सिय,कछुनआचरजतासु॥१३९॥
सीयलषणजेहि विधिसुखलहहीं ❀ सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं ॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी ❀ सुनहिं लषणसियअतिसुखमानी
जबजब राम अवध सुधि करहीं ❀ तबतब वारि विलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई ❀ भरत सनेह शील सेवकाई ॥
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी ❀ धीरज धरहिं कुसमय विचारी ॥
लखिसियलषणविकल ह्वै जाहीं ❀ जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं॥
प्रिया बन्धु गति लखि रघुनन्दन ❀ धीर कृपालु भक्त उर चन्दन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता ❀ सुनिसुखलहहिं लषण अरुसीता॥
दोहा-राम लषण सीता सहित, सोहत पर्णनिकेत ॥
जिमि बसिवासवअमरपुर, शचीजयन्तसमेत ॥१४०॥
जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहिं कैसे ❀ पलक विलोचन गोलक जैसे ॥
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहिं ❀ जिमि अविवेकीपुरुष शरीरहिं॥
इहि विधिप्रभु वनवसहिं सुखारी ❀ खग मृग सुरतापस हितकारी ॥
कहउँ राम वन गवन सुहावा ❀ सुनहुसुमंत्रअवधजिमि आवा ॥
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई ❀ सचिव सहित रथ देखेउ आई ॥
मंत्री विकल विलोकि निषादू ❀ कहि नसकहिजस भयउविषादू ॥
राम राम सिय लषण पुकारी ❀ पर्‍यउधरणितलव्याकुलभारी ॥
देखिदक्षिणदिशिहयँ हिहिनाहीं ❀ जिमिविनुपंखविहँग अकुलाहीं॥
दोहा-नहिंतृणचरहिंनपियहिंजल,मोचतलोचनवारि॥
व्याकुलभयउनिषादपति, रघुवरबाजिनिहारि॥१४१॥
धरि धीरज तब कहहि निषादू ❀ अब सुमंत्र परिहरहु विषादू ॥
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता ❀ धरहु धीर लखि वाम विधाता ॥

१ आठोंदिक्पाल-वरुण, वायु, कुवेर, महादेव, इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति । २ इन्द्र । ३ अश्व । ४ पक्षी । ५ जल ।

बिबिध कथा कहिकहि मृदुबानी ❀ रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
शोक शिथिल रथ सकहि न हाँकी ❀ रघुवर बिरह पीर उरबाँकी ॥
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे ❀ बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अटकि परहिं फिरिचितवहिं पीछे ❀ राम बियोग बिकल दुखतीछे ॥
जो कह राम लषण बैदेही ❀ हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही ॥
बाजि बिरह गति किमिकहिजाती ❀ बिनुमणिफणीबिकलजेहिभाँती ॥

दोहा-भये निषाद विषाद वश, देखत सचिव तुरंग ॥
बोलि सुसेवक चारितब, दिये सारथी संग ॥ १४२ ॥

गुह सारथिहि फिरे पहुँचाई ❀ बिरह बिषाद बरणि नहिं जाई ॥
चले अवध ले रथहि निषादा ❀ होत क्षणहि क्षण मगन बिषादा ॥
शोच सुमन्त बिकल दुख दीना ❀ धिक् जीवन रघुवीर बिहीना ॥
रहहि न अन्तहु अधम शरीरू ❀ यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू ॥
भये अयश अघ भाजन प्राना ❀ कौन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मन्दमति अवसर चूका ❀ अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई ❀ मनहुँ कृपण धन राशि गँवाई ॥
बिरद बाँधि वर बीर कहाई ❀ चले समर जनु सुभट पराई ॥

दोहा-विप्र विवेकी वेदविद, सम्मत साधु सुजाति ॥
जिमिधोखे मदपान करि, सचिवशोचत्यहिभाँति ॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी ❀ पतिदेवता कर्म्म मन बानी ॥
रहै कर्म्मवश परिहरि नाहू ❀ सचिवहृदय तिमि दारुण दाहू ॥
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी ❀ सुनै न श्रवणबिकलमतिभोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी ❀ जिय न जाइ उर अवध कपाटी ॥
बिवरण भयउ न जाइ निहारी ❀ मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन व्यापी ❀ यमपुरपन्थ शोच जिमिपापी ॥
बचन न आव हृदय पछिताई ❀ अवध कहा मैं कहिहौं जाई ॥
राम रहित रथ देखिहि जोई ❀ सकुचिहि मोहिं बिलोकत सोई ॥

दोहा-धाइ पूँछिहहिं मोहिं जब, बिकल नगर नर नारि ॥

उतर देव मैं सबहि तब, हृदय वज्र बैठारि ॥१४४॥
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता ❀ कहब काहमैं तिनहिं विधाता ॥
पुछिहहिं जबहिं लषण महतारी ❀ कहिहौं कौन सँदेश सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई ❀ सुमिरि वत्स जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतर देब मैं तेही ❀ गे बन राम लषण वैदेही ॥
जेइ पूँछिहि तेहि उत्तर देबा ❀ जाइ अवध अब यह सुख लेबा ॥
पूँछहिं जबहिं राउ दुख दीना ❀ जीवन जासु राम आधीना ॥
देहौं उतर कवन मुँह लाई ❀ आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई ॥
सुनत लषण सिय राम सँदेशू ❀ तृण इव तनु परिहरब नरेशू ॥
दोहा-हृदय न विदरत पंकजिमि, बिछुरत प्रीतमनीर ॥
जानत हौं मोहिं दीन्हविधि, यम यातनाशरीर ॥१४५॥
इहिविधि करत पन्थ पछितावा ❀ तमसा तीर तुरत रथ आवा ॥
विदा किये करि विनय निषादू ❀ फिरे पाँय परि विकल विषादू ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई ❀ जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई ॥
बैठि विटपतर दिवस गँवावा ❀ साँझ समय तब अवसर पावा ॥
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे ❀ पैठ भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनिपाये ❀ भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथपहिंचानि विकल लखि घोरे ❀ गरहिं गात जिमि आँतप ओरे ॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसे ❀ निघटत नीरे मीन गण जैसे ॥
दोहा-सचिवआगमनसुनतसब, विकलभयो रनिवास ॥
भवन भयंकर लाग तेहि, मानहुँ प्रेतनिवास ॥ १४६ ॥
अति आरत सब पूछहिं रानी ❀ उतर न आव विकल भइ बानी ॥
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा ❀ कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई ❀ कौशल्यागृह गई लिवाई ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा ❀ अमिय रहित जनु चन्द्र विराजा ॥
आसन शयन विभूषण हीना ❀ परेउ भूमितल निपट मलीना ॥

१ घाम । २ पानी । ३ नर । ४ दुःखित । ५ सुधा । ६ । बिस्तर । ७ नींद ।

लेइ उसास शोच यहि भाँती ❀ सुरपुर ते जनु खस्यो ययाती ॥
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती ❀ जनु जरि पंख परेउ सम्पाती ॥
"को कहि सके भूप विकलाई ❀ रघुवरविरह अधिक अधिकाई" ॥
राम राम कह राम सनेही ❀ पुनि कह राम लषण वैदेही ॥
दोहा-देखिसचिवजयजीवकहि, कीन्हेसिदण्डप्रणाम ॥
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहुसुमंत्र कहँराम ॥१४७॥
भूप सुमन्त्र लीन्ह उरलाई ❀ बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी ❀ पूँछत राउ नयन भरि वारी ॥
राम कुशल कहु सखा सनेही ❀ कहँ रघुनाथ लषण वैदेही ॥
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये ❀ सुनत सचिव लोचन जलछाये ॥
शोक विकल पुनि पूँछ नरेशू ❀ कहु सिय राम लषण संदेशू ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ ❀ सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ ॥
राज सुनाइ दीन वनवासू ❀ सुनि मन भयउ न हर्ष हँरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राणा ❀ को पापी जग मोहिं समाना ॥
दोहा-सखाराम सिय लषण जहँ, तहाँ मोहिं पहुँचाउ ॥
नाहिंत चाहत चलन अब, प्राण कहौंसतभाउ ॥१४८॥
पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ ❀ प्रीतम सुवन सँदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ ❀ राम लषण सिय वेगि दिखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कहि मृदुवानी ❀ महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥

❀ ययातीराजा यज्ञादिक कर्मका आचरण करके सदेह इन्द्रपदकीप्रार्थना कर इन्द्रलोकको गये तब इंद्र आगेसे आय इनका सत्कारकर लेजाय सिंहासनपर बैठाय छलसहित बहुत बड़ाईकर इनसे पूँछा कि राजाकहो तुमने कैसे कैसे धर्म किये हैं कि, जिसके प्रतापसे मेरे पदको प्राप्त हुए. तब राजाने अपने पुण्यको बहुत बड़ाईके साथ इंद्रको सुनाया और ज्यों ज्यों सुनातेथे त्यों त्यों पुण्य क्षीण होताथा जब कहते कहते समस्त पुण्य क्षीण होगया तब इन्द्रकी आज्ञासे देवतोंने ययाती को स्वर्गसे ढकेलदिया.

१ जानकीजी । २ शोच । ३ बारबार । ४ श्रीरामचन्द्र-लक्ष्मण ।

वीर सुधीर धुरन्धर देवा ❋ साधु समाज सदा तुम सेवा ॥
जन्म कर्म सब दुख सुख भोगा ❋ हानि लाभ प्रिय मिलनवियोगा ॥
काल कर्म वश होहिं गुसाईं ❋ बरवश राति दिवस की नाईं ॥
सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं ❋ दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं ॥
धीरज धरहु विवेक विचारी ❋ छाँडिय शोच सकल हितकारी ॥

दोहा—प्रथम बास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर ॥
न्हाय रहेजलपानकरि, सियसमेतदोउवीर ॥१४९॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ❋ सो यामिनि शृंगवेर गँवाई ॥
होत प्रात वट[1]क्षीर मँगावा ❋ जटामुकुट निज शीशबनावा ॥
रामसखा[2] तब नाव मँगाई ❋ प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई ❋ आपु चढ़े प्रभु आय[3]सु पाई ॥
विकल बिलोकि मोहिं रघुवीरा ❋ बोले मधुर वचन धरि धीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ ❋ बार बार पद[4]पंकज गहेऊ ॥
करब पाँयपरि विनय बहोरी ❋ तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
बन मग मंगल कुशल हमारे ❋ कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥

छंद—हरिगीतिका।

तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सबसुख पाइहौं ॥
प्रतिपालिआयसुकुशल देखनपाँयपुनिफिरिआइहौं ॥
जननीसकल परितोष परिपरिपायँ करिविनतीघनी ॥
तुलसीकरेहुसोइयत्नजेहिविधिकुशलरहकोशलधनी ॥

सोरठा—गुरुसन कहब सँदेश, बार बार पदपद्म गहि ॥
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति ॥६॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी ❋ तात सुनायहु विनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❋ जाते रह नरनाह सुखारी ॥
कहब सँदेश भरतके आये ❋ नीति न तजब राजपद पाये ॥
पालहु प्रजहिं कर्म मन बानी ❋ सेयहु मातु सकल समजानी ॥
और निबाहब भायप भाई ❋ करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥

१ बरगदका दूध । २ निषादपति गुह । ३ आज्ञा । ४ चरणकमल ।

तात भाँति तेहि राखब राऊ ❀ शोच मोर जेहि करहिं न काऊ ॥
लषण कहेउ कछु वचन कठोरा ❀ बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा ॥
बार बार निज शपथ दिवाई ❀ कहब न तात लषण लरिकाई ॥
दो.-कहिप्रणामकछुकहनलिय, सियभइशिथिलसनेह ॥
थकितवचन लोचन सजल, पुलकपल्लवितदेह ॥१५०॥
तेहि अवसर रघुवर रुख पाई ❀ केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुल तिलक चले इहि भाँती ❀ देखेउँ ठाढ़ कुलिश धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू ❀ जियत फिरउँ लै राम सँदेशू ॥
असकहिसचिववचन रहिगयऊ ❀ हानिगलानि शोचवश भयऊ ॥
सुनत सुमंत्र वचन नरनाहू ❀ परेउ धरणि उर दारुण दाहू ॥
तलफत विकल मोह मन मापा ❀ माजा मनहुँ मीनें कहँ व्यापा ॥
करि विलाप सब रोवहिं रानी ❀ महाविपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि विलाप दुखहू दुखलागा ❀ धीरज हू कर धीरज भागा ॥
दोहा-भयहुकुलाहल अवध अति, सुनिनृपराउर शोर ॥
विपुलविहँग वन पर्यउ निशि, मानहुँ कुलिशकठोर ॥
प्राण कण्ठगत भयउ भुआलू ❀ मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यालू ॥
इन्द्रिय सकल विकल भइभारी ❀ जनु सरसरसिजवन विनुवारी ॥
कौशल्या नृप दीख मलाना ❀ रविकुल रविअथयेजिय जाना ॥
उर धरि धीर राम महतारी ❀ बोली वचन समय अनुहारी ॥
नाथ समुझि मन करियविचारू ❀ राम वियोग पयोधि अपारू ॥
कर्णधार तुम अवधि जहाजू ❀ चढ़ेउ सकल प्रियवनिकसमाजू ॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू ❀ नाहिं त बूड़हि सब परिवारू ॥
जोजिय धरिय विनयपियमोरी ❀ राम लषण सिय मिलब बहोरी ॥
दोहा-प्रियावचनमृदुसुनतनृप, चितयउआँखिउघारि ॥
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत शीतल वारि ॥१५२॥
धरि धीरज उठि बैठ भुआलू ❀ कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥

१ वर्षाके पानीकाफेना। २ मछली। ३ पक्षी। ४ वज्र। ५ सर्प। ६ कमल।
७ समुद्र। ८ मर्यादा चौदह वर्षकी।

कहाँ लषण कहँ राम सनेही ❀ कहँ प्रिय पुत्र बधू वैदेही ॥
बिलपत राउ विकल बहु भाँती ❀ भइ युगसरिस सिराति न राती॥
तापस अन्ध शाप सुधि आई ❀ कौशल्यहि सब कथा सुनाई ॥

अथ क्षेपक ।

एक समय सुन प्रिये सयानी ❀ मृगया की मेरे मन आनी ॥
सब मृगया कर साज सजाई ❀ गयउँ बनहि सँग सेन सुहाई ॥
रैनि समय बेतस बन तीरा ❀ बैठे सरवर तट मतिधीरा ॥
ताही समय लिये घट कर में ❀ सरवन आयो जल हित सर में ॥
तूंबा जल में जबहि डुबायो ❀ भयो शब्द मेरे मन आयो ॥
जान्यो मृग तब धनुष सँभारा ❀ लक्ष्य वेध कर तेहि उर मारा ॥
लागेउ हिये शब्द हा कीन्हो ❀ यह मानुष मैंने तब चीन्हो ॥
गयउ निकट तब लख दुख पायो ❀ सरवन मोसे वचन सुनायो ॥
शोच करहु मति नृपति हमारी ❀ जो मैं कहहुँ करहु यहि वारी ॥
मैं सरवन सेवहुँ पितु माता ❀ नयन विहीन दोउ सुखदाता ॥
तिन्हें तृषाने आन सतायो ❀ लेन हेत जल को हों आयो ॥

दोहा-सो तुम से अज्ञान से, नृप मोहिं मारेहु बान ॥
सो खैंचहु अब देह से, निकसन चाहत प्रान ॥१५३॥

अरु तुम मन शंका मत मानो ❀ ब्राह्मण वंश नहीं मैं जानो ॥
पर यक बात हिये तुम लावहु ❀ माता पिता निकट चलिजावहु॥
तिनको हित सों नीर पियाई ❀ पाछे कहियो सब समझाई ॥
करहिं न शोच करेहु उपदेशा ❀ सत्य सन्ध रघुवंश नरेशा ॥
अब तुम दीजे बाण निकारी ❀ सुन दशरथ दुःखित भये भारी॥
हिय से जबहि निकारो बाना ❀ ओं ओं कह तब छाँडेहु प्राना ॥
नृप दशरथ घट लियो उठाई ❀ तिनके मात पिता ढिग जाई ॥
प्यावन लगे नीर बिनु बानी ❀ तब बोले दम्पति दुख मानी ॥

दोहा-पुत्र न बोलत आज तुम, हमसे सुन्दर बैन ॥
कारण कौन सो कहहु तुम, जासोंहोजियचैन ॥१५४॥

बिन बोले हम पियहिं न नीरा ❀ सुनभयेदशरथअधिकअधीरा ॥

सब वृत्तान्त पुनि दिय्रो सुनाई ❀ परे धरणि दोऊ अकुलाई ॥
पुत्र पुत्र कहि रोवन लागे ❀ मोंसे कहने लगे अभागे ॥
जहाँ पुत्र तहँ देउ दिखाई ❀ तब मैं तिनको गयउँ लिवाई ॥
पुत्र उठाय गोद महतारी ❀ रोवन लगी शब्द कर भारी ॥
पुनि दोउन यह बात सुनाई ❀ दीजे नृपति चिता बनवाई ॥
सुन मैंने रच दीन्ह बनाई ❀ बैठे पुत्र गोद दोउ जाई ॥
योग अग्निसे निज तनुजारा ❀ मरण समय असवचनउचारा ॥
दोहा-जिमि हम पुत्र वियोगे में, दशरथ त्यागें प्रान ॥
तैसेही तनु तजहु तुम, मानहु वचन प्रमान ॥ १५५ ॥
अस कह तापस गये सुरलोका ❀ मेरे मन छायो अति शोका ॥
पुनि मैं निज मन कीन्ह विचारा ❀ विनु समझे ऋषि वचन उचारा॥
पुत्र नहीं कोउ गेहँ हमारे ❀ किमि त्यागहिं तनु वचन तुम्हारे॥
सोच विहाय गेह में आयो ❀ अब तक तुम को नहीं सुनायो ॥
साँच भई वह अब सब बाता ❀ गये वन सीय राम सँग भ्राता ॥
प्राणपियारे वनहिं सिधारे ❀ अब तक प्राण न गये हमारे ॥
अब सुख कौन मिले जग माहीं ❀ जेहि ते प्राण न तनुते जाहीं ॥
राम लषण सिय काननें जाहीं ❀ अब तक प्राण रहे तनु माहीं ॥
दोहा-प्रियसरवनकीकथासे, अब मोहिं रह्यो न धीर ॥
पुत्र विना जे नहिं जिये, धन धन ते नर वीर ॥ १५६ ॥

इति क्षेपक ।

भयउ विकल वर्णत इतिहासा ❀ राम रहित धिक जीवन श्वासा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा ❀ जेइ न प्रेम पण मोर निबाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते ❀ तुम विनु जियत बहुत दिन बीते॥
हा जानकी लषण हा रघुवर ❀ हा पितु हित चितचातक जलधर॥
दोहा-राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तनु परिहरि रघुवर विरह, राउ गये सुरधाम ॥ १५७ ॥
जियन मरण फल दशरथ पावा ❀ अण्ड अनेक अमल यश छावा ॥

१ शरीर । २ दुःख । ३ बर । ४ वन । ५ पपीहा । ६ बादल । ७ अनेक ब्रह्माण्ड । ८ निर्मल ।

जियत राम विधुवदन निहारी ❀ राम विरह मरि मरण सँवारी ॥
शोक विकल सब रोवहिं रानी ❀ रूप शील बल तेज बखानी ॥
करहिं विलाप अनेक प्रकारा ❀ परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥
विलपहिं विकल दास अरु दासी ❀ घर घर रुदन करहिं पुरवासी ॥
अथयउ आजु भानुकुल भानू ❀ धर्म अवधि गुण रूप निधानू ॥
गारी सकल कैकयिहि देहीं ❀ नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
इहि विधि विलपत रैनि विहानी ❀ आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥

दोहा-तब वशिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास।
शोक निवारेउ सकल कर, निजविज्ञानप्रकाश ॥१५८॥

अथ क्षेपक।

❀ वसिष्ठजी बोले-हे कौशल्ये क्या तो हम और क्या तुम यह सुख तथा दुःखका भोग सबहीके अर्थ अवश्यहै, अन्तमें सबहीकी मृत्युहै तो फिर तुम क्यों शोक करती हो? हम प्राचीन राजाओंका इतिहास कहते हैं; सो तुम सुनो जिससे तुम्हारा शोक दूर होगा. औरराजाओंके चरित्रोंको सुनतेहैं-उनकी आयुकी वृद्धि होतीहै और शुभग्रहोंका संचार होताहै। अविक्षितिके पुत्र राजा मरुत बड़े भाग्यवानथे, इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता बृहस्पतिको साथ ले उनके यज्ञमें आयेथे राजाने कीर्तिमें इन्द्रकोभी जीताथा, बृहस्पति और इन्द्रको प्रीतिके अर्थ इस राजाकी यज्ञक्रियाके सम्पादन करने को स्वीकारकर उस कार्यको सम्वर्तने निर्वाह किया था। उनके राज्यमें पृथ्वी विनाही कर्षण (जोतना) के धान्यों को उत्पन्न करतीथी, उनके यज्ञमें विश्वेदेवा सभासदथे, साध्य और मरुद्गण चारों ओरसे रक्षा करनेवालेथे, देवता उस यज्ञमें सोमरसको पानकर अत्यन्त तृप्तहुएथे और उस राजाने देवता, मनुष्य, गन्धर्वोंको इतनी दक्षिणा दीथी कि, जिसको वे उठा नहींसकेथे। हे कौशल्ये! वह राजा तुमसे बहुत धार्मिक और ज्ञानी तथा वैराग्ययुक्तथे जब वहभी मृत्युको प्राप्तहुए तो तुम इन राजाका शोक क्यों करतीहो? । उतथिके पुत्र सुहोत्रभी मृत्युको प्राप्तहुए जिनके राज्यमें इन्द्रने एकवर्षतक सुवर्णकी वर्षा करीथी, वसुमति यथार्थ नामसे उनके राज्यमें थी सारी नदियें सुवर्णवाहिनी थीं और नदियोंमें इन्द्रने सुवर्णहीके नक्र कच्छपादि उत्पन्न करदियेथे, राजासुहोत्र यह देख विस्मयको प्राप्तहो उन सब नक्रादिकोंको ग्रहणकर कुरु जांगल देशमें रखके यज्ञमें सब ब्राह्मणोंको दान कर दिया था वेभी तो मरे॥ अङ्गदेशके

राजाने यज्ञ करके दशलाख श्वेतवर्णवाले घोड़े, दशलाख सुवर्णसे शोभित कन्या, दिग्गजोंके समान दशलक्ष हाथी, सुवर्णकी मालाओंसे भूषित एककोटि (करोड़) वृषभ और हज़ार गौ दक्षिणामें दीथीं. इस बृहद्रथ राजाके विष्णुपद नामवाले पर्वमें यज्ञ करनेसे इन्द्र और ब्राह्मण सोम-पान करनेसे उन्मत्त होगये थे, इसी प्रकार इस अंगदेशाधिपति राजा बृहद्रथने सौ यज्ञकरे इस राजाने जो यज्ञमें धनदियाथा उतने धनको दान देनेवाला आजतक कोई राजा नहीं हुआ जब वहभी कालके वश हुए तौ तुम राजा दशरथका वृथा शोक क्यों करतीहो ?॥ और राजा शिवि जिन्होंने रथमें इकलेही बैठकर सारे भूमंडलको जीताथा और फिर यज्ञमें अपना सर्वस्व दान करदियाथा. जब ऐसे २ राजाभी मृत्युके अधीन हुए तौ तुम राजा दशरथका शोक क्यों करतीहो ?॥ बड़े ऐश्वर्यवाले शकुन्तलाके पुत्र भरतने यमुनाके किनारे तीनसौ और सरस्वतीके तटपर वीस तथा गंगाके किनारेमें चौदह, इसप्रकार हजार अश्वमेध यज्ञ, और सौ राजसूययज्ञ किये थे उस समय उनके समान और कोई दूसरा राजा न था, राजाभरतने यज्ञवेदीका विस्तार और उसमें असंख्यों घोड़ोंको बांधकर महर्षिकण्व को हजारपद्म द्रव्य सहित घोड़े दान कर दिये थे कौशल्ये! वेभी तौ कालका ग्रास हुए तौ तुम दशरथका वृथा शोक क्यों करती हो?॥ एकसमय राजा भगीरथ एकान्त स्थानमें बैठेथे और उन राजाकी गोदमें गंगा विराजमानथीं इसीकारण गंगाका नाम 'उर्वशी' हुआ, गंगाने राजा भगीरथको पिताके सदृश मानाथा इसी कारण आजतक गंगाका नाम 'भागीरथी' प्रसिद्ध है, उन्हीं राजा भगीरथने यज्ञमें सुवर्णसे शोभायमान दशलाख कन्या दक्षिणामें दीथीं वह कन्याओंका समूह चार चार घोड़ेवाले रथोंमें स्थितथा, एक २ रथके पीछे सुवर्णकी मालाओंसे भूषित सौ २ हाथी, एक २ हाथीके पीछे सौ २ गौ प्रत्येक गौके पीछे हजार २ मेष (मेढ़) और बकरी दानमेंदीथीं जब वेभी कालके मुखमें गये तौ दशरथके प्रति तुम्हारा शोक करना वृथा है॥ राजादिलीपने भी यज्ञ करके धन तथा रत्नोंसे परिपूर्ण पृथ्वी दान करदीथी, उनके पुरोहितने प्रत्येक यज्ञमें हज़ार २ हाथियोंकी दक्षिणाली थी और यज्ञमें सुवर्णके यूप (खम्भ) गाड़े गयेथे, इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता यज्ञकी सुवर्णभूमिमें स्थितथे, गन्धर्व नृत्य करतेथे और गन्धर्वोंके राजा विश्वावसु गान कर रहेथे, जिन्होंने राजा दिलीपको आँखोंसे देखाभी था वेभी तौ स्वर्गगामी हुए जब ऐसे २ पुण्यात्माराजाभी कालका कलेवा हुए तौ तुम दशरथका शोक वृथा क्यों करोहो॥ राजा युवनाश्वके पुत्र मान्धाताने एक दिनमें सारी पृथ्वीको जीताथा, अङ्गार, मरुत्त, असित, गय, अङ्ग और बृहद्रथको भी जीताथा, अंगारके साथ युद्धमें इनके धनुष की टंकारसे

मानो आकाशमण्डल विदीर्ण होताथा और सूर्यके उदयसे अस्त पर्यंत पृथ्वीको जीताथा इन राजाने सौ अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ कियेथे; ब्राह्मणोंको दश योजन लम्बा और एक योजन चौड़ा सुवर्णका मत्स्य दक्षिणा में दियाथा जब वेभी मृत्युकेही अधीन हुए तो तुम वृथा शोकमतकरो॥ नहुषके पुत्र राजाययाति एकही स्थानमें बैठकरबलसे युग कीलकको फेंकतेथे, वहकीलक जितनी दूरजाकर गिरताथा अपनेस्थान से उतनीही दूरतक यज्ञ वेदी बनातेथे, उसकीलकका नाम शम्यापात है, राजा ययातिने शत प्रधान यज्ञ और सौ वाजपेय यज्ञकर सुवर्णके तीन पर्वत दान करके ब्राह्मणोंको तृप्त कराथा और दैत्योंके समूहोंको युद्धमें मारकर यदु, द्रुह्युआदि अपने पुत्रोंको पृथ्वीको देकर पुरुको राज्यतिलककर स्त्री सहित वनको गये, जब वेभी मरे तो तुम राजाका शोक क्यों करतीहो॥ राजा नाभागके पुत्र अम्बरीष अपनी प्रजामें बहुत प्रीति रखतेथे, उन्होंने यज्ञमें स्थित दशलक्ष राजाओंको ब्राह्मणोंकी सेवा में नियुक्त करदियाथा वे सब राजा ब्राह्मणोंको दक्षिणा में दियेथे जब वोहभी मृत्युवश हुए तो तुम अपने पति दशरथका शोक क्यों करती हो॥ कौशल्ये! राजाशशिविन्दुके दशलाख पुत्र थे, एक२ पुत्रको सौ२ कन्या विवाहीथीं प्रत्येक कन्याके पीछे सौ २ हाथीथे एक २ हस्तीके पीछे शत २ रथ एक २ रथके पीछे सुवर्णके आभूषण युक्त सौ २ घोड़े, प्रत्येक घोड़ेके पीछे सौ २ गौ एक २ गौ के पीछे सौ २ भेड़े और बकरी दायजमें आई थीं, राजाशशिविन्दुने वह सब यज्ञमें दान करदियाथा जब वेभी कालके गालमें गये तो तुम्हारा शोक वृथा है॥ हे कौशल्ये! अमूर्तरयाके पुत्र राजागयने सौ वर्ष पर्यन्त होमसे बचीहुई वस्तुका भोजन कराथा, अग्नि आहुतियों से प्रसन्न हो वर देनेको तयार हुए-तब राजाने यही वर मांगा कि आपकी कृपासे मेरी धर्ममें श्रद्धा, सत्यमें प्रेम, और निरन्तर दान करनेसेभी धनका नाश नहींहो, अग्निने प्रसन्न होकरकहा ऐसाही होगा; इन राजाने हजार वर्ष पर्यन्त-दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास, तथा अश्वमेधयज्ञ करेथे, इन्होंने स्वाहासे देवगण, स्वधासे पितृगण, इच्छानुसार साधनोंसे स्त्रीगणोंको तृप्तकियाथा, अश्वमेध यज्ञमें बीस व्याम चौडी और दशव्याम लम्बी सुवर्णमय पृथ्वी ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दीथी गंगाकी बालुकाके जितने कणहोते हैं उतनीही गौदानकर ब्राह्मणोंको दीथीं, ऐसे २ राजा भी तो एकदिन मरही गये तो तुम्हारा शोककरना सब वृथा है॥ और हे कौशल्ये! जब इसी इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न हुए राजा सगर जिनकी कीर्ति आकाश तक छारही है वे भी मरहीगये तो तुम वृथा शोक क्यों करती हो॥ औरभी सुनो राजावेणुके पुत्र राजा

पृथुको सब महर्षियोंने इकट्ठे होकर दण्डकवनमें राज्यतिलक कियाथा वह राजा सब जगह अत्यन्त विख्यात राजा हुए, इसी कारण उनका 'पृथु' नाम हुआ, वह राजा क्षत (नाश) से त्राण (रक्षा) करतेथे इस कारण 'क्षत्रि' नाम उनमेंही चरितार्थ हो रहाथा, वह प्रजाको आनन्द देतेथे इस कारण राजा शब्द उन्हींमें घटताथा, उनके राज्यमें पृथ्वी बिनाही कर्षणके धान्योंको उत्पन्न करनेवाली और बहुतसे फूल फलोंको उत्पन्न करनेवालीथी, प्रत्येक पत्रमें मधु उत्पन्न होताथा, सम्पूर्ण प्रजा रोगरहित निर्भयथी, जब राजा जलमें चलतेथे तब नदी, समुद्र स्थिर हो जातेथे, उन राजाने अश्वमेध यज्ञमें इक्कीस सुवर्णके पर्वत दानकियेथे वे भी मृत्युहीके आधीनहुये तौ तुम्हारा राजा दशरथके प्रति शोक करना वृथा है ॥

इति क्षेपक ।

तेल नाव भरि नृपतनु राखा ❀ दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू ❀ नृप सुधिकतहुँकहहु जनिकाहू ॥
इतनै कहेउ भरत सन जाई ❀ गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाये ❀ चले वेगि वर वाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउ जबते ❀ कुशकुन होहिं भरत कहँ तबते ॥
देखहिं राति भयानक सपना ❀ जागि करहिंबहु कोटिकलपना ॥
विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ❀ शिव अभिषेक करहिं विधिनाना ॥
माँगहिं हृदय महेश मनाई ❀ कुशल मातु पितु परिजन भाई ॥

दोहा–इहि विधि शोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाइ ॥
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेशमनाइ ॥ १५९ ॥

चले समीर वेग हय हाँके ❀ लाँघत सरित शैल वन बाँके ॥
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई ❀ अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष वर्ष सम जाई ❀ इहि विधि भरत अवध नियराई ॥
अशकुन होहिं नगर पैठारा ❀ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला ❀ सुनि सुनि होहिं भरत उर शूला ॥
श्रीहत सर सरिता वन बागा ❀ नगर विशेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गय जाहिं न जोये ❀ राम वियोग कुरोग विगोये ॥

---

१ विचार । २ पूजन । ३ पवनवेगके सम । ४ काले कौवे । ५ गदहा । ६ सियार-जम्बुक । ७ तालाव । ८ नदियाँ ।

नगर नारि नर निपट दुखारी ❀ मनहु सबनि सब सम्पति हारी॥
दो०-पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु,गवहिंजोहारहिंजाहिं।
भरत कुशल नहिं पूँछिसकि,भाविषादमनमाहिं १६०॥
हाट बाट नहिं जाइ निहारी ❀ जनुपुरदश दिशिलागिदवारी॥
आवत सुत सुनि केकयनन्दिनि ❀ हरषी रविकुलजलरुहचन्दिनि॥
सजि आरती मुदित उठि धाई ❀ द्वारहिं भेंट भवन ले आई॥
भरत दुखित परिवार निहारी ❀ मानहु तुहिन वनज वन मारी॥
कैकेयी हर्षित इहि भाँती ❀ मनहु मुदित दवलाइ किराती॥
सुतहि सशोच देखि मनमारे ❀ पूछति नैहर कुशल हमारे॥
सकल कुशल कह भरत सुनाई ❀ पूछी निज कुल कुशल भलाई॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता ❀ कहँसियरामलषणप्रिय भ्राता॥
दोहा-सुनि सुत वचन सनेह मय, कपट नीर भरिनैन॥
भरत श्रवण मन शूल सम, पापिनि बोली बैन॥१६१॥
तात बात मैं सकल सँवारी ❀ भइ मंथरा सहाय विचारी॥
कछुक काज विधि बीच बिगारेउ ❀ भूपति सुरपति पुर पगुधारेउ॥
सुनतभरतभयो विवशविषादा ❀ जनु सहमेउ करि केहरिनादा॥
तात तात हा तात पुकारी ❀ परेउ भूमितल व्याकुल भारी॥
चलत न देखन पायउँ तोहीं ❀ तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी ❀ कहु पितु मरण हेतु महतारी॥
सुनि सुत वचन कहति कैकेई ❀ मर्म पाछि जनु माहुर देई॥
आदिहि ते सब आपनि करणी ❀ कुटिलकठोरमुदितमनवरणी॥
दोहा-भरतहि बिसरेउ पितु मरण,सुनत राम बनगौन॥
हेतु अपुन को जान जिय, थकित रहेधरिमौन॥१६२॥
विकलविलोकिसुतहिसमुझावति ❀ मनहुँ जरे पर लोन लगावति॥
तात राउ नहिं शोचन योगू ❀ बड़इ सुकृत यशकीन्हेउभोगू॥
जीवत सकल जन्म फल पाये ❀ अन्त अमरपति सदन सिधाये॥

१ अग्नि। २ भीलनी। ३ घाव छीलकर। ४ कारण। ५ पुण्यकार्य।

अस अनुमानि शोच परिहरहू ❀ सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सहमेउ सुठि राजकुमारा ❀ पाके क्षेत जनु लागु अँगारा ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसाशा ❀ पापिनिसबहिंभाँतिकुलनाशा ॥
जोपै कुरुचि रही असि तोहीं ❀ जनमत काहे न मारेसि मोहीं ॥
पेड़काटि तैं पल्लव सींचा ❀ मीन जियन हित वारि उलीचा ॥

दोहा-हंस वंश दशरथ जनक, रामलषणसे भाय ॥
जननी तू जननी भई, विधिसे काह बसाय ॥१६३॥

जब ते कुमति कुमत मन ठयऊ ❀ खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा ❀ जरि न जीह मुँह परे न कीरा ॥
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ❀ मरणकालविधिमतिहरलीन्ही ॥
विधिहु न नारि हृदय गति जानी ❀ सकलकपटअघअवगुणखानी ॥
सरल सुशील धर्मरत राऊ ❀ सो किमिजानहितीयस्वभाऊ ॥
अस को जीव जन्तु जगमाहीं ❀ जेहि रघुनाथ प्राणप्रिय नाहीं ॥
भे अति अहित राम तेउ तोहीं ❀ कोतू अहसि सत्य कहु मोहीं ॥
जोहसि सोहसि मुँह मसिलाई ❀ आँखि ओट उठि बैठहुजाई ॥

दोहा-राम विरोधी हृदय ते, प्रगटकीन्ह विधि मोहिं ॥
मो समानको पातकी, वादि कहौं कछुतोहिं ॥ १६४ ॥

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई ❀ जरहिं गात रिसि कछु न बसाई ॥
त्यहि अवसर कुबरी तहँ आई ❀ वसन विभूषण विविध बनाई ॥
लखि रिसभरेउ लषण लघुभाई ❀ बरत अनल घृतआहुति पाई ॥
हुमुकि लात तकि कूबर मारा ❀ परि मुँहभरिमहिकरतपुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू ❀ दलितदशनमुखरुधिरप्रचारू ॥
अहह दैव मैं काह नशावा ❀ करत नीक फल अनइस पावा ॥
सुनिरिपुहनलखिनखशिखखोटी ❀ लगेघसीटन धरिधरि झोटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई ❀ कौशल्या पहँ गे दोउ भाई ॥

दोहा-मलिनवसनविवरणविकल, कृशशरीरदुखभार ॥

---

१ डरपत। २ घाव। ३ पिता। ४ ब्रह्मा। ५ भग्नि। ६ शत्रुघ्न।

कनक कमल वर बेलि वन, मानहुँ हनी तुषार॥१६५॥

भरतहिं देखि मातु उठि धाई ❁ मूर्छित अवनि परी अकुलाई॥
देखत भरत विकल भयभारी ❁ परे चरण तनु दशा बिसारी॥
मातु तात कहँ देहु दिखाई ❁ कहँ सिय राम लषणदोउ भाई॥
कैकेयि कत जनमी जग माँझा ❁ जो जनमी तो भइ किनबाँझा॥
कुल कलंक जेहि जनमेउ मोही ❁ अपयशभाजन प्रियजनद्रोही॥
को त्रिभुवन मोहिंसरिस अभागी ❁ गतिअसितोरि मातुजेहिलागी॥
पितु सुरपुर वन रघुकुलकेतू ❁ मैं केवल सब अनरथ हेतू॥
धिक् मोहिं भयउ वेणु वन आगी ❁ दुसह दाह दुख दूषण भागी॥

दोहा–मातुभरतके वचनमृदु, सुनिपुनि उठी सँभारि॥
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचतिं वारि॥१६६॥

सरल सुभाय मातु उर लाये ❁ अति हित मनहुँ राम फिरिपाये॥
भेंटेउ बहुरि लषण लघु भाई ❁ शोक सनेह न हृदय समाई॥
देखि स्वभाव कहत सब कोई ❁ राम मातु अस काहे न होई॥
माता भरत गोद बैठारे ❁ आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे॥
अजहुँ वत्स बलि धीरज धरहू ❁ कुसमयसमुझि शोकपरिहरहू॥
जनि मानहु जिय हानि गलानी ❁ कालकर्म्मगतिअघटितजानी॥
काहुहि दोष देव जनि ताता ❁ भामोहिंसबविधि बामविधाता॥
जो ऐसेहु विधि मोहिं जियावा ❁ अजहुँको जानेकातेहि भावा॥

दोहा–पितु आयसु भूषण वसन, तात तजे रघुवीर॥
विस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरे वल्कल चीर॥१६७॥

मुख प्रसन्न मन रागँ न रोषूँ ❁ सबकर सबविधि करि परितोषू॥
चलेविपिनं सुनि सिय सँगलागी ❁ रही न रामचरण अनुरागी॥
सुनतहिं लषण चले लगिसाथा ❁ रहे न यतन किये रघुनाथा॥
तब रघुपति सबही शिरनाई ❁ चले संग सिय अरु लघु भाई॥
राम लषण सिय बनहिं सिधाये ❁ गई न संग न प्राण पठाये॥

१ पाला। २ पृथ्वी। ३ वंशवन। ४ मधनेंसिजधुपान करत। ५ सुखद। ६ भोजपत्र। ७ प्रीति। ८ क्रोध। ९ समाधान। १० वन।

यह सब भा इन आँखिन आगे ❀ तउ न तजततनु जीवअभागे॥
मोहिं न लाज निजनेह निहारी ❀ राम सरिस सुत मैं महतारी॥
जिये मरे भल भूपति जाना ❀ मोर हृदय शत कुलिशसमाना॥

दोहा–कौशल्याके वचन सुनि, भरत सहितरनिवास॥
व्याकुल विलपत राजगृह, मानहुँ शोक निवास१६८॥

विलपहिं विकल भरत दोउभाई ❀ कौशल्या लिय हृदय लगाई॥
भाँति अनेक भरत समुझाई ❀ कहि विवेक वर वचन सुनाई॥
भरतहु मातु सकल समुझाई ❀ कहिपुराण श्रुति कथा सुनाई॥
छलविहीन शुचिसरल सुवाणी ❀ बोले भरत जोरि युग पाणी॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे ❀ गाइ गोठ महि सुरपुर जारे॥
जे अघ तिय बालक वधकीन्हे ❀ मीत महीपति माहुर दीन्हे॥
जे पातक उपपातक अहहीं ❀ कर्म्मवचनमनभवकविकहहीं॥
ते पातक मोहिं होउ विधाता ❀ जो यह होइ मोर मतमाता॥

दोहा–जे परिहरि हरिहरचरण, भजहिंभूतगण घोर॥
तिन्हकीगतिमोहिंदेउविधि, जोजननीमतमोर॥१६९॥

वेचहिं वेद धर्म्म दुहिं लेहीं ❀ पिशुन पराव पाप कहि देहीं॥
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी ❀ वेद विदूषक विश्व विरोधी॥
लोभी लम्पट लोल लवारा ❀ जे ताकहिं परधन परदारा॥
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा ❀ जो जननी यह सम्मत मोरा॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे ❀ परमारथ पथ विमुख अभागे॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई ❀ जिनहिं न हरिहर सुयशसुहाई॥
तजि श्रुतिपन्थ वामपथ चलहीं ❀ वंचक विरचि वेषजगछलहीं॥
तिन्हकी गति शंकर मोहिंदेऊ ❀ जननी जो यह जानौं भेऊ॥

छं०–मनवचनकर्म्मकृपायतनकरदासमैंसुनुमातुरी॥
उर बसत रामसुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी॥
असकहतलोचनबहत जल तनुपुलक नखलेखतमही॥

१ संधी। २ चुगुलखोर। ३ वेदोंमें दोषनिकालने वाले। ४ कामी।
५ टेढ़ा कल्पितमार्ग। ६ ठग।

हियलाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही ॥
दोहा-मातु भरतके वचन सुनि, साँचे सरल सुभाय॥
कहत रामप्रिय तात तुम, सदा वचन मनकाय॥१७०॥
राम प्राण ते प्राण तुम्हारे ❀ तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे ॥
विधु विष चुवै श्रवै हिम आगी ❀ होइ वारिचर वारि विरागी ॥
भये ज्ञान वरु मिटै न मोहू ❀ तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं ❀ सो स्वप्नेहुँ सुखसुगतिनलहहीं ॥
अस कहि मातु भरत हिय लाये ❀ थनपय श्रवहिं नयनजलछाये ॥
करत विलाप विपुल यहिभाँती ❀ बैठे बीति गई सब राती ॥
वामदेव वशिष्ठ तब आये ❀ सचिव महाजन सकल बुलाये॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे ❀ कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥
दोहा-तात हृदय धीरजधरहु,करहुजोअवसर आज ॥
उठेभरत गुरु वचनसुनि,करन लगेउसबकाज१७१ ॥
नृप तनु वेद विहित अन्हवावा ❀ परम विचित्र विमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखी ❀ रहीं राम दरशन अभिलाषी ॥
चन्दन अगर भार बहु आये ❀ अमित अनेक सुगन्ध सुहाये ॥
सरयु तीर रचि चिता बनाई ❀ जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
याविधि दाहक्रिया सब कीन्ही ❀ विधिवतन्हाय तिलांजलिदीन्ही॥
शोधि स्मृति सब वेद पुराणा ❀ कीन्ह भरत दशगात्र विधाना ॥
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा ❀ तहँ तस सहस भाँति सबकीन्हा ॥
भये विशुद्ध दिये सब दाना ❀ धेनु वाजि गज वाहन नाना ॥
दोहा-सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम ॥
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरण काम ॥१७२ ॥
पितुहित भरत कीन्ह जसि करणी ❀ सो मुख लाख जाइनहिंवरणी ॥
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये ❀ सकल महाजन सचिव बुलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई ❀ पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥

१ चन्द्र। २ पाला। ३ मछली। ४ वेदानुकूल। ५ अत्यंतसुन्दर। ६ सिद्धी। ७ विशेष करकेशुद्ध। ८ ब्राह्मण। ९ मंत्री।

भरत वशिष्ठ निकट बैठारे ❀ नीति धर्म्म मय वचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी ❀ कैकेयिकठिनकीन्हजसकरणी ॥
भूप धर्म्म व्रत सत्य सराहा ❀ ज्यहि तनुपरिहरि प्रेम निबाहा॥
कहत रामगुण शील स्वभाऊ ❀ सजल नयन पुलके मुनिराऊ॥
बहुरि लषण सियप्रीति बखानी ❀ शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी ॥
दोहा-सुनहुभरतभावीप्रबल, विलखि कहेउमुनिनाथ॥
हानि लाभजीवनमरण, यशअपयशविधिहाथ॥१७३॥
अस विचारि केहि दीजिय दोषू ❀ व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात विचार करहु मन माहीं ❀ शोच योग दशरथ नृप नाहीं ॥
शोचिय विप्र जो वेद विहीना ❀ तजिनिजधर्म्म विषयलवलीना ॥
शोचिय नृपतिजो नीति न जाना ❀ जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना ॥
शोचिय वैश्य कृपण धनवानू ❀ जो नअतिथिशिवभक्तिसुजानू॥
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी ❀ मुखर[1] मानप्रिय ज्ञान गुमानी ॥
शोचिय पुनि पतिवंचक[2] नारी ❀ कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी॥
शोचिय वटु निज व्रत परिहरई ❀ जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई ॥
दोहा-शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म्म पथत्याग॥
शोचिय यती प्रपंचरत[3], विगत विवेक विराग ॥ १७४॥
वैखानस[4] सोइ शोचन योगू ❀ तप विहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी ❀ जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी॥
सब विधि शोचिय पर अपकारी ❀ निज तनु पोषक निर्दय भारी॥
शोचनीय सबही विधि सोई ❀ जो न छाँड़ि छल हरिजन होई ॥
शोचनीय नहिं कोशलराऊ ❀ भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न होनिहुँहारा ❀ भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
विधि हरिहरसुरपतिदिशिनाथा ❀ वर्णहिं सब दशरथ गुणगाथा ॥
तीनि काल त्रिभुवन जग माहीं ❀ भूरि भाग्य दशरथ समनाहीं ॥
दोहा-कहहु तात केहिभाँति कोउ, करहि बड़ाईतासु

१ वाचाल । २ पतिसेकपटकरनेवाली स्त्री॥ ३ संसारमें प्रीतिकरनेवाला । ४ वानप्रस्थ ।

रामलषणतुमशत्रुहन, सरिसमुवन शुचि जासु॥१७५॥
सब प्रकार भूपति बड़भागी ❀ बादि विषाद करियतेहि लागी॥
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू ❀ शिर धरि राज रजायसु करहू॥
राव राजपद तुमकहँ दीन्हा ❀ पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा॥
तजे राम जेहि वचनहिं लागी ❀ तनु परिहरेउ राम विरहागी॥
नृपहिं वचन प्रिय नहिं प्रियप्राणा ❀ करहु तात पितु वचन प्रमाणा॥
करहु शीश धरि भूप रजाई ❀ है तुम कहँ सब भाँति भलाई॥
परशुराम पितु आज्ञा राखी ❀ मारी मातु लोक सब साखी॥
तनय ययातिहि यौवन दयऊ ❀ पितुआज्ञा अघ अयश न भयऊ॥
दोहा-अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिंपितुबैन॥

❀शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी और वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा एक समय स्नान करनेको गईं तब शर्मिष्ठाने भूलसे देवयानीका वस्त्र पहरलिया तब देवयानी क्रोधितहो शर्मिष्ठासे लडपडी और शुक्राचार्यसे आयके कहा तब शुक्राचार्यने वृषपर्वासे उरहनादिया कि तेरी पुत्रीने वादाविवादकिया तब वृषपर्वाने निवेदनकिया जिसमें देवयानी प्रसन्नहोय सो किया चाहिये तब शुक्राचार्यने कहा कि वह चाहतीहै कि शर्मिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्वाने हजार दासी समेत शर्मिष्ठाको देवयानीके भृत्यपनमें भेजदिया जब देवयानी ययाति राजाको शापवश व्याहीगई शर्मिष्ठाभी देवयानीके संगगई सो कहीं एकदिन राजाको शर्मिष्ठाके संग विहार करते जान देवयानीने क्रोधकर पितासे जाय कहा तब शुक्राचार्यने ययातिको शापदिया कि तू अभी वृद्ध होजायगा यह सुन राजाने शुक्रजीकी बड़ीविनयकरीकि महाराज अभीविषय वासनासे मेरी तृप्ति नहीं हुई फिर दयाकर शुक्रजी बोले कि तुम अपने पुत्रोंसे युवा अवस्था मांगलो और अपनी बुढ़ाई उन्हें देदो तब राजाने देवयानीके पुत्र यदु आदि तीनोंसे युवाअवस्था मांगी परन्तु उन्होंने न दी इससे उन्हें शापदिया कि तुम्हारे वंशमें राज्यका अधिकारी कोई नहोगा फिर शर्मिष्ठाके दोनों पुत्रोंसे याचना करी तिनमें छोटे पुत्र पुरुने पिताकी आज्ञा मान अपनी युवा अवस्था दे दी और आशीर्वाद पाया तभीसे राज्याधिकारीहो उनके वंशके लोग पुरुवंशी कहलाये॥

ते भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति ऐन॥१७६॥
अवशि नरेश वचन फुर करहू ❀ पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ❀ तुमकहँ सुकृत सुयश नहिंदोषू ॥
वेद विहित सम्मत सबहीका ❀ जेहि पितु देइ सो पावै टीका ॥
करहु राज्य परिहरहु गलानी ❀ मानहुँ मोर वचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब राम वैदेही ❀ अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौशल्यादि सकल महतारी ❀ तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी ॥
मर्म तुम्हार राम सब जानहिं ❀ सो सब विधि तुमसन भलमानहिं॥
सौंपेहु राज्य रामके आये ❀ सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दोहा-कीजियगुरुआयसुअवशि, कहहिंसचिवकरजोरि
रघुपति आये उचितजस,तबतसकरबबहोरि॥१७७॥
कौशल्या धरि धीरज कहई ❀ पुत्र पिता गुरु आयसु[1] अहई ॥
सो आदरिय करिय हित मानी ❀ तजिय विषाद काल गति जानी॥
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❀ तुम इहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव कह अंबा ❀ तुमहीं सुत सबकर अवलंबा ॥
लखि विधि वाम काल कठिनाई ❀ धीरज धरहु मातु बलिजाई ॥
शिरधरि गुरु आयसु अनुसरहू ❀ प्रजा पालि पुरजन दुखहरहू ॥
गुरुके वचन सचिव अभिनन्दन[2] ❀ सुनत भरत हिय जलरुह चन्दन॥
सुनी[3] बहोरि मातु मृदु[4] बानी ❀ शील सनेह सरल[5] रससानी ॥
छंद-सानी सरलरसमातुबानी सुनिभरतव्याकुलभये॥
लोचन सरोरुह[6] श्रवत सिंचत विरह उर अंकुरनये ॥
सोदशा देखत समय तेहि बिसरी सबहिंसुधिदेहकी॥
तुलसी सराहत सकल सादर सींवँ[7]सहजसनेहकी॥८॥
सो०-भरत कमलकर जोरि, धर्म्म धुरन्धर धीरधरि ॥
वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तरसबहि॥७॥
सोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका ❀ प्रजा सचिव सम्मत सबहीका ॥

१ आज्ञा। २ मंत्रीके आनन्द देनेवाले। ३ पुनि। ४ मीठे वचन ५ सीधी।
६ कमल। ७ मर्यादा।

मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा ❀ अवशि शीशधरि चाहियकीन्हा॥
गुरु पितु मातु स्वामि हितवानी ❀ सुनि मन मुदित करिय भल जानी॥
उचित कि अनुचित किये विचारू ❀ धर्म्मजाइ शिरपातक भारू॥
तुमतौ देहु सरल शिख सोई ❀ जो आचरत मोर हित होई॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके ❀ तदपि होत परितोष न जीके॥
अबतुम विनय मोरि सुनिलेहू ❀ मोहिं अनुहरत शिखावन देहू॥
उत्तर देउँ क्षमब अपराधू ❀ दुखित दोष गुण गणहिं न साधू॥

दोहा-पितुसुरपुरसिय राम वन, करनकहहुमोहिंराज॥
इहि ते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज॥ १७८॥

हित हमार सियपति सेवकाई ❀ सो हरि लीन मातु कुटिलाई॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं ❀ आन उपाय मोर हित नाहीं॥
शोक समाज राज क्यहि लेखे ❀ लषण राम सिय पदविनुदेखे॥
वादि वसन विनु भूषण भारू ❀ वादि विरति विनु ब्रह्म विचारू॥
सरुज शरीर वादि बहु भोगा ❀ विनु हरिभक्ति जाय जप योगा॥
जाय जीव विनु देह सुहाई ❀ वादि मोर सब विनु रघुराई॥
जाउँ राम पहँ आयसु देहू ❀ एकहि अंक मोर हितयेहू॥
मोहिं नृपकरि आपन भल चहहू ❀ सो सनेह जड़ता वश कहहू॥

दोहा-कैकेयी सुत कुटिल मति, राम विमुख गतलाज॥
तुमचाहतसुख मोहवश, मोहिंसे अधमकेराज॥ १७९॥

कहौं साँच सब सुनि पतियाहू ❀ चाहिय धर्म्म शील नरनाहू॥
मोहिं राज्य हठि देहहु जबहीं ❀ रसा रसातल जाइहि तबहीं॥
मोहिं समान को पापनिवासी ❀ जेहि लगि सीय राम वनवासी॥
राउ राम कहँ कानन दीन्हा ❀ विछुरतगमन अमरपुर कीन्हा॥
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू ❀ बैठि बात सब सुनउँ सचेतू॥
विन रघुवीर विलोकिय वासू ❀ रहे प्राण सहि जग उपहासू॥
राम पुनीत विषय रस रूखे ❀ लोलुप भूमि भोगके भूखे॥

१ सीधी शिक्षा। २ संतोष। ३ अनुसार। ४ वैराग्य। ५ रोगवश शरीर।
६ पृथ्वी। ७ पाताल। ८ वन। ९ मिथ्यावादी।

कहँ लगि कहउँ हृदय कठिनाई ❀ निदरि कुलिश[1] जेहिलई बड़ाई ॥
दोहा-कारण ते कारज कठिन, होय दोष नहिं मोर ॥
कुलिश अस्थि[2] ते उपल[3] ते, लोह कराल कठोर ॥१८०॥
कैकयी भव तनु अनुरागे ❀ पामर प्राण न जाहिं अभागे ॥
जो प्रिय विरह प्राण प्रिय लागे ❀ देखव सुनव बहुत अव आगे ॥
लषण राम सिय कहँ वन दीन्हा ❀ पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥
लीन्ह विधवपन अपयश आपू ❀ दीन्हेउ प्रजहि शोक सन्तापू ॥
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू ❀ कीन्ह कैकयी सब कर काजू ॥
इहि ते मोर कहा अब नीका ❀ तेहि पर देन कहहु तुम टीका ॥
कैकयि जठर जन्मि जग माहीं ❀ यह मोहिं कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥
मोर बात सब विधिहि बनाई ❀ प्रजा पंच कत करहु सहाई ॥
दोहा-ग्रह गृहीत पुनि वात[4] वश, तेहि पुनि बीछी मार ॥
ताहि पियाई वारुणी[5], कहहु कवन उपचार[6] ॥ १८१ ॥
कैकयि सुवन योग जग जोई ❀ चतुर विरंचि रचेउ मोहिं सोई ॥
दशरथतनय राम लघु भाई ❀ दीन्ह मोहिं विधि वादि बड़ाई ॥
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका ❀ राय राज्य सबही कहँ नीका ॥
उतर देउँ केहि विधि केहि केही ❀ कहहु सुखेन यथारुचि जेही ॥
मोहिं कुमातु समेत विहाई ❀ कहहु कहहि को कीन्ह भलाई ॥
मोहिं विनु को सचराचर[7] माहीं ❀ जेहि सिय राम प्राण प्रिय नाहीं ॥
परमहानि सब कहँ बड़ लाहू[8] ❀ अदिन मोर नहिं दूषण काहू ॥
संशय शील प्रेमवश अहहू ❀ सबै उचित सब जो कछु कहहू ॥
दोहा-राम मातु सुठि सरल चित, मोपर प्रेम विशेषि ॥
कहहिं स्वभाव सनेह वश, मोरि दीनता देखि ॥१८२॥
गुरु विवेक सागर जग जाना ❀ जिनहिं विश्व कर वदर[10] समाना ॥
मोकहँ तिलक साज सजि सोऊ ❀ भा विधि विमुख विमुख सब कोऊ ॥
परिहरि राम सीय जग माहीं ❀ कोइ न कहहि मोर मत नाहीं ॥

---

१ वज्र । २ हड्डी । ३ पत्थर । ४ सन्निपात । ५ मदिरा । ६ उपाय ।
७ चल, अचल । ८ लाभ । ९ ज्ञान । १० बेर ।

सो मैं सुनब सहब सुख मानी ❋ अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी ॥
डर न मोहिंजग कहहिं कि पोचू ❋ परलोकहु कर नाहिंन शोचू ॥
एकै बड़ उर दुसह दवारी ❋ मोहिंलगि भे सिय राम दुखारी॥
जीवन लाहु लषण भलपावा ❋ सब तजि रामचरण मनलावा ॥
मोर जन्म रघुवर वन लागी ❋ झूँठ कहौं पछिताउँ अभागी ॥
दोहा-आपनि दारुण दीनता, सबहिं कहेउँ समुझाय ॥
देखे विनु रघुवीर पद, जियकी जरनि न जाय ॥१८३॥
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा ❋ को जिय की रघुवर विनु बूझा॥
एकहि अंक इहै मन माहीं ❋ प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
यद्यपि मैं अनभल अपराधी ❋ भइमोहिं कारण सकल उपाधी॥
तदपि शरण सन्मुख मोहिं देखी ❋ क्षमि सब करिहहिंकृपाविशेखी॥
शील सकुच सुठि सरल स्वभाऊ ❋ कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥
अरिहुँ अनभल कीन्ह न रामा ❋ मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा ॥
तुम पै पाँच मोर भल मानी ❋ आयसु आशिष देहु सुवानी ॥
ज्यहि सुनि विनयमोहिं जनजानी ❋ आवहिं बहुरि राम रजधानी ॥
दोहा-यद्यपि जन्म कुमातुते, मैं शठ सदासदोष ॥
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुवीर भरोस ॥१८४॥
भरत वचन सबकहँ प्रियलागे ❋ राम सनेह सुधासम पागे ॥
लोग वियोग विषम दुखदागे ❋ मंत्र सजीव सुनत जनुजागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर नरनारी ❋ सकल सनेह विकल भेभारी ॥
भरतहिं कहहिं सराहि सराहीं ❋ राम प्रेम मूरति तनु आहीं ॥
तात भरत अस काहे नकहहू ❋ प्राण समान राम प्रियअहहू ॥
जो पामर आपनि जड़ताई ❋ तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
सो शठ कोटिक पुरुष समेता ❋ बसहिंकल्प शत नरकनिकेता॥
अहि अघ अवगुणमणि नहिंगहई ❋ हरै गरल दुख दारिद दहई ॥
दोहा-अवशिचलिय वन रामजहँ, भरतमंत्र भलकीन्ह॥

१ छोटा । २ ध्यान भीतिकेघर । ३ शत्रु । ४ टेढा ।

शोक सिन्धु बूड़त सबहि, तुम अवलम्बन दीन्ह १८५॥

भा सबके मनमोद न थोरा ❀ जनु घनध्वनि सुनि चातक मोरा॥
चलत प्रात लखि निर्णय नीके ❀ भरत प्राणप्रिय भे सबहीके॥
मुनिहिं वन्दि भरतहिं शिरनाई ❀ चले सकलघर बिदाकराई॥
धन्य भरत जीवन जगमाहीं ❀ शील सनेह सराहत जाहीं॥
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू ❀ सकल चले कर साजहिं साजू॥
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी ❀ सो जाने जनु गरदन मारी॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू ❀ को न चहै जगजीवनलाहू॥

दोहा-जरौ सुसम्पति सदनसुख, सुहृदमातु पितु भाइ॥
सन्मुखहोत जो रामपद, करै न सहज सहाइ॥१८६॥

घर घर वाहन साजहिं नाना ❀ हर्ष हृदय परभात पयाना॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू ❀ नगर वाजि गज भवनभँडारू॥
सम्पति सब रघुपति की आही ❀ जो विनु यत्न चलौं तजिताही॥
तौ परिणाम न मोरि भलाई ❀ पापि शिरोमणि साइँ दोहाई॥
करहिं स्वामि हित सेवक सोई ❀ दूषण कोटि देइ किन कोई॥
अस विचारि शुचि सेवक बोले ❀ जे स्वपन्यहु निज धर्म न डोले॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा ❀ जो जेहि लायक सो तहँराखा॥
करि सब यत्न राखि रखवारे ❀ राम मातु पहँ भरत सिधारे॥

दोहा-आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान॥
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान॥१८७॥

चकचकई इव पुर नरनारी ❀ चलब प्रात उर आरत भारी॥
जागत सब निशि भयउ बिहाना ❀ भरत बुलाए सचिव सुजाना॥
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू ❀ वनहिं देव मुनि रामहिं राजू॥
वेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे ❀ तुरत तुरँग रथ नाग सँवारे॥
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू ❀ रथचढ़ि चले प्रथम मुनिराजू॥
विप्रवृन्द चढ़ि वाहन नाना ❀ चले सकल तप तेज निधाना॥
नगर लोग सब सजि सजि यानों ❀ चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना॥

१ फल। २ वशिष्ठजीकी स्त्री। ३ विर्षे। १० तलवार। ११ पृथ्वी।

बूझि मित्र अरि मध्यगति, तब तस करब उपाइ ॥१९३॥
लखब सनेह स्वभाव सुहाये ❋ वैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे ❋ कन्द मूल फल खग मृग माँगे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने ❋ भरि भरि भार कहारन आने ॥
सकल साज सजि मिलन सिधाये ❋ मंगल मूल शकुन शुभ पाये ॥
देखि दूरि ते कहि निज नामू ❋ कीन्ह मुनीशहि दण्ड प्रणामू ॥
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा ❋ भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीशा ॥
राम सखा सुनि स्यन्दन त्यागा ❋ चले उतरि उमँगत अनुरागा ॥
गाँव जाति गुह नाँव सुनाई ❋ कीन्ह जुहारि माथ महिलाई ॥
दोहा—करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उरलाइ ॥
मनहुँ लषण सन भेंट भइ, प्रेम न हृदय समाइ ॥१९४॥
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती ❋ लोग सिहाहिं प्रेम के रीती ॥
धन्य धन्य ध्वनि मंगल मूला ❋ सुर सराहि तेहि वर्षहिं फूला ॥
लोक वेद सब भाँतिहि नीचा ❋ जासु छाँह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता ❋ मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं ❋ तिनहिं न पाप पुंज समुहाहीं ॥
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा ❋ कुल समेत जग पाँवन कीन्हा ॥
कर्मनाश जल सुरसरि परई ❋ तेहिको कहहु शीश नहिं धरई ॥
उलटा नाम जपत जग जाना ❋ वालमीकि भे ब्रह्म समाना ॥
दोहा—श्वपचसबरखल यवनजड़, पामरकोलकिरात ॥
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥१९५॥
नहिं अचरज युग युग चलिआई ❋ केहि न दीन्ह रघुवीर बड़ाई ॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं ❋ सुनिसुनि अवध लोगसुखलहहीं ॥
राम सखहिं मिलि भरत सप्रेमा ❋ पूँछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा ॥
देखि भरत कर शील सनेहू ❋ भानिषाद तेहि समय विदेहू ॥
सकुचि सनेह मोद मन बाढ़ा ❋ भरतहिं चितवत इकटकठाढ़ा ॥

१ एकत्र । २ पक्षी । ३ हरिण । ४ मछली । ५ रथ । ६ भीति । ७ पवित्र ।
८ आनन्दमें देहकीसुधि न रही ।

धरि धीरज पद वन्दि बहोरी ❀ विनय सप्रेम करत करजोरी ॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी ❀ मैं तिहुँकाल कुशल निज देखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे ❀ सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥
दोहा-समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ॥
जो न भजै रघुवीर पद, जग विधि वंचक सोइ ॥ १९६ ॥
कपटी कायँर कुमँति कुजाती ❀ लोक वेद बाहर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबही ते ❀ भयउँ भुवन भूषण तबही ते ॥
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई ❀ मिले बहोरि लषण लघु भाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुवानी ❀ सादर सकल जुहारी रानी ॥
जानि लषण सम देहिं अशीशा ❀ जियहु सुखी सौलाख बरीशा ॥
निरखि निषाद नगर नर नारी ❀ भये सुखी जनु लषण निहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू ❀ भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई ❀ प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई ॥
दोहा-सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ ॥
घर तरु तर सर बाग वन, वास बनायउ जाइ ॥ १९७ ॥
शृंगवेर पुर भरत दीख जब ❀ भे सनेह वश अंग शिथिल तब ॥
सोहत दिये निषादहि लागू ❀ जनु तनु धरे विनय अनुरागू ॥
इहिविधि भरत सेन सब संगा ❀ दीख जाइ जग पावनि गंगा ॥
राम घाट कहँ कीन्ह प्रणामा ❀ भा मन मग्न मिले जनु रामा ॥
करहिं प्रणाम नगर नर नारी ❀ मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी ॥
करि मज्जन माँगहिं करजोरी ❀ रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू ❀ सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पाँणि वर माँगौं एहू ❀ सीय राम पद सहज सनेहू ॥
दोहा-इहि विधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुशासन पाइ ॥
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाइ ॥ १९८ ॥
जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा ❀ भरत शोध सबही कर लीन्हा ॥

---

१ डरपोक । २ मन्दमति । ३ कामधेनुगाय । ४ हाथ । ५ स्नान । ६ आज्ञा ।

गुरु सेवा करि आयसु पाई ❀ राम मातुपहँ गे दोउ भाई ॥
चरण चापि कहि कहि मृदुवानी ❀ जननी सकल भरत सन्मानी ॥
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई ❀ आप निषादहि लीन्ह बुलाई ॥
चले सखा कर सों कर जोरे ❀ शिथिल शरीर सनेह न थोरे ॥
पूँछत सखहिं सो ठाँव देखाऊ ❀ नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
जहँ सिय राम लषण निशि सोये ❀ कहत भरे जल लोचन कोये ॥
भरत वचन सुनि भयउ विषादू ❀ तुरत तहाँ लै गयउ निषादू ॥
दोहा-जहँ शिंशुपा[१] पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम ॥
अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दण्ड प्रणाम॥१९९॥
कुश साथरी निहारि सुहाई ❀ कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण[२] लाई ॥
चरण रेख रज आँखिन लाई ❀ बनै न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनक विन्दु दुइ चारिक देखे ❀ राखे शीश सीय सम लेखे ॥
सजल विलोचन हृदय गलानी ❀ कहत सखासन वचन सुवानी ॥
श्रीहत सीय विरह द्युति[३] हीना ❀ यथा अवध नर नारि मलीना ॥
पिता जनक देउँ पटतर केही ❀ करतल भोग योग जग जेही ॥
श्वशुर भानुकुल भानु भुआलू ❀ जेहि सिहात अमरावति[४] पालू ॥
प्राणनाथ रघुनाथ गुसाँई ❀ जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥
दोहा-पति देवता सुतीय मणि, सीय साथरी देखि ॥
बिदरत हृदय न हहरि हर, पवि[५] ते कठिन विशेषि॥२००॥
लालन योग लषण लघु लोने[६] ❀ भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे ❀ सिय रघुवीरहि प्राण पियारे ॥
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ ❀ ताति बायु तनु लागि न काऊ ॥
ते वन सहहिं विपति सब भाँती ❀ निदरे कोटि कुलिश यह छाती ॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर ❀ रूप शील सुख सब गुणसागर ॥
पुरजन परिजन[७] गुरु पितु माता ❀ राम स्वभाव सबहि सुखदाता ॥
वैरिउ राम बड़ाई करहीं ❀ बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥

१ शीशमका वृक्ष । २ परिक्रमा । ३ कांति । ४ इन्द्र । ५ वज्र । ६ सुन्दर । ७ कुटुंब ।

शारद कोटि कोटि शत शेषा ❁ करि न सकहिं प्रभुगुणगणलेखा ॥
दोहा—सुख स्वरूप रघुवंश मणि, मंगल मोद निधान ॥
ते सोवत कुश डासि महि, विधिगति अति बलवान ॥२०१॥
राम सुना दुख कान न काऊ ❁ जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ ॥
पलक नयन फणि मणि जेहि भाँती ❁ जुगवहिं जननि सकल दिनराती ॥
ते अब फिरत विपिन पदचारी ❁ कन्द मूल फल फूल अहारी ॥
धिक कैकेयि अमंगल मूला ❁ भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला ॥
मैं धिकधिक अघउदधिअभागी ❁ सब उत्पात भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंक करि सृजेउ विधाता ❁ साइँद्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू ❁ नाथ करिय कत वादि विषादू ॥
रामतुमहिं प्रिय तुम प्रियरामहिं ❁ यह निर्दोष दोष विधि वामहिं ॥
छं.-विधिवामकीकरणीकठिनजेहिमातुकीन्हीबावरी ॥
तेहिराति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी ॥
तुलसी न तुम सों रामप्रीतम कहत हौं सौं हैं किये ॥
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥१॥
सो०—अन्तर्यामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन ॥
चलिय करिय विश्राम, यह विचार दृढ़ आनि मन ॥८॥
सखा वचन सुनि उरधरि धीरा ❁ वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी ❁ चले विलोकन आरत भारी ॥
प्रदक्षिणहिं करि करहिं प्रणामा ❁ देहिं कैकयिहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि वारि विलोचन लेहीं ❁ वाम विधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू ❁ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
निन्दहिं आपु सराहि निषादहि ❁ को कहि सकै विमोह विषादहि ॥
इहि विधि राति लोग सब जागा ❁ भा भिनुसार उतारा लागा ॥
गुरुहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई ❁ नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारि महँ भा सब पारा ❁ उतरि भरत तब सबहिं सँभारा ॥

१ सजीवन वृक्ष । २ पापोंका समुद्र । ३ नेत्र ।

दो०-प्रातक्रिया करि मातुपद, वन्दि गुरुहिं शिरनाइ ॥
आगे किये निषादगण, दीन्हेउ कटक चलाइ ॥ २०२ ॥

किये निषाद नाथ अगुआई ❀ मातु पालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा ❀ विप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा ॥
आप सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू ❀ सुमिरे लषण सहित सिय रामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाये ❀ कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ❀ होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये ❀ हम कहँ रथ गज बाजि बनाये ॥
शिर भर जाउँ उचित अस मोरा ❀ सब ते सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरत गति सुनि मृदुबानी ❀ सब सेवक गण करहिं गलानी ॥

दोहा-भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥
कहत रामसिय रामसिय, उमँगि २ अनुराग ॥ २०३ ॥

झलका झलकत पाँयन कैसे ❀ पंकज कोश ओस कण जैसे ॥
भरत पयादेहि आये आजू ❀ देखि दुखित सुनि सकल समाजू ॥
खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये ❀ कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये ॥
सविधि सितासित नीर अन्हाने ❀ दिये दान महिसुर सन्माने ॥
देखत श्यामल धवल हिलोरे ❀ पुलक शरीर भरत करजोरे ॥
सकल कामप्रद तीरथराऊ ❀ वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
माँगौं भीख त्यागि निज धरमू ❀ आरत काह न करहिं कुकरमू ॥
अस जिय जानि सुजानि सुदानी ❀ सफल करो जग याचकबानी ॥

दोहा-अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान ॥
जन्म जन्म रति रामपद, यह बरदान न आन ॥ २०४ ॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही ❀ लोग कहैं गुरु साहब द्रोही ॥
सीता राम चरण रति मोरे ❀ अनुदिन बढै अनुग्रह तोरे ॥
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे ❀ याचत जल पवि पाहन डारे ॥
चातक रटनि घटे घटिजाई ❀ बढे प्रेम सब भाँति भलाई ॥

१ घोडे । २ कमलकेपत्ता । ३ सित कही उज्ज्वलजल गंगाजीका और असित कही श्यामजल यमुनाजीका । ४ मोक्षपद । ५ प्रीति । ६ नित्यप्रति । ७ मेघ ।

कनकहि बान चढै जिमिदाहे ❀ तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे ॥
भरत वचन सुनि माँझ त्रिवेनी ❀ भै मृदु बाणि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम सब विधि साधू ❀ रामचरण अनुराग अगाधू ॥
बादिगलानि करहु मन माहीं ❀ तुम समरामहिं प्रियकोउनाहीं॥
दोहा-तनु पुलके हिय हर्ष सुनि, वेणि वचन अनुकूल ॥
भरत धन्यकहि धन्यकहि, नभसुरवर्षहिंफूल ॥२०५॥
प्रमुदित तीरथराज निवासी ❀ वैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दश पाँचा ❀ भरतसनेह शील शुचि साँचा ॥
सुनत रामगुण गान सुहाये ❀ भरद्वाज मुनिवर पहँ आये ॥
दण्ड प्रणाम करत मुनि देखे ❀ मूरतिवन्त भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हें ❀ दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हें ॥
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे ❀ चहत सकुचि गृह जनुभजिपैठे ॥
मुनि पूँछब कछु यह बड़ शोचू ❀ बोले ऋषिलखि शील सँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधिपाई ❀ विधि करतब पर कछु न बसाई॥
दो.-तुमगलानि जिय जनि करहु, समुझिमातुकरतूति॥
तात कैकयिहि दोष नाहिं, गई गिरा मति धूति ॥२०६॥
यहउ कहत भलकहहिं न कोऊ ❀ लोक वेद बुध सम्मत दोऊ ॥
तात तुम्हार विमलयश गाई ❀ पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेद सम्मत विधि कहई ❀ ज्यहि पितु राज्य देइ सो लहई॥
राउ सत्यव्रत तुमहिं बुलाई ❀ देत राज्य सुख धर्म्म बड़ाई ॥
राम गमन वन अनरथ मूला ❀ जो सुनि सकल विश्वभइशूला॥
सो भावीवश रानि अयानी ❀ करिकुचालि अन्तहुपछितानी॥
तहउँ तुम्हार अल्प अपराधू ❀ कहै सो अधम अयान असाधू॥
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू ❀ रामहिं होत सुनत सन्तोषू ॥
दो.-अबअतिकीन्हेंउभरतभल, तुमहिंउचितमतएहु ॥
सकल सुमंगल मूल जग, रघुवर चरण सनेहु ॥२०७॥

१ सोना। २ शोभा। ३ वानप्रस्थ।

सो तुम्हार धन जीवन प्राना ❀ भूरिभाग्य को तुमहिं समाना ॥
यह तुम्हार आचरज न ताता ❀ दशरथ सुवन राम लघु भ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं ❀ प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषण राम सीतहि अति प्रीती ❀ निशि सब तुमहिं सराहत बीती ॥
जाना मर्म्म अन्हात प्रयागा ❀ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुम पर अस सनेह रघुवरके ❀ सुख जीवनजगजसजडनरके ॥
यह न अधिक रघुवीर बड़ाई ❀ प्रणत कुटुंब पाल रघुराई ॥
तुम तौ भरत मोर मत एहू ❀ धरेउ देह जनु राम सनेहू ॥
दोहा-तुमकहँभरत कलंक यह, हमसब कहँ उपदेश ॥
रामभक्तिरस सिद्ध हित, भा यहि समय गणेश ॥२०८॥
नवविधु विमल तात यश तोरा ❀ रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ॥
उदय सदा अथइय कवहूँना ❀ घटिहिनजगनभदिनदिनदूना ॥
कोक त्रिलोक प्रीति अति करहीं ❀ प्रभु प्रतापरविछबिहिनहरहीं ॥
निशिदिन सुखद सदा सबकाहू ❀ ग्रसिहि न कैकेयिकरतबराहू ॥
पूरण राम सुप्रेम पियूषा ❀ गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ॥
रामभक्ति अब अमिय अघाहू ❀ कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी ❀ सुमिरे सकल सुमंगल खानी ॥
दशरथ गुणगण वर्णि न जाहीं ❀ अधिककाह जेहिसमजगमाहीं ॥
दोहा-जासु सनेह सँकोचवश, राम प्रगट भे आय ॥
जे हरहिय नयननकबहुँ, निरखे नाहिं अघाय ॥२०९॥
कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा ❀ जहँ वस राम प्रेम मृग रूपा ॥
तात गलानि करहु जिय जाये ❀ डरहु दरिद्रहि पारस पाये ॥
सुनहु भरत हम झूँठ न कहहीं ❀ उदासीन तापस वन रहहीं ॥
सब साधन कर सफल सुहावा ❀ लषण रामसियदर्शन पावा ॥
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा ❀ सहित प्रयाग सुभाग्यहमारा ॥
भरत धन्य तुम जगयश लयऊ ❀ कहि असप्रेममगनमुनिभयऊ ॥
सुनि सुनि वचन सभासद हर्षे ❀ साधु सराहि सुमन सुरवर्षे ॥
धन्य धन्य ध्वनि गगन प्रयागा ❀ सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दोहा-पुलक गात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ॥
करि प्रणाम मुनि मण्डलिहि, बोले गद्गद बैन ॥२१०॥

मुनि समाज अरु तीरथराजू ❀ साँचेहु शपथ अघाइ अकाजू ॥
इहि थल जो कछु कहिय बनाई ❀ तेहिसम नहिं कछुअघअधमाई ॥
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ ❀ उर अन्तर्यामी रघुराऊ ॥
मुहिं न मातु करतबकर शोचू ❀ नहिं दुख जिय जगजानहिपोचू ॥
नाहिंन डर बिगरहि परलोकू ❀ पितहुँ मरे कर नाहिंन शोकू ॥
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये ❀ लक्ष्मण राम सरिस सुतपाये ॥
रामविरह तजि तनु क्षणभंगू ❀ भूप शोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम लषण सिय बिनु पग पनहीं ❀ करि मुनिवेषफिरहिंवनवनहीं ॥

दो०-अजिनवसनफलअशनमहि,शयनडासिकुशपात ॥
वसितरुतर नित सहत दुख,हिमतप वरषावात ॥२११॥

यह दुख दाह दहै नित छाती ❀ भूँख न वासर नींद न राती ॥
यहि कुरोग कर ओषधि नाहीं ❀ शोधेउ सकल विश्व मनमाहीं ॥
मातु कुमति बढई अघ मूला ❀ तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ॥
कलि कुकाठ गढ कीन्ह कुयंत्रू ❀ गाड़ि अवधपढि कठिन कुमंत्रू ॥
मुहिलगियह कुठाट तेहिं ठाटा ❀ घालिसि सब जग बारहबाटा ॥
मिटै कुयोग राम फिरि आये ❀ बसहि अवध नहिं आनउपाये ॥
भरत वचनसुनि मुनि सुख पाई ❀ सबहिं कीन्ह बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि शोच विशेखी ❀ सब दुख मिटिहि रामपद देखी ॥

दोहा-करिप्रबोधमुनिवरकहेउ,अतिथिप्राणप्रियहोहु ॥
कन्द मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

सुनिसुनि वचन भरत हियशोचू ❀ भयउकुअवसर कठिन सकोचू ॥
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी ❀ चरणवन्दि बोले करजोरी ॥
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा ❀ परमधर्म्म यह नाथ हमारा ॥

---

१ मृगचर्म भोजपत्र इत्यादि। २ पवन। ३ दिन। ४ कल्पितवातें। ५ कृपाकरके।

भरत वचन मुनिवर मनभाये ❀ शुचिसेवकशिष निकटबुलाये ॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई ❀ कन्द मूल फल आनहु जाई ॥
भलेनाथ कहि तिन्ह शिरनाये ❀ प्रमुदित निजनिजकाजसिधाये ॥
मुनिहिं शोच पाहुन बड़नेवता ❀ तस पूजा चाहिय जसदेवता ॥
सुनिऋधि सिधिअणिमादिकआईं ❀ आयसु होय सो करें गुसाईं ॥

दोहा-रामविरह व्याकुल भरत, सानुज सकलसमाज ॥
पहुनाईकरि हरहुश्रम, कहेउ मुदित मुनिराज ॥ २१३ ॥

ऋधि सिधिशिरधरि मुनिवरवानी ❀ बड भागिनि आपुहिअनुमानी ॥
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई ❀ अतुलितअतिथिरामलघुभाई ॥
मुनिपद वन्दि करिय सोइ आजू ❀ होइसुखी सब राज समाजू ॥
असकहि रुचिर रचे गृहनाना ❀ जो विलोकि बिलखाहिंविमाना ॥
भोग विभूति भूरि भरि राखे ❀ देखतजिनहिं अमर अभिलाषे ॥
दासी दास साज सब लीन्हें ❀ जुगवत रहहिं मनहिं मनदीन्हें ॥
सब समाज सजि सिधि पलमाहीं ❀ जेसुख स्वपन्यहुँसुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहिं वास दिये सब केही ❀ सुन्दर सुखद यथारुचि जेही ॥

दो०-बहुरि सपरिजन भरतकहँ, ऋषिआयसुअसदीन्ह ॥
विधिविस्मयदायकविभव, मुनिवरतपबल कीन्ह २१४

मुनि प्रभाव जब भरत विलोका ❀ सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
सुख समाज नहिं जाइ बखानी ❀ देखत विरति विसारहिं ज्ञानी ॥
आसन शयन सुवसन विताना ❀ वन वाटिका विहँग मृगनाना ॥
सुरभिफूल फल अमिय समाना ❀ विमलजलाशय विविधविधाना ॥
अशन पानशुचि अमिय अमीसे ❀ देख लोग सकुचात जमीसे ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबही के ❀ लखि अभिलाष सुरेश शचीके ॥
ऋतु वसन्त बह त्रिविध बयारी ❀ सब कहँ सुलभपदारथ चारी ॥
स्रक चन्दन वनितादिक भोगा ❀ देखि हर्ष विस्मय सबलोगा ॥

१ देवता । २ साथियों समेत । ३ ऐश्वर्य । ४ वैराग्य । ५ सुगन्धमय । ६ भोजन । ७ इन्द्र-इन्द्राणी । ८ रक्तफूलोंकीमाला ।

दोहा–सम्पतिचकईभरत चक, मुनिआयसुखेलवार॥
त्यहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भाभिनुसार॥२१५॥
कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ❀ नाइ मुनिहि शिरसहिततसाजा॥
ऋषिआयसुअशीष शिर राखी ❀ करि दण्डवत विनय बहुभाखी॥
पथगत कुशल साथ सब लीन्हे ❀ चले चित्रकूटहि चित दीन्हे॥
रामसखा कर दीन्हे लागू ❀ चलत देह धरि जनु अनुरागू॥
नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया ❀ प्रेम नेम व्रत धर्म अमाया॥
लषण राम सिय पन्थ कहानी ❀ पूँछत सखहि कहत मृदुबानी॥
राम वास थल विटप विलोके ❀ उर अनुराग रहत नहिं रोके॥
देखि दशा सुरवर्षहिं फूला ❀ भइ मृदु महि मग्र मंगल मूला॥
दोहा–किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहत बर बात॥
तसमगभयउनरामकहँ, जसभाभरतहिजात॥२१६॥
जड़ चेतन मग जीव घनेरे ❀ जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभुहेरे॥
ते सब भये परमपद योगू ❀ भरत दरश भेषज भव रोगू॥
यह बड़ि बात भरत की नाहीं ❀ सुमिरत जिनहिं रामसन माहीं॥
वारेक राम कहत जग जेऊ ❀ होत तरण तारण नर तेऊ॥
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता ❀ कस न होइ मगु मंगलदाता॥
सिद्धसाधुमुनिवर असकहहीं ❀ भरतहि निरखि हर्षहियलहहीं॥
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू ❀ जगभल भलहि पोचकहँ पोचू॥
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई ❀ रामहि भरतहि भेंट न होई॥
दोहा–राम सकोची प्रेमवश, भरत सप्रेम पयोधि॥
बनीबात बिगरन चहत, करिय यत्न छलशोधि॥२१७॥
वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने ❀ सहसनयन बिनु लोचन जाने॥
कह गुरु बादि क्षोभ छल छाँड़ू ❀ इहाँ कपट करि होइय भाँड़ू॥
मायापति सेवक सन माया ❀ करियत उलटि परे सुरराया॥
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी ❀ अब कुचाल करि होइहि हानी॥

---

१ बहेलिया। २ निषाद। ३ कोमल। ४ पृथ्वी। ५ औषधी। ६ इन्द्र।
७ बृहस्पति। ८ विडम्बना।

सुनु सुरेश रघुनाथ स्वभाऊ ❀ निज अपराध रिसाहिं न काऊ॥
जो अपराध भक्त कर करई ❀ राम रोष पावक सो जरई॥
लोकहु वेद विदित इतिहासा ❀ यह महिमा जानहिं दुर्वासा॥
भरत सरिस को राम सनेही ❀ जग जपु राम राम जपु जेही॥

दो.-मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुपति भक्तअकाज॥
अयशलोकपरलोक दुख,दिनदिनशोकसमाज॥२१८॥

सुनु सुरेश उपदेश हमारा ❀ रामहिं सेवक परमपियारा॥
मानत सुख सेवक सेवकाई ❀ सेवक वैर वैर अधिकाई॥
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू ❀ गहहिं न पाप पुण्य गुण दोषू॥
कर्म्मप्रधान विश्व करि राखा ❀ जोजसकरै सो तस फलचाखा॥
तदपि करहिं सम विषम विहारा ❀ भक्त अभक्त हृदय अनुसारा॥
अगुण अलेख अमान एकरस ❀ राम सगुण भये भक्त प्रेमवश॥
रामसदा सेवक रुचि राखी ❀ वेद पुराण साधु सुर साखी॥

* राजा अम्बरीषका यह नियम था कि, एकादशीका व्रतकरके द्वादशीमें ब्राह्मणजिंवाय पारणकरतेथे एकसमयदुर्वासाऋषि न्योतामान स्नानकरने गये और द्वादशी थोडी रह गई व्यतीत काल जान राजाने ब्राह्मणोंसे कहकर चरणामृतले पारण किया तिसके उपरान्त दुर्वासाऋषि आये राजाको चरणामृत लिये जान कोपकर एकजटापटकी उससे कृत्यानाम राक्षसी प्रगटहो राजाको मारने चली. इधर राजा कंपायमान हो पृथ्वीपर गिरा. उधर ऋषि दुर्वासाके ऊपर सुदर्शन चक्र भगवान्का चला. तब उसके भयसे ऋषि भागे अब आगे ऋषि और पीछे चक्र घूमते २ सब देवतोंकी शरणमें गये परन्तु किसीने शरण नहीं दिया. तब विष्णुने आरत वचन सुनके इनसे कहा कि, तुम राजाहीकी शरणमें जाओ वही तुम्हारी रक्षा करैगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीषके शरणमें आये और राजा उसीप्रकार व्याकुल हो पृथ्वीमें पडा रहा राजा इनको आतेदेख आगेजाय इनको आदरपूर्वक ले आये और सुदर्शनचक्रको निवारण किया तब विष्णुभगवान्ने अम्बरीषको निर्दोषी जान दुर्वासाके शापको आप अंगीकारकिया और राजाने दुर्वासा ऋषिको भोजन खवाय अत्यन्त प्रीतिसे आदरपूर्वक बिदा किया॥

अस जिय जानि तजहु कुटिलाई ❀ करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥
दोहा-रामभक्त परहित निरत, परदुखदुखी दयाल ॥
भक्तशिरोमणि भरतसे, जनि डरपहु सुरपाल ॥ २१९ ॥
सत्यसिन्धु प्रभु सुर हितकारी ❀ भरत राम आयसु अनुसारी ॥
स्वारथ विवश विकल तुम होहू ❀ भरत दोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरवर सुरगुरु वरवानी ❀ भा प्रबोध मन मिटी गलानी ॥
वरषि प्रसून हर्षि सुरराऊ ❀ लगे सराहन भरत स्वभाऊ ॥
इहि विधि भरत चले मगुजाहीं ❀ दशा देखि मुनि सिद्धसिहाहीं ॥
जबहिं राम कहिलेहिं उसासा ❀ उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा ॥
द्रवहिंवचन सुनिकुलिश पषाना ❀ पुरजन प्रेम न जाइ बखाना ॥
बीच वास करि यमुनहिंआये ❀ निरखि नीर लोचन जलछाये ॥
दोहा-रघुवर वर्ण विलोकि वर, वारिसमेत समाज ॥
होत विरह वारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज ॥ २२० ॥
यमुन तीर तेहि दिनकर वासू ❀ भयउ समय समसबहिं सुपासू ॥
रातिहि घाट घाटकी तरणी ❀ आईं अगणित जाइँ न वरणी ॥
प्रात पार भे एकहि खेवा ❀ तोषे राम सखाकरि सेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहि शिरनाई ❀ साथ निषाद नाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर वाहन आछे ❀ राज समाज जाइ सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे ❀ भूषण वसन वेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृद सचिव सुतसाथा ❀ सुमिरत लषण सीय रघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम वास विश्रामा ❀ तहँ तहँ करहिं सप्रेमप्रणामा ॥
दोहा-मगुवासी नर नारि सुनि, धामकाम तजिधाइ ॥
देखि स्वरूप सनेह वश, मुदित जन्म फल पाइ ॥ २२१ ॥
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं ❀ राम लषण सखिहोहिंकिनाहीं ॥
वय वपु वर्ण रूप स्वइआली ❀ शील सनेह सरिस सम चाली ॥
वेष न सो सखि सीय नसंगा ❀ आगे अनी चली चतुरंगा ॥

१ पिघलतेहैं। २ वज्र। ३ पत्थर। ४ नौका। ५ अवस्था। ६ देह।

नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा ❀ सखि सन्देह होत इहि भेदा ॥
तासु तर्क तिय गण मनमानी ❀ कहहिंसकलतोहिंसयनसयानी॥
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी ❀ बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू ❀ जेहि विधि राम राजरस भंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी ❀ शील सनेह स्वभाव सुभागी ॥
दोहा-चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज॥
जात मनावन रघुवरहि, भरत सरिस को आज॥२२२॥
भायप भक्ति भरत आचरणू ❀ कहत सुनत दुख दूषण हरणू ॥
जोकछु कहिय थोर सखिसोई ❀ रामबंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे ❀ भये धन्य युवती जन लेखे ॥
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं ❀ केकयि जननियोग सुतनाहीं ॥
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन ❀ विधि सबभाँति हमहिंजोदाहिन॥
कहँ हम लोग वेद विधि हीनी ❀ लघु कुल तिय करतूतिमलीनी॥
बसहिं कुदेश कुगाँव कुठामा ❀ कहँ यह दरश पुण्य परिणामा ॥
अस अनन्द अचरज प्रतिग्रामा ❀ जनु मरुभूमि कलपतरुजामा ॥
दोहा-भरत दरश देखत खुलेउ, मगु लोगन्ह करभाग॥
जनुसिंहलवासिन्हभयउ,विधिवशसुलभप्रयाग२२३ ॥
निज गुण सहित राम गुण गाथा ❀ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा ❀ निरखि निमज्जहिंकरहिंप्रणामा॥
मनहीं मन माँगहिं वर येहू ❀ सीय राम पद पद्म सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल वनवासी ❀ वैखानस बटु यती उदासी ॥
करि प्रणाम पूँछहिं जेहि तेही ❀ केहि वन लषण राम वैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं ❀ भरतहि देखि जन्म फल लहहीं॥
जे जन कहहिं कुशल हमदेखे ❀ तेप्रिय राम लषण सम पेखे ॥
इहि विधि बूझत सबहिं सुबानी ❀ सुनत राम वन वास कहानी ॥
दोहा-तेहि वासर वस प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ ॥
राम दरशकी लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

मंगल शकुन होहिं सब काहू ॐ फरकहिं सुखद विलोचनवाहू ॥
भरतहिं सहित समाज उछाहू ॐ मिलिहहिं राममिटहिं दुखदाहू ॥
करत मनोरथ जस जियजाके ॐ जाहिं सनेह सुरा सब छाके ॥
शिथिल अंग पग डगमग डोलहिं ॐ विह्वल वचन प्रेम वश बोलहिं ॥
राम सखा तेहि समय देखावा ॐ शैल शिरोमणि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरिस पयै तीरा ॐ सीय समेत वसहिं दोउ वीरा ॥
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा ॐ कहि जय जानकि जीवनरामा ॥
प्रेममगन अस राजसमाजू ॐ जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥
दोहा-भरतप्रेमत्यहिसमयजस,तस कहि सकै न शेषु॥
कविहिअगमजिमिब्रह्मसुख,अहममलिनजनेषु२९॥
सकल सनेह शिथिल रघुवरके ॐ गये कोश दुइ दिनकर ढरके ॥
जल थल देखि वसे निशि बीते ॐ कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते ॥
वहाँ राम रजनी अवशेषा ॐ जागी सीय स्वप्न अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये ॐ नाथ वियोग ताप तनु ताये ॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी ॐ देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सिय स्वप्न भरे जल लोचन ॐ भये शोच वश शोकविमोचन ॥
लषण स्वप्न यह नीक न होई ॐ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बन्धु समेत अन्हाने ॐ पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥
छं०-सनमानिसुर मुनि वन्दिबैठेउतरदिशिदेखतभये॥
नभधूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रमगये॥
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे॥
सबसमाचारकिरातकोलनआइतेहिअवसरकहे ॥१०॥
सो०-सुनत सुमंगल वैन, मन प्रमोद तनु पुलक भर ॥
शरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥९॥
बहुरि शोच वश भे सियरमनू ॐ कारण कवन भरत आगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी ॐ सेन संग चतुरंग न थोरी ॥

१ नेत्र। २ स्नेहरूपी मदिरासे छके। ३ पयस्विनीनदी। ४ रात्रिव्यतीतहोनेपर। ५ आनन्द।

सो सुनि रामहिं भा अतिशोचू ❀ इतपितु वच उत बन्धु सँकोचू ॥
भरत स्वभाव समुझि मनमाहीं ❀ प्रभु चितहिततथितिपावतनाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने ❀ भरत कहे महँ साधु सयाने ॥
लषण लख्यउ प्रभु हृदयखँभारू ❀ कहत समय सम नीतिविचारू ॥
बिन पूँछे कछु कहउँ गुसाँई ❀ सेवक समय न ढीठ ढिठाई ॥
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी ❀ आपुनि समुझि कहौं अनुगामी ॥
दोहा–नाथ सुहृद सुठि सरलचित, शील सनेह निधान ॥
सब पर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपुसमान ॥ २२६ ॥
विषयी जीव पाइ प्रभुताई ❀ मूढ मोहवश होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना ❀ प्रभुपद प्रेम सकल जगजाना ॥
तेऊ आज राज्यपद पाई ❀ चले धर्म मर्य्याद मिटाई ॥
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी ❀ जानि राम वनवासयकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू ❀ आये करन अकण्टक राजू ॥
कोटि प्रकार कलिप कुटिलाई ❀ आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जोजिय होति न कपट कुचाली ❀ केहि सुहात रथ वाजि गजाली ॥
भरतहिं दोष देइ को जाये ❀ जग बौराइ राज्यपद पाये ॥
दोहा–शँशि गुरु तिय गामी नहुँष, चढेभूमिसुर यान ॥

+ चंद्रमाके गुरु बृहस्पति तिनकी स्त्री तारा उसने कामकेवश मोहित होय चन्द्रमासे कहा कि, मेरे संग भोग करो. तबचंद्र गुरुपत्नीकाविचार कुछ मनमें नलाये और उसके साथ भोग किया. जबवह गर्भवती हुई और पुत्र भया जिसका बुध नाम है तब बृहस्पति बुधका नामकरण करनेको उठे उससमय चंद्रमाने जायके कहा कि, महाराज! यह पुत्र मेराहै मुझको दीजिये ऐसाकह सब समाचार गुरुको सुनाया. तब बृहस्पति बोले कि वीर्य्य तुम्हाराहै और क्षेत्र हमारा है इससे पुत्रका अधिकारी मैंहूं इसमें दोनों प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतोंने इसकी पंचायतकर बुधको चंद्रमाको दिलादिया ॥

❀ राजानहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें बडे धर्मात्मा प्रतापी रा-

१ घबराहट । २ सर्वकेमनोकीगतिजाननहार । ३ सेवक ।

लोक वेद ते विमुख भा, अधम को वे×णु समान ॥२२७॥

जा भये. एकसमय जब इंद्र वृत्रासुरकी हत्याके भयसे भागकर मानससरोवरमें जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्यप्रबन्धके निमित्त राजानहुषको बुलाय इंद्रपददे स्थापन किया. तब राजा बडे यश प्रतापके साथ इन्द्रपदका राज्य भोग करने लगे. किसीसमय इनको राज्यमदसे यह नीच कांक्षाउत्पन्न भई कि, मैंनेइन्द्रपदपायकै क्याकिया जो इन्द्रानीके साथ भोग न किया. ऐसा विचारकर इंद्रानीसे यह संदेश कहला भेजा तब इंद्रानी अति-व्याकुल हुई पीछे यह बात ठहरी कि राजा ब्राह्मणोंको कहार बनाय यानपर बेठकै आवै तो हम उनके संग भोग करैं यह बात सुन कामके वश उठकरकै सप्तऋषियोंसे राजाने कहा कि महाराज, आप थोडा परिश्रम करैं तो हमें इन्द्रानी प्राप्तहो ऐसा कह यानपर बैठा पंथमें यह ऋषि सत्यमार्गी धीरे धीरे नीचे देख पैर धरैं और राजा कामके वश ऊपरसे सर्प सर्प अर्थात् जल्दी चलो २ कहै तब तो सप्तऋषियोंने क्रोधित होय विमान पटक शाप दिया कि, अयराजा! कामवश तेरीबुद्धि भ्रष्ट होगई इस्से तू मृत्युलोक में जाकर सर्पहो तब राजा मृत्युलोकमें आय सर्प भया जिसे युधिष्ठिरने उद्धार किया.

× राजावेणु अपनी लडकाईसे बडा क्रूरथा और अनेक तरहके उपद्रव प्रतिदिन किया करै इससे प्रजाको दुःखी देख वेणुके पिता अंग राजाको बडा क्लेश हुआ पश्चात् अंगराजाके मरनेपर जब यह राज्यका अधिकारी हुआ तब तौ इसने यह आज्ञादी कि, कोई शास्त्र पुराण वेदको न माने उसके बद-लेमें सबकोई मेरा गुण गान करै और परमेश्वर मुझको माने और जो कोई मेरी आज्ञा न मानेगा सो दण्डके योग्य होगा. इस बातके प्रचलित होनेमें सुर मुनि प्रजा अधिक दुःखी हुई फिर एकसमय ऋषिलोग आपसमें विचार करने लगे कि, राजाके पास इसविषयमें कुछ बात चीत करनी चाहिये. ऐसा शोचकै ऋषियोंने आयकै राजाको बहुत ज्ञान उपदेश किया. परन्तु उसके चित्तमें कुछभी न आया और यही उत्तर दिया कि, तुम अज्ञानीहो तब ऋषियोंने क्रोधसे शाप देके मारडाला पुनि ऋषियोंने राजगद्दी भ्रष्टजानके उसके शरीरको मथा तो प्रथम जांघमेंसे एक काला पुरुष निकला उसको पाप रूप ठहराया, फिर भुजामेंसे पृथु निकले तब उन्हें धर्मका अवतार जानकै राज-

सहसँबाहु सुरनाथ त्रिशं×कू ❀ केहि न राज्यमद दीन्ह कलंकू ॥

गद्दी दिया सोराजा पृथु बडे धर्मात्मा नामी राजा भये और काला मनुष्य जो प्रथम निकला उसे दक्षिणका राज्यदिया उसीकी सन्तान निषाद कहलाई.

* सहस्रबाहु क्षत्रियराजा महादेवके प्रसादसे बडा बली हुआ एकसमय सेना संग लेकर अहेर खेलने गया वहां प्यासा होय दूतको भेजा यहां किसीका स्थान होय तो जल लाओ दूत खोजता हुआ जमदग्निके पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं. तब ऋषि बोले राजाको बुला लाओ यहाँ भोजनकर श्रम दूरकर चले जायँगे. तब दूत राजासे जाय ऋषिके वचन कहने लगा. राजा राज्यमदसे बोले कि इतना भोजन ऋषि कहाँसे पावैगा कि सेना समेत मेरीतृप्ति होगी इसबातको दूत द्वारा ऋषि सुनके बोले कि इसका शोच तुम्हारे राजा कुछ न करैं.आज मेरे अतिथि होयँ तब राजा सेवा सहित ऋषिके स्थानमें गये और ऋषिने कामधेनुके प्रसादसे राजाकी पहुनई करी तब सहस्रबाहुने ऋषिसे पूँछा इतना सामान क्षणमात्रमें आपने कैसे करलिया. तब ऋषिने कहा महाराजमेरे यहाँ कामधेनु है तब राजाने कहा वह कामधेनु मुझको दीजिये इसबातको सुनके ऋषिने बहुत उदास होय निवेदनकिया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि,कामधेनुको खोल ले चलो और ऋषिका वचन मतसुनो.तब कामधेनुसे म्लेच्छ पैदा हुए उनसे और राजासे लडाई होने लगी फिर क्रोधमें आकर सहस्रबाहुने जमदग्निका शिर काटडाला और रेणुका कोभी घायल किया गऊ भाग इंद्रलोकको गई. यह समाचार सुन परशुराम आये पिताको मरा देख माताके संतोषके निमित्त प्रण किया कि, पृथ्वीपर क्षत्रियका बीज न रक्खेंगे ऐसा कह सहस्रबाहु को जाय मारा इक्कीसबार पृथ्वी क्षत्रियोंसे रहित करी इंद्रकी कथा लिख चुके हैं.

×राजा त्रिशंकुको राज्यमदसे यह इच्छा हुई कि, हम ऐसा यज्ञकरैं कि सदेह स्वर्गको जाँय ऐसा विचार वसिष्ठजीसे जाय कहा तब वसिष्ठजीने अभिमानी जान कहा कि ऐसी शास्त्रकीमर्यादानहीं फिर वशिष्ठजीके पुत्रोंसे राजानेकहा उन्होंने गुरुकेवचनोंमें अविश्वासी देख शापदिया कि तू चांडालहो पिता पुत्रोंमें द्वेष किया चाहता है तब यह राजा शापवश चांडालहो विश्वामित्र की शरणमें गया उन्होंने इस्से यज्ञप्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि

भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ❀ रिपु रण रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई ❀ निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आज विशेषी ❀ समर सरोष रामरुख देखी ॥
इतना कहत नीति रस भूला ❀ रणरस विटप फूल जिमि फूला ॥
प्रभुपद वन्दि शीश रज राखी ❀ बोले सत्य सहज बल भाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा ❀ भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिय रहिय मनमारे ❀ नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दोहा—क्षत्रि जाति रघुकुल जनम, राम अनुज जगजान ॥
लातहुँ मारे चढत शिर, नीच को धूरि समान ॥२२८॥

उठि करजोरि रजायसु मांगा ❀ मनहुँ वीररस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा शिर कसि कटि भाथा ❀ साजि शरासन सायक हाथा ॥
आजु रामसेवक यश लेऊँ ❀ भरतहि समर शिखावन देऊँ ॥
राम निरादर कर फल पाई ❀ सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू ❀ प्रगट करौं रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करि निकर दलै मृगराजू ❀ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसहि भरतहि सेन समेता ❀ सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जो सहाय कर शंकर आई ❀ तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥

सबऋषि देवता मिलके यज्ञविध्वंस करने लगे तब विश्वामित्रने तपबलसे ऋषि और देवता नये उत्पन्न किये और यज्ञको पूरा कर त्रिशंकुको आज्ञादिया कि सदेह स्वर्गको चला जा त्रिशंकु स्वर्गमें चलागया तब वहाँसे देवतोंने नीचे ढकेला और वह उलटा होय नीचेको गिरने लगा विश्वामित्रने तपबलसे अधरमें स्थिर कर दिया सो त्रिशंकु तारा विदित है और उसके मुँहसे जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी हुई जो बनारस विहारके जिलेके बीच बहतीहै और शास्त्रसे उसका पानी छूना वर्जित है कोई ऐसाभी कहते हैं गुरु गुरुपुत्रोंकी आज्ञा न माननेसे और एक समय वशिष्ठकी गऊका ताडन करनेसे इन तीनों पापसे इसराजाके माथेमें तीन सींग होगये इससे त्रिशंकु नाम पडा ॥

१ बीररस । २ तरकश । ३ धनुष बाण । ४ हाथियोंके झुंड । ५ सिंह । ६ बटेर ।

दोहा–अति सरोषभाषे लषण, लखिसुनि शपथप्रमान ॥
सभयविलोकत लोकपति, चाहत भभरिभगान ॥२२९॥

जग भा१मगन गगन भै बानी ❀ लषण बाहु बल विपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा ❀ को कहि सक को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काज कछु होई ❀ समुझिकरियभल कहसबकोई ॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं ❀ कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुर वचन लषण सकुचाने ❀ राम सीय२आदर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई ❀ सब ते कठिन राजमद भाई ॥
जो अँचवत मातहि नृप तेई ❀ नाहिन साधु सभा जिन्ह सेई ॥
सुनहु लषण भल भरत सरीखा ❀ विधिप्रपंच महँ सुना न दीखा ॥

दोहा–भरतहिं होइ न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ ॥
कबहुँ कि काँजी सीकरन्हि, क्षीरसिंधुविनशाइ ॥२३०॥

तिमिरतरुणतरणिहि सकगिलई ❀ गगन मगन मकु मेघहिमिलई ॥
गो पद जल बूडहिं घटयोनी ❀ सहज क्षमा बरु छाँडहिं क्षोनी ॥
मशक फूँक बरु मेरु उड़ाई ❀ होइ न नृपमद भरतहि भाई ॥
लषण तुम्हार शपथ पितु आना ❀ शुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥
सगुण क्षीर अवगुण जलताता ❀ मिले रचे परपंच विधाता ॥
भरत हंस रविवंश तडागा ❀ जनमि कीन्ह गुणदोषविभागा ॥
गहिगुणपय तजि अवगुण वारी ❀ निजयशजगत कीन्हउजियारी ॥
कहत भरत गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

दोहा–सुनि रघुवर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु ॥
लगे सराहन सहसमुख, प्रभु को कृपानिकेतु ॥२३१॥

जो न होत जग जन्म भरत को ❀ सकलधर्म्मधुर धरणि धरतको ॥
कविकुल अगम भरत गुणगाथा ❀ को जानै तुम विन रघुनाथा ॥
लषण राम सिय सुनि सुरवानी ❀ सुनि सुखलहेउ न जाइ बखानी ॥
इहाँ भरत सब सहित सुहाये ❀ मंदाकिनी पुनीत अन्हाये ॥

१ बावला । २ सुशील । ३ नहाकी दृष्टि । ४ नहाके बरतनके धोवनके बूँद ।
५ अंधकार । ६ दोपहरका सूर्य्य । ७ अगस्त्यमुनि । ८ सौगंध ।

सरित समीप राखि सब लोगा ❀ माँगि मातु गुरुसचिव नियोगा ॥
चले भरत जहँ सिय रघुराई ❀ साथ निषाद नाथ लघुभाई ॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं ❀ करत कुतर्क कोटि मन माहीं ॥
राम लषण सिय सुनि ममनाऊँ ❀ उठिजनिअनतजाहिंतजिठाऊँ ॥
दोहा—मातु मते महँजानिमोहिं, जोकछुकहहिंसोथोर ॥
अघअवगुणतजिआदरहिं, समुझिआपनीओर ॥२३२॥
जो परिहरहिं मलिन मन जानी ❀ जो सन्मानहिं सेवक मानी ॥
मोरे शरण राम की पनहीं ❀ राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
जगयश भाजन चातक मीना ❀ नेम प्रेम निज निपुण नवीना ॥
अस मन गुणत चले मग जाता ❀ सकुचसनेह शिथिल सबगाता ॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी ❀ चलत भक्ति बल धीरज धोरी ॥
जब समुझहिं रघुनाथ स्वभाऊ ❀ तब पथ परत उतावल पाऊ ॥
भरत दशा तेहि अवसर कैसी ❀ जल प्रवाह जल अलिगण जैसी ॥
देखि भरत कर शोच सनेहू ❀ भा निषाद त्यहि समय विदेहू ॥
दोहा—लगे होन मंगल शकुन, सुनि गुणि कहतनिषाद ॥
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनिपरिणामविषाद ॥२३३॥
सेवक वचन सत्य सब जाने ❀ आश्रम निकट जाय नियराने ॥
भरत दीख वन शैल समाजू ❀ मुदित क्षुधित जनुपाइ सुराजू ॥
ईति[1]भीति[2] जनु प्रजा दुखारी ❀ त्रिविध ताप पीडित ग्रह भारी ॥
जाइ सुराज सुदेश सुखारी ❀ भई भरत गति तेहि अनुहारी ॥
राम वासवन सम्पति भ्राजा ❀ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव विराग विवेक नरेशू ❀ विपिन सुहावन पावन देशू ॥
भट यमनियम शैल रजधानी ❀ शांति सुमति शुचि सुंदररानी ॥
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ ❀ रामचरण आश्रित चित चाऊ ॥
दोहा—जीति मोह महिपालदल, सहितविवेक भुआल ॥
करत अकण्टक राजपुर, सुख सम्पदा सुकाल ॥२३४॥

---

१ दोष। २ अतिवृष्टि-अनावृष्टि-इत्यादिभय।

वन प्रदेश मुनि वास घनेरे ❀ जनु पुर नगर गाँव गण खेरे ॥
विपुल विचित्र विहँग मृगनाना ❀ प्रजा समाज नजाइ बखाना ॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा ❀ देखि महिष वृक साज सराहा॥
वैर विहाइ चरहिं इक संगा ❀ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं ❀ मनहुँनिशानविविधविधिबाजहिं॥
चकचकोर चातक शुकपिकगन ❀ गुंजत मंजु मराल मुदितमन ॥
अलिगण गावत नाचत मोरा ❀ जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ॥
वेलि विटप तृण सकल सफूला ❀ सब समाज मुद मंगल मूला ॥

दोहा–राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम ॥
तापस तप फल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ॥२३५॥

तब केवट ऊँचे चढ़ि जाई ❀ कहा भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देखु यह विटप विशाला ❀ पाकर जम्बु रसाल तमाला ॥
तिन तरुवरन्ह मध्य वट सोहा ❀ मंजु विशाल देखि मन मोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला ❀ अविचल छाँह सुखद सबकाला॥
मानहुँ तिमिर अरुणमय राशी ❀ विरची विधिसकेलिसुखमासी॥
तेहि तरु सरित समीप गुसाँई ❀ रघुवर पर्णकुटी तहँ छाई ॥
तुलसी तरुवर विविध सुहाये ❀ कहुँ सिय पिय कहुँ लषण लगाये॥
वट छाया वेदिका बनाई ❀ सिय निज पाणि सरोज सुहाई॥

दोहा–जहँ बैठे मुनिगण सहित, नित सियराम सुजान॥
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥२३६॥

सखा वचन सुनि विटप निहारी ❀ उमगे भरत विलोचन वारी॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई ❀ कहत प्रीति शारद सकुचाई ॥
हरषहिं निरखि राम पद अंका ❀ मानहुँ पारस पायहु रंका ॥
रजसिर धरि हिय नयन लगावहिं ❀ रघुवरमिलनसरिससुखपावहिं॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा ❀ प्रेम मगन मृग खग जड़जीवा ॥
सखहि सनेह विवश मग भूला ❀ कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला ॥

१ गैंडा। २ हाथी। ३ सिंह। ४ सूकर। ५ भैंसा। ६ भेड़। ७ अमरराज। ८ पिलखन। ९ जामुन। १० आंव ११ आबनूस।

निरखि सिद्ध साधक अनुरागे ❀ सहज सनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाव भरत को ❀ अचर सचरचर अचरकरतको ॥
दोहा-प्रेम अमिय मंदिर विरह, भरत पयोधि गँभीर ॥
मथि प्रगटे सुरसाधु हित, कृपासिंधु रघुवीर ॥ २३७ ॥
सखा समेत मनोहर जोटा ❀ लखेउनलषणसघन वनओटा ॥
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन ❀ सकल सुमंगल सदन सुहावन ॥
करत प्रवेश मिटा दुख दावा ❀ जनुयोगी परमारथ पावा ॥
देखे भरत लषण प्रभु आगे ❀ पूँछत वचन कहत अनुरागे ॥
शीश जटा कटि मुनि पट बाँधे ❀ तूण कसे कर शर धनु काँधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू ❀ सीय सहित राजत रघुराजू ॥
वल्कल वसन जटिल तनु श्यामा ❀ जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा ॥
करकमलन धनु सायक फेरत ❀ जीकी जरनि हरत हँसि हेरत ॥
दोहा-लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुनन्द ॥
ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानन्द ॥ २३८ ॥
सानुज सखा समेत मगन मन ❀ बिसरे हर्ष शोक सुख दुखगन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाई ❀ भूतल परे लकुट की नाई ॥
वचन सप्रेम लषण पहिचाने ❀ करत प्रणाम भरत जिय जाने ॥
बंधु सनेह सरस यहि ओरा ❀ उत साहब सेवा वरजोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई ❀ सुकविलषण मनकीगतिभनई ॥
रहे राखि सेवा परभारू ❀ चढीचंग जनु खैंच खिलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा ❀ भरत प्रणाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा ❀ कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥
दोहा-बरवश लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान ॥
भरत रामकी मिलन लखि, बिसरे सबहिं अपान २३९ ॥
मिलन प्रीति किमि जाइ वखानी ❀ कविकुलअगम कर्ममनवानी ॥
परम प्रेम पूरण दोउ भाई ❀ मनबुधि चितअहमितिबिसराई ॥

१ सेवामें चित्तस्थिररहो। २ पतंग। ३ तरकश।

कहहु सुप्रेम प्रकट को करई ❀ केहिछाया कविमति अनुसरई ॥
कविहि अर्थ आखर बल साँचा ❀ अनुहर ताल गतिहि नटनाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुवर को ❀ जहँनजाइमन विधिहरिहरको ॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती ❀ बाजु सुराग कि गाडरिताँती ॥
मिलनि विलोकि भरत रघुवरकी ❀ सुरगण सभय धुकधुकी धरकी ॥
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ❀ वरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥
दोहा—मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम ॥
भूरिभाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम ॥२४०॥
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई ❀ बहुरि निषाद लीन उरलाई ॥
पुनि मुनि गण दोउ भाइन वन्दे ❀ अभिमत आशिष पाइ अनन्दे ॥
सानुज भरत उमँगि अनुरागा ❀ धरिशिर सियपद पद्म परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये ❀ सिय कर कमल परसि बैठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं ❀ मगन सनेह देह सुधिनाहीं ॥
सबविधि सानुकूल लखि सीता ❀ भे अशोच उर अपडरबीता ॥
कोउ कछु कहै नकोउ कछु पूँछा ❀ प्रेम भरामन निजगति छूँछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरज धरि ❀ जोरिपाणि विनवतप्रणामकरि ॥
दोहा—नाथ साथ मुनिनाथके, मातु सकल पुरलोग ॥
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग ॥२४१॥
शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू ❀ सीय समीप राखिरिपुदमनू ॥
चले सवेग राम तेहि काला ❀ धीर धर्म्म धुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे ❀ दण्ड प्रणाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उर लाई ❀ प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू ❀ कीन्ह दूरिते दण्ड प्रणामू ॥
राम सखा ऋषि बरबश भेंटे ❀ जनु महि लुटत सनेह समेटे ॥
रघुपति भक्त सुमंगल मूला ❀ नभ सराहि सुर वर्षहिं फूला ॥
इहिसम निपट नीच कोउ नाहीं ❀ बड़ वशिष्ठ सम को जग माहीं ॥

१ अनुसार । २ ईइधुनकनेकी ताँति । ३ बृहस्पति । ४ पुष्प । ५ मनभावनी । ६ वशिष्ठ ।

दो०-जेहिलखिलषणहुँतेअधिक, मिलेमुदितमुनिराउ ॥
सो सीतापति भजन को, प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४२॥
भरत लोग राम सब जाना ❀ करुणाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भाँति रहा अभिलाषी ❀ तेहि तेहि की तैसी रुचिराखी ॥
सानुज मिलि पलमहँ सब काहू ❀ कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू ॥
यह बड़िबात राम के नाहीं ❀ जिमि घटकोटि एक रविछाहीं ॥
मिलि केवटहिं उमँगि अनुरागा ❀ पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी ❀ जनु सुबेलि अवली हिम मारी ॥
प्रथम राम भेंटेउ कैकेयी ❀ सरल स्वभाव भक्ति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी ❀ काल कर्म्म विधि शिर धरि खोरी ॥
दोहा-भेंटे रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष ॥
अम्बईश आधीन जग, काहु न देइय दोष ॥ २४३ ॥
गुरुतिय पद वन्दे दोउ भाई ❀ सहित विप्र तिय जे सँग आई ॥
गंग गौरि सम सब सन्मानी ❀ देहिं अशीष मुदित मृदुबानी ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका ❀ जनु भेंटी सम्पति अतिरंका ॥
पुनि जननी चरणन दोउ भ्राता ❀ परे प्रेम व्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अम्ब उरलाये ❀ नयन सनेह सलिल अन्हवाये ॥
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू ❀ किमिकविकहैमूकाजिमिस्वादू ॥
मिलि जननिहिं सानुजरघुराऊ ❀ गुरु सन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू ❀ जल थल तकितकि उतरे लोगू ॥
दोहा-महिसुर मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिये साथ ॥
पावनआश्रम गमनकिय, भरतलषणरघुनाथ ॥२४४॥
सीय आइ मुनिवर पग लागी ❀ उचित अशीष लही मन माँगी ॥
गुरुपत्निहि मुनि तियन्ह समेता ❀ मिलि सप्रेम कहिजाइ न जेता ॥
बन्दि बन्दि पद सिय सबहीके ❀ आशिष वचन लहे प्रिय जीके ॥
सासु सकल जब सीय निहारी ❀ मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी ॥
परी बधिकवश मनहुँ मराली ❀ काह कीन्ह करतार कुचाली ॥

तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा ❀ सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा ❀ नील नलिन लोचन भरिनीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह शिरनाई ❀ त्यहि अवसर करुणा महिछाई॥
दो.-लागिलागिपगसबनिसिय, भेटतिअतिअनुराग ॥
हृदय अशीशहिं प्रेमवश, रहिहौ भरी सुहाग ॥२४५॥
विकल सनेह सीय सब रानी ❀ बैठन सबहिं कहेउ गुरुज्ञानी ॥
प्रथम कही जगगति मुनि नाथा ❀ कहे कछुक परमारथ गाथा ॥
नृप कर सुरपुर गमन सुनावा ❀ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा ॥
मरण हेतु निज नेह विचारी ❀ भे अति विकल धीरधुरधारी ॥
कुलिश कठोर सुनत कटुवानी ❀ विलपत लषण सीयसबरानी ॥
शोक विकल अति सकल समाजू ❀ मानहुँ राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये ❀ सहित समाजसुरसरितअन्हाये॥
व्रत निरम्बु त्यहिदिनप्रभुकीन्हा ❀ मुनिहुँ कहे जल काहुनलीन्हा ॥
दोहा-भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ॥
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥२४६॥
करि पितुक्रिया वेद जस वरणी ❀ भे पुनीत पातक तम तरणी ॥
जासु नाम पावक अघतूला ❀ सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस ❀ तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
शुद्धभये दुइ वासर बीते ❀ बोले गुरुसन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी ❀ कन्द मूल फल अम्बु अहारी ॥
सानुज भरत सचिव सब माता ❀ देखि मोहिं पल जिमि युगजाता॥
सब समेत पुरधारिय पाऊ ❀ आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई ❀ उचित होइ तस करिय गुसाईं ॥
दोहा-धर्मसेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम ॥
लोग दुखितदिनदुइदरश, देखिलहहिंविश्राम ॥२४७॥
राम वचन सुनि सभय समाजू ❀ जनुजलनिधिमहँविकलजहाजू॥

१ निर्जल। २ अग्नि। ३ पापरूपीरुई। ४ पानी। ५ समुद्र।

सुनि सुनि गिरा सुमंगल मूला ❀ भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावन पय तिहुँ काल अन्हाहीं ❀ जेहि बिलोकि अघ ओघ नशाहीं ॥
मंगल मूरति लोचन भरिभरि ❀ निरखहिं हर्षि दण्डवत करिकरि ॥
राम शैल वन देखन जाहीं ❀ जहँ सुख सकल कतहुँ दुख नाहीं ॥
झरना झरहिं सुधा सम वारी ❀ त्रिविध ताप हर त्रिविध बयारी ॥
विटप बेलि तृण अगणित जाती ❀ फल प्रसून[2] पल्लव[3] बहु भाँती ॥
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं ❀ जाइ बरणि छवि वन केहि पाहीं ॥

दोहा-सरन सरोरुह जल विहँग, कूजत गुंजत भृंग ॥
बैर बिगत विहरत विपिन, मृग विहंग बहुरंग ॥२४८॥

कोल किरात भिल्ल वनवासी ❀ मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधासी ॥
भरि भरि पर्णपुटी[4] रचि रूरी ❀ कन्द मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिं देहिं करि विनय प्रणामा ❀ कहि कहि स्वाद भेद गुण नामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदु वानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम सुकृती[5] हम नीच निषादा ❀ पावा दर्शन राम प्रसादा ॥
हमहिं अगम[6] अति दरश तुम्हारा ❀ जस मरुधरणि[7] देवसरि धारा[8] ॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा ❀ परिजन प्रजा चहिय जस राजा ॥

दो०-यह जिय जानि सकोच तजि, करिय छोह लखि नेहु ॥
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृण अंकुर लेहु ॥२४९॥

तुम प्रिय पाहुन वन पगु धारे ❀ सेवा योग्य न भाग्य हमारे ॥
देव कहा हम तुमहिं गुसाँईं ❀ ईंधन पात किरात मिताईं ॥
यह हमार अति बड़ि सेवकाई ❀ लेहिं न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़जीव जीव गणघाती ❀ कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
पाप करत निशि वासर जाहीं ❀ नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं ॥
स्वप्नेहुँ धर्म्म बुद्धि कस काऊ ❀ यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जब ते प्रभुपद पद्म निहारे ❀ मिटे दुसह दुख दोष[1] हमारे ॥

१ पाप। २ फूल। ३ पत्ते। ४ पत्तोंका दोना। ५ पुण्यात्मा। ६ दुर्लभ। ७ मारवाड़की पृथ्वी। ८ गंगाजीकी धारा।

वचन सुनत पुरजन अनुरागे ❀ तिन्हके भाग्य सराहन लागे ॥
छंद–लागे सराहन भाग्यसब अनुरागवचनसुनावहीं॥
बोलनिमिलनिसियरामचरणसनेहलखिसुखपावहीं॥
नर नारिनिदरहिंनेहनिजसुनिकोलभिल्लनकीगिरा ॥
तुलसी कृपा रघुवंशमणिकी लोह लै नौका तरा॥११॥
सो०–विहरहिंवन चहुँओर, प्रतिदिनप्रमुदितलोगसब॥
जल जिमि दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम॥१०॥
पुरनर नारि मगन अति प्रीती ❀ वासर जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति वेष बनाई ❀ सादर करहिं सरस सेवकाई ॥
लखा न मर्म राम बिनु काहू ❀ माया सब सिय मायानाहू ॥
सीय सासु सेवा वश कीन्हीं ❀ तिन्हलहिसुखशिखआशिषदीन्ही॥
लखिसियसहितसरल दोउ भाई ❀ कुटिल रानि पछिताइ अघाई ॥
अब जिय महँ याचति कैकेई ❀ मोहिं न बीच विधि मीच न देई ॥
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं ❀ राम विमुख थल नरक न लहहीं॥
यह संशय सबके मन माहीं ❀ राम गमन विधि अवध कि नाहीं॥
दो०–निशिननींदनहिंभूखदिन, भरतविकल सुठिशोच ॥
नीचकीचबिचमगनजस, मीनाहिंसलिलसँकोच २५०॥
कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली ❀ ईतिभीतिं जस पाकत शाली ॥
केहि विधि होइ राम अभिषेकू ❀ मोहिं अब करत उपाय न एकू ॥
अवशि फिरहिं गुरु आयसुमानी ❀ पुनि पुनिकहब राम रुचिजानी ॥
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ ❀ राम जननि हठ करब कि काऊ ॥
मोहिं अनुचर कर केतिक बाता ❀ त्यहिमहँ कुसमयवाम विधाता॥
जो हठ करौं तो निपट कुकर्म्मू ❀ हर गिरि ते गुरु सेवक धर्म्मू ॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ शोचत भरतहिं रैनि सिरानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहिं शिरनाई ❀ बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥
दोहा–गुरुपद कमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥२५१॥

बोले मुनिवर समय समाना ❁ सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धर्म्म धुरीण भानुकुल भानू ❁ राजा राम स्ववश भगवानू ॥
सत्यसिन्धु पालक श्रुतिसेतू ❁ राम जन्म जग मंगल हेतू ॥
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी ❁ खल दल दलन देव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ❁ कोउ न रामसम जान यथारथ ॥
विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला ❁ माया जीव कर्म कलिकाला ॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई ❁ योगसिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जिय देखहु नीके ❁ रामरजाय शीश सबहीके ॥

दोहा–राखे रामरजाय रुख, हम सब कर हित होइ ॥
समुझि सयाने करहु अब, सबमिलिसम्मतसोइ॥२५२॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू ❁ मंगल मूल मोद मग येकू ॥
जेहिविधिअवधचलहिंरघुराई ❁ कहहु समुझि सोइ करैं उपाई ॥
सब सादर सुनि मुनिवर बानी ❁ नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उत्तर न आव लोग भे भोरे ❁ तब शिरनाय भरत कर जोरे ॥
भानुवंश भे भूप घनेरे ❁ अधिक एक ते एक बड़ेरे ॥
जन्महेतु सब कहँ पितु माता ❁ कर्म शुभाशुभ देइ विधाता ॥
दलिदुख सजै सकल कल्याना ❁ अस अशीष राउर जग जाना ॥
सो गुसाइँ विधिगति जेइ छेकी ❁ सकै को टारि टेक जो टेकी ॥

दोहा–बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग ॥
सुनि सनेह मय वचनगुरु, उर उपजा अनुराग ॥२५३॥

तात बात फुर राम कृपाहीं ❁ राम विमुख सुखस्वपन्यहुँनाहीं॥
सकुचौं तात कहत इकबाता ❁ अरध तजहिं बुध सरवस जाता॥
तुम कानन गवनहु द्वउ भाई ❁ फिरिहहिं लषण सीय रघुराई ॥
सुनि शुभ वचन हर्ष दोउ भ्राता ❁ भे प्रमोद परिपूरण गाता ॥
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा ❁ जनु जिय राउ राम भे राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी ❁ सम दुख सुख सब रोवहिं रानी॥

१ शेष । २ राजा-ब्राह्मण-शेषनाग । ३ वेदशास्त्र ।

कहहिं भरत मुनिकहा सो कीन्हे ❀ फल जगजीवन अभिमत दीन्हे ॥
कानन करउँ जन्मभरि बासू ❀ इहिते अधिक न मोर सुपासू ॥
दोहा-अन्तर्यामी रामसिय, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
जोफुरकहहुतोनाथनिज,कीजिय वचन प्रमान॥२५४॥
भरत वचन सुनि देखि सनेहू ❀ सभासहित मुनि भयउ विदेहू ॥
भरत महा महिमा जलरासी ❀ मुनि मतितीर ठाढि अवलासी ॥
गा चह पार यत्न बहु हेरा ❀ पावति नाव न बोहितें बेरा ॥
और करहि को भरत बड़ाई ❀ सरसि सीप किमि सिन्धु समाई॥
भरत मुनिहि मन भीतर पाये ❀ सहित समाज रामपहँ आये ॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन ❀ बैठे सब सुनि मुनि अनुशासन॥
बोले मुनिवर वचन विचारी ❀ देश काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना ❀ धर्म नीति गुणज्ञान निधाना ॥
दोहा-सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव ॥
पुरजनजननीभरतहित, होहि सोकरियउपाव॥२५५॥
भरत कहहिं विचारि न काऊ ❀ सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ ❀ नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउर राखे ❀ आयसु किये मुदित फुर भाषे ॥
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई ❀ माथे मानि करौं शिख सोई ॥
पुनि जेहि कहँ जस होय रजाई ❀ सो सब भाँति करिहि सेवकाई ॥
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा ❀ भरत सनेह विचार न राखा ॥
त्यहिते कहौं बहोरि बहोरी ❀ भरत भक्ति भइ मम मति भोरी॥
मोरे जान भरत रुचि राखी ❀ जो कीजियसोशुभशिवसाखी ॥
दोहा-भरत विनय सादर सुनिय,करियविचारबहोरि॥
करबसाधुमतलोकमत,नृपनय निगमनिचोरि॥२५६॥
गुरु अनुराग भरत पर देखी ❀ रामहृदय आनन्द विशेषी ॥
भरतहिं धर्मधुरन्धर जानी ❀ निज सेवक तनु मानस बानी ॥

१ वांछितफल । २ वनमें । ३ समुद्र । ४ सीप । ५ जहाज । ६ वेद । ७ प्रीति ।

बोले गुरु आयसु अनुकूला ❀ वचन मंजु मृदु मंगल मूला ॥
नाथ शपथ पितुचरण दोहाई ❀ भयउ न भुवन भरत सम भाई॥
जे गुरुपद अंबुज अनुरागी ❀ ते लोकहु वेदहु बड़भागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू ❀ को कहिसकै भरत सम भागू ॥
लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई ❀ करत वदन पर भरत बड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई ❀ असकहि राम रहे अरगाई ॥

दोहा–तब मुनि बोले भरत सन, सबसँकोच तजितात ॥
कृपासिन्धु प्रियबन्धु सन, कहहु हृदय की बात॥२५७॥

सुनि मुनि वचन रामरुख पाई ❀ गुरु साहिब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने शिर सब छरभारू ❀ कहि न सकैं कछु करैं विचारू ॥
पुलक शरीर सभामे ठाढ़े ❀ नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ❀ यहिते अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानौं निज नाथ स्वभाऊ ❀ अपराधिहु पर कोहँ न काऊ ॥
मो पर कृपा सनेह विशेषी ❀ खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी ॥
शिशुपनते परिहरेउ न संगू ❀ कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही ❀ हारेहु खेल जितावहिं मोही ॥

दोहा–महूँ सनेह सकोचवश, सन्मुख कहेउँ न वयन ॥
दर्शन तृप्ति न आजुलगि, प्रेम पियासे नयन ॥ २५८ ॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा ❀ नीच बीच जननी मिसुपारा ॥
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा ❀ आपुन समुझि साधुशुचिकोभा॥
मातु मन्द मैं साधु सुचाली ❀ उर अस आनतकोटि कुचाली ॥
फरै कि कोदव बालि सुशाली ❀ मुक्ता स्रवैं कि शंबुक ताली ॥
स्वप्नेहुँ दोष कलेश न काहू ❀ मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
विनु समुझे निज अघपरिपाकू ❀ जारेउँ जाइ जननि कह काकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा ❀ एकहि भाँति भलेहिंभलमोरा ॥

---

१ पवित्रवचन। २ चुप। ३ कमलनेत्र। ४ क्रोध। ५ चावल–धान। ६ मोती। ७ सीपी। ८ गहरा समुद्र। ९ कठोर वचन।

गुरु गुसाइँ साहब सिय रामू ❀ लागत मोहिं नीक परिणामू ॥
दोहा-साधुसभा प्रभुगुरुनिकट, कहौंसुथलसतिभाउ॥
प्रेमप्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२५९॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी ❀ जननी कुमति जगत सबसाखी ॥
देखि न जाहिं विकल महतारी ❀ जरहिं दुसहज्वर पुर नरनारी ॥
मैहिं सकल अनरथ कर मूला ❀ सोसुनि समुझि सहौं सब शूला ॥
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा ❀ करि मुनि वेष लषणसियसाथा॥
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये ❀ शंकर साखि रह्यों इहि घाये ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू ❀ कुलिश कठिन उर भयउनवेहू॥
अबसब आँखिन देखेउँ आई ❀ जियत जीव जड़ सबै सहाई ॥
जिनहिंनिरखिमगसाँपिनि बीछी ❀ तजहिंविषम विषतामसतीछी ॥
दोहा-ते रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि ॥
तासु तनय तजि दुसहदुख, दैवसहावै काहि ॥२६०॥
सुनि अति विकल भरतवरवानी ❀ आरति प्रीति विनय नयसानी॥
शोक मगन सब सभा खँभारू ❀ मनहुँ कमल वन परेउ तुपारू॥
कहि अनेक विधि कथा पुरानी ❀ भरत प्रबोध कीन्ह मुनिज्ञानी॥
बोले उचित वचन रघुनन्दू ❀ दिनकर कुलकैरववनचन्दू ॥
तात जीय जनि करहु गलानी ❀ ईश अधीन जीवगति जानी ॥
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे ❀ पुण्यश्लोक तात कर तोरे ॥
उर आनत तुम पर कुटिलाई ❀ जाइ लोक परलोक नशाई ॥
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई ❀ जिन्ह गुरु साधु सभानहिं सेई॥
दोहा-मिटिहहिं पापप्रपंचसब, अखिलअमंगल भार ॥
लोकसुयशपरलोकसुख, सुमिरतनाम तुम्हार ॥२६१॥
कहौं स्वभाव सत्य शिव साखी ❀ भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतर्क करहु जिय जाये ❀ वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगण निकट विहंगम जाहीं ❀ बाधक बधिक बिलोकिपराहीं॥

१ माया । २ पुण्यात्मा भगवान् । ३ नानाप्रकारके पाप माया । ४ सम्पूर्णविश्व ।

हित अनहित पशु पक्षिउ जाना ❀ मानुष तनु गुण ज्ञान निधाना ॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके ❀ करौं कहा असमंजस जीके ॥
राख्यउ राउ सत्यमोहिं त्यागी ❀ तनु परिहरेउ प्रेम प्रण लागी ॥
तासु वचन मेटत मन शोचू ❀ तेहि ते अधिकतुम्हार सँकोचू ॥
तापर गुरु मुहिं आयसु दीन्हा ❀ अवशिजोकहहुचहौंसोकीन्हा ॥
दोहा—मन प्रसन्न करिसकुचतजि, कहहुकरौंसोआज ॥
सत्यसिन्धु रघुवरवचन, सुनिभा सुखीसमाज ॥२६२॥
सुरगण सहित सभय सुरराजू ❀ शोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
करत विचार बनत कछु नाहीं ❀ रामशरण सबगे मन माहीं ॥
बहुरि विचार परस्पर कहहीं ❀ रघुवर भक्त भक्ति वश अहहीं ॥
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा ❀ भेसुर सुरपति निपट निरासा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल विषादा ❀ नरहरिकिये प्रगट प्रहलादा ॥
लगि लगिकानकहहिंधुनिमाथा ❀ अब सुरकाज भरत के हाथा ॥
आन उपाय न देखिय देवा ❀ मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं ❀ निजगुणशीलरामवशकरतहिं ॥
दोहा—सुनि सुरमंतसुरगुरुकहेउ, भलतुम्हारबडभाग ॥
सकल सुमंगल मूल जग, भरत चरण अनुराग ॥२६३॥
सीतापति सेवक सेवकाई ❀ कामधेनु शत सरित सुहाई ॥
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई ❀ तजहु शोच विधि बात बनाई ॥
देखु देवपति भरत प्रभाऊ ❀ सहज स्वभाव विवश रघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं ❀ भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत शोचू ❀ अन्तर्यामी प्रभुहि सँकोचू ॥
निज शिर भारभरतजिय जाना ❀ करत कोटिविधिउरअनुमाना ॥
करि विचार मनदीन्हों ठीका ❀ राम रजायसु आपनि नीका ॥
निज प्रणतजि राखेउ प्रणमोरा ❀ छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ॥
दोहा—कीन्हअनुग्रहअमितअति, सबविधिसीतानाथ ॥

१ दुविधा । २ देवतोंका मत । ३ बृहस्पति । ४ कृपा ।

करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलज[1] युगहाथ ॥२६४॥
कहउँ कहावउँ का अब स्वामी ❀ कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहब अनुकूला ❀ मिटी मलिन मनकलिपतशूला ॥
अपडर डरेउँ न शोच समूले ❀ रविहि न दोष देव दिश भूले ॥
मोर अभाग्य मातु कुटिलाई ❀ विधिगति विषम काल कठिनाई ॥
पाँवरोपि सब मिलि मोहिं घाला ❀ प्रणतपाल प्रण आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई ❀ लोकहु वेद विदित नहिं गोई ॥
जग अनभल भल एक गुसाँई ❀ कहियहोइ भलकासु भलाई ॥
देव देवतरु सरिस स्वभाऊ ❀ सन्मुख विमुख नकाहुहि काऊ ॥
दोहा-जाइनिकटपहिंचानि तरु, छाँह शमन सबशोच ॥
माँगत अभिमत पावफल, राउ रंक भल पोच[4] ॥२६५॥
लखि सब विधि गुरुस्वामिसनेहू ❀ मिटेउ क्षोभ नहिं मन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजियसोई ❀ जनहितप्रभुचित क्षोभ न होई ॥
जो सेवक साहब संकोची ❀ निजहित चहै तासुमतिपोची ॥
सेवक हित साहब सेवकाई ❀ करै सकल सुख लोभ विहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका ❀ किये रजाइ कोटि विधि नीका ॥
यह स्वारथ परमारथ सारू ❀ सकल सुकृतफलसुगतिशृँगारू ॥
देव एक विनती सुनि मोरी ❀ उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलक समाज साजि सब आना ❀ करिय सफल प्रभु जो मनमाना ॥
दोहा-सानुज पठइयमोहिंवन, कीजिय सबहिंसनाथ ॥
नातरु फेरिय बन्धुदोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥ २६६ ॥
नतरु जाहिंवन तीनिउँ भाई ❀ बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहिविधि प्रभुप्रसन्न मन होई ❀ करुणासागर कीजिय सोई ॥
देवदीन्ह सब मो पर भारू ❀ मोरे नीति न धर्म विचारू ॥
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू ❀ रहत न आरतके चितचेतू ॥
उतरदेइ विनु स्वामि रजाई ❀ सो सेवक लखि लाज लजाई ॥

१ कमलरूपीदोनोहाथ। २ संपूर्ण। ३ कल्पवृक्ष। ४ नीच।

असमैं अवगुण उदधि अगाधू ❀ स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपालु मोहिं सो मत भावा ❀ सकुच स्वामि मनजाइ नपावा ॥
प्रभु पद शपथ कहौं सतिभाऊ ❀ जग मंगल हित एक उपाऊ ॥
दोहा-प्रभु प्रसन्नमनसकुचतजि, जोज्याहिआयसु देव॥
सोशिरधरिधरिकरहिंसब, मिटिहिअनटअवरेव २६७
भरत वचन शुचि सुनि हिय हर्षे ❀ साधु सराहि सुमन[1] सुर वर्षे ॥
असमंजस वश अवध निवासी ❀ प्रमुदित मन तापस वनवासी ॥
चुपरहिगे रघुनाथ सँकोची ❀ प्रभुगति देखिसभा सवशोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आये ❀ मुनि वशिष्ठ सुनि वेगिबुलाये ॥
करि प्रणाम तिन राम निहारे ❀ वेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिवर पूँछी बाता ❀ कहहु विदेह[2] भूप कुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा ❀ बोले चरवर[3] जोरे हाथा ॥
बूझब राउर सादर साईं ❀ कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं ॥
दोहा-नाहित कोशलनाथ[4]के, साथ कुशल गै नाथ ॥
मिथिला[5]अवधविशेषते, जग सबभयउअनाथ[6] ॥२६८॥
कोशलपति गति सुनि जन कौरा ❀ भे सव लोग शोच वश बौरा ॥
जेहि देखा तेहि समय विदेहू ❀ नाम सत्य अस लाग न केहू ॥
रानि कुचालि सुनत महिपाले ❀ सूझ न कछुजसमणिविनुव्याले ॥
भरत राज्य रघुवर वनवासू ❀ भामिथिलेशहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू ❀ कहहु विचारि उचित का आजू॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ ❀ चलियकिरहियनकहकछुकोऊ॥
नृपति धीर धरि हृदय विचारी ❀ पठये अवध चतुर चर चारी ॥
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ ❀ आयहु वेगि न होइ लखाऊ ॥
दोहा-गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति ॥
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति[7] ॥ २६९ ॥
दूतन आइ भरतकी करणी ❀ जनक समाज यथामति वरणी ॥

१ पुष्प । २ राजाजनकजीकी । ३ धावन । ४ राजादशरथ । ५ जनकपुरी ।
६ स्वामिहीन । ७ मिथिलापुरी ।

सुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति ❀ भेसवशोच सनेह विकल मति ॥
धरि धीरज करि भरत बड़ाई ❀ लिये सुभट साहनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे ❀ हय गज रथ बहु यान सँवारे ॥
दुघड़ी साधि चले ततकाला ❀ किय विश्राम न मगु महिपाला ॥
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा ❀ चले यमुन उतरन सब लागा ॥
खबरि लेन हम पठयउ नाथा ❀ असकहि तिनमहिनायउमाथा ॥
साथ किरात छसातक दीन्हें ❀ मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हें ॥
दोहा-सुनतजनकआगमन सब, हर्ष्यउअवधसमाज ॥
रघुनन्दनहिं सँकोच बड़, शोच विवश सुरराज ॥२७०॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेयी ❀ काहि कहै क्यहि दूषण देई ॥
अस मन आनि मुदित नरनारी ❀ भयउ बहोरि रहब दिनचारी ॥
इहि प्रकार गत बासर सोऊ ❀ प्रात अन्हान लगे सब कोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नरनारी ❀ गणपति गौरि पुरारि तमारी ॥
रमा रमण पद वन्दि बहोरी ❀ विनवहिं अंचल अंजलि जोरी ॥
राजा राम जानकी रानी ❀ आनँद अवधि अवध रजधानी ॥
सुवसवसै फिरि सहित समाजा ❀ भरतहि राम करैं युवराजा ॥
इहि सुख सुधा सींचि सब काहू ❀ देव देहु जगजीवन लाहू ॥
दोहा-गुरु समाज भाइन सहित, राम राज पुरहोउ ॥
अछत राम राजा अवध, मरिय माँगसब कोउ ॥२७१॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी ❀ निंदहिं योग विरति मुनि ज्ञानी ॥
इहि विधि नित्य कर्मकरि पुरजन ❀ रामहिं करहिं प्रणामपुलकितन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ लहैं दरश निज निज अनुहारी ॥
सावधान सबहीं सन्मानहिं ❀ सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
लरकाईते रघुवर बानी ❀ पालत नीति रीति पहिंचानी ॥
शील सँकोच सिन्धु रघुराऊ ❀ सुमुख सुलोचन सरलस्वभाऊ ॥
कहत रामगुण गण अनुरागे ❀ सब निज भाग्य सराहन लागे ॥

१ सेनापति । २ महादेव । ३ सूर्यनारायण ।

हम सब पुण्य¹ पुंज जग थोरे ❀ जिनहिं राम जानत करिसोरे ॥
दो०-प्रेममगन²तेहिसमयसब, सुनिआवतमिथिलेश ॥
सहितसभा संभ्रम उठे, रविकुलकमलदिनेश³ ॥२७२॥
आगे गमन कीन्ह रघुनाथा ❀ भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा॥
गिरिवर दीख जनक नृप जबहीं ❀ करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं ॥
रामदरश लालसा उछाहू ❀ पथ श्रम लेश कलेश न काहू॥
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही ❀ बिनुमन तनुदुख सुखसुधि केही॥
आवत जनक चले इहि भाँती ❀ सहित समाज प्रेम मद माती ॥
आये निकट देखि अनुरागे ❀ सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनक मुनिगण पद वन्दन ❀ ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनंदन ॥
भाइन सहित राम मिलि राजहिं ❀ चले लिवाय समेत समाजहिं ॥
दोहा-आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ ॥
सैन मनहुँ करुणा सरित, लिये जात रघुनाथ ॥२७३॥
बोरत ज्ञान विराग करारे ❀ वचन सशोक मिलत नदिनारे ॥
शोच उसाँस समीर तरंगा ❀ धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥
विषम विषाद तुरावति धारा ❀ भय भ्रम भँवरावर्त्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़िनावा ❀ सकहि न खेइ एक नहिं आवा॥
वनचर कोल किरात विचारे ❀ थके विलोकि पथिक हियहारे॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई ❀ मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
शोक विकल दोउराज समाजा ❀ रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥
भूप रूपगुण शील सराही ❀ शोचहिं शोक सिन्धु अवगाही ॥
छं-अवगाहि शोकसमुद्रशोचहिंनारिनरव्याकुलमहा॥
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्ह्यो कहा ॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनि दशा देखि विदेहकी ॥
तुलसीनसमरथकोउजोतरिसकैसरितसनेहकी ॥१२॥
सोरठा-किये अमितउपदेश,जहँतहँलोगनमुनिवरन॥

१ पुण्यसमूह । २ आनन्द । ३ सूर्य्य ।

धीरज धरिय नरेश, कह्यउ वशिष्ठ विदेहसन ॥ ११ ॥

जासु ज्ञानरवि भवनिशि नाशा ❀ वचनकिरणमुनिकमलविकाशा ॥
तेहिंकि मोह ममता नियराई ❀ यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥
विषयी साधक सिद्ध सयाने ❀ त्रिविधजीव जग वेद बखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू ❀ साधु सभा बड़ आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना ❀ कर्णधार बिनु जिमि जलयाना ॥
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये ❀ रामघाट सब लोग अन्हाये ॥
सकल शोक संकुल नर नारी ❀ सो बासर बीत्यउ बिनु वारी ॥
पशु खग मृगन न कीन्ह अहारा ❀ प्रियपरिजनकरकवनविचारा ॥

दोहा—दोउ समाज, निमिराज रघु, राज नहाने प्रात ॥
बैठे सब वट विटप तर, मन मलीन कृशगात ॥२७४॥

जे महिसुर दशरथ पुरवासी ❀ जे मिथिलापति नगर निवासी ॥
हंसवंश गुरु जनक पुरोधा ❀ जिन्ह जगमग परमारथ शोधा ॥
लगे कहन उपदेश अनेका ❀ सहित धर्म नय विरति विवेका ॥
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी ❀ समुझाई सब सभा सुबानी ॥
तब रघुनाथ कौशिकहिं कह्यऊ ❀ नाथकालि बिनु जल सब रह्यऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई ❀ गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
ऋषिरुखलखिकहतिरहुतिराजू ❀ इहाँ उचित नहिं अशन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहिं सोहाना ❀ पाय रजायसु चले नहाना ॥

दोहा—त्यहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ॥
लै आये वनचर विपुल, भरि भरि काँवरि भार ॥२७५॥

कामद भो गिरि राम प्रसादा ❀ अवलोकत अपहरत विषादा ॥
सर सरिता वन भूमि विभागा ❀ जनु उमँगत आनँद अनुरागा ॥
बेलि विटप सब सफल सफूला ❀ बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
त्यहि अवसर वनअधिकउछाहू ❀ विविध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न बरणि मनोहर ताई ❀ जनुमहि करति जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई ❀ राम जनक मुनि आयसु पाई ॥

१ माँझी-केवट। २ सूर्यवंशगुरुवशिष्ठमुनि। ३ शतानंद। ४ विश्वामित्र। ५ राजाजनक। ६ भोजन।

देखि देखि तरुवर अनुरागे ❀ जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल फूल कन्द विधि नाना ❀ पावन सुन्दर सुधा समाना ॥
दोहा–सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार ॥
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥२७६॥
इहिविधि वासर बीते चारी ❀ राम निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहुँसमाज अस रुचि मन माहीं ❀ विनुसिय राम फिरव भल नाहीं ॥
सीता राम संग वनवासू ❀ कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि लषण राम वैदेही ❀ ज्यहि घरभाव वाम विधि तेही ॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं ❀ राम समीप वसिय वन तवहीं ॥
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँकाला ❀ राम दरश मुद मंगल माला ॥
अटन रामगिरि वन तापस थल ❀ अशनअमियसमकन्दमूलफल ॥
सुख समेत संवत दुइ साता ❀ पलसम होहिं न जानिय जाता ॥
दो.-इहि सुख योग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भाग ॥
सहज स्वभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग ॥२७७॥
इहिविधि सकल मनोरथ करहीं ❀ वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीय मातु तिहि समय पठाई ❀ दासी देखि सुअवसर आई ॥
सावकाश सुनि सब सिय सासू ❀ आई जनक राज रनिवासू ॥
कौशल्या सादर सन्मानी ❀ आसन दीन्ह समय सम आनी ॥
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा ❀ द्रवहिंदेखि सुनिकुलिशकठोरा ॥
पुलकशिथिलतनुवारिविलोचन ❀ महिनखलिखनलगींसवशोचन ॥
सब सिय राम प्रेमकी मूरति ❀ जनु करुणा बहु रूप विसूरति ॥
सीय मातु कह विधि बुधि बाँकी ❀ जो पय फेनु फोरि पविटाँकी ॥
दोहा–सुनिय सुधा देखियगरल, सबकरतूति कराल ॥
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल ॥२७८॥
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा ❀ विधिगति अतिविपरीतविचित्रा ॥

१ त्यागकर। २ प्रसन्नताका समूह। ३ भोजन। ४ अमृततुल्य। ५ प्रीति। ६ पिघलहिं। ७ वज्र-पत्थर। ८ सुनयना। ९ टेढ़ी। १० वज्रकीटाँकी। ११ उलटी।

जो सृजि पालै हरै बहोरी ❀ बालकेलिसम विधि मति भोरी ॥
कौशल्या कह दोष न काहू ❀ कर्म्मविवशदुखसुख क्षतिलाहू ॥
कठिन कर्मगति जान विधाता ❀ सो शुभ अशुभ कर्मफलदाता ॥
ईश रजाइ शीश सबहीके ❀ उतपतिथितिलयविषयअमीके ॥
देवि मोहवश शोचियवादी ❀ विधिप्रपंचअसअचलअनादी ॥
भूपति जियब मरब उर आनी ❀ शोचियसखिलखिनिजहितहानी ॥
सीय मातु कह सत्य सुवानी ❀ सुकृतीअवधि अवधपतिरानी ॥

दोहा–लषण रामसिय जाहिं वन, भलपरिणामनपोच ॥
गहबरिहियकह कौशिला, मोहिंभरतकर शोच ॥ २७९ ॥

ईश प्रसाद अशीष तुम्हारी ❀ सुत सुतवधू देवसरि वारी ॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ ❀ सो करि सखी कहौं सतिभाऊ ॥
भरत शील गुण विनय बड़ाई ❀ भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत शारदहु कै मति हीचे ❀ सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानौं सदा भरत कुलदीपा ❀ बार बार मोहिं कह्यो महीपा ॥
कसे कनक मणि पारखि पाये ❀ पुरुष परखिये समय सुभाये ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा ❀ शोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनि वानी ❀ भईं सनेह विकल सबरानी ॥

दोहा–कौशल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि ॥
को विवेकनिधि वल्लभहि, तुमहिं सकै उपदेशि ॥ २८० ॥

रानि रायसन अवसर पाई ❀ आपनि भाँति कहब समुझाई ॥
राखिय लषण भरत गवनहिंवन ❀ जो यह मत मानै महीपमन ॥
तौ भल यतन करब सुविचारी ❀ मोरे शोच भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ❀ रहे नीक मोहिं लागत नाहीं ॥
लखि स्वभावसुनि सरलसुवानी ❀ सब भईं मगन करुणरस सानी ॥
नभप्रसून झरि धन्य धन्य धुनि ❀ शिथिलसनेह सिद्ध योगी मुनि ॥
सब रनिवास थकितलखिरह्यऊ ❀ तब धरिधीर सुमित्रा कह्यऊ ॥

१ हानि । २ लाभ । ३ मर्यादा । ४ ज्ञानकेसमुद्र । ५ प्रिया । ६ आकाशसे पुष्पोंकीवर्षा ।

देवि दण्डयुग यामिनि बीती ❀ राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥
दोहा--बेगि पाय धारिय थलहि, कह सनेह सतिभाय ॥
हमरे तौ अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय ॥ २८१ ॥
लखि सनेह सुनि वचन विनीता ❀ जनकप्रिया गहि पाँव पुनीता ॥
देवि उचित अस विनय तुम्हारी ❀ दशरथ घरनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ❀ अग्नि धूम गिरि शिर तृण धरहीं ॥
सेवक राउ कर्म मन बानी ❀ सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरे अंग योग जग कोहै ❀ दीपसहाय कि दिनकर सोहै ॥
राम जाय बन करि सुरकाजू ❀ अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
अमर नाग नर राम बाहुबल ❀ सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा ❀ देवि न होइ मृषा मुनि भाषा ॥
दो.-असकहिपगपरिप्रेमअति, सियहितविनयसुनाइ ॥
सिय समेत सिय मातुतब, चलीसुआयसुपाइ ॥ २८२ ॥
प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही ❀ जो ज्याहि योग भाँति ततते ही ॥
तापस वेष जानकिहि देखी ❀ भे सब विकल विषाद विशेषी ॥
जनक राम गुरु आयसु पाई ❀ चले थलहिं सिय देखी आई ॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी ❀ पाहुनि पावनि प्रेम प्राणकी ॥
उर उमँग्यउ अम्बुधि अनुरागू ❀ भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू ॥
सिय सनेह वट बाढत जोहा ❀ तापर राम प्रेम शिशु सोहा ॥
चिरंजीवि मुनि ज्ञान विकलजनु ❀ बूड़त लह्यउ बाल अवलम्बनु ॥
मोह मगन मति नहिं विदेहकी ❀ महिमा सिय रघुवर सनेहकी ॥
दोहा-सियपितुमातुसनेह वश, विकल न सकीसँभारि ॥
धरणिसुताधीरजधरयउ, समयसुधर्मविचारि ॥ २८३ ॥
तापस वेष जनक सिय देखी ❀ भयउ प्रेम परितोष विशेषी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ ❀ सुयशधवल जगकहसबकोऊ ॥
जिमि सुरसरि कीरति सरितोरी ❀ गवन कीन्ह विधिअण्डकरोरी ॥

१ दोपहर । २ रात्रि । ३ मार्कण्डेय । ४ जानकीजी । ५ उज्ज्वल ।

गंग अवनि थल तीनि बडेरे ❋ इहिकिय साधु समाज घनेरे ॥
पितुकह सत्य सनेह सुवानी ❋ सीय सकुचमहँमनहुँसमानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई ❋ शिख आशिष हितदीन्हसुहाई ॥
कहति न सीय सकुच मनमाहीं ❋ इहाँ बसब रजनी भलनाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ ❋ हृदय सराहत शील स्वभाऊ ॥
दो०-बार बार मिलि भेंटिसिय, बिदाकीन्हसनमानि ॥
कहीसमयसमभरतगति, रानिसुअवसरजानि ॥२८४॥
सुनि भूपाल भरत व्यवहारू ❋ सोन सुगन्ध सुधा शशि सारू ॥
मूँदे सजल नयन पुलके तन ❋ सुयश सराहन लगे मुदितमन ॥
भरत कथा भव बन्ध विमोचनि ❋ सावधान सुनुसुमुखिसुलोचनि ॥
धर्मराज नय ब्रह्म विचारू ❋ यहाँ यथामति मोर प्रचारू ॥
सोमति मोरि भरत महिमाहीं ❋ कहौं काहछलिछुअतिनछाहीं ॥
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद ❋ कविकोविदबुधबुद्धिविशारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती ❋ धर्मशील गुण विमल विभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू ❋ शुचिसुरसरिरुचिनिदरिसुधाहू ॥
दो०-निरवधिगुणनिरुपमपुरुष, भरतभरतसमजानि ॥
कहियसुमेरु सुमेरुसम, कविकुलमतिसकुचानि ॥२८५॥
अगम सबहिं वर्णत वर वरणी ❋ जिमिजलहीन मीनगण धरणी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी ❋ जानहिं राम न सकहिं बखानी ॥
वरणि सप्रेम भरत सतभाऊ ❋ तिय जियकी रुचिलखिकहराऊ ॥
बहुरहिं लषण भरत वन जाहीं ❋ सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देवि परन्तु भरत रघुवरकी ❋ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरत सनेह अवधि ममताके ❋ यद्यपि राम सींव समताके ॥
परमारथ स्वारथ सुखसारे ❋ भरत न स्वप्नेहु मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि राम पद नेहू ❋ मोहिंलखि परत भरत मत येहू ॥
दोहा-भोरेहु भरत नपेलिहहिं, मनमहँ राम रजाय ॥

१ संसारबन्धनको नाश करनेहारी । २ वेदांतशास्त्र । ३ विचार । ४ शेष ।
५प्रवीण । ६ मर्यादा रहित । ७ उपमा रहित ।

करिय न शोच सनेह वश, कह्यहु भूप बिलखाय ॥२८६॥
राम भरत गुण कहत सप्रीती ❀ निशि दम्पतिहि पलकसमबीती ॥
राज समाज प्रात युग जागे ❀ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई ❀ वन्दि चरण बोले रुखपाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी ❀ शोक विकल वनवास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेशू ❀ बहुत दिवस भे सहत कलेशू ॥
उचित होय सो कीजिय नाथा ❀ हित सबहीकर रौरे हाथा ॥
असकहि अति सकुचे रघुराऊ ❀ मुनि पुलके लखिशीलस्वभाऊ ॥
तुम विनु राम सकल सुख साजा ❀ नरक सरिस दुहुँ राज समाजा ॥
दोहा-प्राण प्राणके जीवके, जिय सुखके सुखराम ॥
तुमतजितातसोहातगृह, जिनहिंतिनहिंविधिवाम२८७
सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ ❀ जहँ न राम पदपंकज भाऊ ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू ❀ जहाँ न राम प्रेम परधानू ॥
तुम विन दुखी सुखी तुमतेही ❀ तुमजानहु जिय जो जेहि केही ॥
राउर आयसु शिर सबहीके ❀ विदित कृपालुहिं गति सबनीके ॥
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ ❀ भये सनेह शिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रणाम तब राम सिधाये ❀ ऋषि धरि धीर जनकपहँ आये ॥
राम वचन गुरु नृपहि सुनाये ❀ शील सनेह स्वभाव सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई ❀ सबकर धर्म सहित हित होई ॥
दोहा-ज्ञान निधान,सुजान शुचि, धर्मधीर नरपाल ॥
तुमविनु असमंजस शमन,कोसमर्थ इहिकाल ॥२८८॥
सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे ❀ लखि गति ज्ञान विराग विरागे ॥
शिथिल सनेह गुणतमनमाहीं ❀ आये इहाँ कीन्ह भलनाहीं ॥
रामहिं राउ कह्यउ वनजाना ❀ कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना ॥
हम अब वनते वनहिं पठाई ❀ प्रमुदित फिरव विवेक बढाई ॥
तापस मुनि महिसुर गति देखी ❀ भये प्रेम वश विकल विशेषी ॥

१ प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान । २ आकाश ।

समय समुझि धरि धीरज राजा ❀ चले भरत पहँ सहितसमाजा ॥
भरत आय आगे ह्वैलीन्हा ❀ अवसर सरिस सुआसन दीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुति राऊ ❀ तुमहिं विदित रघुवीर सुभाऊ ॥
दोहा–राम सत्यव्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ॥
संकट सहत सकोचवश, करियजोआयसुदेहु ॥२८९॥
सुनि तनु पुलकि नयन भरिवारी ❀ बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू ❀ कुलगुरु समहित माय न बापू ॥
कौशिकादि मुनि सचिव समाजू ❀ ज्ञान अंबुनिधि[1] आपुन आजू ॥
शिशु सेवक आयसु अनुगामी ❀ जानि मोहिं शिख देइय स्वामी॥
इहि समाज थल बूझब राउर ❀ मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे वदन कहौं बडिबाता ❀ क्षमबतात लखि वाम विधाता॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ सेवा धर्म्म कठिन जगजाना ॥
स्वामिधर्म्म स्वारथहि विरोधू ❀ बधिर अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
दोहा–राखि रामरुख धर्म व्रत, पराधीन मोहिं जानि ॥
सबके सम्मत सर्वहित, करिय प्रेम पहिचानि॥२९०॥
भरत वचन सुनि देखि स्वभाऊ ❀ सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदुमंजु कठोरे ❀ अर्थ अमित अति आखर थोरे॥
ज्योंमुख मुकुर मुकुर निज पाणी ❀ गहिनजाय अस अद्भुत वाणी॥
भूप भरत मुनि साधु समाजू ❀ गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू[2] ॥
सुनि सुधि शोच विकल सबलोगा ❀ मनहुँमीन गण नवजल योगा ॥
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी ❀ निरखि विदेह सनेह विशेषी ॥
रामभक्तिमय भरत निहारे ❀ सुर स्वारथी हहरि हियहारे ॥
सब कहँ राम प्रेममय पेखा ❀ भये अलेख शोच वश लेखा ॥
दोहा–राम सनेह सँकोच वश, कह सशोच सुरराज ॥
रचहुप्रपंचहिपंच मिलि, नाहिंतभयउअकाज ॥२९१॥
सुरन सुमिरि शारदा सराही ❀ देवि देव शरणागत पाही ॥

१ ज्ञानके समुद्र । २ श्रीरामचंद्र-चन्द्र ।

फेरि भरत मति करि निज माया ❀ पालविबुधकुलकरिछलछाया ॥
विबुध विनय सुनि देवि सयानी ❀ बोली सुर स्वारथ जडजानी ॥
मोसन कहहु भरत मति फेरू ❀ लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
विधि हरि हर माया बड़ि भारी ❀ सो न भरत मतिसकै निहारी ॥
सोमति मोह कहत करु भोरी ❀ चाँदिनि कर किचन्द्रकर चोरी ॥
भरत हृदय सिय राम निवासू ❀ तहँकितिमिरजहँतरणिप्रकाशू ॥
असकहि शारद गइ विधि लोका ❀ विबुधविकलनिशिमानहुकोका ॥

दोहा—सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥
रचि प्रपंच माया प्रबल, भयभ्रमआर्तउचाट ॥ २९२ ॥

करि कुचाल शोचत सुरराजू ❀ भरत हाथ सब काज अकाजू ॥
गये जनक रघुनाथ समीपा ❀ सनमाने सब रघुकुल दीपा ॥
समय समाज धर्म अविरोधा ❀ बोले तब रघुवंश पुरोधा ॥
जनक भरत सम्वाद सुनाई ❀ भरत कहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू ❀ सो सब करैं मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी ❀ बोले सत्य सरल मृदुवाणी ॥
विद्यमान आपुन मिथिलेशू ❀ मोर कहब सब भाँति भदेशू ॥
राउरराय रजायसु होई ❀ राउरि शपथ सही शिर सोई ॥

दोहा—रामशपथ सुनिमुनिजनक, सकुचेसभासमेत ॥
सकल विलोकहिं भरत मुख, बनै न उत्तरदेत ॥ २९३ ॥

सभा सकुच वश भरत निहारी ❀ रामबन्धु धरि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा ❀ बढतविन्ध्यजिमि घटज निवारा ॥
शोक कनक लोचन मति क्षोनी ❀ हरी विमल गुण गण जगयोनी ॥
भरत विवेक वराह विशाला ❀ अनायास उधरे तेहि काला ॥
करि प्रणाम सब कहँ करजोरी ❀ राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
क्षमब आजु अति अनुचित मोरा ❀ कहउँ वदन मृदुवचन कठोरा ॥
हिय सुमिरी शारदा सुहाई ❀ मानसते मुख पंकज आई ॥

---

१ अन्धकार । २ सूर्यनारायण । ३ चकई-चकवा । ४ वसिष्ठजी ।

विनय विवेक धर्मनयशाली ❀ भरत भारती मंजु मराली ॥
दो०-निरखि विवेक विलोचनहिं, शिथिलसनेहसमाज ॥
करि प्रणामबोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥२९४॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी ❀ पूज्य परम हित अन्तरयामी ॥
सरल सुसाहिब शील निधानू ❀ प्रणतपाल सर्वज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागत हितकारी ❀ गुणग्राहक अघ अवगुण हारी ॥
स्वामि गुसाइँहिं सदृश गुसाँई ❀ मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई ॥
प्रभु पितु वचन मोहवश पेली ❀ आयउँ इहाँ समाज सकेली ॥
जगभल पोच ऊँच अरु नीचू ❀ अमी अमरपद माहुरमीचू ॥
रामरजाय मेटि मन माहीं ❀ देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सोमैं सब विधि कीन्ह ढिठाई ❀ प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दोहा-कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भलमोर ॥
दूषणभे भूषण सरिस, सुयश चारु चहुँ ओर ॥२९५॥
राउर रीति सुवाणि बड़ाई ❀ जगत विदित निगमागम गाई ॥
क्रूरकुटिलखल कुमति कलंकी ❀ नीच निशील निरीश निशंकी ॥
तेउ सुनि शरण सामुहे आये ❀ सकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने ❀ सुनि गुण साधु समाज बखाने ॥
को साहेब सेवकहि नेवाजी ❀ आपु समान साज सब साजी ॥
निज करतूति न समुझिय सपने ❀ सेवक सकुच शोच उर अपने ॥
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी ❀ भुजा उठाइ कहौं प्रणरोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना ❀ गुण गति नट पाठक आधीना ॥
दोहा-यों सुधारि सन्मानि जन, कियेसाधु शिरमोर ॥
कोकृपाल विनु पालिहै, बिरुदावलि बरजोर ॥ २९६ ॥
शोक सनेह कि बाल स्वभाये ❀ आयसु लाइ रजायसु पाये ॥
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा ❀ सबहिं भाँति भल मानेहु मोरा ॥
देखेउँ पाँइ सुमंगल मूला ❀ जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥

१ मोती। २ वाणी-सरस्वती।

बड़े समाज विलोकेउँ भागू ❀ बड़ी चूक साहिब अनुरागू ॥
कृपा अनुग्रह अंग अघाई ❀ कीन्ह कृपानिधि सबअधिकाई॥
राखा मोर दुलार गुसाँई ❀ अपने शील स्वभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई ❀ स्वामि समाज सँकोच विहाई ॥
अविनय विनय यथारुचि वानी ❀ क्षमिय देव अति आरति जानी॥

दोहा—सुहृदसुजान सुसाहिबहि,बहुतकहबबाड़िखोरि ॥
आयसु देइय देव अब, सबै सुधारिय मोरि ॥ २९७ ॥

प्रभुपद पद्म पराग दुहाई ❀ सत्य सुकृत सुखसीम सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपनेकी ❀ रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई ❀ स्वारथ छल फल चारि विहाई ॥
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा ❀ सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
असकहि प्रेम विवशभे भारी ❀ पुलक शरीर विलोचन वारी ॥
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई ❀ समय सनेह न सो कहिजाई ॥
कृपासिन्धु सन्मानि सुवाणी ❀ बैठाये समीप गहि पाणी ॥
भरत विनय सुनि देखि स्वभाऊ ❀ शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

छंद—रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी ॥
मनमहँ सराहत भरत भायप भक्तिकी महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध वर्षत सुमनमानस मलिनसे ॥
तुलसीविकलसबलोगसुनिसकुचेनिशाँगमनलिँनसे१३

सो०—देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ॥
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥ १२ ॥

कपट कुचालि सीम सुरराजू ❀ पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥
काक समान पाकरिपु रीती ❀ छली मलीन न कतहुँ प्रतीती ॥
प्रथम कुमति करि कपट सकेला ❀ सो उचाट सब के शिरमेला ॥
सुरमाया सब लोग विमोहे ❀ राम प्रेम अतिशय न विछोहे ॥
भय उचाट सब मन थिर नाहीं ❀ क्षण वन रुचिक्षणसदनसुहाहीं ॥

१ नेत्र। २ जल। ३ रात्रि। ४ कमल। ५ इन्द्र। ६ यज्ञ—वासव।

द्विविध मनोगति प्रजा दुखारी ❀ सरित सिंधु संगम जिमिवारी ॥
दुचित कतहुँ परितोष[1] न लहहीं ❀ एकएकसन मर्म[2] न कहहीं ॥
लखि हिय हँसि कहकृपानिधानू ❀ सरिस श्वान मघवा करवानू ॥
दोहा-भरत जनक मुनिगणसचिव,साधुसचेतविहाइ॥
लगी देवमाया सबहिं, यथायोग्य जन पाइ ॥२९८॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ❀ निज सनेह सुरपति छल भारे ॥
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री ❀ भरत भक्ति सबकी मति यंत्री ॥
रामहि चितवत चित्र लिखेसे ❀ सकुचत बोलत वचन सिखेसे ॥
भरत प्रीति नित विनय बडाई ❀ सुनत सुखद वर्णत कठिनाई ॥
जासु विलोकि भक्तिलवलेशू ❀ प्रेम मगन मुनिगण मिथिलेशू ॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी ❀ भक्तिप्रभाव सुमति हियहुलसी॥
आपु छोट महिमा बडिजानी ❀ कविकुलकानि मानि सकुचानी॥
कहि नसकत गुणरुचि अधिकाई ❀ मतिगति बाल वचनकी नाई ॥
दो.-भरतविमलयशविमलविधु[3], सुमतिचकोरकुमारि ॥
उदित विमल जन हृदय नभ, इकटक रहीनिहारि२९९॥
भरत स्वभाव न सुगम निगमहू ❀ लघुमति चापलता कवि क्षमहू ॥
कहत सुनत सतिभाव भरतको ❀ सीय राम पद होइ न रतको ॥
सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको ❀ज्यहिनसुलभत्यहिसमनवामको॥
देखि दयालु दशा सबहीकी ❀ राम सुजान जानि जनजीकी ॥
धर्मधुरीण धीर नयनागर ❀ सत्य सनेह शील सुखसागर ॥
देश[4] काल लखि समय समाजू ❀ नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
बोले वचन वाणि सरवससे ❀ हित परिणामसुनतशशिरससे॥
तात भरत तुम धर्मधुरीणा ❀ लोक वेद विधि परम प्रवीणा ॥
दोहा-कर्म वचन मानस विमल, तुमसमानतुमतात ॥
गुरु समाज लघुबन्धुगुण,कुसमयकिमिकहिजात३००

१ संतोष । २ भेद । ३ निर्मलचन्द्र । ४ देश कही श्रीचित्रकोट वन अरु इहाँ काल कही जिसमें सर्व जीवकर हितकारहोइ अरु समय कही जो भरतजी आयसुमांगैहैं त्यहिके अनुकूल अरु समाज कही सबके दुःख निवृत्ति हेतु ।

जानहु तात तरणि कुलरीती ❀ सत्यसिन्धु पितु कीरतिकीती॥
समय समाज लाज गुरुजनकी ❀ उदासीन हित अनहित मनकी ॥
तुमहिं विदित सबहीकर मरमू ❀ आपन मोर परमहित धरमू ॥
मोहिं सब भांति भरोस तुम्हारा ❀ तदपि कहौं अवसर अनुसारा ॥
तात तात बिनु बात हमारी ❀ केवल कुलगुरु कृपा सम्हारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू ❀ हमहिं सहित सब होत दुखारू ॥
जो बिनु अवसर अथवदिनेशू ❀ जग केहि कहौ न होइ कलेशू ॥
तस उत्पात तात विधि कीन्हा ❀ मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा ॥

दोहा-राज काज सबलाजपति, धर्मधरणि धन धाम॥
गुरुप्रभावपालिहिसबहि, भलहोइहि परिणाम॥३०१॥

सहित समाज तुम्हार हमारा ❀ घर बन गुरु प्रसाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू ❀ सकल धर्म धरणीधर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू ❀ तात तरणि कुलपालक होहू ॥
साधन एक सकल सिधि देनी ❀ कीरति सुगति भूतिमय वेनी ॥
सो विचारि सहि संकट भारी ❀ करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥
बाँटि विपति सबही मिलिभाई ❀ तुमहिंअवधिभरिअतिकठिनाई॥
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा ❀ कुसमय तात न अनुचित मोरा॥
होहिं कुठाँव सुबन्धु सुहाये ❀ ओडिय हाथ अशनिके घाये ॥

दोहा-सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहिब होइ ॥
तुलसी प्रीतिकि रीति सुनि,सुकवि सराहहिं सोइ३०२

सभा सकल सुनि रघुवर बानी ❀ प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी ॥
शिथिल समाज सनेह समाधी ❀ देखि दशा चुप शारद साधी ॥
भरतहिं भयउ परम संतोषू ❀ सन्मुख स्वामि विमुख दुखदोषू॥
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ❀ भा जनु गूँगहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी ❀ बोले पाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको ❀ लह्यउ लाभ जगजन्म भयेको ॥
अब कृपालु जस आयसु होई ❀ करौं शीश धरि सादर सोई ॥

सो अवलंब देव म्वहिं देई ❀ अवधि पार पावउँ जेहि सेई ॥
दोहा-देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुशासन पाइ ॥
आन्यउँसबतीरथसलिल,त्यहिकहँकाहरजाइ॥३०३॥
एक मनोरथ बड मन माहीं ❀ सभय सकोच जात कहि नाहीं ॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई ❀ बोले वाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट मुनि थल तीरथ वन ❀ खग मृग सरसरिनिर्झरगिरिगन ॥
प्रभु पद अंकित अवँनि विशेषी ❀ आयसु होय तो आवों देखी ॥
अवशि अत्रि आयसु शिर धरहू ❀ तात विगत भय कानन चरहू ॥
मुनि प्रसाद वन मंगलदाता ❀ पावन परम सोहावन भ्राता ॥
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं ❀ राखेहु तीरथ जल थल तेहीं ॥
सुनि प्रभुवचन भरत सुख पावा ❀ मुनिपदकमलमुदितशिरनावा ॥
दोहा-भरत राम संवाद सुनि, सकल सुमंगलमूल ॥
सुरस्वारथी सराहि कुल, हर्षित वर्षहिं फूल ॥ ३०४ ॥
धन्य भरत जय राम गुसांई ❀ कहत देव हर्षित बरिआई ॥
सुनि मिथिलेश सभा सब काहू ❀ भरत वचन सुनि भयउ उछाहू ॥
भरत राम गुण ग्राम सनेहू ❀ पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू ॥
सेवक स्वामि स्वभाव सुभावन ❀ नेम प्रेम अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे ❀ सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत संवादू ❀ दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू ॥
राममात दुख सुख सम जानी ❀ कहि गुण दोष प्रबोधी रानी ॥
एक करहिं रघुवीर बड़ाई ❀ एक सराहत भरत भलाई ॥
दोहा-अत्रि कह्यउ तब भरतसन, शैल समीप सुकूप ॥
राखिय तीरथ तोय तहँ, पावन अमल अनूप ॥ ३०५ ॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई ❀ जलभाजन सब दिये चलाई ॥
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू ❀ सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुण्य थल राखा ❀ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥

१ चौदहवर्ष । २ आज्ञा । ३ पृथ्वी । ४ पानी । ५ उपमारहित । ६ आज्ञा । ७ वर्तन ।

तात अनादिसिद्धि थल येहू ❀ लोप्यउ काल विदित नहिं केहू ॥
तब सेवकन्ह सरस थल देखा ❀ कीन्ह सुजल हित कूप विशेषा ॥
विधिवश भयउ विश्व उपकारू ❀ सुगम अगम अति धर्म विचारू ॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा ❀ अति पावन तीरथ जल योगा ॥
प्रेम समेत निमज्जहिं प्राणी ❀ होइहि विमल कर्म मन वाणी ॥

दोहा–कहत कूप महिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ ॥
अत्रि सुनायहु रघुवरहि, तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥३०६॥

कहत धर्म इतिहास सप्रीती ❀ भयउ भोर निशि सो सुखबीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई ❀ राम अत्रि गुरु आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सब सादे ❀ चले राम वन अटन पयादे ॥
कोमल चरण चलत विनु पनहीं ❀ भै मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं ॥
कुश कंटक कांकरी कुराई ❀ कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे ❀ बहत समीर[३] त्रिविध सुखलीन्हे ॥
सुमन[४] वर्षि सुर घन करि छाहीं ❀ विटप[५] फूलि फलदल मृदुताहीं ॥
मृग[६] विलोकि खग[७] बोलि सुवानी ❀ सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

दोहा–सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहुँ, रामकहतज सुहात ॥
रामप्राण प्रिय भरत कहँ, यह नहोइ बड़िबात ॥३०७॥

इहि विधि भरत फिरत वनमाहीं ❀ नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुण्य जलाशय भूमि विभागा ❀ खग मृग तरुतृणगिरिवनबागा ॥
चारु विचित्र पवित्र विशेषी ❀ बूझत भरत दिव्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदितकहतऋषिराऊ ❀ हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा ❀ कतहुँविलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई ❀ सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि स्वभाव सनेह सुसेवा ❀ देहिं अशीश मुदित वनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढाई ❀ प्रभुपद कमल विलोकहिं आई ॥

दोहा–देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ॥

१ बडाई। २ कोमल। ३ वायु शीतल, मंद सुगंध सहित। ४ पुष्प। ५ पेड। ६ हरिण। ७ पक्षी।

कहत सुनतहरिहरसुयश, गयउदिवसभइसाँझ ३०८॥
ओर न्हाइ सब जुरा समाजू ❀ भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भलदिन आजु जानि मनमाहीं ❀ रामकृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी ❀ सकुचिरामफिरिअवनिविलोकी॥
शील सराहि सभा सब शोची ❀ कहुँ न रामसम स्वामि सकोची ॥
भरत सुजान रामरुख देखी ❀ उठि सप्रेम धरि धीर विशेषी ॥
करि दण्डवत कहत करजोरी ❀ राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
म्वहिंलगि सबहिं सहेउ संतापू ❀ बहुत भाँति दुख पावा आपू ॥
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई ❀ सेवों अवध अवधि लगि जाई ॥
दोहा–जेहि उपाय पुनि पाँय जन, देखै दीनदयालु ॥
सो शिष देइय अवधिलगि, कोशलपालकृपालु॥३०९॥
पुरजन परिजन प्रजा गुसाईं ❀ सब शुचि सरस सनेह सगाईं ॥
राउँरवदि भल भव दुख दाहू ❀ प्रभु विनु वाँदि परमपद लाहू ॥
स्वामि सुजान जानि सबहीकी ❀ रुचि लालसा रहनि जनजीकी ॥
प्रणतपाल पालहिं सब काहू ❀ देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू ॥
असम्वहिं सब विधि भूरिभरोसो ❀ किये विचार न शोच खरोसो ॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू ❀ दुहुँमिलि कीन्ह ढीठ हठिमोहू॥
यह बड दोष दूरि करि स्वामी ❀ तजि सकोचशिखइयअनुगामी॥
भरत विनय सुनि सबहिं प्रशंसा ❀ क्षीरनीर विवरण गति हंसा ॥
दोहा–दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छलहीन ॥
देश काल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन ॥३१०॥
तात तुम्हारि मोरि परिजनकी ❀ चिन्ता गुरुहिं नृपहिंघरवनकी ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू ❀ हमहिं तुमहिं स्वपेहु न कलेशू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ❀ स्वारथ सुयश धर्म परमारथ ॥
पितु आयसु पालिय दोउ भाई ❀ लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मातुस्वामिशिख पाले ❀ चलत सुगम पग परत न खाले ॥

१ पृथ्वी । २ दुःख । ३ आपके हैकै । ४ वृथा । ५ सेवक ।

असविचारि सब शोच विहाई ❀ पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देश कोष पुरजन परिवारू ❀ गुरुपद रजहिं लागि छरभारू ॥
तुम मुनि मातु सचिवशिखमानी ❀ पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥
दोहा—मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक ॥
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥३११॥
राजधर्म सरवस इतनोई ❀ जिमि मन माँहि मनोरथ गोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❀ बिनु अधार मन तोष न शांती ॥
भरत शील गुरु सचिव समाजू ❀ सकुच सनेह विवश रघुराजू ॥
प्रभुकरि कृपा पाँवरी दीन्ही ❀ सादर भरत शीश धरि लीन्ही ॥
चरणपीठ करुणानिधानके ❀ जनु युग याँमिक प्रजाप्राणके ॥
सम्पुट भरत सनेह रतनके ❀ आखर युग जनु जीव जतनके ॥
कुल कपाट कर कुशल कर्मके ❀ विमल नयन सेवा सुधर्मके ॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते ❀ अस सुख जस सिय राम रहेते ॥
दोहा—माँग्यउ बिदा प्रणाम करि, राम लिये उरलाय ॥
लोग उचाटे अमरपति, कुटिलकुअवसरपाय ॥३१२॥
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी ❀ अवधि आश सब जीवन जीकी ॥
नतरु लषण सिय राम वियोगा ❀ हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
राम कृपा अवरेव सुधारी ❀ विबुधधार भइ गुणद गोहारी ॥
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो ❀ राम प्रेम रस कहि न परत सो ॥
तन मन वचन उमँगि अनुरागा ❀ धीर धुरंधर धीरज त्यागा ॥
वारिज लोचन मोचत वारी ❀ देखि दशा सुर सभा दुखारी ॥
मुनिगण गुरुजन धीर जनकसे ❀ ज्ञान अनल मन कसे कनकसे ॥
जे विरंचि निर्लेप उपाये ❀ पद्मपत्र जिमि जग जलजाये ॥
दोहा—तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार ॥
भये मगन तन मनवचन, सहितविरागविचार ॥३१३॥
जहाँ जनक गुरुगति मति भोरी ❀ प्राकृत प्रीति कहतबडखोरी ॥

१ कार्य। ३ पृथ्वी। २ खडाऊं। ४ पहरुवा-चौकीदार। ५ डब्बा। ६ विक्षेप। ७ माया।

वर्णत रघुवर भरत वियोगू ❀ सुनिकठोरकवि जानिहि लोगू ॥
सो सकोचवश अकथ सुवानी ❀ समयसनेह सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुवर समुझाये ❀ पुनि रिपुदमन हर्षि हियलाये ॥
सेवक सचिव भरत रुख पाई ❀ निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुणदुख दुहूँ समाजा ❀ लगे चलनके साजन साजा ॥
प्रभुपदपद्म वन्दि दोउ भाई ❀ चले शीश धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस वन देव निहोरी ❀ सब सनमान बहोरि बहोरी ॥
दोहा-लषणहिं भेंटिप्रणामकरि, शिरधरिसियपदधूरि॥
चलेसप्रेमअशीषसुनि, सकल सुमंगल मूरि ॥३१४॥
सानुज राम नृपहिं शिरनाई ❀ कीन्ही बहु विधि विनय बडाई ॥
देव दया वश बड दुख पायहु ❀ सहित समाज काननहिं आयहु ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा ❀ कीन्ह धीर धरि गमन महीशा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने ❀ बिदाकिये हरि हर सम जाने ॥
सासु समीप गये दोउ भाई ❀ फिरे वन्दि पद आशिष पाई ॥
कौशिक वामदेव जाबाली ❀ परिजन पुरजनसचिव सुचाली ॥
यथायोग्य करि विनय प्रणामा ❀ बिदाकिये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे ❀ सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥
दोहा-भरतमातुपद वन्दि प्रभु, शुचि सनेहमिलिभेंट॥
बिदाकीन्ह सजिपालकी, सकुचि शोच सबमेट॥३१५॥
परिजन मातु पितहिमिलिसीता ❀ फिरी प्राणप्रिय प्रेम पुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटी सब सासू ❀ प्रीति कहत कविहिय न हुलासू॥
सुनि शिख अभिमतआशिषपाई ❀ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई ❀ करि प्रबोध सब मातु चढाई ॥
बारबार हिलि मिलि दोउ भाई ❀ सम सनेह जननी पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज वाहन नाना ❀ भूप भरत दल कीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय लषण समेता ❀ चले जाहिं सब लोग अचेता ॥

१ शत्रुघ्न । २ राजाजनक । ३ निकट । ४ पटाम्बरजडावनते जटित ।

बसइ बाजि गज पशु हिय हारे ❀ चले जाहिं परवश मन मारे ॥
दोहा-गुरु गुरुतियपद बन्दिप्रभु, सीता लषण समेत॥
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्णनिकेत ॥ ३१६ ॥
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू ❀ चलेउ हृदय बड बिरहविषादू॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी ❀ फेरे फिरे जुहारि जुहारी ॥
प्रभु सिय लषण बैठि वट छाहीं ❀ प्रिय परिजन वियोगबिलखाहीं॥
भरत सनेह स्वभाव सुवानी ❀ प्रिया अनुजसन कहतबखानी॥
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी ❀ श्रीमुख राम प्रेमवश वरणी ॥
तेहि अवसर खग मृग जनमीना ❀ चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
विबुध विलोकि दशा रघुवरकी ❀ वर्षिसुमन कहिगतिघरघरकी ॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो ❀ चले मुदित मन डर नखरोसो॥
दोहा-सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्णकुटीर ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर ॥ ३१७ ॥
मुनि महिसुर गुरु भरतभुआलू ❀ राम विरह सब साज विहालू ॥
प्रभुगुण ग्राम गुणत मन माहीं ❀ सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
यमुना उतरि पार सब भयऊ ❀ सोवासर बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू ❀ रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये ❀ चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनकरहे पुर बासर चारी ❀ राज काज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू ❀ तिरहुत चले साजि सब साजू ॥
नगर नारि नर गुरुशिख मानी ❀ बसे सुखेन राम रजधानी ॥
दोहा-राम दरशहित लोग सब, करत नेम उपवास ॥
तजि तजिभूषणभोगसुख, जियतअवधिकीआश ३१८
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे ❀ निज निज काज पाइ शिखशोधे॥
पुनि शिख दीन्ह बोलि लघुभाई ❀ सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत करजोरे ❀ करि प्रणाम वर विनय निहोरे॥

१ बैल। २ चारदिन।

ऊंच नीच कारज भल पोचू ❀ आयसु देव न करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये ❀ समाधान करि सुवश बसाये ॥
सानुज गे गुरु गेह बहोरी ❀ करि दण्डवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा ❀ बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम सोई ❀ धर्मसार जग होइहि जोई ॥
दो.-मुनिशिखपाइअशीशबडि, गणंकबोलिदिनसाधि ॥
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि ॥ ३१९ ॥
राममातु गुरु पद शिरनाई ❀ प्रभु पद पीठि रजायसु पाई ॥
नंदिग्राम करि पर्णकुटीरा ❀ कीन्ह निवास धर्मधुरधीरा ॥
जटाजूट शिर मुनि पट धारी ❀ महि खनि कुश साथरी सँवारी ॥
अशन बसन आसन व्रत नेमा ❀ करत कठिन ऋषि धर्म सप्रेमा ॥
भूषण वसन भोग सुख भूरी ❀ मन तन वचन तजे तृणतूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं ❀ दशरथ धन लखि धनद लजाहीं ॥
तेहि पुर बसत भरत बिनुरागा ❀ चंचेरीक जिमि चम्पकबागा ॥
रमाविलास राम अनुरागी ❀ तजत वमन जिमि नरबडभागी ॥
दोहा-राम प्रेम भाजन भरत, बडो न यह करतूति ॥
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति ॥ ३२० ॥
देह दिनहिं दिन दूबरि होई ❀ बढत तेज बल मुख छवि सोई ॥
नित नव राम प्रेम प्रणपीना ❀ बढत धर्म दल मन न मलीना ॥
जिमिजलनिघटतशरदप्रकाशे ❀ विलसत बेत सुवनज विकाशे ॥
शम दम संयम नेम उपासा ❀ नखतभरतहियविमलअकाशा ॥
ध्रुवविश्वास अवधि राकासी ❀ स्वामि सुरति सुर वीथिविकासी ॥
राम प्रेमविधु अचल अदोषा ❀ सहित समाज सोह नित चोखा ॥
भरत रहनि समुझनि करतूती ❀ भक्ति विरति गुण विमल विभूती ॥
वर्णत सकल सुकवि सकुचाहीं ❀ शेष गणेश गिरा गम नाहीं ॥
दोहा-नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति ॥

१ ज्योतिषी । २ भौंरा । ३ अधिक-मन । ४ कमल । ५ निर्मल । ६ चन्द्र । ७ वाणी । ८ खडाऊं.

माँगिमाँगिआयसु करत, राजकाज बहु भाँति ॥३२१॥
पुलकगात हिय सिय रघुबीरू ❀ जीह नाम जपि लोचन नीरू ॥
लषण राम सिय कानन बसहीं ❀ भरत भवनबसि तपतनु कसहीं ॥
दुहुँदिशि समुझि कहत सबलोगू ❀ सबविधि भरत सराहन योगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं ❀ देखि दशा मुनिराज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरणू ❀ मधुर मंजु मृदु मंगल करणू ॥
हरण कठिन कलिकलुष कलेशू ❀ महामोह निशि दलन दिनेशू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ❀ शमन सकल सन्ताप समाजू ॥
जनरंजन भंजन भवभारू ❀ राम सनेह सुधाकर सारू ॥
छंद–सियरामप्रेमपियूष पूरण होत जन्म न भरतको॥
मुनिमनअगमयमनियमशमदम विषमव्रतआचरतको
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयशमिस अपहरतको ॥
कलिकालतुलसीसेशठहिहठि राम सन्मुखकरतको १४
सो०–भरतचरित करिनेम, तुलसी जे सादर सुनहिं ॥
सीय राम पदप्रेम, अवशि होइ भवरस विरति॥१३॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतअयोध्याकांडे
द्वितीयःसोपानःसमाप्तः ॥ २ ॥



१ वन । २ सूर्य्यनारायण । ३ हाथी । ४ सिंह ।



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-



आरण्यकाण्डम् ३.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित ।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

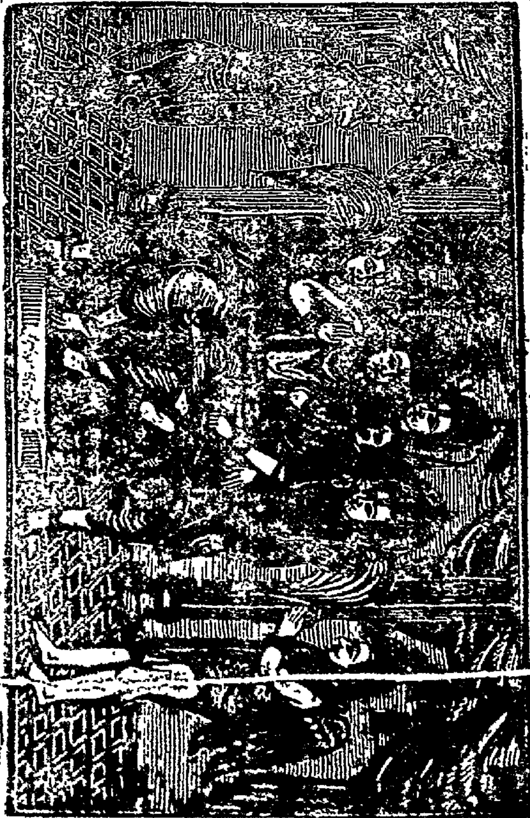
खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया.

❁ श्रीरामपंचायतन ❁



❁ आरण्यकाण्डम् ❁

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुन, जगतपूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुबीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥



चौ०—इहि कलि काल न साधन दूजा। योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रामायण आरण्यकाण्डम् ।

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

श्लोक-मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघहरं ध्वान्तापहं तापहम्।
मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौ खे संभवंशंकरं
वन्देब्रह्मकुलंकलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥१॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेनसंशोभितं
सीतालक्ष्मण संयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे॥२॥
सो०-उमाराम गुण गूढ, पण्डित मुनि पावहिं विरति ॥
पावहिं मोह विमूढ, जे हरिविमुख न धर्मरति ॥ १ ॥
पुरजन भरत प्रीति मैं गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥

श्लोकार्थ-जो धर्म वृक्षके मूल विवेक समुद्रके आनंद करनेवाले पूर्णचंद्र वैराग्य कमलके खिलानेको सूर्य पापके हरनेवाले अंधकारके हरनेवाले त्रिविधताप हारक मोहरूपी वादल समूहोंके तोडनेको पवनरूप ब्रह्म कुलके कलंकके नाशक श्रीराम भूपके प्यारे वा जिन्हैं रामभूप प्यारे हैं ऐसे शंकर की मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥ जलभरे वादलके समान जिनका शरीर पीताम्बर धारणकिये सुंदर हाथमें धनुष वाण कमरमें बाणोंसे भरा तरकस शोभायमान कमलके समान बडे बडे नेत्रवाले शिरपर जटाजूट शोभित सीता लक्ष्मण संयुक्त मार्गमें प्राप्त आनंददायक रामको मैं भजताहूं ॥ २ ॥

अब प्रभुचरित सुनो अतिपावन ❀ करतजो वनसुर मुनिमनभावन ॥
एकवार चुनि कुसुम सुहाये ❀ निजकर भूषण राम वनाये ॥
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर ❀ बैठे फटिक शिला परभाधर ॥
"करहिं प्रकाश प्रास मणि झारी ❀ रही छिटक पूनो उजियारी ॥
तेहि निशि नारि जयन्ताकेरी ❀ आई तहँले सुसखि वनेरी ॥
रघुपतिरूप विलोकि जुडानी ❀ नृत्य गान कीन्हो कलवानी ॥
मन भावत वर माँग सिधाई ❀ सो सुधि कतहुँ जयन्ते पाई" ॥
सुरपति सुत धरि वायस वेषा ❀ शठ चाहत रघुपति वल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ❀ महामन्दमति पावन चाहा ॥
सीताचरण चोंच हति भागा ❀ मूढ मन्दमति कारण कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ❀ सींक धनुष सायक सन्धाना ॥
दोहा-अति कृपालु रघुनायक, सदा दीनपर नेह ॥
तासन आइ सु कीन्ह छल, मूरख अवगुण गेह ॥ १ ॥
विन अपराध प्रभु हतैं न काहू ❀ अवसर परे ग्रसै जनि राहू ॥
जब प्रभु लीन्हसींक धनु वाना ❀ क्रोध जानिभा अनल समाना ॥
प्रेरित मंत्र ब्रह्मशर धावा ❀ चला भाजि वायस भयपावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं ❀ रामविमुख राखा तिन नाहीं ॥
भानिराश उपजी हिय त्रासा ❀ यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा ॥
ब्रह्मधाम शिवपुर सवलोका ❀ फिरा अमित व्याकुलभयशोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही ❀ राखिको सकै रामकर द्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु शमन समाना ❀ सुधा होइ विष सुनु हरियाना ॥
मित्र करै शत रिपुकै करणी ❀ ताकहँ विवुध नदी वैतरणी ॥
सव जग ताहि अनलते ताता ❀ जो रघुवीर विमुख सुनु भ्राता ॥
दो०-जिमिजिमिभाजतशक्रसुत, व्याकुलअतिदुखदीन ॥
तिमि तिमि धावत रामशर, पाछे परम प्रवीन ॥ २ ॥

१ पुष्प । २ शोभित । ३ जयंत । ४ चींटी । ५ लोहू । ६ वाण । ७ ब्रह्मगुणकापर । ८ जोवाण ब्रह्माकी सृष्टिभरेमें विकलकरे । ९ यम । १० अमृत । ११ गरुड । १२ अग्नि ।

बचहि उरग बरु ग्रसे खगेशा। ❀ रघुपति शर छुटि बचब अँदेशा॥
नारद देखा विकल जयन्ता ❀ लागि दया कोमल चित सन्ता॥
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई ❀ भजे जात बहुविधि समुझाई॥
पठवा तुरत रामपहँ ताही ❀ कहसि पुकारि प्रणत हितपाही॥
आतुर सभय गहेसि पदजाई ❀ त्राहि त्राहिं दयालु रघुराई॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ❀ मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई॥
निजकृत कर्म जनितफल पायउँ ❀ अब प्रभुपाहिशरणतकिआयउँ॥
सुनि कृपालु अति आरत बानी ❀ एक नयन करि तजा भवानी॥

सो०–कीन्हमोहवशद्रोह, यद्यपि त्यहिकरवधउचित॥
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, को कृपालु रघुवीर सम॥२॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ❀ चरितकरत अति सुधा समाना॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना ❀ होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना॥
सकल मुनिन्हसन बिदा कराई ❀ सीता सहित चले दोउ भाई॥
अत्रीके आश्रम प्रभु गयऊ ❀ सुनत महामुनि हर्षित भयऊ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाये ❀ देखि राम आतुर चलि आये॥
करत दण्डवत मुनि उरलाये ❀ प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाये॥
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❀ सादर निज आश्रम तब आने॥
करि पूजा कहि बचन सुहाये ❀ दिये मूल फल प्रभु मन भाये॥

सो०–प्रभुआसनआसीन, भरि लोचन शोभानिरखि॥
मुनिवर परम प्रवीन, जोरिपाणि अस्तुति करत॥३॥

छंदप्रमाणिका–नमामिभक्तवत्सलं, कृपालु शीलकोमलं
भजामि ते पदाम्बुजं, अकामिनांस्वधामदम्॥
निकामश्यामसुन्दरं, भवाम्बु नाथ मन्दरम्॥
प्रफुल्ल कञ्जलोचनं, मदादि दोष मोचनम्॥१॥

छन्दार्थ॥ आप भक्तवत्सलहैं सुंदर कोमल कृपालु आपका स्वभावहै सोआपको नमस्कार करताहूं कामना रहित स्वजनोंको स्वधामको देनेवाले

१ सर्प। २ दया।

प्रलम्बबाहुविक्रमं, प्रभो प्रमेय वैभवम् ॥
निषंग चापसायकं, धरे त्रिलोकनायकम् ॥
दिनेश वंश मण्डनं, महेश चाप खण्डनम् ॥
मुनीन्द्र सन्त रंजनं, सुरारिवृन्दभंजनम् ॥ २ ॥
मनोजवैरि वन्दितं, अजादिदेव सेवितम् ॥
विशुद्ध बोधविग्रहं, समस्त दुःख तापहम् ॥
नमामि इन्दिरापतिं, सुखाकरं सतां गतिम् ॥
भजे सशक्ति सानुजं, शचीपति प्रियानुजम् ॥ ३ ॥
त्वदंघ्रि मूल जे नरा, भजन्ति हीन मत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे, वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनः सदा, भजंति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्यइन्द्रियादिकं, प्रयांति ते गतिं स्वकाम् ॥ ४ ॥

आपके चरण कमलोंका मैं भजन करताहूं और अत्यंत श्यामसुंदर शरीर भवरूपी समुद्रके मथनेहारे आप मंदरहैं. अधिक फूले कमलके समान आपके नेत्रहैं और आप मद आदि दोषोंके छुडानेवालेहैं ॥ १ ॥ हेप्रभो आपकी लम्बायमान भुजाओंका बल अप्रमेयहै तरकस धनुष बाण धारण किये आप त्रिलोकीके नाथहैं सूर्यवंशके शोभा देनेहारे शिवजीके धनुष तोडनेहारे मुनींद्र संतोंके आनन्ददाता राक्षसोंके समूहोंके मारनेवालेहो ॥ २ ॥ कामदेवके वैरी शिवजी तुमको वंदना करतेहैं. ब्रह्मादिक देव सेवा करतेहै आपका शरीर विशेष शुद्ध ज्ञानरूपीहै सब दोषोंका नाशकारकहैं आप लक्ष्मीके पति सुखकी खान सज्जनोंकी गतिहैं आपको नमस्कारहै जानकी लक्ष्मण सहित आपका भजन करताहूं आप इन्द्रके प्यारे अनुजहैं ॥ ३ ॥ जो मत्सर त्याग करके तुम्हारे चरणकमलोंको भजन करतेहैं वे कुतर्क लहरोंसे संयुक्त भवसागरमें नहीं गिरते और एकांती आपको मुक्तिके लिये हर्षपूर्वक सदा सेवतेहैं सो इंद्रियादि रसोंको त्याग तुम्हारी निजगतिको प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

त्वमेकमद्भुतं प्रभुं, निरीहमीश्वरं विभुम् ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं, तुरीयमेव केवलम् ॥
भजामि भाववल्लभं, कुयोगिनां सुदुर्लभम् ॥
स्वभक्तकल्पपादपं, समस्तसेव्यमन्वहम् ॥ ५॥
अनूपरूपभूपतिं, नतोहमुर्विजापतिम् ॥
प्रसीदमेनमामि ते, पदाब्जभक्तिदेहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं, नरादरेण ते पदम् ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं,त्वदीय भक्ति संयुतम्॥६॥

दोहा–विनती करि मुनि नाइशिर,कह करजोरिबहोरि ॥
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ३ ॥

जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा ❀ बढ़ौ प्रेम चकोर जिमि चन्दा ॥
देखि राम मुनि विनय प्रणामा ❀ विविध भाँति पायउ विश्रामा ॥
अनुसूयाके पदगहि सीता ❀ मिली बहोरि सुशील विनीता ॥
जो सिय सकल लोक सुखदाता ❀ अखिल लोकब्रह्माण्डकि माता ॥
ते पाई सिय मुनिवर भामिनि ❀ सुखी भई कुमुदिन जिमि यामिनि ॥
ऋषिपती मन सुख अधिकाई ❀ आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये ❀ जेनित नूतन अमल सुहाये ॥
जिनहिं निरखि दुख दूरि पराहीं ❀ गरुड देखि जिमि पन्नग जाहीं ॥

तुम एक अद्भुत प्रभु हो और निरीह उद्यम रहित ईश्वर और विभु अर्थात् व्यापक जगत् के गुरु और निरंतर जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थाओंसे भिन्न केवल एकहो आपको भाव प्याराहै आप कुयोगियोंको दुर्लभहो अपने भक्तोंको कल्प वृक्षहो और समस्तलोकको सुंदर सेव्यहो और क्रोधरहित था सनातन हो आपको भजताहूं ॥ ५ ॥ यह जो आपका जानकीपति अनूप भूपरूपहै इसको मैं नमस्कार करताहूं ॥ आप प्रसन्नहोकै मुझे चरणकमलकी भक्तिदो और जो इस स्तोत्रको आदरपूर्वक पढ़ैं वे तुम्हारी भक्तिसहित तुम्हारे पदको निःसंदेह प्राप्तहों ॥ ६ ॥

---

१ अखिलकही समूह लोक एक ब्रह्माण्डकेभीतरहैं ऐसे अनेकब्रह्माण्ड तिनकीमाता। २रात।

दोहा-ऐसे बसन विचित्र सुठि, दिये सीय कहँ आनि ॥
सन्मानी प्रियवचन कहि, प्रीति न जाइ बखानि ॥४॥
कह ऋषिवधू सरल मृदुवानी ❁ नारिधर्म्म कछु व्याज बखानी ॥
मात पिता भ्राता हितकारी ❁ मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥
अमित दानि भर्त्ता वैदेही ❁ अधम सोनारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ❁ आपतिकाल परखिये चारी ॥
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना ❁ अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना ❁ नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा ❁ काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ❁ वेद पुराण सन्त अस कहहीं ॥
दोहा-उत्तम मध्यम नीच लघु, सकलकहौंसमुझाय ॥
आगे सुनहिं ते भवतरहिं, सुनहु सीय चितलाय ॥ ५ ॥
उत्तमके अस बस मनमाहीं ❁ स्वप्नेहु आन पुरुष जगनाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे ❁ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं ❁ सोनिकृष्ट तियश्रुतिअसकहहीं॥
विनु अवसर भयते रहजोई ❁ जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिवंचक परपति रति करई ❁ रौरव नरक कल्प शत परई ॥
क्षण सुख लागि जन्म शत कोटी ❁ दुखनसमझ तेहि समको खोटी॥
विनुश्रम नारि परमगति लहई ❁ पतिव्रत धर्म छाँडि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई ❁ विधवा होइ पाइ तरुणाई ॥
सो०-सहजअपावनि नारि, पतिसेवतशुभगतिलहहिं ॥
यश गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसीहरिहि प्रिय॥४॥
सुनु सीता तव नाम, सुमिर नारि पतिव्रत कराहिं ॥
तोहिं प्राण प्रियराम, कहेहुँ कथा संसारहित ॥ ५ ॥
सुनि जानकी परमसुख पावा ❁ सादर तासु चरण शिरनावा ॥
तबमुनिसनकह कृपानिधाना ❁ आयसुहोइ जाउँ वन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू ❁ सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥

धर्मधुरन्धर प्रभुकी वानी ❀ सुनिसप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥
जासुकृपा अज शिव सनकादी ❀ चहत सकल परमारथवादी ॥
ते तुम राम अकाम पियारे ❀ दीनबन्धु मृदु वचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्रीचतुराई ❀ भजिय तुमहिं सब देव विहाई ॥
जेहि समान अतिशयनहिंकोई ❀ ताकर शील कसन असहोई ॥
केहिविधि कहौं जाहु अबस्वामी ❀ कहहुनाथ तुम अन्तर्यामी ॥
असकहि प्रभुविलोकि मुनिधीरा ❀ लोचन जलबह पुलक शरीरा ॥
छं०-तनु पुलकनिर्भरप्रेमपूरणनयनमुखपंकजदिये ॥
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप काकिये ॥
जप योग धर्म समूहते नर भक्ति अनुपम पावई ॥
रघुवीरचरित पुनीत निशिदिनदासतुलसी गावई॥७॥
दो०-मुनिहुँकिअस्तुतिकीन्हप्रभु, दीन्हसुभगवरदान ॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, जय जय कृपानिधान ॥६॥
"कलिमल शमन दमन मन, राम सुयश सुखमूल ॥
सादर सुनहिं जे ताहिपर, राम रहहिं अनुकूल ॥७॥
सो०-कठिन सुकलिमल कोश, धर्म न ज्ञाननयोगतप ॥
परिहर सकल भरोस, राम भजहिं ते चतुरनर" ॥६॥
मुनि पद कमलनाइ करिशीशा ❀ चले वनहिं सुर नर मुनिईशा ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे ❀ मुनिवर वेष बने अति आछे ॥
उभय बीच सिय सोहहिं कैसी ❀ ब्रह्मजीव बिच माया जैसी ॥
सरिता वन गिरि अवघटघाटा ❀ पति पहिंचानि देहिं वर बाटा ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया ❀ करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया ॥
आश्रम विपुल दीख वनमाहीं ❀ देव सदन तेहि पटतर नाहीं ॥
बहु तडाग सुन्दर अमराई ❀ भाँति भाँति सब मुनिन लगाई ॥
दिव्य विटप वन चहुँदिशि सोहैं ❀ देखत सकल सुरन मन मोहैं ॥

१ शरीरकी सुधि नहीं है। २ पर्वत । ३ मार्ग।

तेहिदिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा ❋ सकलमुनिन्हमिलिकीन्हसुपासा॥
दो०-निज निज आश्रमवेदिका,तिहिपर तुलसिविराज॥
अनुज जानकी सहित तहँ, राजतभे रघुराज॥ ८ ॥
आन सुआसन मुदितमन, पूजि पहुनई कीन्ह ॥
कन्द मूल फल अमिय सम,आनि राम कहँ दीन्ह ॥९॥
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा ❋ जो जिहि भाव सुभग वरदीन्हा ॥
होत प्रभात मुनिन्ह शिरनावा ❋ आशिर्वाद सबहिंसन पावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा ❋ पुनि प्रभु चले सुनहु विहँगेशा ॥
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना ❋ लाँघत चले जाहिं भगवाना ॥
मिला असुर विराध मगुजाता ❋ गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहु काला ❋ वेगवन्त धायउ जिमि व्याला ॥
गगनदेव मुनि किन्नर नाना ❋ तेहि क्षण हृदय हारिभयमाना ॥
तुरतहि सो सीतहि लैगयऊ ❋ राम हृदय कछुविस्मयभयऊ ॥
समुझि हृदय केकयी कुकरणी ❋ कहा अनुज सन बहुविधि वरणी॥
बहुरि लषण रघुवरहि प्रबोधा ❋ पाँचवाण छाँड़े करि क्रोधा ॥
छं०भयेक्रोधलषणसँधानिधनुशरमारितेहिव्याकुलकियो
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शूलले धावंतभयो॥
दो०-जनुकालदण्डकराल धावा विकल सबखगमृगभये
धनुतानिश्रीरघुवंशमणिपुनिकाटितेहिरंजसमकिये ८
बहुरि एक शर मारेउ, पराधरणि धुनिमाथ ॥
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥ १० ॥
ऐसे कहत निशाचर धावा ❋ अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा ॥
तासु तेज शत मरुत समाना ❋ टूटहिं तरु बहु उडहिं पषाना ॥
जीव जन्तु जहँ लगि रहे जेते ❋ व्याकुल भाजिचले सब तेते ॥
आव प्रबल यहि विधि जनु भूधर ❋ होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर ॥
उरग समान जोरि शरसाता ❋ आवतही रघुवीर निपाता ॥

१ गरुड़ २। आकाश। ३ रेणुका। ४ पृथ्वी। ५ वृक्ष। ६ पर्वत। ७ देवता। ८ सर्प।

तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा ❀ देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
तासु अस्थि गाडेउ प्रभुधरणी ❀ देवमुदित मन लखि प्रभुकरणी ॥
सीता आइ चरण लपटानी ❀ अनुज सहित तब चले भवानी ॥
वहाँ शक्र जहँ मुनि शरभंगा ❀ आये सकल देव मुनि संगा ॥
गये कहन प्रभु देन शिखावन ❀ दिशि बल भेद वसत जहँरावन॥

दोहा–सुरपति संशय तिमिरसम,रघुपति तेजदिनेश ॥
रावण जीवन निशा सम, बीते छुटहिं कलेश ॥ ११ ॥

सुनासीर प्रभु तिहिं क्षण देखा ❀ तेजनिधान शुभ्र अति वेषा ॥
तुरंग चारि बल मरुत समाना ❀ रथ रविसम नहिं जायवखाना ॥
क्षिति न परस अन्तर्हित रहई ❀ श्वेतछत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहि प्रियहि कहा समुझाई ❀ सुरपति महिमा गुण प्रभुताई ॥
जिहिं कारण वासव तहँ आये ❀ सो कछु वचन कहन नहिं पाये ॥
बीचहि सुनि आउब प्रभु केरा ❀ कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा ❀ हर्षि सुरेश गयउ निजधामा ॥
प्रभु आये जहँ मुनि शरभंगा ❀ सुन्दर अनुज जानकी संगा ॥

दोहा–देखि राम मुख पंकजहि, मुनिवरलोचन भृंग ॥
सादर पान करत अति, धन्य धन्य शरभंग ॥ १२ ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला ❀ शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउँ विरंचिके धामा ❀ सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिन राती ❀ अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना ❀ कीन्ही कृपा जानि जनदीना ॥
सो कछुदेव न मोर निहोरा ❀ निज प्रणराखेउ जन मन चोरा ॥
तबलगि रहहु दीन हित लागी ❀ जबलगि मिलौंतुम्हैं तनु त्यागी॥
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा ❀ प्रभु कहँदेइ भक्तिवर लीन्हा ॥
यहि विधि सर रचि मुनि शरभंगा ❀ बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा ॥

---

१ हाड । २ इन्द्र । ३ घोड़ा । ४ भ्रमर ।

दोहा-सीता अनुज समेत प्रभु, नीलजलद तनु श्याम॥
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुणरूप श्रीराम॥ १३॥
असकहि योग अग्नि तनु जारा ❋ राम कृपा वैकुण्ठ सिधारा॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ ❋ प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयऊ॥
ऋषि निकाय मुनिवर गति देखी ❋ सुखी भये निज हृदय विशेषी॥
अस्तुति करहिं सकल मुनिवृन्दा ❋ जयति प्रणत हितकरुणाकंदा॥
पुनि रघुनाथ चले वन आगे ❋ मुनिवर वृन्द पुलकि सँग लागे॥
अस्थि समूह देखि रघुराया ❋ पूछा मुनिन्ह लागिअतिदाया॥
जानतहहु का पूँछहु स्वामी ❋ समदर्शी तुम अन्तर्यामी॥
निशिचर निकर सकलमुनिखाये ❋ सुनि रघुनाथनयन जल छाये॥
दोहा-निशिचरहीन करौं मही, भुजउठायप्रण कीन्ह॥
सकलमुनिन्हकेआश्रमन्ह, जाइ जाइ सुखदीन्ह॥ १४॥
मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना ❋ नाम सुतीक्षण रति भगवाना॥
मन क्रम वचन रामपद सेवक ❋ स्वप्नेहुँ आन भरोस न देवक॥
प्रभु आगमन श्रवण सुनि पावा ❋ करत मनोरथ आतुर धावा॥
हेविधि दीनबन्धु रघुराया ❋ मोसे शठ पर करिहहिं दाया॥
सहित अनुज मोहिं राम गुसाईं ❋ मिलिहहिं निज सेवककी नाईं॥
मोरे जिय भरोस दृढ नाहीं ❋ भक्ति न विरति ज्ञान मनमाहीं॥
नहिं सतसंग योग जप यागा ❋ नहिं दृढ चरण कमलअनुरागा॥
एकवानि करुणानिधानकी ❋ सो प्रिय जाके गति न आनकी॥
छं.-सोउपरमप्रियअतिपातकीजिन्हकबहुँप्रभुसुमिरणकर्‌यो
ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हियभर्‌यो॥
जेपद सरोज अनेकमुनि करि ध्यान कबहुँ नआवहीं॥
तेराम श्रीरघुवंश मणि प्रभु प्रेमते सुख पावहीं॥ ९॥
दोहा-पन्नगारि सुनु प्रेम सम, भजन न दूसर आन॥
यह विचारि पुनि पुनि मुनि, करत रामगुण गान॥ १५॥

१ नीलमेघ। २ मुनिसमूह। ३ हाडोंकेढेर। ४ प्रीति। ५ आनकही कर्म धर्म अपर देव अरु चारिउ पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन सबनको भरोस जिनके लेशहू नहीं है। ६ गरुड।

होइहहिं सफल आजुमम लोचन ❀ देखिवदन पंकज भवमोचन ॥
निर्भरप्रेम मगन मुनि ज्ञानी ❀ कहि न जाइ सोदशा भवानी ॥
दिशि अरु विदिशिपंथ नहिंसूझा ❀ कोमैं कहांचलौं नहिं बूझा ॥
कवहुँक फिरि पाछे पुनि जाई ❀ कवहुँक नृत्य करै गुण गाई ॥
अविरल प्रेम भक्ति मुनिपाई ❀ प्रभुदेखहिं तरु ओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुवीरा ❀ प्रकटे हृदय हरण भवभीरा ॥
मुनिमग्रु माँझ अचलहोइ वैसा ❀ पुलक शरीर पनसफल जैसा ॥
तव रघुनाथ निकट चलिआये ❀ देखि दशा निज जनमन भाये॥

सो०-राम सुसहज सुभाव, सेवक दुख दारिद दमन ॥
मुनिसन कह प्रभु आव,उठ उठ द्विज ममप्राण सम७॥

मुनिहिं राम बहुभाँति जगावा ❀जाग न ध्यान जनित सुखपावा॥
भूप रूप तव राम दुरावा ❀ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तव कैसे ❀ विकलदीन फणिमणिविनुजैसे॥
आगे देखि राम तनु श्यामा ❀ सीता अनुज सहित सुखधामा॥
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी ❀ प्रेम मगन मुनिवर बड़भागी ॥
भुजविशाल गहि लिये उठाई ❀ प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई ॥
मुनिहिं मिलतअससोहकृपाला ❀ कनक तरुहि जनु भेंट तमाला॥
राम वदनविलोकिमुनिठाढा ❀ मानहुँ चित्र माँझलिखि काढा॥

दोहा-तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ॥
निज आश्रम प्रभु आनि करि,पूजाविविधप्रकार॥१६॥

कहमुनि प्रभु सुन विनती मोरी ❀ अस्तुतिकरौं कवनविधि तोरी॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रवि सन्मुख खँद्योत उजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं ❀जटा मकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं ❀ नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥
मोह विपिन घनदहन कृशानुं ❀ सन्त सरोरुह कानन भानुं ॥
निशिचर करि वरूथ मृगराजं ❀ त्रातु सदा नो भव खग बाजं ॥

१ कटहरकाफल । २ उत्पन्नहोनेका सुख । ३ जुगनू । ४ लालकमल। ५ पहरे ।

अरुण नयन राजीव सुवेषं ❀ सीता नयन चकोर निशेषं ॥
हर हृद मानस बाल मरालं ❀ नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादं ❀ शमन सकल संताप विषादं ॥
भवभंजन रंजन सुरयूथं ❀ त्रातु सदा नो कृपा वरूथं ॥
निर्गुण सगुण विषम समरूपं ❀ ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं ❀ नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं ❀ तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अतिनागर भवसागर सेतुं ❀ त्रातु सदा दिनकर कुलकेतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं ❀ कलिमल विपुल विभंजन नामं ॥
धर्म्म वर्म्म नर्मद गुण ग्रामं ❀ संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपि विरज व्यापकअविनासी ❀ सबके हृदय निरन्तर वासी ॥
तदपि अनुजसिय सहितखरारी ❀ बसहु मनसि मम काननचारी ॥
जेजानहिं ते जानहु स्वामी ❀ सगुण अगुण उर अन्तरयामी ॥
जोकोशलपति राजिव नयना ❀ करौ सो राम हृदय मम अयना॥

सो०–मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन ॥
तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ ८ ॥

अस अभिमान जाय जनि भोरे ❀ मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
राम भक्ति तजि चह कल्याना ❀ सो नर अधम शृगाल समाना ॥
सुनि सुनि वचन राम मनभाये ❀ बहुरि हर्षि मुनिवर उरलाये ॥
परमप्रसन्न जानि मुनि मोहीं ❀ जोवर माँगु देउँ मैं तोहीं ॥
मुनिकह मैं वर कबहुँ न याँचा ❀ समुझि न परै झूँठ का साँचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई ❀ सो मोहिं देहु दास सुखदाई ॥
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना ❀ होहु सकल गुणज्ञान निधाना ॥
प्रभु जो दीन्ह सोवर मैं पावा ❀ अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दोहा–अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बाण धर राम ॥
ममहिय गगन इन्दु इव, बसहु सदा निष्काम ॥ १७ ॥

१ बख्तर । २ अंतःकरणकी कठोरताके नाश कर्ताहैं किन्तु मदते रहित करदेतेहैं । ३ मायाते रहित । ४ स्थान ।

एवमस्तु कहि रमानिवासा ❀ हर्षि चले कुम्भजऋषि पासा ॥
मुनि प्रणाम करि युग कर जोरी ❀ सुनहु नाथ कछु विनती मोरी ॥
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये ❀ भये मोहिं यहि आश्रम आये ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुरुपाहीं ❀ तुमकहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
चलेजात मग तव पदकंजा ❀ देखिहौं जो विराधमद गंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ❀ लिये संग विहँसे दोउ भाई ॥
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा ❀ मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
आश्रम देखि महा शुचि सुंदर ❀ सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहाँते ❀ वैर न कराहिं प्रीति सबहीते ॥
दोहा-तरु बहु विविध विहंग मृग, बोलत विविध प्रकार ॥
बसहिं सिद्ध मुनितपकरहिं, महिमागुणआगार ॥१८॥
तुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ ❀ करिदण्डवतकहतअस भयऊ ॥
नाथ कोशलाधीश कुमारा ❀ आये मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत वैदेही ❀ निशिदिन देव जपतहहु जेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठि धाये ❀ प्रभु विलोकि लोचन जलछाये ॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई ❀ ऋषि अति प्रीति लिये उरलाई ॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी ❀ आसनपर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा ❀ मोहिं सम भाग्यवन्त नहिं दूजा ॥
जहँ लगि रहे अपर मुनि वृन्दा ❀ हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा ॥
दोहा-मुनि समूह महँ बैठि प्रभु, सन्मुख सबकी ओर ॥
शरदइन्दु जनु चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥१९॥
पाइ सुथल जल हर्षित मीना ❀ पारस पाइ सुखी जिमि दीना ॥
प्रभुहि निरखि सुखभा इहि भाँती ❀ चातक जिमि पाई जलस्वाती ॥
तब रघुवीर कहा मुनिपाहीं ❀ तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम जानहु ज्यहि कारण आयउँ ❀ ताते तात न कहि समुझायउँ ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही ❀ ज्यहि प्रकार मारौं सुर द्रोही ॥
द्विज द्रोही न बचाहिं मुनिराई ❀ जिमि पंकज वन हिमऋतु पाई ॥

मुनि मुसकाने सुनि प्रभु वानी ❀ पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी ❀ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी ॥
सो०-भ्रुकुटी निरखत नाथ, रहतसदापदकमलतर ॥
जिनडारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्धहर ॥ १ ॥
अतिकराल सब पर जग जाना ❀ औरो कहौं सुनिय भगवाना ॥
ऊमरितरु विशाल तव माया ❀ फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
तेफल भक्षक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साँई ❀ पूँछचहु मोहिं मनुजकी नाँई ॥
यह वर मांगों कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय सिय अनुजसमेता ॥
अविरल भक्ति विरति सतसंगा ❀ चरण सरोरुह प्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❀ अनुभवगम्यभजहिंज्याहिसंता ॥
अस तव रूप बखानौं जानौं ❀ फिरिफिरिसगुण ब्रह्मरतिमानौं॥
दोहा-जाहि जीव पर तव कृपा, संतत रहत हुलास ॥
तिनकी महिमा को कहै, जो अनन्य प्रियदास॥२०॥
सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई ❀ ताते मोहिं पूछचहु रघुराई ॥
हेप्रभु परम मनोहर ठाऊं ❀ पावन पंचवटी त्यहिनाऊं ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई ❀ चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई ॥
दंडकवन पुनीत प्रभु करहू ❀ उग्रशाप मुनिवर कर हरहू ॥

❀ एकसमय पंचवटीमें दुर्भिक्ष पडा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषिके पासगये तब गौतमने तप बलसे बहुत कालतक ऋषियोंका पालन किया पश्चात् ऋषियोंने आपसमें विचार किया कि अब जनस्थानको चलना चाहिये परन्तु गौतमके भयसे जा न सके. तब सबोंने छलकरके मायाकृत एक गऊ बनाय गौतमऋषिके हाथमें दे उसकी प्रशंसा करने लगे इसमें वोह हाथसे छूट मरगई तब ऋषि गौतमजीको गोहत्या दोष लगाय दण्डकारण्यको चलेगये जब पीछे गौतमजीने जाना कि, ऋषियोंने छल किया तब यह शाप

१ भौंह। २ गूलरकावृक्ष। ३ जिसमें एक पल चित्तकी वृत्तिमें विक्षेपनपरै।

वास करहु तहँ रघुकुलराया ❀ कीजै सकल मुनिन्हपर दाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई ❀ तुरतहि पंचवटी नियराई ॥
दिव्यलता द्रुम प्रभुमन भाये ❀ निरखि राम ते भयउ सुहाये ॥
लषण राम सिय चरण निहारी ❀ कानन अघ गा भा सुखकारी ॥

दोहा-गृध्रराजसों भेंट भइ, बहुविधि प्रीति दृढ़ाय ॥
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाय ॥ २१ ॥

जबते राम कीन्ह तहँ वासा ❀ सुखी भये मुनि बीते त्रासा ॥
गिरि वन नदी ताल छबि छाये ❀ दिन दिनप्रति अतिहोत सुहाये ॥
खग मृग वृन्द अनन्दित रहहीं ❀ मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ॥
सोवन वरणि नसक अहिराजा ❀ जहाँ प्रगट रघुवीर विराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना ❀ लक्ष्मण वचन कहे छल हीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❀ मैं पूँछौं निज प्रभुकी नाईं ॥
मोहिं समुझाइ कहो स्वइदेवा ❀ सब तजि करहुँ चरण रज सेवा ॥
कहहु ज्ञान विराग अरु माया ❀ कहहु सो भक्ति करहुज्यहिदाया ॥

दोहा-ईश्वर जीवहि भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ ॥
जाते होइ चरणरति, शोक मोह भ्रम जाइ ॥ २२ ॥

थोरेमहँ सब कहौं बुझाई ❀ सुनहु तात मति मन चितलाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया ❀ ज्यहि वश कीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहँलगि मनजाई ❀ सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ ❀ विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥

दिया कि,जिस वनके लोभसे तुमने मुझसे छल किया वोह भ्रष्ट होजाय और राक्षस वासकरैं (दूसरी कथा) राजा दण्डकने अपनी गुरुपुत्री [illegible] तासे भोग किया उसने अपने पिता भृगुमुनिसे कहा तब मुनिने शाप दिया कि इस राजाका सब देश भ्रष्ट होजाय और धूरि वर्षे तब ऋषिलोग वहाँसे भागकर जहाँ बसे वही स्थान जनस्थान कहलाया और रामचंद्रने पवित्र किया तब फूल फल लगे हराहुआ ॥

१ वन । २ भय । ३ पर्वत । ४ शेषनाग । ५ चरणोंमें प्रीति । ६ पांच ज्ञानइन्द्रिय पाँच कर्मइन्द्रिय श्रवण, त्वक्, नयन, रसना, नाशिका, ये पांच ज्ञानइन्द्रिय, पुनि कर, गुदा, लिंग, पग, मुख, ये पाँचकर्मइन्द्रिय ।

एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा ❀ जावश जीव परा भवकूपा ॥
एक रचै जग गुण वश जाके ❀ प्रभु प्रेरित नाहिं निज बल ताके ॥
ज्ञान मान जहँ एको नाहीं ❀ देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम विरागी ❀ तृण सम सिद्धि तीनिगुणत्यागी ॥
दोहा–मायाईश न आपु कहँ, जानि कहै सो जीव ॥
बन्ध मोक्षप्रद सर्व पर, मायाप्रेरक सीव ॥ २३ ॥
धर्म्म ते विरति योग तें ज्ञाना ❀ ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना ॥
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई ❀ सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना ❀ जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला ❀ मिलहि जोसन्त होयँ अनुकूला ॥
भक्तिके साधन कहौं बखानी ❀ सुगम पन्थ मोहिं पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं विप्र चरण अतिप्रीती ❀ निज निज धर्म निरतश्रुतिनीती ॥
यहिकरफल मन विषय विरागा ❀ तव मम चरण उपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव भक्ति दृढाहीं ❀ मम लीला रति अतिमनमाहीं ॥
सन्तचरण पंकज अति प्रेमा ❀ मन क्रम वचन भजन दृढ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बन्धु पतिदेवा ❀ सब मोहिं कहँ जानै दृढ़ सेवा ॥
मम गुण गावत पुलक शरीरा ❀ गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥
कामादिक मद दंभ न जाके ❀ तात निरन्तर वश मैं ताके ॥
दोहा–वचन कर्ममन मोरि गति, भजन करैनिष्काम ॥
तिनके हृदय कमल महँ, करौं सदा विश्राम ॥ २४ ॥
भक्तियोग सुनि अतिसुख पावा ❀ लक्ष्मण प्रभु चरणन्ह शिरनावा ॥
नाथ सुने गत मम सन्देहा ❀ भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा ॥
अनुज वचन सुनि प्रभु मनभाये ❀ हर्षि राम निज हृदय लगाये ॥
इहिविधि गये कछुक दिनबीती ❀ कहत विराग ज्ञान गुणनीती ॥
शूर्पणखा रावणकी बहिनी ❀ दुष्ट हृदय दारुण जिमिअहिनी ॥
पंचवटी सो गइ यक बारा ❀ देखि विकल भइ युगल कुमारा ॥

१ साधन । २ दृढ । ३ श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन । ४ सर्पिणी ।

भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❁ पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइविकल सक मननहिंरोकी ❁ जिमि रविमणि द्रवरविहिंविलोकी ॥
दो०-अधमनिशाचरिकुटिलअति, चलीकरनउपहास ॥
सुनु खगेश भावी प्रबल,भा चह निशिचर नाश ॥२५॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ आई ❁ बोली वचन मधुर मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मोसम नारी ❁ यह सँयोग विधि रचा विचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं ❁ देख्यउँ खोजि लोक तिहुँमाहीं॥
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी ❁ मन माना कछु तुमहिं निहारी॥
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता ❁ अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपु भगिनी जानी ❁ प्रभु विलोकि बोले मृदुवानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा ❁ पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समर्थ कोशलपुर राजा ❁ जो कछु करैं उन्हैं सब छाजा ॥
दोहा-केहरि सम नहिं करिवर,लवा कि बाजसमान ॥
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान ॥ २६ ॥
सेवक सुखचह मान भिखारी ❁व्यसनीधनशुभगतिव्यभिचारी॥
लोभी यश चह चार गुमानी ❁ नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ॥
पुनि फिरि राम निकट सोआई ❁ प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई॥
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई ❁ जो तृण तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसिआनि राम पहँ गई ❁ रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
विथुरे केश वदन विकराला ❁भ्रुकुटीकुटिलकरनलगिगाला ॥
सीतहि सभय देखि रघुराई ❁ कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥
अनुज राम मनकी गति जानी ❁ उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी ॥
दोहा-लक्ष्मण अति लाघव तिहि,नाककानबिनुकीन्ह
ताके कर रावण कहँ, मनहुँ चुनौती दीन्ह ॥ २७ ॥
नाक कान बिनु भइ विकरारा ❁ जनु स्रव शैल गेरु कै धारा ॥
श्याम घटा देखत नभ केरी ❁ तहँ बासव धनु मनहुँ उघेरी ॥
खर दूषण पहँ गइ बिलखाता ❁ धृक धृक तव पौरुषबलभ्राता॥

१ रावणकी बहिन। २ बटेर। ३ अशास्त्र कल्पित गुणकरे। ४ इन्द्रधनुष। ५ हाय।

तेइँ पूंछा सब कहेसि बुझाई ❀ यातुधान सुनि सैन बुलाई ॥
चौदहसहस सुभट सँग लीन्हे ❀ जिन्हसपनेहुँरण पीठ न दीन्हे ॥
धाये निशिचर निकर बरूथा ❀ जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा ॥
नाना वाहन नाना कारा ❀ नाना आयुध धर घोर अपारा ॥
शूर्पणखहि आगे करि लीन्ही ❀ अशुभ रूप श्रुति नासाहीनी ॥

दोहा-निजनिजबलसबमिलिकहहिं,एकहिएकसुनाइ ॥
बाजन बाजु जुझाउने, हर्ष न हृदय समाइ ॥ २८ ॥

अशकुन अमित होहिं भयकारी ❀ गनहिं न मृत्युविवशसवझारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ❀ देखि कटक भट अतिहरषाहीं॥
कोउ कह जियतधरहुदोउ भाई ❀ धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई ॥
कोउ कह सुनौ सत्यहम कहहीं ❀ कानन फिरहिंवीरकोउअहहीं ॥
एके कहा मष्ट है रहहू ❀ खरके आगे अस जनि कहहू ॥
यहि विधि वचन कहत रणधीरा ❀ आये सकल जहाँ रघुवीरा ॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रह्यऊ ❀ राम बुलाइ अनुज सनकह्यऊ ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर ❀ आवा निशिचर कटक भयंकर॥
रह्यउ सजग सुनि प्रभुके वाणी ❀ चले सहितासियशरधनुपाणी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा ❀ विहँसि कठिन कोदण्डचढावा॥

छंद-हरिगीतिका ।

कोदंण्ड कठिन चढाइ प्रभु शिर जटा बाँधत सोहज्यों
मर्कतशयलपर लसतदामिनिकोटिसंयुग भुजँगज्यों॥
कटिकसिनिषंग विशालभुजगहिचापविशिखसुधारिकै
चितवतमनहुँ मृगराजप्रभु गजराज घटानिहारिकै १०

सो०—आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट ॥
यथा विलोकि अकेल, बालरविहि घेरत दनुज ॥ १० ॥

घेरि रहे निशिचर समुदाई ❀ दण्डक खग मृग चले पराई ॥
प्रभु विलोकि शर सकहिंनडारी ❀ थकित भये रजनीचर झारी ॥

१ झुंडकेझुंड। २ अस्त्रशस्त्र। ३ कान। ४ नाक। ५ आकाश। ६ सेना। ७ धनुष। ८ बिजुली। ९ नाग। १० सिंह ११। दैत्य।

सचिव बोलि बोले खर दूषण ❀ यह कोउनृप बालकनरभूषण ॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते ❀ देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई ❀ देखी नाहिं असि सुन्दरताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा ❀ वध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
देहिं तुरत निज नारि पठाई ❀ जीवत भवन जाहिं दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु ❀ तासुवचन सुनि आतुरआवहु ॥

दोहा–भये कालवश मूढ़ सब, जानहिं नहिं रघुवीर ॥
मशक फूंक किमि मेरु[१] उड़,सुनहु गरुड़मतिधीर॥२९॥

दूतन कहा रामसन जाई ❀ सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड़ भाग्य हमारा ❀ तुम्हरेप्रभु अस कीन्ह विचारा ॥
हम क्षत्रिय मृगया[२] वन करहीं ❀ तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं ❀ एक बार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुजकुलघालत ❀ मुनिपालकखलशालकबालक ॥
जो नहो; बल घर फिरि जाहू ❀ समर विमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढि करिय कपट चतुराई ❀ रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ ❀ सुनि खर दूषण उर अति दहेऊ ॥

छं०–उरदहेउकहेउकिधरहुधावहुविकटभटरजनीचरा ।
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशुधरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुटंकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा ॥
भये वधिर[३] व्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहिअवसररहा ॥

दोहा–सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति[४] ॥
लागे वर्षन रामपर, अस्त्र शस्त्र बहुभाँति ॥ ३० ॥
तिन्हके आयुध तृण सम, करि काटे रघुवीर ॥
तानि शरासन[५] श्रवण[६] लगि, पुनि छाँडेनिज तीर ॥३१॥

छंद लीलाबारहमात्रा ।

तब चले बाण कराल, फुंकरत जनु बहु व्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम, चले विशिष निशित[७] निकाम ॥

१पर्व्वत । २ शिकारखेलनेको वनमें आयेहैं । ३ बहिर । ४ शत्रु । ५ धनुष । ६ कान । ७ पैने ।

अवलोकि खरतर तीर, मुरि चले निशिचर वीर ॥
थक एक कहँ न सँभार, कर तात मात पुकार॥ १२ ॥
कोउ कहै खर का कीन्ह, जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल, ग्रसे आइ मानहु काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ, जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि वधब हम निज पानि, फिरे मरण मनमहँ ठानि ॥
दोहा-उमाएक प्रभु दनुजबहु, पुनि इनके बड़भाग ॥
परन चहहिं प्रभु शरलगे, बिना योग जप याग ॥३२॥
छं०-आयुध अनेक प्रकार, सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपेउ जानि, प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छाँड़े विपुल नाराचा, लगे कटन विकट पिशाच ॥
उरशीशकर भुज चरण, जहँ तहँ लगे महि परन१४॥
चिक्करत लागत बान, धर परत कुधर समान ॥
भट कटत तनु शतखंड, पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड, बिनु मौलि धावत रुण्ड॥
खग कंक काक शृगाल, कट कटहिं कठिनकराल१५॥
पु०छं०-कटकटहिं जम्बुकभूतप्रेतपिशाचखप्परसाजहीं
बैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीर बाण प्रचण्ड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा॥
जहँ तहँ परहिं उठिलरहिं धरुधरु करहिंगिरा भयंकरा॥
अंतावली गहि उड़हिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं ॥
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुड़ि उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर विदारे विपुल भट घूमित परे ॥
अवलोकि निजदल विकलभटत्रिशिरादि खर दूषण फिरे

१ बाण । २ मुण्ड-गृध्र । ३ सियार ।

शर शक्ति तोमर परशुं शूलं कृपाणं एकहि बारहीं ॥
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभुनिमिषं महँ रिपुशरनिवारि प्रचारिडारेसायका ॥
दशदशविशिखउरमाँझमारेसकलनिशिचरनायका १८
महिपरतउठिभटभिरतपुनिपुनिकरतमायाअतिघनी
सुरडरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी॥
सुर मुनिसभयप्रभुदेखिमायानाथअतिकौतुककऱ्यो
देखत परस्परराभकरि संग्राम रिपुदललरिमऱ्यो ॥
दोहा–राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान ॥
करि उपाय रिपु मारेउ, क्षणमहँ कृपानिधान॥३३॥
दोहा–हर्षित वर्षहिंसुमन सुर, बाजहिं गगन निसान ॥
अस्तुति करिकरिसबचले,शोभितविविधविमान॥३४॥
जब रघुनाथ समर रिपु जीते ❀ सुर नर मुनि सबके दुख बीते ॥
तब लक्ष्मण सीतहि ले आये ❀ प्रभुपद परत हर्षि उरलाये ॥
सीता निरखि श्याममृदुगाता ❀ परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक ❀ करत चरितसुरमुनिसुखदायकं॥
धुआँ देखि खर दूषण केरा ❀ शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली वचन क्रोध करि भारी ❀ देश कोशकी सुरति बिसारी ॥
करसि पान सोवसि दिनराती ❀ सुधिनहिं तवहि शिरपरआराती ॥
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा ❀ हरिहि समर्पे बिनसतकर्मा ॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये ❀ श्रम फल पढ़े किये अरुपाये ॥
संगते यती कुमंत्र ते राजा ❀ मानते ज्ञान पानते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनु मदते गुनी ❀ नाशहिं वेगि नीति अस सुनी ॥
सो०–रिपुरुजपावकपाप,प्रभुअहिगणियनछोटकरि॥
अस कहि विविधविलाप, पुनिलागीरोदनकरन ॥११॥

१ मुद्गर । फरशा । ३ त्रिशूल । ४ तलवारि । ५ पलमात्रमें । ६ बाण ७ मोह ।
८ मदादिक । ९ मयलशत्रु । १० नम्रता ११ शत्रु । १२ रोग । १३ अग्नि ।

दोहा–सभा माँझ व्याकुल परी, बहु प्रकार करि रोइ ॥
सोहिं जियत दशकन्धर, मोरि कि असगतिहोइ ॥३५॥
सुनत सभासद उठि अकुलाई ❀ समुझाई गहि बाहु बिठाई ॥
कह लंकेश कहसि किन बाता ❀ क्यइँ तव नाशा कान निपाता ॥
अवध नृपति दशरथके जाये ❀ पुरुषसिंह वन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहिं उनकी करणी ❀ रहित निशाचर करिहैं धरणी ॥
जिनकर भुजबल पाइ दशानन ❀ अभय भयेविचरहिंमुनिकानन[1] ॥
देखत बालक काल समाना ❀ परमधीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता ❀ खलवध रत सुर मुनि सुखदाता ॥
शोभाधाम राम अस नामा ❀ तिन्हके सँग इक नारि ललामा ॥
सो०-अतिसुकुमारिपियारि,पटतरयोगनआहिकोउ ॥
मैंमन दीख विचारि, जहँरह तेहि सम आननहिं ॥१२॥
रूपराशि विधि नारि सँवारी ❀ रति शतकोटि तासु बलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखब तुम जबहीं ❀ होइहौ बिकल तासु वश तबहीं ॥
जीवन्मुक्त लोकवश ताके ❀ दशमुख सुनु सुन्दरि अस जाके ॥
तासु अनुज[2] काटी श्रुति नासा ❀ सुनि तव भगिनी करि परिहासा ॥
बिनाचूक असदशा हमारी ❀ अपराधी किमि बचहिं सुरारी ॥
खर दूषण सुनि लाग गुहारा[3] ❀ क्षणमहँ सकल कटक उन मारा ॥
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता ❀ सुनि दशशीश जरा सब गाता ॥
भयो शोचवश नहिं विश्रामा ❀ बीतहिं पल मानहुँ शत यामा ॥
दो०-शूर्पणखहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहुभाँति ॥
भवन गयउ अतिशोच वश,नींदपरी नहिंराति ॥३६॥
सुर नर असुर नाग जग माहीं ❀ मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं ॥
खर दूषण म्वहिं सम बलवन्ता ❀ तिन्हें को मारै विन भगवन्ता ॥
सुर रंजन भंजन महिभारा ❀ जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥
तो मैं जाइ बैर हठ करिहौं ❀ प्रभु शरते भवसागर तरिहौं ॥

१ वनमें । २ लक्ष्मणजीने । ३ टहलू ।

होइ भजन नहिं तामस देहा ❀ मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ एहा ॥
जोनर रूप भूप सुत कोऊ ❀ हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढि ताहाँ ❀ बस मारीच सिंधु तट जाहाँ ॥
रथ अनूप जोरे खरचारी ❀ वेगवन्त इमि जिमि उरगारी ॥
छंद-उरगारि समअतिवेगवर्णतजायनाहिंउपमाकही॥
शिरछत्र शोभित श्यामघन जनु चमर श्वेतविराजही॥
इहि भाँति नाँघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं ॥
वनबागउपवनवाटिकाशुचिनगरमुनि मनमोहहीं२०॥
दोहा-बहुतडाग शुचि विहँग मृग,बोलतविविधप्रकार॥
इहिविधि आयउ सिंधु तट, शतयोजन विस्तार॥३७॥
सुन्दर जीव विविध विधि जाती ❀ करहिं कुलाहल दिनअरुराती॥
कूदहिं ते गर्जहिं घननाई ❀ महाबली बल वरणि नजाई ॥
कनक बालु सुन्दर सुखदाई ❀ बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई ॥
तिहिंपर दिव्य लता तरु लागे ❀ जिहि देखत मुनि मन अनुरागे॥
गुहा विविध विधि रहहिं बनाई ❀ वर्णत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ ऋषिनकर वासा ❀ तहाँ निशाचर करहिं निवासा॥
दशमुख देखि सकल सकुचाने ❀ जे जडजीव सजीव पराने ॥
इहाँ राम जसि युक्ति बनाई ❀ सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
दोहा-लक्ष्मण गये वनहिं जब, लेन मूल फल कन्द ॥
जनकसुतासन बोल्यउ, विहँसि कृपासुखकन्द ॥३८॥
सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला ❀ मैंकछुकरबललितनरलीला ॥
तुम पावक महँ करहु निवासा ❀ जौलगि करौं निशाचर नाशा ॥
जबहिं राम सब कहेउ बखानी ❀ प्रभुपदधरिहियअनलसमानी ॥
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता ❀ तैसेइ शील स्वरूप विनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म नजाना ❀ जोकछु चरित रच्यो भगवाना ॥
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा ❀ नाइमाथ स्वारथ रत नीचा ॥

१ चारसौ कोश। २ शोर। ३ स्वर्ण। ४ वृक्ष।

नमनि नीचकी अति दुखदाई ❀ जिमि अंकुश धनुउरग बिलाई ॥
भयदायक खलकी प्रियवानी ❀ जिमि अकालके कुसुम भवानी॥
दोहा—करि पूजा मारीच तब, सादर पूँछी बात ॥
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयउतात॥ ३९॥
दशमुख सकल कथात्यहिआगे ❀ कही सहित अभिमान अभागे॥
होहु कपट मृग तुम छलकारी ❀ ज्यहि विधि हरिआनौं नृपनारी॥
त्यइँ पुनि कहा सुनहुदशशीशा ❀ तेनर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात वैर नहिं कीजै ❀ मारे मरिय जिआये जीजै ॥
मुनिमख राखन गये कुमारा ❀ विनुफर शररघुपतिमोहिंमारा॥
शतयोजन आयउँ क्षणमाहीं ❀ तिन्हसन वैर किये भलनाहीं ॥
भइ मति कीट भृङ्गकी नाई ❀ जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई ॥
जो नर तात तदपि अतिशूरा ❀ तिनहिं विरोध न आइहि पूरा॥
दोहा—ज्यइँ ताड़कासुबाहुहति, खण्ड्यउहरकोदण्ड॥
खर दूषण त्रिशिरा वध्यउ, मनुजकिअसबलबण्ड४०
रा अस नाम सुनत दशकन्धर ❀ रहत प्राण नहिं ममउरअन्तर॥
जाहु भवन कुल कुशल विचारी ❀ सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी॥
गुरु जिमि मूढ करसि ममबोधा ❀ कहु जग मोहिं समानकोयोधा॥
तब मारीच हृदय अनुमाना ❀ नवहिं विरोधे नहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी ❀ वैद्य वन्दि कवि मानस गुनी ॥
उभयँ भाँति देखा निज मरणा ❀ तब ताकिसि रघुनायक शरणा॥
उतर देत मोहिं वधिहि अभागे ❀ कस न मरौं रघुपति शरलागे॥
अस जिय जानि दशानन संगा ❀ चला रामपद प्रेम अभंगा ॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही ❀ आजु देखिहौं परमसनेही ॥
छंद—निजपरमप्रीतमदेखिलोचनसफलकरि सुखपाइहौं
सिय सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मनलाइहौं
निर्वाण दायक क्रोध जाकर भक्त अवशहिं वश करी॥

१ पुष्प । २ उचाट । ३ रावण । ४ हरिण । ५ जानकीजी । ६ विश्वामित्रकृतयज्ञ । ७ बलिष्ठ । ८ कपटघाती । ९ भाट । १० दोऊदिशिते ।

निजपाणिशरसंधानिसोमोहिंवधहिंसुखसागरहरी २१
दोहा–मम पाछे धर धावत, धरे शरासन बान ॥
फिरि फिरिप्रभुहिंविलोकिहौं,धन्यनमोसमआन॥४१॥
सीता लषण सहित रघुराई ❀ ज्यहि वन बसहिंमुनिन्हसुखदाई॥
तेहि वन निकट दशानन गयऊ ❀ तव मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अतिविचित्र कछु वरणि नजाई ❀ कनकदेह मणिरचित वनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा ❀ अंग अंग सुमनोहर वेषा ॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला ❀ इहि मृगकर अतिसुन्दर छाला ॥
सत्यसंध प्रभु वध करि एही ❀ आनहु चर्म कहति वैदेही ॥
तव रघुपति जाना सब कारण ❀ उठे हर्षि सुरकाज सँवारण ॥
मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा ❀ करतल चाप रुचिर शर साँधा ॥
प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई ❀ फिरत विपिननिशिचरसमुदाई ॥
सीताकेरि करेहु रखवारी ❀ बुधि विवेक वल समय विचारी ॥
दोहा–असकहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपट मृग नीच ॥
देव हर्ष विस्मय विवस, चातक वर्षा बीच ॥ ४२ ॥
प्रभुहिं विलोकिचलामृग भाजी ❀ धाये राम शराशन साजी ॥
निगम नेति शिव ध्यान न पावा ❀ मायामृग पाछे सो धावा ॥
कवहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❀ कवहुँक प्रकटै कवहुँ छिपाई ॥
प्रगटत दुरत करत छल भूरी ❀ इहि विधि प्रभुहि गयो लैदूरी ॥
तव तकि राम कठिन शर मारा ❀ धरणि पऱ्यो करिघोर चिकारा॥
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा ❀ पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा ॥
प्राण तजत प्रगटेसि निज देही ❀ सुमिरेसि राम सहित वैदेही ॥
अन्तर प्रेम तासु पहिंचानी ❀ मुनिदुर्लभ गति दीन्हि भवानी॥
दोहा–विपुल सुमन सुर वर्षहीं, गावहिं प्रभुगुणगाथ ॥
निजपद दीन्हा असुर कहँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥ ४३ ॥
मृगवधि तुरत फिरे रघुवीरा ❀ सोह चाप कर कटि तूणीरा ॥

१ धनुष । २ बहुत ।

आरतगिरा सुनी जब सीता ❀ कह लक्ष्मण सन परम सभीता ॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता ❀ लक्ष्मण विहँसि कह्यो सुन माता ॥
भ्रुकुटि विलास सृष्टि लय होई ❀ स्वप्नेहु संकट परे कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती ❀ जो तजि जाउँ तोष नहिं छाती ॥
यह जिय जानि सुनहु मम माता ❀ पूछत कहब कवन मैं बाता ॥
मर्म वचन सीता जब बोली ❀ हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली ॥
चहुँदिशि रेखा खींच अहीशा ❀ बार बार नाये पद शीशा ॥
बन दिशि देव सौंपि सब काहू ❀ चले जहाँ रावण शशि राहू ॥
चितवहिं लषण सियहिफिरिकैसे ❀ तजत वत्स निज मातहि जैसे ॥

दोहा-एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि ॥
लषण तेज तनु हत भये, जिमि दाधी दवबेलि ॥ ४४ ॥

शून्य भवन दशकंधर देखा ❀ आवा निकट यतीके वेषा ॥
जाके डर सुर असुर डराहीं ❀ निशि न नींददिन अन्न न खाहीं ॥
सो दशशीश श्वानकी नाई ❀ इत उत चितै चला भँडिहाई ॥
जिमि कुपन्थपग देत खगेशा ❀ रह न तेज बल बुधि लवँलेशा ॥
करि अनेक विधि छल चतुराई ❀ माँगेउ भीख दशानन जाई ॥
अतिथि जानि सिय कंदमूलफल ❀ देन लगी तेइँ कीन्ह बहुरि छल ॥
कह दशमुख सुन सुन्दरि बानी ❀ बाँधीभीख न लेउँ सयानी ॥
विधिगति वाम काल कठिनाई ❀ रेख नाँघि सिय बाहर आई ॥

दो.-विश्वभरनिअघदलदलनि, करणिसकलसुरकाज॥
जाना नहिं दशशीश तेहि, मूढ़ कपटके साज ॥ ४५ ॥

नाना विधि कहि कथा सुनाई ❀ राजनीति भय प्रीति दिखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाँई ❀ बोलेसि वचन दुष्टकी नाईं ॥
तब रावण निजरूप दिखावा ❀ भइ सभीत जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढा ❀ आइ गये प्रभु खल रहु ठाढा ॥
जिमि हरि वधुहि क्षुद्र शशचाहा ❀ भयसिकालवशनिशिचर नाहा ॥

१ दुःखित वाणी । २ रामचन्द्रकी इच्छाते । ३ लक्ष्मणजी । ४ संन्यासी ।
५ कुत्ता । ६ गरुड । ७ किञ्चिद्मात्र । ८ भिक्षुक ।

वायस करचह खगपति समता ❀ सिन्धु समानहोइ किमिसरिता ॥
खरि कि होइ सुरधेनु समाना ❀ जाहु भवन निज सुन अज्ञाना ॥
सुनत वचन दशशीश लजाना ❀ मनमहँ चरणवान्दि सुखमाना ॥
दोहा-क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ॥
चल्यउगगन पथआतुर, भयरथ हाँकिनजाय ॥४६॥
हा जगदीश देव रघुराया ❀ केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतहरण शरण सुखदायक ❀ हारघुकुल सरोज दिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा ❀ सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा ॥
कैकेयी मन जो कछु रह्यऊ ❀ सोविधिआजु मोहिं दुख दयऊ॥
पंचवटीके खग मृग जाती ❀ दुखितभये वनचर बहुभाँती ॥
विविध विलाप करति वैदेही ❀ भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा ❀ पुरोडाश चह रासभ खावा ॥
सीताकर विलाप सुनि भारी ❀ भये चराचर जीव दुखारी ॥
दोहा-बहुविधि करत विलापनभ,लियेजात दशशीश॥
डरत न खल बर पाइ भल, जोदीन्हो अजईश ॥४७॥
गृध्रराज सुनि आरत बानी ❀ रघुकुल तिलकनारिपहिचानी॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई ❀ जिमि मलेच्छवश कपिलागाई॥
अहह प्रथम बल ममतनु नाहीं ❀ तदपि जाइदेखों बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करासि जनि त्रासा ❀ करिहौं यातुधान करनाशा ॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे ❀ छूटै पवि पर्वत पहँ जैसे ॥
रेरे दुष्ट ठाढ किन होही ❀ निर्भय चलसि नजानेसि मोही॥
आवत देखि कृतान्त समाना ❀ फिरि दशकंधकरतअनुमाना॥
की मैनाक कि खगपति होई ❀ ममबल जानि सहित पतिसोई॥
जाना जरठ जटायू येहा ❀ ममकर तीरथ छाँडिहिदेहा॥
दोहा-ममभुजबल नहिं जानत, आवत तपिन्हसहाइ ॥
समरचढ़ै तौ इहिहतौं,जियत न निज थल जाइ ॥४८॥

---

१ कौवा । २ नदी । ३ देवतनके यज्ञकोभाग । ४ गदहा । ५ राक्षस ।
६ वज्र । ७ कालके समान । ८ वृद्धगृध्र ।

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा ❀ कह सुन रावण मोर शिखावा ॥
तजि जानकी कुशल गृह जाहू ❀ नाहिंत सत्य सुनहु बहुबाहू ॥
रामरोष पावक अति घोरा ❀ होइहि सकल शलभकुलतोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा ❀ तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच विरथ कीन्ह महिगिरा ❀ सीतहि राखि गृध्र पुनिफिरा ॥
दशमुख उठि कृतशर संधाना ❀ गृध्र आइ काटेउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि विदारेसि देही ❀ दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही ॥

दोहा—जेहि रावण निजवशकिये, मुनिगणसिद्ध सुरेश॥
तेहि रावण सन समर अति, धीर वीर गृध्रेश ॥ ४९ ॥

स्वस्थ भये सो पुनि उठिधावा ❀ मारे गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा ❀ थकित भयो तबजरठ गिधेशा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना ❀ काढेसि परम करालकृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी ❀ सुमिरि रामकी अद्भुत करणी ॥
मनमहँ गृध्र परम सुखमाना ❀ रामकाज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहिं यान चढाय बहोरी ❀ चला उताउल त्रास न थोरी ॥
करति विलाप जाति नभ सीता ❀ व्याध विवश जनु मृगीसभीता ॥
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी ❀ कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
इहि विधि सीतहि सो लैगयऊ ❀ वन अशोक महँ राखत भयऊ ॥

दोहा—हारिपरा खल बहुतविधि, भयअरु प्रीतिदिखाइ॥
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ ॥ ५० ॥

वहाँ विधाता मन अनुमाना ❀ सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनकतनया पहँ जाहू ❀ सुधि न पावजिमिनिशिचरनाहू ॥
असकहि विधि सुन्दर हविआनी ❀ सौंपि बहुरि बोले मृदुवानी ॥
इह भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा ❀ वर्ष सहसदश संशय नाशा ॥
सो प्रसाद लै आर्यसु पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु वासव माया निज होई ❀ रक्षक रहे गये तहँ सोई ॥

१ भस्म-टीडी । २ बाल । ३ इन्द्र । ४ पायस । ५ भूख । ६ आज्ञा । ७ इन्द्र ।

तदपि डरत सीता पहँ आयो ❀ करि प्रणाम निजनाम सुनायो ॥
निश्चय जानि सुरेश सुजाना ❀ पिता जनक दशरथ सम माना ॥
करि परितोष दूरकर शोका ❀ हव्य खवाय गये निज लोका ॥

दोहा—जेहि विधि कपट कुरंग सँग, धाय चले श्रीराम ॥
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ॥५१॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी ❀ मन बहु चिंता कीन्ह विशेषी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात वचन मम पेली ॥
निशिचर निकर फिरहिं वनमाहीं ❀ मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥
अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं ❀ सियविहीन मम जीवन काहीं ॥
इहिते कवन विपति बड़ भाई ❀ खोयहु सीय काननहिं आई ॥
गहि पदकमल अनुज करजोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोरि नखोरी ॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहँवाँ ❀ गोदावरि तट आश्रम जहँवाँ ॥
आश्रम देखि जानकी हीना ❀ भये विकल जस प्राकृत दीना ॥

दोहा—कानन रहेउ तडाग इव, चक चकई सिय राम ॥
रावण निशि बिछुरन किये, दुख बीते चहुँ याम ॥५२॥

परदुखहरण शोक दुखनाहीं ❀ भा विषाद तिनके मन माहीं ॥
हा गुणखानि जानकी सीता ❀ रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहु भाँती ❀ पूँछत चले लता तरुपाँती ॥
हेखग मृग हेमधुकर श्रेनी ❀ तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृग मीना ❀ मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुन्दकली दाड़िम दामिनी ❀ शरदकमलशशिअहिभामिनी ॥
वरुणपाश मनोज धनुहंसा ❀ गज केहरि निज सुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हर्षाहीं ❀ नेकु नशंक सकुच मनमाहीं ॥
सुन जानकी तोहिं विनु आजू ❀ हर्षे सकल पाइ जनुराजू ॥
किमि सहिजात अनख तोहिंपाहीं ❀ प्रिया वेगि प्रकटत कस नाहीं ॥

१ समाधान। २ कपटमृग मारीच। ३ भाई-लक्ष्मणजी।

दो.-मणिविहीन फणिदीनजिमि, मीन हीनजिमिवारि॥
तिमि व्याकुलभयेलषणतहँ, रघुवरदशानिहारि ॥५३॥
धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं * तजहिंनशोकअधिकसुखधामहिं॥
इहिविधि विलपतखोजतस्वामी * मनो महाविरही अतिकामी॥
पूरणकाम राम सुखराशी * मनुज चरितकर अजै अविनाशी॥
सरवर अमित नदी गिरि खोहा * बहु विधि राम लषण तहँ जोहा॥
शोचहृदयकछुकहिनहिंआवा * टूट धनुष शर आगे पावा॥
कहुँ कहुँ शोणित देखिय कैसे * श्रावण जल भा ढावर जैसे॥
कहत राम लक्ष्मणहि बुझाई * काहू कीन्ह युद्ध इहि ठाईं॥
आगे परा गृध्रपति देखा * सुमिरत रामचरणजिन पेखा॥
दोहा-करसरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुवीर॥
निरखि राम छविधाममुख, विगत भई सबपीर ॥५४॥
तब कह गृध्र वचन धरि धीरा * सुनहु राम भंजन भवभीरा॥
नाथ दशानन यहगति कीन्ही * तेहिखल जनकसुता हरिलीन्ही॥
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसाईं * विलपति अति कुररीकी नाईं॥
दरशलागि प्रभु राखेउँ प्राना * चलन चहत अब कृपानिधाना॥
रामकहा तनु राखहु ताता * मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता॥
जाकर नाम मरत मुखआवा * अधमौ मुक्त होइ श्रुतिगावा॥
सो मम लोचन गोचर आगे * राखहुँ देह नाथ केहि लागे॥
जलभरि नयन कहा रघुराई * तात कर्म निजते गतिपाई॥
परहित वश जिनके मनमाहीं * तिन्हकहँ जगदुर्लभ कछु नाहीं॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा * देउँ कहा तुम पूरण कामा॥
दोहा-सीताहरण तात जनि, कहहु पितासन जाइ॥
जो मैं राम तौ कुलसहित, कहहि दशानन आइ ॥५५॥
गृध्र देह तजि धरि हरिरूपा * भूषण बहु पट पीत अनूपा॥
श्यामगात विशाल भुजचारी * अस्तुति करत नयन भरि वारी॥

१ मछली। २ पानी। ३ अजन्म। ४ रक्त।

छंद-जयराम रूप अनूपनिर्गुणसगुणगुणप्रेरक सही॥
दशशीश बाहु प्रचंड खण्डनचाप शर मण्डन मही ॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव आयत लोचनम् ॥
नितनौमिरामकृपालुबाहुविशालभवभयमोचनम्॥२२
बलमप्रमेयमनादिमज मव्यक्त मेकम गोचरम् ॥
गोविन्द गोपरद्वन्द्वहर विज्ञानघन धरणीधरम् ॥
जे राम मंत्र जपन्त सन्त अनन्त जनमन रंजनम् ॥
नितनौमिरामअकामप्रियकामादिखलदलगंजनम्॥
जेहिश्रुतिनिरंतरब्रह्मव्यापकविरजअजकहिगावहीं॥
करिज्ञान ध्यानविरागयोगअनेकमुनिजेहिपावहीं ॥
सोप्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जगमोहई ॥

छंदार्थ-हे राम आपके अनूपरूपकी जयहो यह रूप कैसाहै कि, निर्गुण जो व्यापक ब्रह्महै और सगुण मत्स्यादि अवतार और सत, रज, तम, गुण अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन सबका प्रेरक है और आप धनुष बाणको पृथ्वी के भूषित करनेको और दूषणरूपी रावणके निपातके हेतु धारण किया है आपका शरीर श्यामघनके समानहै और कमलके तुल्य बडे २ नेत्रहैं हेराम कृपालु संसारके भय छुडानेवाली विशालबाहुको मैं प्रणाम करताहूं ॥२२॥

हे राम! जो आपका बल अप्रमेय है और आप अनादि जन्मसे रहित और अप्रगट शक्ति और अद्वैत अगोचर हो और गोविंद इन्द्रियोंके भोक्ता और इन्द्रियोंके परे द्वन्द्व मोह मेरा तेरा आदिके हरनेवाले विज्ञानके बरसनेवाले और पृथ्वीके धारण करनेवाले हो जो कोई अनंत संत राममंत्रको जपतेहैं उनके मनको रंजन करते हो हे कामादिखल दलगंजन अकाम प्रिय राम! मैं आपको नित्य प्रणाम करताहूं ॥२३॥

जिनको वेद निरन्तर रोगरहित जन्मरहित ब्रह्म कहिके गावते हैं और जिनको अनेक मुनि ज्ञान ध्यान विराग योग करके ध्यान करतेहैं सोई करुणाजलके

१ मेघ। २ अरुणकमलवत्मुख। ३ मन बुद्धि वाणीते परे हो। ४ विरज कहीषट्विकार रहित जन्म, वृद्धि, विर्वण, क्षीण, जरा, मरण.

ममहृदय पंकज भृंगअंगअनंगबहु छबिसोहई॥२४॥
जोअगमसुगमस्वभावनिर्मलअसमसमशीतलसदा॥
पश्यन्ति यं योगी यतनकरि करत मनगोवशयदा ॥
सो राम रमानिवास संततदासवश त्रिभुवन धनी ॥
ममउरबसहु सोशमनसंसृति जासुकीरतिपावनी२५
दोहा–अविरल भक्ति माँगिवर, गृध्र गयउ हरिधाम ॥
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्ही राम ॥ ५६ ॥
कोमल चित अतिदीनदयाला ❀ कारण बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गृध्र अधम खग आमिषभोगी ❀ गति तेहि दीन्ह जोयाचतयोगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी ❀ हरितजि होहिं विषय अनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत दोउ भाई ❀ चले बिलोकत वन बहुताई ॥
संकुल लता विटप घनकानन ❀ बहु खग मृग तहँ गजपंचानन ॥
आवत पन्थ कँबन्ध निपाता ❀ तेइँ सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा ❀ प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गन्धर्व कहौं मैं तोहीं ❀ मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही ॥

बरसनेवाले प्रगट होके अपनी शोभाके समूहोंसे जड चैतन्योंके मोहने वाले मेरे हृदयकमलमें अनेक कामकी बहु छबियुक्त भृंग शोभायमानहो ॥२४॥

जो अगम और सुगम और स्वभावकरिकै निर्मल विषमसदा शीतलहो जिनको योगीजन मनके वश करनेवाले अनेक यत्न कर हर्षसे देखतेहैं हे राम।सोई रमानिवास त्रिभुवनधनी जो आप अपने दास के निरन्तर वशरहते हो तुम्हारी कीर्ति जरा मरणकी नाश करनेवाली है मेरे हृदयमें बसो ॥२५॥

❀ कबन्ध पूर्व जन्मका गन्धर्व था एक समय उसके गानेसे दुर्वासाऋषि नहीं रीझे तौ यहउनपर हँसा तब दुर्वासाऋषिने शाप दिया कि,राक्षसहो जासो वह राक्षस होय उपद्रव करनेलगा तब इंद्रने वज्र मारा कि शिर पेटमें घुसगया तबसे उसका नाम कवंध पडा और उसकी योजनभरकी बाहुथीं जो बाहुके बीचमें आताथा उसे खींचकर खालेता था सो जब रामचंद्रको खैंचने लगा तौ इन्होंने खड्ग से भुजा काट डालीं.

१ देखतेहैं। २ जन्म मरण। ३ मांस। ४ परिपूर्णहैं लता जिसवनमें।

दोहा—मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव॥
मोहिं समेत विरंचि शिव, वश ताके सब देव ॥ ५७॥

शापत ताडत परुष कहंता ❀ विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना ❀ नहिंन शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना ॥
दुष्टौ धेनु दुही सुनु भाई ❀ साधु रासभी धुही न जाई ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा ❀ निजपद प्रीति देखि मनभावा॥
रघुपति चरण कमल शिरनाई ❀ गयउ गगन आपनि गतिपाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा ❀ शबरीके आश्रम पगुधारा ॥
शबरी दीख राम गृह आये ❀ मुनिकेवचन समुझि जियभाये ॥
सरसिज लोचन बाहु विशाला ❀ जटा मुकुट शिर उर बनमाला ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुख वचन न आवा ❀ पुनि पुनि पदसरोज शिरनावा॥
सादर जल लै चरण पखारे ❀ पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥

दोहा—कन्दमूल फल सरस अति, दियेरामकहँआनि॥
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिं बार बखानि ॥ ५८ ॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढी ❀ प्रभुहिविलोकिप्रीतिअति बाढी॥
केहिविधिअस्तुतिकरहुँतुम्हारी ❀ अधम जाति मैं जडमतिभारी॥
अधमतेअधमअधमअतिनारी ❀ तिनमहँ मैं मतिमन्द गँवारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ❀ मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई ❀ धन बल परिजन गुण चतुराई॥
भक्तिहीन नर सोहै कैसे ❀ विनु जल वारिदँ देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं ❀ सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तन करसंगा ❀ दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा—गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान ॥
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान॥५९॥

मंत्र जाप मम दृढ विश्वासा ❀ पञ्चम भजन सो वेद प्रकाशा ॥

१ ब्राह्मण। २ ब्रह्मा। ३ गौ। ४ गधी। ५ आकाश। ६ अतिश्रेष्ठ। ७ मेघ। ( )

षट दम शील विरत बहु कर्मा ❀ निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥
सतईं सब म्वहिं मय जग देखै ❀ मोते सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथा लाभ सन्तोषा ❀ स्वप्नेहुँ नहिं देखै परदोषा ॥
नवम सरल सबसों छलहीना ❀ मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एकौ जिन्हके होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सो अतिशयप्रियभामिनिमोरे ❀ सकल प्रकार भक्ति दृढतोरे ॥
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई ❀ तोकहँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा ❀ जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥

दोहा—सब प्रकार तव भागबड़, मम चरणन्हअनुराग ॥
तव महिमा जेहि उर बसिहि, तासु परम बड़भाग ॥ ६० ॥

सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई ❀ पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुताकैसुधिम्वहिंभामिनि ❀ जानहु तो कहु करिवर गामिनि ॥
पम्पासरहि जाहु रघुराई ❀ मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ॥
ऋषिमतंग महिमा गुणभारी ❀ जीव चराचर रहत सुखारी ॥
वैर न कर काहूसन कोई ❀ जासन वैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले ❀ खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकर जाई ❀ तहाँ होइ सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुवीरा ❀ जानतहू पूँछत मतिधीरा ॥
बार बार प्रभुपद शिरनाई ❀ प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छं-कहिकथासकलविलोकिहरिमुखहृदयपदपंकजधरे
तजि योग पावकदेह हरिपदलीन भइ जहँ नहिंफिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू ॥
विश्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू २६ ॥

दोहा—जाति हीन अघजन्म मय, मुक्तकीन्हअसनारि ॥
महामन्द मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ६१ ॥

चले राम त्यागेउ वन सोऊ ❀ अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥

१ अत्यंत । २ मास ।

विरही इव प्रभु करत विषादा ❀ कहत कथा अनेक सम्वादा ॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा ❀ देखत केहिकर मन नहिंक्षोभा ॥
नारिसहित सब खग मृग वृन्दा ❀ मानहुँ मोरि करतहहिं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं ❀ मृगी कहहिं तुम कहँभयनाहीं ॥
तुम आनन्द करहु मृग जाये ❀ कंचन मृग खोजन ये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं ❀ मानहुँ मोहिं शिखावन देहीं ॥
शास्त्र सुचिन्तित पुनिपुनि देखिय ❀ भूप सुसेवत वशनहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं ❀ युवतीशास्त्र नृपति वश नाहीं ॥
देखहु तात वसन्त सुहावा ❀ प्रियाहीन म्वाहिं भय उपजावा ॥
दो०-विरहविकलबलहीनमोहिं,जानिसिनिपटअकेल ॥
सहितविपिनमधुकरखगन्ह,मदनकीन्हवगमेल ॥६२॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ॥
डेरा दीन्ह्यउमनहुँ तिन्ह,कटक हटकि नहिंजात ॥६३॥
विटप विशाल लता अरुझानी ❀ विविध वितानँ दिये जनुतानी ॥
कदलि ताल वर ध्वजा पताका ❀ देखि न मोह धीर मन जाका ॥
विविध भाँति फूले तरु नाना ❀ जनु बानैत बने बहुबाना ॥
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये ❀ जनुभट विलग विलग है छाये ॥
कूजत पिक मानहु गजमाते ❀ ढेक महोख ऊँट विसराते ॥
मोर चकोर कीर वर बाजी ❀ पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचर यूथा ❀ वरणि न जाइ मनोज वरूथा ॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना ❀ चातक वन्दी गुण गण वरना ॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई ❀ त्रिविध वयारि वसीठी आई ॥
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हें ❀ विचरत सबहिं चुनौती दीन्हें ॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका ❀ रहहिं धीर तिन्हके जगलीका ॥
यहिके एक परम बल नारी ❀ त्यहिते उबर सुभट सोइभारी ॥
दोहा-तात तीनि अतिप्रबलखल,कामक्रोधअरुलोभ ॥

१ मृगोंके झुंडके झुंड भागते हैं। २ हथिनी। ३ स्त्री। ४ छत्र। ५ केला।

मुनिविज्ञाननिधानमन, करहिं निमिषमहँ क्षोभ॥६४॥
लोभके इच्छा दम्भ बल, कामके केवल नारि॥
क्रोधकेपरुषवचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि॥६५॥
गुणातीत सचराचर स्वामी ❀ राम उमा सब अन्तर्यामी॥
कामिनकी दीनता दिखाई ❀ धीरनके मन विरति[1] दृढाई॥
क्रोध मनोज[2] लोभ मद माया ❀ छूटहिं सकल रामकी दाया॥
सोनर इंद्रजाल नहिं भूला ❀ जापर होइ सो नट अनुकूला॥
उमा कहौं मैं अनुभव[3] अपना ❀ हरिकोभजनसत्यजगस्वपना॥
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा ❀ पम्पानाम सुभग गम्भीरा॥
सन्त हृदय जस निर्मल बारी ❀ बाँधे घाट मनोहर चारी॥
जहँ तहँ पियहिंविविधमृग नीरा ❀ जिमि उदार गृह याचक भीरा॥
दोहा-पुरइनि सघन ओट जल, वेगि न पाइय मर्म॥
माया छन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म॥ ६६॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं॥
यथाधर्म शीलान्हके, दिन सुख संयुत जाहिं॥६७॥
विकसे सरसिज नानारंगा[4] ❀ मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा॥
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा ❀ प्रभु विलोकि जनु करत प्रशंसा॥
चक्रवाक बक खग समुदाई ❀ देखत बनै वरणि नहिं जाई॥
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई ❀ जात पथिक जनु लेत बुलाई॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये ❀ चहुँ दिशि काननविटप सुहाये॥
चम्पक बकुल[5] कदम्ब तमाला ❀ पाटल पनस पलाश[6] रसाला[7]॥
नवपल्लव कुसुमित तरुनाना ❀ चंचरीकपटली कर गाना॥
शीतल मन्द सुगन्ध सुहाऊ ❀ सन्तत बहै मनोहर बाऊ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❀ सुनि रवसरस[8] ध्यान मुनिटरहीं॥
दोहा-फूले फले विटप सब, रहे भूमि नियराइ॥
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पतिपाइ॥६८॥

१ वैराग्य। २ कामदेव। ३ सिद्धान्त। ४ नानारंगके कमल फूलेहैं।
५ मौलसिरी। ६ ढाक। ७ आँव। ८ शब्द।

देखि राम अतिरुचिर तलावा ❀ मज्जन कीन्ह परमसुख पावा ॥
देखि एक सुन्दर तरु छाया ❀ बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❀ अस्तुतिकरिनिजधाम सिधाये ॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ❀ कहत अनुजसन कथा रसाला ॥
विरहवन्त भगवंतहि देखी ❀ नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर शाप करि अंगीकारा ❀ सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि विलोकहुँ जाई ❀ पुनि न बनै अस अवसर आई ॥
यह विचार नारदकर वीना ❀ गये जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥
गावत रामचरित मृदुवानी ❀ प्रेम सहित बहु भाँति वखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई ❀ राखे बहुत वार उरलाई ॥
स्वागत पूँछि निकट बैठारे ❀ लक्ष्मण सादर चरण पखारे ॥

दोहा–नानाविधि विनतीकरी, प्रभुप्रसन्न जिय जानि ॥
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि ॥६९॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❀ सुंदर[1] अगम सुगम वरदायक ॥
देहु एक वर माँगौं स्वामी ❀ यद्यपि जानहु अन्तरयामी ॥
जानहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ ❀ जनसन कबहुँकि करों दुराऊ ॥
कवन वस्तु अस प्रियमोहिं लागी ❀ जो मुनिवर नसकहु तुम माँगी ॥
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे ❀ अस विश्वास तजहु जनि भोरे ॥
तब नारद बोले हर्षाई ❀ अस वर माँगौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका ❀ श्रुतिकह अधिक एकते एका ॥
राम सकल नामन्हते अधिका ❀ होउनाथ अघखगगणबधिका ॥

दोहा–राकार[2]जनी भक्ति तव, राम नाम सोइ सोम[3] ॥
अपरनामउडुगण[4]विमल, बसहु भक्तिउरव्योम[5] ॥७०॥

एवमस्तुमुनिसन कह्यउ, कृपासिन्धु रघुनाथ ॥
तबनारदमन हर्ष अति, प्रभु पद नायउ माथ ॥७१॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी ❀ पुनि नारद बोले मृदुवानी ॥

१ सुंदर । २ पूर्णमासीकी रात्रि । ३ चन्द्र । ४ नक्षत्र । ५ आकाश ।

राम जबहिं प्रेरयहु निजमाया ❀ मोहहु मोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब विवाह चाहौं मैं कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा॥
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा ❀ भजहिंमोहिंतजिसकल भरोसा॥
करौं सदा तिन्हकी रखवारी ❀ जिमि बालकहि राख महतारी ॥
गहि शिशु वत्स अनल अहिधाई ❀ तहँ राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ़ भये त्यहि सुतपर माता ❀ प्रीति करैं नहिं पाछिलवाता ॥
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी ❀ बालक सुत सम दास अमानी ॥
जिनहिं मोरबल निजबल ताहीं ❀ दुहुँकहँ कामक्रोध रिपुआहीं ॥
यह विचारि पंडित मोहिं भजहीं ❀ पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं॥

दोहा-काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोहकी धार ॥
तिन्ह महँ अति दारुणदुखद, मायारूपी नार ॥७२॥

सुनु मुनि कह पुराण श्रुतिसंता ❀ मोह विपिन कहँ नारि वसंता ॥
जप तप नेम जलाशय झारी ❀ होइ ग्रीषम शोषै सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका ❀ इनहिं हर्ष प्रद वर्षा एका ॥
दुर्वासना कुमुद समुदायी ❀ तिन्हकहँ शरद सदा सुखदायी॥
धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा ❀ ह्वैहिम तिन्हहिं देय दुख मन्दा॥
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी ❀ नारि निबिड रजनी अँधियारी॥
बुधि बल शील सत्य सबमीना ❀ बनशीसम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दोहा-अवगुण मूल शूलप्रद, प्रमदा सबदुखखानि ॥
ताते कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जिय जानि ॥७३॥

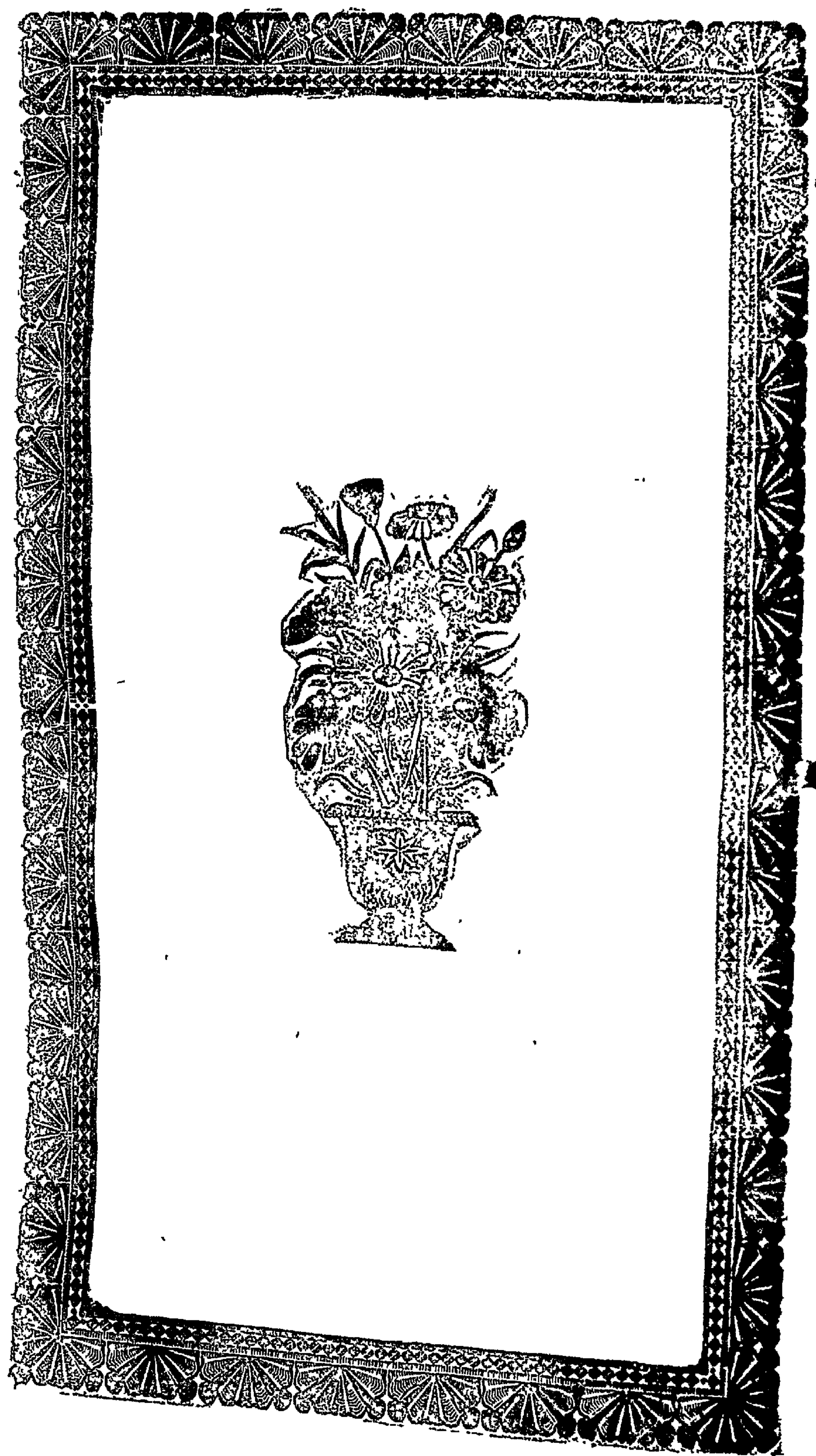
सुनि रघुपतिके वचन सुहाये ❀ मुनि तनुपुलकिनयनभरि आये॥
कहहु कवन प्रभुकै असरीती ❀ सेवकपर ममता अतिप्रीती ॥
जेनभजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक मतिमंद अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम विज्ञान विशारद ॥
सन्तनके लक्षण रघुबीरा ❀ कहहु राम भंजन भवभीरा ॥

१ सत्यसंकल्प । २ वृद्ध । ३ स्त्री ।

सुन मुनि सन्तनके गुणकहऊँ ❀ ज्यहि ते मैं उनके वश रहऊँ ॥
षटविकार तजि अनघ अकामा ❀ सकलअकिंचनशुचिसुखधामा ॥
अमित बोध परमारथ भोगी ❀ सत्य सार कवि कोविद योगी ॥
सावधान मद मान विहीना ❀ धीर भक्त गति परम प्रवीना ॥
दोहा-गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह ॥
तजि मम चरण सरोजप्रिय, तिन्हकहँदेहनगेह ॥७४॥
निज गुण सुनत श्रवण सकुचाहीं ❀ परगुण सुनत अधिक हर्पाहीं ॥
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती ❀ सरल स्वभाव सबहिं सन प्रीती ॥
जप तप व्रत दम संयम नेमा ❀ गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया ❀ मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना ❀ बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मान मद करहिं न काऊ ❀ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❀ हेतुरहित परहित रतशीला ॥
सुनु मुनि साधुन्हके गुण जेते ❀ कहि न सकहिं शारद श्रुतितेते ॥
छं-कहिसक नशारद शेष नारद सुनत पदपंकजगहे ॥
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्त गुण निजमुखकहे ॥
शिरनाइ बारहिं बार चरणन्ह ब्रह्म पुर नारद गये ॥
ते धन्य तुलसीदास आश विहाइ जेहरिरँगरये ॥२७॥
दोहा-रावणारियश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ॥
रामभक्ति दृढ पावहीं, विनु विराग जप योग ॥७५॥
दीपशिखा सम युवति जन, मनजानिहोसि पतंग ॥
भजहिंरामतजिकाममद, करहिंसदासतसंग ॥७६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञान
वैराग्यसम्पादनोनाम तुलसीकृतरामायणेआरण्यकांडे
तृतीयःसोपानःसमाप्तः ॥ ३ ॥

१ काम, क्रोध, मद, मत्सरादि। २ पापरहित।



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत–



किष्किन्धाकाण्डम् ४.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

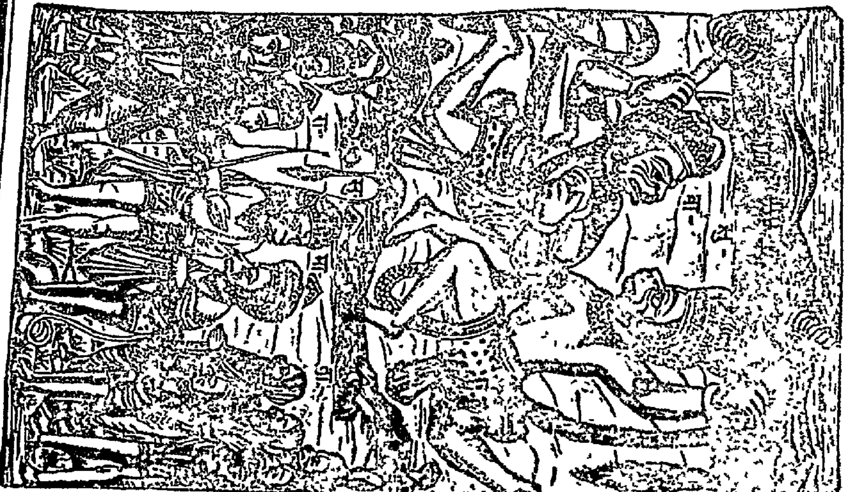
मुद्रितकर प्रकट किया.

❁ श्रीरामपंचायतन ❁



❁ किष्किन्धाकाण्डम् ४ ❁

दोहा—वारि मथे वरु होइ घृत, सिकता ते वरु तेल ॥
विन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥



चौ०—संसृत रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाँव देइ एहि मारग सोई ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रामायणे किष्किन्धाकाण्डम् ।

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

श्लोक-कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौविज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौवरधन्विनौ श्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवंतौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः ॥१॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंसनंचाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरेसंशोभितंसर्वदा ॥
संसारामयभेषजंसुमधुरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्तेकृतिनःपिबन्तिसततंश्रीरामनामामृतम् २॥
सो.-मुक्तिजन्म महिजानि, ज्ञानखानि अघ हानिकर ॥

श्लोकार्थ--कुन्दके फूलके समान और नीलकमलके समान सुंदर अति बलवान् विज्ञानके घर दोनों शोभासंयुक्त धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वेदसे प्रशंसित और गो ब्राह्मणोंको प्यारकरनेवाले मायासे मनुष्यरूप धारणकियेहुए सद्धर्मके कवच धारण किये हितकारी सीताके ढूँढनेमें तत्पर मार्गमें विचरते हुए राम लक्ष्मण दोनों मुझको भक्तिके देनेवाले हैं ॥ १ ॥

वे सुकर्मकर्त्ता धन्यहैं जो निरन्तर रामनाम रूपी अमृतको पान करतेहैं. वोह रामनाम रूपी अमृत कैसाहै कि, ब्रह्म वेदरूपी समुद्रसे उत्पन्न कलिमलका नाशक जन्ममरणादिकसे रहित शोभासे युक्त शिवजीके चंद्रमुखमें सदैव शोभित और संसाररूपी रोगका औषध है और सुंदर मधुरतरहै और वियोग समयमें श्रीजानकीजीका जिलानेवालाहै ॥ २ ॥

जहँ बस शंभु भवानि, सोकाशी सेइय कस न ॥१॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल जेहिपान किय ॥
तेहिनभजसि मतिमन्द, को कृपालु शंकर सरिस ॥२॥
आगे चले बहुरि रघुराई ❀ ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहँरह सचिव सहित सुग्रीवा ❀ आवत देखि अतुल बलसीवा ॥
अतिसभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुष युगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसि मोहिं निज सैन बुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला ❀ भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँगयऊ ❀ माथनाय पूँछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा ❀ क्षत्रिय रूप फिरहु वनवीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपद गामी ❀ कवन हेतु वन विचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता ❀ सहत दुसह वन आतप वाता ॥
कीतुम तीनि देव महँ कोऊ ❀ नर नारायण की तुम दोऊ ॥
दोहा–जगकारण तारण भवहिं, भंजन धरणी भार ॥
कैतुम अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ॥१॥
सुनि बोले रघुवंश कुमारा ❀ विधिकर लिखा को मेटन हारा ॥
कोशलेश दशरथके जाये ❀ हम पितुवचन मानि वन आये ॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई ❀ संग नारिं सुकुमारि सुहाई ॥
इहाँ हरी निशिचर वैदेही ❀ विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परे गहि चरणा ❀ सो सुख उमा जाहि नहिंवरणा ॥
पुलकिततनुमुखआवनवचना ❀ देखत रुचिर वेषकी रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हा ❀ हर्षि हृदय निज नाथहिंचीन्हा ॥
मैं अजान होइ पूँछौं साईं ❀ तुम कस पूँछहु नरकी नाईं ॥
तव मायावश फिरौं भुलाना ❀ ताते प्रभुपद नहिं पहिचाना ॥

१ शोकके हरनेको तरवारिसदृश । २ विष । ३ ब्रह्मचारी । ४ पर्वत । ५ धाम । ६ ब्रह्मा, विष्णु, महेश । ७ अयोध्या । ८ जनककुमारी सीताजी ।

दोहा—एक मन्द मैं मोहवश, कीशे हृदय अज्ञान ॥
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान ॥ २ ॥
यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे ❀ सेवक प्रभुहिं परे नाहिं भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू ❀ सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुवीर दुहाई ❀ जानौं नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ❀ रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
असकहि चरण परे अकुलाई ❀ निजतनु प्रकट प्रीति उरछाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा ❀ निजलोचन जलसींचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जियजनि मानेसिऊना ❀ तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना ॥
समदर्शी मोहिं कह सब कोई ❀ सेवक प्रिय अनन्यगति सोई ॥
दोहा—सो अनन्य अस जाहिकै, मति न टरै हनुमंत॥
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त ॥ ३ ॥
देखि पवनसुत पति अनुकूला ❀ हृदय हर्ष बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपिपति रहई ❀ सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मैत्री कीजे ❀ दीन जानि त्यहि अभयकरीजे ॥
सो सीताकर खोज कराई ❀ जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाई ॥
इहि विधि सकल कथा समुझाई ❀ लिये दोउ जन पीठि चढाई ॥
जब सुग्रीव राम कहँ देखा ❀ अतिशयजन्म धन्य करिलेखा ॥
सादर मिले नाइ पदमाथा ❀ भेंटे अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपिके मन विचार यह रीती ❀ करिहहिं विधि मोसन येप्रीती ॥
दोहा—तब हनुमन्तउभयदिशि, कहि सबकथासुझाइ ॥
पावक साक्षी देइ करि, जोरी प्रीति दृढाइ ॥ ४ ॥
कीन्ह प्रीति कछु बीच नराखा ❀ लक्ष्मण राम चरित सब भाषा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि वारी ❀ मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित यहाँ इकबारा ❀ बैठ रह्यउँ कछु करत विचारा ॥
गगनपंथ देखी मैं जाता ❀ परवश परी बहुत बिलखाता ॥

१ बन्दर । २ सन्देह । ३ बंदर । ४ दोऊदिशि । ५ आकाशमार्ग ।

राम राम हाराम पुकारी ❀ मम दिशि देखि दीन पट डारी ॥
माँगा राम तुरत सो दीन्हा ❀ पट उरलाइ शोच अतिकीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ❀ तजहु शोक मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ❀ जेहिविधिमिलहिं जानकी आई ॥
दोहा-सखावचन सुनि हर्षे, रघुपति करुणासींव ॥
कारण कवन बसहु वन, मोसन कहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

अथ क्षेपक ।

पूछहिं प्रभु हँसि जानहिं ताहीं ❀ महावीर मर्कट कुल माहीं ॥
तव अस्थान प्रथम केहिठामा ❀ कहु निज मात पिताकर नामा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❀ कहहुँ आदिते उत्पति गाई ॥
ब्रह्मा नयनन कीच निकारी ❀ लै अँगुरी भुइँ ऊपर डारी ॥
वानर एक प्रगट तहँ होई ❀ चंचल बहु विरंचि ढ़ल सोई ॥
तेहिकर नाम धरा विधि जानी ❀ ऋच्छराज तेहिसमनहिं ज्ञानी ॥
विधि पदनाइ शीश कपि कहई ❀ आयसु कहा मोहिं प्रभु अहई ॥
विचरहु वनगिरि वनफलखावहु ❀ मारहु निश्चर जे जहँ पावहु ॥
सो ब्रह्माकी आज्ञा पाई ❀ दक्षिण दिशा गयउ रघुराई ॥
दोहा-ऋच्छराज तहँ विचरई, महावीर बलवान ॥
निशिचर पावतही हने, शिरमें कठिन पषान ॥ ६ ॥
फिरत दीख इक कूप अनूपा ❀ जल परिछाँहि दीख निजरूपा ॥
तब कपि शोच करत मनमाहीं ❀ केहिविधिरिपु रहही ह्याँ आहीं ॥
ताहि देखि कोपा कपिवीरा ❀ सब दिशि फिरा कूपके तीरा ॥
जोजो चरित कीन्ह कपि जैसा ❀ सो सो चरित दीख तहँ तैसा ॥
मर्जा कीश लोइ सो बोला ❀ कूदिपरा जलमाहीं डोला ॥
तब तनु पलटि भई सो नारी ❀ अति अनूपगुण रूप अपारी ॥
सुनहु उमा अति कौतुक होई ❀ आइ बहोरि ठाढि भै सोई ॥
सुरपति दृष्टि परी तेहि काला ❀ तेहि तब विंदु परा तेहिबाला ॥

१ माया । २ उपमा रहित । ३ तमासा ।

मोहे भानु देखि छबिसीवाँ ❀ छूटा बिंदु परा तेहि ग्रीवाँ ॥
दोहा-इंद्र अंशते वालिभा, महावीर बलधाम ॥
दिनकर सुत दूसर भयो, तेहि सुग्रीवउ नाम ॥ ७ ॥
पुनि तत्काल सुनहु रघुवीरा ❀ नारी पलटि भयो सोइ वीरा ॥
तब ऋच्छराज प्रीति मनभयऊ ❀ हमहिं संगलै विधिपहँ गयऊ ॥
करिप्रणाम सब चरित बखाना ❀ कह अज हरि इच्छा बलवाना ॥
तब विधि हमहि कहा समुझाई ❀ दक्षिण दिशा जाहु दोउ भाई ॥
किष्किंधा तुम कर अस्थाना ❀ रंग भोग बहु विधि सुखनाना ॥
जो प्रभुलोक चराचर स्वामी ❀ सो अवतरहि नाथ बहुनामी ॥
रघुकुल मणि दशरथ सुतहोई ❀ पितु आज्ञा विचरहिं वन सोई ॥
नरलीला करिहैं विधिनाना ❀ पैहौ दरश होइ कल्याना ॥
दोहा-तब हर्षे हम बंधु दोउ, सुनिकै विधिके बचन ॥
जप तप योग न पावहीं, सो हम देखब नयन ॥ ८ ॥
विधिपद वंदि चले दोउ भाई ❀ किष्किंधामें आये धाई ॥
वालीराज कीन सुरत्राता ❀ वनवसि दैत्य हने दोउ भ्राता ॥
मयदानवके सुत दोउ वीरा ❀ मायावी दुंदुभि रणधीरा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❀ विधिगतिअलखजानिनहिंजाई ॥

इति क्षेपक ।

नाथ वालि अरु मैं दोउ भाई ❀ प्रीति रही कछु वरणि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ ❀ आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ ॥
अर्द्धरात्रि पुरद्वार पुकारा ❀ वालिहु रिपु बल सहै नपारा ॥
धावा वालि देखि सो भागा ❀ मैं पुनि गयउँ वन्धु सँग लागा ॥
गिरिवर गुहा पैठ सो जाई ❀ वालि मोहिं तब कहा बुझाई ॥
परखेहु मोहिं एक पखवारा ❀ नहिं आवौं तो जानेहु मारा ॥
मास दिवस तहँ रह्यहुँ खरारी ❀ निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
तबमैंनिजमन कीन्ह विचारा ❀ जाना असुर वन्धु कहँ मारा ॥

१ सूर्य्यनारायण । २ पर्वतकी कन्दरा । ३ एकमहीना । ४ रक्त ।

वालिहत्यसि मोहिं मारिहिआई ❀ शिला द्वारदे चलेउँ पराई ॥
"दोहा-वालिमहावलअमितअति, समर नजीतै कोय॥
त्यहि मारिसि जो निशिचर, सो अब मारै मोय" ॥९॥
गयउँ भवन मनशोच अपारा ❀ पूँछे वालि कह्यो जिमि मारा ॥
पंपापुरके जन तेहि काला ❀ तनु व्याकुल मनवहुतविहाला ॥
मंत्रिन पुर देखा विनु साईं ❀ दीन्हेउ राज मोहिं वरिआईं ॥
वाली ताहि मारि गृहआवा ❀ देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा ॥
रिपुसमान मोहिं मारेसि भारी ❀ हरि लीन्हसि सर्वस अरुनारी ॥
ताके भय रघुवीर कृपाला ❀ सकलभुवन मैं फिर्यउँविहाला ॥
इहाँ शापवश आवत नाहीं ❀ तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला ❀ फरकि उठे दोउ भुजा विशाला ॥

अथ क्षेपक।

दोहा-सुनत वचन बोले प्रभु, कहहु शापकी बात ॥
दुंदुभिदैत्य सो कौनविधि, वालिहत्योतेहितात॥१०॥
समदर्शी शीतल सदा, मुनिवर परम प्रवीन ॥
मोहिं बुझाइ कहहु सब, शाप कौन हित दीन ॥ ११ ॥
पुनि पूँछत भए कृपानिकेता ❀ वालिहि शाप भयो केहिहेता ॥
बोले तब कपीश मनलाई ❀ दुंदुभिदैत्य महावल भाई ॥
मल्लयुद्धकी गति सब जानै ❀ और वली नहिं कोउ मनमानै ॥
एकवार जलनिधि तटआयो ❀ जायके जलनिधि माँझ थहायो॥
सबही कटि प्रमाण जलभयऊ ❀ करि अभिमान मथतसोलयऊ॥
मथत सिंधु व्याकुल सब गाता ❀ जीव जंतु सब भये निपाता ॥
तब अकुलाय सिंधु चलिआवा ❀ वचन विचारिहि ताहि सुनावा॥
तुम बल सरवर और न कोऊ ❀ वचन विचारि कहौं मैं सोऊ॥

१ संग्राम। २ गृह। ३ जबरदस्ती। ४ शत्रु। ५ सुग्रीव। ६ समुद्र।

हिमगिरि बल बरणो ना जाई ❀ त्यहि जीतन कर करहु उपाई ॥
वचन सुनत ताहीं चलिआयो ❀ देखि हिमाचल अतिमनभायो ॥
ताल ठोंकि हिम लीन उठाई ❀ तब हिमगिरि बहु विनती लाई ॥
तुम्हरे बल सरिवर मैं नाहीं ❀ ताते करों न मान तुम्हाहीं ॥
पंपापुर तुमही चलि जाहू ❀ बालि महाबलनिधि अवगाहू ॥
सुनत वचन तबहीं चलिआवा ❀ बालि बालि कहिकै गोहरावा ॥

दोहा—वेष किये सो महिषकर, गर्व बहुत मन माहिं ॥
आयो निकटसो गर्जिकर, मनहुँ तनकभय नाहिं ॥ १२ ॥

महि मर्दै तरु करै निपाता ❀ गर्जेउ घोर गिरा जनुपाता ॥
ठोंकेउ ताल वज्र जनु परहीं ❀ तेहिकर मर्म जानि सब डरहीं ॥
पंपापुर व्याकुल सब काहू ❀ चंद्रग्रसन जनु आयो राहू ॥
सुनत बालि धावा ततकाला ❀ देखि असुर भुजदंड कराला ॥
भिरे युगल करिवर की नाई ❀ मल्लयुद्ध कछु बरणि नजाई ॥
चारि याम सब कौतुक भयऊ ❀ मुष्टि प्रहार तासु कपि दयऊ ॥
गिरा अवनि तब शैल समाना ❀ जीव जंतु तरु टूटयउ नाना ॥
पुनि तेहि बालि युगलकरि डारा ❀ उत्तर दक्षिण कीन प्रहारा ॥
तेहि गिरि पर मुनिकुटी सुहाई ❀ रुधिर प्रवाह गयो तहँ धाई ॥
ऋषि मतंगकर तहाँ निवासा ❀ गये सो ऋषि मज्जन सुख रासा ॥
मज्जन करि मतंगऋषि आये ❀ देखि कुटी अति क्रोध बढाये ॥
तबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ यक्ष एक चलि आवा ताहीं ॥
तिनहीं सकल कही इतिहासा ❀ सुनि मतंग भे क्रोधनिवासा ॥

दोहा-दीन्हशाप तब क्रोधकरि, नहिं मनकीन्हविचार ॥
बालिनाश गिरि देखतहि, होइजाइ तनुछार ॥ १३ ॥

तेहिभय इहाँ बालि नहिं आवत ❀ ऋषिकेवचन मानि भय पावत ॥
तेहि भरोस यहि गिरिपर रहऊँ ❀ बालित्रास नहिं विचरत कहऊँ ॥

---

१ हिमवान् । २ तुल्य । ३ भैंसा । ४ पृथ्वी । ५ वृक्ष ।

यहि दुखते प्रभु दिन अरुराती ❀ चिताबहुत जरति अतिछाती ॥
जानहु मर्म सकल रघुनाथा ❀ इहाँ रहौं हनुमत लै साथा ॥
सो वृत्तांत वालि सब जाना ❀ इहाँ न आवत कृपानिधाना ॥
सुनि सुग्रीव वचन भगवाना ❀ बोले हरि हँसि धरि धनुवाना ॥

इति क्षेपक ।

दोहा-सुन सुग्रीव मैं मारिहौं, वालिहि एकहि बाण ॥
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण ॥ १४ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ तिन्हैं विलोकत पातक भारी ॥
निजदुख गिरिसमरजकरिजाना ❀ मित्रके दुख रज मेरु समाना ॥
जिनके अस मति सहज न आई ❀ ते शठ हठ कत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा ❀ गुणप्रगटै अवगुणहि दुरावा ॥
देत लेत मन शंक न धरहीं ❀ बल अनुमान सदाहित करहीं ॥
विपति काल कर शतगुण नेहा ❀ श्रुति कह संत मित्रगुण एहा ॥
आगे कह मृदु वचन बनाई ❀ पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चित अहिगति सम भाई ❀ अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥

दो०-मित्र मित्रसों प्रीतिकरि, हृदयआन मुखआन ॥
जाके मन वच प्रेमनहिं, दुरै दुराये जान ॥ १५ ॥

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी ❀ कपटी मित्र शूल समचारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे ❀ सब विधि करब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनो रघुवीरा ❀ वालि महाबल अति रणधीरा ॥

अथ क्षेपक ।

सप्त ताल ये कृपानिधाना ❀ बेधैं सबहिं एकही बाना ॥
चंद्र मंडलाकार सुहाई ❀ परैं एक बाणहि महि आई ॥
ताककरैं वाली प्रभु मरई ❀ नातौ श्रम मिथ्या कोउ करई ॥
सुनि बोले प्रभु शीतल बानी ❀ कपि चतुरई तोरि मैं जानी ॥
यहि विधि बलका करहु परेखू ❀ करहु तालकर चरित विशेषू ॥

१ रेणुका । २ पर्वत । ३ बरछीकी धारके समान । ४ हाथ ।

सुनि सुग्रीव हिये हर्षाना ❀ ताल वृक्ष कर चरित बखाना ॥
एकदिवस कपीश वन गयऊ ❀ वृक्ष फूल फल देखत भयऊ ॥
मन हर्षाय सात फल लीना ❀ जल मज्जनते शुचि सो कीना ॥
दोहा–लै आतुर चलि आयहु, पंपासर जगदीश ॥
करि अस्नान ध्यान पुनि, नाइ इष्ट कहँ शीश ॥ १६ ॥
राखे फल जे मगकरि दर्पा ❀ तेहि फल पर बैठा इक सर्पा ॥
शशिमंडल समान फन काढी ❀ देखि कपीश महारिसि बाढी ॥
अरे दुष्ट भख मोर नशावा ❀ यमपुर आज सदन तुव छावा ॥
नाहित शीश शाप लै मोरा ❀ वृक्ष फूटि निकसै तनु तोरा ॥
जहाँ जायकर बैठा वेदी ❀ निकसे तालवृक्ष तनु छेदी ॥
क्रोध निवारि वालि गृह आवा ❀ समाचार यह तक्षक पावा ॥
दोहा–पुत्रवधन सुनि क्रोधकरि, मनदुख भयोअपार ॥
निश्चय मारै वालिसो, जो इह वेधै तार ॥ १७ ॥
सो सब समाचार मैं जानव ❀ अस तव कहवनाथमन मानव ॥

इति क्षेपक ।

दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये ❀ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
"भये शतखण्ड वृक्षके जबहीं ❀ निकस्यो सर्प ताल तर तबहीं ॥
करि अस्तुति जब सर्प सिधावा ❀ निरखिहरीशप्रभुहिसुखपावा" ॥
देखि अमित बल बाढी प्रीती ❀ वालिवधन कर भइ परतीती ॥
बारहिं बार नाइ पद शीशा ❀ प्रभुहि जानि मन हर्ष कपीशा ॥
उपजा ज्ञान वचन तब बोला ❀ नाथ कृपा मन भयउअडोला ॥
सुख सम्पति परिवार बड़ाई ❀ सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥
ये सब राम भक्तिके बाधक ❀ कहहिंसन्त तव पद अवराधक ॥
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
वालि परमहित जासु प्रसादा ❀ मिलेहु राम तुमशमनविषादा ॥
स्वप्नेहुँ जेहि सन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई ॥

१ वालि । २ पवित्र । ३ सुग्रीव । ४ त्याग ।

अब प्रभु कृपाकरहु इहि भाँती ❀ सब तजिभजन करौंदिनराती ॥
सुनि विराग संयुत कपिबाणी ❀ बोले विहँसि राम धनुपाणी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई ❀ सखा वचन मम मृषा[1] न होई ॥
नट मर्कट[2] इव सबहिं नचावत ❀ राम खगेश[3] वेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❀ चले चाप[4] सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❀ गर्जिसि जाइ निकटबलपावा ॥
सुनत वालि क्रोधातुर धावा ❀ गहिकर चरण नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा ❀ ते दोउ बन्धु तेज बल सींवा ॥
कोशलेश[5] सुत लक्ष्मण रामा ❀ कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥
सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु ❀ छाँडहु मोह कहा मम मानहु ॥

दोहा—कहा वालि सुनु भीरु प्रिय, समदर्शी रघुनाथ ॥
जो कदापि मोहिं मारिहैं, तौ पुनि होब सनाथ ॥१८॥

असकहि चला महा अभिमानी ❀ तृण समान सुग्रीवहिं जानी ॥
वालि देखि सुग्रीवहि ठाढा ❀ हृदय क्रोध पुनि बहुविधिबाढा ॥
भिरेउ युगल वाली अतितर्जा ❀ मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा ❀ मुष्टिप्रहार वज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला ❀ बन्धु न होइ मोर यह काला ॥
एकरूप तुम भ्राता दोऊ ❀ तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव शरीरा ❀ तनु भा कुलिश गई सब पीरा ॥
मेली कण्ठ सुमनकी[6] माला ❀ पठवा पुनि बल देइ विशाला ॥
पुनि नानाविधि भई लराई ❀ विटप[7] ओट देखहिं रघुराई ॥

दोहा—बहु छल बल सुग्रीव करि, हृदयहारि भयमानि ॥
मारा वालिहि राम तब, हिये माँझ शर[8]तानि ॥ १९ ॥

परा विकल महि[9] शरके लागे ❀ पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
श्यामगात शिर जटा बनाये ❀ अरुण नयन शर चाप चढाये ॥
पुनि पुनि चितै चरणचितदीन्हे ❀ सफल जन्म माना प्रभु चीन्हे ॥

१ मिथ्या । २ बन्दर । ३ गरुड । ४ धनुषबाण । ५ दशरथ । ६ पुष्पोंकीमाला । ७ वृक्ष । ८ बाण । ९ पृथ्वी ।

हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा ❁ बोला चितै रामकी ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गुसाईं ❁ मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा ❁ कारण कवन नाथ म्वहिं मारा ॥
अनुज वधू भगिनी सुत नारी ❁ सुन शठ ये कन्यासम चारी ॥
इन्हें कुदृष्टि विलोकै जोई ❁ ताहि वधे कछु पाप न होई ॥
मूढ तोहिं अतिशय अभिमाना ❁ नारि शिखावन करेसि नकाना ॥
मम भुजबल आँश्रित तेहि जानी ❁ मारा चहसि अधम अभिमानी ॥
दोहा–सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ॥
प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि ॥ २० ॥
सुनत राम अति कोमल वाणी ❁ वालि शीश परस्यउ निजपाणी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना ❁ वालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं ❁ अन्तराम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल शंकर काशी ❁ देत सबहि समगति अविनाशी ॥
ममलोचन गोचर सोइ आवा ❁ बहुरि कि अस प्रभुबनहिबनावा ॥
छं.-सोनयनगोचरजासुगुणनितनेतिकहिश्रुतिगावहीं ॥
जिमिपवनमनगोनिरसकरिमुनिध्यानकबहुँकपावहीं
मोहिंजानिअतिअभिमानवशप्रभुकह्यउराखुशरीरहीं
असकवनशठहठकाटिसुरतरुवारिकरहिंकरीरहीं १ ॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देव यह वर माँगऊँ ॥
ज्यहि योनि जन्मौं कर्मवश तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥
यहतनय मम समविनयबलकल्याणपदप्रभुदीजिये ॥
गहि बाँह सुर नरनाह अंगद दासअपनोकीजिये ॥ २ ॥
दो.-रामचरण दृढ प्रीति करि, वालि कीन्ह तनु त्याग ॥
सुमन माल जिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग ॥ २१ ॥
राम वालि निज धाम पठावा ❁ नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
नानाविधि विलाप कर तारा ❁ छूटे केश न देह सँभारा ॥

❁ १ रक्षित । २ कल्पवृक्ष । ३ दया । ४ सुत । ५ बाट।

पुनि पुनि तासु शीश उर धरई ❀ वदन विलोकि हृदयमहँ हतई ॥
मैंपति तुमहिं बहुत समुझावा ❀ कालविवश पियमनहिं न आवा ॥
अंगद कहँ कछु कहन नपायहु ❀ बीचहिसुरपुर प्राण पठायहु ॥
तारा विकल देखि रघुराया ❀ दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया ॥
क्षिति[1] जल पावक[2] गगन[3] समीरा[4] ❀ पंचरचित यह अधम शरीरा ॥
प्रगटसो तनु तव आगे सोवा ❀ जीव नित्यतुमकेहिलगिरोवा ॥
उपजा ज्ञान चरण तव लागी ❀ लीन्हसि परम भक्तिवर माँगी ॥
उमा दारुयोषितकी नाईं ❀ सबहिं नचावत रामगुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा ❀ मृतक कर्मविधिवत सबकीन्हा ॥
रामकहा अनुजहि समुझाई ❀ राज्य देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरणनाइ करि माथा ❀ चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दोहा–लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज ॥
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज ॥ २२ ॥

उमा राम सम हित जग माहीं ❀ सुत पितु मातु बन्धुकोउनाहीं ॥
सुरनरमुनि सबकी यह रीती ❀ स्वारथलागि करैं सब प्रीती ॥
बालित्रास व्याकुल दिनराती ❀ तनु विवरण चिंता जर छाती ॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❀ अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ ॥
ऐसे प्रभु कहँ जो परिहरहीं ❀ काहेन विपति जाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई ❀ बहुप्रकार नृप नीति शिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा ❀ पुर न जाउँ दश चारि वरीशा ॥
गत ग्रीषम वर्षाऋतु आई ❀ रहिहौं निकट शैल परछाईं ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू ❀ सन्तत हृदय राखि ममकाजू ॥
तब सुग्रीव भवनफिरि[5] आये ❀ राम प्रवर्षण गिरि पर छाये ॥

दोहा–प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाइ ॥
राम कृपानिधि कछुक दिन, वास करहिंगेआइ ॥ २३ ॥

सुंदर वन कुसुमित[6] तरु शोभा ❀ गुंजत चंचरीक[7] मधुलोभा ॥

१ भूमि। २ अग्नि। ३ आकाश। ४ वायु। ५ गेह। ६ फूलेहुये। ७ भ्रमर।

कन्दमूल फल अतिहि सुहाये ❀ भये बहुत जबते प्रभु आये ॥
देखि मनोहर शैल अनूपा ❀ रहेतहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
मंगलरूप भये वन तबते ❀ कीन्ह निवास रमापति जबते ॥
मधुकर खग मृग तनुधरि देवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकी सेवा ॥
फटिकशिला अति शुभ्रसुहाई ❀ सुखआसीन तहाँ दोउ भाई ॥
कहत अनुजसन कथा अनेका ❀ भक्ति विरति नृपनीति विवेका ॥
वर्षाकाल मेघ नभ छाये ❀ गर्जत लागत परम सुहाये ॥

दोहा—लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत वारिद पेखि ॥
गृही विरति जिमि हर्षयुत, विष्णु भक्त कहँ देखि ॥ २४ ॥

घनघमण्ड नभगर्जत घोरा ❀ प्रियाहीन डर्पत मनमोरा ॥
दामिनि दमकि रही घन माहीं ❀ खलकी प्रीति यथा थिरनाहीं ॥
वर्षहिं जलद भूमिनियराये ❀ यथा नवहिं बुधविद्यापाये ॥
बूँद अघात सहैं गिरि कैसे ❀ खलके वचन सन्त सहैं जैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई ❀ जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा ढाबर पानी ❀ जिमि जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटिजलभरेतलावा ❀ जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महँ जाई ❀ होइ अचल जिमि जनहरि पाई ॥

दोहा—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परै नहिं पन्थ ॥
जिमि पाखण्ड विवादते, लुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥ २५ ॥

दादुर ध्वनि चहुँ ओर सुहाई ❀ वेद पढैं जनु बटु समुदाई ॥
नव पल्लव भे विटप अनेका ❀ साधुके मन जस होइ विवेका ॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ ❀ जिमि सुराज्यखल उद्यमगयऊ ॥
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी ❀ करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी ॥
शशि सम्पन्न सोह महि कैसी ❀ उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशितम घन खद्योत विराजा ❀ जनु दम्भिनकर जुरासमाजा ॥
महा वृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि स्वतंत्रहोइबिगरहिंनारी ॥

१ सीताजी । २ बिजुली । ३ मेघ । ४ पर्वत । ५ मैला । ६ समुद्र । ७ मेढक । ८ मदार ।

कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोहमदमाना ॥
देखियत चक्रवाक खगनाहीं ❀ कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊषर वर्षे तृण नहिं जामा ❀ सन्तहृदय जस उपज न कामा ॥
विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा ❀ बढै प्रजा जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ पथिकरहे थकिनाना ❀ जिमि इन्द्रियगण उपजे ज्ञाना ॥

दोहा–कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥
जिमिकुपूतकुलऊपजे, सम्पतिधर्मनशाहिं ॥ २६ ॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड तम, कबहुँक प्रगट पतंग ॥
उपजै विनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग ॥ २७ ॥

वर्षा विगत शरदऋतु आई ❀ देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महिछाई ❀ जनु वर्षाऋतु प्रगटबुढाई ॥
उदित अगस्त्य पन्थजलशोषा ❀ जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा ॥
सरिता सर जल निर्मल सोहा ❀ सन्तहृदय जस गत मद मोहा ॥
रस रस शोष सरित सरपानी ❀ ममता त्यागि करहिंजिमिज्ञानी ॥
जानि शरदऋतु खंजन आये ❀ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ॥
पंकन रेणु सोह अस धरणी ❀ नीति निपुण नृपकीजसकरणी ॥
जल संकोच विकल भये मीना ❀ विबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना ॥
बिनु घननिर्मल सोह अकाशा ❀ जिमिहरिजनपरिहरसबआशा ॥
कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी ❀ कोउ यक पाव भक्तिजिमिमोरी ॥

दोहा–चले हर्षि तजि नगर नृप,तापसवणिकभिखारि ॥
जिमि हरि भक्ति पाइ जन,तजहिंआश्रमीचारि ॥ २८ ॥

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा ❀ जिमि हरि शरण न एकोबाधा ॥
फूले कमल सोह सर कैसे ❀ निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे ॥
गुंजत मधुकर निकर अनूपा ❀ सुन्दर खगरव नाना रूपा ॥
चक्रवाक मनदुख निशि पेखी ❀ जिमि दुर्जन पर सम्पति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति वोही ❀ जिमि सुख लहै न शंकरद्रोही ॥

१ खेती । २ खडरैंचा । ३ चहला । ४ मछली । ५ वर्षा । ६ पानी ।

शरदातप निशि शशि अपहरई ❀ सन्तदरश जिमि पातक टरइ ॥
देखहिं बिधु चकोर समुदाई ❀ चितवहिंहरिजनहरिजिमि पाइ॥
मशक दंश बीते हिमत्रासा ❀ जिमिद्विज द्रोह कियेकुलनाशा॥
दोहा-भूमि जीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ ॥
सद्गुरु मिले ते जाहिं जिमि, संशय भ्रमसमुदाइ ॥२९॥
वर्षागत निर्मलऋतु आई ❀ सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एकबार कैसेहुँ सुधि जानौं ❀ कालहुजीतिनिमिष महँआनौं ॥
कतहुँ रहौ जो जीवति होई ❀ तात यत्न करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज्य कोष पुर नारी ॥
जेहि सायक मैं मारावाली ❀ तेहिशर हतौं मूढ कहँ काली ॥
जासु कृपा छूटे मद मोहा ❀ ताकहँ उमा कि स्वप्नेहु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी ❀ जिन रघुवीर चरण रतिमानी ॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना ❀ धनुष चढाइ गहे कर बाना ॥
दोहा-तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुणासीव ॥
भय देखाय लै आवहु, तात सखासुग्रीव ॥३०॥
यहाँपवनसुत हृदय विचारा ❀ राम काज सुग्रीव विसारा ॥
निकट जाइ चरणन शिरनावा ❀ चारिहु विधितेहिकहिसमुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भयमाना ❀ विषय मोर हरि लीन्हेउज्ञाना॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ वानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महँ आव न जोई ❀ मोरे कर ताकर वध होई ॥

अथ क्षेपक ।

सुनि पितु वचन बोल युवराजू ❀ विन हनुमंत होइ नहिं काजू ॥
जानैहै गिरि कंदर सागर ❀ चतुर विचक्षण बुधिबलनागर ॥
केशरिपुत्र पवनकर अंशा ❀ पठवहु नाथ करहु परशंसा ॥
तब सुग्रीव मारुति हंकारा ❀ राम काज जनि लावहु वारा ॥
पति आज्ञा धरिशीश सिधाये ❀ मारि फलांग पूर्वदिशि आये ॥

१ सम्पूर्ण । २ सजाना । ३ क्रोध । ४ भीति । ५ हनुमान् ।

सुनि हनुमंत मिलनसब आवहिं ❀ माथनाइ हितवचन सुनावहिं ॥
कारण कवन कीन्ह श्रम भारी ❀ तुम किष्किंधानाथ अघारी ॥
हमलायक जो कारज होई ❀ नाथ शीश धरि मानव सोई ॥
सुनि कपि कहानलावहुवारा ❀ तुमहिं वालिलघुवन्धु हँकारा ॥
आतुर जाहु न विलँब करेऊ ❀ परेकाज भारी मन धरेऊ ॥
सुनत वचन सब चले तुरंता ❀ जय सुग्रीव कहि गगन गहंता ॥
दोहा-असीलाख अरु सात शत, कपिदल दुरबलचंड ॥
नभ मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलि दंड ॥ २१ ॥
पठय तिनहिं तरक्यो हनुमाना ❀ रोहित पर्वत जाय तुलाना ॥
दुर्धर्षण सब बात सुनाई ❀ चला वीर केदलिवन आई ॥
गजसन कह सुनु वानर राजा ❀ पड़ा कठिन सुग्रीवहि काजा ॥
निजदल संग लाय सब लेहू ❀ धीरजता निजपतिको देहू ॥
भलेहि नाथ कहि सब उठिचले ❀ वसुधा हली शेष कलमले ॥
पद्म सात दल असी करोरी ❀ चले द्विरद गज भई अँधेरी ॥
हनुमत व्याहर पर्वत आवा ❀ जेठ पुत्र बलि वीर बुलावा ॥
तीसलाख दल साठि हजारा ❀ पवनपुत्र सब कीन्ह जोहारा ॥
कारज होय सो आयसु दीजे ❀ इतना श्रम केहि कारण कीजे ॥
आज्ञाकरिय होय जो काजा ❀ कुशली हैं किष्किंधा राजा ॥
कपिपति रघुपति कथा सुनाई ❀ चला पवनसुत विदा कराई ॥
धुंधमार पर्वत नियराना ❀ कहतहिं श्रीखँडकीन पयाना ॥
छपनकोटि वनचर लै साथा ❀ करी प्रणाम चले कपिनाथा ॥
तब हनुमत अंजनिगिरि आवा ❀ कुमुदनाम कपि वीर बोलावा ॥
पद्मसात अरु लाख सतासी ❀ धाये वीर महाबल रासी ॥
गगन मार्ग जय राम कहंता ❀ आयो नीलगिरी हनुमंता ॥
जहँ रह नील नाम कपिभारी ❀ अग्नि पुत्र दल बुधि अधिकारी ॥
मारुतसुत तेहिं मर्म बुझावा ❀ मेघ समान गर्जि कपिआवा ॥
अर्बुदचारि चारि सतवारा ❀ समरधीर सब सुभट जुझारा ॥
गहेवृक्ष आयुध वनचारी ❀ चले सकल जैराम पुकारी ॥

पवनपुत्र उत्तर दिशि गयऊ ❀ बद्रिक आश्रमपरसत भयऊ ॥
आतुर गँधमादन पर गयऊ ❀ जल तड़ाग देखत सुख लहेऊ॥
दोहा-गजगवाक्षकहँमिल्योपुनि, बहु प्रकारसमुझाइ॥
नाइमाथ अस्तुति करत, चले वीर हर्षाइ ॥ ३१ ॥
हनुमत अर्जुनगिरिपर आवा ❀ तारा तात वीर तहँ पावा ॥
नाम सुषेण महाबल वीरा ❀ बुधि बल तेज समर रणधीरा ॥
समाचार पुनि ताहि सुनावा ❀ चलि हनुमंत सुमेरहिं आवा॥
कनक वर्णसम दीपित काया ❀ नेत्रलाल अति विपुल सुहाया ॥
पवन प्रसून गगन पर गर्जें ❀ राक्षस देखि काल सम तर्जें ॥
लँगुर उठाय शीश पर लाये ❀ मानहु मघवा धनुष सुहाये ॥
एक एक सन वचन सुनावा ❀ हनुमतचरणन शिर तिन नावा॥
काया कष्ट कीन केहि काजा ❀ कुशल अहहिं किष्किधा राजा॥
कपि तहँ समाचार सबभाषा ❀ चले दरशकारण अभिलाषा ॥
दोहा-दश करोरि नवलाखअरु,बीस सहस शत एक॥
चले केसरी संगलै, करत चरित्र अनेक ॥ ३२ ॥
ताहिहु बिदाकीन्ह कपिपवना ❀ रुद्रगिरी कैलासहि गवना ॥
कपिबल पुरद ताहि कर नाऊँ ❀ रखवारी अलकापुर गाऊँ ॥
महातेज बल दुर्गम काया ❀ मर्म चतुर जानत सब माया ॥
सुनि सो मारुतसुत पहँ आवा ❀ लै सँग सैन शीश तेहि नावा॥
पूँछा कवन काजहै नाथा ❀ दीन दरश हम भये सनाथा ॥
नृप सुग्रीवके तुम परधाना ❀ आज्ञा देहु वेगि हनुमाना ॥
कहा पवनसुत विलम न लावहु ❀ लै निज सैन पंपपुर धावहु ॥
जय रघुवीर अनुज लघुवाली ❀ सजि दल चले मेदिनीहाली ॥
सिंहनाद करि पूँछ उठाये ❀ दरश उछाह सकल उठिधाये ॥
रहा न कोउ पवनसुत प्रेरा ❀ मैनागिरिहि हिमाचल हेरा ॥
प्रेम सहित कपि सकल बुलाये ❀ आस वासना करत पठाये ॥
अंडक नाम महाबल कीशा ❀ चले कहत जय राम अहीशा॥

ताहि बिदाकर पवनकुमारा ❀ विंध्याचल कहँ शीघ्र पधारा ॥
नाम बसन्त महाबलवाना ❀ लेनिजदलकपि निकट तुलाना ॥
इंद्रकेलिके वन कपि जेते ❀ हनुमति चरण गहे सब तेते ॥
आठ पद्म अरु सहसअठासी ❀ चले तहाँ जहँ हैं अविनासी ॥
राम काम हनुमत हिय धारे ❀ कश्यप पर्वत जाय पुकारे ॥
नाम मयंद महाबल वीरा ❀ तेजपुंज अति दुर्ग शरीरा ॥
इकिसकोटि वनचर लै साथा ❀ पवनकुमारहि नायउ माथा ॥
कहा पवनसुत जानहु तोहीं ❀ धन्यभाग्य दर्शन भा मोहीं ॥
करहु न वेर सुनहु बलसींवा ❀ तुम्हहिं बोलाय वेगि सुग्रीवा ॥
दोहा-सुनत मयंद मयंद गति, उच्छलंत आकाश ॥
अट्टहास गंभीर करि, सैन बोलाइसि पास ॥ ३४ ॥
टिड्डी समान सैन उथलानी ❀ चलते दिगपालक भय मानी ॥
आतुर चले गगन करि छाहीं ❀ उठे लंगूर पतंग छिपाहीं ॥
एक नीलदल तीस करोरा ❀ धावत एक एक बर जोरा ॥
जय सिंहनाद करत बल दापा ❀ देखन लाग पेटमें चापा ॥
राम स्वरूप हिये जहँ आना ❀ करि दल बिदा चलहनुमाना ॥
रसनाकरै राम गुण गाना ❀ धवलागिरि का कीन्ह पयाना ॥
दुर्गवनाम वानर बड योधा ❀ ताहि बोलाय दीन वर बोधा ॥
आठ लाख शतवार गनाई ❀ लै सँग सैन पंपपुर जाई ॥
हनुमत उदयागिरिपर आवा ❀ बंदर धाय परे तेहि पावा ॥
कुंद कुमुद बंदर जे गाये ❀ जे जहँ रहे वनचर सब छाये ॥
शब्द किलकिलानभपरकरहीं ❀ वन सर शैल धरा सब धरहीं ॥
दोहा-रामकाज करि पवनसुत, आये जहँ सुग्रीव ॥
मिले हर्षि अस्तुति करि, धन्यधन्य बलसींव ॥ ३५ ॥

इति क्षेपक ।

तब हनुमन्त बुलाये दूता ❀ सबकरकरि सन्मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई ❀ चले सकल चरणन शिरनाई ॥

तेहि अवसर लक्ष्मण पुरआये ❀ क्रोध देखि जहँ तहँ कपिधाये ॥
दोहा-धनुष चढाइ कहा तब, जारि करौं पुर छार ॥
व्याकुल नगर देखि तब, आवा वालिकुमार ॥ ३६ ॥
चरणनाइ शिर विनती कीन्ही ❀ लक्ष्मण अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनि काना ❀ कहकपीशअतिशयअकुलाना ॥
तुम हनुमन्त संग ले तारा ❀ करि विनती समुझाउकुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना ❀ चरणवन्दि प्रभुसुयशबखाना ॥
करि विनती मन्दिर लै आये ❀ चरण पखारि पलँग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा ❀ गहिभुज लक्ष्मणकण्ठलगावा ॥
नाथ विषय सम मदकछु नाहीं ❀ मुनि मनमोहकरै क्षणमाहीं ॥
सुनत विनीतवचन सुखपावा ❀ लक्ष्मणतेहिबहुविधिसमुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई ❀ ज्यहिविधि गये दूतसमुदाई ॥
दोहा-हर्षि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिसाथ ॥
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ ॥ ३७ ॥
नाथ चरण शिर कह कर जोरी ❀ नाथ मोरि कछु नाहिन खोरी ॥
अतिशय प्रबल देव तव माया ❀ छूटे तबहिं करहु जबदाया ॥
विषयविवश सुरनरमुनिस्वामी ❀ मैं पामर पशुकपि अतिकामी ॥
नारि नयन शर जाहि न लागा ❀ महाघोरनिशि सोवत जागा ॥
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया ❀ सो नर तुम समानरघुराया ॥
यह गुण साधनते नहिं होई ❀ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई ❀ तुमप्रियमोहिंभरतजिमिभाई ॥
अब सोइ यत्न करहु मनलाई ❀ जेहिविधि सीताकी सुधिपाई ॥
दोहा-इहिविधि होत बतकही, आये वानर यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल, देखिय कीश वरूथ ॥ ३८ ॥

१ सुग्रीव । २ लक्ष्मणजी । ३ विषय कही इन्द्रियासक्त-मोर, तोर, तैं, मैं, मद, अष्टजाति । कुल रूप, यौवन, विद्या, धन, ज्ञान, ध्यान, मान । ४ आवरण । ५ जीवको परमेश्वर समान क्यों कहा यहाँ यह ध्वनि है कि, जे काम क्रोध लोभ हैं तहाँ कामको सहायक मद है अरु वनिता स्थाई है अरु क्रोधको सहायक मोह है अरु अहंकार स्थाई है अरु लोभको सहायक मात्सर्य कही ईर्षा है अरु दम्भ स्थाई है इनको जो जीते और श्रीरामचन्द्रको भजन करै ते सारूप्यमुक्तिको प्राप्त होते हैं. ताते जीवको रामस्वरूप कहा है ।

वानर कटक उमा मैं देखा ❀ सो मूरख जो किय चह लेखा ॥
आय राम पद नावहिं माथा ❀ निरखि वदन सब होहिंसनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं ❀ राम कुशल पूँछी जेहि नाहीं ॥
यह नहिं कछु प्रभुकी अधिकाई ❀ विश्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई ❀ कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा ❀ वानर यूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहु जाई ❀ मास दिवस महँ आयहु भाई ॥

अथ क्षेपक ।

तब कपीश दुइ दूत बुलाये ❀ गज गवाक्ष आतुर चलि आये ॥
मन बुधि निगम केरगतिजानी ❀ बोलेउ कीश सुधासम बानी ॥
सिय खोजनहित पूर्व सिधायउ ❀ रामकाजकहँ विलँबनलायउ ॥
उदधि सोत सरिता गिरि झरना ❀ ब्रह्मपुरी कामावति वरना ॥
सर वापी गिरि कंदर जेते ❀ देवनगर खोहादिक तेते ॥
जोकोउ तुमहिंमिलहिं मगमाहीं ❀ सीता सुधि पूँछहु तिनपाहीं ॥
दोहा-राम चरण परणाम कर,उर धरि युगल स्वरूप ॥
सात कोटि वानर बली, चले पूर्व कहँ भूप ॥
वाली अनुज सुषेण बुलावा ❀ करि सन्मान निकट बैठावा ॥
तुम मयंद उत्तरदिशि जाहू ❀ सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥
मादनगंध सुमेरु महीधर ❀ अर्जुन शैल नीलगिरि कंदर ॥
शिव कैलास अलक पुरछानी ❀ गँधरब यक्ष पूँछ मृदुवानी ॥
इनहिं पूँछ आगे धरि पाऊँ ❀ जायहु दिव्य सरोवर ठाऊँ ॥
पुष्प भार जहँ विटप सुहाये ❀ परसतहैं धरणी नियराये ॥
श्रमनिवारि कछु करहु अहारा ❀ प्रभु कारज हिय धरहु करारा ॥
दोहा-ऋषि तपस्विन सों बूझिकै, करहु बलिष्ठ पयान॥
रैवत भूमि उत्तर दिशा, अन्त धराको जान ॥
शिखर सुमेरु मही कैलासू ❀ काक भुशुंडि केर वनवासू ॥
कुंड एक तहँ मोती चूरा ❀ पानी अमृत कीच कपूरा ॥

जमुनी वृक्ष अहै तेहि ठाऊँ ❀ जम्बूद्वीप जासु ते नाऊँ ॥
गज समान लागे फल ताही ❀ अमृत रस कहि निगम सराही ॥
पकत सो फल धरणीपर परई ❀ तेहिके शाक कुंड बहु भरई ॥
दिव्यरूप चढ देव विमाना ❀ तेहिके नीर करहिं अस्नाना ॥
सो शुभ नीर सरितहोयवहई ❀ अवध समीप प्रसिद्ध सो अहई ॥
जहँ मज्जन कीनेते वीरा ❀ सकल पाप दुख हरै शरीरा ॥
फलभोजन जल पान करेहू ❀ राम काज हित हिये धरेहू ॥
शूरसेन कर मंडप जहाँ ❀ सुमिरि राम जायहु पुनितहाँ ॥
लोमशऋषि कर दर्शन करहू ❀ पुनिशांडिल्य जहाँ अनुसरहू ॥

दोहा-रनवनघनजनशोधिकै, सियाबलाबहुराम ॥
मासदिवस महँ आतुर, फिरहु लहहु विश्राम ॥

निज प्रभुकेरि मानि हितवानी ❀ शीशधरे प्रभु चरणन आनी ॥
निदरि पवन दोऊ उठि चले ❀ प्रभु एकादश बनचर भले ॥
पुनि सुग्रीव मोर मुख देखी ❀ वीर सतवालिहि कहा विशेषी ॥
सुनहु सुवीर प्राण हितकारी ❀ राम काज हिय धरहु सँभारी ॥
तुमवसंत पश्चिम दिशिगवनी ❀ सीता सुधि पूँछहु सब अवनी ॥
पश्चिमदेश शैल सर जायहु ❀ अग्निदेव करजोर मनायहु ॥
खोजो सब तहँके अस्थाना ❀ रामकाज हित करहु पयाना ॥
रंगभूमि जायहु पुनि भाई ❀ सीता सुधि पूँछेउ सब ठाँई ॥
सरिता शैल सुगिरि वन जेते ❀ खोजहु सीतहि हित धरि तेते ॥
जो कोउ मिलै महामुनिज्ञानी ❀ पूँछहु समाचार मृदु वानी ॥
तुम्हरे बल गर्जत मैं भाई ❀ मिलवहु वेगि जानकिहि आई ॥

दोहा-पश्चिम दिशा विशेषसो, जहाँ [illegible]को अन्त ॥
एकमास में लेइ सुधि, फिरो वेग बलवन्त ॥

चरण कमल सब करहिं प्रणामा ❀ पश्चिमदिशा चले बलधामा ॥
दशषटलाख हरी हर बोलत ❀ चले जाहिं गिरि कन्दर तोलत ॥

इति क्षेपक ।

अवधि मेटि जो विनुसुधिपाये ❀ अवशिमरी सो ममकर आये ॥

दोहा–वचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त ॥
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगदादि हनुमन्त ॥ ३९ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❀ जाम्बवन्त मतिधीर सुजाना ॥
सकलसुभटमिलि दक्षिणजाहू ❀ सीता सुधि पूँछहु सब काहू ॥
मनवचक्रमसों यतन विचारेहु ❀ रामचन्द्र कर काजसँवारेहु ॥
भानुपीठ सेइय उर आगी ❀ स्वामी सेइय सब छलत्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका ❀ मिटहिं सकलभवसंभवशोका ॥
देह धरेकर यह फल भाई ❀ भजिय राम सब काम विहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बडभागी ❀ जो रघुवीर चरण अनुरागी ॥
आयसु माँगि चरण शिरनाई ❀ चले सकल सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय शिरनावा ❀ जानि काज प्रभुनिकटबुलावा ॥
परसा शीश सरोरुह पानी ❀ कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु ❀ कहि बलविरह वेगि तुम आयहु ॥
हनुमत जन्म सफल करि जाना ❀ चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❀ राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दोहा–चले सकल वन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ॥
रामकाजलवलीन मन, बिसरा तनु कर छोह ॥ ४० ॥

कतहुँ होइ निशिचरसन भेंटा ❀ प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
वज्रदंड इक राक्षस आवा ❀ देखत कपिन परम दुख पावा ॥
भीमरूप यह को अब आवा ❀ लखि अंगद क्रोधित उठिधावा ॥
देखत ताहि कोप युवराजा ❀ सन्मुख जाय ताहि सन बाजा ॥
मल्लयुद्ध अति भयो अपारा ❀ सब वानरमिल कीन्ह विचारा ॥
प्रथम पयानकाल चलिआवा ❀ कह कपिविधि का कीनबनावा ॥
बालिसुवन तब हृदय विचारा ❀ मुष्टिक एक तासु शिरमारा ॥
रामरूप हृदयमें आनी ❀ अर्द्ध ऊर्ध्व धरि चीर भवानी ॥
भैजो शब्द भयो तेहि बारा ❀ पवनपुत्र हिय हर्ष अपारा ॥

१परलोक कही मोक्ष, सालोक्य, सामीप्य सारूप्य, सायुज्यत्यदिचारिउके पति श्रीरामचन्द्र तिनकर सेवनकरिये। २ सम्भवकही उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मात्सर्यादि।

बीसकोटि सँग सेन सुहाई ❀ चले सकल जय कहि रघुराई ॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं ❀ कोउमुनिमिलैताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिशय अकुलाने ❀ मिलै न जल थन गहन भुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना ❀ मरण चहत सब बिनु जलपाना ॥
चढिगिरि शिखर चहूँदिशिदेखा ❀ भूमि विवर इक कौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उडाहीं ❀ बहुतक खगप्रविशहिं तेहिमाहीं ॥
गिरिते उतरि पवनसुत आवा ❀ सब कहँ लै सो विवर दिखावा ॥
आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा ❀ पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा ॥
"योजन चारि दुर्गअतिबाँकी ❀ मय दानव गढ कीना ढाँकी" ॥

दोहा—दीख जाइ उपवन सुभग, सरविकसे बहु कंज ॥
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तप पुंज ॥ ४१ ॥

दूरिहिते त्यहि सब शिरनावा ❀ पूँछेसि निज वृत्तांत सुनावा ॥
तब तेइँ कहा करहु जल पाना ❀ खाहु सरस सुन्दर फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये ❀ तासुनिकट पुनिसबचलिआये ॥
तेहि सब आपनि कथा सुनाई ❀ मैं अब जाव जहाँ रघुराई ॥
" देवांगना सुनाम हमारी ❀ एकसमय तपकरन विचारी ॥
ब्रह्मासे माँगेउँ बरदाना ❀ दर्शन मैं पाऊँ भगवाना ॥
ब्रह्मा कह्यो रह्यो यहि थाना ❀ आवहिं यहाँ कीश बलवाना ॥
तिनसों राम खबर तुम पाई ❀ दर्शन पावहुगी रघुराई ॥
सो वह सत्य भई अब बानी ❀ जाउँ दर्शहित शारँगपानी ॥
मूँदहु नयन विवर तजि जाहू ❀ पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥
नयनमूँदि तब देखहिं वीरा ❀ ठाढे सकल सिन्धुके तीरा ॥
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा ❀ जाइ कमलपद नायेसि माथा ॥
नानाभाँति विनय त्यइँ कीन्ही ❀ अनपावनी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥

दोहा—बदरीवन कहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि शीश ॥
उर धरि राम चरण युग, जो वंदित अज ईश ॥४२॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं ❀ बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥

सब मिलि करहिं परस्पर बाता ❀ बिनु सुधि लिये करबका भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी ❀ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहाँ न सुधि सीताकर पाई ❀ वहाँगये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधे परमारत मोही ❀ राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कहँ सबपाहीं ❀ मरण भयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन सुनत कपिवीरा ❀ बोल न सकहिं नयन बह नीरा ॥
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये ❀ पुनि अस वचनकहत सब भये ॥
हम सीताकी बिनसुधिलीन्हे ❀ फिरब न सुनु युवराज प्रवीने ॥
असकहि लवणसिन्धुतटजाई ❀ बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जाम्बवन्त अंगद दुख देखी ❀ कही कथा उपदेश विशेखी ॥
तात राम कहँ नरजनि जानहु ❀ निर्गुणब्रह्म अजित अजमानहु ॥
हम सब सेवक अति बड़ भागी ❀ सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥
दो.-निज इच्छाअवतरेउ प्रभु, सुरद्विजगोमहिलागि ॥
सगुणउपासकरहहिंसब, मोक्षसकलसुखत्यागि॥४३॥
यहिविधि कहत कथाबहु भाँती ❀ गिरिकन्दरा सुना सम्पाती ॥
बाहरहोइ देखे सब कीशा ❀ मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥
आजु सबनकहँ भक्षण करऊँ ❀ दिन बहुगए अहार बिनु मरऊँ ॥
कबहुँन मिलि भरिउदर अहारा ❀ आजु दीन्ह विधि एकहि बारा ॥
डरपे गृध्र वचन सुनि काना ❀ अबभा मरण सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी ❀ जाम्बवन्त मन शोचविशेखी ॥
कहविचारि अंगद मन माहीं ❀ धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं ॥
रामकाज कारण तनु त्यागी ❀ हरिपुर गयउ परम बड़भागी ॥
जो रघुवीर चरण चित लावे ❀ तिहिसम धन्य न आन कहावे ॥
सुनि खग हर्ष शोक युतबानी ❀ आवा निकट कपिन भयमानी ॥
ताहि देखि सब चले पराई ❀ ठाढ कीन्ह तिन्ह शपथ दिवाई ॥
तिन्हें अभयकरि पूँछेसि जाई ❀ कथा सकल तिन ताहि सुनाई ॥

१ कुश। २ सात्विक, राजस, तामस, तीनिउ गुणके परे हैं अरु अजित कही कालहूके जीतिवे योग्यहैं काल जिनकी आज्ञामें है।

सुनि सम्पाति बन्धुकी करणी ❀ रघुपतिमहिमा बहुविधि वरणी ॥
दोहा-मोहिं लै चलहुसिन्धु तट,देउँ तिलाँजलि ताहि॥
वचन सहाय करबमें, पैहहु खोजहु जाहि ॥ ४४ ॥
अनुज क्रियाकरि सागरतीरा ❀ कह निजकथा सुनहु कपिबीरा ॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई ❀ गगन गये रवि निकट उड़ाई ॥
तेज नसहि सक सोफिरि आवा ❀ मैं अभिमानी रवि नियरावा ॥
जरे पंख रवितेज अपारा ❀ पऱ्यउँभूमि करि घोर चिकारा ॥
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही ❀ लागी दया देखि कर मोही ॥
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान शिखावा ❀ देह जनित अभिमान छुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं ❀ तासु नारि निशिचरपति हरिहैं ॥
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता ❀ तिन्हैं मिले तुम होव पुनीता ॥
जमिहहिं पंखकरसिजानि चिंता ❀ तिन्हैं देखाइ देव तैं सीता ॥
यहकहिमुनि निजआश्रम गयऊ ❀ तिहिक्षणहृदयज्ञान कछुभयऊ॥
"पुनि संपाती वचन उचारी ❀ सुनो गिरा मम्हू हितकारी ॥
पुत्र मोर सुमन तेहि नाऊँ ❀ सेवत मोहिं सदा यहि ठाऊँ ॥
दोहा-क्षुधावन्त यक दिन भयउँ,कहीपुत्र सुन बात ॥
वेग भक्षले आवहू, नतो प्राण मम जात ॥
सुत शिर आज्ञा धारि सिधावा ❀ मोहिं धीरज दे बहुसमुझावा ॥
नभपथहोय महा बन गयऊ ❀ गज मृगराज हनत बहुभयऊ ॥
अस्त पतंग बहुरि घर आवा ❀ क्षुधावश्य मैं क्रोध बढ़ावा ॥
ज्ञान रंक मैं अधम अभागा ❀ सुतको शाप देन तब लागा ॥
गहि मम बाहु कहेउ समुझाई ❀ सुनहु तात मम वच चितलाई ॥
जब आरण्य गयउँ मैं ताता ❀ तहँ पुनि एक भयउ उत्पाता ॥
बीसभुजा दश मस्तक ताँही ❀ आतुर चलेउ जात मगमाहीं ॥
संग नारि यकदिव्य अनूपा ❀ कोउ नहिं वरणसकै तेहि रूपा ॥
कोटि सुधाकर नख बलिहारी ❀ रंभा रती शचीसी नारी ॥
जंतु जान तेहि धरा पछारी ❀ दीनो छोड निरख सोइ नारी ॥

करमोहिं विनय दछिण दिशि [illegible]ऊ ❀ यहि कारणविलंबमोहिंभयऊ॥
सुनत वचन मोहिं लागि अँगारा ❀ आपनि गति विचार हिय हारा ॥
मैं तनु पंख हीन का करऊँ ❀ आतुर जाय ओहि अब धरऊँ ॥
दोहा–पंखहीन [illegible]वसर गये, सुत बल कीन धिकारि॥
गहि मम निकट न लायहू, हती रामकी नारि ॥
तब मुनिवचन ध्यान हियआवा ❀ हियमें धीरज तब कछु पावा ॥
यहि मिस राम जो दूत पठावहिं ❀ सियसुधिलेन अरण्यहिंआवहिं॥
देखत दरश होव बड़भागी ❀ तुव मग देखत मन अनुरागी"॥
सदा राम कर सुमिरण करऊँ ❀ निशिदिनमगजोवतदिनभरऊँ ॥
मुनिकी गिरा सत्य भइ आजू ❀ सुनि मम वचन करहु प्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ❀ तहँ रह रावण सहज अशंका ॥
तहाँ अशोक वाटिका अहई ❀ सीय बैठि तहँ शोचति रहई ॥
दोहा–मैं देखौं तुम नाहिंन, गृध्रहिंदृष्टि अपार ॥
बूढ भयो नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥४५॥
जो लाँघै शत योजन सागर ❀ करै सो राम काज अति आगर॥
जो कोइ करै रामकर काजू ❀ तेहि सम धन्यआननाहिं आजू ॥
मोहिं विलोक धरहु मन धीरा ❀ राम कृपा कस भयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर सुमिरण करहीं ❀ अति अपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई ❀ रामहृदय धरि करहु उपाई ॥
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ ❀ सबके मनअतिविस्मयभयऊ ॥
निज निज बल सबकाहू भाखा ❀ पारजान कर संशय राखा ॥
जरठ भयों अब कह ऋक्षेशा[1] ❀ नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा॥
जबहिं त्रिविक्रम[2] भये खरारी[3] ❀ तब मैं तरुण रह्यों बल भारी ॥

अथ क्षेपक ।

दोहा–घेरि अंगदहि सब कहा, अब कछु करहु उपाय॥
है कोउ सुभटप्रवीणअस, समुद्रउलँघिजोजाय ॥४६॥

१ जाम्बन्त । २ वामनरूप । ३ परमेश्वर ।

बोला विकट सुनहु युवराजू ❀ योजनवीस उलंघहुँ आजू ॥
नील कहा चालिस मैं जाऊँ ❀ आगे परत मोर नहिं पाऊँ ॥
नील वचन सुनि दुर्धर कहई ❀ योजन पचास मोर वल अहई ॥
बोल्यो नल दुइ भुजा उठाई ❀ योजन साठि मोरि गति भाई ॥
दधिमुख कह अस्सी उपरंता ❀ योजनसात जातु वलवंता ॥
सुनहु वचन मम सुभट प्रवीना ❀ आगे होइ मोर वलहीना ॥
सुनि सब वचन बोल युवराजू ❀ यहि वल होइ न प्रभुकरकाजू ॥
बहु दुख कृशि तब अंगद देखी ❀ जाम्बवंत तब कहा विशेपी ॥
बूढ भयउँ अब कहेउ ऋक्षेशा ❀ नहिं तनु रहा प्रथम वललेशा ॥
वृद्ध भये वल ऐसा भाई ❀ नाँघत पलमें जलनिधि धाई ॥
सब कहि बात सत्य सन्मानी ❀ भानी सत्य कर्म्म मन वानी ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी ❀ तब मैं तरुण रहा वलभारी ॥
यक दिन बद्रिक आश्रमगयऊ ❀ अरन विलोकि महासुखभयऊ ॥
भक्षण करि फल पीन्हा पानी ❀ वैठेउँ एक शिलासुख मानी ॥
ब्रह्मज्ञानी इक विप्र सुजाना ❀ वैठि अराधत श्रीभगवाना ॥
ताहि वधन यक दानव आवा ❀ देखत नयनक्रोध मोहिं छावा ॥
मुनिभय देखि गयउँ तेहिसामू ❀ तैं द्रुततर कीन्हा असकामू ॥
तीस योजन इक शैल उठाई ❀ मारसि मोहिं गोडमें आई ॥
लागत गिरि तनु सहा प्रहारा ❀ भया क्रोध तेहि अवनि पछारा ॥
चीरेउ दोउ चरण करि रीसा ❀ सुखपायो द्विज दीन अशीसा ॥
सोबल नहिं अब तुमहिं बखानू ❀ सुनत बात सबअचरजमानू ॥
शैल प्रहार करत मम पाऊँ ❀ योजन नवे पाँच महँ जाऊँ ॥

इति क्षेपक।

दोहा-बलि बाँधत प्रभु बाढेउ, सो तनु वरणि नजाइ ॥
उभय घरी महँ दीन्हमैं, सात प्रदक्षिण धाइ ॥ ४७ ॥

अंगद कहा जाउँ मैं पारा ❀ जिय संशय कछु फिरती बारा ॥
जाम्बवंत कह तुम सब लायक ❀ किमिपठवौं सबही कर नायक ॥

१ मारनेके कारण। २ पृथ्वीमें। ३ विप्र। ४ शरीर।

कहाऋक्षेपति सुनु हनुमाना ❀ का चुपसाधि रह्यो बलवाना ॥
पवनतनय बल पवन समाना ❀ बुधि विवेक विज्ञान निधाना ॥
कौनसो काज कठिन जगमाहीं ❀ जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥

❀ अथ क्षेपक ।

तव उत्पति अब कहौं सहेता ❀ सुनहु सकल बैठे इहरेता ॥
हिमचल पर्वतके यक पासा ❀ कश्यपऋषि तप तेज प्रकासा ॥
दिग्गज इक ऐरावतकी सम ❀ आयो ऋषि सन्मुख दुर्धरजम ॥
निरखिताहि ऋषि सकलसकाने ❀ चले नचरणशिथिल भयसाने ॥
तात तोर तेहि वनकर राजा ❀ केसरिनाम तेज बल छाजा ॥
सो गज देखि मुनी तेहि ओरा ❀ हेकपि सकल शरणहे तोरा ॥
ऋषि दुख देखि दया मन माहीं ❀ धायो तुरत तात बलवाहीं ॥
भिऱ्यो ताहि यक मुष्टिक मारा ❀ उभय दशन गहि भूमि पछारा ॥
पऱ्यो धरणि करिघोरचिकारा ❀ तब मुनि होय प्रसन्न विचारा ॥

दो०-तव पितु बहु बलदेखि मन, मुनिवर दीन अशीश ॥
माँगु माँगु वर भाय मन, हेद्विजपाल कपीश ॥ ४८ ॥

सानुकूल तपस्वी कहँ जानी ❀ बोला तात जोरि युग पानी ॥
जो प्रसन्न मोपर भगवाना ❀ पुत्र देहु बल मरुतसमाना ॥
एवमस्तु कहि ऋषि तब गयऊ ❀ आगिलचरित सुनहुजोभयऊ ॥
माता तोरि अंजनी सती ❀ रूप अपार नहीं हियरती ॥
नवसत साजि शृंगार बनाई ❀ बैठी शैल शिखर पर जाई ॥
त्रिविध समीर बहे सुखदाई ❀ निरखत वन शोभाअधिकाई ॥
चीरउडावन पवन सुवसो ❀ भुजा दीर्घ करचाहतपसो ॥
देखि मातु तव क्रोध करेही ❀ लागी शाप देन पुनि तेही ॥
मारुत मधुरे वचन कहेऊ ❀ शाप न देउ वचन सुनि लेऊ ॥
तवपतिऋषिसन सुतवरमाँगा ❀ ताते परसि अंग तव लागा ॥
निज काया धरि मिले न तोहीं ❀ काहेक शाप देति तुम मोहीं ॥
असकहि पवन गुप्त होय रहेऊ ❀ सो तव माता पतिसन कहेऊ ॥

❀ १ स्थान । २ पर्वतका कँगूरा । ३ ठंढी मद सुगन्ध वायु । ४ वायु ।

अब तव जन्मकहउँ सुखखानी ❀ सुनहु सकल वन दीपकजानी ॥
शुभ नक्षत्र शुभ घरी सुहाई ❀ जन्मत भयउ देव वलपाई ॥
पुनि वरदान पवनकर दरशा ❀ वीरज तोहिं पिताकर परशा ॥
उदित भये दंपति सुख साने ❀ करहिं केलि वनमहँ सुखमाने ॥
एक दिवस माताकी गोदा ❀ करत रहेउ पयपान विनोदा ॥
देखेउ अरुण बंधु छवि लाला ❀ तडकि अकाश गयोततकाला ॥
सूर्यगहन जब भुजा पसारा ❀ क्रोधे इंद्र वज्र सो मारा ॥

दोहा-सहि प्रहार मन क्रोधकरि, धाहि पतंगहि लीन ॥
बाल अवस्था व्यसनते, सूरजका भषकीन ॥ ४९ ॥

अंधकार चारिउ दिशि भयऊ ❀ जप तप दान धर्म रहि गयऊ ॥
अस्तुति सुरन कीन्ह निजहेता ❀ बोले शिव गुण ज्ञाननिकेता ॥
धरहु धीर जनि होहु उदासा ❀ सब मिलि चलहु केशरी पासा ॥
शिव विरंचि सुर इंद्र समेता ❀ आये सकल केशरी निकेता ॥
कह सुत तोर सूर्य गहि लीना ❀ श्वास समीर रोकि दुखदीना ॥
तजहु भानु रहे प्राण भलाई ❀ तुम कहँ सुयश होय जगमाई ॥
जो मनभाव सो लेहु वरदाना ❀ तजहु पतंग होइ कल्याना ॥
देवगिरा सुनि सुंदर वाणी ❀ बोलतु तात जोरि जुगपाणी ॥
अमर अजीत सकल बलसागर ❀ सुतहि देहु वर देवन नागर ॥
राम भक्त अरु निकट निवासी ❀ यह वरदान देव बलरासी ॥
एवमस्तु सब देवन कीना ❀ सूर्य समीर छाँडि तब दीना ॥
दै वरदान देव सब गयऊ ❀ विचरे वनहि महा सुखभयऊ ॥
तात मात कर प्राण समाना ❀ इंद्र जुहनी नाम हनुमाना ॥
तजहु शोक मन आनहु धीरा ❀ सोहिं निश्चय सेवक रघुवीरा ॥
हनुमत वचन सुनत सबकाना ❀ जयजयजय सबकरहिं बखाना ॥
होइहै सिद्ध रामकर काजा ❀ अति सुख लहेउ हिये युवराजा ॥
जाम्बवंत औरो नल नीला ❀ अंगद आदि सुभट बलशीला ॥
मिलैं सबै हनुमंतहि धाई ❀ राम काज लग जानु सुभाई ॥

१ दूध । २ देवतन । ३ स्थान । ४ सूर्य । ५ वाणी । ६ अंगद ।

बोले पवनतनय सुखदानी ❀ धरहु धीर कारज शुभजानी ॥
कह हनुमंत सिंधुतन देखी ❀ राम रूप उर आनि विशेषी ॥
तब ऋक्षेश अस वचन उचारा ❀ सादर सुनहु समीरकुमारा ॥

इति क्षेपक ॥

राम काज लगि तव अवतारा ❀ सुनि कपि भयउ पर्वताकारा ॥
कनकवर्ण तनु तेज विराजा ❀ मानहुँ अपर गिरिनकर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा ❀ लीलहिं लाँघौं जलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी ❀ आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
जाम्बवन्त मैं पूंछौं तोहीं ❀ उचित शिखावन दीजे मोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई ❀ सीतहिं देखि कहो सुधि आई ॥
तब निज भुजबलराजिवनयना ❀ कौतुकलागि संगकपि सयना ॥
छं.-कपिसेन संग संहारिनिशिचररामसीतहिआनिहैं ॥
त्रयलोकपावनसुयशसुरमुनिनारदादिबखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं ॥
रघुवीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥
दोहा-भवभेषज रघुनाथ यश, सुनैं जो नर अरु नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि ॥ ५० ॥
सो०-नीलोत्पल तनुश्याम, कामकोटिशोभाअधिक ॥
सुनिय तासु गुणग्राम, जासु नाम अघ खग बधिक ॥ ३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतकिष्किन्धाकाण्डे चतुर्थःसोपानःसमाप्तः ॥ ४ ॥

इदं तुलसीकृतरामायणे किष्किन्धाकाण्डं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजेन क्षेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रायन्त्रालयेऽङ्कितं

१ हनुमानजी । २ भवकही संसार विषे जन्म मरण रोग सो नाश करिवेको भेषज कही औषध सजीवन मूरिहैं । ३ नीलमणि

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-



सुन्दरकाण्डम् ५.



सम्पूर्णक्षेपकोंसहित ।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

खेमराज श्रीकृष्णदासने

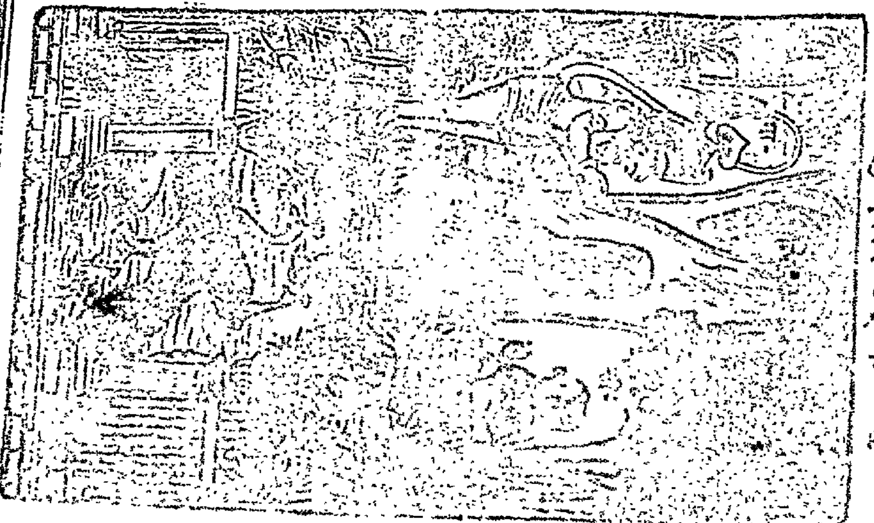
बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया.

❀ सुन्दरकाण्डम् ५. ❀

दोहा—यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जाने ते रघुपति कृपा, स्वप्नहु दुःख न होइ ॥



चौ०—तृषा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं सस सीस बिषाना ॥
अन्धकार बरु रविहि नशावै । रामविमुख सुख जीव न पावै ॥

❀ श्रीरामपञ्चायतन. ❀



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रामायणे सुन्दरकाण्डम् ।

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

श्लोक–शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशांतिप्रदं
ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्यास्पृहा रघुपते हृदये मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥

श्लोकार्थ–जो निरन्तर शान्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाणरहित पापरहित देवतोंको शान्ति देनेवाले ब्रह्मा शिवजी शेषजी करके नित्यही सेव्यमान वेदान्तसे जानने योग्य समर्थ राम जिनका नाम जगत्के ईश्वर देवताओंके गुरु मायाके मनुष्य विष्णु करुणाके खान रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ और राजाओंके चूडामणि हैं तिनको मैं नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

सो हेरघुपति ! मेरे हृदयमें और कोई इच्छा नहीं है यह मैं सत्य कहताहूं और आप सबके अन्तःकरणकी आत्माहैं हेरघुवंशियोंमें श्रेष्ठ मुझे पूर्ण भक्तिदो और मेरे मनको कामादि दोषोंसे रहितकरो ॥ २ ॥

अतुलित बलके घर सुवर्णके पर्वतकी कान्तिके समान देह राक्षसोंके व-

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम् ॥
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जाम्बवंतके वचन सुहाये ❀ सुनिहनुमान हृदयअतिभाये ॥
तबलगि मोहिं परखेहु भाई ❀ सहि दुख कन्द मूल फल खाई ॥
जबलगि आवों सीतहि देखी ❀ होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाइ सबनिकहँमाथा ❀ चलेहर्ष हियधरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर ❀ कौतुक कूदि चढे तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी ❀ तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरण देइ हनुमन्ता ❀ सो चलिजाय पताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना ❀ ताही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत विचारी ❀ कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥
"सो० सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाकतब ॥
कपि कहँ कीन्ह प्रणाम, बार बार करजोरिके" ॥
दोहा–हनूमानतेहि परसिकरि, पुनि तेहिकीन्हप्रणाम॥
रामकाज कीन्हे बिना, मोहिं कहाँ विश्राम ॥ १ ॥
जात पवनसुत देवन देखा ❀ जानाचह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिनेकी[1] माता ❀ पठइदेव कही तिन बाता ॥
आज सुरन मोहिं दीन्ह अहारा ❀ सुनि हँसि बोला पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवों ❀ सीताकी सुधि प्रभुहि सुनावों ॥
तब तव वदन पैठिहौं आई ❀ सत्य कहौं मोहिंजानदेमाई ॥
कवनिहुँ यतन देहि नहिं जाना ❀ ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना ॥
योजन भरि तेहँ वदन पसारा ❀ कपि तनु कीन्हदुगुनविस्तारा ॥
सोरहयोजन मुख तेहँ ठयऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥

की जलानेको अग्नि ज्ञानियोंमे अग्रगण्य सम्पूर्ण गुणोंके निधान वानरोंके राजा रामचंद्रके श्रेष्ठदूत वायुपुत्र हनुमान्‌की मैं वन्दना करताहूं ॥ ३ ॥

[1] सर्पोंकी माता । [2] मुखमें ।

जस जस सुरसा वदन बढावा ॥ तासु दुगुण कपिरूप दिखावा ॥
शतयोजन तेहि आननकीन्हा ॥ अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा ॥
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ॥ माँगी विदा ताहि शिरनावा ॥
मोहिं सुरन्ह जेहिलागि पठावा ॥ बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥

दोहा-राम काज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान ॥
आशिषदै सुरसा चली, हर्षि चले हनुमान ॥ २ ॥

निशिचर एक सिन्धु महँ रहई ॥ करि माया नभके खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं ॥ जल विलोकितिनकीपरछाहीं ॥
गहै छाँह सकसो न उडाई ॥ इहिविधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा ॥ तासुकपट कपितुरतहिंचीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत वीरा ॥ वारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहाँ जाइ देखी वन शोभा ॥ गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये ॥ खग मृग वृंद देखि मन भाये ॥
शैल विशाल देखि इक आगे ॥ तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा नकछु कपिकी अधिकाई ॥ प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरिपर चढि लंका तेहि देखी ॥ कहि न जाइ अति दुर्ग विशेषी ॥
अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा ॥ कनककोट कर परम प्रकाशा ॥

छंद समष्टी ।

कनककोट विचित्र मणि कृत सुन्दराजित अति घना ॥
चौहट्ट हाट सुघट्ट वीथी चारु पुर बहुविधि बना ॥
गजवाजि खच्चर निकर पदचर रथवरूथनिको गनै ॥
बहु रूप निशिचर यूथ अतिबल सेन वर्णत नहिं बनै ॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ॥
नर नाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैल समान अति बल गर्जहीं ॥

---

१ मुख । २ समुद्र । ३ घोडा । ४ समूह, झुंडके झुंड ।

नाना अखारन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं२॥
करियत्न भट कोटिन्हविकटतनुनगरचहँदिशिरक्षहीं॥
कहुँमहिष मानुष धेनु खर अजखलनिशाचरभक्षहीं॥
इहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही ॥
रघुवीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही३॥
दोहा–पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ॥
अति लघु रूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥३॥
मशक समान रूप कपि धरी ❀ लंका चले सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी ❀ सो कह चलेसि मोहिं निंदरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा ❀ मोर अहार लंक कर चोरा ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ❀ रुधिर वमत धरणी ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका ❀ जोरिपाणि कर विनय सशंका ॥
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ❀ चलतविरंचि कहा मोहिं चीन्हा ॥
"त्रेता राम लक्ष्मण औतरहीं ❀ भक्त हेतु मानुष तनु धरहीं ॥
तासु प्रिया रावण हर लावै ❀ सो अपनो यक दूत पठावै" ॥
विकल होसि जब कपिकेमारे ❀ तब जानसि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता ❀ देखेउँ नयन रामकर दूता ॥
दोहा–तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरी तुला इक अंग ॥
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई ❀ गोपद सिंधु अनल शितलाई ॥
गरुअ सुमेरु रेणुसम ताही ❀ रामकृपाकरि चितवहिं जाही ॥
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना ❀ पैठ्यो नगर सुमिरि भगवाना ॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिकरि शोधा ❀ देखे जहँ तहँ अगणित योधा ॥
गयेउ दशानन मन्दिर माहीं ❀ अति विचित्रकहिजातसोनाहीं ॥
शयन किये देखा कपि तेही ❀ मन्दिरमहँ न दीख वैदेही ॥

१ मशा । २ रक्त । ३ भू भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यं । ४मोक्ष । ५ तराजू ।

क्षेपक किसीमहात्माजीकीकल्पितउक्ति ।

निरखत मंदिर आयउ तहँवाँ ॥ कुम्भकर्ण सोवतरह जहँवाँ ॥
अतियकार तनु चितै नजाई ॥ चौंतिस योजनकी चकलाई ॥
योजन तीनि तीनिके काना ॥ बाइस योजन बाहु अजाना ॥
सत्रह योजन जाँघ लँबाई ॥ शतयोजन तनु वरणि नजाई ॥
दुइयोजनकै नाक जो बाढी ॥ योजन एक मूछ रहै ठाढी ॥
दोहा-षटमासकै नींद तेहि, सोवत भीतर लंक ॥
बाजत ढोल जुझाउ शिर, जागत नहीं अशंक ॥ ९ ॥
शोचै लाग कहाँ अब जाऊँ ॥ कहाँ दरश सीताकर पाऊँ ॥
विन देखे जो सीतहि जाऊँ ॥ कैसे वदन प्रभुहि दरशाऊँ ॥
कपि सब करैं मोर उपहासा ॥ लछिमन मोहिं देखावहिंत्रासा ॥
जाम्बवंत पूँछहि कुशलाता ॥ नीके अहहिं जानकी माता ॥
कवन उतर देहौं तिनजाई ॥ पवनतनय मनमहँ पछिताई ॥
निशिचर घोर भयंकर रहहीं ॥ सीताकी सुधि कोउ न कहहीं ॥
पूँछौं काहि कहौं केहिजाई ॥ जनकसुता सो देइ बताई ॥

इति क्षेपक ।

भवन एक पुनि दीख सुहावा ❀ हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा ❀ वरणि नजाइ देखि मन मोहा ॥
दोहा-राम नाम अंकित गृह, शोभा वरणि न जाय ॥
नवतुलसीके वृन्द बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥ ६ ॥
लंका निशिचर निकर निवासा ❀ यहाँ कहाँ सज्जन कर वासा ॥
मनमहँ तर्क करन कपि लागे ❀ ताही समय विभीषण जागे ॥
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा ❀ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ॥
इहिसनहठि करिहौं पहिचानी ❀ साधुते होइ न कारज हानी ॥
विप्र रूप धरि वचन सुनावा ❀ सुनत विभीषण उठितहँ आवा ॥
करि प्रणाम पूँछी कुशलाई ❀ विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥

१ राक्षस । २ विचार ।

की तुम हरिदासन महँ कोई ❀ मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
कीतुम राम दीन अनुरागी ❀ आयहु मोहिं करन बड़भागी ॥
दोहा-तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम ॥
सुनतयुगलतनुपुलकअति, मगनसुमिरिगुणग्राम॥७॥
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❀ जिमि दशनन महँजीभविचारी॥
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा ❀ करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं ❀ प्रीति न पद सरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता ❀ बिनु हरि कृपामिलहिंनहिंसंता॥
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा ❀ तौतुम मोहिं दरश हठि दीन्हा॥
सुनहु विभीषण प्रभु की रीती ❀ करहिं सदा सेवकपर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना ❀ कपि चंचल सबही विधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❀ तादिन ताहि नमिलै अहारा ॥
दोहा-अस मैं अधम सखा सुन, मोहू पर रघुवीर ॥
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर ॥ ८ ॥
जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ❀ तेनर काहे न होइँ दुखारी ॥
इहिविधि कहत रामगुणग्रामा ❀ पावन श्रवण सुखद विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही ❀ जेहि विधि जनकसुता जहँरही॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ❀ देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई ❀ चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
धरि सोइरूप गयउ पुनि तहँवाँ ❀ वन अशोक सीता रहजहँवा ॥
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ❀ बैठे बीति गई निशि यामा ॥
कृश तनु शीशजटा इक वेणी ❀ जपति हृदयरघुपतिगुणश्रेणी ॥
दो०-निज पद नयन दिये मन, राम चरण लवलीन ॥
परम दुखीभा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ॥ ९ ॥
तरु पल्लव महँ रह्यो लुकाई ❀ करै विचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा ❀ संग नारि बहु किये बनावा ॥

१ दाँतनमें । २ दया । ३ आँखोंमें । ४ जल । ५ एकपहर ।

बहु विधि खल सीतहि समुझावा ❀ साम दाम भय भेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखि सयानी ❀ मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं प्रणमोरा ❀ एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही ❀ सुमिरि अवधपति परमसनेही ॥
सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा ❀ कबहुँकि नलिनीकराहिंविकाशा ॥
असमन समुझत कहत जानकी ❀ खल नहिं सुधि रघुवीर बाणकी ॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं ❀ अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं ॥

दोहा–आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान॥
परुष वचन सुनि काढि असि, बोला अति खिसिआन॥

सीता तैं मम कृत अपमाना ❀ काटौं तव शिर कठिन कृपाना ॥
नाहित सपदि मानु मम वानी ❀ सुमुखि होत नतु जीवनहानी ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर ❀ प्रभुभुज करिकरसमदशकन्धर॥
सो भुजकंठ कि तव असिघोरा ❀ सुन शठ अस प्रमाण प्रणमोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा ❀ रघुपति विरह अनल संतापा ॥
शीतल निशि तव असिवर धारा ❀ कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत वचन पुनि मारनधावा ❀ मयतनयां कहि नीतिबुझावा ॥
कहेसि सकल निशिचरी बुलाई ❀ सीतहिं त्रास दिखावहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा नमाना ❀ तौमैं मारब कठिन कृपाना ॥

दोहा–भवन गयउ दशकन्धतब, इहाँनिशाचरि वृन्द ॥
सीतहि त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप बहुमन्द ॥११॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ❀ रामचरण रत निपुण विवेका ॥
सबहिं बुलाइ सुनायसि सपना ❀ सीतहिं सेइ करौ हित अपना ॥
स्वप्ने वानर लंका जारी ❀ यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ नग्न दशशीशा ❀ मुण्डित शिर खंडित भुजवीशा ॥
इहिविधि सो दक्षिणदिशिजाई ❀ लंका मनहुँ विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुवीर दुहाई ❀ तब प्रभु सीतहि बोलि पठाई ॥

१ जुगनू । २ कमल । ३ निरादर वचन । ४ तरवारि । ५ शीघ्र । ६ मन्दोदरी ।

यह स्वप्न मैं कहौं विचारी ❋ होइहि सत्य गये दिनचारी ॥
तासु वचन सुनके सब डरीं ❋ जनकसुताके चरणन परीं ॥
दोहा–जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीताके मन शोच ॥
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचरपोच ॥ १२ ॥
त्रिजटासन बोलीं कर जोरी ❋ मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु वेगि उपाई ❋ दुसह विरह अब सहा न जाई ॥
आनि काठ रचि चितावनाई ❋ मातु अनल तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी ❋ सुनि सो श्रवण शूलसमवानी ॥
सुनत वचन पदगहि समुझावा ❋ प्रभुप्रतापबल सुयश सुनावा ॥
निशिं न अनलमिलु राजकुमारी ❋ असकहिसो निज भँवनासिधारी ॥
कह सीता विधि भा प्रतिकूला ❋ मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखियत प्रगट गगन अंगारा ❋ अवँनि न आवत एकौ तारा ॥
पावकमय शशि स्रवत नआगी ❋ मानहुँ मोहिं जानि हतभागी ॥
सुनहु विनय ममविटप अशोका ❋ सत्यनाम करु हरु मम शोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना ❋ देहु अगिनि ममकरहु निदाना ॥
देखि परम विरहाकुल सीता ❋ सो क्षण कपिहि कल्पसम बीता ॥
सो०–कपि करि हृदय विचार,दीन्हमुद्रिका डारि तब ॥
जनु अशोक अंगार,दीन्ह हर्ष उठि कर गहेउ ॥ २ ॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर ❋ राम नाम अंकित अति सुन्दर ॥
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी ❋ हर्ष विषाद हृदय अकुलानी ॥
जीतिको सकै अजय रघुराई ❋ मायाते असि रची न जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना ❋ मधुर वचन बोले हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे ❋ सुनतहि सीताकर दुख भागे ॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई ❋ आदिहिते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जे कथा सुनाई ❋ काहेन प्रगट होत सो आई ॥
तब हनुमन्त निकट चलि गयऊ ❋ फिरि बैठी मन विस्मय भयऊ ॥

१ अग्नि । २ राति । ३ गृह । ४ पृथ्वीमें ।

रामदूत मैं मातु जानकी ❀ सत्य शपथ करुणानिधानकी ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❀ दीन्ह राम तुमकहँ सहिदानी ॥
नर वानरहिं संग कहु कैसे ❀ कही कथा संगति भइ जैसे ॥
दोहा–कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास ॥
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धु करदास ॥ १३ ॥
हरिजन जानि प्रीति अतिबाढी ❀ सजल नयन पुलकावलि ठाढी ॥
बूडत विरह जलधि हनुमाना ❀ भयहु तात मोकहँ जलयाना ॥
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी ❀ अनुजसहित सुख भवनखरारी ॥
कोमल चित कृपालु रघुराई ❀ कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुखदायक ❀ कबहुँक सुरति करतरघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता ❀ होइहि निरखि श्याम मृदुगाता ॥
वचन न आव नयन भरि वारी ❀ अहो नाथ मोहिं निपट बिसारी ॥
देखिविरह व्याकुल अति सीता ❀ बोलेउ कपिमृदुवचन विनीता ॥
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता ❀ तव दुख दुखितसो कृपानिकेता ॥
जननी जनि मानहु मन ऊना ❀ तुमते प्रेम रामके दूना ॥
दोहा–रघुपति के सन्देश अब, सुनु जननी धरि धीर ॥
असकहि कपि गद्गद भयउ, भरे विलोचन नीर ॥ १४ ॥
राम वियोग कहा सुनु सीता ❀ मोकहँ सकल भयउ विपरीता ॥
नूतन किसलय मनहु कृशानू ❀ कालनिशासमनिशिशशिभानू ॥
कुवलय विपिन कुन्तवनसरिसा ❀ वारिद तप्त तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा ❀ उरग श्वास सम त्रिविध समीरा ॥
कहहूते कछु दुख घटि होई ❀ काहि कहौं यह जान न कोई ॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा ❀ जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं ❀ जानु प्रीति रस इतने माहीं ॥
प्रभु सन्देश सुनत वैदेही ❀ मगन प्रेम तनु सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीरधरुमाता ❀ सुमिरि राम सेवक सुखदाता ॥

१ चिह्न। २ नौका। ३ सन्देह। ४ तरुनके नवीन पल्लव। ५ अग्निके लवर तुल्य। ६ कमलके वन। ७ बरछी। ८ मेघ। ९ सर्पके श्वाससम।

डर आनहु रघुपति प्रभुताई ❀ सुनि ममवचनतजहु विकलाई॥
दो०-निशिचर निकर पतंग सम, रघुपति बाण कृशानु॥
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु॥१५॥
जो रघुवीर होत सुधि पाई ❀ करते नहिं विलम्ब रघुराई॥
राम बाण रविउदय जानकी ❀ तम वरूथ कहँ यातुधानकी॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई ❀ प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा ❀ कपिन्ह सहित ऐहैं रघुवीरा॥
निशिचर मारि तुमहिं लै जैहैं ❀ तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं॥
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना ❀ यातुधान भट अतिबलवाना॥
मोरे हृदय परम सन्देहा ❀ सुनिकपिप्रगट कीन्हनिजदेहा॥
कनक भूधराकार शरीरा ❀ समर भयंकर अति रणधीरा॥
सीता मन भरोस तब भयऊ ❀ पुनि लघुरूपपवनसुतलयऊ॥
दोहा-सुनु माताशाखामृगहि, नहिं बल बुद्धिविशाल॥
प्रभु प्रताप ते गरुडहि, खाय परम लघु व्याल॥१६॥
मन सन्तोष सुनत कपि बानी ❀ भक्ति प्रताप तेज बल सानी॥
आशिष दीन्ह राम प्रिय जाना ❀ होहु तात बल शील निधाना॥
अजर अमरगुणनिधि सुतहोहू ❀ करहु सदा रघुनायक छोहू॥
करहिं कृपाप्रभु अससुनि काना ❀ निर्भर प्रेम मग्न हनुमाना॥
बार बार नायउ पद शीशा ❀ बोले वचन जोरिकर कीशा॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आशिष तव अमोघ विख्याता॥
सुनहु मातुमोहिंअतिशय भूखा ❀ लागि देखि सुन्दर फलरूखा॥
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी ❀ परम सुभट रजनीचर भारी॥
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं ❀ जो तुम सुख मानहुमन माहीं॥
दोहा-देखि बुद्धिबल निपुण कपि, कहेउजानकी जाहु॥
रघुपति चरण हृदयधरि, तात मधुर फलखाहु॥१७॥
चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा ❀ फल खाये तरु तोरन लागा॥

१ आज्ञा। २ राक्षस। ३ वानर। ४ आशीर्वाद। ५ अजर कहांवाल, युवा, वृद्ध, मरणते रहित। ६ गुणके समुद्र। ७ कृतार्थ। ८ वृक्ष।

रहे तहाँ बहु भट रखवारे ❀ कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ❀ तेइँ अशोकवाटिका उजारी ॥
खायसि फल अरु विटप उपारे ❀ रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावण पठये भट नाना ❀ तिनहिं देखि गरजा हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे ❀ गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठवा तेहि अक्षकुमारा ❀ चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि विटप गहि तर्जा ❀ ताहि निपाति महा धुनि गर्जा ॥

दोहा–कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत वध लंकेश रिसाना ❀ पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसि ताही ❀ देखौं कीश कहाँकर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित योधा ❀ बन्धुवधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा ❀ कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
अति विशाल तरु एक उपारा ❀ विरथ कीन्ह लंकेशकुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा ❀ गहि गहि कपि मर्देसि निज अंगा ॥
तिन्हैं निपाति ताहिसन बाजा ❀ भिरे युगल मानहुँ गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई ❀ ताहि एक क्षण मूर्च्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया ❀ जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दोहा–ब्रह्मअस्त्र तेहि साधेउ, कपिमन कीन्ह विचार ॥
जो न ब्रह्मशर मानऊं, महिमा मिटै अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबाण तेहि कपि कहँ मारा ❀ परतिहु बार कटक संहारा ॥
तेहि देखा कपि मूर्च्छित भयऊ ❀ नागफांस बाँधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी ❀ भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन तर आवा ❀ प्रभुकारज लगि आपु बँधावा ॥
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये ❀ कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपि जाई ❀ कहि न जाय कछु अति प्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशप विनीता ❀ भृकुटि विलोकत सकल सभीता ॥

देखि प्रताप न कपिमन शंका ❀ जिमिअहिगणमहँगरुड अशंका ॥
दोहा-कपिहि विलोकि दशानन, विहँसिकहेसिदुर्वाद ॥
सुतवध सुरतिकीन्ह पुनि, उपजा हृदयविषाद ॥ २० ॥
कह लंकेश कवन तैं कीशा ❀ केहिके बल घालेसिवनखीशा ॥
कीधौं श्रवण सुनेसिनाहिंमोहीं ❀ देखौं अतिअशंकशठतोहीं ॥
मारेसिनिशिचर केहिअपराधा ❀ कहुशठतोहिंनप्राणकीबाधा ॥
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ❀ पाइ जासु बल विरचितमाया ॥
जाके बल विरंचि हरि ईशा ❀ पालत हरत सृजत दशशीशा ॥
जाबल शीश धरे सहसानन ❀ अंडकोशसमेत गिरि कानन ॥
धरै जो विविध देह सुरत्राता ❀ तुमसे शठ न शिखावन दाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेइँ भंजा ❀ तोहिं समेत नृपदल मद गंजा ॥
खर दूषण विराध अरु बाली ❀ बधे सकल अतुलित बलशाली ॥
दोहा-जाके बल लवलेशते, जितेउ चराचर झारि ॥
तासु दूतहौं जाहिकी, हरि आनेहु प्रियनारि ॥ २१ ॥
जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई ❀ सहसबाहुसन परी लडाई ॥
समरबालिसन करि यशपावा ❀ सुनिकपिवचनविहँसिवहिलावा ॥
खायउँ फलमोहिं लागिभूखा ❀ कपि स्वभावते तोरेउँ रूखा ॥
सबके देह परम प्रिय स्वामी ❀ मारहि मोहिं कुमारगगामी ॥
जिन्ह मोहिं मारा तेहिं मैंमारा ❀ तेहिपरबाँधेउ तनय तुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बाँधेकर लाजा ❀ कीन्ह चहौं निजप्रभुकरकाजा ॥
विनती करौं जोरि कर रावन ❀ सुनहु मान तजि मोरशिखावन ॥
देखहु तुम निज हृदय विचारी ❀ भ्रम तजि भजहु भक्त भयहारी ॥
जाके डर अति काल डराई ❀ जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों वैर कबहुँ नहिं कीजै ❀ मोरे कहे जानकी दीजै ॥
दोहा-प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ॥
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

१ शेषजी। २ ब्रह्माण्ड। ३ देवतोंके रक्षा हेतु। ४ धनुष। ५ बलके स्थान। ६ राक्षस।

रामचरण पंकज उर धरहू ❀ लंका अचल राज्य तुम करहू ॥
ऋषिपुलस्त्ययश विमलमयंका ❀ तेहिकुलमहँ जनिहोसिकलंका॥
राम नाम बिनु गिरा नसोहा ❀ देखु विचारि त्यागि मद मोहा॥
वसन हीन नहिं सोह सुरारी ❀ सब भूषण भूषित वर नारी ॥
राम विमुख सम्पति प्रभुताई ❀ जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जेहि सरिता नाहीं ❀ बरषिगये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी ❀ राम विमुख त्राता नहि कोपी ॥
शंकर सहस विष्णु अँज तोही ❀ सकहिं न राखि रामकर द्रोही॥

दोहा–मोह मूल बहु शूलप्रद, त्यागहुतुम अभिमान ॥
भजहु राम रघुनायकहिं, कृपासिन्धु भगवान ॥ २३ ॥

यदपि कही कपिअतिहितबानी ❀ भक्ति विवेक धर्म नयसानी ॥
बोला विहँसि अधम अभिमानी ❀ मिलाहमहिं कपि गुरुबड़ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोहीं ❀ लागेसि अधम शिखावन मोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना ❀ मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
सुनिकपिवचनबहुतखिसिआना ❀ वेगि न हरहु मूढकर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारन धाये ❀ सचिवन सहित विभीषण आये ॥
नाइ शीश करिविनय बहूता ❀ नीति विरोध न मारिय दूता ॥
आन दण्ड कछु करिय गुसांई ❀ सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर ❀ अंगभंग करि पठवहु बन्दर ॥

दोहा–कपिकर ममता पूँछपर, सबहिं कहासमुझाइ ॥
तेलबोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछहीन वानर जब जाइहि ❀ तबशठ निज नाथहिलैआइहि ॥
जिन्हकी कीन्हेसि अमितबड़ाई ❀ देखौं मैं तिन्हकी प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मनमुसुकाना ❀ भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण वचना ❀ लागे रचन मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर वसन घृत तेला ❀ बाढी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥

---

१ वस्त्र । २ नदी । ३ रक्षक । ४ ब्रह्मा । ५ शोभा । ६ मन्त्र ।

कौतुक कहँ आये पुरवासी ❀ मारहिं चरण करहिं बहुहांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सबतारी ❀ नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमंता ❀ भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुकिचढ्योकपिकनक अटारी ❀ भईं सभीत निशाचरनारी ॥

दोहा-हरि प्रेरित तेहि अवसर, बह मारुत उनचाश ॥
अट्टहास करि गर्जेउ, कपिबढि लाग अकाश ॥ २५ ॥

अथ क्षेपक।

चल्यो फलांगि धाम लूम लामको उठायऊ। मनोअकाशतेनदीकृशानुकी बहायऊ ॥ किलंकलीलनेककालजीहसीपसारहू ॥ किधों अनी महानशूरसैकसी निकारहू ॥ फिरायलायलायअयनमयनसेलगेवरै।गयंदछोरवाजिछोर ऊंटछोरियेखरै ॥ अनेक बालबालकी सु तात मात बोलहीं। बचाय लीजिये हमें समय समानडोलहीं॥अनेकनारिमारिरिं भंडिंभकाढिलावहीं।अनेकडारिडारिवस्तुवारिलैनधावहीं।अनेककंत वीरतेपुकारवैनयोंकहैं।उठायलेहुलालमालजालदेपरोतहैं ॥ गिरेकँगूरहूरतेतबैकहैमँदोदरी।विहायलोकलाजकानिभागतीनक्योंअरी॥औरे अकंपनायकिकंठकीसहोदरं ॥ लिवायलेउअछुगातिपूतनातितोदरं। अनेकवारमैं कहीबुझायहू विभीषणं।नमानिदाढिजारनेकुठारवंशतीक्षणं॥निकेतद्वारअर्द्धउर्द्धहाटवाटमेंजहां।लुकातजायनीरकीशतीरदेखियेतहां॥बधूजोकुम्भकर्णकीपसारिहाथभाषिये। दुहाइरामचंद्रकेरमोर कन्तराखिये।अनेकधायधायजायरावणेसुनायऊ। विचारिवीरमेघनाद सेबलीपठायऊ॥अनेकअस्त्रशस्त्रलायआयमारनेलगे। धुआयदीनवालधीपुकारकूरसेभगे॥विशालज्वालजानिकोपमेघबोलयोंकही।बुझायदेहुआगिरेवहायकीशकोसही।भलेसुनायमेघआयपुंजपाथछांडेऊ।यथा सनेहपायचौगुनीकृशानुबाढेऊ॥लगीजुअंगअंगवानप्रानलेभजेसवे।निहाररीतमालवानस्यानबोलियोतबै ॥ नआहियाहिअग्निआहिईशकोजुवामता। समीरश्वाससीयकीजुरामरोषमामता॥बुलायकालतेकह्योलंगूरलाउमारिकै। बटोरभूतप्रेतयक्षदंडचंडधारिकै ॥ विलोकबातजात

१ अग्नि। २ अत्यन्तछोटा।

घातकीनसैनतासुको ॥ उठायगालमेंधरोपरोखँभारजासुको ॥ समेतशं
भुइंद्रवातजातपासआयऊ ॥ सभीतपंकजालनादिवीनतीसुनायऊ ॥
दोहा–देहु छाँड़ि यमराज कहँ, यही विनय यक मोर ॥
बरबस आयो लखन सुनि, दीन गालते छोर ॥

इति क्षेपक ।

देह विशाल परम हरुआई ❀ मन्दिरतें मन्दिर चढि जाई ॥
जरत नगर भे लोग विहाला ❀ लपट झपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु सब करहिं पुकारा ❀ यहि अवसर को हमहिं उबारा ॥
हम जो कह यह कपिनहिंहोई ❀ वानररूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा ❀ जरै नगर अनाथकर जैसा ॥
जारा नगर निमिष यक माहीं ❀ एक विभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकर भक्त अनलजेइँ सिरजा ❀ जरानसोतेहिकारण गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका कपिजारी ❀ कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥
दोहा–पूंछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघुरूप बहोरि ॥
जनकसुताके आगे, ठाढ भयउ करजोरि ॥ २६ ॥
मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा ❀ जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा ॥
चूडामणि उतारि तब दीन्हा ❀ हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहु तात अस मोर प्रणामा ❀ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥
दीनदयालु बिरद सम्भारी ❀ हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात शक्रसुत कथा सुनायहु ❀ बाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ❀ तौपुनि मोहिं जियतनहिं पावहिं ॥
कहुकपिकेहि विधि राखौं प्राना ❀ तुमहूं तात कहत अब जाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ❀ पुनिमोकहँ सोइ दिनसोइराती ॥

अथ क्षेपक ।

दोहा–जिमि मणि बिन व्याकुल भुजग, जल बिन व्याकुल मीन ॥

तिमि देखे रघुनाथ विन, तलफतहौं मैं दीन ॥ १ ॥
क्यों विधि पहुँचाइ है, फिर कौशलपुर तात ॥
भरत शत्रुहन लोग सब, कब लहिहैं मुद मात ॥ २ ॥
ह्वैहैं मङ्गल काज कब, पुजिहैं याचक काम ॥
नखशिख कब अवलोकिहौं, रघुपति छवि अभिराम ॥३॥
शीश मुकुट मणि गण जटित, श्रवणन कुण्डल लोल ॥
जगमगात कब देखिहौं, टोपी दिये अमोल ॥ ४ ॥
अलकैं सींची अतर सों, निकट कपोलन मुक्त ॥
भरि लोचन कब देखि हौं, कुसुम कलिन संयुक्त ॥ ५ ॥
भाल तिलक भासित सुभग, भ्रुकुटी धनु अनुहारि ॥
भूरिभाग्य कब देखि हौं, नयनन पलक विसारि ॥ ६ ॥
चंचल चारु विशाल शुभ, लोचन मोचन मान ॥
चितवत दिशि कब देखि हौं, मनको करि कुरबान ॥ ७ ॥
कीरतुण्ड सम नासिका, लटकन की छवि भूरि ॥
कब चकोर सम देखि हौं, मुखमयंक तृणतूरि ॥ ८ ॥
अरुण अधर दाडिमदशन, रसन चारु मृदुहास ॥
हे हरि कब अवलोकि हौं, शशिकर सरिस प्रकास ॥ ९ ॥
मधुर वचन जन मन हरन, कब सुनिहौं निजकान ॥
चिबुक चारु कब देखि हौं, चितवन अमी समान ॥ १० ॥
कम्बु कण्ठ तुलसी सुभग, मणि मोतिनकी माल ॥
उरदीरघ अवलोकि हौं, कब त्रिवली सुख जाल ॥ ११ ॥
भुज बिशाल करि कर सरिस, करतल कमल समान ॥
सहित विभूषण देखि हौं, कब लीन्हें धनुबान ॥ १२ ॥
झीन झगा पहिरे ललित, ता ऊपर पट पीत ॥
कब निज नयन सिराइहौं, देखि उदर उपवीत ॥ १३ ॥

इति क्षेपक ।

दो.-जनकसुतहिं समुझाइकरि,बहुविधि धीरजदीन्ह ॥
चरण कमल शिरु नाइकरि, गमनरामपहँकीन्ह ॥२७॥
चलत महा ध्वनि गरजेउ भारी ❀ गर्भस्रवहिंसुनि निशिचरनारी ॥
नांघि सिंधु यहि पारहिं आवा ❀ शब्दकिलकिलाकपिनसुनावा ॥
हर्षे सब विलोकि हनुमाना ❀ नूंतन जन्म कपिन तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तनुतेज विराजा ❀ कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अतिभये सुखारी ❀ तलफत मीन पाव जनु वारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा ❀ पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुवन भीतर सब आये ❀ अंगद सहित मधुर फल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे ❀ मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥
दोहा-जाइ पुकारे सकलते, वन उजार युवराज ॥
सुनि सुग्रीवहिं हर्षि कपि, करि आये प्रभु काज॥२८॥
जो नहोत सीता सुधि पाई ❀ मधुवनके फल को सक खाई ॥
इहि विधि मन विचारकर राजा ❀ आयगयेकपि सहितसमाजा ॥
आइ सबन नायउ पदशीशा ❀ मिलेउ सबन अति प्रेम कपीशा ॥
पूंछेउ कुशल कुशल पद देखी ❀ रामकृपा भा काज विशेषी ॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ❀ राखे सकल कपिनकर प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेऊ ❀ कपिन सहित रघुपतिपै चलेऊ॥
राम कपिन कहँ आवत देखा ❀ किये काज उर हर्ष विशेषा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई ❀ परे सकल कपि चरणन जाई ॥
दोहा-प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणा पुंज ॥
पूँछा कुशल कुशल अब, नाथ देखि पद कंज ॥ २९ ॥
जाम्बवन्त कह सुनु रघुराया ❀ जापर नाथ करहु तुम दाया ॥

१ नवीन । २ सुग्रीव ।

ताहि सदा शुभ कुशलनिरंतर ❀ सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर ॥
सो विजयी विनयी गुणसागर ❀ तासु सुयश तिहुँ लोकउजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू ❀ जन्म हमार सफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्ह जो करणी ❀ सो मुख लाखहु जाइ नवरणी ॥
पवनतनयके वचन सुहाये ❀ जाम्बवन्त रघुपतिहि सुनाये ॥
सुनि कृपालु उठि हृदय लगाये ❀ जानि सुभट रघुपतिमनभाये ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी ❀ रहति करति रक्षा स्वप्राणकी ॥

अथ क्षेपक ।

कौन भाँति लंका विस्तारा ❀ सो सब वर्णहु पवनकुमारा ॥
सुनत वचन मारुति कहवानी ❀ सुनिये दीनबंधु सुखदानी ॥
गिरि त्रिकूटपर लंक सुहाई ❀ वर्णि न जाय मनोहरताई ॥
पाँच लक्ष हैं पत्थरके घर ❀ औ नवलाख काष्ठके सुंदर ॥

दोहा-सातकोटि हैं ताम्रके, चांदीक श्रुतिकोटि ॥
जातरूपकेहू इते, माणिक कोट सुकोटि ॥

तृण निर्मित षट कोटि विशाला ❀ वंशछाल शत कोटि दयाला ॥
नव करोर स्फटिक सुहाये ❀ सहस कोटि मणिनील सुछाये ॥
शतयोजनमें पुरी सुहाई ❀ घनी वसत अतिशय रघुराई ॥
राज्य करत रावण तहँ स्वामी ❀ सो तुम जानत अंतर्यामी ॥
दश शिर ताके भुज प्रभु बीसा ❀ देव दनुज नावत सब शीशा ॥
ताकी प्रभुताई तहँ भारी ❀ राज्य करत भयत्यागि खरारी ॥
चलिये अब प्रभु विलम न कीजे ❀ जनकसुताको धीरज दीजे ॥
तुम बिन सीय महादुख पावत ❀ तुमबिन तिन्हैं कछु नाहिं भावत ॥

इति क्षेपक ।

दोहा—नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट॥
लोचन निज पद यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट॥३०॥

"चलती बार कह्यो मोहिं टेरी ❀ सुरति कराय शक्रसुतकेरी"॥
चलत मोहिं चूडामणि दीन्हीं ❀ रघुपति हृदयलाइ तेहि लीन्हीं॥
नाथ युगल लोचन भरि बारी ❀ वचनकह्योकछुजनककुमारी॥
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरणा ❀ दीनबन्धु प्रणतारति हरणा॥
मन क्रम वचन चरण अनुरागी ❀ केहिअपराध नाथमोहिंत्यागी॥
अवगुण एक मोर मैं जाना ❀ बिछुरत प्राण न कीन्हपयाना॥
नाथ सो नयनन कर अपराधा ❀ निसरतप्राणकरहिंहठिबाधा॥
विरह अग्नि तनु तूल समीरा ❀ श्वास जरे क्षण माँह शरीरा॥
नयन श्रवैं जल निजहित लागी ❀ जरै न पाव देह विरहागी॥
सीताकी अति विपति विशाला ❀ बिना कहे भल दीनदयाला॥

दो.-निमिषनिमिषकरुणायतन, जाहिंकल्पशतबीति॥
वेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदलजीति॥३१॥

सुनिसीतादुख प्रभु सुख अयना ❀ भरि आये जल राजिवनयना॥
वचन काय मन मम गति जाही ❀ स्वप्न्यहुविपतिकिचाहियताही॥
कह हनुमान विपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरण भजननहोई॥
कितिक बात प्रभु यातुधानकी ❀ रिपुहि जीति आनिये जानकी॥
सुनु कपि तोहिं समान उपकारी ❀ नहिं कोउसुरनरमुनितनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा ❀ सन्मुखहोइ न सकत मनमोरा॥
सुनु कपि तोहिं उऋण मैं नाहीं ❀ देखेउँ करि विचार मन माहीं॥
पुनिपुनि कपिहि चितवसुरत्राता ❀ लोचननीर पुलकि अतिगाता॥

दो.-सुनि प्रभु वचनविलोकिमुख, हृदयहर्ष हनुमन्त॥
चरण परेउ परमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त॥३२॥

बार बार प्रभु चहत उठावा ❀ प्रेम मगन तेहि उठव न भावा॥
प्रभुपद पंकज कपिकर शीशा ❀ सुमिरि सो दशामगनगौरीशा॥

१ केवाँर। २ कुलुफ। ३ मार्ग। ४ जयन्त। ५ शीशपर जो चूडा विषे मणि रहतीहै
६ हे नाथ दोनोंनेत्रोंमेंजलभर। ७ रुई। ८ महादेव।

सावधान मन करि पुनि शंकर ❀ लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा ❀ कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावण पालित लंका ❀ केहिविधि दहेउ दुर्ग अतिबंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोले वचन विगत अभिमाना ॥
शाखामृगकी अति मनुसाई ❀ शाखाते शाखा पर जाई ॥
नाँघि सिन्धु हाटकपुर जारा ❀ निशिचरगणवधिविपिनउजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई ॥

दो०-ताकहँ प्रभु कछुअगमनहिं, जापर तुमअनुकूल ॥
तव प्रताप बडवानलहिं, जारि सकै खल तूल ॥३३॥

सुनत वचन प्रभु बहु सुखमाना ❀ मन क्रम वचनदासनिजजाना ॥
माँगु वचन सुत वर अनुकूला ❀ देहुँ आजु तुम कहँ सुख मूला ॥
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि ❀ देहु कृपाकरिसो अनपायिनि ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपिवानी ❀ एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम स्वभाव जिन जाना ❀ ताहि भजनतजि भावनआना ॥
यह संवाद जासु उर आवा ❀ रघुपति चरणभक्ति तेइँ पावा ॥
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा ❀ जय जय जय कृपालु सुखकन्दा ॥
तब रघुपति कपिपतिहिबुलावा ❀ कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब विलम्ब केहि कारण कीजे ❀ तुरत कपिन कहँ आयसुदीजे ॥
कौतुक देखि सुमन बहु वर्षे ❀ नभते भवन चले सुर हर्षे ॥

दोहा-कपिपति वेगि बुलायहू, आये यूथप यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल, वानर भालु वरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु पदपंकज नावहिं शीशा ❀ गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपि सेना ❀ चितव कृपा करि राजिव नैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा ❀ भये पक्ष युत मनहुँ गिरिन्दा ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना ❀ शकुन भये सुन्दर शुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय नीती ❀ तासु पयान शकुनयहनीती ॥

१ अगम । २ कपि । ३ सुग्रीव । ४ देर । ५ पुष्प । ६ सुमेरु ।

प्रभु पयान जाना वैदेही ❀ फरके वाम अंग शुभतेही ॥
जो जो शकुन जानकिहि होई ❀ अशकुन भयउ रावणहि सोई ॥
चला कटक को वरणै पारा ❀ गरजहिं वानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी ❀ चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद[1] भालु कपिकरहीं ❀ डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥
छं.-चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि[2]गिरिलोलसागरखरभरे॥
मन हर्ष दिनकर[3] सोम[4] सुर मुनि नाग किन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिं मर्कट विकट भट बहुकोटिकोटिनधावहीं॥
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुण गण गावहीं ॥
सहिसक न भार उपार अहिपति[5] बार बार विमोहई[6] ॥
गहि दशन पुनि पुनिकमठपृष्ठकठोरसोकिमिसोहई॥
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठखप्परसर्पराजसोलिखतअविचलपावनी॥
दोहा—इहि विधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ॥
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपि वीर॥३५॥
वहाँ निशाचर रहहिं सशंका ❀ जबते जारि गयउ कपिलंका ॥
निज निज गृह सब करैं विचारा ❀ नहिं निशिचर कुल केर उबारा॥
जासु दूत बल वरणि न जाई ❀ तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीत सुनि पुरजनबानी ❀ मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी ❀ बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष[7] हरिसन परिहरहू ❀ मोर कहा अति हित चित धरहू॥
समुझत जासु दूतकी करणी ❀ श्रवहिं गर्भ[8] रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई ❀ पठवहु कन्त जो चहहु भलाई ॥
तव कुल कमल विपिन दुखदाई ❀ सीता[9] शीत निशासम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे ❀ हित न तुम्हारशम्भुअजकीन्हे ॥

१ सिंहनाद । २ पृथ्वीकांपउठी । ३ सूर्य्य । ४ चन्द्र । ५ शेषनाग । ६ मूर्छित ।
७ विरोध । ८ निशाचरी गर्भको डारदेतीहैं । ९ सीताजी ।

दोहा–राम बाण अहिगणसरिस, निकरनिशाचर भेक॥
जौलगिग्रसतनतबहिंलगि, यतन करहुतजिटेक ॥३६॥

श्रवण सुनत शठ ताकीवानी ❀ विहँसाजगत विदित अभिमानी॥
सभय स्वभाव नारिकरसाँचा ❀ मंगल माहिं अमंगलराँचा॥
जो आवे मर्कट कटकाई ❀ जियहिं विचारे निशिचर खाई॥
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा ❀ तासु नारि सभीत बड़िहासा॥
असकहि विहँसि ताहि उरलाई ❀ चलेउ सभा ममता अधिकाई॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता ❀ भयो कन्तपर विधिविपरीता॥
बैठेउ सभा खबरि असपाई ❀ सिन्धुपार सेना सब आई॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ❀ ते सब हँसे मौनकरि रहहू॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ❀ नर वानर केहि लेखे माहीं॥

अथ क्षेपक।

सुनि षट्श्रुति बोला अहँकारी ❀ कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी॥
जो सन्मुख सक नयन मिलाई ❀ अस कह चला विवस औंवाई॥
तब सक्रोध बोला अतिकाया ❀ आयसु मोहिं देहु करिदाया॥
अबहीं क्षिति नर हरिबिन करहूँ ❀ और मंत्रका बहु उच्चरहूँ॥
कामरूप बोला घननादा ❀ मम प्रभाव जग जानत जादा॥
विधि हरि हर वशकिये जुझारू ❀ नर वनरनहित कौन विचारू॥
कुंभ निकुंभ दम्भ छलकारी ❀ बोले विभुता विदित हमारी॥
कृपादृष्टि सब देव निहारैं ❀ देखत उच्चासन बैठारैं॥
भोजन हित कहियत तिनपाहीं ❀ हम काहूकर छुवा न खाहीं॥
डारत बोलिसकै नहिं एकू ❀ कपि मानुष हम गनैं न नेकू॥
मत्सररूप अकम्पन कहई ❀ हमैंजियत असको सिय लहई॥
कहो उपाय करौ अब सोई ❀ नर वानर जेहि बचै न कोई॥
अपर कथा कहिये का छोभी ❀ तब भा भनत महोदर लोभी॥
जो आवे अनगिन्त करोरी ❀ डारौं खाय भरै नहिं झोरी॥

तौ कपि सहस लाख केहिलेखे ❀ जेहैं भूमि नाग हम देखे ॥
बोला तव दुर्मुख पाखण्डी ❀ छलकर हरि आनो दोउ दण्डी ॥
जो चाह्यो सो कीन्ह्यो पाछे ❀ वद मकराक्ष कपट वपुकाछे ॥
विपुलविप्रजा मैं वरिआनी ❀ भूसुर बनि कोइ सकै न जानी ॥

दोहा–तिनके छलसे रामको, प्रभु तहँ लेहिं बुलाय ॥
घर बाँध लावैं यहाँ, कैसो कहो उपाय ॥ १ ॥

इति क्षेपक ।

दो.-सचिव वैद्य गुरु तीन जो,प्रिय बोलहिं भय आश ॥
राज धर्म तनु तीनकर, होइ वेगही नाश ॥ ३७ ॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ❀ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि विभीषण आवा ❀ भ्राता चरण शीश तेहि नावा ॥
पुनि शिरनाइबैठि निज आसन ❀ बोला वचन पाइ अनुशासन[1] ॥
जौ कृपालु पूंछेहु मोहिं बाता ❀ मति अनुरूप[2] कहव मम ताता ॥
जो आपन चाहौ कल्याना ❀ सुयशसुमतिशुभगतिसुखनाना ॥
तो परनारि लिलार गुसाईं ❀ तजौ चौथि चंदाकी[3] नाईं ॥
चौदह भुवन एकपति होई ❀ भूंत[4] द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुणसागर नागर नर जोऊ ❀ अल्प लोभ भल कहै न कोऊ ॥

दोहा–काम क्रोध मद लोभसब, नाथ नरककर पन्थ ॥
सब परिहरि रघुवीर पद, भजहुकहहिं सदग्रन्थ ॥ ३८ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेश्वर कालहुके काला ॥
ब्रह्म अनामय[5] अज भगवन्ता ❀ व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी ❀ कृपासिन्धु मानुष तनुधारी ॥

---

१ आज्ञा। २ अनुसार। ३ भाद्रपदकी चौथिके चन्द्रतुल्य। ४ जीव।
५ षटवर्ग जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा मृत्यु तेरहित।

जनरंजन भंजन खल व्राता ❀ वेद धर्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि वैर तजि नाइय माथा ❀ प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभुकहँ वैदेही ❀ भजहु राम बिनु काम सनेही ॥
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ❀ विश्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रयतापनशावन ❀ सो प्रभु प्रगट समुझ जियरावन ॥

दोहा–बार बार पद लागौं, विनय करौं दशशीश ॥
परिहरि मान मोहमद, भजहु कोशलाधीश ॥ ३९ ॥
मुनिपुलस्त्य निज शिष्यसन, कहि पठई यह बात ॥
तुरत सोमैं तुमसनकही, पायसुअवसरतात ॥ ४० ॥

मालवंत अति सचिव सयाना ❀ तासुवचन सुनि अतिसुखमाना ॥
तात अनुज तव नीति विभूषण ❀ सोइ उरधरहुजोकहतविभीषण ॥
रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ ❀ दूर न करहु इहाँते कोऊ ॥
मालवंत गृह गयउ बहोरी ❀ कहेउ विभीषण पुनिकरजोरी ॥
सुमति कुमति सबके उर रहई ❀ नाथ पुराण निगम अस कहई ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ❀ जहाँ कुमति तहँ विपतिनिदाना ॥
तव उर कुमति वसी विपरीती ❀ हित अनहित मानत रिपु प्रीती ॥
कालरात्रि निशिचर कुलकेरी ❀ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दोहा–तात चरण गहि माँगौं, राखहु मोर दुलार ॥
सीता देहु राम कहँ, अति हित होइ तुम्हार ॥ ४१ ॥

बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी ❀ कही विभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई ❀ खलतोहिं मृत्युनिकटचलिआई ॥
जियसि सदा शठ मोरजिआवा ❀ रिपुकरपक्ष सदा तोहिं भावा ॥
कहसि नखल असको जगमाहीं ❀ भुजबलजेहि जीता हमनाहीं ॥
ममपुरवसि तपसिन सनप्रीती ❀ शठमिलुजाहि ताहि कहुनीती ॥
असकहि कीन्हेसि चरण प्रहारा ❀ अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संतकी यही बड़ाई ❀ मंद करत जो करैं भलाई ॥
तुम पितु सरिस भले मोहिंमारा ❀ रामभजे हित होइ तुम्हारा ॥

सचिव संगलै नभ पथ गयऊ ❋ सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥
दोहा–रामसत्य संकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि ॥
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ देहुजनि खोरि ॥४२॥
असकहि चला विभीषण जबहीं ❋ आयुहीनभे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी ❋ कर कल्याण अखिल कर हानी ॥
रावण जबहिं विभीषण त्यागा ❋ भयो विभवबिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं ❋ करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता ❋ अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जेपद परशि तरी ऋषिनारी ❋ दण्डक कानन पावन कारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये ❋ कपट कुरंग संगधारि धाये ॥
हर उर सरसरोज पद जोई ❋ अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥
दोहा–जिन पाँयन कर पादुका, भरत रहे मन लाइ ॥
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ ॥४३॥
यहि विधि करत सप्रेम विचारा ❋ आयउ सपदि सिन्धुके पारा ॥
कपिन विभीषण आवत देखा ❋ जानेउ कोउ रिपुदूत विशेषा ॥
ताहि राखि कपिपति पहँ आये ❋ समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❋ आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❋ कहै कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाय निशाचर माया ❋ कामरूप केहि कारण आया ॥
भेद हमार लेन शठ आवा ❋ राखियबांधि मोहिं असभावा ॥
सखा नीति तुम नीक विचारी ❋ मम प्रण शरणागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना ❋ शरणागत वत्सल भगवाना ॥
दो.–शरणागत कहँजेतजहिं, निजअनहित अनुमानि ॥
तेनर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि ॥४४॥
कोटि विप्र वध लागहिं जाही ❋ आये शरण तजे नहिं ताही ॥
सन्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं ❋ जन्म कोटि अघ नाशौं तबहीं ॥

१ छःमंत्री लेकर । २ आयुर्बल । ३ समूह । ४ अहल्या ।

पापवन्त कर सहज स्वभाऊ * भजन मोर तेहि भाव नकाऊ ॥
जोपै दुष्ट हृदय सो होई * मोरे सन्मुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहिं पावा * मोहिं कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेदलेन पठवा दशशीशा * तबहुँ नकछुभय हानिकपीशा ॥
जगमहँ सखा निशाचर जेते * लक्ष्मणहनहिं निमिष महँतेते ॥
जो सभीत आवा शरणाई * रखिहौं ताहि प्राणकी नाई ॥

दोहा-उभय भाँति लै आवहु, हँसिकह कृपानिधान ॥
जयकृपालुकहि कपिचले, अंगदादि हनुमान ॥४५॥

सादर तेहि आगे करि बानर * चले जहाँ रघुपति करुणाकर ॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता * नयनानन्द दानके दाता ॥
बहुरि राम छवि धाम विलोकी * रहा सो ठाढ एक पग रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन * श्यामलगात प्रणत भय मोचन ॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा * आनन अमित मदनछविसोहा ॥
नयननीर पुलकित अतिगाता * मन धरि धीर कही मृदुबाता ॥
नाथ दशानन कर मैं भ्राता * निशिचर वंश जनम सुरत्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा * यथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दोहा-श्रवण सुयशसुनि आयऊं, प्रभुभंजनभयभीर ॥
त्राहि त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुवीर ॥४६॥

असकहि करत दण्डवत देखा * तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेषा ॥
दीनवचनसुनि प्रभु मन भावा * भुजविशालगहिहृदयलगावा ॥
अनुजसहितमिल ढिग बैठारी * बोले वचन भक्त हितकारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा * कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खल मण्डली बसहु दिनराती * सखा धर्म निबहै केहि भाँती ॥
मैं जानी तुम्हारि सब रीती * अतिशयनिपुण नभावअनीती ॥
बरु भल वास नरक कर ताता * दुष्ट संग जनि देहि विधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया * जोतुम कीन्ह जानि जन दाया ॥

१ दुष्टभावसे आयाहो या आर्तहैके दोऊ भांतिसे ले आवो । २ आजानुभुज ।
३ अरुणकमल इव नेत्र । ४ चौडी । ५ मुख ।

दो०-तब लगि कुशल न जीव कहँ, स्वप्नेहु मनविश्राम ॥
जबलगि भजन न रामके,शोक धामतजि काम॥४७॥

तबलगि हृदय बसत खल नाना ❀ लोभ मोह मत्सर मद माना ॥
जबलगि उर न बसत रघुनाथा ❀ धरे चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तिमिर तरुण अँधियारी ❀ राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तबलगि बसत जीव उर माहीं ❀ जबलगि प्रभुप्रताप रविनाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भयभारे ❀ देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला ❀ ताहि नव्याप त्रिविध भवशूला॥
मैं निशिचर अति अधम स्वभाऊ ❀ शुभआचरण कीन्ह नहिं काऊ ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान नपावा ❀ सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा ॥

दो०-अहो भाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुखपुंज॥
देखउँ नयन विरंचि शिव, सेव्य युगल पदकंज॥४८॥

सुनहु सखा निज कहहुँ स्वभाऊ ❀ जानिभुशुण्डिशम्भुगिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही ❀ आवै सभय शरणतकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छलनाना ❀ करौं सखा तेहि साधु समाना ॥
जननी[1] जनक[2] बन्धु सुत दारा[3] ❀ तन धन भवन सुहृद परिवारा॥
सबके ममता ताग बटोरी ❀ ममपदमनहिं बांधि बटि डोरी॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं ❀ हर्ष शोक भय नहिं मनमाहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे ❀ लोभी हृदय बसत धन जैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे ❀ धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

दोहा-सगुण उपासक परमहित, निरत नीति दृढनेम॥
तेनर प्राण समान मोहिं, जिनके द्विजपद प्रेम ॥४९॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे ❀ ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ॥
राम वचन सुनि वानर यूथा ❀ सकलकहहिं जय कृपा वरूथा॥
सुनत विभीषण प्रभुकरबानी ❀ नहिं अघात श्रवणामृत जानी॥
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा ❀ हृदयसमात न प्रेम अपारा ॥

१ माता । २ पिता । ३ स्त्री ।

सुनहु देव सचराचर स्वामी ❀ प्रणतपाल उर अन्तर्यामी ॥
उर कछु प्रथम वासना रही ❀ प्रभु पद प्रीति सरित सो वही ॥
अब कृपालु निजभक्ति पावनी ❀ देहु दयाकरि शंभु भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा ❀ माँगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं ❀ ममदर्शन अमोघ जग माहीं ॥
असकहि राम तिलक तेहि सारा ❀ सुमन वृष्टि नभ भयउ अपारा ॥
दोहा–रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर प्रचण्ड ॥
जरत विभीषण राखेउ, दीन्हेउ राज अखण्ड ॥५०॥
जो सम्पति शिव रावणहि, दीन्ह दिये दशमाथ ॥
सो संपदा विभीषणहि, सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥ ५१ ॥
अस प्रभु छाँडि भजहिं जे आना ❀ ते नर पशु विनु पूँछ बखाना ॥
निजजनजानि ताहि अपनावा ❀ प्रभुस्वभाव कपिकुलमनभावा॥
पुनि सर्वज्ञ सर्व उर वासी ❀ सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
बोले वचन नीति प्रतिपालक ❀ कारण मनुजदनुज कुलघालक ॥
सुनु कपीश लंकापति बीरा ❀ केहिविधिउतरियजलधिगँभीरा॥
संकुल उरग मकर झषजाती ❀ अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लंकेश सुनहु रघुनायक ❀ कोटिसिन्धु शोषै तव सायक ॥
यद्यपि तदपि नीति अस गाई ❀ विनय करिय सागरपहँ जाई ॥
दो०-प्रभु तुम्हार कुलगुरुजलधि, कहहिंउपायविचारि ॥
विनु प्रयास सागरतरहिं, सकलभालुकपिधारि॥५२॥
सखा कह्यो तुम नीक उपाई ❀ करव दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लक्ष्मण मन भावा ❀ रामवचनसुनि अतिदुखपावा ॥
नाथ दैवकर कवन भरोसा ❀ शोषिय सिन्धुकरियमनरोसा ॥
कादर मनकर एक अधारा ❀ दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत विहँसि बोले रघुवीरा ❀ ऐसेइ करव धरहु मन धीरा ॥
असकहि प्रभु अनुजहि समुझाई ❀ सिन्धु समीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई ❀ बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥

१ भाईको । २ कुशासन ।

जबहिं विभीषण प्रभु पहँ आये ❀ पाछे रावण दूत पठाये ॥
दोहा—सकल चरित उन्ह देखेउ, धरे कपटकपिदेह ॥
प्रभु गुण हृदय सराहि अति, शरणागत पर नेह ॥ ५३ ॥
प्रगट बखानत राम स्वभाऊ ❀ अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपुका दूत कपिन जब जाना ❀ ताहिबाँधि कपिपति पहँ आना ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर ❀ अंग भंग करिपठवहु निशिचर ॥
सुनि सुग्रीव वचन कपिधाये ❀ बाँधि कटक चहुँ पास फिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपिलागे ❀ दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जोहमार हर नासा[1] काना ❀ तेहि कौशलाधीश कर आना[2] ॥
सुनि लक्ष्मण तेहि निकट बुलाई ❀ दयालागि हँसि दीन छुड़ाई ॥
रावणकर दीन्हेउ यह पाती ❀ लक्ष्मण वचन बाँच कुलघाती ॥
दोहा—कहेउ मुखागर मूढ सन, मम सन्देश उदार ॥
सीता देहु मिलहु नतो, आवा काल तुम्हार ॥ ५४ ॥
तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा ❀ चला दूत वर्णत गुणगाथा ॥
कहत राम यश लंका आवा ❀ रावण चरण शीश तिननावा ॥
विहँसि दशानन पूँछेसि बाता ❀ कहसिनशुकआपनिकुशलाता ॥
पुनिकहु कुशल विभीषणकेरी ❀ जासु मृत्यु आई अति नेरी ॥
करतराज्य लंका शठ त्यागा ❀ होइहि यव करि कीट अभागा ॥
पुनि कहु भालुकीशकटकाई ❀ कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
तिनके जीवनकर रखवारा ❀ भयउ मृदुलचित सिंधुविचारा ॥
कहु तपसिन[3] कर बात बहोरी ❀ जिनके हृदय त्रास बड़ मोरी ॥
दोहा—भईभेंटकी फिरि गये, श्रवण सुयश सुनि मोर ॥
कहसि न रिपुदल तेज बल, कसचाकित चिततोर ॥ ५५ ॥
नाथ कृपा करि पूँछहु जैसे ❀ मानहु वचन क्रोध तजितैसे ॥
मिलाजाइ जब अनुज तुम्हारा ❀ जातहिं राम तिलकतेहि सारा ॥
रावण दूत हमहिं सुनि काना ❀ कपिन बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥

१ नासिका । २ सौंह । ३ राम-लक्ष्मण ।

श्रवण नासिका काटन लागे ❀ राम शपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूँछहु नाथ कीश कटकाई ❀ वदन कोटि शत वरणि नजाई ॥
नाना वरण भालु कपिधारी ❀ विकटानन विशाल भयकारी ॥
जेइ पुर दहेउ वधेउ सुत तोरा ❀ सकल कपिनमहँ तेहिवलथोरा ॥
अमित नामभट कठिन कराला ❀ विपुलवरण तनु तेज विशाला ॥

दोहा–द्विविद मयन्द नील नल, अंगदादि विकटाशि ॥
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जाम्बवन्त बलराशि ॥५६॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना ❀ इन्ह सम कोटि गनै को नाना ॥
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं ❀ तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं ॥
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर ❀ पद्म अठारह यूथपे[1] बन्दर ॥
नाथ कटक महँ सो कपिनाहीं ❀ जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं ॥
परम क्रोध मींजहिं सब हाथा ❀ आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिं सिन्धुसहित झषव्याला ❀ फारहिं नखधरि कुधेर[2] विशाला ॥
मर्दि गर्दि मिलवहिं दशशीशा ❀ ऐसे वचन कहहिं सब कीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका ❀ मानहु ग्रसन चहत अब लंका ॥

दोहा–सहज शूर कपि भालु सब, पुनिशिरपर श्रीराम ॥
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥५७॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई ❀ शेष सहस शत सकहिं नगाई ॥
सक शर एक शोषि शत सागर ❀ तब भ्रातहिं पूँछेउ नयनागर ॥
तासु वचन सुनि सागर पाहीं ❀ माँगत पन्थ कृपा मन माहीं ॥
सुनत वचन विहँसा दशशीशा ❀ जो असमति सहाय कृतकीशा ॥
सहज भीरु करि वचन दृढ़ाई ❀ सागरसन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ❀ रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत विभीषण जाके ❀ विजय विभूति कहाँलगि ताके ॥
सुनि खल वचन दूतरिसि बाढी ❀ समय विचारि पत्रिका काढी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती ❀ नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥

१ यूथोंके पति । २ पर्वत ।

बिहँसि वामकर लीन्हेसि रावन ❀ सचिव बोलि शठ लागु बँचावन॥
दो०-बातन मनहिं रिझाय शठ, जनि घालसि कुलखीश॥
राम विरोध न उबरिहहु, शरण विष्णु अज ईश॥५८॥
होउ मान तजि अनुज इव, प्रभु पद पंकज भृंग॥
होइ राम शर अनल खल, जनिकुल सहितपतंग॥५९॥
सुनत सभय मन महँ मुसुकाई ❀ कहत दशानन सबहिं सुनाई॥
भूमि परा कर गहत अकाशा ❀ लघु तापस कर वागविलासा॥
कह शुक नाथ सत्य सबवानी ❀ समुझहुछाँडिप्रकृतिअभिमानी॥
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा ❀ नाथ राम सन तजहु विरोधा॥
अति कोमल रघुवीर स्वभाऊ ❀ यद्यपि अखिल लोककर राऊ॥
मिलत कृपा प्रभु तुमपर करिहैं ❀ उर अपराध न एकौ धरिहैं॥
जनकसुता रघुनाथहिं दीजै ❀ इतना कहा मोर प्रभु कीजै॥
जबतेइँ देन कहेउ वैदेही ❀ चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही॥
चरणनाइ शिर चला सो ताहाँ ❀ कृपासिन्धु रघुनायक जाहाँ॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई ❀ राम कृपा आपनि गति पाई॥
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी ❀ राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी॥
वन्दि राम पद बारहिं बारा ❀ पुनि निज आश्रमकहँ पगुधारा॥
दोहा-विनय न मानत जलधिजड़, गयेतीनदिनबीति॥
बोले राम सकोप तब, भय विनु होय न प्रीति॥ ६०॥
लक्ष्मण बाण शरासन आनू ❀ शोषौं वारिधि विशिख कृशानू॥
शठसन विनय कुटिलसनप्रीती ❀ सहजकृपणसनसुन्दर नीती॥
ममतारत सन ज्ञान कहानी ❀ अतिलोभी सन विरति बखानी॥
क्रोधिहि सन कामिहिहरिकथा ❀ ऊषर बीज बये फल यथा॥
असकहि रघुपति चाप चढावा ❀ यह मत लक्ष्मणके मन भावा॥
सन्धानेउ शर विशिखकराला ❀ उठी उदधिउर अन्तर ज्वाला॥
मकर उरग झषगण अकुलाने ❀ जरतजन्तुजलनिधि जबजाने॥
कनकथार भरि मणिगणनाना ❀ विप्ररूप आये तजि माना॥

दोहा-काटे पै कदली फरै, कोटि यत्न करि सीच ॥
विनय न मान खगेश सुन, डाटेहिं पै नव नीच ॥६१॥
सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे ❀ क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरणी ❀ इनकी नाथ सहज जडकरणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसुजेहिकहँ जस अहही ❀ सो तेहिभाँतिरहै सुखलहही ॥
प्रभुभलकीन्हमोहिं शिख दीन्हीं ❀ मर्यादा सब तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ❀ ये सब ताड़नके अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ❀ उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई ❀ करहु वेगि जो तुमहिं सोहाई ॥
दोहा-सुनत विनीत वचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ॥
जेहि विधि उतरै कपिकटक, तातसोकरहुउपाइ॥६२॥
नाथ नील नल कपिदोउभाई ❀ लरिकाई ऋषि आशिष पाई ॥
"सरिता निकट रहे मुनि छाई ❀ करहिं उपद्रव तहँ दोउ जाई ॥
आँख मूँद मुनि ध्यान लगावैं ❀ तब ये ठाकुरको ले जावैं ॥
सो जलमें सब देहिं डुबाई ❀ तब मुनि शाप दियो रिसिआई ॥
प्रस्तर छुआ तुम्हार जो होई ❀ पानी पै उतरावै सोई ॥
स्थिर रहै चले सो नाहीं ❀ तब यह कछु समझे मन माहीं"॥
तिनके परश किये गिरिभारे ❀ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई ❀ करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
इहि विधि नाथपयोधिबँधाइय ❀ जिहिअससुयशलोकतिहुँगाइय॥
इहि शर मम उत्तर तटवासी ❀ हतहुनाथ खल गण अघरासी ॥
सुनि कृपालु सागरमन पीरा ❀ तुरतहिं हरी राम रणधीरा ॥
देखि राम बल अतुलित भारी ❀ हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा ❀ चरणवन्दि पाथोधिसिधावा ॥
छं.-निजभवनगवनेउसिन्धुश्रीरघुवीरहियमतभायऊ॥
यह चरित कलिमलहरणजसमतिदासतुलसीगायऊ॥

सुखभवन संशयदमनशमनविषाद रघुपति गुणगना॥
तजिआशसकलभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना॥
दोहा-सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुणगान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिंधु बिना जलयान ॥६३॥

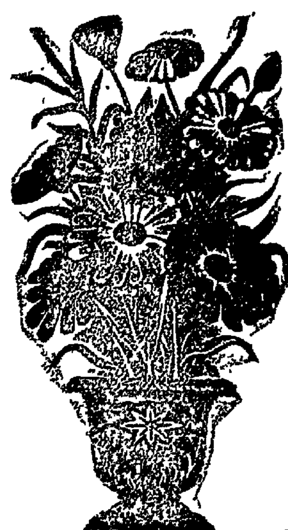
इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल-
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम तुलसीकृतसुन्दरकांडः
पंचमः सोपानः समाप्तः ॥५॥

इदं तुलसीकृतरामायणे सुंदरकाण्डं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासा-
त्मजेन क्षेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्)
मुद्रणयन्त्रालयेऽङ्कितम् ।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेस, खेतवाडी-बंबई.



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-



लङ्काकाण्डम् ६.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित ।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्धकराकर

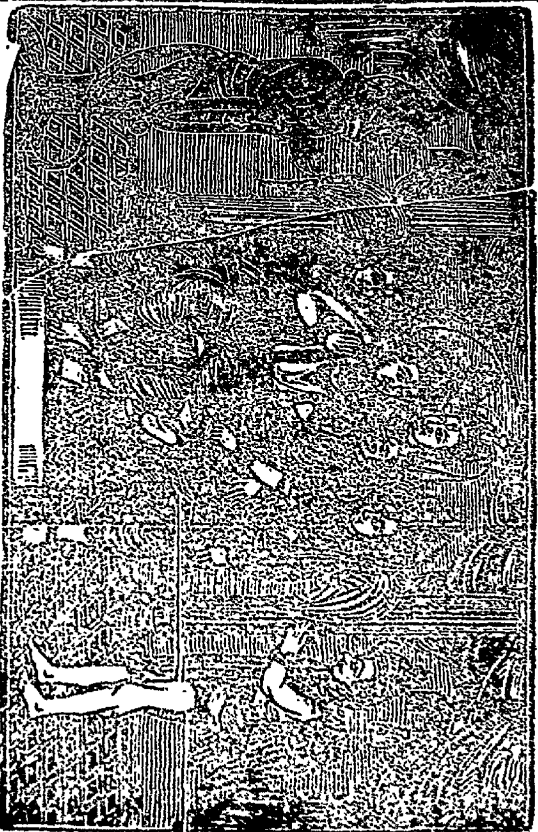
खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

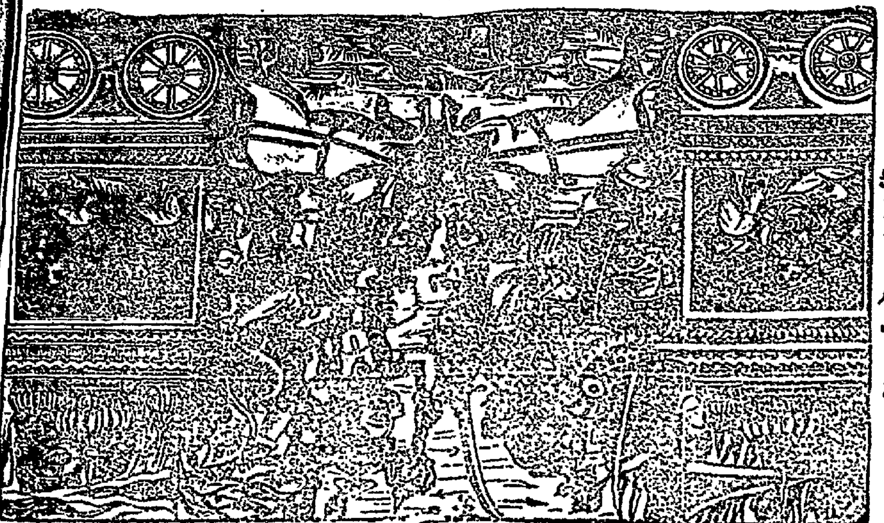
मुद्रितकर प्रकट किया.

❋ श्रीरामपञ्चायतन. ❋



❋ लङ्काकाण्डम् ६. ❋

दोहा—समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥



चौ०—भवभंजन गंजन संदेहा । जनरंजन सज्जन प्रिय येहा ॥
रामउपासक जे जगमाहीं । इह सम प्रिय तिन कहँ कछु नाहीं ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रामायणे लङ्काकाण्डम् ।

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

श्लोकः ।

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं
वंदे कुंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥
शंखेंद्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ॥
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—शिवजीसे सेवित संसारभयको हरनेवाले कालरूपी मतवाले हाथीको सिंह योगियोंमें इंद्र और ज्ञानसे जानने योग्य गुणोंके समुद्र अजित गुणों से परे विकाररहित मायासे पृथक् देवताओंके गुरु दुष्टोंके मारनेमें प्रीति करनेवाले ब्राह्मणगणोंके एकही देवता जल और जलसे पूरित मेघ कीसी आभा जिनके शरीरकी कमल कैसे नेत्र ऐसे पृथ्वीपति रामकी मैं वंदना करताहूं ॥ १ ॥

शंख और चंद्रमाके समान गौर और अतिसुंदर जिनका शरीर सिंहका चर्म जिनका वस्त्र और जो कालके समान सर्प और कपालभूषणको धारण करनेवाले और गंगा चंद्रमा जिनको अतिप्रियहैं काशीके ईश पापके नाशक कल्याणके कल्पवृक्ष गिरिजाके पति चराचरके पूजनीय गुणोंके समूह कामदेवके शत्रु शिवजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥

योददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ॥
खलानां दण्डकृद्योसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

जो शिवजी सज्जनोंको दुर्लभ मुक्ति देतेहैं और खलोंको दंड करते हैं सो शंकर मेरे कल्याणका विस्तार करैं ॥ ३ ॥

दोहा—छठवाँ लङ्काकाण्ड यह, वारिधितट रघुवीर ॥
शोभित सभा ससैन घन, वन्दत रहत न पीर ॥ १ ॥
सुदृढ सुभग शुठि सेतु रचि, सहित भालु कपि सैन ॥
कृष्णविहारी पार भे, राम लषण बल ऐन ॥ २ ॥
मंदोदरि सुनि शीशधुनि, बहुविधि कंत मनाय ॥
अखिल अजन्म अनन्त अज, रूप विराट दिखाय ॥ ३ ॥
ताहिप्रबोधत आप शठ, गुणी समूह बुलाय ॥
निर्भय देखत नाट्य सुख, विविध यंत्र बजवाय ॥ ४ ॥
परम सुभट अरि शीशपर, तदपि भय नहिं लेश ॥
यहाँ सुबैल सुसभायुत, राजत प्रभु अवधेश ॥ ५ ॥
नीति निपुण अंगद गये, प्रभु आज्ञा धरि शीश ॥
लंकापति सों बातकही, कही न मान दशीश ॥ ६ ॥
बहुरि चढाई लंककी, समर अकम्पन काय ॥
मेघनाद योधा अपर, लडे मरे गति पाय ॥ ७ ॥
सती सुलोचनि कुंभश्रुति, संगर कथा निकाय ॥
अहिरावण जूझन बहुरि, नारांतक सुनि आय ॥ ८ ॥
तासु वधन सति बिंदुमति, समर भयो लंकेश ॥
व्याकुल सुर मुनि विप्र लखि, हत्यो ताहि अवधेश ॥९॥
बहुरि जानकी कर मिलन, विनती सुरन जो कीन ॥
भालु कपिन कर पुनि जियन, राज्य विभीषण दीन ॥ १० ॥
सहित जानकी लषण प्रभु, सचिव भक्त हनुमंत ॥
पुष्पकयान अरूढह्वै, चले अवध भगवंत ॥ ११ ॥

जहाँ तहाँ क्षेपक कथा, अरु बहु प्रसँग मिलाय ॥
गाथा रघुवर नाम की, पढत सुनत रुज जाय ॥१२॥

दोहा–लव[1] निमेष परिमाणु[2] युग, वर्ष[3] कल्प[4] शर चण्ड ॥
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड ॥१॥

सो० सिंधुवचन सुनिराम, सचिवबोलिप्रभु असकह्यउ ॥
अब विलंब केहि काम, रचहुसेतु उतरैकटक ॥ १ ॥
सुनहु भानुकुल केतु, जाम्बवन्त कर जोरि कह ॥
नाथ नाम तव सेतु, नर चढिभवसागर तरहिं ॥२॥

यह लघु जलधि तरतकत बारा ❀ असमुनि पुनिकहपवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप वडवानल भारी ❀ शोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा ❀ भरयो बहोरि भयो तेहि खारा ॥
सुनि असि उक्ति पवनसुत केरी ❀ बिहँसे रघुपति कपितनहेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहिं सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि उर माहीं ❀ करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकरबहोरी ❀ सकल सुनहु विनती इक मोरी ॥
रामचरण पंकज उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट विकट वरूथा ❀ आनहु विटप गिरिन के यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करिहूहा ❀ जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दोहा–अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाइ ॥
आनि देहिं नल नील कहँ, विरचहिं सेतु बनाइ ॥ २ ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं ❀ कन्दुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना ❀ विहँसि कृपानिधि वोले वचना ॥
परमरम्य सुंदर यह धरणी ❀ महिमाअमितजाइ नहिं वरणी ॥

---

१ पलककालगनावंदहोना । २ साठिनिमिषकाएकपारमाणु । ३ वारहमासकाएकवर्ष ।
४ कल्पकही हजार सतयुग, हजार त्रेता, हजार द्वापर, हजार कलियुग, ऐसे चारिउयुग हजार हजार मिळके हजार चौकडी जब बीतें तब ब्रह्माका एकदिन होताहै ।

करिहौं यहाँ शम्भु थापना ❀ मोरे हृदय परम कलपना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ❀ मुनिवर निकर बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवतकरि पूजा ❀ शिव समान प्रियमोहिं न दूजा ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै ❀ सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै ॥
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी ❀ सोनर मूढ मंदमति थोरी ॥
दोहा—शंकरप्रिय ममद्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कलपभरि, घोर नरक महँ वास ॥ ३ ॥
जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❀ सो तनु तजि ममधाम सिधरिहैं ॥
जो गंगाजल आनि चढाइहि ❀ सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छल तजिसेइहि ❀ भक्ति मोरि तिहिं शंकर देइहि ॥
ममकृत सेतु जु दर्शन करिहैं ❀ सो विनु श्रम भवसागरतरिहैं ॥
रामवचन सबके मन भाये ❀ मुनिवरनिजनिज आश्रमआये ॥
गिरिजा रघुपति की यहरीती ❀ सन्तत करहिं प्रणत परप्रीती ॥
बाँधेउ सेतु नील नल नागर ❀ रामकृपा यशभयउ उजागर ॥
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई ❀ भये प्रबल बोहित सम तेई ॥
महिमा यह न जलधिके वरणी ❀ पाहन गुणन कपिनकीकरणी ॥
दोहा—श्री रघुवीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाँषाण ॥
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभुआन ॥ ४ ॥
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❀ देखि कृपानिधिके मनभावा ॥
चली सेन कछु वरणि न जाई ❀ गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥
सेतु बंध ढिग चढि रघुराई ❀ चितै कृपालु सिन्धु अधिकाई ॥
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा ❀ प्रगट भये सब जलचर वृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झर्ष व्याला ❀ शत योजन तनु परम विशाला ॥
ऐसे एक एक धरि खाहीं ❀ एकन के डर एक पराहीं ॥
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे ❀ मन हर्षित सब भये सुखारे ॥

---

९१ अत्रिमुनि, अगस्त्य, च्यवन, मार्कण्डेय, गर्ग, मुद्गल, नारद, शुकदेवादिअनन्तमुनिअपने२ स्थानको गये। २ निरन्तर। ३ शरणागत। ४ श्रेष्ठ। ५जहाज। ६समुद्र ७पत्थर ८मीन

तिनकी ओट न देखिय बारी ❀ मगन भये हरिरूप निहारी ॥
चला कटक कछु वरणि न जाई ❀ को कहिसककपिदल विपुलाई ॥
दोहा-सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभ पन्थ उड़ाहिं॥
अपर जलचरनि उपर चढ़ि, विनुश्रम पारहिजाहिं ॥५॥
यह कौतुक विलोकि दोउ भाई ❀ विहँसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुवीरा ❀ कहि न जात कछु यूथप भीरा ॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा ❀ सकल कपिनकहँआयसुदीन्हा ॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये ❀ सुनत भालु कपि जहँतहँ धाये ॥
सब तरु फले राम हित लागी ❀ ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागी॥
खाहिंमधुरफल विटपे हिलावहिं ❀ लंका सन्मुख शिखर चलावहिं ॥
जहँ कहुँ फिरत निशाचरपावहिं ❀ घेरि सकलमिलि नाचनचावहिं ॥
दसनन्हि काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना ॥
जिनकर नासा कान निपाता ❀ तेइँ रावणहिं कही सब बाता ॥
सुनत श्रवण वारिधि बंधाना ❀ दशमुख बोलि उठा अकुलाना ॥
दोहा-बाँधेउ जलनिधिनीरनिधि, जलधिसिन्धुवारीश॥
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधि पयोधि नदीश ॥६॥
व्याकुलता निज समुझि बहोरी ❀ विहँसिचलागृह करिमतिभोरी ॥
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ❀ कौतुक ही पाथोधि बँधाये ॥
करगहिपतिहिभवन निज आनी ❀ बोली परम मनोहरवानी ॥
चरण नाइ शिर अंचल रोपा ❀ सुनहु वचनपियपरिहरिकोपा ॥
नाथ वैर कीजै ताही सों ❀ बुधिवलजीतिसकियजाहीसों ॥
तुमहिं रघुपतिहि अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिवल मधुकैटभ जिनमारे ❀ महावीर दिति सुत संहारे ॥
जेहि बलिबाँधि सहसभुजमारा ❀ सोइ अवतरेउहरणमहिभारा ॥
तासु विरोध न कीजिय नाथा ❀ काल कर्म गुण जिनके हाथा ॥
दोहा-रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ ॥

१ पानी । २ वृक्ष । ३ दाँतनसे । ४ विसराइके । ५ हाथपकरके ।

सुत कहँ राज्य देइ वन, जाइ भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥

नाथ दीनदयालु रघुराई ❀ बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चाहिय करण सो सब करि बीते ❀ तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
संत कहहिं अस नीति दशानन ❀ चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहँ भर्ता ❀ जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी ❀ भजहुनाथ ममता मद त्यागी ॥
मुनिवर यत्न करहिं जेहि लागी ❀ भूप राज्य तजि होहिं विरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया ❀ आये करन तोहिंपर दाया ॥
जो पिय मानहु मोर शिखावन ❀ होइहि सुयश तिहूँ पुर पावन ॥

दोहा-अस कहि लोचन वारि भरि, गहि पद कंपित गात ॥
नाथ भजहु रघुनाथ पद, मम अहिवात न जात ॥ ८ ॥

तब रावण मयसुता उठाई ❀ कहै लागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया [३]मृषा भय माना ❀ जग योधा को मोहिं समाना ॥
वरुण कुबेर पवन यम काला ❀ भुजबलजित्यहुँसकलदिगपाला ॥
देव दनुज नर सब वश मोरे ❀ कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाविधिकहि तेहि समुझाई ❀ सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना ❀ कालविवशउपजाअभिमाना ॥
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा ❀ करियकवनविधिरिपुसन जूझा ॥
कहहिंसचिवसुननिशिचरनाहा ❀ बार बार प्रभु पूँछहु काहा ॥
कहहुकवन भयकरियविचारा ❀ नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दोहा-वचन सबन के श्रवण सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि ॥
नीतिविरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अति थोरि ॥ ९ ॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती ❀ नाथ न भल होइहि यहि भाँती ॥
वारिधि लाँघि एक कपि आवा ❀ तासु चरित मनमहँ सबगावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू ❀ जारत नगर न कस धरिखाहू ॥
सुनत नीक आगे दुखपावा ❀ सचिवनअसमत प्रभुहि सुनावा ॥
जो वारीश बँधायउ हेला ❀ उतरे कपिदल सहित सुबेला ॥

१ वन । २ जल । ३ मिथ्या ।

सो जनु मनुज खाब हमभाई ❀ वचन कहहु सब गाल फुलाई ॥
सुनि मम वचन तात अतिआदर ❀ निजमन गुणहुमोहिंकहिकादर॥
प्रियवाणी जे सुनहिं जे कहहीं ❀ ऐसे जग निकाय नर अहहीं ॥
वचन परम हित सुनत कठोरे ❀ कहहिं सुनहिं ते नर प्रभुथोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुन नीती ❀ सीतहि देइ करिय पुनिप्रीती ॥
दोहा–नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार ॥
नाहिं तो सन्मुख समरमहँ, नाथकरियहठमार ॥१०॥
यहमत जो मानहु प्रभु मोरा ❀ उभय प्रकार सुयश जग तोरा ॥
सुतसन कह दशकंध रिसाई ❀ असमत तोहिं शठकौनशिखाई ॥
अबहीं ते उर संशय होई ❀ वेणुवंश सुत भयसि घमोई ॥
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा ❀ चला भवन कहि वचन कठोरा ॥
हित मत तोहिं न लागत कैसे ❀ कालविवश कहँ भेषज जैसे ॥
संध्या समय जानि दशशीशा ❀ भवन चला निरखत भुज बीशा ॥
लंका शिखर रुचिर आगारा ❀ अति विचित्र तहँ होय अखारा ॥
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावन ❀ लागे किन्नर गँधरब गावन ॥
बाजैं ताल पखावज वीणा ❀ नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा ॥
दोहा–सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास ॥
परमप्रबल रिपु शीशपर, तदपि न कछुमनत्रास ॥११॥
यहाँ सुबेल शैल रघुवीरा ❀ उतरे सेन सहित अति भीरा ॥
शैल शृंग इक सुंदर देखी ❀ अति उतंग सम सुभग विशेखी ॥
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये ❀ लक्ष्मण रचि निजहाथडसाये ॥
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
प्रभुकृत शीश कपीश उछंगा ❀ वाम दहिन दिशि चाप निषंगा॥
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना ❀ कह लंकेश मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना ❀ चरणकमल चापत विधि नाना॥
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन ❀ कटि निषंग कर बाण शरासन ॥

१ बहुतहैं। २ औषधि। ३ इन्द्र। ४ भय। ५ अत्यन्त ऊंचा। ६ बराबर।
७ कोमलपत्ता। ८ विराजमान भयेहैं। ९ सुग्रीव। १० गोद।

दोहा-इहि विधि करुणा शील गुण, धामराम आसीन॥
तेनर धन्य जो ध्यानयहि, रहहिं सदा लवलीन॥१२॥
पूरव दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक॥
कह्योसबहिंदेखहुशशिहि, मृगपतिसरिसअशंक १३
पूरव दिशि गिरिगुहानिवासी ❋ परम प्रताप तेज बलरासी॥
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी ❋ शशि केहरी गगन वनचारी॥
बिथुरे नभ मुकताहल तारा ❋ निशि सुन्दरी केर शृंगारा॥
कह प्रभु शशिमहँ मेचकताई ❋ कहहु कहा निज निज मतिभाई॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ❋ शशिमहँ प्रगट भूमिकी छाया॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई ❋ उरमहँ परी श्यामता सोई॥
कोउकहजब विधिरतिमुखकीन्हा ❋ सारभाग शशिकर हरि लीन्हा॥
छिद्रसो प्रगट इन्दु उरमाहीं ❋ तेहिमग देखिय नभ परिछाहीं॥
कोउ कह गरल बंधु शशिकेरा ❋ अति प्रिय निज उरदीन्हबसेरा॥
विष संयुत करनिकर पसारी ❋ जारत विरहवन्त नर नारी॥
दोहा-कह मारुतसुतसुनहुप्रभु, शशि तुम्हारप्रियदास॥
तव मूरति तेहि उर बसत, सोइ श्यामता भास॥१४॥
पवनतनयके वचन सुनि, विहँसे राम सुजान॥
दक्षिण दिशा विलोकि पुनि, बोले कृपानिधान॥१५॥
देखु विभीषण दक्षिण आशा ❋ घन घमण्ड दामिनी विलासा॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा ❋ होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा॥
कहत विभीषण सुनहु कृपाला ❋ होइ न तडित न वारिद माला॥
लंकाशिखर रुचिर आगारा ❋ तहँ दशकन्धर केर अखारा॥
छत्र मेघ डम्बर शिरधारी ❋ सोजनुजलद घटा अतिकारी॥
मन्दोदरी श्रवण ताटंका ❋ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❋ सोइ रव सरस सुनहु सुरभूपा॥
प्रभुमुसुकान देखि अभिमाना ❋ चाप चढाइ बाण सन्धाना॥

१ चन्द्र। २ चन्द्र। ३ सिंह। ४ श्यामता। ५ विधाता। ६ विष।
७ हनुमान्। ८ स्थान। ९ सभा। १० गर्जेब। ११ धनुष।

दोहा–छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एक ही बान ॥
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥ १६ ॥
यह कौतुक करि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग ॥
रावण सभा सशंक सब, देखि महा रसभंग ॥ १७ ॥
कम्प न भूमि न मरुत विशेषा ❀ अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देखा ॥
शोचहिं सबनिज हृदयविचारी ❀ अशकुन भयउ भयंकर भारी ॥
रावण दीख सभा भय पाई ❀ विहँसि वचन कह युक्तिवनाई ॥
शिरो गिरे सन्तत शुभ जाही ❀ मुकुट गिरे कस अशकुन ताही ॥
शयन करहु निज निज गृहजाई ❀ गवने भवन सकल शिरनाई ॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ ❀ जब ते श्रवणफूल महि खसेऊ ॥
सजल नयन कह युगकरजोरी ❀ सुनहु प्राणपति विनती मोरी ॥
राम विरोध कन्त परिहरहू ❀ जानि मनुज जनि हठ उरधरहू ॥
दोहा–विश्वरूप रघुवंश मणि, करहु वचन विश्वास ॥
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥ १८ ॥
पदपाताल शीश अज धामा ❀ अपरलोक अंगन्ह विश्रामा ॥
भृकुटि विलास भयंकर काला ❀ नयन दिवाकर कच घन माला ॥
जासु घ्राण अश्विनी कुमारा ❀ निशिअरुदिवस निमेप अपारा ॥
श्रवण दिशा दश वेदबखानी ❀ मारुत श्वास निगम निजवानी ॥
अधर लोभ यम दशन कराला ❀ मायाहास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अम्बुपति जीहा ❀ उत्पति पालन प्रलय समीहा ॥
रोमावली अष्टदश भारा ❀ अस्थि शैल सरिता न सजारा ॥
उदर उदधि अधगोयातना ❀ जगमय प्रभु की बहुत कल्पना ॥
दोहा–अहंकार शिव बुद्धिअज, मनशशिचित्त महान॥
मनुज वास चर अचरमय, रूपराशि भगवान ॥१९॥
अस विचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन वैर विहाइ ॥
प्रीति करहु रघुवीर पद, मम अहिवात न जाइ ॥२०॥
विहँसा नारि वचन सुनि काना ❀ अहो मोह महिमा बलवाना ॥

नारि स्वभाव सत्य कविकहईं ❀ अवगुण आठ सदा उर रहईं ॥
साहस अनृत चपलता माया ❀ भय अविवेक अशौच अदाया ॥
रिपुकर रूप सकल तैं गावा ❀ अति विशालभय मोहिं सुनावा ॥
सो सब प्रिया सहजवश मोरे ❀ समुझि परा प्रभाव अब तोरे ॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई ❀ यहि मिसि कहेउ मोरि प्रभुताई ॥
तव बतकही गूढमृगलोचनि ❀ समुझत सुखदसुनतभयमोचनि ॥
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ ❀ पियहि कालवशमतिभ्रमभयऊ ॥

दो॰-बहुविधि जल्पेसिसकलनिशि, प्रातभयेदशकन्ध ॥
सहज अशंक सो लंकपति, सभागयोमदअन्ध ॥ २१ ॥

सो॰-फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥
मूरख हृदय न चेत, जोगुरु मिलहिं विरंचिसम ॥ ३ ॥

अथ क्षेपक।

दोहा-मंत्रिन सहित दशानन, चढेउ धवरहर जाय ॥
शुक सारन कह राज सन, देखहु कपि समुदाय ॥ २२ ॥

ये जो सिंहनाद किल करहीं ❀ सप्त ताल उन्नत संचरहीं ॥
सहस कोटि अतुलितबलवाना ❀ इनके सँग वानर परिमाना ॥
रण अजीत ये सहज अशंका ❀ नाद सुने काँपै गढ़ लंका ॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे ❀ जनु ऋतुपावस युग धनु पूरे ॥
विश्वकर्माके सुत गुणखानी ❀ इन्ह परशे पय शिल उतरानी ॥
वसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं ❀ गोदावरी विमल जलपाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं बीरा ❀ इन पर कृपा करहिं रघुबीरा ॥
करहिं यमहु कर संगर ढीला ❀ कज्जल वरण नाम नल नीला ॥

दोहा-पद्म अठारहकपिकटक, चलइनकी भुजछाँह ॥
निज कर सुरभी सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ ॥ २३ ॥

यह जो आवत अचलसमाना ❀ चौदह ताड उंच परिमाना ॥

१विनाविचारे शीघ्र कामकरना। २ मिथ्याकहना। ३ चंचलस्वभाव।
४ अभिमान भरी बातें मन्दोदरीसे करतारहा।

वास पुलिन्दा के तट करई ❀ अम्बुद निकरनिरखिकरधरई ॥
रक्तकमल दल सम सब देहा ❀ जनुविकसेउ संध्या कर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूँछ भँवाई ❀ लंका सौंह चितव जनु खाई ॥
तारा सुवन वालि को जायो ❀ अति जुझाररघुपतिमनभायो ॥
हृदय गगन इहि के प्रभु भानू ❀ पंच पद्म इन कर परिमानू ॥
करै वज्र वासव कर भंगा ❀ उदयाचल कहँ लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनप इहि लागो ❀ रघुपति कृपा परम बड़भागी ॥

दोहा-पाउँ धराधरि चापै, पन्नग होइ अकाज ॥
सेन अग्रसर देखहु, यह अंगद युवराज ॥ २४ ॥

यह जो श्वेत वर्ण तनु रेखा ❀ मनहुँ रजत गिरि शृङ्ग विशेखा॥
दीर्घकेश दारुण भुजदंडा ❀ चपलचलतबलबुद्धिप्रचंडा ॥
वास करै जलनिधिके तीरा ❀ पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी ❀ सबल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
बल अरु बुद्धि न इहिसम आना ❀ इहिकर पुरुषारथ जगजाना ॥
निरखि गगन राकाशशिसोहा ❀ शिशुअजानतेहिलगिमनमोहा ॥
धरणी धसकिधरनजबउडेऊ ❀ सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ ॥

दोहा-कोटि पंचशत मर्कट, रहैं सर्वदा साथ ॥
कालहुते रण लरि सकै,कुमुद नाम कपिनाथ ॥२५॥

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमड़े ❀ मनहुँ लंक सावन घन उमड़े ॥
आगू पीछू दशदिशि धावहिं ❀ शिला शृङ्ग तरु तोरतआवहिं ॥
सहस नागबल सबहिं समाना ❀ सप्त पद्म इनकर परिमाना ॥
काशीपुरी वास इन्हकेरी ❀ समर कतहुँ जिन पीठ न फेरी ॥
तीक्षणदन्त नखायुध धारी ❀ द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा ❀ लंकानिकट कीन्ह जेहिंडेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जँबवन्ता ❀ तेहि के बल कर पावको अंता॥
देव दनुज को जूझे ताही ❀ धरा होहि कर कंदुक जाही ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा ❀ अशनि समान अभेद शरीरा ॥

१ पृथ्वी । २ इन्द्र । ३ शेषनाग । ४ वज्र ।

दोहा-सचिव सुकण्ठ राजकर, रघुवर कर प्रियदास ॥
सो जड़मन्द जो याहि रण, चह जीतन की आश ॥२६॥
अब देखहु यह यूथ अपारा ❀ पीतवर्ण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुण मरीचि जसफूटी ❀ निशिचर निकर तमीचहछूटी ॥
चौविस अर्बुद इनकर यूहा ❀ सहस वृन्द सम कोटि समूहा ॥
शिलाशैल जे आगे परहीं ❀ पाँयन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दर के वासी ❀ इनकर यूथ नाथ अविनाशी ॥
अतिबल वासव करहितकारी ❀ सखा सुकुण्ठ केर सुखकारी ॥
पान करै गंगाकर नीरा ❀ पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
छिन छिन सिंहनाद जो होई ❀ गर्जत आवत है कपि सोई ॥
दोहा-यशतिहुँमण्डलगलितगज, बल कर नाहिंन अंत ॥
यह कपिराजा केशरी, सुवन जासु हनुमंत ॥२७॥
उत्तर दिशि देखहु रजधानी ❀ जनु दुकाल लगिशलभ उडानी ॥
मर्कट निकर विकल बल टूटे ❀ आवत उदधि कूल जनु छूटे ॥
इहिदल यूथ नाथ जो अहई ❀ अतिबलवंत राजसँग रहई ॥
कपिके रूप अनल अविनाशी ❀ एदोउ पारिपात्र के वासी ॥
अति सुन्दर अरु समर विपक्षा ❀ महावली दोउ गवयगवक्षा ॥
ये दोउ गर्जत अति रणधीरा ❀ पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा ॥
सत्तरिसहस नागबल जाही ❀ इनमहँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गंधमादन नामा ❀ रण अजेय पुनि सबगुणधामा ॥
दोहा-वासव विबुध वृन्द महँ, तेजनमहँ जस भानु ॥
पनस नाम यह वानर, अति बल नीति निधानु ॥२८॥
यह जो कुमुदपत्र सम देहा ❀ जस कैलास शृंगकी रेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने ❀ कामरूप चितवत चहुँ कोने ॥
लंका सौंह लंगूर फिराई ❀ गर्जत प्रलय मेघ की नाई ॥
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ ❀ तब ते कामरूप यह भयऊ ॥

१ सुग्रीव । २ पुत्र । ३ टीडी ।

मघवा इहिसन कीन्ह मिताई ❀ करै सदा यह दैव सहाई ॥
सहस कोटि कपि इहिके संगा ❀ राते पीत श्वेत बहुरंगा ॥
वचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं ❀ अपरवालि जानहु मन माहीं ॥
दर्दुर शैल सदन इहि केरा ❀ मन वच कर्म्म राम कर चेरा ॥
दोहा-गिरिवर लाँघत आवही, चलत उड़ावंत रेणु ॥
तरणि तेज इन रूँधेऊ, तारातनयसुषेणु ॥ २९ ॥
यह कपि लसत मनहुँ गिरिमेरू ❀ दिनमुखछवि जस लहत सुमेरू ॥
सोइकपि प्रथमलंक जेहिजारी ❀ प्रभुकेहि लगि आवत इहिबारी॥
अंजनि गर्भ जन्म जब भयऊ ❀ क्षुधित जननिसनअरतसठयऊ ॥
तेइँकहसुपक अरुण फलखाहू ❀ सुनत चितवइतउत चितचाहू ॥
बाल अरुण लखि गगन उड़ाना ❀ ग्रसेसि तरणि वासव तब जाना॥
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढी ❀ कोपि पवनसमीर सम वेढी ॥
देव विकल होइ अस्तुतिकीन्हा ❀ कुलिशहोउ तनु असवरदीन्हा॥
तब रवि छाँडि पवनसुत दीन्हा ❀ जय जयकार देवतन कीन्हा ॥
विद्या पढत भानुके पाहीं ❀ उलटी गति रवि आगे जाहीं ॥
वारिधि लाँघेउ गोपद जैसे ❀ यहि कपीश सन जूझब कैसे ॥
दोहा-अंबक पीत बालरवि, वदन तेज अति राज ॥
पवनते वेग अधिकजनु, अनल नितंब सुभ्राज ॥ ३० ॥
अतसी कुसुम वर्ण तनु रेखा ❀ पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उराविशाल अति उन्नत कंधर ❀ कम्बु[१] कण्ठ रेखा प्रसन्नवर ॥
मुख छवि की उपमा कविजो है ❀ शशि सरोज सम कहैं नसोहै ॥
दशन पाँति की काँति कहै को ❀ ललकत मन पटतरिय लहैको ॥
देखत अधरन[२] की अरुणाई ❀ बिम्बाफल बन्धूक[३] लजाई ॥
शुक तुण्डहि नासिका लजावै ❀ थके सुकवि नहिं पटतर[४] आवै ॥
शीश जटा के मुकुट बनाये ❀ भाल विशाल तिलकअतिभाये॥

१ शंख । २ ओष्ठनकी । ३ कुँदरू । ४ उपमा ।

दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा ❀ रामबाहु सम अति रणधीरा ॥
दोहा-वाम विभीषण सोहहीं, शिर अभिषेका राज ॥
बीजमंत्र सब जानहीं, अकसर करहिं सुकाज ॥ ३१ ॥
अब देखहु यह सेन सुहाई ❀ भादों मेघ घटा जनु छाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई ❀ नयन भूरि अरु रूप लुनाई ॥
बाल भाव दिनकर बल दीन्हा ❀ ऋतु जानी वासव रतिकीन्हा ॥
जातक जमल वीर दोउ जाये ❀ देव अंश वानर तनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना ❀ देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा ❀ चातुर्मास बसे जहँ रामा ॥
वाली ज्येष्ठ राम रणमारा ❀ यहि कहँ राजतिलक प्रभुसारा ॥
तारा तासु भई पटरानी ❀ जेहि कर सुत अंगद अतिज्ञानी ॥
सहस शंकु कर अर्बुद एका ❀ अर्बुद सहस कि वृन्द विवेका ॥
सहस वृन्द गणकन गणि माना ❀ महापद्म तेहि कर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा ❀ विग्रह चढेउ राम के काजा ॥
वीर वेष अरु नयन विशाला ❀ कम्बु कण्ठ मोतिन की माला ॥
दोहा-हस्ती साठि सहस्र बल, सदा धर्म्म की सीव ॥
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥ ३२ ॥
इहि विधि सकल दिखाये, शारण कपिदलयूह ॥
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व्व समूह ॥ ३३ ॥

इति क्षेपक ।

इहाँ प्रात जागे रघुराई ❀ पूँछा मत सब सचिव बुलाई ॥
कहहु वेगि का करिय उपाई ❀ जाम्बवन्त कह पद शिरनाई ॥
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उरवासी ❀ सर्व्व रूप सब रहित उदासी ॥
मंत्र कहब निज मति अनुसारा ❀ दूत पठाइय वालिकुमारा ॥
नीकमंत्र सब के मनमाना ❀ अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
वालितनय बुधि बल गुणधामा ❀ लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊँ ❀ परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥

काज हमार तासु हित होई ❋ रिपुसन करेहु बतकही सोई ॥

सो०–प्रभुआज्ञा धरिशीश, चरण वन्दि अंगदकह्यउ ॥
सोइ गुणसागर ईश, राम कृपा जापर करहु ॥ ४ ॥
स्वयंसिद्धि सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ ॥
अस विचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षितभयउ ॥५॥

वन्दि चरण उरधरि प्रभुताई ❋ अंगद चलेउ सबहिं शिरनाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका ❋ रणबांकुरा वालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावणकर बेटा ❋ खेलत रहा सो होइ गइ भेटा ॥
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई ❋ युगल अतुल बल पुनि तरुणाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई ❋ गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई ॥
निशिचर निकर देखि भटभारी ❋ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एक एक सन मर्म न कहहीं ❋ समुझितासुवल चुप होइ रहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी ❋ आवा कपि लंका जेइंजारी ॥
अवधौं कहा करिहि करतारा ❋ अति सभीत सबकरहिं विचारा ॥
बिनु पूँछे मगु देहिं बताई ❋ जेहि विलोकि सोइ जाइ सुखाई ॥

दोहा–गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि रामपदकंज ॥
सिंहठवनि इत उत चितै, धीर वीर बलपुंज ॥ ३४ ॥

तुरत निशाचर एक पठावा ❋ समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा ❋ आनहु बोलि कहाँकर कीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये ❋ कपि कुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दशानन बैसा ❋ सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा ॥
भुजा विटप शिर शृंगसमाना ❋ रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना ❋ गिरिकन्दरा खोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❋ वालितनय अतिबल बाँकुरा ॥
उठी सभा सब कपि कहँ देखी ❋ रावण उरभा क्रोध विशेषी ॥

दोहा–यथा मत्त गजयूथ महँ, पंचानन चलि जाय ॥

१ युद्धक्रियामें प्रवीण । २ महस्त । ३ क्रोध । ४ भेद । ५ दुष्ट । ६ रस्ता । ७ वृक्ष । ८ पर्वतकाकँगूरा । ९ सिंह ।

रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सभहि शिरनाय ॥ ३५ ॥
कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर ❀ मैं रघुवीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनकहि[1] तोहिं रहीमिताई ❀ तवहित कारण आयउँ भाई ॥
उत्तम कुल पुलस्त्यकर नाती ❀ शिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा ❀ जीतेहु लोकपाल सुर राजा ॥
नृप अभिमान मोहवश किम्बा ❀ हरि आनेहु सीता जगदम्बा ॥
अव शुभ कहा करहु तुम मोरा ❀ सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा ॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी ❀ पुरजन संग सहित निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे ❀ इहि विधिचलहुसकलभयत्यागे॥
दोहा-प्रणतपाल रघुवंशमणि,त्राहि त्राहि अब मोहिं ॥
सुनतहि आरतवचनप्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥ ३६॥
रेकपि पोच बोलु संभारी ❀ मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक करभाई ❀ केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम वालि कर बेटा ❀ तोसों कबहुँ भई होइ भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना ❀ रहा वालि वानर मैं जाना ॥
अंगद तुहीं वालि कर बालक ❀ उपजेउ वंश अनल कुलघालक॥
गर्भ न खसेउ वृथा तुम जाये ❀ निजमुख तापसदूत कहाये ॥
अब कहु कुशल वालि कहँ अहई ❀ विहँसि वचन अंगद अस कहई ॥
दिन दश गये वालिपहँ जाई ❀ पूँछेहु कुशल सखा उर लाई ॥
राम विरोध कुशल जस होई ❀ सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ॥
सुन शठ भेद होइ मन जाके ❀ श्रीरघुवीर हृदय नहिं ताके ॥
दोहा-हम कुलघालक सत्यतुम,कुलपालक दशशीश॥
अन्धउ[2] वधिर[3] न कहहिंअस,श्रवणनयनतवबीश॥ ३७॥
शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई ❀ चाहत जासु चरण सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुलबोरा ❀ ऐसी मति उर विहरु न तोरा ॥
सुनि कठोरवाणी कपि केरी ❀ कहत दशानन नयन तरेरी ॥

१ पिता । २ विकल । ३ बहिरा ।

खल तव वचन कठिन मैं सहऊँ ❀ नीति धर्म सब जानत अहऊँ ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी ❀ हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी ॥
देखेउँ नयन दूत रखवारी ❀ बूड़ि न मरहु धर्म्मव्रत धारी ॥
नाक कान विन भगिनि निहारी ❀ क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी ॥
धर्म शीलता तव जग जागी ❀ पावा दरश हमहुँ बड़भागी ॥

दो.-जानिजल्पसिजड़ जन्तुकपि, शठविलोकुममबाहु॥
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसनहेतुजिमिराहु॥३८॥
पुनि नभ सर ममकर निकर, कर कमलन पर वास ॥
शोभित भयो मरालइव, शम्भुसहित कैलास ॥ ३९ ॥

तुम्हरे कटक माहिं सुनु अंगद ❀ मोसन भिरहि कौन योधा वद॥
तव प्रभु नारि विरह बलहीना ❀ अनुजतासु दुख दुखितमलीना॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ ❀ बन्धु हमार भीरु अति सोऊ ॥
जाम्बवन्त मंत्री अति बूढा ❀ सो किमि होइ समर आरूढा ॥
शिलपकर्म जानत नल नीला ❀ है कपि एक महाबल शीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा ❀ सुनि हँसि बोलेउ वालिकुमारा ॥
सत्यवचन कह निशिचर नाहा ❀ साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा ॥
रावण नगर अल्प कपि दहई ❀ सुनि अस वचन सत्यको कहई॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन ❀ सो सुग्रीव केर लघुधावन ॥
चलै बहुत सो वीर न होई ❀ पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दोहा-अब जाना पुरदहेउ कपि, विनु प्रभु आयसुपाइ॥
गयउनफिरिनिजनाथपहँ, तेहिभयरहेउलुकाइ॥४०॥
सत्य कहसि दशकण्ठतैं, मोहिं न सुनि कछु कोहँ ॥
कोउ न हमरे कटकअस, तुमसनलरतजोसोहँ॥४१॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि ॥
जो मृगपति वध मेंडुकहि, भलो कहै को ताहि ॥४२॥
यद्यपि लघुता रामकहँ, तोहिं वधे बड़ दोष ॥

१ डरपोक । २ आज्ञा । ३ क्रोध । ४ सिंह ।

तदपि कठिनदशकण्ठसुन, क्षत्रिजाति कर रोष॥ ४३॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तब, कपिकर बड़ गुण एक॥
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक॥ ४४॥
धन्य कीश जो निजप्रभुकाजा ❀ जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई ❀ पतिहित करत कर्म निपुणाई॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती ❀ प्रभुगुण कसनकहसिइहिभाँती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना ❀ तव कटुवचन करौं नहिं काना॥
कह कपि तव गुण गाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई॥
वन विध्वंसि सुत वधि पुर जारा ❀ तदपिनतेहिकछु कृत अपकारा॥
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई ❀ दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥
वक्र उक्ति धनु वचन शर, हृदय दहेउ रिपुकीश॥
प्रति उत्तर सडसिनमनहुँ, काढत भट दशशीश॥ ४५॥
जो असिमति पितु खायहु कीशा ❀ कहि अस वचन हँसा दशशीशा॥
पितहि खाइ खातेउँ अवतोहीं ❀ अबहीं समुझि परा कछु मोहीं॥
बालि विमलयश भाजन जानी ❀ हतौं न तोहिं अधम अभिमानी॥
कहु रावण रावण जग केते ❀ मैं निज श्रवण सुने सुन तेते॥
बलिजीतन इक गयउ पताला ❀ राखा बाँधि शिशुन हयशाला॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दयालागि बलि दीन छुड़ाई॥
एक बहोरि सहसभुज देखा ❀ धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा॥
कौतुक लागि भवन लै आवा ❀ सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा॥
दोहा—एक कहत मोहिंसकुचअति, रहावालिकीकाँख॥
इनमहँ रावण तैं कवन, सत्य कहहु तजि माख॥ ४६॥
सुनु शठ सोइ रावण बलशीला ❀ हर गिरि जान जासु भुजलीला॥
जान उमापति जासु सुराई ❀ पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई॥
शिर सरोज निजकरन उतारी ❀ पूजे अमित बार त्रिपुरारी॥

१ रावण। २ बालकन। ३ गृह।

भुजविक्रम जानहिं दिगपाला ❀ शठ अजहूँ जिनके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❀ जब जब जाइ भिरेउँ बरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे ❀ उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलत इमि धरणी ❀ चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी ॥
सोइ रावण जगविदितप्रतापी ❀ सुने न श्रवण अलीक अलापी ॥
दोहा-तेहिरावणकहँलघुकहसि,नरकरकरसिबखान ॥
रे कपि बर्बर खर्ब खल, तब न जान अब जान ॥४७॥
सुनि अंगद सकोप कह बानी ❀ बोल सँभारि अधम अभिमानी ॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा ❀ दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परशु सागर खरधारा ❀ बूड़े नृप अगणित बहु बारा ॥
तासु गर्व जेहि देखत भागा ❀ सो नर किमि दशकंठ अभागा ॥
राम मनुज कसरे शठबंगा ❀ धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा ❀ अन्नदान अरु रसकि पियूखा ॥
वैनतेय खग अहि सहसानन ❀ चिन्तामणि की उपल दशानन ॥
सुनु मतिमन्द लोक वैकुण्ठा ❀ लाभ किरघुपतिभक्तिअकुण्ठा ॥
दोहा-सेन सहित तव मानमथि, बनउजारिपुरजारि ॥
कसरे शठ हनुमान कपि,गयउ जोतवसुतमारि ॥४८॥
सुनु रावण परिहरि चतुराई ❀ भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि रामकरद्रोही ❀ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला ❀ रामबैर होइहि अस हाला ॥
तवशिर निकर कपिनकेआगे ❀ परिहैं धरणि राम शर लागे ॥
ते तव शिर कन्दुक इव नाना ❀ खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिं समर कोपहिंरघुनायक ❀ छूटहिं अति कराल बहुसायक ॥
तब कि चलहि असगालतुम्हारा ❀ असविचारि भजु राम उदारा ॥
सुनत वचन रावण पर जरा ❀ बरत अनलमहँ जनु घृत परा ॥
दोहा-कुम्भकर्ण सम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि ॥

१ अमृत । २ गरुड़ । ३ पत्थर । ४ गेंदकेतुल्य ।

मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचरझारि ॥ ४९ ॥
शठ शाखामृग जोरि सहाई ❀ बाँध्यो सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
लाँघहिं खग अनेक बारीशा ❀ शूर न होइ सुनहु जड कीशा ॥
ममभुज सागर बल जल पूरा ❀ जहँ बूड़े सुर नर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा ❀ को असवीर जो पावहि पारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा ❀ भूप सुयश खल मोहिं सुनावा ॥
जोपै समर सुभट तवनाथा ❀ पुनिपुनि कहसिजासुगुणगाथा ॥
तौ बसीठ पठवा केहिकाजा ❀ रिपुसन प्रीति करतनहिं लाजा ॥
हर गिरि मथन निरखि ममबाहू ❀ पुनिशठकपिनिजस्वामिसराहू ॥
दोहा—शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश ॥
हुतेउँ अनल महँ बारबहु, हर्षित साखि गिरीश ॥ ५० ॥
जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला ❀ विधिकेलिखे अंक निजभाला ॥
नरके कर आपन बध बाँची ❀ हँसेउँ जानि विधि गिराअसाँची ॥
सो मन समुझि त्रासनहिं मोरे ❀ लिखा विरंचि जरठ मतिभोरे ॥
आन वीर को शठ मम आगे ❀ पुनि पुनि कहसिलाजपरित्यागे ॥
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं ❀ रावण तोहिं समान कोउ नाहीं ॥
लाजवन्त तव सहज स्वभाऊ ❀ निजगुणनिजमुखकहसिनकाऊ ॥
शिर अरु शैल कथा चित रही ❀ ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली ❀ जितेउ न सहसबाहु बलि बाली ॥
सुन मतिमन्द देह अबपूरा ❀ काटे शीश न होइय शूरा ॥
बाजीगर कहँ कहिय नवीरा ❀ काटै निजकर सकल शरीरा ॥
दोहा—जरहिं पतंगविमोहवश, भार बहहिं खरवृन्द ॥
ते नाहिं शूर कहावहीं, समुझ देखु मतिमन्द ॥ ५१ ॥
अबजनि बतबढाव खलकरई ❀ सुनि ममवचन मान परिहरई ॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउ ❀ असविचारि रघुवीर पठायउ ॥
बार बार इमि कहेउ कृपाला ❀ नहिं गजारि यश बधे शृगाला ॥

१ अग्नि । २ वृद्धापा । ३ गदहा । ४ सिंह ।

मनमहँ समुझि वचन प्रभु केरे ❀ सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे ॥
नहिं तो करि मुखभंजन तोरा ❀ लै जातेउँ सीतहि वरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी ❀ सूने हरि आनी परनारी ॥
तैं निशिचर पति गर्व बहूता ❀ मैं रघुपति सेवककर दूता ॥
जो न राम अपमानहिं डरऊं ❀ तोहिं देखत अस कौतुक करऊं॥

दोहा–तोहिं पटकि महि सेनहति,चौपटकरि तव गाँउँ॥
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ५२ ॥

जो अस करहुँ न तदपि बडाई ❀ मुयहि वधे कछु नहिं मनुसाई॥
कौल कामवश कृपण विमूढा ❀ अति दरिद्र अयशी अति बूढा॥
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी ❀ राम विमुख श्रुति सन्त विरोधी॥
निज तनु पोषक निर्दय खानी ❀ जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥
अस विचारि खल वधौं न तोहीं ❀ अब जनि रिसउपजावसि मोहीं॥
सुनिसकोप कह निशिचर नाथा ❀ अधरदशन गहि मींजत हाथा॥
रे कपि पोच मरणअबचहसी ❀ छोटे वदन बात बडि कहसी ॥
कटुजलपसि जड कपिबलजाके ❀ बुधि बल तेज प्रताप न ताके ॥

दोहा–अगुण अमान विचारित्यहि,दीनपितावनवास॥
सो दुखअरुयुवतीविरह,पुनि निशि दिन ममत्रास५३
जिनके बल कर गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक ॥
खाहिं निशाचरदिवसनिशि,मूढसमुझुतजिटेक॥५४॥

जब तेहि कीन्ह रामकी निन्दा ❀ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरिहर निंदा सुनै जो काना ❀ होय पाप गोघात समाना ॥
कट कटाइ कपि कुंअर भारी ❀ दोउ भुजदण्डतमकि महिमारी॥
डोलत धरणि सभासद खसे ❀ चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठ्यो सँभारी ❀ भूतल परेउ मुकुट पटचारी ॥
कछु निजकरलै शिरन सँभारे ❀ कछु अंगद प्रभु पास पँवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे ❀ दिनहीं लूक परन अब लागे ॥

१ मुर्दा। २ दरिद्री। ३ अंगद।

की रावण करि कोप चलाये ❀ कुलिश चारिआवत अतिधाये॥
कह प्रभुहँसि जनि हृदय डराहू ❀ लूक न अशनि केतु नहिं राहू॥
ये किरीट दशकन्धर केरे ❀ आवत बालितनय के प्रेरे॥
दोहा-कूदि गहे कर पवनसुत, आनि धरे प्रभु पास॥
कौतुक देखहिं भालुकपि, दिनकरसरिसप्रकास॥५५॥
वहाँ कहत दशकन्ध रिसाई ❀ धरि मारहु कपि भागि न जाई॥
इहि विधिवेगि सुभट सब धावहु ❀ खाहु भालुकपि जहँ तहँ पावहु॥
महि अकीश करि फेरि दोहाई ❀ जियत धरहु तापस दोउ भाई॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा ❀ गाल बजावत तोहिं न लाजा॥
मरु गलकाटि निलजकुलघाती ❀ बलविलोकि बिदरतनहिं छाती॥
रेतियचोर कुमारग गामी ❀ खलमलराशि मन्दमति कामी॥
सन्निपात जल्पसि दुर्वादा ❀ भयसि कालवश शठमनुजादा॥
याको फल पावहुगे आगे ❀ वानर भालु चपेटन लागे॥
राम मनुज बोलत अस बानी ❀ गिरहि न तव रसना अभिमानी॥
गिरिहै रसना संशय नाहीं ❀ शिरन समेत समर महि माहीं॥
सो०-सो नर क्यों दशकन्ध, बालि वधेउ जेहि एकशर॥
बीसहु लोचन अन्ध, धृक तव जन्म कुजाति जड॥६॥
तव शोणितकी प्यास, तृषित राम सायक निकर॥
तजेउँतोहिंतेहिआस, कटुजल्पसिनिशिचरअधम॥७॥
मैं तवदशन तोरिबे लायक ❀ आयसु पै न दीन रघुनायक॥
असरिस होत दशौ मुख तोरौं ❀ लंका गहि समुद्रमहँ बोरौं॥
गूलरफल समान तव लंका ❀ वसहिंमध्य जनु जन्तु अशंका॥
मैं वानर फल खात नवारा ❀ आयसु दीन्ह न राम उदारा॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ❀ मूढ शिखेसि कहँ बहुत झुठाई॥
बालि कबहुँ असगालनमारा ❀ मिलि तपसिनतैं भयसिलबारा॥
साँचउ मैं लबार दशशीशा ❀ जो न उपारौं तव भुज बीशा॥

१ वज्र। २ मुकुट। ३ फेंके। ४ सूर्य्य। ५ जिह्वा। ६ झूंठ।

राम प्रताप सुमिरि कपिकोपा ❀ सभा माँझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जो मम चरण सकसि शठटारी ❀ फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा ❀ पदगहि धरणि पछारहु कीशा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना ❀ हर्षि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल विपुल उपाई ❀ पद नटरै बैठहिं शिरनाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती ❀ टरै न कीश चरण इहि भाँती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी ❀ मोह विटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दोहा–भूमि न छाँड़त कपिचरण, देखत रिपुमद भाग ॥
कोटिविघ्नजिमिसन्तकहँ, तदपिनीतिनहिंत्याग ॥५६॥

कपिबल देखि सकल हियहारे ❀ उठा आप कपिके परचारे ॥
गहत चरण कह वालिकुमारा ❀ ममपद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरण शठ जाई ❀ सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥
भयो तेजहत श्री सब गई ❀ मध्य दिवस जिमिशशिसोहई ॥
सिंहासन बैठा शिरनाई ❀ मानहु सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्रणतपति रामा ❀ तासु विमुख किमिलह विश्रामा ॥
उमा रामकर भ्रुकुटि विलासा ❀ होइ विश्व पुनि पावै नाशा ॥
तृणते कुलिश कुलिशतृणकरहीं ❀ तासु दूत पद कहु किमि टरहीं ॥
पुनि कपिकही नीति विधि नाना ❀ मानतनाहिं काल नियराना ॥
रिपुमद मथि प्रभु सुयश सुनाये ❀ अस कहि चले वालिनृपजाये ॥
अबहीं मुख का करौं बडाई ❀ हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा ❀ सो सुनि रावण भयो दुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी ❀ भयव्याकुल अति हृदय विशेषी ॥

दोहा–रिपुबल धर्षि हर्षिहिय, वालितनय बलपुंज ॥
सजल नयन तनुपुलक अति, गहे रामपदकंज ॥५७॥
साँझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ ॥
मन्दोदरी अनेक विधि, बहुरि कहा समुझाइ ॥ ५८ ॥

---

१ देवतोंकेवैरी। २ पाखण्डी। ३ दोपहर। ४ परास्त। ५ नजदीक।

कन्तसमुझि मनतजहुकुमतिही ❀ सोह न समर तुमहिं रघुपतिही ॥
रामअनुज धनुरेख खँचाई ❀ सो नहिं लाँघेउ अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतब संग्रामा ❀ जाके दूतनके असकामा ॥
कौतुक सिंधु लाँघि तव लंका ❀ आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति विपिन उजारा ❀ देखत तुमहिं अक्ष जिन मारा ॥
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि क्षारा ❀ कहाँरहा बल गर्व तुम्हारा ॥
अबपति मृषा गाल जनि मारहु ❀ मोर कहा कछु हृदय विचारहु ॥
पतिरघुपतिहिमनुजजनि जानहु ❀ अगजगनाथ अतुल बलमानहु ॥
बाणप्रताप जान मारीचा ❀ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभा अगणित महिपाला ❀ रहेउ तहाँ तुम गर्व विशाला ॥
भंजि धनुष जानकी विवाही ❀ तव संग्राम न जीत्यऊ ताही ॥
सुरपति सुत जाना बल थोरा ❀ राखा जियत आँखियकफोरा ॥
शूर्पणखाकी गति तुम देखी ❀ तदपि हृदय नहिंलाजविशेषी ॥

दोहा—बधि विराध खर दूषणहिं, लीला हतेउ कबन्ध ॥
वालि एक शर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध ॥ ५९ ॥

जेहि जलनाथ बँधायो हेला ❀ उतरेउ कपि दल सहित सुवेला ॥
कारुणीक दिनकर कुलकेतू ❀ दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभा माँझ जेइँ तव बल मथा ❀ करि वरूथमहँ मृगपति यथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके ❀ रण बाँकुरे वीर अति बाँके ॥
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नरकहहू ❀ मृषा मान ममता मदगहहू ॥
अहह कन्त कृत राम विरोधा ❀ कालविवश मन होइ न बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा ❀ हरे धर्म्म बल बुद्धि विचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं ❀ तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं ॥

दोहा—दुइ सुत मारेउ पुर दहेउ, अजहुँ पीय सिय देहु ॥
कृपासिंधु रघुवीर भजि, नाथ विमलयशलेहु ॥ ६० ॥

नारिवचन सुनि विशिखे समाना ❀ सभागयो उठि होत विहाना ॥

१ हाथियोंके झुंडमें जैसे सिंह । २ बाण । ३ भोर ।

बैठा जाइ सिंहासन फूली ❁ अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
यहाँ राम अंगदहि बुलावा ❁ आइ चरण पंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी ❁ बोले बिहँसि कृपालु खरारी ॥
बालितनय अति कौतुक मोहीं ❁ तात सत्य कहु पूँछों तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका ❁ भुजबल अतुल जासु जगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये ❁ कहहु तात कवनी विधि पाये ॥
कहा बालिसुत सुनहु खरारी ❁ मुकुट नहोइँ भूपगुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा ❁ नृप उर वसहिं नाथ कह वेदा ॥
नीति धर्मके चरण सुहाये ❁ अस जिय जानि नाथपहँ आये ॥

दोहा-धर्महीन प्रभुपद विमुख, कालविवश दशशीश ॥
आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥ ६१ ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार ॥
समाचार तब सब कहेउ, गढ़के बालिकुमार ॥ ६२ ॥

रिपुके समाचार जब पाये ❁ राम सचिव तब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा ❁ केहि विधि लागिय करहु विचारा ॥
तब कपीश ऋक्षेश विभीषण ❁ सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषण ॥
करि विचार तिन मंत्र दृढावा ❁ चारि अनी कपि कटकबनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हे ❁ यूथप सकल बोलि तिन लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये ❁ सिंहनाद करि सब कपिधाये ॥
हर्षित रामचरण शिर नावें ❁ गहि गिरि शिखरे भालुकपिधावें ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा ❁ जयरघुवीर कोशलाधीशा ॥
जानत परमदुर्ग गढलंका ❁ प्रभु प्रताप कपि चले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुँदिशि घेरी ❁ मुखहि निशान बजावहिं भेरी ॥

दोहा-जयति राम भ्राता सहित, जय कपीश सुग्रीव ॥
गर्जें केहरिनाद कपि, भालु महाबल सींव ॥ ६३ ॥

लंका भयउ कोलाहल भारी ❁ सुनेउ दशानन अति हंकारी ॥

---

१ पर्वत । २ वृक्ष । ३ रीछ । ४ हल्ला ।

देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ❀ बिहँसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश कालके प्रेरे ❀ क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहास शठकीन्हा ❀ गृह बैठे अहार विधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहु दिशिजाहू ❀ धरि धरि भालु कीशसबखाहू ॥
उमा रावणहिं अस अभिमाना ❀ जिमि टिट्टिभपगसूत उताना ॥
चले निशाचर आयसु माँगी ❀ गहि कर भिंदिपाल बरसाँगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा ❀ शूल कृपाण परशु गिरि खण्डा॥
जिमिअरुणोपल निकर निहारी ❀ धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा ❀ तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥

दोहा–नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर ॥
कोट कँगूरन चढि गये, कोटि कोटि रणधीर ॥ ६४ ॥

कोटकँगूरन सोहहिं कैसे ❀ मेरु शृङ्ग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ ❀ सुनि सुनि सुभटनके मन चाऊ ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❀ सुनि कादर उर होइँ दरारा ॥
देखि नजाइँ कपिनके ठट्टा ❀ अति विशाल तनु भालु सुभट्टा ॥
धावहिं गनहिं न औघट घाटा ❀ पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं ❀ दशनन ओठ काटि अतितर्जहिं ॥
उत रावण इत राम दोहाई ❀ जयति जयति कहि परीलराई ॥
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं ❀ कूदि धरहिं कपिफेरि चलावहिं ॥

छंद–हरिगीतिका ।

धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़पर डारहीं ॥
झपटैं चरणगहिपटकि महिभजिचलत बहुरि प्रचारहीं॥
अति तरलतरुणप्रताप तर्जहिं तमकि गढपर चढिगये ॥
कपि भालुचढि मन्दिरन जहँतहँ रामयश गावतभये १

दोहा–एक एक गहि रजनिचर, पुनि कपि चलेपराइ॥
ऊपर आपुहि हेठ भट, गिरहिं धरणिपर आइ ॥ ६५ ॥

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा ❀ मर्दहिं निशिचर सुभट बरूथा ॥

चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर ❀ जय रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥
चले तमीचर निकर पराई ❀ प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई ॥
हाहाकार भयो पुर भारी ❀ रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सबमिलि देहिं रावणहिं गारी ❀ राज्य करत जेहिं मृत्युहँकारी ॥
निजदल विचल सुना जब काना ❀ फिरे सुभट लंकेश रिसाना ॥
जो रणविमुख फिरा मैं जाना ❀ तेहि मारिहौं कराल कृपाना ॥
सर्व्वस खाइ भोग करि नाना ❀ समर भूमिभा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र वचन सुनि सकल डराने ❀ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥
सन्मुख मरण वीरकी शोभा ❀ तब तिन तजा प्राणकर लोभा ॥

दोहा–बहुआँयुध धरिसुभटसब, भिरहिंप्रचारिप्रचारि॥
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ प्रचण्ड निमारि॥६६॥

भय आतुर कपि भागन लागे ❀ यद्यपि उमा जीतिहैं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता ❀ कहँ नल नील द्विविद बलवन्ता ॥
निज दल विचल सुना हनुमाना ❀ पश्चिम द्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई ❀ टूट नद्वार परम कठिनाई ॥
पवनतनय मनभा अति क्रोधा ❀ गर्जेउ प्रलय कालसम योधा ॥
कूदि लंक गढ ऊपर आवा ❀ गहि गिरि मेघनाद पर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता ❀ तासु हृदयमहँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत विकल तेहि जाना ❀ स्यंदन घालि तुरत घर आना ॥

दोहा–अंगद सुनेउ कि पवनसुत, गढ़पर गयउ अकेल॥
समर बाँकुरा बालिसुत, तर्कि चलेउ करि खेल ॥६७॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर ❀ रामप्रताप सुमिरि उर अन्तर ॥
रावण भवन चढ़े दोउ धाई ❀ करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहित गहि भवन ढहावहिं ❀ देखिनिशाचर अतिभयपावहिं ॥
नारिवृन्द कर पीटहिं छाती ❀ अब दोउ कपि आये उतपाती ॥
कपि लीलाकरि तिन्हहिं डरावहिं ❀ रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं ॥

१ राक्षस । २ बादल । ३ अस्त्र शस्त्र । ४ मारा । ५ रथमें टाल ।

पुनि कर गहि कंचनकेखम्भा ❀ करन लगे उतपात अरम्भा ॥
कूदिपरे रिपु कटक मँझारी ❀ लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन केहू ❀ भजेहु न रामहिं सो फल लेहू ॥
दोहा-एक एक सन मर्दि करि, तोरि चलावहिं मुंड ॥
रावण आगे परहिंते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥ ६८ ॥
महा महा मुखिया जे पावहिं ❀ ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥
कहहिं विभीषण तिनके नामा ❀ देहिंराम तिनकहँ निजधामा ॥
खल मनुजाद जो आमिषभोगी ❀ पावहिं गति जो याचत योगी ॥
उमारामभृदु चित करुणाकर ❀ वैरभाव मोहिं सुमिरतनिशिचर ॥
देहिं परमगति असजियजानी ❀ को कृपालु अस अहै भवानी ॥
जे अस प्रभु नभजहिं भ्रमत्यागी ❀ तेमतिमन्द सो परमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा ❀ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा ॥
लंकामहँ कपि सोहहिं कैसे ❀ मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे ॥
दो०-भुजबल रिपुदलदलिमलेउ, देखि दिवसकरअन्त ॥
कूदे युगलप्रयास विनु, आये जहँ भगवन्त ॥ ६९ ॥
प्रभु पद कमलशीश तिन नाये ❀ देखि सुभट रघुपति मन भाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे ❀ भये विगत श्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना ❀ फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई ❀ धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपिफिरे ❀ कटकटाइ जहँ तहँ भटभिरे ॥
दोउ दल भिरहिंप्रचारि प्रचारी ❀ लरहिं सुभट नहिं मानहिंहारी ॥
वीर तमीचर सब अतिकारे ❀ नानावरण बली मुख भारे ॥
सबलयुगलदलसब अतियोधा ❀ विविध प्रकार लरहिंकरि क्रोधा ॥
प्रावृट[1] शरद पयोद[2] घनेरे ❀ लरत मनहुँ मारुत[3]के प्रेरे ॥
अवनिअकम्पन अरुअतिकाया ❀ विचलतसेन करी तिनमाया ॥
भयउ निमिषमहँ अतिअँधियारा ❀ काहुनसूझै अपन परारा ॥

१ वर्षाऋतु । २ मेघ । ३ वायु ।

मारि खाहु सब करहिं पुकारा ❀ वृष्टि होइ रुधिरोपल क्षारा ॥
दो.-देखिनिबिडतमदशहुदिशि,कपिदलभयउखँभार ।
एकहि एक न देखहीं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ७० ॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना ❀ लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये ❀ सुनत कोपि कपि कुंजर धाये ॥
पुनि कृपालु हँसि चापचढ़ावा ❀ पावक सायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं ❀ ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं ॥
भालु बली मुख पाइ प्रकाशा ❀ धाये कोपि विगत श्रम त्रासा ॥
हनूमान अंगद रणगाजे ❀ हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागतभट पटकहिं गहि धरणी ❀ करहिं भालु कपिअद्भुतकरणी ॥
गहिपद डारहिं सागर माहीं ❀ मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥
दोहा-कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ़ चले पराइ ॥
गर्जेउ मर्कट भालु भट, रिपुदल बल बिचलाइ ॥ ७१ ॥
निशाजानि कपि चारिउ अनी ❀ आये सब जहँ कोशलधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं ❀ भये विगत श्रम वानर तबहीं ॥
वहाँ दशानन सचिव हँकारे ❀ सब सन कहेसि सुभटजे मारे ॥
आधा कटक कपिन संहारा ❀ कहहु वेगि का करिय विचारा ॥
मालवन्त इक जरठ निशाचर ❀ रावण मातु पिता मंत्रीवर ॥
बोला वचन नीति अतिपावन ❀ तात सुनहु कछु मोरशिखावन ॥
जबते तुम सीता हरि आनी ❀ अशकुन होहिं न जातबखानी ॥
वेद पुराण जासु यश गावा ❀ तासु विमुख सुख काहु नपावा ॥
दोहा-हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥
जेइ मारे सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान ॥ ७२ ॥
काल रूप खल बल दहन, गुणागार घनबोध ॥
जेहिसेवहिंशिवकमलभव,तिहिंसनकौनविरोध॥७३॥
परिहरि वैर देहु वैदेही ❀ भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥

---

१ लोहू। २ पत्थर। ३ धूरि। ४ अंधकार। ५ राक्षस। ६ रात्रि। ७श्रमरहित। ८मंत्रियोंमें श्रेष्ठ।

ताके वचन बाण सम लागे ❀ करिया मुख करिजाहु अभागे ॥
बूढभयसि नतु मरतेउँ तोहीं ❀ अव जनि वदन देखावसि मोहीं ॥
तेइँ अपने मन अस अनुमाना ❀ वध्यो चहत यहि कृपानिधाना ॥
सोउठि गयउ कहत दुर्वादा ❀ तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा ❀ करिहौं बहुत कहतहौं थोरा ॥
सुनि सुतवचन भरोसा आवा ❀ प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचार भयउ भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिउद्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ घेरा ❀ नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये ❀ गढते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥
छं.-ढाहे महीधरशिखरकोटिनविविधविधिगोलाचले ॥
घहरात जिमि पवि पात गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लरत तनुजर्जरभये ॥
गहि शैल ते गढ पर चलावहिंजहँसोतहँनिशिचरहये ॥
दोहा-मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ़ पुनि छेंका आइ ॥
उतरि दुर्गते वीरवर, सन्मुख चला बजाइ ॥ ७४ ॥
कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता ❀ धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा ❀ कहँ हनुमत अंगद बलसीवा ॥
कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही ❀ आजु शठहिं हठि मारउँ ओही ॥
असकहि कठिन बाण संधाने ❀ अतिशय कोपिश्रवणलगिताने ॥
शर समूह सो छाँड़ै लागा ❀ जनु सपक्ष धावैं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिये वानर ❀ सन्मुखहोइनसकततेहिअवसर ॥
भागे भय व्याकुल कपिऋच्छा ❀ बिसरी सबहिं युद्धकीइच्छा ॥
सोकपि भालु न रणमें देखा ❀ कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेषा ॥
दोहा-मारेसि दश दश विशिख उर, परे भूमि सब वीर ॥
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर ॥ ७५ ॥
देखि पवनसुत कटक बिहाला ❀ क्रोधवन्त धावा जनुकाला ॥

१ मुख । २ मेघनाद । ३ प्राणसंकटमें । ४ बाण ।

महा महीधर तमकि उपारा ❀ अति रिस मेघनाद परडारा ॥
आवत देखि गयउ नभसोई ❀ रथ सारथी तुरँग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना ❀ निकट न आव मर्म्म सो जाना ॥
राम समीप गयो घननादा ❀ नानाभाँति कहत दुर्वादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे ❀ कौतुकही प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ खिसियाना ❀ करै लाग माया विधिनाना ॥
जिमि कोउकरै गरुड़सनखेला ❀ डरपावहि गहि स्वल्पसपेला ॥

दोहा-जासु प्रबल मायाविवश, शिव विरंचि बड़ छोट ॥
ताहि देखावतरजनिचर, निज मायामति खोट ॥७६॥

नभचढ़ि वरषै विपुल अँगारा ❀ महिते प्रगट होइ जलधारा ॥
नानाभाँति पिशाच पिशाची ❀ मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची ॥
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कच हाडा ❀ वर्षै कबहुँ उपल बहु छाँडा ॥
वर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे ❀ सब कर मरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❀ भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एकहि बाण काटि सब माया ❀ जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया ॥
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ❀ भये प्रबल रण रहहिं नरोके ॥

दोहा-आयसु माँग्यउ रामपहँ, अंगदादि कपिसाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, बाण शरासन हाथ ॥७७॥

जलज नयन उर बाहु विशाला ❀ हिमगिरिवरणकछुकइकलाला ॥
वहाँ दशानन सुभट पठाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र गहिधाये ॥
भूधर विटपायुध धरि भारी ❀ धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरीसन जोरी ❀ इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन लातन दातन काटहिं ❀ कपिगिरिशिखामारिपुनिडाटहिं ॥
मारु मारु धरु धरु धरि मारू ❀ शीश तोरि गहि भुजा उपारू ॥
अस ध्वनि पूरिरही नवखण्डा ❀ धावहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा ॥

१ आकाश । २ वर्षा । ३ कमलनयन । ४ पर्वत ।

देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा ❀ कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा ॥
दोहा-जमेउ गाड भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाइ ॥
जिमि अंगारन राशिपर, मृतक छार रहिछाइ ॥ ७८ ॥
घायल वीर विराजहिं कैसे ❀ कुसुमित किंशुकके तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा ❀ भिरहिं परस्पर करि अतिक्रोधा ॥
एकहि एक सके नहिं जीती ❀ निशिचर छल बल करै अनीती ॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता ❀ भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नानाविधि प्रहार करि शेषा ❀ राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ॥
रावणसुत निजमन अनुमाना ❀ संकटभये हरिहि मम प्राणा ॥
वीरघातिनी छांडेसि साँगी ❀ तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्तिके लागे ❀ तबचलिगयउनिकटभयत्यागे ॥
दोहा-मेघनाद सम कोटि शत, योधा रहे उठाय ॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला खिसाय ॥ ७९ ॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू ❀ जारै भुवन चारि दश आसू ॥
सक संग्राम जीतिको ताही ❀ सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतुक जानहिं जन सोई ❀ जेहिपर कृपा रामकी होई ॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ ऐनी ❀ लगे सँभारन निज निज सैनी ॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ❀ लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर ॥
तब लगि लै आयो हनुमाना ❀ अनुज देखि प्रभु अतिदुखमाना ॥
जाम्बवन्त कह वैद्य सुषेना ❀ लंका रह पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघु रूप गयो हनुमन्ता ❀ आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥
दोहा-रघुपति चरण सरोज शिर, नायउ आइ सुषेन ॥
कहा नाम गिरि ओषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥ ८० ॥
"कह हनुमंत जोरियुगहाथा ❀ लषण शोच जनि कीजे नाथा ॥
कहौ चंद्रमें पटइव गारी ❀ अबहीं देउँ अमी सुख भारी ॥
कहो विबुध वैदहि गहिआनो ❀ मीच मारि सबके दुखभानो ॥

१ आपसमें । २ लक्ष्मण । ३ मेघनाद । ४ तुरन्तभस्मकरे । ५ सर्वत्रिमेंव्याप्त ।

कहो फोरिनभ रविहि निकारों ❀ रिपु तेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरि हर कहँ आनी ❀ अमर अमर बुलवावों वानी ॥
कहो पताल जाय हति नागा ❀ आनो अमी कुंड यहि जागा ॥
कहो देहुँ निज देहै त्यागी ❀ अबहीं उठों लषण घट जागी ॥
दोहा–जो कछु तव मनमें रुचै, सो मोहिं आयसु होय ॥
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोय" ॥
रामचरण सरसिज उर राखी ❀ चलेउ प्रभंजन सुत बलभाषी ॥
वहाँ दूत एक मर्म जनावा ❀ रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहा मर्म तेहिसुना ❀ पुनि पुनि कालनेमि शिरधुना ॥
देखत तुमहिं नगर जेहि जारा ❀ तासु पन्थको रोकनहारा ॥
भजिरघुपतिहि करहुहितअपना ❀ तजो नाथ अब मृषा जल्पना ॥
नीलकंज तनु सुन्दरश्यामा ❀ हृदय राखु लोचन अभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागहु ❀ महामोह निशि सोवतजागहु ॥
कालव्याल कर भक्षक जोई ❀ स्वप्नेहु समर कि जीतै कोई ॥
दोहा–सुनिदशकंधरिसान तब, तेईं मन कीन्ह विचार ॥
रामदूत करमरण भल, यह खलनतु मोहिं मार॥८१॥
असकहि चला रचेसि मग माया ❀ सर मंदिर वर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम ❀ मुनिहिं बूझिजल पियौंजाइ श्रम॥
राक्षस कपट वेष तहँ सोहा ❀ मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाय पवनसुत नायउ माथा ❀ लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावण रामहिं ❀ जीतहिं राम न संशय यामहिं ॥
इहाँ भये मैं देखौं भाई ❀ ज्ञानदृष्टि बल मोहिं अधिकाई ॥
माँगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल ❀ कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल॥
सरमज्जन करि आतुर आवहु ❀ दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु ॥
दोहा–सर पैठत कपिपद गहेउ, मकरी अति अकुलान॥

* यह कालनेमि पूर्व जन्मका गन्धर्व और मकरी अप्सराथी एकसमय

१ मार्ग । २ तालावमें स्नानकर ।

मारि ताहिधरि दिव्यतनु, चली गगन चढ़ियान॥८२॥
कपि तव दरश भइहुँ निष्पापा ❀ मिटा तात मुनिवर करशापा ॥
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा ❀ मानहु सत्यवचन कपिमोरा ॥
असकहि गई अप्सरा जबहीं ❀ निशिचरनिकटगयउकपितबहीं॥
कह कपि मुनि गुरुदक्षिणा लेहू ❀ पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा ❀ निजतनु प्रकटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाँड़ेसि प्राना ❀ सुनि मन हर्षि चले हनुमाना ॥
देखा शैल न ओषधि चीन्हा ❀ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥
गहिगिरिनिशि नभधावतभयऊ ❀ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥
दो०-देखाभरतविशालअति, निशिचरमनअनुमानि ॥
विनु फरसायक मारेउ, चाप श्रवण लगि तानि॥८३॥
परेउ मूर्च्छि महिलागत सायक ❀ सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरत उठि धाये ❀ कपिसमीप अति आतुर आये ॥
विकल विलोकि कीश उरलावा ❀ जागा नहिं बहु भाँति जगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी ❀ कहत वचन भरि लोचन बारी ॥
जेहिविधिरामविमुखमोहिंकीन्हा ❀ तेहिं पुनि यहदारुणदुख दीन्हा॥
जो मोरे मन वच अरु काया ❀ प्रीति राम पद कमल अमाया ॥
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला ❀ जो मोपर रघुपति अनुकूला ॥
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा ❀ कहि जयजयतिकोशलाधीशा ॥
सो०-लीन्ह कपिहिउरलाय, पुलकगातलोचनसजल।
प्रीति न हृदय समाय, सुमिरि रामरघुकुलतिलक॥८४॥
तात कुशल कहु सुखनिधानकी ❀ सहितअनुजअरुमातु जानकी ॥

इंद्रकी सभामें नृत्य करतेहुए दुर्वासाकपिको देखकरहँसे तब उन्होंने शाप दिया कि राक्षस होजाओ तब इन्होंने स्तुति करी शापानुग्रहकरहु तब मुनिने कहा कि जब त्रेताके अन्तमें रामावतारहो रामजी लंकामें आवैंगे तब उनके दूतद्वारा तुम दोनोंका छुटकारा होजायगा सो शापसे छूटकर इंद्रलोककोगई।

१ पूंछ । २ निष्काम । ३ रहित

कपि सब चरित समास बखाने ❀ भये दुखित मन महँ पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायउँ ❀ प्रभुके एकौकाज न आयउँ ॥
जानि कुअवसर मन धरि धीरा ❀ पुनि कपिसनवोलेउवलवीरा ॥
[भले भरतकह बोले ताता ❀ पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥
तेहिते चल दीजै समुझाई ❀ आय भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि साधु सुमित्राहिं ❀ भयउ हर्ष और शोचविचित्राहिं ॥
बोली धन्य सुवन मम आजू ❀ जूझेउ समर स्वामिके काजू ॥
पर यक दुःख होत अति ताता ❀ कुसमय भये राम विन भ्राता ॥
पुनि स्वभाव रिपुहनते कहेऊ ❀ जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ ॥
सुनत उठे मुद सहित प्रकाशा ❀ विधिवश सुठर ठरे जनुपाशा ॥

दोहा-अम्ब अनुजगति देखमन, मानी सबनि गलानि
बोली रघुपति मातु तब, कपिते धीरज आनि ॥
जेहि सौंपेउ मैं लषण कहँ, तिनकी यह गति होय ॥
अब कब देखौं नयनभरि, पुत्र कमलमुख सोय ॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मनधीर ॥
कुशल जानकी लषण युत, ऐहैं श्रीरघुवीर ॥]

तात गहरु होइहै तुहि जाता ❀ काज नशाइहि होतप्रभाता ॥
चढ मम सायक शैल समेता ❀ पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता ॥
सुनिकपि मन उपजाअभिमाना ❀ मोरे भार चलहि किमिबाना ॥
रामप्रताप विचारि बहोरी ❀ वन्दिचरण बोलेउ करजोरी ॥
तव प्रताप उर राखि गुसाईं ❀ जैहौं नाथ बाणकी नाईं ॥
हर्षि भरत तब आयसुदीन्हा ❀ पद शिरनाय गमन कपिकीन्हा ॥

दोहा-तवप्रताप उरराखि प्रभु, जैहौं नाथ तुरन्त ॥
असकहि आयसु पायपद, वंदि चले हनुमन्त ॥८४॥
भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपार ॥
जात सराहत मनहिंमन, पुनि पुनिपवनकुमार ॥८५॥

१ विलम्ब । २ मेरेबाणमें । ३ बोझ ।

वहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी ❀ बोले वचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा ❀ राम उठाइ अनुज उर लावा ॥
सकहु न दुखित देखि मोहिंकाऊ ❀ बन्धु सदा तव मृदुलस्वभाऊ ॥
ममहित लागि तजेउ पितु माता ❀ सहेउ विपिन हिम आतप वाता॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई ❀ उठहु न सुनि मम वचविकलाई॥
जो जनत्यों वन बंधु बिछोहू ❀ पिता वचन नहिं मनतेउँ ओहू ॥
सुत वित नारि भवन परिवारा ❀ होहिं जाहिं जग बारहिंबारा ॥
अस विचारि जिय जागहु ताता ❀ मिलहि न बहुरि सहोदर भ्राता॥
यथा पंख बिनु खगपति दीना ❀ मणिबिनुफणिकरिवरकरहीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनतोहीं ❀ जो जड़ दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुँहलाई ❀ नारिहेतु प्रियबन्धु गँवाई ॥
बरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं ❀ नारि हानि विशेष क्षति नाहीं ॥
अब अवलोकि शोक यह तोरा ❀ सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननीके एक कुमारा ❀ तात तासु तुम प्राणअधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहिपानी ❀ सब विधिसुखदपरमहितजानी॥
उतर ताहि देहौं का जाई ❀ उठि किन मोहिंशिखावहु भाई॥
बहुविधि शोचत शोचविमोचन ❀ श्रवतसलिलराजिवदललोचन॥
उमा अखण्ड राम रघुराई ❀ नरगति भाव कृपालु दिखाई॥
सो०–प्रभु विलाप सुनि कान, विकलभयेवानरनिकर ॥
आइ गये हनुमान, जिमि करुणामहँ वीररस॥ ९ ॥
हर्षि राम भेंटेउ हनुमाना ❀ अति कृतज्ञप्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद्य तब कीन उपाई ❀ उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई ॥
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता ❀ हर्षे सकल भालु कपि व्राता ॥
पुनि कपि वैद्य तहाँ पहुँचावा ❀ जेहि विधि तबहिं ताहिलै आवा॥
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ ❀ अतिविषादपुनिपुनिशिरधुनेऊ॥
व्याकुल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ ❀ करि बहु यत्न जगावत भयऊ ॥

१ मनुष्यकेतुल्य। २ वन। ३ गरुड़। ४ सर्प। ५ हाथी। ६ पंक्तिकी पंक्ति।

जागा निशिचर देखिय कैसा ❀ मानहुँ काल देह धरि वैसा ॥
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई ❀ काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेइँ अभिमानी ❀ जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन निशिचर संहारे ❀ महा महा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी ❀ भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक वीरा ❀ परे समरमहँ सब रणधीरा ॥
दोहा—दशकन्धरके वचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान ॥
जगदम्बा हरि आनिकै, शठ चाहसि कल्यान ॥८६॥
भल नकीन्ह तैं निशिचरनाहा ❀ अबमोहिं आनि जगायहु काहा॥
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना ❀ भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक ❀ जाके हनूमानसे पायक ॥
अहह बन्धु तैं कीन खुटाई ❀ प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई॥
कीन्हेहु प्रभु विरोधतेहि देवक ❀ शिव विरंचि सुर जाके सेवक ॥
नारद मुनि मोहिं ज्ञानजो कहेऊ ❀ कहतेउँ तोहिं समय नहिंरहेऊ ॥
अब भरि अंक भेटु मोहिं भाई ❀ लोचन सफल करौं मैं जाई ॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन ❀ देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥
दोहा—रामरूप गुण सुमिरि मन, मग्न भयो क्षणएक ॥
रावण माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिषं अनेक ॥८७॥
महिष खाइ करि मदिरा पाना ❀ गर्जेउ वज्रघात अनुमाना ॥
कुम्भकर्ण दुर्मद रणरंगा ❀ चला दुर्ग तजि सेन न संगा ॥
देखि विभीषण आगे आयउ ❀ पुनि पदगहि निजनामसुनायउ ॥
अनुज उठाय हृदयतेहिलावा ❀ रघुपति भक्त जानि मनभावा ॥
तातलात मोहिं रावण मारा ❀ कहत परम हित मंत्र विचारा ॥
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ ❀ दीन जानि प्रभुकेमनभायउँ ॥
सुनसुत भयउ कालवशरावन ❀ सोकिमिमानै परमशिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ❀ भयउ तात निशिचरकुल भूषण॥

१ सेवक । २ शत्रुता । ३ भैंसा । ४ वीररस मदमें मत्त निर्भय ।

बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर ❀ भजहु राम शोभा सुखसागर ॥
दोहा-मन क्रम वचन कपटतजि,भजहु तात रघुवीर ॥
जाहु न निज पर सूझ मोहिं,भयउँ काल वशवीर ८८॥
बन्धु वचन सुनि फिरा विभीषण ❀ आयउ जहँ त्रैलोक्यविभूषण ॥
नाथ भूधराकार शरीरा ❀ कुम्भकरण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जब काना ❀ किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उपारि बिटप अरु भूधर ❀ कटकटाइ डारे तिहि ऊपर ॥
कोटिकोटि गिरि शिखर प्रहारा ❀ करहिं भालु कपि एकहिबारा ॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे ❀ जिमि गज अंर्क फलनके मारे ॥
तब मारुतसुत मुष्टिक हनेऊ ❀ परेउ धरणि व्याकुल शिरधुनेऊ॥
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता ❀ घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनि नल नीलहिंअवनि पछारेसि ❀ जहँ तहँ पटकि २ भट डारेसि ॥
चली बलीमुख सेन पराई ❀ अतिभय त्रासित नकोउसमुहाई॥
दोहा-अंगदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव ॥
काँखदाबि कपिराज कहँ,चलाअमित बलसींव॥८९॥
उमा करत रघुपति नरलीला ❀ खेलगरुड़जिमिअहिगणमीला ॥
भ्रुकुटि भृङ्ग जिहि कालहि खाई ❀ ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जगपावनि कीरति विस्तरहीं ❀ गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं ॥
मूर्च्छागइ मारुतसुत जागा ❀ सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥
कपिराजहुकर मूर्च्छा बीती ❀ निबुकिगयउतेहि मृतकप्रतीती॥
काटेसि दशन नाशिका काना ❀ गर्जि अकाश चला तेहि जाना॥
गहेसि चरण धरि धरणि पछारा ❀ अतिलाघव पुनिउठि तेहिमारा॥
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना ❀ जयति जयतिजय कृपानिधाना॥
नाक कान काटे तेहि जानी ❀ फिरा क्रोध करि भा निगलानी ॥
सहजभीम पुनि विनु श्रुतिनासा ❀ देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥
दोहा-जय जय जय रघुवंशमणि,धाये कपि करि हूह॥

१ उखारि। २ वृक्ष। ३ पर्वत। ४ हाथी। ५ मन्दारफल बूंदी ६ सुग्रीव। ७ भौंह। ८ टेढी। ९ अतिशीघ्रते। १० भयानक।

एकहि बार जो तासुपर, डारे गिरि तरु जूह ॥ ९० ॥
कुम्भकर्ण रणरंग विरुद्धा ❀ सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई ❀ जिमि टीड़ी गिरि गुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीरसन मर्दा ❀ कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा ॥
मुख नासिका श्रवणकी बाटा ❀ निकसि पराहिं भालु कपिठाटा ॥
रण मदमत्त निशाचर दर्पा ❀ मानहुँ विश्व ग्रसन कहँ अर्पा ॥
मुरे सुभट रण फिरहिं न फेरे ❀ सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकर्ण कपि सेन बिडारी ❀ सुनि धाये रजनीचर झारी ॥
देखी राम विकल कटकाई ❀ रिपु अनीक नाना विधि आई ॥
दोहा—सुनहु विभीषण लषणसह, सकल सँभारहु सैन ॥
मैं देखौं खल बल दलहिं, बोले राजिवनैन ॥ ९१ ॥
कर सारंग विशिखै कटि भाँथा ❀ अरिदल दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा ❀ रिपुदलवधिर भयउ सुनिशोरा ॥
धनु संधानि छांड शरलक्षा ❀ कालसर्प जनु चले सपक्षा ॥
अति बल चले निकरनाराचा ❀ लगे कटन भट विकट पिशाचा ॥
कटहिं चरण शिर उर भुजदण्डा ❀ बहुतक वीर होहिं शत खण्डा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल भट परहीं ❀ उठहिं सँभारि सुभट फिरिलरहीं ॥
लागतबाण जलधि जिमिगाजैं ❀ बहुतकदेखि कठिन शरभाजैं ॥
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनु धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं ॥
दोहा—क्षण महँ प्रभुके सायकन, काटे विकटपिशाच ॥
पुनि रघुपतिके त्रोणमहँ, प्रविशे सब नाराच ॥ ९२ ॥
कुम्भकर्ण मन दीख विचारी ❀ क्षण महँ हते निशाचर झारी ॥
भयउ क्रोध दारुण रणवीरा ❀ करि मृगनायक नाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर लियो उपारी ❀ डारेसि जहँ मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे ❀ शरन काटि रज सम करिडारे ॥
पुनिधनुतानि कोपि रघुनायक ❀ छांडे अति कराल बहुसायक ॥

१ धनुष । २ बाण । ३ तूणीर । ४ बहरे । ५ पर्वत ।

तनुमहँ प्रविशि निसरि शर जाहीं ❀ जिमिदामिनि घनमाहँ समाहीं ॥
शोणित श्रवत सोह तनुकारे ❀ जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥
विकल विलोकि भालु कपि धाये ❀ विहँसाजवहिं निकटचलि आये॥
दोहा–गर्जतधायउवेगि अति, कोटि कोटि गहिकीश ॥
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ॥ ९३ ॥
भागे भालु कपिनके यूथा ❀ वृकै विलोकि जिमि मेषवरूथा॥
चले भालु कपि भागि भवानी ❀ विकल पुकारत आरत वानी ॥
यह निशिचर दुकालसम अहई ❀ कपिकुल देश परन अबचहई ॥
कृपावारिधर राम खरारी ❀ पाहि पाहि प्रणतारतहारी ॥
करुणावचन सुनत भगवाना ❀ चले सुधारि शरासन बाना ॥
रामसेन निज पाछे घाली ❀ चले सकोप महाबलशाली ॥
खैंचि धनुष शतशर संधाने ❀ छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर धावा रिसभरा ❀ कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी ❀ रघुकुलतिलक भुजा सोइकाटी॥
धावा वाम बाहु गिरिधारी ❀ प्रभु सोउ भुजा काटिमहिडारी ॥
काटे भुज सोहै खल कैसा ❀ पक्षहीन मन्दर गिरि जैसा ॥
उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका ❀ मानहु ग्रसन चहत त्रैलोका ॥
दोहा–करिचिकार मुखघोर अति, धावा वदन पसार॥
गगन सकल सुर त्रास अति, हाहाकार पुकार ॥९४॥
सभय देव करुणानिधि जाने ❀ श्रवण प्रयंत शरासन ताने ॥
विशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ ❀ तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥
शरन भरा मुख सन्मुख धावा ❀ कालत्रोण जनु तनु धरि आवा॥
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा ❀ धडते भिन्न तासु शिर कीन्हा ॥
सो शिर परा दशानन आगे ❀ विकलभयउजिमिफणिमणित्यागे॥
धरणि धसे धरधाव प्रचण्डा ❀ तब प्रभु काटिकीन्ह युगखण्डा॥
"परेउ भूमि जिमि नभते भूधर ❀ तरे दाबि कपिभालुनिशाचर॥"
तासु तेज प्रभुवदन समाना ❀ सुर मुनि सबहिं अचम्भा माना ॥

१ बिजली २ रुधिर । ३ भेडहा । ४ भेडियोंके झुंड । ५ अनेकबाण । ६ तरकस । ७ अलग ।

नभदुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ❋ जयजयकहि प्रसून सुर वर्षहिं ॥
करि विनती सुरसकल सिधाये ❋ तब तेहि समय देवऋषिआये ॥
गगनोपरि हरि गुणगण गाये ❋ रुचिर वीररस प्रभु मनभाये ॥
वेगि हतहु खल मुनि कहिगये ❋ रामसमरमहँ शोभितभये ॥

छंद-हरिगीतिका ।

संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुलबल शोभाघनी ॥
श्रम विन्दु मुख राजीवलोचन रुचिर तनु शोणितकनी ॥
भुज युगल फेरत कर शरासनभालुकपिचहुँदिशिबने ॥
कहदासतुलसी कहि न सकछबि शेषजेहिआननघने ॥

दोहा-निशिचरअधम मलायतनु,ताहिदीननिजधाम ॥
गिरिजा ते नर मन्दमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥ ९५ ॥

दिनके अन्त फिरी दोउ अनी ❋ समर भयी सुभटन सन घनी ॥
रामकृपा बल कपि दल बाढा ❋ जिमितृणबढै लगे अति डाढा ॥
छीजहिं निशिचर दिन अरुराती ❋ निजमुखकहे सुकृत जेहिभाँती ॥
बहु विलाप दशकन्धर करहीं ❋ पुनि पुनि बन्धु शीश उरधरहीं ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❋ तासु तेज बल विपुल बखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा ❋ कहि बहुकथा पितहिसमुझावा ॥
देखहु कालिह मोरि मनुसाई ❋ अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥
इष्टदेव सन जो वर पायउँ ❋ सो वर तात न तुमहिं सुनायउँ ॥
इहिविधिजल्पतभयो विहाना ❋ लगे भालु कपि चहुँदिशिनाना ॥
इतकपि भालु काल सम वीरा ❋ उतरजनीचर अति रणधीरा ॥
लरहिंसुभट निज निज जयहेतू ❋ वरणि न जाइ समर खगकेतू ॥

दोहा-मेघनाद मायाविरचि, रथ चढ़ि गयउ अकास ॥
गर्जेउ प्रलय पयोद जिमि, भा कपिदल अतित्रास ॥

शक्ति शूल शर परिघ कृपानाँ ❋ अस्त्र अस्त्र कुलिशायुध नाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पषाना ❋ लागा वृष्टि करै बहु बाना ॥

१ आकाशके ऊपर । २ मन वचन कर्म्मते दुष्टकामोंमे तत्पर । ३ बर्छी । ४ तलवारि ।

रहे दशहु दिशि सायक छाई ❀ मानहुँ मघा मेघ झरिलाई ॥
धरु धरु मारु सुनहिंकपिकाना ❀ जो मारे तेहि कोउ न जाना ॥
गहि गिरि तरुअकाशकपि धावैं ❀ देखहिंतेहि न दुखितफिरिआवैं॥
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर ❀ माया बल कीन्हेसि शरपंजर ॥
जाहिं कहाँ भय व्याकुल बंदर ❀ सुरपति बंदि परे जिमि मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला ❀ कीन्हेसिविकलसकलवलशीला॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण ❀ शरन मारि कीन्हेसिजर्जरतन ॥
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा ❀ छाँड़त शर होइ लागहिं नागा ॥
व्यालफाँस वश भये खरारी ❀ स्ववश अनन्त एकअविकारी॥
नटइव चरित करत विधि नाना ❀ सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रण शोभा हित आपु बँधावा ❀ देखि दशा देवन भय पावा ॥

दोहा-खगपतिजाकर नाम जपि, नरकाटहिंभवफाँस॥
सो प्रभु आवकि बन्धतर, व्यापकविश्वनिवास ॥९७॥

चरित रामके सगुण भवानी ❀ तरकि न जाइँ बुद्धि वलवानी ॥
अस विचारि जो परम विरागी ❀ रामहिं भजहिं तर्क सवत्यागी॥
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा ❀ पुनिभा प्रगट कहत दुर्वादा ॥
जाम्बवन्त कह खलरहु ठाढा ❀ सुनिकै ताहि क्रोध अति वाढा॥
बूढ जानि शठ छाँडेउँ तोहीं ❀ लागेसि अधम प्रचारन मोहीं ॥
असकहि ताहि त्रिशूल चलावा ❀ जाम्ववन्त सो करगहि धावा ॥
मारेउ मेघनादकी छाती ❀ पराधरणि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनिरिसाइगहि चरण फिरावा ❀ महि पछारि निजवलहिदेखावा॥
वरप्रसाद सो मरहि नमारा ❀ तब पद गहि लंकापर डारा॥
इहाँ देवऋषि गरुड पठाये ❀ राम समीप सपदि चलि आये॥

दोहा-पन्नगारि खाये सकल, क्षणमहँ व्याल वरूथ॥
भई विगत माया तुरत, हर्षे वानर यूथ ॥ ९८ ॥
गहि गिरि पादप उपल बहु, धाये कीश रिसाइ ॥
चले तमीचर विकलअति, गढपर चढे पराइ ॥ ९९ ॥

मेघनादकी सूर्च्छा जागी ❀ पितहिंविलोकिलाजअतिलागी ॥
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर ❀ करनअजयमखअसमनहठधर ॥
सो सुधिपाइ विभीषण कहई ❀ सुनु प्रभु समाचार अस अहई ॥
मेघनाद मख करै अपावन ❀ खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि ❀ नाथ वेगिरिपु जीति न जाइहि ॥
सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना ❀ बोले अंगदादि कपिनाना ॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❀ यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई ॥
तुम लक्ष्मण रणमारहु ओही ❀ देखि सभय सुर नइ दुख मोही ॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ❀ जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषन ❀ सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुवीर दीन अनुशासन ❀ कटि निषंगकर वाणशरासन ॥
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा ❀ बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा ॥
जोतेहि आजु वधे विनु आवौं ❀ तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥
जो शत शंकर करहिं सहाई ❀ तदपि हतौं रघुवीर दुहाई ॥

दोहा--वन्दि राम पद कमल युग, चले तुरन्त अनन्त ॥
अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त ॥१००॥

जाइ कपिन देखा सो वैसा ❀ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
तब कीशन कृत यज्ञ विध्वंसा ❀ जब न उठै तब करहिं प्रशंसा ॥
तदपि न उठै धरहिं कच जाई ❀ लातन हति हति चलहिं पराई ॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे ❀ आवा रामअनुजके आगे ॥
आवत परम क्रोध करिमारा ❀ गर्जि घोर रव बारहिं वारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये ❀ हति त्रिशूल उर धरणि गिराये ॥
प्रभु पर छाँडेसि शूल प्रचण्डा ❀ शरहतिकृत अनन्तयुग खण्डा ॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा ❀ हतेउ कोपि तेहि घावनबाजा ॥
फिरे वीर रिपु मरै न मारा ❀ पुनि धावा करि घोर चिकारा ॥
धावतदेखि क्रोध जनुकाला ❀ लक्ष्मण छाँड़े विशिख कराला ॥
आवत देखि वज्र सम वाना ❀ तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना ॥
विविध वेषधरि करै लड़ाई ❀ कबहुँक प्रगट कबहुँदुरिजाई ॥

"तब त्रिशूल छाँडेसिक्ष्मणपर ❀ काटिकीन्ह शतखंड धरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सोधावा ❀ राम अनुज सो काटि खसावा ॥
दोहा–आयुध विविधप्रहारकिय,रजसमकीनफणीश॥
हर्ष विवश कपि रीछ सब,विबुध सहित सुरईश॥१०१॥
बहुरि विविध शर छाँड़नलागा ❀ रणकारण छूटहिं जिमिनागा ॥
राम अनुज शर गरुड समाना ❀ उमा असत छूटहिं अभिमाना ॥
देखि अजय रिपु डरपेउ कीशा ❀ परम क्रोध तब भये अहीशा ॥
"देखिय जिमिरवितेजसमाना ❀ फुँकरत मनहुँ व्याल अनुमाना॥
लक्ष्मण मन असमंत्र दृढावा ❀ इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा ❀ शर संधान कीन्ह अति दापा ॥
छाँड़ा बाण तासु उर लागा ❀ शीश भुजा काटे नृप नागा ॥
घन समाज सो गर्जि अभागा ❀ मरती बार कपट सब त्यागा ॥
दोहा–रामअनुजकहिरामकहिअसकहिछाँडेसिप्रान॥
धन्य शक्रजित मातुतव, कहि अंगद हनुमान॥१०२॥

अथ क्षेपक।

जो जगकह दंडक यमदंडा ❀ हरिद्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
महिमा अमित महाबलसींवा ❀ जासु प्रताप अभय दशग्रीवा ॥
भुजबल सुरनायक वशकीन्हा ❀ चौदह भुवन जीत यश लीन्ह ॥
रिपुतरु लषण मूलखनिगंजेउ ❀ जिमिगजकमलनालगहिभंजेउ॥
जिमि वासवगहिकुलिशकराला ❀ कीन विकलगिरिपक्ष निहाला॥
रणसागरमहँ पचौ शरीरा ❀ तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
दंत विकट मुख परम भयावन ❀ चिकुरसघनचखअशुभअपावन॥
रसना लालरंग जनु जावक ❀ दवकी शिखा सोह जनुपावक॥
पाय सुआयसु ऋषभकपीशा ❀ करगहि लीन दुष्ट कर शीशा ॥
दोहा–करि श्रम मारचो महारिपु,राम अनुज रणधीर॥

१ वृक्ष। २ लक्ष्मणजी। ३ क्रोध। ४ इन्द्र।

निडर सुमनवर्षहिंविबुध, कहिजयगिरागँभीर॥१०३॥
बिनप्रयास हनुमान उठाये ❀ लंकाद्वार राखि पुनि आये॥
इति क्षेपक।
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्बा ❀ चढ़ि विमान आये नभ सर्बा॥
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं ❀ श्रीरघुबीर विमल यश गावहिं॥
जयअनन्त जय जगदाधारा ❀ तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा॥
अस्तुति करि सुरसकलसिधाये ❀ लक्ष्मणकृपासिन्धु पहँ आये॥
सुत वध सुना दशानन जबहीं ❀ मूर्च्छितभयउपर्‌योमहिंतबहीं॥
मंदोदरी रुदन करि भारी ❀ उरताड़त बहुभाँति पुकारी॥
नगरलोक सब व्याकुलशोचा ❀ सकल कहहिंदशकंधरपोचा॥
दोहा-तब दशकंठ विविध विधि, समुझाईसबनारि॥
नश्वर रूप प्रपंच सब, देखहु हृदय विचारि॥१०४॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशत रावन ❀ आपन मंद कथाअतिपावन॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥
अथक्षेपक (सुलोचनाकीकथा)
प्रभुहि विलोकिशीशपद नाये ❀ उठि प्रभु अनुज हर्षि उरलाये॥
कृपादृष्टि करि अनुजहि हेरा ❀ विगतभयो श्रम जब कर फेरा॥
बाणवेधि तनु देखियत कैसे ❀ कनकद्रोण शर पूरित जैसे॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब ❀ रिपुबध कहा विभीषणहु तब॥
धारेउ शीश आन प्रभु आगे ❀ वानर भालु विलोकन लागे॥
प्रभुकौतुकी निरखि सोइ शीशा ❀ राखन कहेउ कोशलाधीशा॥
दोहा-प्रभु आयसु सुनिकीशपति,राखेउयतनकराय॥
कटकसहितरघुवंशमणि,शोभितअतिदोउभाय१०५॥
कृपादृष्टि सब कटक निहारे ❀ भये श्रम रहित राम बैठारे॥
सुनहु उमा इहिविधि रिपुमारे ❀ सुर गन्धर्व मुनि भये सुखारे॥
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी ❀ खग जिमि गई लंक शर प्रेरी॥

१ नाथवान्। २ पृथ्वी, आप, तेज, वायु आकाश, तीनो गुणइत्यादिक।

मेघनाद आँगनमें परी ❀ बाण बेधि शोणितसन भरी ॥
राजति तहाँ सुलोचनि कैसी ❀ रतिते रुचिर रूपगुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध पतोहू ❀ वासवरिपु तिय छबिमय जोहू ॥
हेम१सिंहासन सोहति बाला ❀ सेवत विद्याधर त्रियमाला ॥
पूजहिं विविध विनय करताहीं ❀ सुख प्रमोद२को सकत सराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती ❀ मनहुँ सकल सुखतरुकीकाँती ॥
दो०-तब निज दासिनि देखितहँ शोणि श्रवतभुजदण्ड ॥
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहु अखंडनखण्ड ॥ १०६ ॥
सुनकर सकल सखी मुखवैना ❀ तजि सिंहासन उठी सुनैना३ ॥
नारि स्वभाव धुकधुकी धरकी ❀ शूचक अशुभ दहिन भुज फरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं ❀ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी ❀ विधि वामता परत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलि आपू ❀ पतिभुजलखि करिकोटिकलापू ॥
कंकन मणिगण भूषण सोई ❀ महा विटप सम आन नहोई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही ❀ तासु प्रभाव सुना पहिलेही ॥
नींद नारि भोजन परिहरही ❀ बारह वर्ष तासु करमरही ॥
दोहा-करि विचार मन टेकदै, मैं पति देखत नारि ॥
भुजालिखि मेटहु दुचितही, सुन कर दीन पसारि १०७ ॥
लखिरुखतासु सखी उठि धाई ❀ तुरतहि खोज खरी लै आई ॥
दीनहाथ मणिमय अँगनाई ❀ लिखन लषण कीरति रुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटी ❀ तजत तासु महिमाअतिछोटी ॥
अक्षय अखंड अलख अविनाशी ❀ अतुल अमित घटघटकेवासी ॥
प्रगटहिं पालहिं पुनि संहरई ❀ त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई ॥
जो कालहु कर काल भयंकर ❀ वर्णत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू ❀ जासु नाम भवसागर सेतू ॥
मुनिमनपुण्डरीक जाके घर ❀ वचन विवेक विचार बुद्धिवर ॥

१ स्वर्णसिंहासन । २ प्रसन्नता । ३ सुलोचना ।

दोहा—कोटि कल्प वर्णत निगम,अगमजासु गुणगाथ॥
तिमिशरीर जडजीवाविनु,किमिवर्णतालिखिहाथ१०८

ममशिर गयो दरश रघुराई ❀ तव प्रतीत लगि भुजा पठाई ॥
इहिविधिलिखेउसकलभुजवाता ❀ परी भूमितब अतिविकलाता ॥
बाँचि सकलभुजलिखितयथारथ ❀ लक्ष्मण रामनाम परमारथ ॥
त्रियास्वभाव तदपि बहुभाँती ❀ विलखतसकलसखिनकरपाँती ॥
गुणगण साहस शील नाहको ❀ कहि रोवत बल विपुल बाँहको ॥
जेहि भुज बल सुरनाथ विगोवा ❀ सो प्रभु आजु समरमहि सोवा ॥
मणिगण भूषण वसन विसारत ❀ महिलोटत करतल शिरमारत ॥
मगन विपतिनिजतनुसुधिनाहीं ❀ दारुण विपति कहिनकेहिपाहीं॥
छिनक प्रबोधसखीकोउ करहीं ❀ बहुरि शोक दावानल जरहीं ॥
क्षणक्षण उठत परत धरणीतल ❀ पुनिपुनिसब सराहपतिको बल ॥

दोहा—तिनमें सखी सयान इक, कहि समुझावतबैन ॥
शोक छाँडि पति देवता, सुमति करौ जिय चैन ॥१०९॥

सुनकर सहसानन तनु जाता ❀ सत्य कहत तुम सखी सुमाता॥
विधि निर्मित दुख मोकहँलाहू ❀ सुख परिपूर भुवन सब काहू ॥
विजय राम लक्ष्मणकहँ आवा ❀ सुयश सकल मर्कट कुल पावा॥
कुल कलंकबड लहेउ विभीषन ❀ कुलकुठार अससुनेउ न दीखन॥
छूटि बन्दि अब सुरगण केरी ❀ निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥
मुनिपुलस्त्यकर भाकुलनाशा ❀ अबरविशशिसुखकरहिंप्रकाशा॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख ❀ बहब समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गंग निर्मल जल आजू ❀ सुवश बसहि सुरनायक राजू ॥

दोहा—यम कुबेर दिग्पाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ॥
खाय अघायविहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग॥११०॥

इतना कह मन्दिरमहँ आई ❀ देखत मणिगण धन बहुताई ॥
सुरपति भुवन सुपटंतर नाहीं ❀ जहँरिधि सिधि तनुधरेकमाहीं ॥

१ सावधान । २ बन्दर । ३ कुल्हाडी । ४ समान ।

देखत विभव न मन अनुरागा ❋ पतिपदप्रेम निपुण मनलागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा ❋ धेनु वसन मन हाटक हीरा ॥
मणिमय शिबिकारुचिरसुहाई ❋ भुज चढाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढत भई पुनि आई ❋ सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥
वीतराग जिमि तजत विषयगन ❋ तेहितसभाँतिदियोपतिपदमन ॥
शुकसारिका सुलोचनिज्याये ❋ कनक पिंजरन राखि पढाये ॥
व्याकुल कह कहँ जात सुनयना ❋ सुन धीरज परिहरत सुबयना ॥
भयेविकल खग मृग इहिभाँती ❋ अपर दशा कैसे कहिजाती ॥
प्रजा लोग गृह तजि सँगलागे ❋ प्रेम उमँगि लोचन जल पागे ॥

दोहा-बाजन लगे निसान बहु, ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकीघेरि ॥१११॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे ❋ सजग भये सब वीरप्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुन कर आवा ❋ अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा ॥
धनु चढाइ कटि तरकस बाँधे ❋ कोउ असिचर्म शरासन साधे ॥
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि ❋ रोखनचोखे शूल शक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहि धाये ❋ प्रगट दशानन विजय सुनाये ॥
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा ❋ समर भयंकर निशिचर वीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई ❋ चीन्ह सकल भट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नागपति कन्या ❋ सतीशिरोमणि त्रिभुवन धन्या ॥

दोहा-द्वारपाल दशकन्ध बहु, खबर जनाईजाय ॥
भयउ रजायसुवेगि तव, वचन कहति बिलखाय ११२॥

तुमहिं अछत असिदशाहमारी ❋ सुखतजिभई शोक अधिकारी ॥
नभ पथह्वै भुज मम गृह परी ❋ बाण वेधि शोणित तनुभरी ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी ❋ संशय जानि दीन्हकरखरी ॥
लिखी राम लक्ष्मण महिमाइन ❋ क्रम क्रम सों सबकथा कहीतिन ॥
ठगिसी रही बाँचि गुणगाथा ❋ जरहुँ संग जो पाऊं माथा ॥
रणकबन्ध भुज ममगृह आई ❋ शिरतहँ गयउ जहाँ रघुराई ॥

करहु सो यतन मिलहि मोहिं शीशा ❀ तुम सामर्थ निशाचर ईशा ॥
सुनत कुलिशसम गिरा वधूकी ❀ जीवनआश दशानन मूकी ॥
तदपि धीरधरि करसि प्रबोधा ❀ कहुकोमोहिंसमानजगयोधा ॥

दोहा-राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त ॥
माथ विभीषण ऋषभकर, आनबमारि तुरन्त ॥ ११३ ॥

अबलगि रहेउ भरोसा भारी ❀ कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
हमहुँ आज लगि कीन्ह न जूझा ❀ इन सब कर पुरुषारथ बूझा ॥
मरेउ सो नर वानरके मारे ❀ बात सुनत अति लाज हमारे ॥
गिनती कवन वीरमें तिनकी ❀ अतिदुरदशाकीनकपिजिनकी ॥
तजहु शोक कुलवधू पतोहू ❀ उन समान जनि मानसि मोहू ॥
पुत्रि विलम्ब करौ घटि चारी ❀ देखहु मोर भयंकर भारी ॥
आनि शीश तव शत्रुन केरा ❀ बिन प्रयास नहिं लावौं वेरा ॥
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा ❀ नतुकिमिनिशिचरवनचरयोगा ॥

दोहा-मेरु उखारन हारजे, धरा धरत कर बीच ॥
तेभटखाये मशक शिशु, कालकुटिलता नीच ॥ ११४ ॥

क्रोधावेश प्रगट बल बोली ❀ हृदयशोक तनु अचल न डोली ॥
समाधान नहिं मानत सोई ❀ सुनि प्रलाप परितोष नहोई ॥
नर वानर पुरुषारथ देखत ❀ बड़ो प्रभाव छोटकरि लेखत ॥
कूदि सिंधु कपि लंकाजारी ❀ लघुकर मानत ताहिसुरारी ॥
कुंभकर्ण अतिकाय महोदर ❀ ममपतिगिरेउ समेत सहोदर ॥
ते रिपु चहत दशानन जीती ❀ देखहु महा मोहकर रीती ॥
उतरदेउँ तौ पातक होई ❀ कह विवाद कर सर्वस खोई ॥
फिरहि राज्य कछु मोहिं नकाजू ❀ विनपियसकलनरककरसाजू ॥

दोहा-तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास ॥
पदगहि रोवत सकल कह, प्रकटशोकइतिहास ११५ ॥

आदिहिते सब कथा बखानी ❀ सुनि सुनि रोवत रावण रानी ॥

१ वज्रसमान । २ छे.डी । ३ पृथ्वी । ४ बोध । ५ मन्दोदरी ।

कह निजपति भुज लिखत बहोरी ❀ राम लषण महिमा नाहिं थोरी ॥
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा ❀ मुये विडंब नकीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निज पुत्रवधूकी बानी ❀ बोली दुखित मँदोदरि रानी ॥
कहत सो मानहु सत्यसयानी ❀ सुनि जो नारदमुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब साँची ❀ अनुभवकीन्ह न एकहु बाँची ॥
देवि न होय मृषा ऋषि भाषत ❀ अपने महा मोह मनराखत ॥
अगली कथा समास समेता ❀ सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता ॥
वैरभाव दशकन्धर जूझब ❀ प्राणहु गये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोक संकटसे छूटहिं ❀ वानर भालु राज्यघर लूटहिं ॥
सुरमणि भूषण वसन विमाना ❀ भोग कराहिं वनचरे कुलनाना ॥

दोहा-राज्य विभीषण पाइहैं, अमर कल्प निरवाह ॥
भावी वश दुख सुख जगत, उपदेशियकहुकाह ॥ ११६ ॥

मुनिवर वचन मोहिं परतीती ❀ अनुभव दोउ हार अरु जीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका ❀ पतिसँग वेगि साथ परलोका ॥
जाहु राम पहँ पतिशिरलागी ❀ तज संकोच आनकिनमाँगी ॥
आज नहोइ लाजकर भूषण ❀ समयहीन गुणगणिय न दूषण ॥
है पुनि श्वशुर विभीषण तोरा ❀ वालितनय बालकसम मोरा ॥
एकनारि व्रत रघुवर केरा ❀ लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा ॥
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा ❀ द्विविद मयंद महाबल सीवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता ❀ शिवस्वरूप भव हरभगवन्ता ॥
सदानीति रत राम नरेशा ❀ तहाँ जात कहु कवन कलेशा ॥

दोहा-विदित तोरपति भुजलिखत, लक्ष्मणरामप्रभाव ॥
हमहूं ऋषिभाषितकहेउ, अबविलम्बजानिलाव ॥ ११७ ॥

सुनत सासुसुख करहित बानी ❀ जाहुँ रामपहँ असजिय जानी ॥
बार बार चरणन शिरनाई ❀ चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा ❀ सिंधु सुबेल महीधर घेरा ॥

१ सुलोचना । २ वानर-ऋच्छ । ३ त्यागकर । ४ अंगद । ५ मकट ।

उमँगेउ मनो महोदधि दूसर ❀ हरित पीत कपि धूसर धूसर ॥
व्योम लाल भाषत अनुहेरी ❀ मनहु लेत वडवानल घेरी ॥
गिरि तरुधर भुजसहस भयंकर ❀ जहँ तहँ प्रकटहोइँ जनुजलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर ❀ कटक जलधिसोवत राघववर ॥
अक्षवट जहँ तहँ वैठि विभीषण ❀ असउक्ती कहुँ सुनेनदीखन ॥
दोहा—देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि ॥
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावो मोरि ॥११८॥
वानर सकल उठे अस बोली ❀ अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा ❀ भइमति मेघनाद जब जूझा ॥
हठतजि सीतहि दीन पठाई ❀ तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जिहिलगिप्रकटकीन्ह पुरआगी ❀ बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सोइ सीता अब बिन श्रमपाई ❀ जानहु विधि अनुकूल सहाई ॥
विजय राम सुग्रीवहि आवा ❀ सुयश वीर वानर कुल पावा ॥
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा ❀ विनकलेश लंका गढ टूटा ॥
युग युग कीरति चलबहमारी ❀ कहँ राक्षस कहँ लघुवनचारी ॥
दोहा—इहिविधि चारुविचार करि,निश्चयकरि मनमाहिं
भयउ काज रघुराजकर, बात दूसरी नाहिं ॥११९॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❀ अनविनारि जनु परघर जाई ॥
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा ❀ छवि श्यामलश्यम गौरशरीरा ॥
मरकत कनकछविहि जनुनिंदत ❀ धन्य सुजन महिमाते विंदत ॥
मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असिधरेप्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कन्धर ❀ कंबुकण्ठ रेखा त्रयसुन्दर ॥
दशनपाँतिकी काँति कहैको ❀ लावत मन पटतरहि लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई ❀ बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डक नाशिका लजाई ❀ थाकेउ कवि पटतरहि नपाई ॥
दोहा छबिमय गुणमय तेजमय,राम उदधि अवगाह॥

१ महासागर। २ लंका। ३ ऊँचा।

जहाँ न पावत पार सुर, किमि वरणै कविथाह॥१२०॥
भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये ❀ शीश जटा कर मुकुटबनाये ॥
भाल विशाल तिलक युत सोहै ❀ ध्यान समय मुनि मानस मोहै ॥
वल्कल वसन तूण कटिबाँधे ❀ करशर सुभग शरासेन काँधे ॥
वीरासन आसीन कृपाला ❀ नवपल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज वरणि नहिं जाई ❀ जहँमुनि मधुकर रहेलुभाई ॥
प्रगट भई जिहि थलसे गंगा ❀ श्रुति पुराण कह कथा प्रसंगा ॥
नवत महेश विरंचि जाहिको ❀ लोचन गोचर होत काहिको ॥
जन आरत भंजन जो कोई ❀ भवसागर तारण कैसोई ॥
दोहा-प्रणतपाल विरुदावली, जिन चरणनकी बान ॥
शोक हरण संशय दलन, करण सुमंगल खान॥१२१॥
कर जोरे अंगद हनुमाना ❀ द्विविदमयन्द कुमुदबलवाना ॥
जाम्बवन्त कपिपति बलशीला ❀ ऋषभसुषेण सहित नलनीला ॥
महावीर वानर सब राजत ❀ लषण विभीषणदोउ दिशिभ्राजत
मितिभाषित प्रभुचरण सु सेवक ❀ चितवत रुखरघुनन्दनदेवक ॥
सभामध्य सोहत अघमोचन ❀ कीन्हेउसफल निरखिनिजलोचन
करतदण्डवत शिरधरि धरणी ❀ तिहिका चारित विभीपण वरणी॥
पुत्रवधू दशकन्धर केरी ❀ बड़ि पतिव्रता जानि प्रभुहेरी॥
मेघनादकी नारि सुशीला ❀ अस गति तव विरोध करलीला॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे ❀ करुणा वचन कहत कर जोरे ॥
दोहा-मुये जान पति भुजहिं तव, लिख समुझाईमोहिं॥
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं ॥ १२२ ॥
छंद-परशे चरण कर प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारिके॥
जिहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भारके॥
प्रभु जान सो विनती सुलोचनि करत कहि विनतीघनी
जय शोक हरणकृपालु जयजयजयतिजयरघुकुलमनी

१ छाल-भोजपत्र । २ धनुष ।

प्रभु ब्रह्म रूपस्वभावशीतल अतुलबलत्रिभुवन धनी॥
जयहरण धरणी भार बाहु विशाल खंडन खलअनी ॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सब गुण आगरे ॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥ ५ ॥
षट अष्टलोक जो रचत पालत प्रलय सो माया सुरी ॥
केहिभाँति वरणोंनाथ गुणगण नारि जड़मति बावरी॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं ॥
हूंभूरिभाग्यसरोज पद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं॥६॥

छंद-मात्रात्रिभंगी ।

गहकरवाणी शारँगपाणी सबगुणखानी रामबली ॥
सुरसुरभीरक्षकराक्षसभक्षकभक्तहिरक्षकभाँतिभली ॥
मैं रिपुसुतनारीजानअघारीअधिकारी नहिंदुखभारी ॥
हरिविरहदवारीअति भयकारीसहबहुबारी दुखकारी ॥
तवशरणैआई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर ॥
पतिमस्तकपाऊं जौरसँगजाऊँशिरपाऊँशोभाआगर ॥
पतिममतनुत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलई
ममताकिमितासूवरणूंआसूजासु अचलजगपंक्तिरही ॥
यहिविधिपदपंकजसेव्यरमाअजशिर नमिदोउकरजोरिरही
सुनिपंकजलोचनवचनसुलोचनिलोचनमें जलधारबही
यहिभाँतिसुनैना अस्तुतिवैना बारबार हरिचरणपरी ॥
प्रभुहोहुदयालाअतिहिकृपालापावोंभक्तिअनूपहरी ९॥

दोहा-अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छाँड़ कपटजंजाल॥१२३॥
तुम त्रिभुवनत्रैलोकके, दूसर और नकोय ॥
काहि पुकारौं छोंडि तोहिं, सत्य नाम प्रभुहोय ॥१२४॥

१ निधान । २ चौदहलोक । ३ गो ।

तुम अन्तर्यामी भगवाना ❁ नहिं तव आदि मध्य अवसाना ॥
करुणावचन सुनत रघुबीरा ❁ पुलक रोमभे शिथिल शरीरा ॥
देहुँ जियाय तोरपति आजू ❁ करहू लंक कल्पशत राजू ॥
छाँडि शोच अब मन हरषाहू ❁ तुरत भवन अपने फिरि जाहू ॥
सुनि अस सत्यसिंधु करवानी ❁ मनमें वनचर अति भय मानी ॥
कहि न सकतकछु प्रभु रुखदेखी ❁ कहा करब करतार विशेखी ॥
सीय शोच कर फल नहिं होई ❁ जो करि कृपा रामयहि जोई ॥
अस विचार धारी मनआसा ❁ जेहिते पाओ प्रभुक विलासा ॥
सब देवनकर शोच नजाई ❁ जोकर कृपा राम इहि ज्याई ॥

दो०-राज्यविभीषणलंककर, किहिविधिकरिहहिंजाइ ॥
समुझि वैर घननाद जब, गहिहि शरासन धाइ ॥ १२५ ॥

मुखरुखदेखि कपिनभयमाना ❁ प्रणतपाल भगवन्त सुजाना ॥
देखि बहुत रघुवर कर छोहू ❁ विनय करति दशकन्ध पतोहू ॥
तुम उदार सब देवे लायक ❁ करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहुँ विचारि दीखमनमाहीं ❁ जीवनते अस मरण सराहीं ॥
भुजबल जीतिलोक वशकीन्हे ❁ चौदहभुवन भोग करि लीन्हे ॥
रणतीरथ याचकबड़ चीन्हा ❁ प्राण सुधन लक्ष्मणकर दीन्हा ॥
अब न उचितपतिदे उपहारा ❁ तेहिपर अधिकसो दरशतुम्हारा ॥
हमहूं जाइ मरब सतसाधी ❁ मिलबतुमहिंजसमिलतसमाधी ॥

दोहा-निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहुसत्य रघुवीर ॥
तुमहिं मिलत नहिं होयभव, यथासिंधु गतिनीर ॥ १२६ ॥

मनकी जानन हार सुदेवा ❁ भवसागर तारहु यह सेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई ❁ मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू ❁ पिया विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी ❁ कहि मम प्राण सजीवन मूरी ॥
देख सँदेह कहत सुग्रीवा ❁ भुजगहि लिखतजीह विनग्रीवा ॥

१ दीनवचन । २ कपि-ऋच्छ । ३ लोक । ४ पानी ।

हँसिहहि वदन तीय तौ सांची ❀ नातर निशिचर माया यांची ॥
कितअसज्ञानमृतक भुज गावा ❀ जो मुनिवर साधन नहिंपावा ॥
प्रभुअस कहेउ हँसब यहशीशा ❀ करत कुतर्क न उचितकपीशा॥
दोहा-शिरसों कहति सुलोचना, हँसहु वेगि ममनाथ॥
नातर सत्यनमानिहैं, लिखा जो तुम्हरेहाथ ॥१२७॥
क्षणक विलम्ब कीन्ह नहिंबोला ❀ मृतक वदन मूंदत नहिं खोला॥
पुनि पुनि कहत सोनागकुमारी ❀ अमित भयउ रणमें करिमारी॥
लगे लषण शर क्षोभ बढावा ❀ प्रभुसमीपकस मोहिं लजावा ॥
जो मन वचन कर्म यह देही ❀ पतिदेवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै ❀ रहहि छाययशसुयश अमोलै ॥
जो जानत तव यहगति साईं ❀ बोलि पठावत पितहि सहाईं ॥
सुनितिय वचन हँसेउ तवशीशा ❀ चौंके चकित भालुभटकीशा ॥
हँसेउ ठठाय वदन सबदेखा ❀ विस्मयभयउ सकलजिहिपेखा॥
कुलिश¹ समान सुना नहिंजाई ❀ रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई॥
सकुच कपीशहि तोषेउ नारी ❀ बड़ आश्चर्य भयो वनचारी ॥
पूँछत कपिपति पद शिरनाई ❀ कारण कवन हँसा शिर साईं ॥
प्रभुकह सुन सुग्रीव कपीशा ❀ शीश हँसेकर सुनहु अदीशा ॥
मन क्रम वचन पतिहिसेवकाई ❀ तियहित इहिसम आन उपाई॥
असजियजानि करहिं पतिसेवा ❀ तिहिपर सानुकूल मुनि देवा ॥
यह सतवाति अहिराजकुमारी ❀ तेहिसतते हँसि शीश सुरारी॥
सुनिप्रभुवचन कपिनसुखमाना ❀ पुनि पुनि चरण गहेहनुमाना॥
सुनु गिरिजा असप्रभु प्रभुताई ❀ केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा ❀ असकौतुककर केतिकआशा॥
दोहा-शीशपाइ प्रभुचरणगहि, बहुविधिविनयसुनाय॥
आजको दिन रणपरिहरहु, ममहितकोशलराय१२८॥
बहुरि विभीषण पगन परीसो ❀ रघुपति चरणदिये मनपुनिसो॥

१ आश्चर्य । २ वज्र । ३ भुप । ४ पार्व्वती । ५ संसार । ६ त्यागहु । ८

तुम पितु सम दशकन्धर भाई ❀ इहिकुलकी तोहिं लाजबड़ाई॥
मुनि पुलस्त्य करि बारक दीपा ❀ पायउ फल रघुवीरसमीपा॥
महामोह वश अनभल माना ❀ ज्ञान भयो तव गुण पहिंचाना॥
युगयुगकरहु अकंण्टक राजू ❀ सहित सुकीरति सुकृत समाजू॥
सुमिरत तुमहिं सुजन गतिपावा ❀ रघुपति चरित संगकरगावा॥
सुनत विभीषण मनकरुणाभर ❀ प्रगट नकहत समय बिरहाकर॥
कालकर्म गति कह समुझाई ❀ चली तुरत गुरु आयसु पाई॥

दोहा–बाहर करि कपि कटकते, फिरेउविभीषण आप॥
बिसरेउ दशमुख वैरही, हृदयअधिकसन्ताप॥१२९॥

शिर चढाइ पालकी चढीसो ❀ रघुपतिकृपा प्रभाव बढीसो॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा ❀ रसना रटत निरन्तर नामा॥
सरित सिन्धु संगम जहँ पावन ❀ अस सुधिपाय गयो तहँ रावण॥
संग मंदोदरि सब रनिवासू ❀ मनोशोक रवि कीन्ह प्रकाशू॥
पाय रजाय सुसेवक धाये ❀ चन्दन अगर सुगँध बहुलाये॥
रचि दृढ दारुण चितावनाई ❀ जनु सुरलोक निसेनीलाई॥
करि प्रणाम सब जनपरितोषी ❀ धीरज धरसि तासु मति पोषी॥
शिर भुजधरि बैठी करि आसन ❀ भई जनुयोग सिद्धिकर बासन॥

दोहा–देत अनल ज्वालाबढ़ी, लपट गगन लगिजाय॥
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँची धाय॥ १३०॥

देखि चरित पुनीत सुरगावहिं ❀ वर्षि सुमन दुंदुभी बजावहिं॥
तासुक्रियाकरि निशिचरनाहा ❀ भयउ शोचवश अतिउरदाहा॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन ❀ बादि विषादकरियजनि रावन॥
सुत वित नारि त्रिविधसुखकैसे ❀ उपजहिं घटा जाहिंनभ जैसे॥
तडित विदित देखियघनमाहीं ❀ रहै नथिर तहँ तुरत छिपाहीं॥
यह जिय जानि सुनहुदशभाला ❀ बचहि नकोउ जग आये काला॥
अब प्रभु यतन विचारहु सोई ❀ रिपुकर नाश जवन विधिहोई॥

१ एकछत्र। २ दुःख। ३ जिह्वा। ४ मंत्री। ५ मिथ्या।

वचन सुनत तोहिं कछुसुखमाना ❀ काल विवश मुनि तीरथज्ञाना ॥

अहिरावणकी कथा ॥

दोहा-लागेउ करन विचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश॥
समुझिहृदयअहिरावणहिं, आयउजहाँगिरीश॥१३१॥

दण्डचारि तब तहँ निशि बीती ❀ सन्ध्या वन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा ❀ करि हर्षित संपुट भुज बीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी ❀ सुन खगेश तेहिते बड़भागी ॥
मंत्राकर्षण जपि दशभाला ❀ अहिरावण चित डोलपताला॥
लगेउ करनसो मन अनुमाना ❀ केहिकारण दशमुखअकुलाना॥
निशिचर नाह भुवन वशजाके ❀ जीतन कहँ न वीर कोउताके ॥
मन क्रम वचन आननहिं सेवी ❀ धरेउ ध्यान उरकामददेवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवाँ ❀ शिवमण्डप रावण रह जहँवाँ ॥
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ ❀ करगहिनिजआसन बैठायउ ॥

दोहा-अहिरावणतबरावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति ॥
प्रथम कहीतेहिंसबकथा,जैसेभगिनिअनीति॥१३२॥

वध खर दूषण जिमि सुधिपाई ❀ मृग मारीच कपट कृतजाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा ❀ लंकदहन हनुमत करवरणा ॥
सेतुबांधिजिमि प्रभु चलिआयउ ❀ वालिकुमार विवाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पन अरु अतिकाया ❀ परे समर महि सुनु अहिराया॥
तात कुशल अब सबै सिरानी ❀ कटक निशाचर सकलनशानी॥
कुम्भकर्ण घननादहु मारे ❀ राम लषण दुइ मनुज विचारे ॥
आनेहु बोलि तोहिं निज पासा ❀ कहहु सुयतन होइ रिपुनाशा ॥
सुनत शोचभा अहिरावणमन ❀ बोला वचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जगनीति पियारी ❀ करे अनीति होय भय भारी ॥
विना विचारि रारि तुम ठानी ❀ कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी ॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ ❀ सबते बड़ तेहि लघुकरिमानेउ॥

---

१ घड़ी । २ अंगद ।

यदपि न योग मोहिं असबाता ❀ तदपि हरहुँ तवलगि दोउभ्राता ॥
लै पताल देविहि बलि देहौं ❀ यशपूरण निशिचरकुल लेहौं ॥
लै जैहौं तुम जानेउ तवहीं ❀ रविसमतेज होइ निशिजवहीं ॥

दोहा-कहि अस वचन प्रबोध करि, शीशनाइवलभाषि
आयउ रघुपतिकटकमें, निजदेविहिउरराखि॥१३३॥

"गिरिजाकहेउ सुनो भगवाना ❀ अहिरावणको अतिवलवाना ॥
कहो तासु प्रभु उत्पति गाई ❀ सुन बोले शिव गिरा सुहाई ॥
मंदोदरि ऐसा सुत जायो ❀ रावण जाको सुन दुख पायो ॥
बीस व्यालयुत सुन विवुधारी ❀ राखनयोग नमनहि विचारी ॥
श्वानाननते कह्यो बुलाई ❀ आवहु याहि गाड़ि कहुँजाई ॥
दूत दाबि नैऋत्य सिधावा ❀ पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा ॥
रघुपति चरित करनहित आगे ❀ मरा न सो बालक तेहि लागे ॥
खायसि खनि माटी यक मासा ❀ घुनिगा निकर नीरनिधिपासा॥
तेहि लखिराहुजननि अनुरागी ❀ भवनलायनिज पालन लागी ॥
यकदिन तहाँ शुक्रचलि आयो ❀ बोले पुत्र कहाँ यह पायो ॥

दोहा-जेहि विधिपायोउदधिढिग,सोसबदियासुनाय॥
कह्यो शुक्र दशशीश सुत, यह जानो सतभाय ॥

आदिहिते सब चरित सुनाये ❀ अहिरावण धरि नाय सिधाये ॥
निजउत्पत्ति सुनी तेहि जबहीं ❀ कूदिपरा सागर महँ तवहीं ॥
निकसा तुरत वितलमहँ जाई ❀ तहाँ रहै अहिपुरी सुहाई ॥
तप प्रभाव तहँ सुनेउ घनेरा ❀ वासुकि नगर देख चहुँ फेरा ॥
तपहित चल्यो नदीढिग जाई ❀ कामन्दा देवी जेहि ठाई ॥
सुथलसमझ तहँ ध्यान लगावा ❀ संवत चौदहसहसवितावा ॥
सब विधि देखि समाधि अडोली ❀ वरंब्रूहि तब देवी बोली ॥
इष्टवचन सुनतेहि करजोरी ❀ माँगेहु वर सुख भोग बहोरी ॥

दोहा-शेष महेश दिनेश सुर, ईश अजीश अनन्त ॥
मरों न काहू हाथसे, होउँ निशाचर कन्त ॥

पितहि कीन्ह अपमान हमारा ❀ सोऊ मोहिं याँचै यकबारा ॥
सुनि देवी बोली सुन ताता ❀ करिहौ तुमबहुविधि सुखगाता ॥
त्रेता शेष समय दशशीशा ❀ याचहितोहिं जोरि भुजबीशा ॥
मारै तुम्हैं न कोउ जगमाहीं ❀ कपियक मम वाचावश नाहीं ॥
कहिअस अन्तर भई भवानी ❀ अहिरावण तवयहमति ठानी ॥
विविध वेष धरि अहिपुरजाई ❀ अज गज हयखरडारहिखाई ॥
पुनिनागनसे भिरचो प्रचारी ❀ कीन्हो व्याकुल सबहिन मारी॥
तब नृप दर्विक बोल्यो ताही ❀ विधिवत कन्या दई विवाही ॥
कुन्दनिनाम पाय तब नारी ❀ काननमें घर करन विचारी ॥
पुनि कामन्दाके ढिग आवा ❀ योजननव कर नगर बसावा ॥

दोहा–रह्यो असुरले ताहिमें, करन लग्यो सुख भोग॥
अब त्रेताके शेषमें, भयो प्राप्त सोइ योग" ॥

सूझ न निजकर अति अँधियारी ❀ मर्कट भट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिंजयतिजयजयति कृपाला ❀ अतिहिअगमजहँनहिंगतिकाला॥
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई ❀ करि लंगूर कोट कठिनाई ॥
सो शोभा इहिभांति सुनाई ❀ भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत¹ शैल समाना ❀ द्वार जहाँ तहँ मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा ❀ किमिरविगृहकरतिमिर²पसारा॥
एको युक्ति न मन ठहरानी ❀ कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी॥
वेष विभीषण सब अनुहारी³ ❀ पवनतनय पहँगा छलकारी ॥

दोहा–सहज प्रतापी पवनसुत, पुनिसुरपतिपति दास॥
तिनहिं निदर चल रामपहँ, सूढहृदय नहिंत्रास⁴ १३४॥

मर्म्म⁵ न जान प्रभंजनजाता⁶ ❀ कीन्हेसि गमन विभीषण भाता॥
ठाढ होहु बोलेउ सुनु भ्राता ❀ चलेउँ जहाँ कृपालु जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई ❀ संध्या करन गयउँ सुन भाई ॥
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं ❀ भइ विलम्ब जनि राम रिसाहीं॥

---

१ ऊंचा । २ अंधकार । ३ अनुसार । ४ डर । ५ भेद । ६ हनुमान ।

सत्यवचन कपि निज मन माना ❀ सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपट चतुरगति जानि नजाई ❀ परमन हरै हरहि धनभाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहँवां ❀ रहेफणीश अरुप्रभुदोउ जहँवां॥
कपिपति जाम्बवंत नल नीला ❀ वालीसुत सुषेण बल शीला ॥

दोहा-द्विविदमयन्दरु कीशगण,गय गवाक्ष कपिवीर॥
सहित विभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर १३५॥

तिनहिं मध्य रावणशशिराहू ❀ एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिणदिशि सोवत रघुनाथा ❀ अनुजवामदिशितेहि पर हाथा॥
प्रभुकर कर पर राजत कैसे ❀ जातरूप पंकज फणि जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा ❀ तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
शुभग बाण धनु धरे बनाई ❀ लक्ष्मणसह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मनकीन्ह प्रणामा ❀ देखि राम सुन्दर घनश्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं ❀ मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥
करहिं विविध जप योग विरागी ❀ जपहिंनिरन्तरनिशिदिन जागी॥
सोप्रभु तेहि देखा भरिलोचन ❀ कृपासिंधु सेवक भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह विचारा ❀ करहुँ काज रावण अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुण आई ❀ कवनी भाँति जाहिं दोउभाई ॥

दोहा-मोहनते मोहे सकल, मंत्रनते मुख मूंदि ॥
भयउ अदृश्य उठाइकरि,प्रभुहि चलेउलै कूदि १३६

यहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई ❀ नभ मारग प्रकाश अति होई॥
सो प्रकाश जब रावण देखा ❀ कियप्रमाणतेहि वचन विशेषा॥
मनमहँ हर्ष करहि अति भारी ❀ अहिरावण लैगा असुरारी ॥
लै निज लोक गयउ पल माहीं ❀ भयउ शोर तब कपिदल माहीं॥
जागे वानर श्रीहत भारी ❀ देखिय जिमि सरिता विनुवारी ॥
पुनिदेखिय जिमिनिशिविनुइन्दू ❀ भे वानर जिमि उड विनु चन्दू ॥
रवि विनु दिवस जीव विनु देहा ❀ जिमिदेखिय दीपक विनुगेहा ॥

१ लक्ष्मणजी । २ नदी । ३ चन्द्र । ४ घर ।

एकहि एक लगे तब बूझन ❀ कहाँगये त्रैलोक्य विभूषन ॥
दोहा-शोधेउ सबमिलि कटक तिन, नहिंपायेदोउवीर
भेव्याकुल सब भालु कपि, जिमिजलचर गतनीर १३७
सकल कहहिं यह विधिकहकीन्हा ❀ रघुपति विरहप्राणकतलीन्हा॥
शोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा ❀ कहां राम लक्ष्मण दोउ वीरा ॥
करुणाकरहिं कपीश अपारा ❀ बनी बात विधि कहा विगारा॥
कटक निशाचर सकल सँहारी ❀ रहा एकरिपु रावण भारी ॥
सोउ न रहत राम शर लागे ❀ भाइउ हम सब परम अभागे॥
कबहुँजोदशशिर अरिरणजीतहि ❀ उत्तरकवन देव हम सीतहि ॥
असकहि विकल मूर्च्छिमहिपरे ❀ लागत वज्र शैल जिमि गिरे ॥
दशा विभीषण कही न जाई ❀ विगत वत्स जनु धेनु लवाई ॥
दो.-सहितपवनसुतऋच्छपति, दुखमनभाबड़िभाँति ॥
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तमअपार तिहिराति १३८॥
पवनतनय पुनि कह सब पाहीं ❀ विस्मय एक होत मन माहीं॥
कोउ इक आव विभीषण वेषा ❀ प्रभुके निकट जात हम देखा॥
पूछतवचन कहेसि अतिनीका ❀ कपट नजानिय निशिचरजीका॥
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा ❀ अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नगलोक निवासी सोई ❀ मम तनु वेष और नाहिं कोई ॥
महाबली जानै सब माया ❀ निश्चय तेहि दशशीश पठाया॥
जेहिवल होइ तहाँ सो जाई ❀ ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना ❀ तव बल तात सकलजगजाना॥
वेगि सो यतन विचारहुताता ❀ कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥
दो.-विलखिकहेउ कपिपतिबहुरि, सुन मारुतसुततात॥
विनु रघुनायक जन्म धिग, पलयुगसरिसविहात १३९॥
यथा तृषित विनु वारिद वारी ❀ रविविनुजलजमीन विनु वारी॥
भट अशस्त्र रणअनी अनाथा ❀ वह्नि अनिंधन गातसमाथा ॥

१ पानी । २ चिन्ता ३ विभीषण । ४ जाम्बवन्त । ५ कमल । ६ अग्नि ।

दीप अवर्ति सकल क्षण भंगी ❀ तिमि हम सब देखिय बजरंगी॥
जिमि सीता सुधि भेषज आनी ❀ तेहि प्रकार आनहु सुखदानी॥
सुनत वचन मारुतसुत बोला ❀ राखहुचितथिरकटक अडोला॥
भुवन चारिदश तीनिहुँलोका ❀ आनहुँप्रभुबलप्रभुतजु शोका॥
अबतुम सजग रहेउ सब भाई ❀ लरेहु कालसन जो चढ़िआई॥
असकहिसकृत चलेउ हनुमाना ❀ गर्जत प्रलय पयोधिसमाना॥
चलत बाट इक तरुतर गयऊ ❀ गीधिन गीध कहतअस भयऊ॥

दोहा-नारि गर्भिणी गृध्रकर, बोली पतिसन बैन॥
आनहु आमिष मनुज पिय,खाउँहोइजिय चैन१४०

तासुवचन सुनि खग अस कहेऊ ❀ अहिरावण रामहिंले गयऊ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई ❀ सो आमिष बड़ भागन पाई॥
कवनेउ यतन देव मैं आनी ❀असकहि विहँगवामसनमानी॥
जबहिं पवनसुत अससुधिपाई ❀ चलेउ तहाँ सुमिरत रघुराई॥
अभयप्लवंग पतालहि गयऊ ❀ अहिरावणपुरप्रविशत भयऊ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❀ कपिसनडाटि कहतबहु रीशा॥
निदरि जात मोहिं तोहिं डरनाहीं ❀ दीपहि जिमि न पतंग डराहीं॥
जानेसि मोहिं न मरुत सुतबालक ❀ स्वामिभक्त भंजनमुख कालक॥

सो०-सुनत वचन हनुमान,बोलत भे विस्मय विवश॥
अरे मूढ अज्ञान, मोरे सुत स्वप्नेहु नहीं॥ १० ॥

कहत वचन शठसंयुत खोरी ❀ कामविवश कबभइमतिमोरी॥
ममसुतबनसि मूढ केहि काजा ❀ इतनाकहत तोहिं नहिं लाजा॥
केहि प्रकार तुव मम सुत भयऊ ❀निजउत्पातिमोसन किनकहऊ॥
सुनत कहहि मकरध्वजवचना ❀ किहेउ दाह रावणपुर रचना॥
जब आयो चलिउदधि समीपा ❀ बहेउ स्वेद तवतनु कपिदीपा॥
सोप्रस्वेद सागरमहँ गयऊ ❀ पियउ मीन तेहिते मैं भयऊ॥
यहिप्रकार मैं तव सुत ताता ❀ गोवहुँनाहिंनिज पिता न माता॥

१ औषधि। २ मांस। ३ समुद्र। ४ पसीना। ५ मछली।

अहिरावण सेवा मैं करहूँ ❋ राखहुँ द्वार न कबहूँ टरहूँ ॥
दोहा-सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूँछी सब बात ॥
लावा लक्ष्मण राम कहँ, कहा करत सो तात ॥ १४१ ॥
कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ ❋ जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊँ ॥
यह वृत्तान्त अस जानहुताता ❋ यह मैं श्रवण सुनेउँ कछुबाता ॥
सीतापति अरु फणिपति साथा ❋ सो लै आयउ निशिचरनाथा ॥
करत होम तेहि कारण आजू ❋ देविहि बलि देई नृपराजू ॥
जोकछु निजश्रवणनसुनिपायउँ ❋ तात सकल सो तुमहिं सुनायउँ ॥
निज प्रभुकाजलागि दुखसहेऊँ ❋ तुमसन सत्यवचन मैं कहेऊँ ॥
जानचहहु तुम जान न देऊँ ❋ प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊँ ॥
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना ❋ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥
दोहा-तेहिमुष्टिककपिकहँहनेउ, पुनिमारेउकपिताहि ॥
हनहिं परस्पर एक इक, बल समान घट नाहि ॥१४२॥
एकहि एक सकहिं नहिं पारी ❋ पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहि लूमसर्ने बाँधि भवानी ❋ चलेउ वातसुत विलँव न आनी ॥
धरि लघुरूप होम गृह देखा ❋ जीव सजीव परे नहिं लेखा ॥
तहँ देवी कर मण्डप रहई ❋ शोणित घट बहु कोकहि सकई ॥
विविध भाँति मेवा पकवाना ❋ धरे आनि देवी अस्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसूनं लै आई ❋ सुमन मध्य प्रविशेउ कपिराई ॥
सुमनहुँते करि अति हलुकाई ❋ लेत पाणि जेहि जानि न जाई ॥
जब देविहि सो पुष्प चढायउ ❋ बिकटरूप तब कपिदिखरायउ ॥
दोहा-छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ॥
मुख बगारि ठाढे भये, कपि छबि लखत डराइ ॥ १४३ ॥
देवी प्रगट समुझ खलझारी ❋ करहिं विचार हृदय अतिभारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगटभइ आजू ❋ बड़भागी भा निशिचर राजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❋ जो चढ़ाव सो कपिमुख परहीं ॥

१ हाल । २ कानन । ३ जीती । ४ पूँछ । ५ पुष्प ।

जो जहँ रही वस्तु समुदाई ❋ बची न कछुक सकल कपिखाई ॥
कपि खिलारि कौतुक विस्तारा ❋ भा यह निशिचर कुलसंहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे ❋ चढ़े काँध पर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना ❋ लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना ॥
ढाढ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी ❋ निशिचर बहु आयुध धरिपानी ॥
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा ❋ शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दोहा-तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ॥
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत ॥ १४४ ॥

मायाबलते सकल विचक्षण ❋ अति विकारमय मूढ़ कुलक्षण ॥
यहि विधि सकल वीरतहँ रहहीं ❋ अहिरावण आज्ञा दृढ गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग तिन्ह काढे ❋ मारण कहँ प्रभु पर भए ठाढे ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू ❋ भारि त्रयदण्डविलँबअबकरहू ॥
पुनि अस वचन मूढमतिकहहीं ❋ सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं ॥
नाहिंत काल आइ नियराना ❋ निशास्वप्नसम दोउ जनप्राना ॥
बोलहिं मूढ असंभव वानी ❋ सकुच लगै सो कहत भवानी ॥

दोहा-फणिपतिचितवतरामतन, रामचितवअहिराज ॥
प्रभुकरकौतुककहियकिमि, सुनोदशा खगराज॥ १४५ ॥

विहँसिकीन्हप्रभुहृदय विचारा ❋ जपै सकल जग नाम हमारा ॥
जाना देवि रूप हनुमाना ❋ विहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक ❋ भई तुम्हारि देवि तुव भक्षक ॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ ❋ घन समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकलत्रसित भे भारी ❋ कहहिं वचन भय हृदयविचारी ॥
अहिरावण भल कीन्ह न काजू ❋ आने कपटवेप सुरराजू ॥
तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू ❋ अब भा सब कर मरण समाजू ॥
संभ्रम वश तव निशिचर झारी ❋ बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी ॥

दोहा-प्रगटरूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ॥

१ अस्त्र-शस्त्र । २ लक्ष्मणजी । ३ चरित्र । ४ वाणी । ५ शोक-संदेह ।

अतिभयत्रासितरजनिचर, सुनहुउमामतिधीर॥१४६॥
डगमगान निशिचर अभिमानी ❀ मारुतवेग यथा नदिपानी॥
तेहि क्षण कपि लीन्हें दोउ भाई ❀ धुनत तूल निशिचर समुदाई॥
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना ❀ काटत भुज शिर कृषी समाना॥
खण्ड खण्ड तब खलदल कीन्हा ❀ गहि पदडारि अनलमहँ दीन्हा॥
करि लंगूर कोट कपिराई ❀ तेहिमहँ घिरि कोउभागिनजाई॥
इहि विधि सब निशिचर संहारे ❀ अहिरावण लखि वचन उचारे॥
रेकपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❀ अहिरावण तैं जान न मोहीं॥
जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा ❀ अरु रावणसुत हतेउ विचारा॥
दोहा-कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान॥
असकहिखड्गप्रहारकिय, कपितनुवज्रसमान॥१४७॥
लै असि ताहि पवनसुत मारा ❀ काटि शीश पावकमहँ डारा॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा ❀ लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा॥
मकरध्वज विनती तब कीन्हा ❀ बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा॥
इहाँ राज्य भोगहु तुम ताता ❀ भजहु सदा मम प्रभु दोउभ्राता॥
असकहि कपि निजदलसोआवा ❀ हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा॥
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं ❀ गइमणि पाइ फणी सुख पावहिं॥
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई ❀ तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई॥
मिलेउ कपीश चरण धरि माथा ❀ पुनि पद गहे निशाचरनाथा॥
दोहा-जाम्बवन्त अंगद सहित, मिले भालु अरु कीश॥
सन्माने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश॥१४८॥
बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना ❀ कहहिं तात तुम राखे प्राना॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं ❀ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं॥
अनुज सहित हर्षित रघुवीरा ❀ कहेउ वचन सुनु तनय समीरा॥
तव समान नहिं कोउ हितकारी ❀ सुर मुनि सिद्ध मनुजतनुधारी॥
यशतुम्हार त्रिभुवनमहँ भयऊ ❀ सुनिप्रभुवचनचरणकपिनयऊ॥

१ रुई। २ खेती। ३ अग्नि। ४ अक्ष। ५ सर्प।

नाथ कीन्ह सब मैं केहिलेखे ❀ तरणी चलत अगम जल देखे ॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा ❀ सुनि असमिलेकपिहिरघुनाथा॥
कटक सहित हर्षे दोउ भाई ❀ तेहिअवसरसुखकिमिकाहिजाई॥
छं०-कहिजाइसुखकिमितेहि समयकरसुनहुगिरिजाचितधरे ॥
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षत आरती सुरगणकरे ॥
अति प्रेमसों मारुतसुवनयश गाइविबुधनअसकहा ॥
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥
दोहा-करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय ॥
रामचरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरिलाय ॥ १४९ ॥
देवनिकर प्रभु गुणगण गावाहिं ❀ आरत हरकहँ विनय सुनावहिं ॥
विबुध विनय रघुपतिसुनिकाना ❀ कह प्रभु सत्यसिन्धु भगवाना॥
चतुरानन वर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ्यो खेला ॥
नाहित लषण एक पल माहीं ❀ राखत यातुधान कुल नाहीं ॥
अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सब शोचबिसारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेषा ❀ भटमहँ जासु भुजाकर रेषा ॥
तेहिरण महिमहँ हतहुँप्रचारी ❀ बिनु श्रम सबसों कहत खरारी ॥
शंभु कृपा अब संशय नाहीं ❀ सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं ॥
दोहा-सत्य वचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूह ॥
चले कहत जय जयति प्रभु, वर्षे सुमन समूह ॥ १५० ॥
यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ❀ खगपति राम कृपा मैं गावा ॥
अब हिय हर्षि सुनहु द्विजराई ❀ मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई ॥
याज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती ❀ भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिरसुहावा ❀ सुनि मन नाथ परमसुखपावा ॥
अहिरावण वधान्त भगवाना ❀ चरित किये सो करहु बखाना ॥
सुनिमुनि विनय ऋषय पुलकाई ❀ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन ❀ सहजसुभग सज्जनमनभावन ॥

१ नौका । २ ब्रह्मा । ३ देवगण ।

मानस हरि चरित्र सुठि नीका ❀ सुनतकरत जो कोउमनफीका ॥
दोहा-सोइजगवंचकसुनहु मुनि, जेहिमानसनसुहाय ॥
भवसागरमहँभ्रमतसो, अमितकल्पचलिजाय ॥ १५१ ॥
मानस सुनत न मनहिं अघाहीं ❀ तासम धन्य और कोउ नाहीं ॥
धन्य धन्य तुमसन कोउ आना ❀ ललितचरितअतिसुनहुसुजाना ॥
राम लषण दलसहित विराजे ❀ जयति रामकहिकपिगण गाजे ॥
राम सैन सुखमा अधिकाई ❀ निगमागम जानेउ बुध भाई ॥
वहाँ दशानन सब सुधि पाई ❀ दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहिरावण कर वंध सुनिकाना ❀ भयउ तेजहत अति दुखमाना ॥
वचन वज्र सम लागेउ ताही ❀ संभ्रम मूर्च्छि परेउ महि माहीं ॥
कटे पंख जिमि विहँग विहाला ❀ रंगचीरगत निशि हिमकाला ॥
सुख सुखान लोचन जलबहई ❀ वचन न आव शीश धुनि रहई ॥
दोहा-मयतनया तब आइ पुनि, बहु प्रकारसमुझाइ ॥
मान न मूरुख कालवश, परमक्रोध कहँपाइ ॥ १५२ ॥
नारि वचन सुनि तेहिरिसबाढी ❀ उठि बैठेउ धिर धीरज गाढी ॥
तेहि अवसर मंत्री इक आवा ❀ करि आदर दशमुख बैठावा ॥
सिन्धुरनाद नाम बलवाना ❀ वृद्धज्ञान मय परम सुजाना ॥
सदा विभीषण कर सँग ठयऊ ❀ कबहूँ दशमुख सभा न गयऊ ॥
आवा सो भल अवसर पाई ❀ कहेसि नीति रावणहि बुझाई ॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी ❀ तब बहिराइ वात कह आनी ॥
करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ ❀ प्रभु दुह ताग हृदय पट बुनऊ ॥
अब यहि कहौं सो सहज उपाई ❀ जेहि यहि मूल समूलनशाई ॥
दोहा-यहविचार बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुलराउ ॥
धीर धरहु संशयविगत, कहहु सो करिय उपाउ ॥ १५३ ॥

नरान्तकका संग्राम.

अक्षादिकन सुतन बल दूना ❀ कस सुरारि मन मानहु ऊना ॥
सचिववचन सुनि दशमुख कहई ❀ अब हमरे कुल को भट अहई ॥

१ मरण । २ पक्षी । ३ मन्दोदरी ।

अपने मनमहँ करहु विचारा ❋ हैनारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अभुक्त माहिं भा जोई ❋ दियो बहाइ मरा नहिं सोई ॥
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ ❋ पुर विहवावल नृपता दयऊ ॥
कोटिबहत्तर एक प्रभाऊ ❋ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ॥
दूत पठाइ बुलावहु ताही ❋ जीतिहिसो रिपुरणके माहीं ॥
दनुज अधीश चतुर चरपठवौ ❋ धरहु धीर चित चिंता घटवौ ॥

दोहा-तासु मंत्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद अमान॥
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समझायउसन्मान ॥ १५४ ॥

धूम्रकेतु तुम परम सयाना ❋ लै मनपाती करहु पयाना ॥
बसत जहाँ नारान्तक राजा ❋ तहाँ न तात अवरकर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई ❋ सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसु पाइ चार तहँ गवना ❋ यहसुनिबिहँसिकह्योअहिदवना॥
काकनाथ यह गाथ सुहाई ❋ मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि ❋ पुर विहवावल गा कवनीसिधि ॥
सुमिरिकाकपति उर अवधेशा ❋ मनप्रसन्न कर कह काकेशा ॥
अतिसुन्दर शुचि यह संवादू ❋ चित थिर करि सुनिये उरगादू ॥

दोहा-नख चौगुण वसु ऊन तहँ,सप्त अकाश मिलाइ ॥
इतने निशिचर एक दिन, भैरावण पुर आइ ॥१५५॥

पुरमहँ उपजे खल इक साथा ❋ तबसुनि हर्षा निशिचरनाथा ॥
निज गुरु बोलि चरण शिरनाई ❋ बूझा मुदितसो कलश धराई ॥
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ ❋ आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं ❋ भये आजु जे तव पुर माहीं ॥
वेसुत सब निज निज पितुघाती ❋ मुख देखत सुन सुर आराती ॥
घर राखे धनसहित विनाशा ❋ होइ अवशि नहिं उबरन आशा ॥
शुक्रवचन सुनि डरे निशाचर ❋ कह करिये अति वाद परस्पर ॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू ❋ सौंपिय सिन्धुहिं और न काजू ॥

१ गरुड़ । २ वैरी । ३ बालक ।

दोहा-संपदि करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोर ॥
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोर ॥ १५६ ॥
सेवक दशमुख आयसु पाई ❀ धाये तुरत चरण शिरनाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी ❀ सुनहु सकल पुर नर अरु नारी ॥
आजु अभुक्तमूल भये बालक ❀ डारहु सागर सब कुलघालक ॥
बोरे सबनि बाल इकठाई ❀ भावीवश मधुमाखी नाई ॥
पाय अधार वृक्ष वट बोरा ❀ पावन लगे क्षीर३ चहुँ ओरा ॥
पीवत क्षीर अब्द भरसाती ❀ पुष्टभये खल निशिचर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाई ❀ सुरसरि संगम भा तेहि ठाई ॥
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा ❀ सबनिविलोकिमुदितशिरनावा ॥
छंद-शिरनाइमुदितविलोकिशिवमंदिर सुहावनपावनं ॥
कछुदिन रहेतहँ सकल पुनिउठिचलेसुनअहिदावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाँप्राची कोश शतरस चलिगये ॥
बैठे जलधिमहँ पाइथल वर शंभुचरणनचितदिये ११
दोहा-जानत नहिं उत्पत्तिनिज, मनमहँ करतविचार ॥
गेतेहिढिग जाकर विदित, रवि ते छंठवींबार ॥१५७॥
हरिअँरिगुरुनिजशिष्यनचीन्हा ❀ करत प्रणाम आशिषादीन्हा ॥
कहि निजनाम सबनिसमुझावा ❀ कुलगुरु जाना विनय सुनावा ॥
निज उतपति बूझी शिरनाई ❀ भृगुनन्दनसों सकल सुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने ❀ लखिरुख भृगुनायक सन्माने ॥
करा प्रतोषँ मंत्र गुरुदीन्हा ❀ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशयत्यागी ❀ भे विरंचिपद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन ❀ वर्ष सहस तप कियउरगासन ॥
श्वास धार कृत वर्ष हजारा ❀ रहे ऊर्ध्व मुख विना अहारा ॥
दोहा-एकपाद पुहुमी दये, अपर अंग अनयास ॥
सबल पुष्ट तनु मनहरष, स्वप्नेहुभूख न प्यास ॥१५८॥

१ शीघ्र । २ आज्ञा । ३ दूध । ४ पूर्व । ५ शुक्र । ६ शत्रु । ७ समाधान । ८ पृथ्वी ।

तप अतिउंग्र विचार विधाता ❀ तिन ढिग गमने मुखमुसकाता ॥
हंसारूढ कमंडलु हाथे ❀ श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥
आनन चारि नयन वसु नीके ❀ चारिउ भाल भस्म शुभटीके ॥
उपमामय प्रभु सब जगअयना ❀ भाष्यो दयासदन बरवयना ॥
माँगहु वर जो सब मनभावा ❀ सुनेउ सबनिविधिपदशिरनावा ॥
नाथ चहत हम यह वरदाना ❀ हमाहिं न कोउ जीते मयदाना ॥
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी ❀ आनपाणि नाहिं मृत्यु तुम्हारी ॥
हरिसुत है तुम्हार गुरु भाई ❀ तेहिसन किहेउ न कवहुँलराई ॥

दोहा-जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचनप्रमाण ॥
एकहि कहँ वरदानयह, दैकह कृपानिधान ॥ १५९ ॥

दियउ नरान्तक कहँ वरदाना ❀ रहे अपर जे धरि उरध्याना ॥
तिनसन वरंब्रूहि विधि कहेऊ ❀ सुनतप्रमोदं सबनि उरलहेऊ ॥
सुनिविधिगिरा सबनिकहस्वामी ❀ देहु एकवर अन्तर्यामी ॥
देवासुर संग्रामाहिं माहा ❀ जीतहिं हम यह वर सुरनाहा ॥
असकहि रहे दनुज शिरनाई ❀ तिनसन कहेउ विरंचि वुझाई ॥
तुम अजीत सबसन सब भाँती ❀ वानर भालु त्यागि दुइ जाती ॥
यहि विधि सब कहँ दै वरदाना ❀ ब्रह्मलोक गये ब्रह्म सुजाना ॥
विधिते लहि वर तिन सुखबाढा ❀ लागे करन वहुरि तप गाढा ॥

दोहा-गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ॥
जोरि युगलकर एकपद, निशिदिन आठौयाम ॥ १६० ॥

विनु प्रयास ठाढे सब भाई ❀ क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई ॥
गुण सहस्र संवत सब ऐसे ❀ गये बीति प्रथमाहिं तप जैसे ॥
सपन शीश पुनि अवनीदीन्हा ❀ उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा ॥
जोरेकर निरोध कर श्वासा ❀ जबहिं मंत्र शंकर वर आसा ॥
मुनिगण तिनकर साधन देखी ❀ मनमहँ मानत सकुचविशेखी ॥
हरिइच्छा बल हृदय विचारी ❀ निरखि चले मुनि जपतपुरारी ॥

१ कठिन । २ दधिबल । ३ हर्ष । ४ भूख । ५ पियास ।

अयुत अब्द बीते खगनायक ❀ भे प्रसन्न शिव जन सुखदायक ॥
चढे वरद हिमसुतासमेता ❀ आये तिनतट कृपानिकेता ॥
दोहा–बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, माँगहु वर मन भाव ॥
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥ १६१ ॥
मैं तप किहेउँ दरश तव लागी ❀ नाथदीन जनचित अनुरागी ॥
अब माँगत आवत मोहिंलाजा ❀ ठाढरहा कहि निशिचर राजा ॥
माँगु सकुचतजि असहर कहेऊ ❀ नारान्तक तब माँगत भयेऊ ॥
मोहिं विभव अस देहु गोसाँई ❀ भूप प्रजा नाहिं परहुँ लखाई ॥
पुर अनयाँस वसहि ममनाथा ❀ यह कहि रहा जोरि युग हाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा ❀ गमने भवन सहित वागीशा ॥
शिवप्रसाद नारान्तक पावा ❀ अंतरिक्ष पुर सपदि वसावा ॥
पुर विहवाबलकी रुचिराई ❀ कहत कछू इक तुमसन गाई ॥
दोहा–ऋतु रविदूने कोटिसो, भवन वसे इक ठौर ॥
जातरूपमयनगजटित, अतिशोभितचहुँओर ॥ १६२ ॥
योजन ढाई शत चकलाई ❀ चौंसठ कोश उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❀ विस्मय विश्वकर्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे ❀ गढ भीतर चौहट निधि पूरे ॥
वणिक पदम धनतुच्छबखाना ❀ वन उपवन सरिता सर नाना ॥
बसत प्रजा पुर सघन अपारा ❀ नारांतक गढ मध्य सँभारा ॥
षोडशकोश कोट चहुँ ओरा ❀ मणि माणिक लागे नाहिं थोरा ॥
हय गज रथ खच्चर समुदाई ❀ कहि न जाइ खग मृग विपुलाई ॥
कोटि बहत्तर एकै साथा ❀ विद्या पढन लगे खगनाथा ॥
दोहा–हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबल पहुँचा आय ॥
पुरविहवाबल निरखिसो, कछुदिनरहालुभाय ॥ २६३ ॥
भावी वश निशिचर सँगकीशा ❀ वर्ष एक पढ सुनहु मुनीशा ॥
गुरुइकबार कहेउ रिसियाई ❀ हतिहसि तैं आपन गुरुभाई ॥

१ बैल। २ ऐश्वर्य। ३ बेपरीश्रम। ४ नारान्तक।

बिनु अघं मुनि दधिबल गुण शापा ❀ बिदा माँगि गवना करिदापा ॥
मारग मिले देवऋषि तेही ❀ गहे सुकंठ सुवन पग नेही ॥
लखि अशीष दै बूझा तेही ❀ दधिबल कवन काज गए जेही ॥
तब नारान्तकपुर प्रभुताई ❀ दधिबल नारदमुनिहि सुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी ❀ रहे ब्रह्मसुत हृदयविचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना ❀ बार बार सुमिरे भगवाना ॥

दोहा-दधिबलते नारद कहेउ,सुनहु तात चितलाइ ॥
तनु धरि जेहि हरिभक्तनहिं,जन्म वादि जगजाइ ॥१६४॥

यह विचारि भजु रामहिं ताता ❀ उपजेउ सुनत ज्ञान मुनिबाता ॥
ऋषिपद परशि आशिषा पाई ❀ कपिपति सुत गमने हरषाई ॥
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवाँ ❀ पयँनिधिमध्य रुचिरगिरि तहँवाँ ॥
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा ❀ सुभग देखि कपिवर मन भावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई ❀ कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारद ताहि देइ उपदेशा ❀ गये बिरंचिहि धाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत विद्यापाई ❀ जहाँ तहाँकी विविध लराई ॥
बिन्दुनाम इक निशिचर आहा ❀ सो खल रहा वितलथलमाहा ॥

सो०-अति रणधीर जुझार, चढे शक्रपर बलि विपुल ॥
कीन्हेउ समर अपार,अब्द एक श्रुति सन्तकह ॥११॥

सतकोटि निशिचर सँग ताके ❀ असित मेरु सम खल भटबाँके ॥
सुनासीर कोपेउ इक बारा ❀ सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि बिन्दु केवल गृह गयऊ ❀ तासु नारि निशिचर सुखदयऊ ॥
सब निशि भोगकरा खल पापी ❀ उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्तकोटि सुत नाना नामा ❀ उदर बक्र सकल बलधामा ॥
कोटि बहत्तर तनया जाके ❀ लाजहिं मृगलोचन लखिताके ॥
तिनमहँ बिन्दुमती इक सुंदरि ❀ नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि ॥
निरखि बिन्दु निजमन अनुमाना ❀ नहिं नारान्तकसम कोउ आना ॥

१ पाप । २ क्रोध । ३ राह । ४ नारद । ५ सुग्रीवसुत । ६ वृथा । ७ क्षीरसागर । ८ इन्द्र । ९ टेढ ।

दोहा-यह विचारिचितबिन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ ॥
बिन्दुमती आदिकसुता, सुन्दर साज सजाइ ॥ १६५ ॥
सकलसुता इक संग विवाही ❀ यथायोग्य जेहि कहँ जसचाही ॥
नारान्तक सब सेन समेता ❀ करि विवाह फिरि गयउनिकेता ॥
पुर विहवाबल कीन्ह बसेरा ❀ प्रजासहित सुख करत घनेरा ॥
जोतियचहिय विबुध गृह भाई ❀ सोभावीवश निशिचर पाई ॥
नारि पतिव्रत जेहि घरमाहीं ❀ तेहि प्रतापनिज अमरडराहीं ॥
बिन्दुमती विद्या समताता ❀ बुधजनसभा चरित विख्याता ॥
नारान्तक उत्पति मैं गावा ❀ सुन खगेश पुनि चरित सुहावा ॥
पुनि पुनि हरि हर पद शिरनाई ❀ गुरुसन गुनेउँ सो कहेउँ बुझाई ॥
दोहा-चारन दशमुखको तुरत, मगचलि पहुँचो जाय ॥
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढभयउ हरषाय ॥ १६६ ॥
तेहि मारुतदिशि कानन भारी ❀ पर्णलेत देखेउ तहँ वारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढा ❀ बूझेसि ताहि धीरधरि गाढा ॥
कवन रीति यहि पुरमहँ भाई ❀ तरुपर चढत भूपसुत आई ॥
चार वचन सुनि सो मुसुकाना ❀ कवन नगर तुम वसत अयाना ॥
नारान्तक नृप कै यह वारी ❀ तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❀ कछु डरि पुनिनिजमारगलीन्हा ॥
लिये कनकघट सुखमापूरी ❀ वारिलेन आई तियरूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❀ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥
दोहा-तुम्हरेपुर कह चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ॥
आइउ तुम जलभरन कहँ, बोलेउत्यागडराव ॥ १६७ ॥
दूतवचन सुनि निशिचर चेरी ❀ बोली हँसि करि एकहि बेरी ॥
नारान्तक दासिनकी दासी ❀ हम ताकी दासी विश्वासी ॥
सदा भरैं यहि सागर पानी ❀ यहँ आवहिं केहि कारण रानी ॥
कहिहउ और काहु अस बाता ❀ पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥

१ घर । २ वृक्ष । ३ सोनेकेकलश ।

असकहि गवनी लै जल नारी ❀ तिनसँगधूम्रकेतु पगधारी ॥
गढभीतर कीन्हेसि पैसारी ❀ निरखे विपुल कूप सर वारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा ❀ फिरत विलोकत पुर चहुँ ओरा॥
अन्तरगढ तेहि चारि दुवारा ❀ तहाँ न चर पावहिं पैसारा ॥
छं०–पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगि फिरि आयऊ॥
यहि भाँति रावण दूत घटिका युगल दिवसगँवायऊ॥
मनमहँ विसूरत ठाढ चौहटमध्यसो जब रहि गयो ॥
निशिचरनिकंदनहोनलगिविधिताहिइकअवसरदयो॥१२॥
सो०–गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ॥
लीन्ह धार तेहि मार, गढइमि कीन्ह प्रवेश चर॥१२॥
बैठेउ सभा नरान्तक जाई ❀ कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनि रसगुणवसु एका ❀ अंकरीति लिखि गुणी विवेका ॥
वन्दीजन नट कौतुक करहीं ❀ प्रतिदिन कविकोविद उच्चरहीं ॥
रावणदूत सभा सो देखी ❀ मनमहँ चकृत भयो विशेषी ॥
तब चारण मन अस अनुमाना ❀ कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण वसन सुआसन जोहा ❀ देखि सुखद चारण मन मोहा ॥
याम दिवसगत अवसर पावा ❀ नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई ❀ कुशल तासु बूझी हरषाई ॥
दोहा–नारान्तक निजकुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ॥
समाचार गढ लंककर, वरणेउ दूत सचेतु ॥ १६८ ॥
चरभाषित नारान्तक सुनेऊ ❀ क्षणकमाहिं निज कारण गुनेऊ ॥
पुनि पत्री निशिचरपति बाँची ❀ मानी चार बात सब साँची ॥
उठ्यो सभाते हृदय रिसाई ❀ गा निजभवन शोच सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई ❀ पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी ❀ तुम जनि करहु रामसन रारी॥
गहहु चरणपिय अवसर जाई ❀ रसन सफलकरि विनय सुनाई॥

१ बहुत। २ तालाब। ३ देखत। ४ नाश। ५ ब्रह्मा। ६ नटविशेषतमाशाकरनेवाले। ७ अधिक।

माँगि भक्ति वर प्रेम दृढाई ❀ निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
नारिवचन तेहि मनहिं न भावा ❀ तब उठि कोट द्वार खलआवा ॥
दोहा–कहत बजाव निसान घन, सजहु सेन चतुरंग ॥
जन्मभूमि जावा चहहुँ,पितु चारनके संग ॥ १६९ ॥
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा ❀ लगे निशाचर सजन समाजा ॥
असित वाजि[1] गज[2] उष्टर नाना ❀ रथ खच्चर खेचर बहुयाना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहिपानी ❀ निशिचर अनी[3] नजाइ बखानी ॥
जय सब संयुत साज सजाई ❀ विविध निसान हने हरषाई ॥
कन्त जात निश्चय जियजानी ❀ बिन्दुमती निजचित अनुमानी ॥
राम विरोध न यहि कल्याना ❀ महूं संग अज करहुँ पयाना ॥
भूषण वसन सुअंग बनाई ❀ कन्त चरण गहि विनय सुनाई ॥
सासु श्वशुर दर्शन हित नाथा ❀ हमहूं चलब प्राणपति साथा ॥
दो.-दशमुखसुतसुनितियवचन, हृदयपरमसुखमानि॥
कहेउ चलहुसबसखिनसह,प्रमुदितछाँड़िगलानि १७०
सुनि पति वचन नारि हरषानी ❀ चली संग लै सखी सयानी ॥
लै दल नारान्तक पग धारा ❀ अमितसेन को कहिसक पारा ॥
बुधजन कहत सुनहु खगराजा ❀ अयुत[4] सतावन बाजत बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँगलीन्हे ❀ अति आतुर गमना रिस कीन्हे ॥
चलत शकुन मग ताहि न होई ❀ गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला ❀ जियमहँ संशय करत विशाला ॥
कोलकूर्म अहिपति[5] अतिडरहीं ❀ पुनि पुनि रामचरण चित धरहीं ॥
समुझि रामबल संशय त्यागी ❀ सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी ॥
दोहा–नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ॥
दिग योजन दल रहेउ जब, सुनुमुनीशविज्ञान॥१७१॥
इहाँ कृपालु रमेश खरारी ❀ असित जलदसमसेन निहारी ॥
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू ❀ सचिव बोलि कह रघुकुलकेतू ॥

१ घोडा। २ हाथी। ३ सेना। ४ सत्तावनहजार। ५ शेषनाग।

सखा विलोकहु दक्षिण ओरा ❀ गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
उमा राम सब अन्तर्यामी ❀ चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
रामवचन सुनि दशमुख भ्राता ❀ कहहँसिगहि प्रभुपदजलजाता ॥
देव देव नहिं दल जलवाहा ❀ अहहिनरान्तक निशिचरनाहा ॥
विहवावल पुर वसत गुसांई ❀ पठवातेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूम्रकेतु चर संगा ❀ करत कुलाहल नाद उतंगा ॥

दो०-तेहिसँगगुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निसान॥
सेनसंग चतुरंग खल,डोलत विविधदिशान ॥१७२॥

यह प्रभावतेहि सुनि भगवाना ❀ विहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना ॥
पाइ राम रुख पवनकुमारा ❀ उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषण प्रभुपद शिरनाई ❀ धाये कहि जय जय रघुराई ॥
वात जात निशिचर समुदाई ❀ देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई ॥
कटकटाइ गरजे अति भारी ❀ देखेउ इमि आवत वनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता ❀ यह आवत धावतको भ्राता ॥
स्वर्ण शैल विकराल शरीरा ❀ गर्जत प्रलय जलद समवीरा ॥
तब नारान्तक सन कह दूता ❀ यहै पवनसुत वली अकूता ॥

दोहा-सिन्धुलाँघि लंकादहेसि, पुनिहतिअक्षकुमार ॥
कालनेमि कहँ मारिमग, लावा मेरु उपार ॥१७३॥

पुनि अहिरावणसह परिवारा ❀ पैठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई ❀ आवत अब तव ढिग सोइ धाई ॥
यहिकर भुजवल अहै अपारा ❀ सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढाइ सुधारेसि बाना ❀ तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपि डारा ❀ पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे ❀ शिघ्र रसातलगे गिरि जैसे ॥
पवनपूत वल लूम पसारा ❀ कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्णसम भयऊ ❀ विधिवश तेहिकर प्राण नगयऊ॥

१ हल्ला । २ रथारूढ, गजारूढ, अश्वारूढ, पदचर ।

दोहा-एकदण्ड अतिविकलखल,रहभूतल धुनि माथ॥
पुनिशठउठासँभारितनु, धायउधनुधरिहाथ॥१७४॥
छाँडेसि अगणित सायक कोपी ❀ क्षण इक कीश कटक गा तोपी ॥
रामप्रताप प्रभंजन जाया ❀ करगहि अरि शर तोरिबहाया॥
देखि पवनसुतकी प्रभुताई ❀ वर्षत सुमन विबुध झरिलाई ॥
जयजय पिंगलाक्ष सुरभाषा ❀ सुनि दशकन्धतनय मनमाषा॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई ❀ कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कहकलकीश जो कछुबल धरहू ❀ मोसन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहिं विबुधतोरि भुजजोरा ❀ निज उर सहु इकमुष्टिक मोरा ॥
लागत ठाढ रहै जो वानर ❀ तो जानहुँ तव भुजबल आगर ॥
सो०-हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोंकि उर॥
अतिसकोपमुसक्यात, क्षणकठाढसंमुखरहेउ ॥१३॥
तबतेहि कपिकहँ मुष्टिकमारा ❀ भयउ तडित समशब्दअपारा ॥
टरा न तहँते पग हनुमाना ❀ हृदय न निशिचरनेकुलजाना ॥
दुइ मुष्टिक तेइँ फेरि चलावा ❀ तब मारुतसुत कोप बढावा ॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा ❀ डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा॥
विकलताहि करि कपिअतिगाजे ❀ भे व्याकुल निशिचर बहुभाजे ॥
कोटिन निशिचर कपिकरगहहीं ❀ रामदूत कर कौतुक अहहीं ॥
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे ❀ देखि देव जय जयति पुकारे ॥
एकदंड गत निशिचर जागा ❀ बहुविधि समर करन सो लागा॥
छंद-लागेउकरनपुनिसमरबहुविधिनिजसुभटबहुफेरिकै
खलकोटिकोटि प्रचंड नायककपिहि रणमहँ घेरिकै॥
रणरंग रंजित वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जहीं ॥
गहि गहि विपुल दनुजाहिंपछारतउरविदारततर्जहीं॥
दोहा-सघनवाहिनीजलजवन,जिमिकरिकृतउतपात॥
रिपुन हनततिमिवायुसुत,विनुश्रमप्रमुदितगात१७५

—१ फारत । २ गर्जहिं । ३ हनुमान् । ४ तनु ।

करत समर आयउ तेहिठामा ❀ जहँ नित होत रहा संग्रामा ॥
लरत अकेल तहाँ हनुमाना ❀ धायउ वालितनय बलवाना ॥
ता पाछे कपि चमू अपारा ❀ चले कहत जय कृपा अगारा ॥
लीन्हे गिरिवर तरु पाषाना ❀ जहँ तहँ करन लगे मैदाना ॥
अंगद आइ पवनसुत पाहीं ❀ कहि जय रघुवर सनद्विजनाहा॥
दोऊ भट इकसँग करि हूहा ❀ हतनलगे अरिसेन समूहा ॥
देखत भालु कीश कृतमारी ❀ भागिचले निशिचर भयभारी ॥
देखि अनीनिज त्रसित बहूता ❀ भा अति कुपितदशाननपूता ॥
छं.-अतिकुपितभादशमुखसुवननिजभटनशपथादिवाइकै ॥
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जातकहहँपराइकै ॥
विधिदीनविविधअहारकपिदलखातकसनअघाइकै॥
विनु भालु कपिमहिकरहुपुनिहठधरहुतापसधाइकै॥
दोहा-सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय॥
लागे लरन सकोपसब, माया कपट कुभाय ॥१७६॥
मायाँतिमिर पसार अपारा ❀ अस्त्र शस्त्र बहु भाँति प्रहारा ॥
शक्ति शूलवर विशिखकराला ❀ डारहिं रज तरु शैल विशाला॥
गिरत ऋच्छ कपिलागत सायक ❀ उठहिंबहुरिकहि जयरघुनायक॥
निजदल विकल विलोकि खरारी ❀ सत्यसिंधु इकशर संचारी ॥
रिपु शर काटि तिमिरकर दूरी ❀ प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंगमहँ पुनि सो तीरा ❀ प्रविशेउ आइ सुनहु मुनि धीरा॥
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा ❀ गहिगिरितरुकहिजयजगदीशा॥
निशिचर अनी मध्यगे जवहीं ❀ दिये डारि गिरि रज तरु तवहीं॥
दोहा-मरे तमीचर कोटि भट, जानि निशा परिवेश ॥
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँअवधेश ॥१७७॥
अंगद हनुमदादि कपि भालू ❀ आये जहँ रघुवीर कृपालू ॥
प्रभुहिं विलोकि चरण शिरधरे ❀ भे श्रमरहित सकल सुखभरे ॥

१ युद्ध । २ कृपाके स्थान । ३ नरान्तक । ४ मायारूपी अन्धकार । ५ तूण । ६ मेरु । ७ वृक्ष । ८ निशाचर । ९ संध्याकाल ।

अतिआदर प्रभु किय सन्माना ❀ सब कहँ बैठन कह भगवाना ॥
पुनि रजाइ लै थलनिसिधाये ❀ छबि वारिधि प्रभुपद शिरनाये ॥
अंगद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुषमा गुणराशी ॥
दोउभटकर परशत प्रभु पाऊ ❀ देखि सुरन मन भा अतिचाऊ ॥
हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा ❀ पद गहि नित्त रहत नर भूपा ॥
हरि न सिहाहिं सुमनझरलाये ❀ निजनिज आश्रमअमरसिधाये ॥

दोहा-बन्धु सचिव सेनासहित, शोभित श्रीभगवान ॥
तुलसिदास ते धन्यनर, जे यह ध्यान लुभान॥१७८॥

उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहाँ दशकन्धनिकेता ॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई ❀ कुशल बूझि बैठेउ हर्षाई ॥
देखि नरान्तकके समुदाई ❀ दशमुखशठ सब शोच दुराई ॥
जेहि विधि हरि लावा जगमाता ❀ ताहि आदिकृतकृत विख्याता॥
कुम्भकर्ण घननाद निपाता ❀ कहि बिलखाअहिरावणघाता ॥
पितुमन मलिन नरान्तक देखा ❀ बोला खल उर गर्व विशेषा ॥
तजहु सकल संशय विबुधारी ❀ करिहहुँ प्रात समरअतिभारी ॥
चमूकीश विनु क्षिति करि ताता ❀ धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥

छं०धरि आनि तापस भ्रात दोउपरभात आरनलाइहौं॥
धरि धरिविपुलकपिभालुदीन निशाचरन अचवाइहौं ॥
भुजबलकहहुँनिजनाहिंबहुत करिरिपुनप्रकटदिखाइहौं
विनु श्रमहिं तातनको बधरलै तव चरणशिरनाइहौं१५

दोहा-सुनत बीसभुज सुतबचन, बार बार उर लाइ ॥
लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ ॥१७९॥

बिन्दुमती आदिक रनिवासू ❀ सब चलिगईं मँदोदरि पासू ॥
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी ❀ मयतनया करि आदर भारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरनी ❀ प्रभुयश ताहि सुनायउ वरनी ॥
देइ पतोहुन वास सुहावन ❀ आपुलगी सुमिरन जगपावन ॥

---

१ आज्ञा । २ रावण । ३ पृथ्वी ।

शयन करहुकहसुतहिनिशाचर ❀ उठा आपु मतिमन्द अघाकर ॥
गातेहि भवन कुटिल दशग्रीवा ❀ जहँ मयतनया सद्गुण सींवा ॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी ❀ पाइ सुअवसर गहि पगपानी ॥
पियसुनाय अतिकोमल वयना ❀ लगी कहन जलभरि युगनयना ॥
दोहा–नाथ निगमआगम विबुध, कहत प्रगटयहबात ॥
बुधजन सो जो आधहू, राखै सर्वस जात ॥ १८० ॥
तजहि न हठ शठ सर्वसखोवै ❀ यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै ॥
सो विचारि प्रभु परम सुजाना ❀ मोरवचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाँई ❀ अनुजभाँति मिलिये प्रभुजाई ॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई ❀ पुनि तुम गवनहु पुत्र लवाई ॥
प्रभुपद गहि माँगहु वरएहू ❀ पदपंकजरति विमल सनेहू ॥
प्रियावचन तेहि विषसम लागा ❀ सो गृहतजिगा अनत अभागा ॥
निजनारी कहि कटुअभिमानी ❀ कीन्हशयन निशिगइ बड़जानी ॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता ❀ जागे रघुवर त्रयजगत्राता ॥
दोहा–ऋच्छ कीश जगदीशपद, शीशनाइ रुखपाइ ॥
धरि गिरि तरु धावतभयउ, कहि जयजयरघुराइ १८१ ॥
कपि घेरा गढ यह सुनि काना ❀ रावणसुत लखिनिपटरिसाना ॥
साजि विपुलदल हनत निसाना ❀ गढते चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई ❀ विशिखवर्षिकपिदल विचलाई ॥
निकरे निशिचर गढते कैसे ❀ शलभ समूह शैलते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे ❀ कटकटाइ मति विक्रमगाजे ॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भँवाई ❀ रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचरफलबेलू ❀ केतिनदेत विदिशिदिशि मेलू ॥
इकदिशि इमि हरि कृत संग्रामा ❀ दिगदूजी अंगद बलधामा ॥
दोहा–निशिचर सेना उदधिसम, मन्दरइवदोउ कीश ॥
मथतदेखि जय रतन लगि, हँसे विबुध सुरईश ॥ १८२ ॥

१ निद्रा। २ कुबुद्धि। ३ भाईकीतरह। ४ रात्रिव्यतीत हुए। ५ टीडी। ६ मंदराचलपर्वत।

छं०—इमि निरखिपराक्रम करत कीश, आक्रोधपरमरजनीचरीश ॥
करि प्रलय कन्दते घोरशोर, धरकुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इकबार मार कर शर समूह, किय विकल अस्त्र हनिकीशजूह ॥
कोउ टेरत कपिपतिचितउचोट,कोउसुरतकरतनिजधामओट॥१६॥
बहु चले कन्दरा शैल ताक, कोउ दबकत इत उत पातझाक ॥
कोउ देत दुहाई लषण राम, कोउ कहत विधाता भयोवाम ॥
यहि बीच नरान्तक करप्रधान, तेहिधायगहेउयुवराजपान ॥
बहुभटलपटाने अंग संग, सब संग उठेउ अंगद उतंग ॥ १७ ॥
नभकीश कीन्ह कौतुक अभूत, रविमंडलपहुँचेउवालिपूत ॥
अँगमारे जारे तपनि आँच, पुनि आयउ जहँ संग्रामराच ॥
यह निरखि अपर यूथप पिशाच, तुर आइ गयउ सेना समाच ॥
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड, उरलागआने अतिकठिनदण्ड॥१८॥
महि परेउ तनयतारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड, होइ गिरेउ यूथपति सहसखंड ॥
सब चरित सुनेउ रविकुल दिनेश, कह जाहु वेगि अहिराज शेष ॥
चले नाइ माथ शंकर मनाइ, धनुबाँधि बाँधि विकराललाइ ॥
उर अंगदकर धरि सुमिरिराम,श्रमविगतभयउबलअतुलधाम॥१९॥

दोहा—विगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ॥
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिराकीशदलसाज१८३॥

सुनत टँकोर शरासन निशिचर ❀ बधिर भयेनहिंसुनतशब्दपर ॥
वर्षा विशिख कीन्ह अहिनाथा ❀ काटे पाणि पाँय बहुमाथा ॥
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे ❀ धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी ❀ यथा अकाल क्षुधारतकरणी ॥
इतकपि भालु विजय अभिलाषे ❀ उतहिं निशाचर जय हित राखे ॥
मारुतसुत अंगद बलवीरा ❀ समरबाँकुरे अति रणधीरा ॥

---

१ नरांतक । २ समूह । ३ लक्ष्मण ।

सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ ❀ भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ❀ प्रमुदित भटकायरहिय डरहीं ॥
छं०-कायरडरहिंप्रमुदितसुभटसब लरतहारिनमानहीं
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि फिरैं दुहुँ ओरजयतिबखानहीं
कौतुक बिलोकत विबुधगण विस्मय हरषउरआनहीं
रघुबीर सेननिपरसुमनझरिलायविनतीठानहीं॥२०॥
दो०-अति अद्भुत करणी करहिं, ऋच्छ कीशबलभूरि॥
करपद बिनुकर रजनिचर,तिनमुखडारहिंधूरि१८४॥
बहुतनिके शिर तोरिचलावहिं ❀ निजभुज बल रावणहिंजनावहिं॥
गये याम युग दिवस भवानी ❀ नारान्तक अधसेन सिरानी ॥
मरे निशाचर अमित निहारी ❀ रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ[1] जाई ❀ भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसैना ❀ पुनि शठगा जहँ राजिवनैना[2] ॥
गरजा मनहुँ मेघ समुदाई ❀ कहन लगा कटु वचन रिसाई ॥
होसि सजग निशिचर कुलद्रोही ❀ बन्धु वैर लगि मारहुँ तोहीं ॥
प्रभुकहँ कटुक कहत सुनिकाना ❀ कोपेउ जाम्बवन्त बलवाना ॥
दोहा-शूल एक तेहि छाँड़ेऊ, सो करगहि ऋच्छेश[3] ॥
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥१८५॥
लगत शूल सो मूर्च्छित भयऊ ❀ जाम्बवन्त तब करगहि लयऊ ॥
बार अमित महि माहँ पछारा ❀ बाँधि गाड़ि बारू[4] महँ डारा ॥
जागे सकल बली मुख ऋच्छा ❀ लगे करन रण निजनिजइच्छा ॥
जाम्बवन्त यह हृदय विचारा ❀ मरै नहीं यह खल मर्म मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी ॥
गहिपद संचारो[5] गढ माहा ❀ सपदि परा जहँ निशिचर नाहा[6]॥
दशो वदन हाहाकर धावा ❀ नारान्तकहि हृदय तब लावा ॥
निरखि निशाचर गण समुदाई ❀ गढकहँ गे सब संभ्रमधाई ॥

१ आकाश । २ कमलनयन-श्रीरघुनाथजी । ३ जाम्बवन्त । ४ मेरा । ५ फेंका । ६ रावण ।

दोहा-कपिगणसमय प्रदोषलखि, रामचरणधरिमाथ॥
ठाढभये सबतन चितै, दयादृष्टि रघुनाथ॥ १८६॥
बिनुश्रम कीन्हसबनि जगदीशा ❀ गये सुवास भालु अरु कीशा॥
रुचिरासन आसीन रमेशा ❀ ढिग वीरासन उरगनरेशा॥
अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा ❀ लाग पलोटन सुनहु अपरणा॥
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना ❀ जिनपर नित प्रसन्न भगवाना॥
वहाँ सुरारि सुतहिं पोढ़ाई ❀ बिलखहिं तासु नारि समुदाई॥
होत प्रभात नरांतक जागा ❀ पितु बिलोकि लज्जारसपागा॥
रथचढ़ि तुरत इकाकी धावा ❀ नभपथ समरपुहुमिमहँ आवा॥
कीशकटक यहमर्म नजाना ❀ होइ लोप कीन्हेसि झरिवाना॥
दोहा-धावहिं व्योमहिं भालु कपि, ताहि न हेरैंनैन॥
घायलहोइ होइगिरहिंमहि, भाषहिंआरतबैन १८७॥
बाण एक शत तड़ित समाना ❀ छाँडेसि शठ जहँ कृपानिधाना॥
लागत विपुल कीश मुरझाने ❀ बहुतक कायर देखि पराने॥
भागि सेतढिग एक अयाना ❀ टेरे फिरहिं न सुन हरियाना॥
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा ❀ कुमुद मयंद द्विविद बलसीवा॥
ये सब वीर हाँक दे धावहिं ❀ नभपथताहि न खोजत पावहिं॥
तब सब वीर एक मत ठाना ❀ लै गिरि तरु किय लंक पयाना॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा ❀ बैठे कपि पसारि लंगूरा॥
करते डारि देहिं पाषाना ❀ बहुत दनुज भे चूर्ण समाना॥
छंद-भे चूर्ण निशिचर यूथ, गै निशिचरी भय गूथ॥
मुख बीन आरत दीन्ह, भइ भवन रावण लीन्ह॥
सुनि बोलि भट दशभाल, कहखाहुकीशकराल॥
करि यत्न भागहिं कीश, अस कहेउ वच दशशीश॥
मम लहहु आयसु छोर, सोइ जानिहों रिपु मोर॥
सो शूर मोकहँ प्यार, जो खाय मर्कट धार॥ २२॥

१ संध्याकाल। २ विराजमान्। ३ लक्ष्मणजी। ४ संग्रामभूमि। ५ अदृश्य।
६ आकाश। ७ पूँछ। ८ पत्थर। ९ बन्दर।

दोहा-ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ॥
रावण पावन राखि शिर, धाये करि रवघोर॥१८८॥
देखि लँगूर सकल हरषाने ❋ मधुमाखीसम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा ❋ डारे सबनि पटकि कर दापा ॥
काचे घटसम दनुज बिदारी ❋ जयतिराम जय लषणखरारी ॥
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा ❋ भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥
अति विशालगहि कंचनखंभा ❋ जिमि प्रयासबिनुकरु आरम्भा॥
ले ढाहत अपक्क घट जूहा ❋ कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा॥
पुनि विचार करि हरिभट धाये ❋ निशिचरनिकरमध्यचलिआये॥
करि कोटिन बिनु नासा काना ❋ करपद हीन कीन्ह रिपुनाना ॥
छं.-रिपुकीन्हकरपदहीनअगणितदीनवचनपुकारहीं ॥
गढतेनिकर निशिचरअखिलखलविपिनबाटसिधारहीं
पीपरपरणसम धरणि लंका कम्प षट कीशनि करा॥
तोरेकपाटनिपाटि अरितियकेशखैंचतगहिकरा२३॥
दोहा-भयउ कुलाहललंकअति,नारान्तक सुनिकान॥
नभतेस्यन्दनसहितशठ,प्रकटि परमरिसियान१८९
निरखि दशा निज नारिन केरी ❋ कहन लागु कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई ❋ लरत तियन सँग लाज न आई ॥
अबलनपै बल भट न कराहीं ❋ छाँड़हु तियनँ लरहु ममपाहीं॥
सुनि मरकटनि भयउ सुखभारी ❋ तजी निशाचरि दीन पुकारी ॥
भाजि भवनभययुत गईं नारी ❋ लीन्ह कपिन करशिला उपारी॥
शिलप्रहार हयँ स्यन्दन भंजा ❋ आयुध तोरि सारथी गंजा ॥
धरि पछारि रावण दृग देखा ❋ कौतुक कीशनि कीन्ह विशेषा ॥
लागे पद गहि खलन फिरावन ❋ नाचहिं गाइ राम यश पावन ॥
दोहा-तोरत तिनतनुपटकिमहि,कहतजयति रघुवीर॥

१ चलो। २ शब्द। ३ बाल। ४ खिन। ५ वानरोंको। ६ घोडे। ७ रथ। ८ हथियार। ९ रथ हाँकनेवालेको।

करत युद्धगत याम युग, कीश छहौं रणधीर ॥१९०॥
अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❀ वन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी ❀ पदधरि शिरसुखलहेउ विशेषी ॥
राम सबनि सादर सन्माना ❀ को दयालु रघुवीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना ❀ आयसु पाइ भये श्रमहीना ॥
भये विगत श्रम वानर भालू ❀ अनुजसहित मनमुदितकृपालू ॥
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक ❀ गावत जन गुण सब गुणदायक ॥
याम तीनि यामिनि गत जबहीं ❀ उत नारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच विवश मींजत दोउ हाथा ❀ लज्जित हृदय निशाचरनाथा ॥

छं-लाजकै रथै सँभारि वाजिं साजि रुष्ट पुष्ट ॥
शंक छाँड़ि शस्त्र माँड़ि गाढ़ वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निसान गान काडकैत कर्त ॥
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त ॥ २४॥
जीव आश त्राश नाश बाजि मोह छण्ड छण्ड ॥
बंक शूर शंक दूर वीरता सपूर चण्ड ॥
बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ॥
धूरि पूरि मेघ बोध शोध ना परौ अपान ॥ २५ ॥
कूदि कूदि व्योम पन्थ जाय आइ जाइ भूमि ॥
अस्त्र शस्त्र काढि काढि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥२६॥

दोहा-प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनीतमीचँरचण्ड ॥
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये वरबण्ड ॥१९१॥

छं०-निहारि हर्ष कीश ऋच्छ फूलि फूलिशैलभे॥
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारकै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ॥
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू ॥ २७ ॥

---

१ रात्रि । २ अश्व । ३ आकाशमार्ग । ४ राक्षसी । ५ पर्वत ।

रदीहरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू ॥
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥
हलै धरा बलै विचारि भार धारि को सकै ॥
सुनै पुकारि जयति राम शत्रुसे नहीं थकै ॥
लँगूर शूलसे अकाश भीत उच्च औचटयो ॥
गिरे पयोदे पौनते झपेट भेटते कटयो ॥ २८ ॥

सो०-शब्दकरतअतिघोर, इमिपहुँच्योदलभालुकपि॥
आयुध झरि अतिजोर, परै लागिघनप्रलयसम॥१४॥

सजगहोन कपि भालुनपाये ❋ अतिशय निकट तमीचर आये ॥
असित निशाचर अतिअँधियारी ❋ तापर करैं शत्रुकै मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे ❋ जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सन्मुख कोउ न करत लराई ❋ कपिन मारि रणभूमि सुवाई ॥
गे अनेक भजि सिंधु समीपा ❋ सेन विकललखि रघुकुलदीपा ॥
सजि शारंग तजा इकबाना ❋ भा प्रकाश दिग तरणि समाना ॥
लखि तम विगत भालु कपि हरषे ❋ कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥
भिरे एकसन एक प्रचारी ❋ लागे करन कठिन हठ भारी ॥

दोहा-शीश शिलातरु करन धरि, काँखनभरिभरिधूरि॥
गर्जे भालु बली वदन, धाय धाय नभ दूरि ॥ ११२ ॥

डारहिं गिरितरुनिशिचरशीशा ❋ दधिघट सम फोरहिं भट कीशा॥
चढहिं अनेक कन्धपर जाई ❋ काटहिं कान दृगनिरँज नाई ॥
तोरहिं शूलै चापै नाराचा ❋ अरिदल अस्त्र न एको वाचा ॥
शस्त्रहीन रिपुसेन पराई ❋ देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवनि अतिलूम लफाई ❋ अति उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे ❋ पक्षहीन नभते खग जैसे ॥

१ पृथ्वी । २ बादल । ३ वायु । ४ राक्षस । ५ काले । ६ धनुष । ७ श्रीसूर्यनारायण । ८ अँधियारा । ९ रीछ । १० बंदर । ११ पुकारकर । १२ आकाश । १३ नेत्र । १४ धूरि १५ बरछी । १६ शरासन । १७ बाण । १८ पृथ्वी । १९ ऊंची । २० पक्षी ।

गिरत कीशगहि चरणफिरावहिं ❀ पटकि भूमिगाड़हिं बिहँसावहिं ॥
तुम्बारि सम अगणित भुजतोरत ❀ अगणित रुण्ड सिंधुमहँ बोरत॥
दोहा-कोटि बयालिस तमीचर,नारान्तक कर घात ॥
रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात ॥१९३॥
प्रभु तुणीर महँ हरि शर जबहीं ❀ प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं॥
देखि कटकनिज परमविहाला ❀ नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये सँग वीरा ❀ वर्षत शक्ति उपलै गण तीरा ॥
शर अस्तंभन विपुल पनारे ❀ भये अचल कपिटरहिं न टारे ॥
लैलै पाश निशाचर धाई ❀ बांधत जिमि चुंगलि शुकपाई ॥
व्याधि पींजरा सम बहुजाना ❀ भरे जान प्रति अयुत प्रमाना ॥
जे कपि लखैं विपुल बल बंका ❀ ते मूर्च्छित फेकैं गढ लंका ॥
रावण देखि तनयकी करणी ❀ बन्दीजन जिमि भुजबल बरणी॥
दोहा-हरि इच्छा जानै न कस, सुतहिं सराहत मूढ ॥
कालविवशमतिसंभ्रमित,सुनहुऋषयबुधिगूढ१९४॥
अंगद हनूमान जब जागे ❀ नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षण इक कीश न पायउ लरई ❀ पुनि शर हति मूर्च्छावश करई॥
याम युगल तेहिकर वरदाना ❀ राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
रिपुहि खिलावत रघुकुलकेतू ❀ पालक बुधि वाणी श्रुति सेतू ॥
सो युगयाम गये जब बीती ❀ तब रघुवीर सजी जयरीती ॥
हाँक देइ कपि भालु जगाये ❀ भये विगत मूर्च्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे ❀ राम लषण चरणन अनुरागे ॥
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा ❀ तब हँसि बोले श्रीजगदीशा ॥
सो०-विधि वाचा लगि आज, तात तुमहिं मूर्च्छा भई ॥
पुनि कहि प्रभुरघुराज, अबश्रमस्वप्नेहुँअनतनहिं॥१५॥
तुमहि सुमिरि अंगद हनुमाना ❀ जितिहैं जगत मनुज रणनाना॥
असवर जबहिं रमापति भाषा ❀ सुनत गिरा हरषे मृगशाखा ॥

१ मारकर २ निषंगधनुष । ३सूर्य । ४पत्थर । ५ वधिक । ६ सुत । ७वाणी । ८ बन्दर ।

कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा ❋ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा ॥
तात तुरत तुम उभयसिधावहु ❋ लंक गये कपि तिन्हें छुटावहु ॥
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला ❋ सुमिरि कोशलाधीश कृपाला ॥
सपदि कीश गढ पर चढिगये ❋ देखि लंक महँ खरभर भये ॥
सकल कपिनकै मूर्च्छा बीती ❋ तोरि पाश भजि राम सप्रीती ॥
वायुसूनु युवराज निहारी ❋ हरषे कहि जय जयति खरारी ॥
दोहा-मेषं बरूथहि पाइ जिमि,वृकगण करहिं सँहार ॥
तिमिमर्दहिंदनुजनसुभट, कीशभालुबरियार॥१९५॥
यामं एक वासर अवशेषा ❋ कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा ❋ देखिय पदपाथोज अनूपा ॥
अंगदवचन पवनसुत भाये ❋ सपदिसहित दल प्रभुपहँआये ॥
निशिचरकोटि नरान्तक संगा ❋ करतरहे बहु विधि रणरंगा ॥
माया करि निजगति बचावहिं ❋ जहँ तहँ खलरावणयश गावहिं॥
अदितिनन्द लखि तिनकर माया ❋ सभय भये जाना रघुराया ॥
दीननाथ अनुजहिं अनुशासन ❋ उठे नमित गहि विशिखशरासन॥
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षण एका ❋ तैं कीन्हे रण खेल अनेका ॥
छं०-तैं कीन्ह खेलअनेकविधिअवतिष्ठखलरणभूथला
इमि कहि अहीश चढाइधनुशर करननिशिचरदलमला
निज अनी निरखि निदानहरिहर सुवनधावारिसिभरा॥
डारत अनेक नरांच प्रभु पर शिलातरु वर भूधरा॥२९॥
रघुवीर अनुज प्रवीणखलबलदलनश्रुतियशगावहीं ॥
तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहिबाणलषणचलावहीं॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं॥
सुरगण प्रफुल्लितसुमनझरिकरिजयतिलषणपुकारहीं॥
दोहा-मायापतिके अनुज सन, माया करत अयान ॥

१ शीघ्र । २ हनुमान । ३ अंगद । ४ भेड़ोंकेझुण्ड । ५ भेड़हा । ६ निशाचरों । ७ पहर । ८ दिन । ९ चरणकमल । १० सुग्रीव । ११ लक्ष्मणजी । १२ आज्ञा । १३ बाण । १४ धनुष । १५ शर । १६ पहाड़।

लगत न एको जानि जिय,तबखल निकट तुलान ११६
हना लषणउर पैविसमसायक[1] ❁ लगतगिरे रणमहि अहिनायक[4]॥
पुनिखलदलभा प्रबल अपारा ❁ भक्षणलाग भालुकपिधारा[5] ॥
चले पराय कीश भय भीता ❁ अब न बचब करि काल प्रतीता॥
निशिचर धारि भालुकपिवेषा ❁ लागे खान कपिन अस देखा ॥
कपि डर कीश भालु डर ऋक्षा ❁ आपु आपु भय मिलन अनिक्षा॥
कोउ न काहु निकट नियराई ❁ जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई॥
पुनि शठसाधि विभीषणरूपा ❁ गहि अंगद हनुमत कपिभूपा॥
काहु न यह माया कछु जानी ❁ कपट मिलाप विभीषण ठानी॥
दोहा-तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेनविनाश ॥
अहिरावणछलपवनसुत, समुझत उड़ाअकाश ११७॥
गरजेउ जाय भयंकर भारी ❁ फटेउ हृदय सुनि निशिचरझारी॥
मायाहृत शर लषण पवारा ❁ उघरे कपटकपाट अपारा॥
नारान्तककै माया बीती ❁ गयउ यज्ञशाला अतिप्रीती॥
खोजिसि सब सामग्री ताकी ❁ कीन्हअरम्भविजयनिजताकी॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना ❁ पशु समूह बलि कारण आना॥
भये निशामुख श्रम वश सैना ❁ फिरे सुमिरि सब राजिवनैना[6]॥
तुरत अहीश रामपहँ आये ❁ सहित अनी प्रभु पद शिर नाये॥
कृपाअयन निरखे मृगशाखा ❁ प्रभु श्रम छीनदीन अभिलाषा॥
दोहा-टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ
पाय सु आयसु भालु कपि,चलेसुमिरिगुणगाथ ११८॥
तब रघुराज अनुज उरलावा ❁ निज आसन समीप बैठावा॥
मघवासुत सुत अरु हनुमाना ❁ इनसम भाग्यवंत नहिं आना॥
अमलाम्बुज पदगहि निजपानी ❁ परशे सबनि सनेह भवानी॥
जाम्बवन्त लंकेश हरीशा[7] ❁ प्रभुसमीप सब मुदित मुनीशा॥
अनुज सखा नारान्तक करणी ❁ युद्धप्रबलता बहु विधि वरणी॥

१ माया। २ वज्र। ३। बाण।४ श्रीलक्ष्मणजी। ५ यूथके यूथ। ६ कमलनेत्रश्रीरामचंद्रजी। ७ सुग्रीव।

शिवप्रताप तेहि अमितप्रतापा ❀ मरण न दीन्हे दुहुसन्तापा ॥
सुने वचन रघुपति मुसकाने ❀ अति सनेह हरचरित वखाने ॥
सुनहु सकल हम शम्भुनआना ❀ जिनहिं भेदते वश अज्ञाना ॥
दोहा-जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानहु ममप्रीय॥
शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिं सो शंभु अतीय॥
चारि पदारथ करतल ताके ❀ वसहिं महेश उमा उर जाके ॥
जो मम प्रण शिव सदानिवाहा ❀ सो जय देव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जय विजय विभूती ❀ शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना ❀ जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
कह आश्चर्य नरान्तक एहा ❀ मोपर गिरिपति परम सनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक साथा ❀ कपट त्यागि नावहु सब माथा॥
होइहि विजय धीर मन धरहू ❀ वेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शंभुउपासन कर मम दासा ❀ तात हृदय धरि दृढ विश्वासा॥
दोहा-जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ॥
शिवासमेत गिरीशपद,निशिदिन रहु मनलाइ॥२००॥
मन क्रम वचन शम्भुपदआशा ❀ करहिं ताहि उर सब गुणवासा॥
निर्भय करि जो हरपद नेहू ❀ ता उर रमासहित मम गेहू ॥
भववारिधि लाँघहिं विनु खेवहिं ❀ यहाविच॥रिबुध जन भव सेवहिं॥
भवभंजन यह हित उपदेशा ❀ अनुजहि सखहि बुझाव रमेशा॥
ध्रुववाणी सुनि अति सुख पावा ❀ अहिपति रामचरण शिरनावा॥
अंगद हनूमान नल नीला ❀ कपिपति अरु ऋक्षेशसुशीला॥
सहित विभीषण राजन साता ❀ सुन श्रीमुख हरयशविख्याता॥
रामहिं शिवहिं एक जे जाने ❀ भयतजि नाम जपत हरषाने॥
दोहा--कहत सुनतइतिहास शुचि,निशिबीतीयुगयाम॥
खगपति आगम देवऋषि, जित शोभितश्रीराम२०१
राम लषण सुखसीव विराजे ❀ मार अपार निहारत लाजे ॥

१ अपरिमान । २ दुःख । ३ हाथ । ४ हृदय । ५ संसारसागर । ६ काम ।

निरखि मानि मुनिहृदयसनाथा ❋ उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा ❋ आशिष पाइ हर्षि हित कीन्हा ॥
मुनि नीके हरिरूप विलोका ❋ यथा इन्दु लखि सुखलह कोका ॥
पुलकि गात तब कह ऋषिराजा ❋ सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा ॥
चतुराँनन पठवा मोहिं स्वामी ❋ यदपि कृपानिधि अन्तर्यामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना ❋ विभव विरंचि करिय परिमाना ॥
जबलगि होन प्रभात न पावहि ❋ तबलगि हरिहरसुत लैआवहि ॥

दोहा-जपतनिरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान ॥
विधि वर हित इतआनिये, तेहिकहँकृपानिधान २०२

नारान्तकवध है तेहि हाथा ❋ दधिबल नाम भक्त तव नाथा ॥
नाथ बहुत यहि खलहि खिलावा ❋ रण विलोकि देवन दुखपावा ॥
अब रघुवीर करहु सोइ बाता ❋ विनु प्रयास रिपु मरइप्रभाता ॥
तेइँ सन तुमहिं न सोह लराई ❋ दधिबल सम्मुख करहु बुलाई ॥
सविनय नाइ शीश वर भाषी ❋ गवने मुनि प्रभु छवि उरराखी ॥
नारद गये जबहिं विधि लोका ❋ वायुतनयतन राम विलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ ❋ वारिधिमहँ धौरागिरि जहवाँ ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❋ बहुत दिवस चलिगये सुभाये ॥

दोहा-अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिगजाइ ॥
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु वेगि बुलाइ ॥ २०३॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन ❋ चले वन्दिपद हरषि उदासन ॥
वेगवन्त धावा कपि कैसे ❋ वर नराच दधिसुतसे तैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा ❋ पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
देखि तरणिसम तासु प्रकाशा ❋ ठाढ भयउ कपि मंदिरपासा ॥
दण्ड युगल कपि इच्छित रहेऊ ❋ हियमहँ राम राम अस कहेऊ ॥
उत रण होई होत प्रभाता ❋ इत इनकर चित हरिपद राता ॥
क्षण इक कपि मन कीन्ह विचारा ❋ प्रभुपहँ चलिये कवन प्रकारा ॥

१ चन्द्रमा। २ कमल। ३ ब्रह्मा। ४ दधिबल। ५ श्रम-यत्न। ६ हनुमान्।

जो गृहसहित चलहुँ लै येही ❀ नहिं अस आयसु भक्त सनेही ॥
दोहा-बुध जन शीश शिरोरतन, अतिलजातमुनिराउ॥
ताहि जगावन हेत तब, कीन्हे अमित उपाउ ॥२०४॥
अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना ❀ तजि प्रवीणता भजि भगवाना ॥
रामचरण चित कपि वरदयऊ ❀ दण्ड एक औरो चलिगयऊ ॥
विधिप्रेरित दधिबल लघु शंका ❀ करन उठेउ देखा भटवंक ॥
जयश्रीराम वायुसुत बोला ❀ सुनिदधिबलनिजलोचनखोला ॥
बूझि हरिहि कीशहि उरलाई ❀ कही परस्पर दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुन भ्राता ❀ चलहु विलोकन त्रिभुवनत्राता॥
सानुज नाथ सुखद पद कंजा ❀ जिनमकरन्द शिला अघगंजा ॥
जेहि लगि तप कीन्हेउ बहुकाला ❀ सो तुमपर अनुकूल कृपाला ॥
दोहा-धूरजटी हृदमानसर, वसत हंस इव जोइ ॥
सादर तुमकहँलेन लगि, पठवा मोहिं प्रभुसोइ ॥२०५॥
सुनि शुभ वचन सुकंठ कुमारा ❀ हरिपहँहरिसँग तुरतसिधारा ॥
आये नाथ निकट मृगशाखा ❀ देखे पद जे हर हियराखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता ❀ दधिबल निरखेउकृपानिकेता ॥
सानुज हर्षि मिले सुखकंजा ❀ तासुपाणिगहि निजकरकंजा ॥
बैठे ताहि निकट बैठावा ❀ तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा ॥
निरखितनय कपिपतिहरषाना ❀ मिलत प्रेमनहिं जायबखाना ॥
गइमणि पन्नग जनु पुनि पाई ❀ देही देह मीन जलजाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेंटे ❀ अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥
सो०-दधिबल वालिकुमार, मिले परस्पर हर्षिहिय ॥
भयउ आइभिनुसार, न्हाइ सबनिप्रभुपद गहे ॥१६॥
जहँ तहँ समर करन वनचारी ❀ चले कहत जय लषण खरारी ॥
वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा ❀ रथ चढि चलेउ भयंकर योधा ॥
निशिचर अनी सुभटसँगताके ❀ आयुध अखिल भयानक वाके॥

१ आँखें। २ आपसमें। ३ मसन्न। ४ सुग्रीवकुमार। ५ सर्प।

महि संग्राम निशाचर ठाढे ❀ असितमेघसम अति रिसबाढे ॥
करि माया तेहँ गात छिपावा ❀ भयउ प्रगट जब प्रभुढिग आवा॥
दधिबल लखा सखा चलिआयउ ❀ भुजापसारि हर्षि उठि धायउ ॥
नारान्तकहु दीख गुरु भाई ❀ मुदित मिले उर उभय अघाई ॥
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❀ निज निज दशा कीनविख्याता ॥
दो०-हरिपतिपूतप्रवीणअति, सुनितेहिसुखविख्यात ॥
लगे बुझावन मित्र कहँ,सुनहु बीयपति बात ॥ २०६ ॥
वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं ❀ फल पियूष विष बेलि न लहहीं ॥
समुझहु तात विचारि निदाना ❀ किये अनीति न जग कल्याना ॥
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं ❀ रामविरोध कतहुँ जय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे ❀ कूप धसत विकबाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिनचारि लड़ाई ❀ जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ❀ कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभुपदपरशी ❀ करिहैं अभय तोहिं समदरशी ॥
मानहु शीख मोरि सुखकारी ❀ प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥
दोहा-शारंगी शर तरणि सम, दशमुख वपु खग लेख ॥
जरत राखु यहि समय तुव, करिविज्ञानविशेष॥ २०७॥
सुनत वचन गुरु भ्राता केरा ❀ नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभाँती ❀ सहज सभीत कीश दिन राती ॥
वालिहि हतेउ जौन तपधारी ❀ भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिबल यह वानर कुलरीती ❀ हमरे करहिं न अरिसन प्रीती ॥
यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा ❀ दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ वानर ❀ तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
छाँडहुँ मूढ समुझि गुरुभाई ❀ कहि अस पेलि चला कठिनाई ॥
तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ ❀ सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥
दोहा-नारान्तक दधिबलभिरे,निरखि भालुअरु कीश॥
लगेलरनसँगनिशिचरन, कहिजयश्रीजगदीश ॥ २०८॥

छंद-कपि शूरसँहारे शिलनिमारि, बहुमर्दिकरे शिकतापहारि ॥
भट विहवावलवासी जितेक, कपि मारिगिराये बच नएक ॥
रहे एकाकी मनुजादवीर, किय द्वन्द्व युद्ध उरगादधीर ॥
दोउ लरतलहैं छबिएकभाँति, गिरि कज्जलकंचनउभयगाति ॥
युग घटिका ऊपर एक याम, दोउभिरे समर बलयोगधाम ॥
पुनिभा अलक्ष सोकरत युद्ध, बलवन्त उभय श्रमगतसक्रुद्ध ॥
कह षट प्रकार श्रुतियुद्धरीति, सुखमानेउसुरदेखतसुप्रीति ॥
लखि पुत्रइकाकीपुलकिगात, कहवालिअनुजअतिहर्षवात ॥ ३३ ॥

दोहा-जाम्बवन्तसनवचन मृदु, कहेउ सुकण्ठ पुकारि ॥
कहहुतातदधिबलकबहिं, दनुजहिडारिहिमारि ॥ २०९ ॥

समर करत लागी अति वारा ❀ यह सुनि बोलेउ ऋक्षभुवारा ॥
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा ❀ दधिबल गुरुसन लही अशीशा ॥
सो अवसर अब आय तुलाना ❀ एक पलकमहँ मारिहि अयाना ॥
सुनि हरीश मनमहँ अतिहरषे ❀ तबहीं विबुध सुमन बहु बरषे ॥
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा ❀ रणकौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिअस्तुति सुनि हरिअरिकोपा ❀ कपिहिसहितखलभयउअलोपा ॥
योजन अयुतअष्ट[1] नभ जाई ❀ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई ॥
गहि मनुजाद भूमिपर डारा ❀ करि चिकार तेहि मरती वारा ॥

छं-मरती समयअतिशब्दकरि दशमुखतनयहरिहरिकही
तजिअधमतनुधरि सुभगवपुद्विजनाथसुनिसोगतिलही
जेहिहेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भाँति जप तपमखकिये ॥
श्रीरामकरुणासिन्धुसोफलसहजहिंदनुजैदिये ॥ ३४ ॥

दोहा-देखि तासु गतिविबुध गण, अभयभये खगराइ ॥
प्रमुदित बरषे पुहुप[2] झरि, रामचरण चितलाइ ॥ २१० ॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❀ तोरि तासु शिर गहि निजपानी ॥
रुण्ड तासु गहि लंक सचारी ❀ आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥

१ आठसहस्र । २ पुष्प ।

निशाप्रवेश भूत वैताला ❀ चढि चढि वाहन वेषकराला ॥
जाइ समर महि सुखद समेता ❀ उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा ❀ देखि हर्षि उठि रमानिवासा ॥
सानुज राम मिले अतिप्रीती ❀ परमप्रसाद नाथ नितरीती ॥
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई ❀ सखासुताहि निज ढिग बैठाई ॥
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं ❀ नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं ॥

दोहा-राम रजायसु पाय पुनि, होइ विगत श्रमकीश ॥
तब दधिबल प्रभुचरणगहि, आगेधरि अरिशीश ॥२११॥

समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा ❀ सुनहु सुकण्ठ कहा जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु ❀ यतनसमेत न सेत चलावहु ॥
नाथ रजाय पाय कपिराई ❀ राखेउ सो शिर यतन कराई ॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई ❀ श्रीपति श्रीमुख बहुविधिगाई ॥
जासु बड़ाई किय बड़ईशा ❀ सबहि सराहत सो जगदीशा ॥
दधिबलप्रभु अनुकूल विलोकी ❀ सफलजन्मलखिभयउविशोकी ॥
प्रेमवारि लोचन कर जोरी ❀ बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी ॥
जगदात्मा तुम्हार यह बाना ❀ संततत करहु दीनसनमाना ॥

दोहा-वनचर पाँवर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान ॥
विरदस्वभाव कृपालुप्रभु, सेवकसुयशबखान ॥२१२॥

तव यश विमलविदितअवधेशा ❀ कहत न पार पाव श्रुति शेषा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे ❀ पर्णवणिक गजमणिगुण जैसे ॥
असकहि हरहरिपद लपटाने ❀ देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना ❀ दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
माँगु वत्स जो वर मन भावा ❀ सुनिदधिबलकरिविनयसुनावा ॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा ❀ करहिं निरन्तर मम उरधामा ॥
होइ मुहिं प्रिय पदपंकज कैसे ❀ कामहिं वामा सूमहिं धन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू ❀ मम इच्छा कछु औरौ लेहू ॥

१ स्थान । २ अनुशासन । ३ सदैव । ४ वेद । ५ शेषनाग । ६ स्त्री । ७ लोभी ।

सो०-विहवावलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ॥
छाँड़िऔर सब काज, शिवाशम्भुपदभक्तिदृढ ॥२१३॥
यहे काज शुभ संतत चहई ❀ जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई ॥
उमा राम कर यहे स्वभाऊ ❀ जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
मोहिं निजरूप रमापति जाने ❀ ताते बारम्बार बखाने ॥
जानेउ श्रीरघुवर स्वभाव जिन ❀ सब तजि प्रेमभक्ति माँगी तिन ॥
रामभक्तिवारीश जासु उर ❀ महिमा तासु कहत श्रुतिबुधवर॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये ❀ सहजहिं आवत विनहिं बुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिख दे रघुनाथा ❀ मुनिप्रभुकीन्ह तिलकनिजहाथा॥
सारंगी रुख सबही पावा ❀ अंगदादि ताकहँ शिरनावा ॥
दोहा-पाइ भक्ति वर राज्य वर, प्रभु चरणन शिरनाइ ॥
दधिबलपठयउतुरतहठ, सुनहुऋपथमनलाइ ॥२१४॥
तन मन राम चरण अनुरागे ❀ दधिबल राज्य करत भयत्यागे॥
सेनसहित श्रीराजिवनयना ❀ राजत देखि विबुध चितचयना ॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा ❀ पुहुपमाल झरि करत अपारा ॥
करि अस्तुतिवर विनय पुकारे ❀ अदितिसुवन निजगेह सिधारे ॥
उतहिं जहाँ बैठा दशभाला ❀ गिरु शिर वपु सो परा विशाला॥
देखि विकल आपे उठि धावा ❀ पहिंचानत तेहि अति दुखपावा॥
हा नारांतक कहि खल परा ❀ भहा खभार लंकगढ भरा ॥
दोहा-बिन्दुमती आदिक सकल, नारान्तककी नारि ॥
व्याकुलमहिलोटहिंपरी, निजनिजदशाबिसारि॥२१५॥
मयतनयाआदिक निशिचरीं ❀ शोकसमाज विषादहिं भरीं ॥
करि विलाप जिमिनिशिचरनारी ❀ सो न जात कहिसुन नभचारी ॥
शोक जलधि लंका लघुतरणी ❀ चढीं सकल निशिचरकीघरणी ॥
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा ❀ कहत मँदोदरि तब सब पाहा ॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई ❀ नागसुताकी कथा सुनाई ॥

---

१ समुद्र । २ दुःख । ३ नाव । ४ स्त्री । ५ सुलोचना ।

सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी ❀ धारि धीर नारान्तकघरणी ॥
सवनि बुझाय सासुपग लागी ❀ तजि धन धाम स्वामिअनुरागी ॥
मातु करहु सो यतन उतावलु ❀ मिलहुँ जाइजेहिपदनिजरावलु ॥
सुन सुतवधू न आन उपाऊ ❀ जाउ जहाँ राजैत रघुराऊ ॥
दोहा-जेहिविधिगईसुलोचना, तेहिगतितुमभयत्यागि
निरखहुरघुपतिपदकमल,लावहुपतिशिरमाँगि॥२१६॥
सासुवचन सुनि जानि प्रभाता ❀ उठिनिशिचरतियपुलकितगाता॥
जातरूपमय यान सँगाई ❀ निज कर गहि पति देह चढाई॥
चली अकेलि यान चढि जवहीं ❀ तासु सवति इक आई तवहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू ❀ गुण गण सुभग वसैं तनु जासू ॥
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा ❀ कीन्ह पयान रँगी सतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा ❀ कायर डरपे हृदय विशेषा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोऊ ❀ नल अरु नील सुभट वर दोऊ ॥
आये धाय सपदि तब आगे ❀ युगल नारि तनु निरखनलागे ॥
दोहा-समुझि बूझिवृत्तान्त दोउ,फिरि आये प्रभुपास॥
वन्दि कंजपद उभय कह,सुनिये रमानिवास॥२१७॥
नाथ नरान्तककी दोउ नारी ❀ आवत शरण प्रणत भयहारी ॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने ❀ उतहि टिकावहु सखा सयाने ॥
सुनि प्रभुवचन बहुरिसो धाये ❀ कटक विगत रथ दूरि टिकाये ॥
विन्दुमती चितरेखा दूनो ❀ विनय हमारि कीश अस सूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई ❀ केहि कारण हम दरश न पाई ॥
हम अवला कपि विनवें तोहीं ❀ बूझि नाथसन कहिये मोहीं ॥
नारिविनय सुनि कपिदोउ भले ❀ नीति विचारि राम पहँ चले ॥
विनती नारि जाय नल वरणी ❀ सुनि विहँसे प्रभु तिनकी करणी॥
दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध वेद ॥
ताकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश सो भेद॥२१८॥

१ घर। २ स्वामी। ३ शोभित। ४ रथ। ५ व्यवस्था। ६ नम्र।

प्रेमपरीक्षा हित रघुनायक ❀ कौतुक करतसमर सुखदायक॥
नाथ सखा तब बहुरि बुझाई ❀ पुनि नल नारिन पास पठाई॥
कह कपि सुनहु नरान्तकनारी ❀ दरशन तुमहिं न देत खरारी॥
तुम गृह जाहु वचन मम मानी ❀ बोली सो तिय वचन सयानी॥
हम अबला दरशनहित आईं ❀ नयनसफलबिनुकिमिगृह जाईं॥
यहि विधि करतविनयदोउनारी ❀ कीशन कटक कीन पैसारी॥
आवत निकट जानि रिपुरवनी ❀ यद्यपि पतिव्रतहैं सुखभवनी॥
तदपि नाथ तेहि दरश न देहीं ❀ जाइ निकट विनती कीतेहीं॥
दोहा-प्रभु सीतापति जगतपति, सुर नरपति रघुनाथ॥
देउ दरशकरुणायतन, दीनबन्धु श्रुतिमाथ॥ २१९॥
बोले राम न सो तिय बोली ❀ विमलज्ञान पतिव्रत अनुडोली॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै ❀ पुरुष न परतिय स्वप्नेहुँ जानै॥
प्राकृत पुरुषनकी यह रीती ❀ जिनके हृदय कपट पर प्रीती॥
समदरशी कछु दोष न स्वामी ❀ सो विचारु प्रभु अन्तर्यामी॥
आरतबन्धु विलम्ब न कीजै ❀ करुणाकर वर दरशन दीजै॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहईं ❀ तव यश अस श्रुतिगावतअहईं॥
गौतमनारि राम तुम तारी ❀ अधम जाति भिलनी निस्तारी॥
सुनि मम हृदय परी परतीती ❀ अब प्रभु कस देखिय विपरीती॥
दोहा-तारि तारि अधमनि अमित, बार बारश्रमजान॥
तातें करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान॥ २२०॥
प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं ❀ ताकर प्रेमपरीक्षा लेहीं॥
विकल उभय नारान्तकबाला ❀ बार बार करि विनयविशाला॥
धर्म्मधुरंधर प्रभु अवतारा ❀ केवल पतिव्रतधर्म्म हमारा॥
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ❀ द्रवहु वेगि उर अन्तर्यामी॥
वृथा करतकत प्रभु श्रुति भाषा ❀ पूजत नाथ न मम अभिलाषा॥
लीन भयउ पतिप्राण राम महँ ❀ अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ॥

१ लीला। २ श्रीरामचन्द्र। ३ शत्रुकी स्त्रियां। ४ अहल्या। ५ शबरी। ६ कृपाकरहु।

वृन्दाचरित नाथ सुधि करहू ❀ विनय हमारि वेगि उर धरहू ॥
विनय प्रीति सतधर्म जनाई ❀ परीं प्रेमवश भंहि अकुलाई ॥
दोहा–पाहि पाहि रघुवंशमणि, हतहु न विरद प्रतीति ॥
प्रीतम प्रीति न नरक डर, तुम कहँ नाथ अनीति २२१॥
सती निराश विनय सुनि बानी ❀ पुलके दीनदयालु भवानी ॥
दुहुँन लीन निजकटक बुलाई ❀ परीं युगल प्रभु पदतर आई ॥
तिन्हैं उठाय राम बैठावा ❀ जगदीश्वर मृदुवचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी ❀ पतिपदरति दृढ हृदय समानी॥
बहुत करहुँका तव गुण गाना ❀ माँगु वेगि वर जो मन माना ॥
सुनत वचन लोचन जल बाढीं ❀ जोरि युगल कर दोऊ ठाढीं ॥
प्रभु तुम दानि देव तरुवरसे ❀ पदजलजात देखि सुरसरिसे ॥
परमपवित्र भईं हम दोऊ ❀ हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ॥
छंद०-कोधन्यहमसमनारिजगमहँ सुनहुश्रीरघुनाथकं
दै दरश कीन्ही पतित पावन नाथ सुर अरि घाथकं
अब कृपासागर यश उजागर देहु वर सुरभावरं ॥
जेहिमिलैंपतिकहँजाइविनुश्रमबदैतवयशश्रीधरं३५॥
सो०–यह कहि बिन्दुकुमारि, सहित सौति प्रभुपद परी
तिन्हें उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत पुनि ॥ १७॥
धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ❀ निजपति लेहु भवँन सुखकरहू ॥
कहेउ देव हम कहँ यह नीका ❀ हमहुँ कहत अब भावत जीका॥
गिरिजासहित गिरीश विरागी ❀ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते ❀ जप तप करहिं विविधविधितेते॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं ❀ देखहिं पदजलजात अघाईं ॥
हरिदरशन लवलेश प्रमाना ❀ जगके सबसुख नाहिं समाना ॥
अमिय अघाइ गरलको खाई ❀ विनय हमारि यहै सुरसाई ॥
देहु कन्त शिर संपदि मँगाई ❀ दयाशील सागर रघुराई ॥

१ भूमिमें । २ त्राहि । ३ दोनों । ४ आँखें । ५ कल्पवृक्ष । ६ गंगाजी । ७ घर । ८ अमृत । ९ विष । १० शीघ्र ।

दोहा-नारान्तककरशीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ॥
पाइ स्वामिशिर मुदितह्वै, बोलीं दोउ उरगेश ॥२२२॥
नाथ विनय हम औरो करहीं ❀ दाह विना हम केहि विधि जरहीं ॥
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना ❀ हनुमत अंगदादि भटनाना ॥
कह प्रभु सखा लंकमहँ धावहु ❀ चन्दन अगर भार बहु लावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये ❀ लंका गढ गृह गृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❀ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा ❀ तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥
बिंदुमती जहँ चाहत ठाऊ ❀ दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर वैर बिहाई ❀ चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥
दोहा-रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ॥
अयुत भार चंदन अगर, तेहि सँग चलेलिवाइ॥२२३॥
जहाँ जरी मघवाजित नारी ❀ तेहि गहर शुचि चिता सँवारी ॥
उहवाँ अपर सौति मनुनारी ❀ बिंदुमती मनभाव पियारी ॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं ❀ चलीं सुनत गति दुख मनमाहीं ॥
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे ❀ निरखि दवारु मृगीगण जैसे ॥
हाहा बिंदुमती पतिप्यारी ❀ कहाँ गई तुम हमहिं विसारी ॥
पहुँचीं सहाविलाप तहँसोऊ ❀ हरषीं हृदय विलोकत दोऊ ॥
षोडश निशिचर भई सभागी ❀ मन वच क्रम पतिपद अनुरागी ॥
सकल अन्हाय मृतक अन्हवाई ❀ सुमिरत हृदय रामगतिदाई ॥
दोहा-उत दशकन्धरजगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सब हेतु
संगमँदोदरि आदि तिय, गवना लैखगकेतु ॥२२४॥
बाजत ढोल कपिन सुनि काना ❀ अपने मन तिन अस अनुमाना ॥
आव युद्ध हित उत कोउ वीरा ❀ हमकहँ ठाढ करत यहि तीरा ॥
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये ❀ पूरणप्रेम चरण शिरनाये ॥
नाथ उताहि दशकंधर जाता ❀ कीश एक कह सुनु जनत्राता ॥

१ गरुड । २ विभीषण । ३ सुन्दर । ४ दशहजार । ५ इंद्रजीत । ६ सोळह । ७ बन्दर । ८ दशहजार ।

प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु ❀ वेगि विभीषण कहँ लै आवहु ॥
राम रजाइ सुशिर धरि धाये ❀ सपदि विभीषण पहँ सो आये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा ❀ सुनत लंकपति आतुर आवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा ❀ कुमुदसहित रघुपति पहँ आवा ॥

दोहा-मोहनिशातहँतरुण रवि, तिनचरणन शिरनाइ ॥
भागवंतरावण अनुज, बैठेउ प्रभु रुखपाइ ॥ २२५ ॥

दशमुख तियनसहित गा तहँवाँ ❀ बिंदुमती चितरेखा जहँवाँ ॥
देखत अतिविलखा विबुधारी ❀ करुणाकरत निशाचर झारी ॥
सासुश्वशुर कहँ देखि दुखारी ❀ ज्ञान नवीन नरांतकनारी ॥
कहि शुचिगाथ सबन समुझाई ❀ स्वामिसमेत चितापर आई ॥
यथायोग्य बैठीं सब तैसे ❀ पतिगृह रहत रहीं नित जैसे ॥
अग्नि दीन ज्वाला अति धाई ❀ पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई ॥
देखि दशा तिनकी सुररवनी ❀ तिनहि सराहिभवननिजगवनी ॥
रावणसहित युवति निजगेहा ❀ गयउ भरोसा सति संदेहा ॥

छं-संदेह सासत भरेउ रावण सहितदारनिगृह गयो ॥
इमिमयसुतादिकनिशिचारिनिलखि विकलवलमूर्च्छितभयो
दशमाथ गतिदेखतविपुलबिलखैंनिशाचरनिशिचरी ॥
संताप शोकविलापभयभ्रमकटकलंकामहँपरी ॥ ६३ ॥

"दो.-राम विरोधिहिंजस उचित, तसदिन पहुँचा आइ ॥
सो विचार करि लंक गढ, उतरी विपतिबजाइ " ॥

इहाँ देव देवायसु जाना ❀ वर आसन शोभित भगवाना ॥
यथायोग्य बैठे मृगशाखा ❀ सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाषा ॥
रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन ❀ पुनि पुनि हेरत सुभगश्यामतन ॥
तिनकी रुचिलखि दीनदयाला ❀ शिवयश गावहु कहा कृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❀ गावहिं कपि कलकंठ लजाई ॥
डमरु भृङ्गि शृङ्गी करतारी ❀ घ्राण पाँणि मुखते वनचारी ॥

१ राक्षस । २ पवित्रकथा । ३ देववधू । ४ वानर । ५ कोकिल । ६ नाक । ७ हाथ ।

गोंडर तन्तु वेणु मंजीरा ❀ शंख मृदंग नाद गंभीरा ॥
नृत्यत कीश भाव दिखरावत ❀ शिवासहित शिव कीरति गावत॥
छं-शिवशिवा कीरति विमलगावतभालुवानर सुखभरे
अहिनाथयुत रघुनाथ छबिनिरखतसकलचितपदधरे॥
प्रभुदेखिकौतुकअनुजसहितसखनबखानतश्रीमुखम्।
तुलसीपगेयहिध्यानजेजनपाइहैंनितयशसुखम् ॥३७॥
सो०-गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणाअयन॥
करि पूरण मन काम, सबनि कहेउ राजहु थलन॥१९॥
बैठे निज निज थल रणधीरा ❀ अनुजसहित राजत रघुवीरा ॥
सुखमासीवे[१] सैनयुत राजें ❀ जयजय ध्वनि कपिभालुसमाजें॥
उमाचरित यह रुचिरे[२] सुहावा ❀ नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपरं[३]चरित गिरिराज कुमारी ❀ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी॥
वहाँ मध्य निशि रावण जागा ❀ कोउकोउसचिवशिखावनलागा॥
उग्र शिखावन कहि बुध बाके ❀ थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई ❀ मेटिको सकै जो विधिउर बसई॥
प्रभु विरोध करि चह कल्याना ❀ मोहविवश सोशठ अज्ञाना ॥

इति क्षेपक।

वचन सुनत तेई कछु सुखमाना ❀ कालविवश जस तीरथ ज्ञाना॥
इहि विधि जलपतभा भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला ❀ रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई ❀ रणसन्मुख भागे न भलाई ॥
निज भुजबल मैं वैर बढावा ❀ देहौं उतर जो रिपु चढि आवा॥
असकहि मरुत[६]वेग रथ साजा ❀ बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले वीर सब अतुलित बली ❀ जनु कज्जल गिरि आँधीचली॥
अशकुन अमित होहिंतेहिकाला ❀ गनै न भुजबल गर्व विशाला ॥
छंद-अतिगर्वगनतनशकुनअशकुनश्रवहिंआयुधहाथते॥

१ दयाके धाम-श्रीरामचन्द्रजी। २ मर्यादा। ३ सुभग। ४ औरचरित्र। ५ पार्व्वती। ६ वायु।

भट गिरहिं रथते बाजि गज चिक्करत भाजत साथते ॥
गोमायु गृध्र शृगाल खररव श्वान बोलहिं अति घने ॥
जनु कालदूतउलूकबोलहिंसकलपरमभयावने ॥३८॥
दोहा–ताहि कि सम्पति शकुनशुभ,स्वप्नेहुमनविश्राम॥
भूतद्रोह रत मोहवश, रामविमुख रतकाम॥ २२६ ॥
चली निशाचर अनी अपारा ❋ चतुरंगिनी चमू बहुधारा ॥
विविध भाँति वाहन रथ याना ❋ विपुल वरण पताकध्वज नाना ॥
चले मत्तगज यूथ घनेरे ❋ मनहुँ जलद मारुतके प्रेरे ॥
वर्ण वर्ण वर दैत्य निकाया ❋ समर शूर जानहिं बहु माया ॥
अति विचित्र वाहिनी विराजी ❋ वीर वसन्तसेन जनु साजी ॥
चलत कटक दिगसिन्धुरडगहीं ❋ क्षुभितपयोधिकुधरडगमगहीं ॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई ❋ पवन थकित वसुधा अकुलाई ॥
पणव निसान घोररव बाजहिं ❋ महाप्रलयके जनु घन गाजहिं ॥
भेरि नफीर बाज सहनाई ❋ मारू राग शूर सुखदाई ॥
केहरिनाद वीर सब करहीं ❋ निजनिज बल पौरुषअनुसरहीं॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा ❋ मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई ❋ अस कहि सन्मुख सैन चलाई ॥
यह सुधि सकल कपिन जबपाई ❋ धाये करि रघुबीर दुहाई ॥
छंद–धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समानते॥
मानहुँ सपक्ष उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना बानते ॥
नख दशन शैलन करनद्रुमगहिसबलशंकनमानहीं॥
जयराम रावण मत्तगजमृगराजसुयश सुनावहीं३८॥
दोहा–दुहुँदिशिजयजयकारकरि, निजनिजजोरीजानि
भिरे वीर इत रघुपतिहि, उत रावणहिं बखानि ॥२२७॥
रावण रथी विरथ रघुवीरा ❋ देखि विभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा ❋ वन्दि चरण कह सहित सनेहा॥

१ कुत्ता। २ घूघू। ३ मेघ। ४ हवा। ५ दिग्गज। ६ समुद्र। ७ पर्वत। ८ पृथ्वी। ९ सिंहनाद। १० कपि। ११ वृक्ष।

नाथ न रथ नाहिं पदत्राना ❀ केहि विधि जीतब रिपु बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❀ जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना॥
शौरज धर्म्म जाहि रथचाका ❀ सत्य शील दृढ ध्वजा पताका॥
बल विवेक दम परहित घोरे ❀ क्षमा दया समता रजु जोरे॥
ईशभजन सारथी सुजाना ❀ विरति चर्म्म सन्तोष कृपाना॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा ❀ बर विज्ञान कठिन कोदण्डा॥
संयम नियम शिलीमुख नाना ❀ अमल अचल मन त्रोण समाना॥
कवच अभेद विप्रपदपूजा ❀ इहि सम विजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्म्म मय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥

दोहा-महाघोर संसार रिपु, जीति सकै सो वीर॥
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥२२८॥
सुनत विभीषण प्रभुवचन, हर्षि गहे पदकंज॥
इहिविधि मोहिं उपदेश किय, रामकृपा सुखपुंज॥२२९॥
उत प्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान॥
लरत निशाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभु आन॥२३०

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❀ देखहिं रण नभ चढ़े विमाना॥
हमहूं उमा रहे तेहि संगा ❀ देखत रामचरित रणरंगा॥
सुभट समररस दुहुँ दिशि माते ❀ कपि जय शील रामबल ताते॥
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❀ एक न एक मर्दि महि मारहिं॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं ❀ शीश तोरि शीशन सन मारहिं॥
उदर विदारहिं भुजा उपारहिं ❀ गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं॥
निशिचर भट महि गाड़हिं भालू ❀ ऊपर डारि देहिं बहु बालू॥
वीर बलीमुख युद्ध विरुद्धा ❀ देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा॥

छंद-क्रुद्ध कृतान्त समान कपि तनु श्रवत शोणित राजहीं॥
मर्दहिं निशाचर कटक भट बलवंत जिमि घन गाजहीं॥

---

१ शरीरबल, विद्याबल, बुद्धिबल, । २ सारासारकरविचार सारको ग्रहण असारको त्याग । ३ पांच ज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइन्द्रिय इनोकोस्वाधीन रखना । ४ मनवचनकर्मते परावाउपकार करे ये चार घोड़े । ५ सहना ६ अहेतु दीनोपर द्रवना ।

मारहिं चपेटन काटि दाँतन डारि लातन मीजहीं ॥
चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजहीं ॥
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ॥
प्रहलादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ॥
जयराम जो तृण ते कुलिश कर कुलिश ते करु तृण सही ४१

दोहा–निजदल विचल विलोकि तब, बीसभुजा दशचाप ॥
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करि दाप ॥ २३१ ॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर ❀ सन्मुख चले हूह करि वन्दर ॥
गहि गिरि पादप उपल पहारा ❀ डारहिं तेहिपर एकहि बारा ॥
लागहिं शैल वज्र तनु तासू ❀ खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहा रथ रोपी ❀ रणदुर्मद रावण अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपटि कपियोधा ❀ मरदै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना ❀ त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं ❀ यह खल खाव कालकी नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने ❀ दशहु चाप सायक सन्धाने ॥

छंद–संधानि धनु शर निकर छांडेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ॥
रहे पूरि शर धरणी गगन दिशि विदिशि कहँ कपि भागहीं ॥
भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे ॥
रघुवीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जन रक्षक हरे ॥४२॥

दोहा–विचलत देखा कपिकटक, कटि निषंग धनु हाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ ॥ २३२ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू ❀ मोहिं विलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती ❀ आजु निपाति जुड़ावों छाती ॥
कहि अस छांड़ेसि बाण प्रचंडा ❀ लक्ष्मण किये तुरत शतखंडा ॥

१ हृदय। २ वज्र। ३ बड़ामद। ४ धनुष। ५ सर्प। ६ आकाश। ७ दुःखित।
८ मारि। ९ सौ टुकड़े।

कोटिंन आयुध रावण डारे ❀ तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे॥
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा ❀ स्यन्दन भंजि सारथी मारा॥
शत शत शर मारे दशभाला ❀ गिरिशृंगनजनुप्रविशहिंव्याला॥
पुनि शत शर मारे उरमाहीं ❀ परेउ अवनि तनु सुधिकछुनाहीं॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी ❀ छांडेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी॥
छं०-जो ब्रह्मदत्त प्रचण्डशक्ति अनन्त उर लागी सही॥
पर्‌यो विकल वीरउठाव दशमुखअतुलबलमहिमारही
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिरजिमि रजकनी॥
तेहि चह उठावन मूढरावण जान नहिं त्रिभुवनधनी॥
दोहा-देखत धावा पवनसुत, बोलत वचन कठोर॥
आवत तेहि उर महँ हनेउ, मुष्टिप्रहारप्रघोर॥२३॥
जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ❀ उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा ❀ परेउ शैल जिमि वज्रप्रहारा॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा ❀ कपिबल विपुल सराहन लागा॥
धृक धृक धृकबलपौरुष मोही ❀ जोतें जियत उठा सुरद्रोही॥
असकहि कपिलक्ष्मणकहँल्याये ❀ देखि दशानन विस्मय पाये॥
कह रघुवीर समुझि जियभ्राता ❀ तुम कृतांतभक्षक सुरत्राता॥
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला ❀ गगन गई सो शक्ति कराला॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये ❀ रिपुसन्मुख अति आतुरआये॥
छं-आतुरबहोरि विभंजिस्यन्दनसूतहतिव्याकुलकियो
गिर्‌यो धरणि दशकंधर विकलतनुबाणशत वेधोहियो
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो॥
रघुवीरबन्धुप्रताप पुंज बहोरि प्रभुचरणन नयो॥४४॥
दोहा-वहाँ दशानन जाइकै, करन लाग कछु यज्ञ॥
जय चाहतरघुपतिविमुख,शठहठ वशअतिअज्ञ२३४

१ रथ। २ सर्प। ३ बहुत। ४ शोक। ५ काल। ६ देवतोंके रक्षक। ७धनुष।८सारथी॥

इहाँ विभीषण सब सुधि पाई ❀ सपदि जाय रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावण इक यागा ❀ सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा॥
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर ❀ करहिं विध्वंस आव दशकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❀ हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढे कपिलंका ❀ पैठे रावण भवन अशंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा ❀ सकुल कपिन भा क्रोधविशेषा ॥
रणते भागि निलज गृह आवा ❀ इहाँ आइ बकध्यान लगावा ॥
असकहि अंगद मारेउ लाता ❀ चितव न शठ स्वारथ मनराता॥

छंद—नहिंचितवजबकपिकोपितबगहिदशनं लातनमारहीं
धरि केश नारि निकारि बाहर तेपि दीन पुकारहीं ॥
तब उठा कोपि कृतांतसम गहि चरण वानर डारहीं॥
इहि भाँति यज्ञ विध्वंस करि कपिनेकु मनहिं नहारहीं

दोहा—मख विध्वंसकरि कपिसकल,आये रघुपतिपास
चला दशानन क्रोधकरि, छांड़ी जियकीआश ॥२३५॥

चलत होहिं तेहि अशुभ भयंकर ❀ बैठहिं गृध्र उडाहिं शिरन पर ॥
भयउ कालवश कहा न माना ❀ कहेसि बजावहु युद्धनिसाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा ❀ बहु गज रथ पदचर असवारा ॥
प्रभुसन्मुख खल धावहिं कैसे ❀ शलभसमूह अनल कहँ जैसे ॥
इहाँ देव सब विनती कीन्ही ❀ दारुण विपतिहमहिंइन दीन्ही॥
अब जनि नाथ खेलावहु एही ❀ अतिशय दुखित होति वैदेही ॥
देववचन सुनि प्रभु मुसकाना ❀ उठि रघुवीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट बाँधी दृढ माथे ❀ सोहत सुमन बीच बिच गाथे ॥
अरुणनयन वारिद तनु श्यामा ❀ अखिललोकलोचनअभिरामा ॥
कटि तट परिकर कसे निषंगा ❀ कर कोदण्ड कठिन शारंगा ॥

छंद—शारंगकरसुन्दर निषंगशिलीमुखाकरकटिकस्यो
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो ॥

१ दांत । २ बाल । ३ राक्षसी सैन्य । ४पतंगसमूह । ५ आनन्ददाता ।
६ मुनिपट । ७ पुष्ट । ८ भृगुलत्ता ।

कह दासतुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे॥
ब्रह्मांडदिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधरडगमगे ॥
दोहा-हर्षे देव बिलोकि छबि, वर्षहिं सुमन अपार ॥
जय जय प्रभुगुणज्ञानबल,धाम हरणमहिभार॥२३६॥
इहिके बीच निशाचरअनी ❀ कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा ❀ प्रलयकालके जिमि घनघट्टा ॥
शक्ति शूल तलवारि चमकहिं ❀ जनुदशदिशिदामिनीदमकहिं॥
गज रथ तुरँग चिकार कठोरा ❀ गर्जतमनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर विपुल नभ छाये ❀ मनहुँ इन्द्रधनु उदयसुहाये ॥
उठी रेणु मानहुँ जलधारा ❀ बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिशि पर्वत करत प्रहारा ❀ बज्रपात जनु वारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बाण झरिलाई ❀ घायल भे निशिचर समुदाई॥
लागत बाण वीर चिक्करहीं ❀ घुर्मिघुर्मि अगणित महि परहीं॥
श्रवहिं शैलजनु निर्झर वारी ❀ शोणितसर कादर भय भारी॥
छंद-कादर भयंकररुधिरसरिताचलीपरमअपावनी ॥
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जल जन्तु गज पदचर तुरँग रथ विविध वाहनको गने
शर शक्ति तोमर सर्प चाप तुरंग चर्मकमठ घने॥९७॥
दोहा-वीर परे जनु तीरतरु, मज्जा वह जनु फेन ॥
कादर देखत डरहिं जिय,सुभटनके मन चैन॥२३७॥
मज्जहिं भूत पिशाच वैताला ❀ केलि करहिं योगिनी कराला॥
काक कंकधरि भुजा उडाहीं ❀ एकते एक छीनि धरि खाहीं॥
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई ❀ शठ तुम्हार दारिद्र न जाई॥
कहरत भट घायल तट गिरे ❀ जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं आँत गृध्र तट भये ❀ जनु बनशी खेलत चित दये॥

१ मेघ । २ पूंछ । ३ वर्षा । ४ पर्वत । ५ रुधिरकेतालाव । ६ ढाल । ७कछुआ। ८गृध्र ।

बहु भट बहे चढे खग जाहीं ❀ जिमि नावरि खेलहिं जलमाहीं॥
योगिनि भरि भरि खप्परसाँचहिं ❀ भूत पिशाचविविधविधनाचहिं॥
भट कपाल करताल बजावहिं ❀ चामुण्डा नानाविधि गावहिं॥
जम्बुके निकर तहाँ कटकटहीं ❀ खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं॥
कोटिन रुण्ड मुण्ड विनु डोलहिं ❀ शीशपरे महि जय जय बोलहिं॥
छंद–बोलहिंजोजयजयरुण्डमुण्डप्रचण्ड शिरविनुधावहीं
परिणाम युद्ध अगुह्य बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं॥
निशिचर वरूथनिमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पितभये॥
संग्राम अंगनसुभट सोहहिंरामशरनिकरनहये॥४८॥
"सो०–सप्त दिवस दिन रात, बाजेउ घंटा धनुष कर॥
हरि पूजाकी भाँत, भये सुभट संहार सब॥
दोहा–घंटाकी परमान अब, सुनिये संगर बीच॥
नाग अयुत दशलाखहैं, रथी डेढ सत मीच॥
मरहिं कोटि दश पैदर जबहीं ❀ नाचत एक कवंध रण तवहीं॥
नृत्यकरहिं जब कोटि कबन्धा ❀ तब एक खेचर उठत निबंधा॥
खेचर कोटि नचहिं निहकंटा ❀ तब इक धनुकर बाजत घंटा॥
श्लो०–एवं सप्तदिनख्यातं, स्वर्गे मर्त्ये रसातले॥
भवेद्भूरि भटनाशं रामरावणसंगरे॥"
दोहा–हृदय विचारेसिदशवदन, भा निशिचर संहार॥
मैं अकेल कपि भालु बहु, मायाकरौं अपार॥२३८॥
देवन प्रभुहि पयादेहि देखा ❀ उर उपजा अति क्षोभ विशेषा॥
सुरपति निजरथ तुरत पठावा ❀ हर्षसहित मातलि लै आवा॥
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ❀ विहँसि चढे कोशलपुरभूपा॥
चंचल तुरंग मनोहर चारी ❀ अजर अमर मानस गतिहारी॥
रथारूढ रघुनाथहिं देखी ❀ धाये कपि बल पाइ विशेषी॥

१ देवी। २ शृगाल। ३ पृथ्वी। ४ संदेह। ५ इन्द्र। ६ वृद्धतासेरहित। ७ किसीकेमारे न मरे।

सही न जाइ कपिनकी मारी ❀ तब रावण माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहिं बाँची ❀ सब काहू मानीकर साँची ॥
देखी कपिन निशाचरअनी ❀ बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी॥
छं–बहुवालिसुत लक्ष्मणकपीश विलोकिमर्कटअपडरे
जनु चित्रलिखितसमेतलक्ष्मणजहँसोतहँचितवतखरे॥
निजसेनचकितविलोकिहँसिधनुतानिशरकोशलधनी॥
माया हरीहरिनिमिषमहँहर्षीसकलमर्कटअनी ॥ ४९॥
दोहा–बहुरि राम सबतन चितै, बोले वचन गँभीर ॥
द्वन्द्वयुद्ध देखहु सकल,श्रमित भये अतिवीर॥२३९॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा ❀ विप्रचरणपंकज शिरनावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा ❀ गर्जि तर्जि प्रभु सन्मुख आवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं ❀ सुन तापस मैं तिनसम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना ❀ लोकप जेहिके बन्दीखाना ॥
खर दूषण विराध तुम मारा ❀ हतेउ व्याध इव वालि विचारा॥
निशिचर सुभट सकल संहारे ❀ कुम्भकर्ण घननादहि मारे ॥
आज करौं खल कालहवाले ❀ परेउ कठिन रावणके पाले ॥
आजु वैर सब लेउँ निवाही ❀ जो रणभूमि भागि नहिं जाही ॥
सुनि दुर्वचन कालवश जाना ❀ कहेउ विहँसि तब कृपानिधाना॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई ❀ जनि जल्पसि देखब मनुसाई ॥

छन्द हरिगीतिका ।

जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहिनीतिसुनिशठ करुक्षमा
संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनससँमा ॥
यक सुमनप्रद यक सुमनफल इकफलैकेवललागहीं॥
इक कहहिं करहिं न एक कहिकर एककरहिंनवागहीं
दो.–राम वचन सुनिविहँसिकह,मोहिंशिखावबहुज्ञान॥

१ द्वन्द्व कहीं तीनों लोकमें न ऐसा युद्धहुआ न होगा जैसा हमारा रावणका होगा तुमखडे देखो । २ संग्राम गिनती । ३ इन्द्रादिक । ४ बारंबार । अपने मुखसे अपनी प्रशंसा मतकर । ५ आंब । ६ कटहर ।

वैर करत तब नाहिं डरेहु, अबलागतप्रियप्रान॥२४०॥
कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर ❀ कुलिशसमानलागछांडन शर॥
नानाकार शिलीमुख धाये ❀ दिशिअरुविदिशिंगगनमहँछाये॥
अनलबाण छांडे रघुबीरा ❀ क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा ॥
छांडेसि तीव्र शक्ति खिसियाई ❀ बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवारे ❀ तृणसमान प्रभु काटि निवारे॥
विफल होइँ रावणशर कैसे ❀ खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहिं मारेसि ❀ परे भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परम क्रोधकरपावा ॥
छंद–भयेक्रुद्धयुद्ध विरुद्धरघुपतित्रोणसायककसमसे॥
कोदण्ड धुनि सुनिचण्डअतिमनुजादिभयमारुतग्रसे॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पित कमठ भूधर अति त्रसे॥
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहिमहि देखि कौतुक सुर हँसे॥
दोहा–तान्योचाप जोश्रवणलगि,छांडेविशिख कराल॥
रामबाण नभ मग चले,लहलहात जनुव्याल॥२४१॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगा ❀ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हनि केतु पताका ❀ गर्जा अति अन्तर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढिखिसियाना ❀ छांडेसि अस्त्र शस्त्र विधि नाना॥
विफल होइँ सब उद्यम ताके ❀ जिमि परद्रोह निरतमन साके ॥
तब रावण दशशूल चलाये ❀ बाजि चारि महि मारि गिराये ॥
तुरँग उठाइ कोपि रघुनायक ❀ छांडे अति कराल बहु सायक॥
रावणशिर सरोज बनचारी ❀ चले रघुनाथ शिलीमुख धारी॥
दश दश बाण भाल दश मारे ❀ निसरिगये चल रुधिर पनारे ॥
श्रवत रुधिर धावा बलवाना ❀ प्रभु पुनिकृतधनु शर संधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पवाँरे ❀ भुजन समेत शीश महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने ❀ राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥

१ वज्र । २ दिशोंके कोने-आग्नेय, ईशान, नैऋत्य वायव्य, । ३ रथहाकनेवाले को । ४ राक्षस । ५ कान । ६ बाण । ७ सर्प । ८ घोडा । ९ बर्छी ।

कटित झटित पुनि नूतन भये ❀ प्रभु बहु बार बाहु शिर हये ॥
पुनिपुनिप्रभुकाटहिं भुजशीशा ❀ अति कौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ❀ मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥
छंद–जनु राहुकेतु अनेकनभपथ स्रवतशोणितधावहीं
रघुवीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शर शिर निकर छेदे नभ उड़त इमिसोहईं॥
जनु कोपिदिनकरकरनिकरजहँ तहँविधुन्तुद पोहईं५२॥
दोहा–जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर, तिमितिमिहोहिंअपार
सेवत विषय विवर्द्धजिमि,नितनित नूतन मार॥२४२॥
दशमुख दीख शिरनकी बाढी ❀ बिसरा मरण भई रिस गाढी ॥
गरजेउ मूढ महा अभिमानी ❀ धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समरभूमि दशकन्धर कोपा ❀ बर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ ❀ जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ॥
हाहाकार सुरन सब कीन्हा ❀ तब प्रभुकोपिधनुषकर लीन्हा॥
शर निवारि रिपुके शिर काटे ❀ ते दिशाविदिशिगगन महिपाटे॥
काटे शिर नभ मारग धावहिं ❀ जयजयध्वनिकहिभयउपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा ❀ कहँ रघुवीर कोशलाधीशा ॥
छंद–कहँरामकहिशिरनिकरधावहिंदेखिमर्कटभजिचले॥
सन्धानि शर रघुवंशमणि तब शरन शिर बेधे भले ॥
शिरमालिका गहि कालिकातहँ वृन्द वृन्दनि सोंमिलीं
करि रुधिर सर मज्जनमनहुँ संग्रामवटपूजनचलीं॥५३
दोहा–पुनि रावणअतिकोपकरि, छांड़ीशक्ति प्रचण्ड ॥
सन्मुखचलीविभीषणहिं,मनहुँकाल कोदण्ड॥२४३॥
आवत देखि शक्ति अतिभारी ❀ प्रणतारत हरि बिरद सँभारी ॥
तुरत विभीषण पाछे मेला ❀ सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥

१ राहुकेतु । २ कुहिरा । ३ सूर्य । ४ माकावनाके । ५ शक्ति ।

लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई ❀ प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥
देखि बिभीषण प्रभु श्रम पायउ ❀ गहिकर गदा क्रोध करिधायउ ॥
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे ❀ तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर शिव कहँ शीश चढाये ❀ एक एकके कोटिन पाये ॥
तेहि कारण खल अबलगिबाचा ❀ अब तव काल शीशपर नाचा ॥
राम बिमुख शठ चहसि सम्पदा ❀ अस कहि हनेसि माँझ उरगदा ॥
छंद–उरमाँझगदाप्रहार घोर कठोर लागत महिपर्‍यो ॥
दशवदन शोणित श्रवतपुनि संभारिधायो रिसिभर्‍यो ॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध बिलोकि एकहि इकहनै ॥
रघुवीर बल गर्वितबिभीषणघालनहिंताकहँगनै ॥५४॥
दोहा–उमाबिभीषण रावणहिं, सन्मुखचितव कि काउ
भिरत सो काल समान अब,श्रीरघुवीरप्रभाउ ॥२४४॥
देखा श्रमित बिभीषण भारी ❀ धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता ❀ हृदय माँझ मारेउ तेहि लाता ॥
ठाढ रहा अति कम्पित गाता ❀ गयउ बिभीषण जहँ जनत्राता ॥
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चला गगन कपि पूंछ पसारी ॥
गहेसि पूंछ कपिसहित उडाना ❀ पुनिनभ भिरेउ प्रबलहनुमाना ॥
लरत अकाश युगल समयोधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा ॥
शोभित नभ छल बल बहुकरहीं ❀ कज्जल गिरि सुमेरु जनुलरहीं ॥
बुधिबल निशिचर परै न पारा ❀ तब मारुतसुत प्रभुहि सँभारा ॥
छंद–संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावणहन्यो
महिपरतपुनिउठिलरतेदेवनयुगलकहँजयजयभन्यो ॥
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ॥
रणमत्तरावणसकलसुभटप्रचंडभुजबलदलिमले ५५॥
दोहा–राम प्रचारे वीरसब, धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदलबिपुलबिलोकितेइँ,कीन्हप्रकटपाषण्ड ॥२४५॥

---

१ देवता । २ पर्वतलेके । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ स्मरणकिया ।

अन्तर्धान भयो क्षण एका * पुनि प्रकटेसि खल रूपअनेका॥
रघुवर कटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते॥
देखे कपिन अमित दशशीशा * भागे भालु विकट भटकीशा॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा॥
दश दिशि कोटिन धावहिं रावण * गर्जहिं घोर कठोर भयावन॥
डरे सकल सुर चले पराई * जयकी आश तजहुरे भाई॥
सब सुर जिते एक दशकंधर * अब बहु भये तकहु गिरिकंदर॥
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी * जिन जिन प्रभुकी महिमाजानी॥
छं–जानहिं प्रतापते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउफुरे
चले विकट मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रणबांकुरे॥
मर्दहिंदशाननकोटिकोटिन्हकपटभटकेअँकुरे॥९६॥
दोहा–सुर वानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश॥
साजिशरासननिमिषमहँ,हरेसकलदशशीश॥२४६॥
प्रभु क्षण महँ माया सब काटी * जिमि रविउदयजाहि तम फाटी॥
रावण एक देखि सुर हर्षे * विपुल सुमन पुनि प्रभु पर वर्षे॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे * फिरे एक एकनिके टेरे॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये * तरल तमकि संयुग महि आये॥
करत प्रशंसा सुर तेहँ देखे * भयउ एक मैं इनके लेखे॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल * असकहि गगनपंथ कहँ धायल॥
हाहाकार करत सुर भागे * शठहु जाहु कहँ मोरे आगे॥
देखि विकल सुर अंगद धावा * कूदि चरण गहि भूमि गिरावा॥
छंद–गहि भूमिपार्‍योलातमार्‍योवालिसुतप्रभुपहँगयो
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो॥
करि दाप धनुष चढाइ दशसन्धानि शर बहु वर्षई॥
कियेसकलभटघायलविथाकुलदेखिनिजबलहर्षई॥९७

१ रावण। २ अन्धकार। ३ अतिशयक्रोध करिकै। ४ सन्मुख। ५ क्रोध।

दोहा-तब रघुपति लंकेशके, शीश भुजा शर चाप ॥
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथके पाप ॥९९७॥

शिर भुज बाढि देखि रिपु केरी ❀ भालु कपिन रिसि भई घनेरी॥
मरत न मूढ कटे भुज शीशा ❀ धाये कोपि भालु भट कीशा ॥
बालितनय मारुत नल नीला ❀ द्विविद मयन्द महाबल शीला॥
विटप महीधर करहिं प्रहारा ❀ सोइ गिरि तरुगहिकपिनसोमारा
एकन नख गहि वपुष विदारी ❀ भागि चलहिं पद लातन मारी॥
तब नल नील शिरनि चढि गयऊ ❀ नखनि ललाट विदारत भयऊ॥
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी ❀ तिनहिं धरन कहँ भुजापसारी॥
गहे न जाहिं शिरनिपर फिरहीं ❀ जनु युगमधुपकमलवनचरहीं॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❀ महि पटकेसि गहिभुजामरोरी॥
पुनि सकोपि दशधनु करलीन्हा ❀ शरनि मारिघायल कपिकीन्हा॥
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर ❀ पाइ प्रदोष हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्छित देखि सकल कपि बीरा ❀ जाम्बवंत धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु भारी ❀ मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना ❀ गहि पद महि पटकेभटनाना ॥
देखि भालुपति निज दल घाता ❀ कोपि माँझ उरमारेसि लाता ॥

छंद-उरलातघातप्रचण्डलागतविकलरथतेमहिगिरा ॥
गहि भालुबीसहुकरनिमानहुँकमलनिशिवशमधुकरा॥
मूर्छित विलोकि बहोरि पदहति भालुपतिप्रभुपहँगयो॥
निशिजानिस्यन्दनघालितेहितबसूतयत्नसुकृतयो ॥

दोहा-मूर्च्छा गइ कपि भालु तब, सब आये प्रभुपास ॥
सकल निशाचररावणहिं, घेरि रहे अतित्रास॥९९८॥

तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई ❀ त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥
शिर भुज बाढि सुनत रिपु केरी ❀ सीता उर भै त्रास घनेरी ॥

१ शरीर । २ रावण । ३ भ्रमर । ४ पकड । ५ संध्याकाल । ६ पर्वत । ७ छाती ।
८ जाम्बवन्त । ९ रात्रि । १० रथ । ११ सारथी । १२ भय । १३ रावण ।

सुख मलीन उपजी मन चिन्ता ❁ त्रिजटासन बोली तब सीता ॥
होइहि कहा कहसि किन माता ❁ केहिविधिमरिहिविश्व¹दुखदाता॥
रघुपतिशर शिर कटे न मरई ❁ विधि विपरीत चरित सब करई॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही ❁ जेहि हौं हरिपदकमल विछोही॥
जेइँ कृत कनक³ कपटमृगझूठा ❁ अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा ॥
जेइँविधिमोहिं दुखदुसहसहावा ❁ लक्ष्मण कहँ कटुवचन कहावा॥
रघुपतिविरह विषम शर भारी ❁ तकि तकि वारवारमोहिं मारी॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❁ सो विधिताहिजिआवन आना॥
बहुविधि करत विलाप जानकी ❁ करि करिसुरतिकृपानिधानकी॥
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी ❁ उर शर लागत मरिहि सुरारी॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही ❁ इहिके हृदय बसति वैदेही ॥
छंद–इहिके हृदय बसजानकीमसजानकीउर वासहै॥
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सबको नाशहै ॥
असमुनत हर्षविषादउरअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा ॥
अबमरिहिरिपुइहिभाँतिसुंदरितजहुसंशयमहा ७१
दोहा–काटत शिर होइहि विकल, छूटिजाइतवध्यान॥
तबरावणके हृदय शर, मारहिं राम सुजान ॥२४१॥
असकहि बहुप्रकार समुझाई ❁ पुनि त्रिजटानिजभवनसिधाई॥
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही ❁ उपजी विरह व्यथा अतितेही ॥
निशिहिंशशिहिनिन्दतबहुभांती ❁ युगसम भई विहाति नराती ॥
करत विलाप मनहि मनभारी ❁ रामविरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उरदाहू ❁ फरकेउ वाम नयन अरु बाहू ॥
शकुन विचारि धरी उर धीरा ❁ अब मिलिहहिं कृपालु रघुवीरा॥
इहाँ अर्द्ध निशि रावण जागा ❁ निजसारथि सन खीझन लागा॥
शठ रणभूमि छुड़ायहु मोहीं ❁ धृक धृक अधमसन्दमतितोहीं॥
तेइँ पदगहि बहुविधिसमुझावा ❁ भोरभये रथचढि पुनि आवा ॥

१ संसार। २ कीजा। ३ स्वर्णमृगमारीच। ४ पर। ५ विदेहमहाराज जनक कुमारी सीताजी। ६ चन्द्र।

सुनि आगमन दशानन केरा ❀ कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी ❀ धाये कटकटाइ भट भारी ॥
छंद–धाये जो मर्कट विकटभालुकरालकर भूधरधरा ॥
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भाजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावण लियो ॥
दशदिशिचपेटन्हमारिनखनविदारितेहिव्याकुलकियो ॥
दोहा–देखि महा मर्कट प्रबल, रावण कीन्ह विचार ॥
अन्तरहितहोइनिमिषमहँ, करिमायाविस्तार ॥२५०॥
छंदलीला–जबकीन्हतेइँपाखण्ड,भएप्रगटजन्तुप्रचण्ड॥
वैताल भूत पिशाच, कर धरे धनुष नराच॥
योगिनि गहे करबाल, इक हाथ मनुज कपाल ॥
करि सद्य शोणित पान, नाचहिंकरहिंगुणगान ॥६१॥
धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
मुखबाय धावहिं खान, तब लगे कीश परान ॥
जहँजाहिंमर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय विकल बानर भालु, पुनि लाग बर्षनबालु ॥६२॥
जहँ तहँ थकित करि कीश, गर्जा बहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मणकपीशसमेत, भयेसकल वीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मींजहिं हाथ ॥
इहिविधि सकल बलतोरि, तेहिकीन्हकपटबहोरि ६३
प्रगटेसि विपुल हनुमान, धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरेउ जाइ, चहुँ दिशि वरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जानिजाइ, कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥
दशदिशिलंगूरविराज, तेहिमध्यकोसलराज ॥६४॥

---

१ बाण । २ खड्ग । ३ तुरन्तका । ४ झुण्डके झुण्ड ।

छंद हरिगीति ।

तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तनु शोभा लही॥
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय वर वारि तुंगतमालही ॥
प्रभु देखिहर्षविषाद उर सुरवदति जय जयजयकरी॥
रघुवीर एकहितीर कोपित निमिष महँमायाहरी॥६५॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरिगहिसबफिरे॥
शर निकर छाँडे राम रावण बाहु शिर पुनि पुनिहरे ॥
श्रीरामरावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ॥
शत शेष नारद निगम कवि तेउतदपिपारनपावहीं६६॥
दोहा–कहे तासु गुणगण कछुक, जडमति तुलसीदास॥
निजपौरुषअनुसारजिमि, मशकउडाहिंअकास२८१
काटि शीश भुज वार बहु, मरै न भट लंकेश ॥
प्रभु क्रीडत मुनि सिद्धसुर, व्याकुल देखि कलेश२८२

काटत बढहिं शीश समुदाई ❀ जिमिप्रति लाभलोभ अधिकाई॥
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा ❀ राम विभीषण तन तब देखा ॥
उमा काल मरु जाकी इच्छा ❀ सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा ॥
सुनु सर्वज्ञ चराचर नायक ❀ प्रणतपाल सुरमुनिसुखदायक॥
नाभी कुंड सुधा बस याके ❀ नाथ जियत रावण बलताके ॥
सुनत विभीषण वचन कृपाला ❀ हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
अशकुन होन लगे विधि नाना ❀ रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरतहेतू ❀ प्रगट भये जहँ तहँ नभकेतू ॥
दश दिशि दाह होनतब लागा ❀ भयउ पर्व बिनु रवि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ❀ प्रतिमा श्रवहिं नयन बह वारी॥
हरिगीतिकाछंद-प्रतिमा श्रवहिंपविपातनभअतिवातबहडोलतमही ॥
वर्षहिंबलाहकरुधिर कच रज अशुभ अतिसककोकही

१ मसा । २ क्रीडाकरतेहैं । ३ अमृत ।४ पक्षी । ५ मूर्ति । ६ पत्थर । ७वायु ।८ मेघ ।

उत्पात अमितविलोकिनभसुरविकलबोलहिंजयजये॥
सुर सभयजानि कृपालुरघुपति चाप शर जोरत भये॥
दोहा—आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छाँडे शर इकतीश॥
रघुनायक सायक चले, मानहुँ काल फणीश॥२८३॥
सायक एक नाभि शर शोषा ❀ अपर लगे शिरभुज करि रोषा॥
लै शिर बाहु चले नाराचा ❀ शिरभुजहीन रुंड महि नाचा॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा ❀ तवशरहतिप्रभुकृतयुगखण्डा॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी ❀ कहाँ राम रण हतौं प्रचारी॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर ❀ क्षुभितसिन्धु सरदिग्गजभूधर॥
परेउ भूमि युग खंड बढाई ❀ चापि भालु मर्कट समुदाई॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा ❀ धरि शर चले जहाँजगदीशा॥
प्रविशे सब निषंग महँ आई ❀ देखि सुरन दुन्दुभी बजाई॥
तासु तेज समान प्रभु आनन ❀ हर्षे देव शम्भु चतुरानन॥
जय ध्वनि पूरि रही नवखंडा ❀ जय रघुवीर प्रबल भुजदंडा॥
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा ❀ जयकृपालुजयजयतिमुकुन्दा॥
छंद—जयकृपाकन्दमुकुन्दहरि मर्दननिशाचरमदप्रभो।
खलदल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजि दुन्दुभि गहगही।
संग्राम अंगनराम अंग अनंग बहु शोभा लही॥६८॥
शिर जटामुकुटप्रसूनबिचबिच अति मनोहर राजहीं॥
जनु नीलगिरिपर तडितपटलसमेत उडुगण भ्राजहीं॥
भुज दण्ड फेरत शर शरासनरुधिरकणतनु अतिबने॥
जनु रायमुनिन्हतमालतरुपरबैठि बहु सुख आपने ६९
दोहा—कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द॥
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द॥२८४॥

१ बाण। २ जल ऊपरको उछलने लगा। ३ समुद्र। ४ भुज। ५ महा। ६ करुणा-के मर्य्यादा श्रीरामचन्द्रजी। ७ गंभीर। ८ नक्षत्र। ९ शोभित।

पति शिर दीख जबहि मन्दोदरी ❁ मूर्छित विकल खसी धरणी परी॥
युवतिवृन्द रोवत उठि धाई ❁ तेहि उठाय रावण पहँ ल्याई॥
पतिगतिदेखि ते करति पुकारा ❁ छूटे केश न देह सँभारा॥
उर ताड़ना करे विधि नाना ❁ रोदन करै प्रताप बखाना॥
तव बलनाथ डोल नित धरणी ❁ तेजहीन पावक शशि तरणी॥
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा ❁ सो तनु आजु परा महिछारा॥
वरुण कुबेर सुरेश समीरा ❁ रणसन्मुख धरु काहु न धीरा॥
भुजबल जीति काल यम साईं ❁ आजु सो परेउ अनाथकि नाईं॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई ❁ सुत परिजन बलवरणि न जाई॥
रामविमुख अस हाल तुम्हारा ❁ रहा न कुल कोउ रोवनि हारा॥
तव बश विधि प्रपंच सब नाथा ❁ सबदिगपतितोहिनावहिंमाथा॥
अब तवशिर भुज जम्बुक खाहीं ❁ रामविमुख यहअनुचित नाहीं॥
काल विवशपति कहा न माना ❁ अगजगनाँथमनुज करि जाना॥

छंद–जानेउमनुजकरि दनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं
ज्यहि नमतशिवब्रह्मादिसुरपियभजेउ नाकरुणामयं॥
आजन्मते परद्रोहरत पापौघमय तव तनु अयं॥
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥

दोहा–अहहनाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन॥
मुनि दुर्लभ जो परमगति,तुमहिं दीन्ह भगवान २५५॥

मन्दोदरीवचन सुनि काना ❁ सुर मुनिसिद्धसबहिं सुख माना॥
अज महेश नारद सनकादी ❁ जे मुनिवर परमारथवादी॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी ❁ प्रेम मगन सब भये सुखारी॥
रोदन करत विलोकेउ नारी ❁ गये विभीपण मन दुख भारी॥
बन्धुदशा देखत दुख भयऊ ❁ तब प्रभुअनुजहिआयसु दयऊ॥
लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझाये ❁ सहितविभीषण प्रभु पहँ आये॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका ❁ करहु क्रिया परिहरिसब शोका॥

१ भूमि। २ श्रीसूर्यनारायण। ३ अनेकब्रह्माण्ड चराचरके स्वामी। ४ पापोंका समूह। ५ महावेत्ता ब्रह्मज्ञानी। ६ त्याग।

कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी ❀ विधिवत देश काल गतिजानी॥
दोहा-मयतनयादिक नारिसब, देइँ तिलांजलि ताहि॥
भवन गईं रघुवीरगुण, गण वरणति मनमाहि॥२५६॥
आइ विभीषण पुनि शिरनावा ❀ कृपासिंधु तब अनुज बुलावा॥
तुम कपीश अंगद नल नीला ❀ जाम्बवन्त मारुतसुत शीला॥
सब मिलि जाहु विभीषणसाथा ❀ सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा॥
पितावचन मैं नगर न जाऊं ❀ आपुसरिस कपि अनुज पठाऊं॥
तुरत चले कपिसुनिप्रभुवचना ❀ कीन्ही जाइ तिलककी रचना॥
सादर सिंहासन बैठारी ❀ तिलक कीन्ह अस्तुतिअनुसारी॥
जोरि पाणि सबही शिरनाये ❀ सहित विभीषण प्रभु पहँ आये॥
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे ❀ कहि प्रियवचन सुखीसब कीन्हे॥
छंद-कीन्हे सुखी सबकहि सुवाणीबलतुम्हारेरिपुहयो॥
पायो विभीषण राज्य तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जोगाइहैं
संसारसिन्धु अपारपार प्रयासबिनु तरिजाइहैं॥ ७१॥
दोहा-सुनत रामके वचन मृदु, नाहिं अघातकपिपुंज॥
बारहि बार विलोकि मुख, गहे सकलपदकंज॥२५७॥
तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना ❀ लंका जाहु कहेउ भगवाना॥
समाचार जानकिहि सुनावहु ❀ तासु कुशललैतुम चलिआवहु॥
तब हनुमान नगर महँ आये ❀ सुनि निशिचरी निशाचर धाये॥
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही ❀ जनकसुता दिखाय पुनिदीन्ही॥
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा ❀ रघुपतिदूत जानकी चीन्हा॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❀ कुशल अनुज मरु सेनसमेता॥
सब विधि कुशलकोशलाधीशा ❀ मातु समर जीत्यो दशशीशा॥
अविचल राज्य विभीषण पावा ❀ सुनि कपिवचन हर्ष उरछावा॥

७ १ आज्ञा। २ भाई। ३ हाथ। ४अनुकम्पानतापको। ५ श्रम। ६ मधुर। ७ चरण।

छंद--अतिहर्षमनतनुपुलकलोचनसजलपुनिपुनिकहरमा।
कादेउँतोहिंत्रैलोक्यमहँकपिकिमपिनहिंवाणीसमा॥
पुनमातु मैं पायउँ अखिलजगराज्यआजुनसंशयं॥
रण जीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामि रामनिरामयं७२

दोहा—सुन सुत सद्गुण सकलतव, हृदयबसेंहनुमन्त॥
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥२५८॥

अब सोइ यतन करहुतुमताता ❀ देखौं नयन श्याम मृदुगाता॥
तब हनुमन्त राम पहँ आई ❀ जनकसुता कर कुशल सुनाई॥
सुनि बाणी पतंगकुलभूषण ❀ बोलि लिये कपिराज विभीषण॥
मारुतसुतके संग सिधावहु ❀ सादर जनकसुता लै आवहु॥
तुरतहि सकल गये जहँ सीता ❀ सेवहिं सब निशिचरीविनीता॥
वेगि विभीषण तिनहिंसिखावा ❀ सादर तिन सीतहि अन्हवावा॥
दिव्यवसन भूषण पहिराये ❀ शिबिका रुचिरसाजिपुनिल्याये॥
तेहि पर हर्षि चढी वैदेही ❀ सुमिरि राम सुखधाम सनेही॥
वेतपाणि रक्षक चहुँपासा ❀ चले सकल मन परम हुलासा॥
संग लिये त्रिजटा निशिचरी ❀ चली राम पहँ सुमिरत हरी॥
देखन भालु कीश बहु धाये ❀ रक्षक कोटि निवारण आये॥
कह रघुवीर कहा मम मानहु ❀ सीतहि सखा पयादेहि आनहु॥
देखहिं कपि जननीकी नाईं ❀ विहँसि कहा रघुवीर गुसाईं॥
सुनि प्रभुवचन भालुकपि हरषे ❀ नभते सुरन सुमन बहु बरषे॥
सीतहि प्रथम अग्नि महँ राखी ❀ प्रगट कीन्ह चह अन्तरसाखी॥

दोहा—तेहि कारण करुणाअयन, कहे कछुक दुर्वाद॥
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥२५९॥

प्रभुके वचन शीश धरि सीता ❀ बोली मन क्रम वचन पुनीता॥
लक्ष्मण होहु धर्मके नेगी ❀ पावक प्रगट करहु तुम वेगी॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी बानी ❀ विरह विवेक धर्म नीति सानी॥

---

१ आमय षड्विकार जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा, मृत्यु। २समीचीन। ३ लक्ष्मणजी। ४ विभीषणके चोपदार। ५ अग्नि। ६ ज्ञान। ७ भीति।

लोचन सजल जोरि कर दोऊ * प्रभुसन कछु कहिसकतनओऊ॥
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये * पावक प्रगट काठ बहु लाये॥
प्रबल अनल बिलोकि वैदेही * हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही॥
जो मन क्रम वच मम उरमाहीं * तजि रघुवीर आन गति नाहीं॥
तौ कृशानु सबकी गति जाना * मोकहँ होहु श्रीखण्डसमाना॥

छं-श्रीखंडसमपावकप्रकटकियसुमिरिप्रभुतेहिमहँचली
जय कोशलेश महेशवन्दित चरणरज अति निर्मली॥
प्रतिबिम्ब अरु लौकिक कलंक प्रचण्ड पावक महँजरे
प्रभुचरित काहु न लखेउ सुरमुनिसिद्धसबदेखहिंखरे
तब अनल भूसुररूप करगहि सत्यश्रीश्रुतिविदितजो
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनिसो॥
सोइ राम बामविभागराजितरुचिरअति शोभा भली॥
नवनीलनीरजनिकटमानहुँकनकपंकजकीकली ७९

दोहा-हर्षिसुमन वर्षहिं विबुध, बाजहिंगगन निसान॥
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढ़ी विमान॥२६०॥
श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार॥
देखि भालु कपि हर्षेउ, जयरघुपतिसुखसार॥२६१॥

तब रघुपति अनुशासन पाई * मातलि चले चरण शिर नाई॥
आये देव सदा स्वारथी * बचन कहहिं जनु परमारथी॥
दीनबंधु दयालु रघुराया * देव कीन्ह देवनपर दाया॥
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी * निज अघ गयउ कुमारगगामी॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी * सदा एक रस सहज उदासी॥
अकल अगुण अनघअनामय * अजित अमोघ एक करुणामय॥
मीन कमठ सूकर नरहरी * बामन परशुराम वपुधरी॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा * नाना तनु धरि तुमहिं नशावा॥

१ नेत्रोंमें जल भरा है। २ चन्दन। ३ अग्नि ब्राह्मणका रूप धरके। ४ इन्द्रका सारथी। ५ परमार्थ कही परमअर्थ श्रीरामचन्द्र स्वरूप परब्रह्म प्रताप ऐश्वर्य तेज कृपा परमदिव्य दैवता वर्णनकरतेहैं। ६ कलारहित। ७ तामस, राजस, सात्विकतेपरे।

रावण पापमूल सुरद्रोही ❀ काम क्रोध मद रति अति कोही॥
अधम शिरोमणि तवपद पावा ❀ यह हमरे मन अचरज आवा॥
हम देवता परम अधिकारी ❀ स्वारथरति तव भक्ति बिसारी॥
भव प्रभाव सन्तत हम परे ❀ अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे॥
दोहा—करि विनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अतिशयप्रेमसरोजविधि, अस्तुति करत बहोरि॥२६२॥
तोटकछंद-जयरामसदासुखधामहरे, रघुनायकसायकचापधरे।
भववारणदारुणसिंहप्रभो, गुणसागरनागरनाथविभो।
तनुकामअनेकअनूपछबी, गुणगावतसिद्धमुनीन्द्रकवी।
यशपावनरावननागमहा, खगनाथयथाकरिकोपगहा॥७५
जनरंजन भंजन शोक भयं, गतक्रोधसदाप्रभुबोधमयं।
अवतार उदार अपारगुणं, महिभार विभंजनज्ञानघनं।
अजव्यापकमेकमनादिसदा, करुणाकररामनमामिमुदा।
रघुवंशविभूषणदूषणहा, कृतभूपविभीषणदीनरहा॥७६
गुणज्ञाननिधानअमानअजं, नितरामनमामिविभुंविरजं।
भुजदण्डप्रचण्डप्रतापबलं, खलवृन्दनिकन्दमहाकुशलं।
बिनुकारण दीनदयालुहितं, छबि धामनमामिरमासहितं।
भवतारणकारणकाजपरं, मनसम्भवदारुणदोषहरं॥७७
शरचारुमनोहर तूणधरं, जलजारुण लोचन भूपवरं॥
सुखमन्दिरसुन्दर श्रीरमनं, मदमारमहाममताशमनं।
अनवद्य अखंडअगोचरगो, सबरूपसदासबहोइनसो।
इतिवेदवदन्तिनदन्तकथा, रविआतपभिन्नअभिन्नयथा॥७८
कृतकृत्यविभो सब बानरये, निरखन्ततवाननसादरये।
धृकजीवन देव शरीरहरे, तव भक्ति बिना भवभूलि परे॥

१ सर्वोपरिश्रेष्ठ अतिप्रवीण। २ जनोंके आनन्दकर्त्ता। ३ स्थान। ४ [illegible]-धंहो। ५ मायाते रहितहो। ६ प्रवीण। ७ योग वैराग्य, ज्ञान ध्यान, समाधिइत्यादिकका अभिमान। ८ नाशकर्ता। ९ वाणीतेपरेहो। १० तेज। ११ कृतार्थ। १२ ऐश्वर्य १३ प्रसन्न।

अब दीनदयालुदयाकरिये, मति मोरिविभेदकरीहरिये ॥
जिहितेविपरीतक्रियाकरिये, दुखमेंसुखमानसुखीचरिये ७९ ॥
खलखण्डनमण्डनरम्यक्षमा, पदपंकजसेवितशम्भु उमा ॥
नृपनायक दे वरदानमिदं, चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं ॥

दोहा–विनय कीन्ह बहुभांति विधि, प्रेमप्रफुल्लितगात ॥
वदन विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥ २६३ ॥

तिहि अवसर दशरथतहँ आये ❀ तनय विलोकिनयन जल छाये ॥
सहितअनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा ❀ आशिर्वाद पिता तब दीन्हा ॥
तातसकल तव पुण्य प्रभाऊ ❀ जीतेउ अजय निशाचर राऊ ॥
सुनि सुतवचन प्रीतिअति बाढी ❀ नयन सलिल रोमावलि ठाढी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितै पितहि दीन्हेउ दृढ ज्ञाना ॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा ❀ दशरथ भेद भक्ति मन लावा ॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं ❀ तिन्हकहँ राम भक्ति निज देहीं ॥
बार बार करि प्रभुहि प्रणामा ❀ दशरथ हर्षि गये निजधामा ॥

दोहा–अनुजजानकी सहित प्रभु, कुशलकोशलाधीश ॥
छवि विलोकि मनहर्षि अति, अस्तुति कर सुर ईश २६४

तोमरछंद–जय राम शोभाधाम, दायकप्रणतविश्राम ॥
धृत तूण वर शर चाप, भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि, मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ, भये देवसकलसनाथ ८१ ॥
जय हरण धरणीभार, महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल, किये यातुधान बिहाल ॥
लंकेश अति बलगर्व, किये वश्य सुर गन्धर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खगनाग, हठि पन्थ सबके लाग ॥ ८२ ॥

१ दानव राक्षस। २ सम्पूर्ण भुवनके शृंगार। ३ स्वरूप। ४ जो त्रिवीरि मांतिव योग्यनहीं। ५ पानी। ६ शरणागत। ७ तरकस। ८धनुर्बाण। ९रावण।

पर द्रोह रत अति दुष्ट, पायो सो फल पापिष्ठ ॥
अब सुनहु दीनदयालु, राजीव नयन विशाल ॥
मोहिं रहा अति अभिमान, नहिं कोउ मोहिसमान ॥
अब देखि प्रभु पदकंज, गत मानप्रद दुखपुंज ॥ ८३ ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव, अव्यक्त जिहि श्रुतिगाव ॥
मोहिं भाव कोशलभूप, श्रीराम सगुण स्वरूप ॥
वैदेहि अनुज समेत, मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निजदास, दे भक्ति रमानिवास ॥ ८४ ॥
छं०-दे भक्ति रमा निवासत्रासहरण शरणसुखदायकं
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्द्व भंजन मनुज तनु अतुलितबलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्यराम नमामिकरुणाकोमलं ॥८५॥
दोहा-अब करिकृपाबिलोकिमोहिं, आयसुदेहुकृपाल ॥
काह करौं सुनि प्रिय वचन, बोले दीनदयाल ॥२६५॥
सुनु सुरपति कपि भालु हमारे ❀ परे भूमि निशिचरके मारे ॥
ममहित लागि तजे इन प्राना ❀ सकल जिआउ सुरेश सुजाना ॥
सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी ❀ अतिअगाध जानहिंमुनिज्ञानी ॥
प्रभुचह त्रिभुवन मारि जिवाई ❀ केवल शक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधावर्षि कपि भालु जिआये ❀ हर्षि उठे सब प्रभु पहँ आये ॥
सुधा वृष्टि भइ दुहु दल ऊपर ❀ जिये भालु कपिनहिं रजनीचर ॥
रामाकार भये तिन्हके मन ❀ गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन ॥
सुर अंशिकसबकपिअरुरीछा ❀ जिये सकल रघुपतिकी इच्छा ॥
राम सरिस को दीन हितकारी ❀ कीन्हे मुक्त निशाचर झारी ॥
खल मल धाम काम रतरावण ❀ गति पाई जो मुनि वर पावन ॥
दोहा-सुमन वर्षि सब सुर चले, चढिचढिरुचिर विमान ।

१ मनपद अहङ्य । २ वेद। ३ जनममर७,णे नाशकर्ता ।४ इन्द्र।५ अमृतकीवर्षा।६ राक्षस

देखि सुअवसर राम पहँ,आये शम्भुसुजान ॥२६६॥
परमप्रीतिकरजोरियुग, नयननलिन भरिबारि ॥
पुलकिततनुगदगदगिरा,विनयकरतत्रिपुरारि२६७॥
छंद-मामभिरक्षयरघुकुलनायक, धृतवरचापरुचिरकरसायक ॥
मोहमहा घन पटल प्रभंजन, संशयविपिनअनलसुररंजन ॥
अगुणसगुणगुणमंदिर सुंदर, भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर ॥
कामक्रोधमद गज पंचानन, वसहुनिरन्तर जनमनकानन८६ ॥
विषय मनोरथ पुंज कंजवन, प्रबल तुषार उदार पारमन ॥
भव वारिधि मन्दर परमन्दर, वारय तारय संसृतिदुस्तर ॥
श्यामगात राजीव विलोचन, दीनबन्धु प्रणतारत मोचन ॥
अनुजजानकीसहित निरन्तर, बसहु रामनृप ममउरअन्तर ॥
मुनिरंजनमहिमण्डलमण्डनं, तुलसिदासप्रभुत्रासविखण्डनं ॥
दोहा-नाथ जबहिं कोशलपुरी,होइहि तिलक तुम्हार॥
तबआउबहमसुनहुप्रभु,देखन चरित उदार॥२६८॥
करि विनती जब शम्भु सिधाये ❀ तब प्रभु निकट विभीषण आये॥
नाइ चरण शिर कह मृदुवाणी ❀ विनय सुनिय मम शारँगपाणी॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा ❀ पावन यश त्रिभुवन विस्तारा ॥
दीन मलीन हीन मति जाती ❀ मोपर कृपा कीन्ह बहु भाँती ॥
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे ❀ मर्ज्जन करिय सकलश्रम छीजे॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा ❀ देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा ॥
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय ❀ पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय॥
सुनत वचन मृदु दीनदयाला ❀ सजलभये हरि नयन विशाला॥
दोहा-तोरकोश गृह मोर सब, सत्य वचनसुनुतात ॥
दशाभरतकीसुमिरिमोहिं,पलककलपसमजात२६९
तापस वेष शरीरकृश, जपैं निरन्तर मोहिं ॥

१ कमलनेत्र । २ घनमेघ । ३ सिंह । ४ जन्ममरण । ५ शृंगार ६ विशेषखण्डनकर्त्ता
७ पवित्र । ८ स्नान । ९ खजाना । १० आनन्दसह । ११ दूबर ।

देखौं वेगिसोयतनकरि, सखा निहोरों तोहिं ॥ २७० ॥
जो जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊं वीर ॥
प्रीतिभरतकीसमुझिप्रभु, पुनि पुनिपुलक शरीर २७१
करहुकलपभरिराज्यतुम, मोहिंसुमरचहु मनमाहिं ॥
पुनिममधामसिधारचउ, जहाँ संतसब जाहिं॥२७२॥
सुनत विभीषण वचन रामके ❀ हर्षि गहे पद कृपाधामके ॥
वानर भालु सकल हर्षाने ❀ प्रभुपद गहि गुणविमल बखाने॥
बहुरि विभीषण भवन सिधाये ❀ मणिगण वसन विमान भराये॥
ले पुष्पक प्रभु आगे राखा ❀ हँसिकै कृपासिन्धु अस भाषा ॥
चढ़िविमान सुन सखा विभीषण ❀ गगन जाइ वर्षहु पट भूषण ॥
नभ पर जाइ विभीषण तबहीं ❀ वर्षि दिये पट भूषण सबहीं ॥
जो जेहि मन भावे सो लेहीं ❀ मणिमुखमेलि डारि कपि देहीं॥
हँसत राम सिय अनुजसमेता ❀ परम कौतुकी कृपानिकेता ॥
दोहा-ध्यान न पावहिं जासुमुनि, नेति नेति कह वेद॥
कृपासिन्धुसोइकपिनसों, करत अनेक विनोद२७३॥
उमा योग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ॥
रामकृपा नहिं करहिंतस, जसनिःकेवल प्रेम॥२७४॥
भालु कपिन पट भूषण पाये ❀ पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये॥
नाना जिंनिसि देखि प्रभु कीशा ❀ पुनिपुनिहँसतकोशलाधीशा ॥
चिते सबनि पर कीन्ही दाया ❀ बोले मधुर वचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा ❀ तिलकविभीषणकहँपुनि सारा॥
निज निजगृहअब तुम सब जाहू ❀ सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू ॥
वचन सुनत प्रेमाकुल वानर ❀ जोरि पाणि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सबसोहा ❀ हमरे हिय उपजे सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि कियेसनाथा ❀ तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनि प्रभु वचनलाजहम मरहीं ❀ मशक कबहुँखगपतिहितकरहीं॥

१ चौदहवर्षकीमर्यादा । २ कपड़े । ३ आकाश । ४ वस्त्र । ५ गहना । ६ काले, नीले, हरित, लाल, श्वेत, पीले, लघु, मध्य, दीर्घ ।

देखि राम दुख वानर ऋच्छा ❀ प्रेम मगन नहिं गृहकी इच्छा ॥
दोहा-प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, रामरूपउररराखि ॥
हर्ष विषाद समेत तब, चले विनय बहु भाषि ॥२७५॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ॥
सहित विभीषण अपरजे, यूथपअतिबलवान॥२७६॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश, भरि भरिलोचनवारि ॥
सन्मुख चितवहि राम तन, नयन निमेषनिवारि २७७
अतिशय प्रीति देखि रघुराई ❀ लीन्हे सकल विमान चढाई ॥
मन महँ विप्र चरण शिरनावा ❀ उत्तर दिशहि विमान चलावा ॥
चलत विमान कोलाहल होई ❀ जय रघुवीर कहैं सब कोई ॥
सिंहासन अतिउच्च मनोहर ❀ सिय समेत बैठे प्रभु तापर ॥
राजत राम सहित भामिनी ❀ मेरु शृङ्ग जनु घनदामिनी ॥
रुचिर विमान चलाअति आतुर ❀ कीन्हीं सुमन वृष्टि हर्षे सुर ॥
परमसुखद चलि त्रिविध बयारी ❀ सागर सुरसरि निर्मल वारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा ❀ मन प्रसन्न निर्मल आकाशा ॥
कह रघुवीर देख रण सीता ❀ लक्ष्मण हत्यो इहाँ इंद्रजीता ॥
अंगद हनूमानके मारे ❀ रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई ❀ इहाँ हतेउँ सुर मुनि दुखदाई ॥
दोहा-सुन्दरि सेतु देखु यह, थापेउँ शिव सुखधाम ॥
सीता सहित कृपायतन, शम्भुहि कीनप्रणाम ॥२७८॥
जहँ जहँ कृपासिन्धु वन, कीन्ह बास विश्राम ॥
सकल देखायेजानकिहि, कहि कहि सबकेनाम २७९
सपदि विमानतहाँचलिआवा ❀ दण्डकवन जहँ परम सुहावा ॥
श्लोक-अत्रपूर्वंमहादेवःप्रसादमकरोद्विभुः एकतत्तुहरयतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः
सेतुबन्धइतिख्यातंत्रैलोक्येनचपूजितं ॥ एतत्पवित्रंपरमंमहापातकनाशनम् ॥

---

१ सीता । २ बिजली। ३मेघनाद ।

कुम्भजादि मुनिनायक नाना ❀ गये राम सबके अस्थाना ॥
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा ❀ आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा ❀ चला विमान तहाँते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई ❀ यमुना कलिमल हरणि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ❀ राम कहा प्रणाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा ❀ देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि बेनी ❀ हरण शोक सुरलोक निशेनी ॥
देखी अवधपुरी अति पावनि ❀ त्रिविधताप भव दाप नशावनि ॥

दोहा–तबरघुनन्दन सियसहित, अवधहिकीनप्रणाम ॥
सजल विलोचनपुलकतनु, पुनिपुनिहर्षितराम २८० ॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ॥
कपिनसहितमहिसुरन्हकहँ, दानविविधविधिदीन्ह ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ❀ धरि द्विजँ रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिकुशल हमारि सुनावहु ❀ समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ❀ तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ ॥
नानाविधि पूजा मुनि कीन्ही ❀ अस्तुतिकरिपुनि आशिषदीन्ही ॥
मुनिपदवन्दि युगल कर जोरी ❀ चढि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये ❀ नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लाँघि यान जब आवा ❀ उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ❀ बहु प्रकार करि चरणन परी ॥
दीन्ह अशीष मुदित मन गंगा ❀ सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल ❀ आवानिकट परम सुख संकुल ॥
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही ❀ परेउ अवनि तनु सुधिनहिंतेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई ❀ हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥

छं–लियेहृदयलाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप पूछी कुशल सोकरि वीनती ॥

१ अतिशीघ्र-श्रेष्ठ । २ अधिभूत, अध्यात्म, अधिदैवत । ३ गंगा, यमुना, सरस्वतीकासंगम। ४ ब्राह्मणका रूप । ५ पूर्ण प्रेमभरे । ६ पृथ्वी ।

अब कुशल पदपंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्यजे ॥
सुखधाम पूरणकाम रामनमामि राम नमामिते॥७८॥
सब भाँतिअधम निषादसो हरि भरतज्यौंउरलायऊ॥
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह वश बिसरायऊ ॥
यह रावणारि चरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान करसुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा७९
दोहा-समर विजय रघुवीरके,सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजयविवेक विभूतिनित,तिन्हहिं देहिंभगवान॥२८२॥
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु विचार ॥
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिंकछुआनअधार॥२८३॥

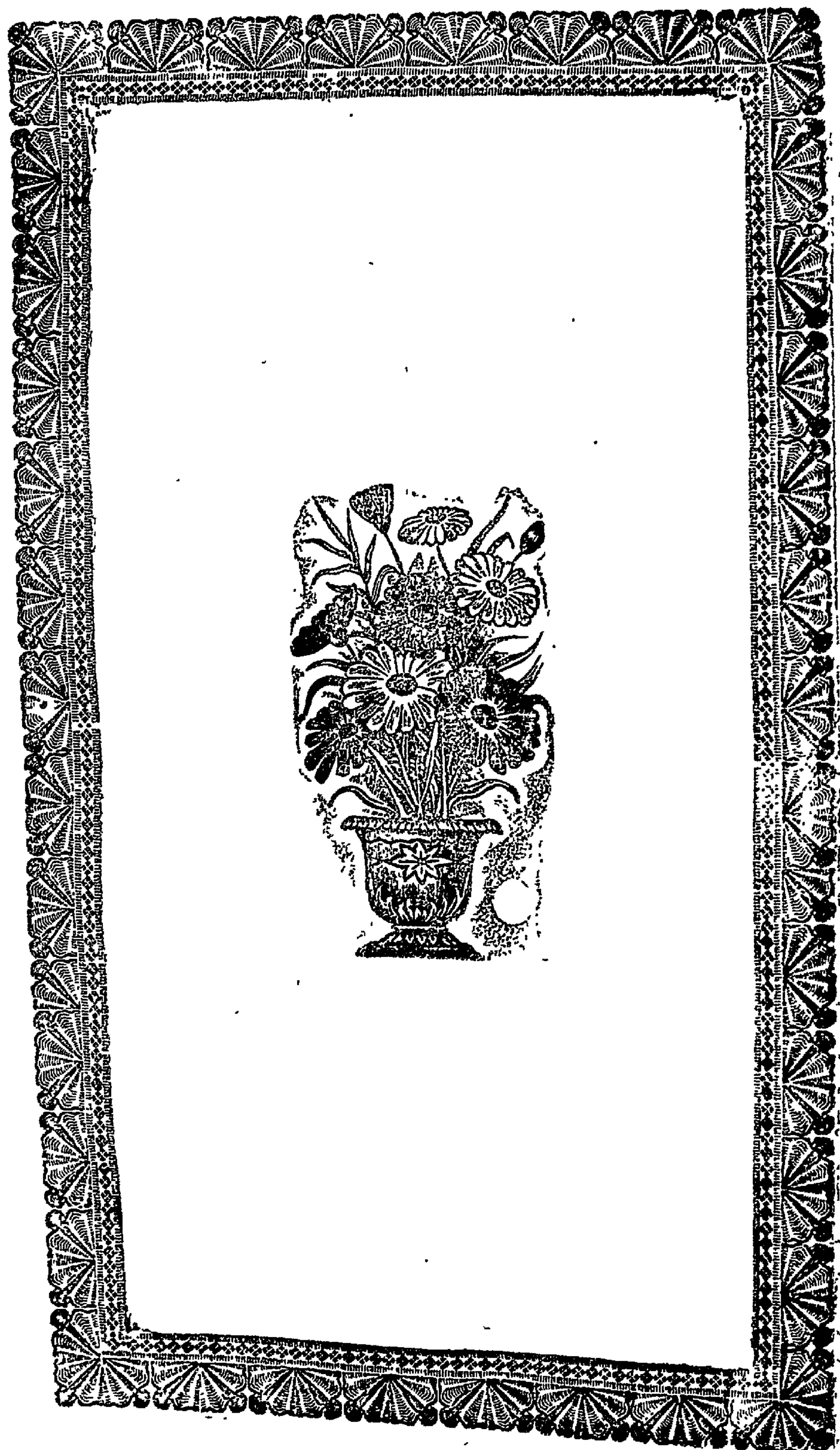
इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामषष्ठःसोपानःसमाप्तः ॥ ६ ॥

इदंतुलसीकृतरामायणे लङ्काकाण्डं मुम्बय्यां
श्रीकृष्णदासात्मजेन खेमराजेचनस्वकीये
"श्रीवेंकटेश्वर"मुद्रायन्त्रालयेंऽकितं

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज-श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर"छापाखाना.
(बम्बई)

---

१ रामचन्द्र । २ प्रीतिदाता । ३ षड्विकारहरता ।



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

रामायण

उत्तरकाण्डम् ७.

सम्पूर्णक्षेपकोंसहित ।

यह ग्रन्थ

पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीसे शुद्ध कराकर

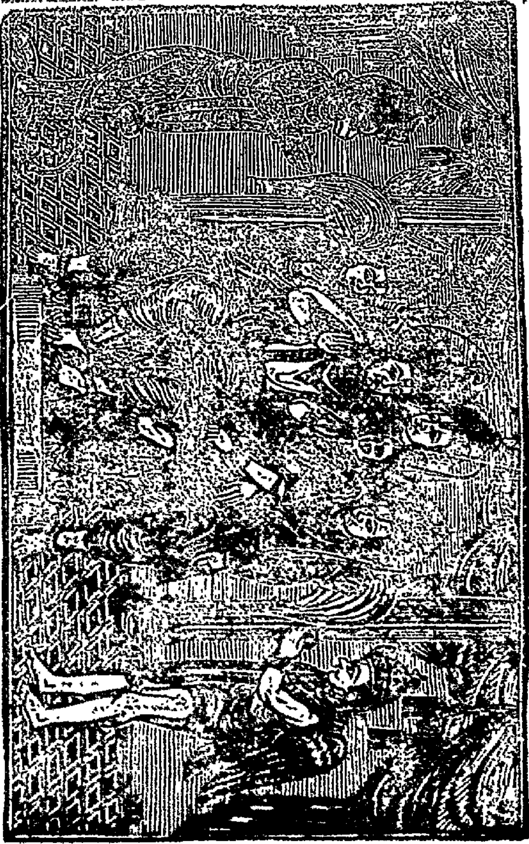
खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

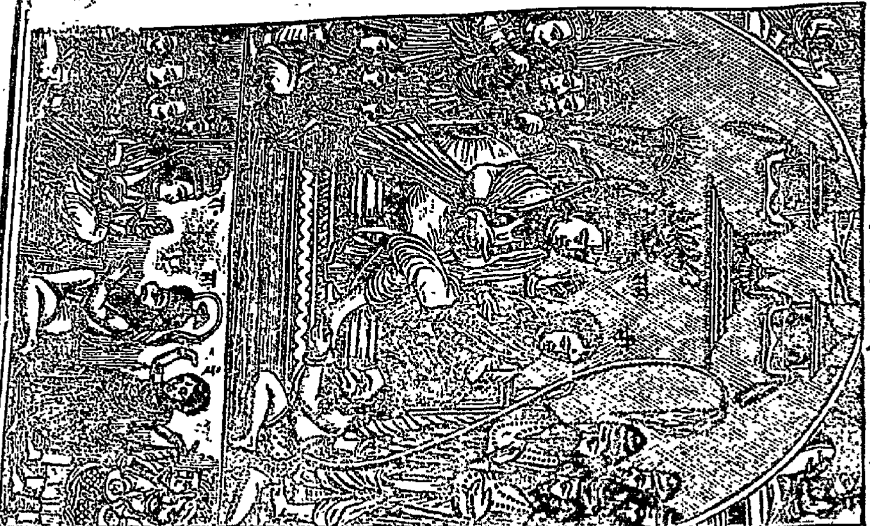
मुद्रितकर प्रकट किया.

❀ श्रीरामपंचायतन ❀



❀ उत्तरकाण्डम् ❀

चौ०—जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं । अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥



दोहा—वार वार वर मांगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पद सरोज अन पावनी, भक्ति सदा संतसंग ॥

श्रीः।

अथ रामायण उत्तरकाण्डम्।

श्रीवेङ्कटेशाय नमः।

श्लोक-केकीकण्ठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्ज चिह्नंशोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्न म्॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुनासेव्य मानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारू ढरामम्॥१॥ कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौ पद्मयोनि शितिकंठवन्दितौ॥जानकीकरसरोजलालितौ चिंत कस्य मनभृङ्गसंगिनौ॥२॥ इंदुकुंददरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्॥ कारुणीकक

दोहा-पूर्णेन्दु सम जग सुखद, रामचंद्र रघुराज॥
निर्मल मूरति अवधपुर, रही विराजसमाज॥१॥
कर दंडवत सप्रेमसे, चरण हियेमें धार॥
उत्तरको शोधन करहुँ, कछु निजमति अनुसार॥२॥

श्लोकार्थ-मोरके कंठकी कान्तिके समान नीलवर्ण देवताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके चरणकमलके जिनके हृदयमें चिह्न हैं शोभाके निधि पीतवस्त्रधारण किये कमलसे नेत्र सदाप्रसन्न रहनेवाले हाथमें धनुष बाण लिये कपि समूहोंसे युक्त भाइयोंसे सेवित जानकीके पति पुष्पकपर बैठेहुये स्तुतियोग्य रामकी मैं वंदना करताहूं॥१॥

रामचंद्र कौशलपुरीके ईश्वर जिनके युगल चरण कमल ब्रह्मा शंकरसे वंद-नीयहैं जो जानकीके हस्तकमलसे प्यार किये हुयेहैं और ध्यान करनेवाले दासोंके मनभृंगके संगीहैं तिनकी वंदना करताहूं॥२॥

चंद्रमा कुंदके पुष्प शंखके समान गौर वर्ण गिरिजाके पति इच्छित

लकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ॥ ३ ॥

दोहा-रहा एक दिन अवधिकर, अतिआरत पुरलोग।
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर,कृशतनु रामवियोग॥ १ ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर॥
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँफेर॥ २ ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ॥
आये प्रभु सिय अनुज युत,कहन चहतअसकोइ॥३॥
भरत नयन भुजदक्षिण, फरकहिं बारहिं बार॥
जानि शकुन मन हर्ष अति, लागे करन विचार॥ ४॥

रहा एक दिन अवधि अधारा ❀ समुझत मन दुख भयउ अपारा॥
कारण कवन नाथ नहिं आये ❀ जानिकुटिल प्रभुमोहिंविसराये॥
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी ❀ राम पदारविन्द अनुरागी॥
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा ❀ ताते नाथ संग नहिं लीन्हा॥
जोकरणी समुझैं प्रभु मोरी ❀ नहिं निस्तार कल्प शत कोरी॥
जन अवगुण प्रभुमान न काऊ ❀ दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ॥
मोरे जिय भरोस दृढसोई ❀ मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई॥
बीते अवधि रहैं जो प्राना ❀ अधमकवनजग मोहिं समाना॥

दोहा-राम विरह सागर महँ, भरत मगन मन होत॥
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत॥ ५॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात॥
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात॥६॥

सिद्धिके दाता करुणारससे भरे उत्तम कमलके समान नेत्र और कामके जला नेहारे शिवजीको नमस्कार करताहूं ॥ ३ ॥

१ मर्यादा चौदहवर्षकी। २ दूबर। ३ विक्षेप। ४ कोमल। ५ डूबत। ६ नौका। ७ टपकतेहैं। ८ कमल।

देखत हनूमान अति हर्षे ❁ पुलकि गात लोचन जलवर्षे ॥
मनमहँ बहुत भाँति सुखमानी ❁ बोले श्रवण सुधासम बानी ॥
जासु विरह शोचहु दिन राती ❁ रटहु निरन्तर गुण गण पाती ॥
रघुकुलतिलकसुजनसुखदाता ❁ आवत कुशल देव मुनित्राता ॥
रिपुरणजीति सुयश सुरगावत ❁ सीता अनुजसहित प्रभु आवत ॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा ❁ तृषावन्त जनु पाय पियूषा ॥
को तुम तात कहाँते आये ❁ मोहिं परमप्रिय वचनसुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना ❁ नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर ❁ सुनत भरत भेंटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेमनहिं हृदय समाता ❁ नयन श्रवतजलपुलकितगाता ॥
कपितव दरश सकल दुखबीते ❁ मिले आजु मोहिं राम सप्रीते ॥
बार बार पूँछी कुशलाता ❁ तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता ॥
यहि संदेश सरिस जग माहीं ❁ करि विचार देखा कछु नाहीं ॥
नाहिन उऋण तात मैं तोहीं ❁ अब प्रभु चरितसुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमान नाइ पदमाथा ❁ कहेसिसकलरघुपतिगुणगाथा ॥
कहु कपि कबहुँ, कृपालु गुसाईं ❁ सुमिरत मोहिं दासकी नाईं ॥

छंद—निजदास ज्योंरघुवंशभूषणकबहुँ ममसुमिरनकर्‌यो ॥
सुनिभरतवचनविनीतअतिकपिपुलकतनुचरणनपर्‌यो ॥
रघुवीरनिजमुखजासुगुणगणकहतअगजगनाथसो ॥
काहे न होइ विनीत परम पुनीत सद्गुण गाथसो ॥१॥

दोहा—रामप्राणप्रिय नाथ तुम, सत्यवचन मम तात ॥
पुनि पुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात ॥७॥

सो०—भरत चरण शिरनाइ, तुरतगये कपि राम पहँ ॥
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यानचढ़ि ॥१॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये ❁ समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई ❁ आवत नगर कुशल रघुराई ॥

---

१ शरीर । २ अमृतमय । ३ रक्षक । ४ सुधा । ५ सेवक ।

सुनत सकल जननी उठिधाई ❀ कहि प्रभुकुशल भरतसमुझाई॥
समाचार पुरवासिन पाये ❀ नर अरु नारि हर्षि उठि धाये॥
दधि दूर्वा रोचन फल फूला ❀ नव तुलसीदल मंगलमूला॥
भरि भरि हेम थार वर भामिनि ❀ गावत चलीं सिन्धुरगामिनि॥
जो जैसे तैसे उठि धावहिं ❀ बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं॥
एक एक सन पूछहिं धाई ❀ तुम देखे दयालु रघुराई॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी ❀ भई सकल शोभाकी खानी॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा ❀ बहे सुहावनि त्रिविध समीरा॥
दोहा–हर्षित गुरु पुरजन अनुज, भूसुर वृन्द समेत॥
चले भरत अति प्रेममन, सन्मुख कृपानिकेत॥ ८॥
बहुतक चढीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान॥
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमंगलगान॥ ९॥
राकाशशि रघुपति पुरी, सिन्धु देखि हर्षान॥
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान॥ १०॥
रविकुलकमलदिवाकर आवत ❀ नगर मनोहर कपिनदेखावत॥
सुन कपीश अंगद लंकेशा ❀ पावनिपुरी रुचिर यह देशा॥
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना ❀ वेद पुराण विदित जगजाना॥
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ ❀ यह प्रसंग जाने कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि ममपुरी सोहावनि ❀ उत्तरदिशि सरयू बह पावनि॥
जेमज्जहिं सो विनहिं प्रयासा ❀ मम समीप नर पावहिं वासा॥
अतिप्रिय मोहिं इहांके वासी ❀ मम धामदापुरी सुखरासी॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी वानी ❀ धन्य अवध जेहि राम बखानी॥
दोहा–आवत देखे लोग सब, कृपासिंधु भगवान॥
नगर निकट प्रभु आयउ, उतरे भूमि विमान॥ ११॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम कुबेर पहँ जाहु॥

१ माता। २ कंचनके थार। ३ गजगामिनी। ४वायु। ५पूर्णमासीकाचन्द्रमा। ६ पवित्र। ७ स्नानकरैं। ८ परिश्रम। ९ हमारे।

प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष विरह अति ताहु ॥ १२ ॥
आये भरत संग सब लोगा ❀ कृश तनु श्रीरघुवीर वियोगा ॥
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक ❀ देखे प्रभु महिधरि धनुशायक ॥
धाइधरे गुरुचरण सरोरुह ❀ अनुजसहितअतिपुलकिततनूरुह॥
भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया ❀ हमरे कुशल तुम्हारिहिं दाया ॥
सकलद्विजन कहँ नायउ माथा ❀ धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभुपदपंकज ❀ नवहिंजिनहिंशंकरसुरमुनिअज॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये ❀ बल करि कृपासिन्धु उरलाये ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढे ❀ नव राजीव नयन जल बाढे ॥

हरिगीतिका छंद ।

छं०राजीवलोचन श्रवतजलतनुललितपुलकावलिबनी
अति प्रेमहृदय लगाइ अनुजहिंमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी॥
प्रभु मिलत अनुजहिंसोह मोपहँजातनहिंउपमाकही ॥
जनु प्रेम अरु शृंगारतनु धरिमिलतबरसुखमालही ३॥
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि नआवई ॥
सुनि शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशलनाथआरत जानिजनदरशनदियो ॥
बूडतविरहवारिधिकृपानिधिकाढ़िमोहिंकरगहिलियो॥
"दोहा–सधन चोरममसुदितमन,धनीगहीजिमिफेंट ॥
तिमि सुग्रीव विभीषण, प्रभुहि भरतकी भेंट ॥१३॥"
पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ॥
लक्ष्मण भेंटे भरतपुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १४ ॥
भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे ❀ दुसह विरह सम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिरनावा ❀ अनुज समेत परमसुख पावा ॥
प्रभु विलोकि हरषे पुरबासी ❀ जनित वियोगविपतिसबनासी ॥

---

१ तनुके रोम खडे होगयेहैं । २ ब्रह्मा । ३ कमल । ४ शोभा ।

प्रेमातुर सब लोग निहारी ❀ कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमितरूप प्रकटे तेहि काला ❀ यथायोग्यमिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपादृष्टि सब लोग बिलोका ❀ किये सकल नरनारि बिशोका ॥
क्षणमहँ सबहिंमिले भगवाना ❀ उमा मर्म यह काहु न जाना ॥
यहिविधि सबहिं सुखी करिरामा ❀ आगे चले शीलगुणधामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाईं ❀ निरखि वत्स जनु धेनुलवाईं ॥

हरिगीतिकाछंद ।

जनु धेनु बालकवत्सतजिगृहचरनवनपरवशगईं ॥
दिन अन्त पुर रुखस्रवतथन हुंकारकरिधावतिभईं ॥
अति प्रेमप्रभुसबमातु भेंटी वचनमृदु बहुविधि कहे॥
गइविषमविपतिवियोगभवतिन्हहर्षसुखअगणितलहे ॥

दोहा–भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरण रतिजानि ॥
रामहि मिलत केकयी हृदयबहुतसकुचानि ॥१५॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले, हर्ष आशिष पाइ ॥
केकयि कहँपुनिपुनि मिले, मन कर क्षोभ न जाइ १६

सासुन सबहि मिली वैदेही ❀ चरणन लागि हर्ष अति तेही ॥
देहि अशीष पूंछि कुशलाता ❀ होइ अचल तुम्हारअहिवाता ॥
सब रघुपतिपदकमल बिलोकी ❀ मंगल जानि नयन जल रोकी ॥
कनकथार आरती उतारहिं ❀ बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नानाभाँति निछावरि करहीं ❀ परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनिरघुवीरहिं ❀ चितवहिंकृपासिन्धुरणधीरहिं ॥
हृदय विचारति बारहिं बारा ❀ कवन भाँति लंकापति मारा ॥
अतिसुकुमार युगलैं मम बारे ❀ निशिचर सुभट महाबलभारे ॥

दोहा–लक्ष्मणअरु सीतासहित, प्रभुहिविलोकहिंमात ॥
परमानन्द मगनमन, पुनिपुनि पुलकित गात॥ १७॥

१भगवान् कही षड्भग संयुक्त, ऐश्वर्य, धर्म यश श्री,वैराग्य,मोक्ष । २ सुहाग ।
३ सोनेके थार । ४ राम-लक्ष्मण । ।

लंकापति कपीश नल नीला ॥ जाम्बवंत अंगद शुभ शीला ॥
हनुमदादि सब बानर वीरा ॥ धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
भरत सनेह शील व्रत नेमा ॥ सादर सब वर्णहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगर वासिनकी रीती ॥ सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
पुनि रघुपति निजसखा बुलाये ॥ मुनिपद लागहु सबहिं शिखाये ॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे ॥ इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे ॥ भये समर सागर कहँ बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इनहारे ॥ भरतहुते मोहिं अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ॥ निमिषनिमिषउपजतसुखनये ॥

दोहा—कौशल्याके चरण युग, पुनि तिन नायउ माथ ॥
आशिष दीन्हीहर्षिहिय, तुमप्रियजिमिरघुनाथ ॥१८॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवनचले सुखकन्द ॥
चढे अटारिन्ह देखहिं, नगरनारि नर वृन्द ॥१९॥

कंचनकलश विचित्र सँवारे ॥ सबनिधरे सजि निज निज द्वारे ॥
बन्दनवार पताका केतू ॥ सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
बीथिन सकल सुगंधि सिंचाये ॥ गजमणि रचि बहु चौकपुराये ॥
नानाभाँति सुमंगल साजे ॥ हर्षि निशान नगर बहुबाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ॥ देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना ॥ युवती साजि करहिं कलगाना ॥
करहिं आरती आरत हरके ॥ रघुकुलकमलविपिनदिनकरके ॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना ॥ निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठग रहहीं ॥ उमा तासु गुण नरकिमिकहहीं ॥

दोहा—नारिकुमुदिनीअवधसर, रघुपति विरह दिनेश ॥
अस्त भये विकसित भई, निरखी रामराकेश ॥२०॥
होहिं शकुन शुभविविधविधि, बाजहिं गगननिसान ॥
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥२१॥

१ विभीषण । २ सुग्रीव । ३ जहाज । ४ पलपल । ५ अतिसघन । ६ गजमणि ।
७ गाना । ८ मनुजनान । ९ सूर्य । १० फूली । ११ चन्द्र ।

प्रभु जाना केकयी लजानी ❀ प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा ❀ पुनिनिजभवनगवन प्रभुकीन्हा॥
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ ❀ पुर नरनारि सुखी सब भयऊ ॥
गुरुवशिष्ठ द्विज लिये बुलाई ❀ आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन ❀ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठके वचन सुहाये ❀ सुनत सकल विप्रन मन भाये॥
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका ❀ जग अभिराम राम अभिषेका ॥
अब मुनिवर विलम्ब नहिं कीजे ❀ महाराज कहँ तिलक करीजे ॥
दोहा–जहँ तहँ धावन पठे पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ ॥
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनि शिर नायउ आइ ॥ २२ ॥
तब मुनि कहेउ सुमन्त्र सन, तुरत चले शिरनाइ ॥
रथ अनेक गज बाजि बहु, सकल सँवारे जाइ ॥ २३ ॥
अवधपुरी अति रुचिर बनाई ❀ देवन सुमन वृष्टि झरिलाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई ❀ प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये ❀ सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरतहँकारे ❀ निज कर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई ❀ भक्त वछल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ❀ शेषकोटिशत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिवराये ❀ मुनि अनुशासन पाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभुसाजे ❀ अंग अनंग कोटि छवि लाजे ॥
दोहा–सासुन सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ॥
दिव्य वसन वर भूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ ॥ २४ ॥
राम वाम दिशि शोभित, रमा रूप गुणखानि ॥
देखि सासु सब हर्षित, जन्म सफल निज जानि ॥ २५ ॥
सुन खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द ॥
चढ़ि विमानआये सकल, सुरदेखन सुखकन्द ॥ २६ ॥

१ आज्ञा । २ राज्यतिलक । ३ दूत । ४ आज्ञा । ५स्नान । ६श्रेष्ठ । ७ गहना ।

प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा ❀ तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रवि सम तेज बरणि नहिं जाई ❀ बैठे राम द्विजन शिरनाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई ❀ देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
वेदमंत्र द्विजवर उच्चारे ❀ नभसुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक वशिष्ठमुनि कीन्हा ❀ पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी ❀ बार बार आरती उतारी ॥
विप्रन दान विविध विधि दीन्हे ❀ याचक सकल अयाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं ❀ देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई ॥

छं०ह०–नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व किन्नर गावहीं ॥
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द मुनि सुर पावहीं ॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत जे ॥
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते ॥
सिय सहित दिनकर वंशभूषण कामबहुछबि सोहहीं ॥
नव अम्बुधर वरगात अम्बर पीत मुनि मन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे ॥
अंभोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखंत जे ॥६॥

दोहा–वह शोभा सुरसमाज सुख, कहत न बनै खगेश ॥
बर्णै शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश ॥ २७ ॥

अथ क्षेपक ॥

उठ्यो विभीषण तब सुखपाई ❀ रत्नमाल कर लई उठाई ॥
दीन्ह जलधि रावणको जोई ❀ पुनः विभीषण पाई सोई ॥
सोई रत्नमाल सुखकारी ❀ दीन्ह जानकीके गरडारी ॥
जासु ज्योति असभई विशाला ❀ सन्मुख लख न सकत महिपाला ॥
राज समूह अधिक तहँ सोहा ❀ तेहि विलोकि सबकर मन मोहा ॥
तेहि क्षण जनकसुता महारानी ❀ चितै राम तन मुनि मुसकानी ॥

१ अतिउत्कर्षहर्ष । २ नगारा । ३ बहुत । ४ मल । ५ विशाल अरुण कमल नयन जे

कह्यो कृपालु प्रिया सुन लीजे ❀ जो इच्छा जेहिको सो दीजे ॥
सुनत वचन तव जनकदुलारी ❀ सोई गलसे माल उतारी ॥
काहि देउँ यह हृदय विचारी ❀ मारुतसुतकी ओर निहारी ॥

दोहा-कृपादृष्टि लखि पवनसुत, हर्षि दंडवत कीन्ह ॥
रत्नमाल सो जानकी, डारि गरेमहँ दीन्ह ॥

महावीर मनमाहिं विचारी ❀ है कोइ गुण मालामें भारी ॥
परमानन्द प्रेम रस पागे ❀ मणियें सकल विलोकन लागे ॥
बिनु प्रकाश कछु और न तामें ❀ मन लागे भक्तनको जामें ॥
मणि भीतर कछु ह्वैहै सारा ❀ मुक्ता एक तोरि तव डारा ॥
ताके मध्य विलोकन लागे ❀ देख लोग अचरजमें पागे ॥
पुनि दूजो तोर्‌यो हनुमाना ❀ देख निसार तज्यो बलवाना ॥
इहि विधि तोरत क्रम क्रम मोती ❀ फिर अधिक दर्शक गण होती ॥
कहन लगे निज निज मन माहीं ❀ जो कोई अधिकारी नाहीं ॥
ताको ऐसी वस्तु नदीजे ❀ नहिंतो यही दशा लख लीजे ॥

दोहा-बोल उठ्योकोउनृपति यह, कहाकरतहनुमान॥
क्यों तोरतहो माल तुम, सुन्दर रत्न सुजान ॥

वचन सुनत कह मारुति वानी ❀ देखहुँ राम नाम सुखदानी ॥
नाम न यामें परत लखाई ❀ ताते तोरत डारत भाई ॥
कह कोउसकल वस्तुके माहीं ❀ राम नाम कहुँ सुनियत नाहीं ॥
कह मारुति न नाम जेहि माहीं ❀ सोतो काहु कामकी नाहीं ॥
बोलो सोइ सुनो बलधामा ❀ तुम तनु माहिं रामको नामा ॥
सुनत वचन कह पवनकुमारा ❀ निश्चय तनु हरि नाम उदारा ॥
असकहकपिनिजहृदयविदारा ❀ रोम रोम प्रभु नाम अपारा ॥
अंकित राम नाम सब ठाहीं ❀ लखि सब चकित भयेमनमाहीं ॥
पुष्पवृष्टि नभ जयति उचारी ❀ कृपादृष्टि रघुनाथ निहारी ॥

दोहा-अंग भयो पुनि कुलिश सम,उठ तुरंत भगवान॥
वारि विलोचन पुलकतन, हिय लाये हनुमान ॥

भयो तहाँ अचरज यह भारी ❀ देवन जय जय जयतिउचारी ॥

इति क्षेपक।

दोहा–भिन्न भिन्न अस्तुतिकरि, गेसुरनिजनिजधाम ॥
वन्दि वेषधरि वेदतब, आये जहँ श्रीराम ॥ २८ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ॥
लखानकाहूमर्म कछु, लगे करनगुणगान ॥ २९ ॥

प्रथम सामवेद बोल्यो ॥

छं०ह०गी०–जयसगुणनिर्गुणरूपरामअनूपभूपशिरोमने
दशकन्धरादिप्रचण्ड निशिचर प्रबल खल भुज बल हने
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुण दुख दहे ॥
जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्त शक्तिनमामहे ॥७॥१

पुनि यजुर्वेदबोल्यो ॥

तव विषय माया वश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ॥
भवपंथभ्रमितश्रमितदिवसनिशिकाल कर्म गुणनि भरे
जेहिनाथ करि करुणाविलोकहु त्रिविध दुख ते निर्वहे ॥
भव खेद छेदन दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामिहे ॥८॥२

छंदार्थ–हे अनूपरूप भूपशिरोमणे आपकी जयहो क्योंकि तुम्हारे सगुण निर्गुण रूपमें यह प्रधान भूपरूप है रावण आदि भयंकर राक्षसोंको अपनी भुजाओंके बलसे नाश करनेवाले हो मनुष्यका अवतार धारणकर संसारके भारको उतार दारुण दुःखके जलादेनेवाले हो दीनोंके पालनेवाले दयायुक्त शक्ति सहित आपको प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥

हे हरे तुम्हारी तीक्ष्णमायाके अर्थात् अविद्याके वशमें होकर सुर, असुर, नाग, नर और जड चैतन्य हैं ते भवके मार्गमें रात दिन घूमते हुए थक गये हैं इसपरभी उनके ऊपर काल कर्म गुणोंके अनुकूल बोझ धरा है हे नाथ जिनपर आप करुणा करके दृष्टि करते हो वोह तीनों प्रकारके दुःख अर्थात् काल कर्म गुणोंसे छूट जाते हैं हे जगत्के दुःख काटनेमें चतुर रामजी हमारी रक्षा करो हम आपको नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥

पुनि अथर्ववेदबोल्यो ॥

जेचरण शिव अज पूज्य रज शुभ परसि मुनिपत्नीतरी
नख निर्गता सुरवन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुशकंजयुत वन फिरत कंटक किनलहे
पदकंज द्वंद्व मुकुन्दराम रमेश नित्य भजामिहे ॥१।३
जे ज्ञानमान विमत्त तव भव हरणि भक्ति न आदरी ॥
तेपाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखतहरी ॥
विश्वासकरि सब आश परिहरि दास तव जे होरहे ॥
जपिनामतवविनुश्रमतरहिंभवनाथरामनमामिहे१०४

पुनि ऋग्वेदबोल्यो ॥

अव्यक्त मूलमनादि तरु त्वचचारि निगमागमभने ॥
षट्कन्ध शाखा पंच विंश अनेक पर्ण सुमनघने ॥

जिन चरणोंकी रजको शिव ब्रह्मा पूजन करते हैं और जिसको स्पर्शकर मुनिकी पत्नी तरगई और जिनके नखोंसे नमस्कार योग्य त्रैलोक्यपावनी गंगा निकली हैं और जिन चरणोंमें ध्वज कुलिश अंकुशका चिह्न हैं जिनमें कि वनोंके फिरनेसे कांटे आदिकोंसे चिह्न पडगये हैं वा कंटकिन कोल किरातोंने जो चरण पाये हैं हे लक्ष्मीपति राम आपके चिह्न मोक्षदेनेवाले दोनों चरणकमलोंका हम भजन करते हैं ॥ ३ ॥

जिन्होंने ज्ञानके मानसे मतवाले होकर तुम्हारी भक्तिका आदर नहीं कियाहै उन्हें हम देखते हैं कि सुरदुर्लभपदको पाकर फिरभी पतित होतेहैं और जो सब आशा छोड विश्वासकरके तुम्हारे दास होरहे हैं वे तुम्हारा नाम जपके विनाही श्रम भवसागरपार होजाते हैं ऐसे आपका हम भजन करते हैं ॥ ४ ॥

इससंसाररूपी वृक्षकी जड अविद्या मायारूपी अदृश्य है और यह वृक्ष अनादि है इसमें चारखान अंडज पिंडज स्वेदज जरायुज ये चार वक्कल हैं यह वेद शास्त्र कहताहै और इसमें छःस्कंध हैं सुख, दुःख, शीत, उष्ण, मान, अप०।न इन छः स्कंधोंमेंसे पचीस शाखा निकलती हैं पांच तत्त्व पृथ्वी, जल अग्नि,

फलयुगलविविकटुमधुरवेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे
पल्लवितफूलतनवलनितिसंसारविटपनमामिहे ११।५
जेब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं ॥
तेकहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नितगावहीं॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर मांगहीं ॥
मनकर्म्मवचनविकारतजितवचरणहमअनुरागहीं १२।६
दोहा–सबके देखत वेदन, विनती कीन्ह उदार ॥
अन्तर्द्धान भये तब, गये ब्रह्म आंगार ॥ ३० ॥
वैनतेय सुन शंभु तब, आये जहँ रघुवीर ॥
विनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥
तो॰छं॰जयरामरमारमणंशमनं भवतापभयाकुलपाहिजनं

वायु, आकाश, पांच इनके विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध और दशेंद्रिय पांच ज्ञानेंद्रिय नाक, कान आंख, जिह्वा, त्वक्, पांच कर्मेन्द्रिय चरण, लिंग गुदा, हाथ, वाक्य और अन्तःकरण, मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त, महत्तत्व और अनेक प्रकारकी वासना पत्तोंके समूह हैं जो लगते और झडते रहते हैं और अनेक प्रकारके संकल्प फूल हैं किसीमें फल लगता है कोई वैसेही गिरपडता है वोह फल पापपुण्यरूप होनेसे दोप्रकारके हैं एक खट्टा एक मीठा उसपर अविद्या मायाकी बेल चढरही है उसमेंसों नितपल्लव निकलते हैं और वोह नित्य फूलती रहती है ऐसे संसारवृक्षरूपी आपको हम नमस्कार करते हैं॥ ५॥

जो जन आपको ब्रह्मरूप अज जन्म और मायारहित अद्वैत उत्पत्ति एक अनुभवसे जाननेयोग्य मनसे परे ध्यावते हैं सो वही कहैं वही जानें हम तौ तुम्हारा सगुणरूप नित्य अर्थात् ब्रह्मकहिके ध्यावते हैं और हे देव करुणा निधान सद्गुणोंकी खान आपसे हम यही वर मांगते हैं कि मन वचन कर्मसे विकार तज तुम्हारे चरणोंमें प्रीति करते रहैं ॥ ६ ॥

हे रमारमण राम भवताप अर्थात् जरा मरणके दूर करनेवाले और डरसे

१ ब्रह्मलोक। २ गरुड़।

अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत माँगत पाहि प्रभो।
दशशीशविनाशनबीसभुजा, कृत दूरि महा महि भूरि रुजा
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, शर पावक तेज प्रचण्ड दहे १ ३। १
महिमण्डलमण्डन चारुतरं, धृतसायक चापनिषंगवरं
मदमोह महाममतारजनी, तमपुंजदिवाकर तेजअनी॥
मनजात किरातनिपात किये, मृगलोगकुभोगशरेनहिये
हितनाथअनाथनि पाहि हरे विषयावशपामरभूलिपरे १४२
बहुरोगवियोगन्हलोग हये, भवदंघ्रि निरादरके फलये॥
भवसिन्धु अगाध परे नरते, पदपंकज प्रेम न जे करते॥
अतिदीनमलीनदुखी नितहीं, जिनमें पदपंकजप्रीति नहीं।
अवलंबभवंतकथाजिनको, प्रियसंतअनंतसदातिनको १८३।

व्याकुलजनोंकी रक्षा करनेवाले हो अवधेश हो और यही रूप आपका सुरेश रमेश है और व्यापकहै हे प्रभो शरणागतकी रक्षा करो रावणके दशशिर बीसभुजाओंके तुम नाश करनेवाले हो और पृथ्वीके रोगरूपी अनेक राक्षसोंको आपने दूर किया और जो पतंग रूपी राक्षसोंके समूहथे वो आपकी तीक्ष्ण बाणरूपी अग्निमें जलगये ॥ १ ॥

पृथ्वीमंडलके आप श्रेष्ठ भूषण हैं धनुष बाण तरकस धारण कियेहुए मद मोह ममताकी बडी अँधेरी रात उसके नाश करनेमें आप तेजोंकी सेनाकेलिये सूर्य हैं कामरूप बहेलियेने उन लोग मृगोंको जो अनाथ थे कुभोगबाण हृदयमें मारके निपात किया सो उस भयसे मैं शरणागत होता हूं आप मेरे नाथहो और जो और जीव मारेगयेथे वे अधम विषयवनमें भूलेपडेथे ॥ २ ॥

और उनमेंसे जो बचे सो कोई रोग कोई मरेहुओंके वियोगमें नष्ट हुए सो आपके चरणोंके निरादरका यही फल है और जो उनमेंसे भी बचेथे सो इस अथाह भवसागरमें पडे डूबते हैं क्योंकि उन्होंने आपके चरणकमलमें प्रेम नहीं किया क्योंकि जिनको आपके चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वोह नित्यही दीन और मलीन दुःखी रहते हैं और जिनको आपका अवलम्ब है वा आपकी भवछेदन करनेवाली कथाका जिनको अवलम्ब है वा जिनको अनन्त सन्त सदा प्यारे हैं ॥ ३ ॥

नहिंराग नरोष नमाननदा, तिनकेसमवैभववाविपदा
यहितेतवसेवकहोतमुदा, मुनित्यागतयोगभरोससदा
करिप्रेम निरंतर नेमलिये, पदपंकज सेवत शुद्धहिये॥
सनमाननिरादरआदरही, सबसन्तसुखीविचरन्तमही १६
मुनिमानसपंकजभृङ्ग भजै, रघुवीरमहारणधीरअजै
तवनामजपामिनमामिहरी, भवरोगमहामदमानअरी
गुणशीलकृपापरमायतनं, प्रणमामिनिरंतरश्रीरमनं
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्द्वघनं, महिपालविलोकयदीनजनं

दोहा-बार बार वर मांगऊं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायिनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ३२॥
वरणि उमापति रामगुण, हर्षि गये कैलास ॥
तबप्रभु कपिनदिवाये, सबविधि सुखप्रद बास ॥३३॥

सुनु खगपति यहकथासुहावनि ❁ त्रिविधताप भवदोष नशावनि ॥
महाराज कर शुभ अभिषेका ❁ सुनत लहहिं नर विरति विवेका॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ❁ सुखसम्पति नानाविधि पावहिं ॥

कैसे सन्त हैं कि जिनको राग रोष मान मद नहीं है विपत्ति सम्पत्ति समान है इसीसे तुम्हारे सेवक मुनि आनन्दसे रहते हैं और योगके भरोसेको छोड़ देते हैं जो आपके प्रेमका नियमलिये शुद्धहृदयसे आपके चरणकमलको सेवते हैं और आदर अनादरको सम मानके पृथ्वीमें विचरते हैं ॥ ४ ॥ १६ ॥

ऐसे मुनियोंके मनकमलको आप भ्रमर होके सेवते हो रघुवीर महारण-धीर और अजित हो मुनियोंके मनमें बसते हो हे हरे आपके नामको हम जपते हैं और आपको प्रणाम करते हैं तुम्हारा नाम भवरोग महामद मानका शत्रु है गुण शील कृपा और परम शोभाके घर हो ऐसे आप श्रीरमणको मैं अतिशय प्रणाम करता हूं हे द्वंद्वघन अर्थात् रावण कुम्भकर्णके नाशक रघुनाथ महिपाल कृपाकर मुझ दीन जनको देखिये हे लक्ष्मीपति बार, २ यही वर मांगता हूं कि आपके चरणकमलकी अनपायनी भक्ति मिलै ॥ ५ ॥ १७ ॥

दुर्लभ सुखकारि जगमाहीं ❀ अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषयी ❀ लहहिं भक्तिसुख सम्पति नितई ॥
खगपति रामकथा मैं वरणी ❀ सुमतिविलास त्रासदुखहरणी ॥
विरति विवेक भक्ति दृढ करणी ❀ मोहनदीकहँ सुन्दर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशलपुरी ❀ हर्षित रहहिं लोग सब कुरी ॥
नित नव प्रीति रामपदपंकज ❀ सेवत जेहि शंकर सुरमुनिअज ॥
मंगन बहुप्रकार पहिराये ❀ द्विजन दान नाना विध पाये ॥

दोहा-परमानन्दमगन कपि, सबके प्रभुपदप्रीति ॥
जात न जानेउ दिवस निशि, गये मास षट बीति ॥ ३४ ॥

बिसरे गृह स्वप्ने सुधि नाहीं ❀ जिमि परद्रोह सन्तमनमाहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये ❀ आइ सबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे ❀ भक्तसुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई ❀ मुखपर केहि विधि करौं बड़ाई ॥
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे ❀ मम हितलागि भवनसुख त्यागे ॥
अनुज राज्यसम्पति वैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मोहिंप्रियनहिंतुमहिंसमाना ❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती ❀ मोरे अधिक दासपर प्रीती ॥

दोहा-अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढ़नेम ॥
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अति प्रेम ॥ ३५ ॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ को हम कहाँ विसरि गृहगये ॥
एकटक रहे जोरि कर आगे ❀ कहि नसकतकछुअतिअनुरागे ॥
परम प्रीति तिनकी प्रभु देखी ❀ कहा विविध विधि ज्ञान विशेषी ॥
प्रभु सन्मुख कछु कहै नपारहिं ❀ पुनि पुनि चरणसरोजनिहारहिं ॥
तब प्रभु भूषण वसन मँगाये ❀ नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये ❀ भरत वसन निज हाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये ❀ लंकापति रघुपति मन भाये ॥

१ ज्ञान विज्ञान । २ चारिउ वर्णके अनके भेद । ३ छःमहीना । ४ व्यापक ।

अंगद बैठि रहे नहिं डोले ❀ प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले ॥
दोहा—जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि रामस्वरूप सब, चलेनायपद माथ ॥३६॥
तब अंगद उठि नाइ शिर, सजल नयन करजोरि ॥
अति विनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥३७॥
सुन सर्वज्ञ कृपासुखसिन्धो ❀ दीनदयाकर आरतबन्धो ॥
मरतीबार नाथ मोहिं बाली ❀ गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण विरद सम्भारी ❀ मोहिं जनि तजहु भक्तभयहारी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ❀ जाउँकहा तजि पद जलजाता ॥
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा ❀ प्रभुतजि भवन काज ममकाहा ॥
बालक अबुध ज्ञान बल हीना ❀ राखहु शरण जानि जन दीना ॥
नीच टहल गृहकी सब करिहों ❀ पद विलोकि भवसागर तरिहों ॥
असकहि चरण परे प्रभु पाहीं ❀ अब जनि नाथ कहहु गृहजाहीं ॥
दोहा—अंगद वचन विनीत सुनि,रघुपति करुणासींव ॥
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजलनयनराजीव ॥ ३८ ॥
निजउरमाला बसन मणि, बालितनय पहिराय ॥
बिदा कीन भगवान तब, बहु प्रकार समुझाय ॥३९॥
भरत अनुज सौमित्रि[1] समेता ❀ पठवन चले भक्तकृतचेता[2] ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा ❀ फिरिफिरि चितवतप्रभुकीओरा॥
बार बार करि दण्डप्रणामा ❀ मनअसरहन कहहिं मोहिंरामा॥
राम विलोकनि बोलनि चलनी ❀ सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी॥
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाषी ❀ चले हृदय पदपंकज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये ❀ भाइन सहित राम फिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना ❀ भाँति विनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दश करि रघुपतिपदसेवा ❀ तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुंज तुम पवनकुमारा ❀ सेवहु जाइ कृपालु अगारा ॥

१ लक्ष्मणजी । २ सबभक्तनके साक्षांतरकेचैतन्यकर्ता ।

असकहि कपिपति चलेतुरंता ❀ अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता ॥
दोहा–कहेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहिं कहौं करजोरि ॥
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायहु मोरि ॥ ४० ॥
अस कहि चलेउ वालिसुत, फिरि आये हनुमंत ॥
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवंत ॥ ४१ ॥
कुलिशहुँ चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझि परै कहुकाहि ॥ ४२ ॥
पुनि कृपालु लिय बोलि निषादा ❀ दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू ❀ मन क्रम वचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरत सम भ्राता ❀ सदा रहहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुखभारी ❀ परेउ चरण लोचन भरिवारी ॥
चरण कमल उरधरि गृह आवा ❀ प्रभु प्रभाव परिजनहिं सुनावा ॥
रघुपतिचरित देखि पुरवासी ❀ पुनि पुनि कहहिंधन्यसुखरासी ॥
रामराज्य बैठे त्रयलोका ❀ हर्षित भयउ गयउ सबशोका ॥
वैर न करहिं काहुसन कोई ❀ रामप्रताप विषमता खोई ॥
दोहा–वर्णाश्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग ॥
चलहिं सदापावहिंसुखहिं, नहिंभयशोकनरोग ॥ ४३ ॥
दैहिक[1] दैविक[2] भौतिक[3] तापा ❀ रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ❀ चलहिं सुधर्म निरत श्रुति नीती ॥
चारिउ वरण धर्म जगमाहीं ❀ पूरि रहा स्वप्नेहु अघ नाहीं ॥
रामभक्तिरत नर अरु नारी ❀ सकल परमगतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा ❀ सब सुंदर सब निरुज शरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी नदीना ❀ नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्मरत धरणी ❀ नर अरु नारि चतुरशुभकरणी ॥

१ दैहिककही अध्यात्म देहसम्बन्धी तामे दो भेद हैं एक बाह्यज्वर, मिथ्याभाषणादि पुनि एक अन्तर काम, क्रोध, लोभ, मात्सर्यइत्यादि । २ आधिदैवत जो देवतोंकरके विघ्नहोय पाला, पत्थर, अतिवृष्टि अनावृष्टि वज्रपातादि । ३ अधिभूत जो जीवन करकेपीडितहोय राजा, चोर, सर्प इत्यादि ।

सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी ❀ सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी॥

दोहा-रामराज्य विहगेशसुनु, सचराचर जगमाहिं॥
काल कर्म स्वभाव गुण, कृत दुख काहुहि नाहिं॥४४॥

भूमि सप्त सागर मेखला ❀ एक भूप रघुपति कौशला॥
भुवन अनेक रोमप्रति जासू ❀ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी ❀ यह वर्णत हीनता घनेरी॥
यह महिमा खगेश जिन जानी ❀ फिरि यहचरिततिनहुँरतिमानी॥
सो जानेकर फल यह लीला ❀ कहहिं महामुनि सुमति सुशीला॥
रामराज्यकर सुख सम्पदा ❀ वरणि न सकहिं फणीश शारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी ❀ द्विजसेवक सब नर अरु नारी॥
एकनारि व्रत रत नर झारी ❀ ते मनवचक्रम पतिहितकारी॥

दोहा-दण्ड यतिनकर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज॥
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज॥४५॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन[1] ❀ रहहिं एकसँग गज पंचानन[2]॥
खग मृग वैर सहज विसराई ❀ सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा ❀ अभय चरहिंवनकरहिं अनन्दा॥
शीतल सुरभि[3] पवन बहमन्दा ❀ गुंजत अलि[4] लेचलु मकरन्दा[5]॥
लता विटप माँगे फल द्रवहीं ❀ मनभावते धेनु[7] पय[8] स्रवहीं॥
शसिसम्पन्न सदा रह धरणी ❀ त्रेता भै सतयुगकी करणी॥
प्रगटे गिरि नाना मणि खानी ❀ जगदात्मा भूप पहिचानी॥
सरिता सकल बहैं बर बारी ❀ शीतल अमल स्वादु सुखकारी॥
सागर निज मर्यादा रहहीं ❀ डारहिंरत्न तटनि नर लहहीं॥
सरसिज[10] संकुल सकल तडागा ❀ अतिप्रसन्न दशदिशा विभागा॥

दोहा-विधु[11] महिपूर पियूषन[12], रवितप जितनहिं काज॥
माँगे वारिद[13] देहिं जल, रामचन्द्रके राज॥४६॥

कोटिन वाजिमेघ प्रभुकीन्हें ❀ अमित दान विप्रन कहँ दीन्हें॥

१वन। २ सिंह। ३ सुगंधित। ४ भ्रमर। ५ रस। ६ डाले। ७ गाय। ८ दूध।
९ खेती। १० कमल। ११ चन्द्र। १२ किरणामृत। १३ मेघ।

श्रुति पथ पालक धर्मधुरन्धर ❀ गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता ❀ शोभाखानि सुशील विनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई ❀ सेवत चरण कमल मनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❀ सब प्रकार सेवा विधि लीनी ॥
निजकर गृहपरिचर्या करहीं ❀ रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहिविधकृपासिन्धुसुखमानहिं ❀ सोइ सिय सेवाविधि उरआनहिं ॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं ❀ सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिता ❀ जगदम्बा संततअनिन्दिता ॥

दोहा–जाकी कृपाकटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ ॥
रामपदारविन्दरत, रहति स्वभावहि सोइ ॥ ४७ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई ❀ रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं ❀ कबहुँ कृपालु हमहिंकछुकहहीं ॥
राम कराहिं भ्रातन पर प्रीती ❀ नानाभाँति शिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा ❀ करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
अहनिशिविधिहिमनावत रहहीं ❀ श्रीरघुवीरचरण रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये ❀ लव कुश वेद पुराणन गाये ॥
दोउविजयीविनयीअतिसुन्दर ❀ हरिप्रतिबिंब मनहुँ गुणमंदिर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे ❀ भये रूप गुण शील घनेरे ॥

दोहा–ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥
सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नर चरित अपार ॥ ४८ ॥

प्रातकाल सरयू करि मज्जन ❀ बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं ❀ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं ॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं ❀ देखि सकल जननीसुख भरहीं ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❀ सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
पूछत बैठि रामगुण गाहा ❀ कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनतविमलगुंणअतिसुखपावहिं ❀ बहुरिबहुरिकै विनय सुनावहिं ॥

१टहल । २ चरणकमल । ३ रातदिन । ४ प्रीति । ५ इन्द्रिय । ६ माला । ७ माया । ८ निर्मल ।

सबके गृह गृह होय पुराना ❀ रामचरित सुन्दर विधिनाना ॥
नर अरु नारि रामगुण गावहिं ❀ कराहिंदिवस निशिजातन जानाहिं॥
दोहा-अवधपुरी वासिन्ह कर,सुख सम्पदा समाज ॥
सहसशेषनहिंकहिसकहिं,जहँ नृप राम विराज॥४९॥
नारदादि सनकादि मुनीशा ❀ दर्शन लागि कोशलाधीशा ॥
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं ❀ देखि नगर विराग विसरावहिं ॥
रत्नजटित मणि कनक अटारी ❀ नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँपास कोट अतिसुन्दर ❀ रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई ❀ जनु दूसरि अमरावति आई ॥
महि बहुरंग रुचिरगचकाँचा ❀ जोविलोकि मुनिवर मनराचा ॥
धवल धाम ऊपरनभचुम्बत ❀ कलशमनहुँशशिरविद्युतिनिन्दत॥
बहुमणि रचित झरोखन भ्राजैं ❀ गृह गृह प्रति मणि दीपविराजैं॥
छं०-मणिदीप राजहिं भवनभ्राजहिं देहरी विद्रुमरची।
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर अति फटिकन खची।
मणिखंभभीतिविरंचिविरचितकनकमणिमरकतरचे।
प्रतिद्वारद्वारकपाटपुरट बनाय बहु वज्रन खचे॥१८॥
दोहा-चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ ॥
रामधाम जो निरखत, मुनिमन लेत चुराइ ॥ ५० ॥
सुमनवाटिका सबहिं लगाई ❀ विविध भाँति करियतन बनाई॥
लता ललित बहुभाँति सुहाई ❀ फूलहिं सदा वसन्त कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर ❀ मारुत त्रिविध सदा वह सुंदर॥
नाना खग बालकनजिआये ❀ बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत ❀ भवननपर शोभा अतिपावत ॥
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं ❀ बहुविध कूजहिं नृत्यकराहीं ॥
शुक सारिका पढावहिं बालक ❀ कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबहीविधि चारू ❀ बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

१ शेषनाग । २ मूंगा । ३ अंगनाई । ४ हीरा । ५ सुंदर । ६ भ्रमर । ७ वायु । ८ बोलहिं ।

छंद–बाजार रुचिर न बनै वर्णत वस्तु बिनु गथपाइये ॥
जहँ भूप रमानिवास तहँकी सम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेरले ॥
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नरयुवा शिशु जरठले १९

दोहा–उत्तर दिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ॥
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ ५१ ॥

दूर फराक रुचिर सो घाटा ❀ जहँ जलपियहिं बाजि गज ठाटा॥
पनिघट परम मनोहरनाना ❀ तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना॥
राजघाट सबही विधि सुन्दर ❀ मज्जहिं तहाँ वरण चारिउ नर ॥
तीर तीर देवनके मन्दिर ❀ चहुँदिशि तिहिंके उपवन सुंदर॥
कहुँ कहुँ सरितातीर निवासी ❀ बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी ॥
जहँ तहँ तुलसीवृन्द सुहाये ❀ बहुप्रकार सब मुनिन लगाये ॥
पुरशोभा कछु वरणि नजाई ❀ बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघभागा ❀ वन उपवन वापिका तड़ागा ॥

छंद–वापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहईं ॥
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहईं ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्य पिकादि खगरव मनहुँ पथिक हँकारहीं

दोहा–रमानाथ जहँ राज्यपति, सोपुर वरणि नजाइ ॥
अणिमादिक सुख सम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ॥५२॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुण गावहिं ❀ बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं ❀ शोभाशील रूपगुणधामहिं ॥
जलजविलोचन श्यामलगातहिं ❀ पलकनयन इव सेवक त्रातहिं ॥
धृत शर रुचिर चाप तूणीरहिं ❀ सन्त कंज वन रवि रण धीरहिं॥
काल कराल व्याल खगराजहिं ❀ नमत राम अकाम ममताजहिं ॥

१ सुन्दर । २ बेमूल्य । ३ कीच । ४ बांडे । ५ समूह । ६ मुसाफिर । ७ कमलनयन ।
८ रक्षक । ९ धारणकियेहैं । १० तरकस । ११ गरुड़ ।

लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं ❋ मनसिजकेरिहरिजनसुखदातहिं॥
संशय शोक निबिडतम भानुहि ❋ दनुजगहन वनदहन कृशानुहि॥
जनकसुता समेत रघुवीरहि ❋ कस न भजहु भंजनभवभीरहि॥
बहुवासनामशक हिमराशिहिं ❋ सदा एकरसअजं अविनाशिहिं॥
मुनिरंजन भंजन महि भारहि ❋ तुलसिदासके प्रभुहि उदारहिं॥
दोहा—इहि विधि नगर नारि नर, करहिं रामगुणगान॥
सानुकूल सन्तत रहत, सबपर कृपानिधान॥ ५३॥
जबते राम प्रताप खगेशा ❋ उदितभयउअतिप्रबलदिनेशा॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका ❋ बहुतन सुख बहुतन मन शोका॥
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी ❋ प्रथम अविद्या निशा सिरानी॥
अघउलूक जहँ तहाँ लुकाने ❋ काम क्रोध कैरवं सकुचाने॥
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ ❋ ये चकोर सुख लहहिं नकाऊ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा ❋ इनकहँ सुखनहिंकवनिहुँओरा॥
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना ❋ ये पंकज विकसे विधि नाना॥
सुख सन्तोष विराग विवेका ❋ विगत शोकये कोकं अनेका॥
दोहा—यहप्रताप रविजासु उर, जबप्रभुकरहिंप्रकाश॥
पाछिल बाढ़हिं प्रथमजे, कहेते पावहिंनाश॥ ५४॥
भ्रातन सहित राम इकबारा ❋ संग परम प्रिय पवनकुमारा॥
सुन्दर उपवन देखन गयऊ ❋ सबतरु कुसुमित पल्लव नयऊ॥
जानि समय सनकादिक आये ❋ तेज पुंज गुण शील सुहाये॥
ब्रह्मानन्दं सदा लवलीना ❋ देखत बालक बहु कालीना॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा ❋ समदरशी मुनि विगत विभेदा॥
आशावसन व्यसन नहिं तिनहीं ❋ रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी ❋ जहँ घटसम्भव मुनिवर ज्ञानी॥
रामकथा मुनि बहु विधि वरणी ❋ ज्ञान योग पावकजिमि अरणी॥

१ कामदेव। २ हाथी। ३ सिंह। ४ अतिसघनअन्धकार। ५ सूर्य्यनारायण। ६ नाम ७ पालाकोराशि। ८ अजन्मा। ९ आनन्दकर्त्ता। १० कुमुदिनी। ११ चकचकई। १२ तदात्मक ब्रह्माकारवृत्ति एकरसअखंड। १३ दशोदिशा। १४ अगस्त्यमुनि। १५ लकड़ी।

दोहा–देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ॥
स्वागत पूँछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥५५॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई ❀ सहितपवनसुत सुख अधिकाई ॥
मुनिरघुपतिछविअतुल विलोकी ❀ भये मग्न मन सकल नरोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन ❀ सुंदरता मन्दिर भवमोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं ❀ प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं ॥
तिनकी दशा देखि रघुवीरा ❀ श्रवत नयनजलपुलक शरीरा ॥
करगहि प्रभु मुनिवर बैठारे ❀ परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा ❀ तुम्हरे दरश जाहिं अव खीशा ॥
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा ❀ विनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥

दोहा–सन्त संग अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ ॥
कहहिंसन्तकविकोविद, श्रुतिपुराणसद्ग्रन्थ ॥५६॥

सुनि प्रभुवचन हर्षि मुनिचारी ❀ पुलकगात अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय ❀ अनघ अनेक एक करुणामय ॥
जय निर्गुण जय जय गुणसागर ❀ सुखमंदिर तिहुँलोकउजागर ॥
जय इन्दिरारमण जयभूधर ❀ अनुपमअज अनादि शोभाकर ॥
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद ❀ पावन सुयश पुराण वेद वद ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन ❀ नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय ❀ बसहु सदा हमकहँ प्रतिपालय ॥
द्वंद्व विपति भवफंद विभंजन ❀ हृद बसु राम काम मद गंजन ॥

दोहा–परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरण काम ॥
प्रेमभक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ५७ ॥

देहु भक्ति रघुपति अनपावनि ❀ त्रिविध ताप भव दापनशावनि ॥
प्रणत काम सुरधेनु कलपतरु ❀ होइ प्रसन्न प्रभु दीजे यह वरु ॥
भववारिधि कुंभज रघुनायक ❀ सेवक सुलभ सकल सुखदायक ॥

---

१ मोक्ष । २ षड्विकाररहित । ३ पापरहित । ४ लक्ष्मी । ५ परमतत्त्वरूप । परमतत्त्ववेत्ता । ६ सबकी करणीके जाननेहारे । ७ मायासे रहित । ८ मान-कर्त्ता । ९ कृपाकेस्थान । १० संसार । ११ दुःख । १२ स्मरण । १३ अगस्त्यमुनि ।

मनसम्भव दारुण दुख दारय ❀ दीनबन्धु समता विस्तारय ।
आश त्रास ईर्षादि निवारक ❀ विनय विवेक विरतिविस्तारक ।
भूप मौलि मणि मण्डन धरणी ❀ देहु भक्ति संसृति सरि तरणी ।
मुनि मन मानस हंस निरंतर ❀ चरण कमलवन्दित अज शंकर ।
रघुकुलकेतू सेतुश्रुतिरक्षक ❀ काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक ।
तारणतरण हरण सबदूषण ❀ तुलसिदास प्रभु त्रिभुवनभूषण ।

दोहा–बार बार अस्तुति करि, प्रेमसहित शिर नाइ ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अति अभीष्ट वर पाइ ॥ ५८ ।

सनकादिक विधिलोक सिधाये ❀ भ्रातन रामचरण शिरनाये ।
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❀ चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ।
सुना चहहिं प्रभुमुखकी वाणी ❀ जो सुनि होय सकलभ्रमहानी ।
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना ❀ पूँछत कहा कहहु हनुमाना ।
जोरि पाणि तब कह हनुमंता ❀ सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ।
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं ❀ प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ।
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ ❀ भरतहि मोहिं न कछू दुराऊ ।
सुनि प्रभुवचन भरतगहि चरणा ❀ सुनिहु नाथ प्रणतारतिहरणा ।

दोहा–नाथ न मोहिं संदेह कछु, स्वप्नेहु शोक नमोह ।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द संदोह ॥ ५९ ।

करौं कृपानिधि एक ढिठाई ❀ मैंसेवक तुम जन सुखदाई ।
संतनकी महिमा रघुराई ❀ बहुविधि वेद पुराणन गाई ।
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बडाई ❀ तिन्हपर प्रभुहिंप्रीतिअधिकाई ।
सुना चहौं प्रभु तिन्हकर लक्षण ❀ कृपासिन्धु गुणज्ञान विचक्षण ।
सन्त असन्त भेद विलगाई ❀ प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई ।
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता ❀ अगणित श्रुतिपुराणविख्याता ।
सन्त असन्तन की अस करणी ❀ जिमि कुठार चन्दन आचरणी ।

---

१ उत्पन्न । २ नाशकर्ता । ३ वासना । ४ जन्ममरण । ५ पताका । ६ अभिवांछित ।
७ समूहसच्चिदानंद । ८ प्रवीण । ९ फरसा ।

काटे पर सुमलय सुनु भाई ❀ निज गुण देइ सुगन्ध बसाई ॥
दोहा–ताते सुर शीशन चढत, जगवल्लभ श्रीखण्ड ॥
अनल दाहि पीटतघनहिं, परशु वदन यह दण्ड॥६०॥
विषय अलंपट शील गुणाकर ❀ परदुख दुख सुख सुख देखेपर ॥
सम अभूत रिपु विमद विरागी ❀ लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीननपर दाया ❀ मन वच क्रम मम भक्त अमाया॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी ❀ भरत प्राणसम मम ते प्राणी ॥
विगतकाम ममनाम परायनँ ❀ शान्त विरक्त विदितमुदितायँन॥
शीतलता सरलता मयत्री ❀ द्विजपद प्रेम धर्म जनु यंत्री ॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❀ जानेहु तात संत संतत फुर ॥
शम दम नियम नीतिनहिंडोलहिं ❀ परुष वचन कबहूं नहिं बोलहिं॥
दोहा–निन्दा अस्तुति उभयसम, ममता मम पदकंज॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुख पुंज॥६१॥
सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ ❀ भूलेहु संगति करिय नकाऊ ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहिं घालै हरहाई ॥
खलन हृदय अतिताप विशेषी ❀ जरहिं सदा परसम्पति देषी ॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❀ हर्षहिं मनहुँ परी निधिपाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायँन॥
वैर अकारण सब काहूसों ❀ जोकर हित अनहित ताहूसों ॥
झूठे लेना झूठे देना ❀ झूठे भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा ❀ खाहिं महा अहि हृदय कठोरा॥
दोहा–परद्रोही परदाररत, परधन पर अपवाद ॥
तेनर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ६२ ॥
लोभै ओढन लोभै डासन ❀ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन ॥
काहूकी जो सुनहिं बडाई ❀ श्वास लेहिं जनु जूडी आई ॥

१ प्रिय । २ चन्दन । ३ रहित । ४ लीन । ५ आनन्दकेस्थान । ६ माता-पि. । ७ पराईद्रव्य । ८ पापोंकेस्थान ९ । नरपशु । १० राक्षस ।

जब काहूकी देखहिं विपती ❀ सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती॥
स्वारथरत परिवार विरोधी ❀ लम्पट काम लोभ अतिक्रोधी॥
मात पिता गुरु विप्र न मानहिं ❀ आपु गये अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोहवश द्रोहं परावा ❀ सतसंगति हरि भक्ति न भावा॥
अवगुणसिंधु मन्दमति कामी ❀ वेद विदूषक परधनस्वामी॥
विप्रद्रोह परद्रोह विशेषी ❀ दंभ कपट जिय धरे सुवेषी॥

दोहा—ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं॥
द्वापर कछुक वृन्द बहु, होइहैं कलियुग माहिं॥६३॥

परहितसरिस धर्म नहिं भाई ❀ पर पीडा सम नहिं अधमाई॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर ❀ कहेउँ तात जानहिं कोविद नर॥
नर शरीर धरि जो परपीरा ❀ करहिं ते सहहिं महा भवभीरा॥
करहिं मोह वश नर अघनाना ❀ स्वारथरत परलोक नशाना॥
कालरूप मैं तिनकहँ ताता ❀ शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता॥
अस विचारि जे परम सयाने ❀ भजहिं मोहिं संसृतिदुख जाने॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक ❀ भजें मोहिं सुर नर मुनिनायक॥
सन्त असन्तनके गुण भाषे ❀ तेन परहिं भव जिन लखिराषे॥

दोहा—सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक॥
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक॥६४॥

श्रीमुखवचन सुनत सबभाई ❀ हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई॥
करहिं विनय अति बारहिं बारा ❀ हनूमान हिय हर्ष अपारा॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये ❀ इहि विधि चरित करतनितनये॥
बार बार नारद मुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत रामकर गावहिं॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं॥
सुनि विरंचिअतिशयसुखमानहिं ❀ पुनिपुनितात करहुगुणगानहिं॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं॥

---

१ हीन। २ ईर्षा। ३ कुकर्म। ४ अल्पबुद्धि। ५ परस्त्रीरत। ६ निंदक। ७ अत्यंत-कर। ८ ठगनार्थ अनेक वेषधरना ९। अन्तर और प्रकट और। १० समूह। ११ गैरको। तन मन धनसे सहारादेना। १२ निचोड। १३ पंडित। १४ घोरसागर। १५ ब्रह्मा।

सुनि गुणगान समाधि बिसारी ❀ सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥
दोहा-जीवनमुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ॥
जे हरिकथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान ॥ ६५ ॥
एक बार रघुनाथ बुलाये ❀ गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विज वर मुनि सज्जन ❀ बोले वचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❀ कहौं न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❀ सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई ❀ मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई ❀ तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई ॥
बड़े भाग्य मानुष तनु पावा ❀ सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्षकर द्वारा ❀ पाइन जे परलोक सवाँरा ॥
दोहा-सो परत्र दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ६६ ॥
यहि तनुकर फल विषय न भाई ❀ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषय मन देही ❀ पलटि सुधाते शठ विष लेही ॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई ❀ गुंजा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारि लाख चौरासी ❀ योनि न भ्रमत जीव अविनासी ॥
फिरत सदा मायाके प्रेरे ❀ काल कर्म स्वभाव गुण घेरे ॥
कबहुँक करि करुणा नरदेही ❀ देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव वारिधि कहँ बेरे ❀ संमुख मरुत अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ नावा ❀ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥
दोहा-जो न तरै भवसागरहिं, नर समाज अस पाइ ॥
सोकृतनिन्दकमन्दमति, आतमहन गतिजाइ ॥ ६७ ॥
जो परलोक इहाँ सुख चहहू ❀ सुनि मम वचनहृदयदृढगहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई ❀ भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई ॥

१ भीति । २ पत्थर । ३ अपनपौ । ४ आज्ञा । ५ शरीर । ६ रत्ती । ७ चारिखानि-जरायुज, उद्भिज, अंडज, ऊष्मज, । ८ संसारसागर । ९ जहाज । १० पवन । ११ कृत- निन्दक कही जो काहूते नीकि करणीकरे और वह न माने ।

ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका ❀ साधनकठिन न मन महँटेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई ❀ भक्तिहीन प्रिय मोहि न सोई ॥
भक्तिस्वतंत्र सकल सुखखानी ❀ विन सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुण्यपुंज विन मिलहिं न संता ❀ सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा ❀ मन क्रम वचन विप्र पद पूजा॥
सानुकूल तिहि पर सब देवा ❀ जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥

दोहा–औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि ॥
शंकरभजन बिना नर, भक्ति न पावै मोरि ॥ ६८ ॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा ❀ योग न मख जप तप उपवासा ॥
सरलस्वभाव न मन कुटिलाई ❀ यथालाभ सन्तोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा ❀ करै तो कहहु कहाँ विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढाई ❀ इहि आचरण वश्य मैं आई ॥
वैर न विग्रह आश न त्रासा ❀ सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❀ अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❀ तृण सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठताई ❀ दुष्ट कर्म सब दूरि विहाई ॥

दोहा–मम गुणग्रामनामरत, गतममतामदमोह ॥
ताकर सुख सोइ जानै, परमानंद सन्दोह ॥ ६९ ॥

सुनत सुधासम वचन रामके ❀ सबन्हि गहे पद कृपाधामके ॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे ❀ कृपानिधान प्राणते प्यारे ॥
तनु धन धाम राम हितकारी ❀ सब विधि तुम प्रणतारति हारी॥
अस शिख तुम बिनुदेइ नकोऊ ❀ मातु पिता स्वारथरत ओऊ॥
हेतु रहित सब विधि उपकारी ❀ हम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं ❀ स्वप्नेहु कोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके वचन प्रेमरस साने ❀ सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निजनिज गृह गए आयसु पाई ❀ वर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥

१ विघ्न। २ दम्भ, पाषण्ड, कपट, छल छिद्र, ईर्षा इनतेरहित। ३ पापरहित।

दोहा-उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानन्दघन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ७० ॥

एक बार वशिष्ठ मुनि आये ❀ जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अतिआदर रघुनायक कीन्हा ❀ पद पखारि चरणोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह करजोरी ❀ कृपासिन्धु विनती इकमोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा ❀ होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना ❀ मैं केहि भाँति कहौं भगवाना ॥
उपरोहितीकर्म अतिमन्दा ❀ वेद पुराण स्मृतिकर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबही विधि मोहीं ❀ कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमात्मा ब्रह्म नररूपा ❀ होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥

दोहा-तब मैं हृदय विचार किय, योग यज्ञ जप दान ॥
जेहि नित करिय सो पाइये, धर्म न इहसम आन ॥ ७१ ॥

जप तप नियम योग व्रत धर्मा ❀ श्रुति सम्भव नानाविधि कर्मा ॥
ज्ञान[2] दया दम[3] तीरथ मज्जन ❀ जहँ लगि धर्म कहैं श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका ❀ पढे सुनेकर फल यह येका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर ❀ सब साधन कर फल यह सुंदर ॥
छूटै मल कि मलहिके धोये ❀ घृतकि पाव कोउ वारि विलोये ॥
प्रेमभक्ति जल विनु रघुराई ❀ अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ[4] सोइ पंडित ❀ सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई ❀ जाके पद सरोज रति होई ॥

दोहा-नाथ एक वर माँगौं, मोहिं कृपा करि देहु ॥
जन्म जन्म प्रभुपदकमल, कबहुँ घटै जनिनेहु ॥ ७२ ॥

असकहि मुनि वशिष्ठ गृह आये ❀ कृपासिन्धुके मन अति भाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता ❀ संगलिये सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ ❀ गज रथ तुरग मँगावत भयऊ ॥

१ भगवानकही षट्भगयुक्त-ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष । २ ज्ञानमें दो भेद एक शास्त्रजन्य दूसरा आत्मज्ञान । ३ शुद्धमनइंद्रियको जीतना । ४ तत्त्ववेत्ता ।

देखि कृपा करि सकल सराहे ❀ दिये उचित जिन्ह जिन्ह जो चाहे ॥
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई ❀ गये जहाँ शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज वसन डसाई ❀ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत मारुत[1] तब करई ❀ पुलकि गात लोचन जल भरई ॥
हनूमान सम को बड़भागी ❀ नहिं कोउ रामचरण अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❀ बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दोहा—तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ॥
गावन लागे रामगुण, कीरति सदा नवीन ॥ ७३ ॥

मामवलोकय[2] पंकजलोचन ❀ कृपाविलोकनि शोचविमोचन ॥
नीलतामरस[3] श्याम काम अरि ❀ हृदय कंज मकरंद मधुपहरि ॥
यातुधान[4] वरूथ बल गंजन ❀ मुनि सज्जन रंजन अघ भंजन ॥
भूसुर[5] नवशशि वृन्दबलाहक[6] ❀ अशरण शरणदीनजन गाहक ॥
भुजबल विपुल भारमहि खंडित ❀ खर दूषण विराध वध पण्डित ॥
रावणारि सुख रूप भूपवर ❀ जय दशरथकुलकुमुदसुधाकर ॥
सुयश पुराण विदित निगमागम ❀ गावत सुर मुनि सन्त समागम ॥
कारुणीक वाली मद खंडन ❀ सबविधिकुशल कोशलामंडन ॥
कलिमल मथन नाम ममताहन ❀ तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ॥

दोहा—प्रेम सहित मुनि नारद, वर्णि राम गुणग्राम ॥
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहाँ विधिधाम ॥ ७४ ॥

गिरिजा सुनहु विशद यह कथा ❀ मैं सब कही मोरि मति यथा ॥
रामचरित शतकोटि अपारा ❀ श्रुति शारदा न वरणै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी ❀ जन्म कर्म अगणित नामानी ॥
जलसीकर महिरज गणि जाहीं ❀ रघुपतिचरित नवरणिसिराहीं ॥
विमल[7] कथा यह हरिपद दायिनि ❀ भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि ॥
उमा कहेउँ सोइ कथा सुहाई ❀ जो भुशुण्ड खगपतिहिसुनाई ॥
कछुक राम गुण कहेउँ बखानी ❀ अबका कहौं सो कहहुभवानी ॥

१ वायु । २ मेरीओरदेखो । ३ नीलकमल । ४ दानव । ५ ब्राह्मण । ६ मेघ ।
७ अति पावनी उज्ज्वल ।

सुनि शुभ कथा उमा हरषानी * बोलीं अति विनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी * सुनेउँ रामगुण भव भयहारी ॥
दोहा-तुम्हरी कृपा कृपायतन, अबकृतकृत्य नमोह ॥
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥७५॥
नाथ तवानन शशि स्रवत, कथा सुधा रघुवीर ॥
श्रवणपुटन मन पानकरि, नहिं अघात मतिधीर७६॥
रामचरित जे सुनत अघाहीं * रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं॥
जीवनमुक्त महा मुनि जेऊ *,हरि गुण सुनत अघात न तेऊ॥
भवसागर चह पार जो पावा * राम कथा ताकहँ दृढ नावा ॥
विषयिन कहँ पुनि हरि गुणग्रामा * श्रवणसुखद अरु मनविश्रामा॥
श्रवणवंत अस को जगमाहीं * जाहि न रघुपतिकथासुहाहीं॥
ते जड़ जीव निजात्मघाती * जिनहिं न रघुपति कथासुहाती॥
रामचरित मानस तुम गावा * सुनि मैं नाथ परम सुख पावा ॥
तुम जो कही यह कथा सुहाई * काकभुशुण्डि गरुडप्रतिगाई ॥
दोहा-विरति ज्ञान विज्ञान दृढ, रामचरण अति नेह ॥
वायस तनु रघुपति भगति, मोहिं परम संदेह ॥७७॥
नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी * कोउ इक होइ धर्म व्रतधारी ॥
धर्म शील कोटिन महँ कोई * विषय विमुख विरागरत होई ॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई * सम्यक्ज्ञान सुकृत कोउ लहई॥
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई * जीवन्मुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहसन महँ सब सुखखानी * दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥
धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी * जीवन्मुक्ति ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया * रामभक्ति रत गत मद माया ॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई * विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥
दोहा-रामपरायण ज्ञानरत, गुणागारमतिधीर ॥
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काक शरीर ॥७८॥

१ पार्वती। २ कृतार्थ। ३ मुख। ४ चन्द्रमा। ५ अमृत। ६ कान। ७ लीला।
८ अपने आत्माको नाशकरने वाले। ९ वैराग्य।

यह प्रभुचरित्त पवित्र सुहावा ❀ कहहु कृपालुकाककिमिपावा ॥
तुमकेहिभाँति सुना मदनारी ❀ कहहु मोहिं यह कौतुक भारी ॥
गरुड महाज्ञानी गुणराशी ❀ हरिसेवक अतिनिकट निवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई ❀ सुनी कथा मुनि निकर विहाई ॥
कहहु कवनि विधि भा सम्वादा ❀ दोउ हरि भक्त काक उरगादा ॥
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई ❀ बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावनि मतितोरी ❀ रघुपति चरण प्रीतिनहिंथोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❀ जो सुनि होइ सकलभ्रमनाशा ॥
उपजहि रामचरण विश्वासा ❀ भवनिधि तरनर विनहिंप्रयासा ॥
दोहा-ऐसे प्रश्न विहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ ॥
सो सब सादर कहतहौं, सुनहु उमा चितलाइ ॥७९॥
मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि ❀ सो प्रसंगसुनु सुमुखिसुलोचनि ॥
प्रथम दक्षगृह जब अवतारा ❀ सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्ष यज्ञ तब भा अपमाना ❀ तुम अति क्रोध तजे तहँप्राना ॥
मम अनुचरन कीन्ह मख भंगा ❀ जानहु तुम सो सकल प्रसंगा ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे ❀ दुखित भयउँ वियोग प्रियतोरे ॥
सुन्दर गिरि वन सरित तडागा ❀ कौतुक देखत फिरौं विभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी ❀ नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये ❀ चारि चारु मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इक इक विटप विशाला ❀ वट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुंदर सर सोहा ❀ मणि सोपान देखि मन मोहा ॥
दोहा-शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुलबहुरंग ॥
कूजत कल रव हंस गण, गुंजत नाना भृंग ॥ ८० ॥
तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई ❀ तासु नाश कल्पांत नहोई ॥
मायाकृत गुण दोष अनेका ❀ मोह मनोज आदि अविवेका ॥

१ शम्भु । २ सन्देह । ३ गरुड । ४ वाणी । ५ काकभुशुण्डि । ६ गमन । ७ इतिहास । ८ विक्षेप । ९ नदी । १० स्वर्णके । ११ पवित्र । १२ वृक्ष । १३ सुंदर । १४ पर्वतके ऊपर । १५ तालाव । १६ । सीढ़ी । १७ कमल । १८ अनेक ।

रहे व्यापि समस्त जग माहीं ❀ तेहिगिरिनिकटकबहुँनहिंजाहीं॥
तहँबसि हरिहि भजे जिमि कागा ❀ सो सुन उमा सहित अनुरागा॥
पीपर तरुतर ध्यान सो धरई ❀ जाप योग पाकर तर करई॥
आंब छाहँ करि मानस पूजा ❀ तजि हरि भजन काजनहिंदूजा॥
वटतर कह हरिकथा प्रसंगा ❀ आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा॥
रामचरित विचित्र विधि नाना ❀ प्रेम सहित करु सादर गाना॥
सुनहिं सकल मतिविमल मराला ❀ वसहिं निरंतर जोतेहि काला॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❀ उर उपजा आनन्द विशेषा॥

दोहा-तबकछुकालमराल तनु, धरि तहँ कीन्हनिवास॥
सादरसुनि रघुपतिचरित, पुनि आयउँ कैलास॥८१॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा ❀ मैं जेहिसमय गयउँ खगपासा॥
अबसो कथा सुनहु जेहि हेतू ❀ गयउ काक पहँ खगकुलकेतू॥
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीडा ❀ समुझतचरितहोतमोहिं व्रीडा॥
इंद्रजीत कर आपु बँधावा ❀ तब नारद मुनि गरुड़ पठावा॥
बंधन काटि गयउ उरगादा ❀ उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा॥
प्रभु बन्धन समुझत बहु भाँती ❀ करत विचार उरग आराती॥
व्यापक ब्रह्म विरँज वागीशा ❀ माया मोह पार परमीशा॥
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं ❀ देखा सो प्रभाव कछु नाहीं॥

दोहा-भवबन्धनसे छूटहीं, नर जपि जाकर नाम॥
खर्व निशाचर बाँधेउ, नागफाँस सोइ राम॥८२॥

नानाभाँति मनहिं समुझावा ❀ प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रमछावा॥
खेदं खिन्न मन तर्क बढाई ❀ भयउ मोहवश तुम्हरी नाई॥
व्याकुल गयउ देवर्षि पाहीं ❀ कहेसि जो संशयनिजमनमाहीं॥
सुनि नारदहि लागि अतिदाया ❀ सुनु खग प्रबल रामकीमाया॥
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई ❀ बरिआई विमोह वश करई॥

---

१ पक्षी। २ हंस। ३ लज्जा। ४ मायाते परे। ५ सर्व ईशनके ईश। ६ अल्प। ७ दुःख। ८ नारद।

जेहिं बहु बार नचावा मोहीं ❀ सो व्यापी विहंगपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे ❀ मिटहि न वेगि कहे खग मोरे ॥
चतुराननं पहँ जाहु खगेशा ❀ सोइ करहु जो होहि निदेशा ॥
दोहा-असकहि चले देवऋषि, करत राम गुणगान ॥
हरिमाया बल वर्णत, पुनि पुनि परम सुजान ॥ ८३ ॥
तब खगपति विरंचिपहँ गयऊ ❀ निज सन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिरनावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मनमहँ करहिं विचार विधाता ❀ मायावश कवि कोविद ज्ञाता ॥
हरि मायाकर अमित प्रभावा ❀ विपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अगे जगमयं जंग ममउपजाया ❀ नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई ❀ जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेयं शंकर पहँ जाहू ❀ तात अनत पूँछहु जनि काहू ॥
तहाँ होइ तव संशय हानी ❀ चला विहँगपति सुनि विधिवानी ॥
दोहा-परमातुर सुविहंगपति, तब आयउ मम पास ॥
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ॥ ८४ ॥
तेइँ मम पद सादर शिरनावा ❀ पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकर विनीत मृदु वाणी ❀ प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड मारग महँ मोहीं ❀ कवनि भाँति समुझावों तोहीं ॥
जब कछुकाल करिय सतसंगा ❀ तब यह होइ मोह भ्रम भंगा ॥
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई ❀ नानाभाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना ❀ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथा होत जहँ भाई ❀ पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा ❀ होइहि रामचरण दृढ नेहा ॥
दोहा-विनुसतसंग न हरिकथा, तेहि विनु मोह न भाग ॥
मोहगये विनु रामपद, होइ न दृढ अनुराग ॥ ८५ ॥
मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा ❀ किये योग जप ज्ञान विरागा ॥

१ ब्रह्मा । २ स्थावर । ३ जंगम । ४ संसार । ५ गरुड । ६ नाश । ७ अन्त । ८ भीति ।

उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला ❀ तहँ रह काकभुशुण्ड सुशीला ॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना ❀ ज्ञानी गुणगृह बहु कालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरन्तर ❀ सादर सुनहिं विविध विहंगवर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूँरी ❀ होइहि मोह जँनित दुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई ❀ चले हर्षि मम पद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा ❀ रघुपति कृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमानाँ ❀ सो खोवा चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहिंराखा ❀ खँग जानै खगहीकी भाषा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी ❀ जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी ॥

दोहा–ज्ञानीभक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपति कर यांन ॥
ताहि मोह माया प्रबल, पामँर करहिं गुमान ॥ ८६ ॥
शिव विरंचि कहँ मोहई, कोहै बपुरा आन ॥
असजियजानिभजहिंमुनि, मायापतिभगवान ॥ ८७ ॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुण्डी ❀ मति अकुण्ठ हरिभक्ति अखण्डी ॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ ❀ माया मोह- शोक भ्रम गयऊ ॥
करितडाग मज्जन जल पाना ❀ वटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
बृद्ध बृद्ध विहंग तहँ आये ❀ सुनहिं रामके चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सोइ चाहा ❀ ताही समय गयउ खगनाहा ॥

एक समय कागभुशुंडि दशरथके आंगनमें बाललीला देखरहेथे कि, देखते देखते मोह हुआ तब रामजीके हाथसे पूरी छीनके भागे रामजीने मोहसे इनकी ढिठाई देख गरुडका स्मरण किया सो गरुड और भुशुंडि दोनों-में अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभुशुंडिजी भागे और त्रिलोकीमें फिरे परन्तु गरुड़जीने पीछा नहीं छोड़ा जब फिर रामजीके शरणमें आये तब राम-जीने गरुडको निवारण कर कागभुशुंडिको ज्ञानउपदेश किया वही अभिमान गरुडको रहा सो कृपानिधानने श्रोता बनायकै सो अभिमान दूर किया ॥

१ जामें अन्तरनपरै । २ पक्षी । ३ समूह । ४ उत्पन्न । ५ पखेरू । ६ । वाहन । ७ अधमनर । ८ दुःखितजीव । ९ अबाध्य ।

आवत देखि सकल खगराजा ❀ हर्षेउ वायस सकल समाजा ॥
अति आदर खगपति करकीन्हा ❀ स्वागत पूँछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा ❀ मधुरवचन बोलेउ तब कागा ॥
दोहा—नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ॥
आयसुहोइ सो करौंअब,प्रभुआयहुकेहिकाज॥८८॥
सदा कृतारथ रूप तुम, कह मृदु वचन खगेश ॥
जाकीअस्तुतिसादरहि, निजमुखकीन्हमहेश ॥८९॥
सुनहु तात जेहि कारण आयउँ ❀ सो सब भयउ दर्श तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम ❀ गयउ मोह संशय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि ❀ सदा सुखद दुख पुंज नशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं ❀ बारं बार विनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा विनीता ❀ सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा ❀ कहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहि अतिअनुराग भवानी ❀ रामचरित सब कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावण अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ❀ पुनि शिशुचरित कहेसिमनलाई ॥
दोहा—बालचरितकहिविविधविधि, मनमहँपरमउछाह ॥
ऋषि आगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुवीर विवाह॥९०॥
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा ❀ पुनि नृप वचन राज रस भंगा ॥
पुरवासिन कर विरह विषादा ❀ कहेसि राम लक्ष्मण संवादा ॥
विपिन गमन केवट अनुरागा ❀ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
वाल्मीकि प्रभुमिलन बखाना ❀ चित्रकूट जिमि बस भगवाना ॥
सचिवागमन नगर नृपमरणा ❀ भरतागमन प्रेम अतिवरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरवासी ❀ भरत गये जहँ प्रभु सुखराशी ॥
पुनि रघुपतिबहुविधि समुझाये ❀ लै पादुका अवध फिरि आये ॥

१ अतिप्रीतिसे आगमन । २ आज्ञा । ३ दीनतायुक्त । ४ आनंद । ५ राजतिलककी वार्ता । ६ दशरथ । ७ वन । ८ सुमंत । ९ खड़ाऊं ।

भरत रहनिसुरपतिसुत करणी ❀ प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि वरणी ॥
दोहा–कहि विराध वध जाहिविधि, देह तजी शरभंग॥
वर्णि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभु अगस्त्य सतसंग॥९१॥
कहि दण्डकवन पावन ताई ❀ गृध्र मैत्री पुनि तेइँ गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृतवासा ❀ भंजेउ सकल मुनिनकरत्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा ❀ शूर्पणखा जिमिकीन्ह कुरूपा ॥
खर दूषणवध बहुरि बखाना ❀ जिमि सब मर्म दशानन जाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही ❀ जेहि विधि भई सकल तेइँ कही॥
पुनि माया सीताकर हरणा ❀ श्रीरघुवीर विरह कछु वरणा ॥
पुनि प्रभुगृध्रक्रियाजिमिकीन्हा ❀ वधि कबंध शवरिहिं गतिदीन्हा॥
बहुरि विरह वर्णत रघुवीरा ❀ जेहि विधि गयउ सरोवर तीरा ॥
दोहा–प्रभु नारद सम्बाद कहि, मारुति[3] मिलन प्रसंग॥
पुनि सुग्रीव मिताई, वालि प्राणकर भंग ॥ ९२ ॥
कपिहि तिलक करि रामकृत, शैल प्रवर्षण वास ॥
वर्णत वर्षा शरदऋतु, राम रोष कपित्रास ॥ ९३ ॥
जेहिविधि कपिपति कीश पठाये ❀ सीताखोज सकलदिशि धाये ॥
विवर प्रवेश कीन्ह जेहि भाँती ❀ कपिन बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुँमारा ❀ लाँघत भयउ पयोधि अपारा॥
लंका कपि प्रवेश जिमिकीन्हा ❀ पुनि सीतहि धीरजजिमिदीन्हा॥
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी ❀ पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई ❀ वैदेहीकी कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुवीरा ❀ उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला विभीषण जेहिविधि आई ❀ सागर निग्रह कथा सुनाई ॥
दोहा–सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरे सागर पार ॥
गयो बसीठी वीर वर, ज्यहि विधि वालिकुमार ॥९४॥

१ जयन्त । २ रावण । ३ हनुमान । ४ सुग्रीव । ५ बंदर । ६ गिरिकंदरा ।
७ हनुमान । ८ समुद्र । ९ दूत ।

निशिचर कीश लड़ाई, वर्णेसि विविध प्रकार ॥
कुम्भकर्ण घननादकर, बल पौरुष संहार ॥ ९५ ॥
निशिचर निकर मरण विधिनाना ❀ रघुपति रावणसमर बखाना ॥
रावण वध मन्दोदरि शोका ❀ राज्य विभीषण देवअशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी ❀ सुरन कीन्हअस्तुतिकरजोरी ॥
पुनि पुष्पकचढि सीय समेता ❀ अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि विधि राम नगर नियराये ❀ वायस विशद चरित सबगाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका ❀ पुर वर्णन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंडि बखानी ❀ जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि सब राम कथा गुणगाहा ❀ कहत वचन मन परमउछाहा ॥
सो०—गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित ॥
भयउ रामपद नेह, तवप्रसाद वायस तिलक ॥ २ ॥
मोहिं भयउ अति मोह, प्रभु बंधन रण महँ निरखि ॥
चिदानन्दसन्दोह, राम विकल कारण कवन ॥ ३ ॥
देखि चरित अति नर अनुहारी ❀ भयउ हृदय मम संशय भारी ॥
सो भ्रम अब मैं हित करिमाना ❀ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति आतप व्याकुल होई ❀ तरुछाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोहअति मोहीं ❀ मिलितेउँ तातकवनिविधितोहीं ॥
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई ❀ अतिविचित्र सबविधि तुम गाई ॥
निगमागम पुराण मत एहा ❀ कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा ॥
सन्त विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही ❀ चितवहिं राम कृपाकरि जेही ॥
रामकृपा तव दरशन भयऊ ❀ तवप्रसाद मम संशय गयऊ ॥
दोहा—सुनि विहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग ॥
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्षे अति काग ॥ ९६ ॥

१ घाम । २ वृक्षकीछाया । ३ विशुद्ध कही विशेषशुद्धयोग ज्ञान वैराग्य इत्यादिक संयुक्त, श्रीरामानन्य ।

श्रोता सुमति सुशील शुचि, कथा रसिक हरिदास ॥
पाइ उमा यह गोप्यमत, सज्जन करहिं प्रकाश ॥ ९७ ॥
बोलेउ कागभुशुण्डि बहोरी ❀ नभगनाथ पर प्रीति नथोरी ॥
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे ❀ कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया ❀ मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोहमिसु खगपति तोहीं ❀ रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं ❀ सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव विरंचि सनकादी ❀ जे मुनि नायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही ❀ को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा ❀ केहिके हृदय क्रोध नहिंदाहा ॥
दोहा–ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥
केहिके लोभ विडंबना, कीन्ह न यहि संसार ॥ ९८ ॥
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता वधिर न काहि ॥
मृगनयनीके नयनशर, को अस लागुनजाहि ॥ ९९ ॥
गुणकृत सन्निपात नहिं केही ❀ को न मान मद व्यापेउजेही ॥
यौवनज्वर केहिनहिं बलकावा ❀ ममता केहिकर यशननशावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा ❀ काहि न शोक समीरडोलावा ॥
चिंता साँपिनि काहि न खाया ❀ को जग जाहि न व्यापीमाया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा ❀ जेहि न लागु घुनकोअसधीरा ॥
सुत वित लोक ईषणातीनी ❀ केहिकीमतिइन्हकृत न मलीनी ॥
यह सब मायाकृत परिवारा ❀ प्रबल अमितको वरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं ❀ अपरजीव केहि लेखे माहीं ॥
दोहा–व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ॥
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषण्ड ॥ १०० ॥

१ सहनशील । २ पवित्र । ३ श्रीरामचन्द्रके चरित रसका पानकरै ऊपर सावनके रसते अनइच्छितहो । ४ श्रीकही लक्ष्मी, धन, जाति, कुल, युवा, विद्या, ज्ञान ध्यान । ५ इच्छा ।

सो दासी रघुवीरकी, समुझै मिथ्या सोपि ॥
छुटै न राम कृपा बिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥१०१॥
सो माया सब जगहि नचावा ❀ जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूविलास खगराजा ❀ नाच नटीइव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता ❀ अखिल अमोघ एक भगवन्ता ॥
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा ❀ अज विज्ञान रूप गुणधामा ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता ❀ समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा ❀ नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उर वासी ❀ ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी ॥
इहाँ मोहकर कारण नाहीं ❀ रविसम्मुख तम कबहु न जाहीं ॥
दोहा–भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ॥
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥१०२॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ जोइ भाव दिखावै, आपु न होइ न सोइ ॥ १०३॥
अस रघुपति लीला उरगारी ❀ दनुज विमोहन जनसुखकारी ॥
जो मतिमलिन विषयवश कामी ❀ प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जाकहँ जब होई ❀ पीतवर्ण शशि कहँ कह सोई ॥
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा ❀ सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा ❀ अचल मोहवश आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❀ कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
हरि विषयक अस मोह विहंगा ❀ स्वप्नेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
मायावश मतिमंद अभागी ❀ हृदयजवनिका बहुविधि लागी ॥
ते शठ हठवश संशय करहीं ❀ निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥
दोहा–काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुखरूप ॥
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ परे तम कूप ॥ १०४॥

१ सफल। २ मूलप्रकृति, अव्याकृति, अध्यात्मशक्ति, महामाया। ३ निश्चिन्त। ४ मायाके विकारते रहित। ५ अन्धकार। ६ सूर्य्य। ७ मोहरूपीकाई। ८ आसन।

निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण न जानै कोय ॥
सुगम अगम नानाचरित,सुनिमुनिमनभ्रमहोय १०५॥
सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई ❀ कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहिविधि मोहभयउ प्रभु मोहीं ❀ सो सब चरित सुनावौं तोहीं ॥
रामकृपा भाजन तुम ताता ❀ हरिगुण प्रीति मोहिं सुखदाता ॥
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावौं ❀ परमरहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ❀ जन अभिमान न राखैं काऊ ॥
संसृति मूल शूलप्रद नाना ❀ सकल शोकदायक अभिमाना॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी ❀ सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमि शिशुतनु व्रण होइ गुसाईं ❀ मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥
दोहा-यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर ॥
व्याधिनाश हित जननी, गनै न सो शिशु पीर ॥१०६ ॥
तिमि रघुपति निज दास कर, हरहिं मान हित लागि ॥
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं,कस न भजहु भ्रमत्यागि१०७॥
रामकृपा आपनि जड़ताई ❀ कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं ❀ भक्तहेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं ❀ शिशु लीला विलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई ❀ वर्ष पांचतहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा ❀ शोभा वपुषै कोटि शत कामा ॥
निजप्रभु वदन निहारि निहारी ❀ लोचन सफल करौं उरगारी ॥
लघु वायस वपु धरिहरि संगा ❀ देखौं बाल चरित बहुरंगा ॥
दोहा-लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संगउड़ाउँ ॥
जूठन परै अजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥ १०८ ॥
एकबार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुबीर ॥
सुमिरत प्रभु लीला सोइ, पुलकित भयउ शरीर॥१०९॥

१ दद्दतीर-फोड़ा। २ माता। ३ देह। ४ आंगन।

कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक ❀ रामचरित सेवक सुखदायक ॥
नृपमन्दिर सुन्दर सब भाँती ❀ खचित कनक मणि नानाजाती॥
वरणि न जाय रुचिर अँगनाई ❀ जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
बाल विनोद करत रघुराई ❀ विचरत अजिर जननि सुखदाई॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा ❀ अंग अंग प्रति छवि बहुकामा ॥
नवराजीव अरुण मृदु चरणा ❀ पदपंकज नख शशिद्युति हरणा॥
ललितअंग कुलिशादिक चारी ❀ नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचित बनाई ❀ कटिकिंकिणि कलमुखर सुहाई॥

दोहा-रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ॥
उरआयत भ्राजत विविध, बालविभूषण चीर॥११०॥

अरुणपाणि नखकरज मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण शोहर ॥
कन्ध बालकेहरि दरग्रीवा ❀ चारु चिबुक आननछवि सींवा ॥
कलबल वचन अधर अरुणारे ❀ दुइ दुइ दशन विशद वरवारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ सकलसुखदशशिकरसम हासा॥
नीलकंज लोचन भवमोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन॥
विकट भृकुटिसम श्रवण सुहाये ❀ कुंचित कच मेचक छवि छाये॥
पीत झीन झँगुलि तनु सोही ❀ किलकनि चितवनि भावत मोही॥
रूपराशि नृप अजिर विहारी ❀ नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी॥
मोसन करहिं विविध विध क्रीड़ा ❀ वर्णत चरित होत मन व्रीड़ा ॥
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं ❀ चलौं भाजि तब पूप देखावहिं ॥

दोहा-आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥
जाउँ समीप गहनपद, फिरि फिरिचितै पराहिं॥१११॥
प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह ॥
कवन चरित्र करतप्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ११२ ॥

१ क्रीडा । २ पन्नामणि । ३ माताके सुखदाता । ४ श्याममणि । ५ कोमल । ६ सुंदर । ७ सुवर्ण । ८ पेट । ९ चौडी । १० अंगुरियां । ११ शंख । १२ मुख । १३ तोतर । १४ रुचिर । १५ टेढी । १६ भौंह । १७ कान । १८ घुँघुवारे । १९ बाल । २० श्यामरुचिक्कन । २१ छाया । २२ लज्जा ।

इतना भ्रम आनत खगराया ❁ रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया नदुखद मोहिं काहीं ❁ आनजीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारण आना ❁ सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर ❁ मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस ❁ ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस ॥
मायावश्य जीव अभिमानी ❁ ईशवश्य माया गुणखानी ॥
परवश जीव स्ववश भगवन्ता ❁ जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
मृषा भेद यद्यपि कृतमाया ❁ विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥
दोहा-रामचन्द्रके भजन विनु, जो चह पद निर्वाण ॥
ज्ञानवन्त अति सोपि नर, पशुविनुपूछ विषाण ११३॥
राकापति षोडश उगहिं, तारागण समुदाय ॥
सकलगिरिन दवलाइये, रविविनुराति नजाय॥११४॥
ऐसे विनु हरिभजन खगेशा ❁ मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या ❁ प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर ❁ भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर ॥
भ्रमते चकित राम मोहिं देखा ❁ विहँसे सो सुन चरित विशेषा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म नकाहू ❁ जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिं धरणा ❁श्यामलगात अरुण मृदुचरणा॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❁ रामगहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकाशा ❁ तिमि तिमिभुज देखौंनिजपासा॥
दोहा-ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितयउ पाछ उड़ात॥
युग अंगुल कर बीचरह, राम भुजहिमोहिंतात ११५॥
सप्तावर्ण भेद करि, जहँ लगि रहि गति मोरि ॥
गयों तहाँ प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयों बहोरि ११६
मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ ❁ पुनि चितवत कोशलपुर गयऊँ॥

१ जन्ममरण। २ पूर्णमासीका चन्द्रमा सोलह। ३ सूर्य्य। ४ माया। ५ जल। ६ कोमल। ७ गरुड़।

मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं ❀ बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं ॥
उदर माँझ सुनु अंडजराया ❀ देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका ❀ रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा ❀ अगणितउड़गण रवि रजनीशा ॥
अगणित लोकपाल यम काला ❀ अगणित भूधर भूमि बिशाला ॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा ❀ नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❀ चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दोहा—जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाय ॥
अस अद्भुत तहँ देखेउँ, बर्णि कवन बिधिजाय॥११७॥
एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ॥
यहि बिधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक॥११८॥

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता ❀ भिन्नबिष्णुशिवमनु दिशित्राता॥
नर गन्धर्व भूत वैताला ❀ किन्नरनिशिचर पशुखगव्याला॥
देव दनुज गण नाना जाती ❀ सकल जीव तहँ आनहिं भाँती॥
महिसरि सागर सर गिरि नाना ❀ सब प्रपंच तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निजरूपा ❀ देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी ❀ सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता ❀ बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रतिब्रह्माण्ड राम अवतारा ❀ देखेउँ बाल बिनोद अपारा ॥

दोहा—भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अति बिचित्र हरियान॥
अगणित भुवन फिरेउँ मैं, राम न देखा आन॥११९॥
सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुबीर ॥
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह समीर॥१२०॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका ❀ बीते मनहुँ कल्पशत एका ॥
फिरत फिरत निजआश्रम आयउँ ❀ तहँ पुनि रहि कछुकाल गवायउँ

१ पर्वत । २ नदी । ३ तालाब। ४ वन। ५ संसारकीबातें-रचना । ६ ब्रह्माण्ड। ७ लड़कपन ।

निज प्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ ❋ निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्ममहोत्सव जाई ❋ जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
राम उदर देखेउँ जगनाना ❋ देखत बनै न जात बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ रामसुजाना ❋ मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं विचार बहोरि बहोरी ❋ मोह कलित व्यापित मति भोरी ॥
उभय घरिमहँ मैं सब देखा ❋ भयउँ भ्रमित मनमोह विशेषा ॥
दोहा–देखि कृपालु विकल मुहिं, विहँसे तब रघुवीर ॥
विहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुन मतिधीर ॥ १२१ ॥
सोइ लरिकाई मोहिसन, लगे करन पुनि राम ॥
कोटि भाँति समुझावों, मन न लहै विश्राम ॥ १२२ ॥
देखि चरित यहसो प्रभुताई ❋ समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणिपरेउँ मुख आव न बाता ❋ त्राहि त्राहि आरतजन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी ❋ निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ ❋ दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा ❋ सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम विचार विचारी ❋ मनमहँ होइ हर्ष अति भारी ॥
भक्तवछलता प्रभुकै देखी ❋ उपजा मन उरहर्ष विशेषी ॥
सजलनयन पुलकित करजोरी ❋ कीन्ही बहुविधि विनय बहोरी ॥
दोहा–सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निजदास ॥
वचनसुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥ १२३ ॥
कागभुशुण्डी माँगु वर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
अणिमादिकसिधिअपरानिधि, मोक्षसकलसुखखानि १२४
ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना ❋ मुनि दुर्लभ गति जो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं ❋ माँगु जो तोहिं भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ ❋ मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥

१ मोहसे घिरीहुई। २ बावली। ३ दोघडी। ४ वर। ५ अष्टसिद्धिनवौनिधि

प्रभुकह देन सकल सुखसही ❀ भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्ति हीन गुण सुख सब ऐसे ❀ लवण बिना बहु व्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा ❀ अस विचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वरदेहू ❀ मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मनभावत वर माँगौं स्वामी ❀ तुम उदार उर अन्तरयामी ॥

दोहा–अविरल भक्ति विशुद्ध तव, श्रुतिपुराण जो गाव ॥
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभु प्रताप कोउ पाव १२५ ॥
भक्त कल्पतरु प्रणत हित, कृपासिन्धु सुखधाम ॥
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम ॥ १२६ ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक ❀ बोले वचन परम सुखदायक ॥
सुनु वायस तैं परमसयाना ❀ काहेन माँगसि अस वरदाना ॥
सब सुखखानि भक्ति तैं माँगी ❀ नहिंजगकोउतोहिसमबड़भागी ॥
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं ❀ कै जप योग अनल तनु दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई ❀ माँगेउ भक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे ❀ सब शुभगुण वसिहैं उरतोरे ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❀ योगचरित्र रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा ❀ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दोहा–मायासम्भवसकलभ्रम, अबनहिंव्यापिहितोहिं ॥
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुणगुणाकरमोहिं १२७
मोहिं भक्ति प्रिय सन्तत, अस विचारि सुनु काग ॥
कायँ वचन मन मम चरण, करहुअचलअनुराग १२८ ॥

अब सुन परम विमल ममवानी ❀ सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं ❀ सुन मन धरि सबतजिभजुमोहीं ॥
मम माया संभव संसारा ❀ जीव चराचर विविध प्रकारा ॥

१ भोजन । २ सबकुछदेवेयोग्य । ३ अन्तरके जाननहार । ४ अखंड । ५ वेद । ६ श्रीरामचन्द्र । ७ अग्नि । ८ भिन्नभिन्न । ९ दुःख । १० उत्पन्न । ११ शरीर । १२ मत ।

सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❋ सबते अधिक मनुज मोहिं भाये॥
तिन्हमहँद्विजद्विजमहँ श्रुतिधारी ❋ तिन्हमहँ निगमधर्म अनुसारी ॥
तिन्हमहँ प्रियविरक्त पुनिज्ञानी ❋ ज्ञानिहुते अतिप्रिय विज्ञानी ॥
तिनते पुनि मोहिं प्रिय निजदासा ❋ जेहिगति मोरि न दूसरि आशा॥
पुनि पुनि सत्यकहौं तोहिं पाहीं ❋ मोहिं सेवकसम प्रिय कोउनाहीं॥
भक्तिहीन विरंचि किन होई ❋ सब जीवनमहँ अप्रिय सोई ॥
भक्तिवन्त अति नीचो प्राणी ❋ मोहिं परमप्रिय सुनु ममवाणी ॥

दोहा—शुचिसुशीलसेवकसुमति, कहुप्रियकाहिनलाग॥
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनुकाग १२९

एक पिताके विपुल कुमारा ❋ होइँ पृथकगुण शील अचारा ॥
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता ❋ कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ❋ सबपर पितहिं प्रीतिसम होई ॥
कोउ पितुभक्त वचनमनकर्म्मा ❋ स्वप्नेहु जान न दूसर धर्म्मा ॥
सो प्रिय सुत पितु प्राणसमाना ❋ यद्यपि सो सब भाँति अजाना॥
एहिविधि जीव चराचर जेते ❋ त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिलविश्व यह मम उपजाया ❋ सब पर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परिहरि सब माया ❋ भजहिं मोहिंमनवचअरु काया॥

दोहा—पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ॥
सर्व भाव भजु कपट तजि, मोहिं परम प्रियसोइ१३०॥

सो०—सत्यकहौं खग तोहिं, शुचि सेवक मम प्राणप्रिय॥
असविचारि भजु मोहिं, परिहरि आश भरोस सब॥४॥

कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं ❋ सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोहीं ॥
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं ❋ तनुपुलकित मन अतिहर्षाऊँ ॥
सो सुख जानै मन अरु काना ❋ नहिं रसना प्रति जाइ वखाना॥
प्रभु शोभासुख जानत नयना ❋ कहिकिमिसकैंतिन्हैंनाहिंवयँना॥

१ ब्राह्मण । २ वेदके जाननेवाले । ३ वेदके अनुसारचलनेवाले । ४ वैरागी,ब्रह्मज्ञानजानने-वाले । ५ कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड चारिउफल । ६ विधि । ७ अनेक । ८ अलग अलग । ९ मूर्ख । १० समूह । ११ त्याग । १२ सदासर्वदा । १३ जिव्हा । १४ वाणी ।

बहुविधि राम मोहिं शिख देई ❀ लगे करन शिशु कौतुक तेई ॥
सजलनयन कछुमुखकरि रूखा ❀ चितै मातु तनु लागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई ❀ कहि मृदुवचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराय पय पाना ❀ रघुपतिचरितललितकरिगाना॥
सो०-जेहि सुखलागिपुरारि, अशिववेषकृतशिवसुखद॥
अवधपुरीनरनारि, तेहि सुख महँ संतत मगन ॥५॥
सोइ सुख कर लवलेश, जिन बारेक स्वप्नेहु लहेउ ॥
ते नहिं गणहिं खगेश, ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति ॥६॥
मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला ❀ देख्यों बालँ विनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति बर पायउँ ❀ प्रभुपद वन्दि निजाश्रम आयउँ॥
तबते मोहिं न व्यापी माया ❀ जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्तचरित मैं गावा ❀ हरिमाया जिमि मोहिं नचावा ॥
निज अनुभव अब कहौं खगेशा ❀ बिनु हरिभजन नजाहिं कलेशा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई ❀ जानि नजाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती ❀ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढाई ❀ जिमि खगेश जलकी चिकनाई॥
सो०-बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु ॥
गावहिं वेद पुरान, सुखकि लहहिं बिनु हरिभगति॥७॥
कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ॥
चलै कि जल बिनु नाव, कोटियतन पचि पचि मरै॥८॥
बिनु सन्तोष न कामनशाहीं ❀ काम अछत सुखस्वप्नेहुँ नाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिं नकामा ❀ थलविहीन तरुँ कबहुँकि जामा ॥
बिना ज्ञानकी समता आवै ❀ कोउ अवकाशकिनभ बिनुपावै ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई ❀ बिनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
बिनु तप तेज कि करु बिस्तारा ❀ जल बिनुरस कि होइ संसारा ॥

१ बालपन। २ सुंदर। ३ महादेव। ४ शिशुक्रीडा। ५ अपनानिवास स्थान। ६ सिद्धांत। ७ नआयेको हर्ष न गयेको शोच। ८ कामना। ९ रहते १० वृक्ष। ११ आकाश। १२ पृथ्वी।

शीलकि मिलु विनु बुध सेवकाई ❀ जिमि विनुतेज न रूप गुसाँईं ॥
निजसुख विनु मनहोइ कि थीरा ❀ परसै किहोइ विहीन समीरा ॥
कवानिउ सिद्धि कि विनु विश्वासा ❀ विनु हरिभजन नभवभय नाशा॥

दोहा—विनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहिविनुद्रवहिं न राम॥
रामकृपा विनु स्वप्नेहु, मनकि लहै विश्राम ॥ १३१ ॥

सो०—अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्कसंशय सकल
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुन्दरसुखद ॥ ९ ॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई ❀ प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
कह्यों न कछुकरि युक्ति विशेषी ❀ यह सब मैं निज नयनन देखी ॥
महिमा नाम रूप गुणगाथा ❀ सकल अमित अनन्तरघुनाथा॥
निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं ❀ निगम शेष शिव पार न पावहिं॥
तुम्हें आदि खग मशक प्रयन्ता ❀ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ❀ तात कबहुँ कोउ पावकि थाहा॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन ❀ दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन ॥
शक्र कोटिशत सरिस विलासा ❀ नभशतकोटिअमितअवकाशा॥

दोहा—मरुत कोटि शत विपुल बल, रविशतकोटिप्रकाश
शशि शत कोटि सुशीतल, शमन सकलभवत्रास १३२
काल कोटि शत सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त ॥
धूमकेतु शत कोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त ॥ १३३ ॥

प्रभु अगाध शत कोटि पताला ❀ शमन कोटिशत सरिस कराला॥
तीरथ अमितकोटि शतपावन ❀ नाम अखिल अघ पुंज नशावन॥
हिमगिरिकोटिअचलरघुवीरा ❀ सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा॥
कामधेनु शत कोटि समाना ❀ सकल कामदायक भगवाना ॥
शारद कोटि अमित चतुराई ❀ विधिशतकोटिअमितनिपुणाई॥

१ पंडित । २ आत्मक । ३ छूना । ४ वायु । ५ कृपा । ६ आंखें । ७ अथाह । ८ सुंदर । ९ शत्रु । १० इंद्र । ११ विस्तारित । १२ तारिबे योग्यनहीं । १३ ज्यहिकरअन्तपावनादूरिहै । १४ अग्नि । १५ दूरिहै धारणा जिनके । १६ हिमाचल ।

विष्णु कोटिशत पालनकर्ता ❀ रुद्र कोटिशत सम संहर्ता ॥
धनद[1] कोटि शत सम धनवाना ❀ माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
धराधरण[2] शतकोटि अहीशा ❀ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा ॥

छंद–निरवधि निरूपम राम सम नहिं आन निगमागम कहैं
जिमि कोटिशत खद्योत[3] रविकहँ कहत अति लघुता लहैं ।
इहि भाँति निज निज मति विलास मुनीश हरिहि बखानहीं
प्रभु भावगाहक अति कृपालु सप्रेम सुनि सुख पावहीं ९ ॥

दोहा–राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ ॥
सन्तनसन जस कछु सुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ ॥ १३४ ॥

सो०–भाववश्य भगवान, सुखनिधान करुणा भवन ॥
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमण ॥ १० ॥

सुनि भुशुंडिके वचन सुहाये ❀ हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अतिहर्षाना ❀ श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिलमोह समुझि पछिताना ❀ ब्रह्म अनादि मनुजकरि जाना ॥
पुनि पुनि काकचरण शिरनावा ❀ जानि रामसम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई ❀ जो विरंचि शंकरसम होई ॥
संशयसर्प ग्रसेउ मोहिं ताता ❀ दुख दलहरि कुतर्क बहु व्राता ॥
तव स्वरूप गारुड़ि[4] रघुनायक ❀ मोहिं जियायहु जनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना ❀ रामरहस्य अनूपम जाना ॥

दोहा–ताहि प्रशंसेउ विविधविधि, शीश नाइ करजोरि ॥
वचन सप्रेम विनीत मृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥ १३५ ॥
प्रभु अपने अविवेक ते, पूछौं स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दास निज मोहिं ॥ १३६ ॥

तुम सर्वज्ञ तज्ज्ञ[5] तम[6] पारा ❀ सुमति सुशील सरल आचारा ॥
ज्ञानविरति विज्ञान निवासा ❀ रघुनायकके प्रिय तुम दासा ॥

---

१ कुबेर । २ पृथ्वी । ३ जुगनू । ४ गरुडमंत्र जिससे सांपका विष उतरिजाय ।
५ परमतत्त्ववेत्ता ६ अविद्याते परे ।

कारण कवन देह यह पाई ❋ तात सकल मोहिं कहहु बुझाई॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी ❋ पायहु कहाँ कहहु नभगामी॥
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं ❋ महाप्रलय महँ क्षय तव नाहीं॥
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं ❋ सो मेरे मन संशय अहहीं॥
अग जग जीव नाग नर देवा ❋ नाथ सकल जग काल कलेवा॥
अंडकटाह अमित लयकारी ❋ काल महादुरतिक्रम भारी॥

सो०—तुमहिं न व्यापत काल, अतिकराल कारण कवन।
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योगबल॥११॥

दोहा—प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग॥
कारण कवन सो नाथ अब, कहहु सहित अनुराग॥१३७॥

गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा ❋ बोले उमा सहित अनुरागा॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी ❋ प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई ❋ बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई ❋ तात सुनहु सादर मनलाई॥
जप तप मख शम दम व्रत दाना ❋ विरति विवेक योग विज्ञाना॥
सबकर फल रघुपतिपद प्रेमा ❋ तेहि बिनु कोइ न पावै क्षेमा॥
इहि तनु राम भक्ति मैं पाई ❋ ताते मोहिं ममता अधिकाई॥
जेहिते निज स्वारथ कछु होई ❋ तेहि पर ममता कर सब कोई॥

सो०—पन्नगारि असिनीति, श्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं।
अति नीचहु सन प्रीति, करिय जानि निजपरमहित॥१२॥
पाट कीटते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर॥
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्राणसम॥१३॥

स्वारथ सर्व जीव कहँ एहा ❋ मन क्रम वचन राम पद नेहा॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा ❋ जो तनु पाइ भजिय रघुवीरा॥
रामविमुख लहि विधिसम देही ❋ कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही॥

१ अनेकब्रह्मांडविस्तारित। २ दुस्तर। ३ कुशल। ४ गरुड। ५ कीडा।

रामभक्ति यहि तनुमहँ जामी ❀ ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी॥
तजौं न तनु निजइच्छा मरणा ❀ तनु विनु वेद भजन नहिंवरणा॥
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा ❀ राम विमुख सुख कबहुँ नसोवा॥
नाना जन्म कर्म पुनि नाना ❀ किये योग जप तप मख दाना॥
कवन योनि जन्मेउँ जहँ नाहीं ❀ मैंखगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं॥
देखेउँ सब करि कर्म्म गुसाँई ❀ सुखी न भयउँ अबहिं की नाँई॥
सुधि मोहिं नाथ जन्मबहु केरी ❀ शिव प्रसाद मति मोह न घेरी॥

दोहा–प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहगेश ॥
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश ॥१३८॥
पूर्वकल्पमें एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल ॥
नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगमप्रतिकूल॥१३९॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई ❀ जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई ॥
शिव सेवक मन क्रम अरु बानी ❀ आनदेवनिन्दक अभिमानी ॥
धन मद मत्त परम वाचाला ❀ उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी ❀ तदपिनहीं महिमा कछु जानी॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा ❀ निगमागम पुराण अस गावा ॥
कवनिहुँ जन्म अवधवस जोई ❀ राम परायण सो परिहोई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी ❀ जब उर बसहिं राम धनु पाणी॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❀ पाप परायण सब नर नारी ॥

दोहा–कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥
दम्भिननिजमतिकल्पिकरि,प्रगटकीन्हबहुपन्थ१४०
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म ॥
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहौं कछुक कलिधर्म ॥१४१॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी ❀ श्रुति विरोध रत सब नर नारी॥

---

१ भरमाया । २ यज्ञ । ३ गरुड़ । ४मीति । ५ पौंप ६ वेद । ७बक्ता । ८ वैदीति॰ क्षण तामस राजससे मिलितबुद्धि । ९ शास्त्रके पदार्थ सबको देखावत स्तौं धरु त्यद्दिकी कर्तव्यते मतिकूलरहीं । १० लगाहुआ । ११ शास्त्रकी रीति ।

द्विज श्रुतिवंचक[1] भूप प्रजाशन[2] ❀ कोउ नहिं मान निगम अनुशासन ॥
मारग सोइ जाकहँ जो भावा ❀ पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्या रम्भ दम्भरत जोई ❀ ताकहँ सन्त कहै सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी ❀ जो करु दम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो बहु झूठ मसखरी जाना ❀ कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना ॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी ❀ कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी ॥
जाके नख अरु जटा बिशाला ❀ सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दोहा—अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं ॥
त्यइ योगी त्यइ सिद्ध नर, पूज्य ते कलियुग माहिं ॥ १४२ ॥

सो०—जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता ॥
मन क्रम वचन लबार, ते वक्ता कलिकाल महँ ॥ १४ ॥

नारि विवश नर सकल गुसाईं ❀ नाचहिं नट मर्कट[3] की नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना ❀ मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी ❀ देव विप्र गुरु सन्त विरोधी ॥
गुण मन्दिर सुंदर पति त्यागी ❀ भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी विभूषणहीना ❀ विधवनके शृंगार नवीना ॥
गुरु शिष अंध बधिरकर[4] लेखा ❀ एक न सुनै एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्य धन शोक न हरई ❀ सो गुरु घोर नरक महँ परई ॥
मात पिता बालकन बुलावहिं ❀ उदर भरै सोइ कर्म सिखावहिं ॥

दोहा—ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, करहिं न दूसरि बात ॥
कौड़ी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात ॥ १४३ ॥
बाद शूद्र कह द्विजन सन, हम तुमते कछु घाटि ॥
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि दिखावहिं डाटि ॥ १४४ ॥

परतिय लम्पट[5] कपट सयाने ❀ मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर ❀ देखा मैं चरित्र कलियुग कर ॥

---

१ वेदकी निंदा करनेवाले । २ प्रजाका अन्न खाजानेवाले । ३ वादर । ४ झूंठे ।
५ बंदर । ६ बहिरा ७ आसक्त ।

आपु गये अरु आनहिं घालहिं ❀ जोकोउ श्रुतिमारगप्रतिपालहिं॥
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का ❀ परहिंजे दूषहिं श्रुति करि तर्का॥
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा ❀ श्वपच¹ किरातकोल²हे कलवारा॥
नारि मुई गृह सम्पति नाशी ❀ मूड़ मुँडाइ भये संन्यासी॥
ते विप्रन सन पाँव पुजावहिं ❀ उभय लोकनिज हाथ नशावहिं॥
विप्र निरक्षर लोलुप³ कामी ❀ निराचार शठ वृषली⁴ स्वामी॥
शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना ❀ बैठि वरासन⁵ कहहिं पुराना॥
सब नरकल्पित करहिं अचारा ❀ जाइ न वर्णि अनीति अपारा॥

दोहा-भये वर्णसंकर कलिहिं, भिन्न सेतु सब लोग॥
करहिं पाप दुखपावहीं, भय रुज⁶ शोक वियोग॥१४५॥
श्रुति सम्मत हरिभक्तिपथ, संयुत ज्ञान विवेक॥
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पंथअनेक॥१४६॥

त्रोटक छंद॥

बहु धाम सवारहिं योगि यती, विषया हरि लीन्ह गईविरती⁷॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही, कलि कौतुक तात न जात कही॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती, गृह आनहिं चेरिहिं चेरगती॥
सुत मानहिं मात पिता तबलौं, अबलानन⁸ दीख नहीं जबलौं॥
ससुरारि पियारि लगी जबते, रिपु रूप कुटुम्ब भये तबते॥
नृपपाप परायणधर्मनहीं, करि दण्ड विदण्ड⁹ प्रजा नितहीं॥
धनवंत कुलीन मलीन अपी, द्विज चिह्न जनेउ उघार तपी॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिजो, हरिसेवक संत सही कलिसो॥
कवि वृंद उदार दुनी न सुनी, गुण दूषक बात न कोपि गुनी॥
कलि बारहिंबार दुकालपरैं, बिन अन्न दुखी बहुलोग मरैं॥

दोहा-सुन खगेश कलि कपट हठ, दम्भ द्वेष¹¹ पाषण्ड॥

१ चांडाल। २ भील। ३ लोभी। ४ दासी। ५ श्रेष्ठआसन ऊंचो। ६ रोग। ७ वैराग्य। ८ अपनी स्त्रीनकोमुख। ९ मार। १० निश्चय। ११ वैर।

काम क्रोध लोभादि मद,व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड॥१४७॥
तामस धर्म कराहिं नर, जप तप मख व्रत दान॥
देव न वरषै धरणि पर, बये न जामहिं धान॥१४८॥

त्रोटक छंद॥

अबला कच भूषण भूरि क्षुधा, धनहीन दुखी ममता बहुधा॥
सुख चाहहिंमूढ न धर्मरता, मति थोरि कठोरि न कोमलता॥
नर पीडित रोगन भोगकही, अभिमान विरोध अकारणही॥
लघुजीवन संवत पंचदशा, कल्पांत न नाश गुमान अशा॥२५॥
कलिकालबिहालकियेमनुजा, नहिं मानत कोउ अनुजातनुजा॥
नहिं तोष विचार न शीतलता, सब जाति कुजाति भये मँगता॥
इरषा परुषाँ छल लोलुपता, भरि पूरि रही समता विगता॥
सब लोग वियोग विशोक हये, वर्णाश्रम धर्म अचारगये॥
दमदान दयानहिं जानपुनी, जडता परपंचक तात घनी॥२६॥
तनु पोषकनारि नरा सगरे, परनिंदक जे जगमें बँगर॥

दोहा—सुनु व्यालारि करालकलि, मलअवगुण आगार॥
गुणहुबहुत कलिकालकर, बिनुप्रयास निस्तार१४९॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग॥
जोगति होइ सो कलिहिंहरि नामतेपावहिंलोग१५०॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी ❀ करि हरिध्यान तराहिं भव प्रानी॥
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ❀ प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं॥
द्वापर करि रघुपति पदपूजा ❀ नर भवतरहिं उपाय न दूजा॥
कलि केवल हरिगुणगण गाहा ❀ गावत नर पावहिं भव थाहा॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना ❀ एक अधार राम गुण गाना॥

१ बाल। २ अधिक। ३ भूख। ४ प्यार। ५ छोटीबहिन। ६ अपनी कन्या। ७ कठोर। ८ कुब्ध। ९ जीतीरही। १० इन्द्रियजकेर जीतव ११ फैले। १२ गरुड। १३ घर।

सब भरोस तजि जो भज रामहिं ❀ प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥
सो भव तर कछु संशय नाहीं ❀ नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं ॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा ❀ मानस पुण्य होइ नहिं पापा ॥
दोहा-कलियुगसमयुगआननाहिं, जोनरकर विश्वास॥
गाइरामगुणगणविमल,भवतर बिनहिं प्रयास ॥१५१॥
प्रगट चारि पद धर्मके, कलि महँ एक प्रधान ॥
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥ १५२ ॥
कृतयुग धर्म होहिं सब केरे ❀ हृदय राम मायाके प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व समता विज्ञाना ❀ कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना ॥
सत्व बहुत कछु रजरतिकर्मा ❀ सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रज सत्व स्वल्प कछुतामस ❀ द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा ❀ कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
बुध युग धर्म जानि मन माहीं ❀ तजि अधर्म रत धर्म कराहीं ॥
काल कर्म नहिं व्यापहि ताही ❀ रघुपतिचरण प्रीति अतिजाही॥
नटकृत कपट विकट खगराया ❀ नट सेवकहिं न व्यापै माया ॥
दोहा-हरिमायाकृतदोष गुण,बिनुहरि भजननजाहिं ॥
भजियरामसबकामतजि, असविचारिमनमाहिं१५३
तेहि कलिकाल वर्ष बहु, बसेउँ अवध विहगेश ॥
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश१५४॥
गयउँ उजैन सुनहु उरगारी ❀ दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई ❀ तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥
विप्र एक वेदिक[1] शिवपूजा ❀ करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ[2] विन्दक ❀ शंभुउपासकनहिं हरिनिन्दक॥
सेवों मैं तेहि कपट समेता ❀ द्विजदयालुअति नीतिनिकेता॥
बाहिर नम्र देखि मोहिं सांई ❀ विप्र पढाव पुत्रकी नांई ॥

१ वेदवेत्ता । २ परमार्थको जाननेवाला ।

शम्भुमंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा ❀ शुभ उपदेशविविधविधकीन्हा ॥
जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई ❀ हृदयदम्भअहंमिति अधिकाई॥
दोहा–मैं खल मल संकुल मति,नीच जाति वश मोह॥
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णु कर द्रोह१०५॥
सो०–गुरुनित मोहिं प्रबोध,दुखित देखिआचरण मम॥
मोहिं उपजै अति क्रोध,दम्भिहि नीति कि भावई१५
एक बार गुरु लीन्ह बुलाई ❀ मोहिं नीति बहु भाँति शिखाई॥
शिव सेवा कर फलसुत सोई ❀ अविरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता ❀ नर पामर कर केतिक बाता ॥
जासु चरण शिव अज अनुरागी ❀ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ❀ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये ❀ भयउँ यथा अँहि दूध पियाये॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❀ गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ पुनि पुनि मोहिं शिखावसुबोधा॥
ज्यहितें नीच बड़ाई पावा ❀ सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा॥
धूम अनलसम्भव सुन भाई ❀ तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मग परी निरादर रहई ❀ सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
मरुत उड़ाव प्रथमतेहि भरई ❀ पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई ॥
सुन खगपति अससमुझि प्रसंगा ❀ बुध न करहिं अधमन कर संगा॥
कवि कोविद गावहिं अस नीती ❀ खलसनकलह नहींभल प्रीती ॥
उदासीन वरु रहिय गुसाई ❀ खल परिहरिय श्वानकी नाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई ❀ गुरु हित कहै न मोहिं सुहाई ॥
दोहा–एक बार हर मन्दिर, जपत रहयउँ शिव नाम ॥
गुरुआये अभिमान ते, उठि नहिं कीन्ह प्रणाम१०६॥
सोदयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश ॥
अति अघ गुरु अपमानता,सहि नहिं सके महेश१०७॥

१ अहंकार। २ गुरु। ३ वैष्णव। ४ सर्प। ५ धूरि। ६ चोट। ७ हवा। ८ आंखन।

मन्दिर माँझ भई नभ बानी ❀ अगम्य अधम अभिमानी ॥
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ अतिकृपालु चित सम्यकबोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं ❀ नीति विरोध सुहात नमोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्ड शठ तोरा ❀ भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ॥
जे शठ गुरुसन ईर्षा करहीं ❀ रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा ❀ अयुत जन्मभरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइव पापी ❀ होसिसर्प्प खलमलमति व्यापी ॥
महाविटप कोटरमहँ जाई ❀ रहुरे अधम अधोगति पाई ॥

दोहा–हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुण शिव शाप ॥
कंपितमोहिंविलोकिअति,उरउपजापरिताप॥१५८॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिव संमुख करजोरि ॥
विनय करत गद्गद गिरा, समुझि घोर गति मोरि ॥

छन्द–भुजंगप्रयात ।

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपम् ॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाश वासं भजेहम् ॥
निराकारमोंकार मूलं तुरीयं, गिरा ज्ञान गोतीतमीशंगिरीशम् ॥
करालंमहाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोहम् ॥२७॥

छंदार्थ–हे ईशानईश ! मुक्तिरूप आप कैसेहो विभु अर्थात् समर्थ और व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूप और अपनेसे प्रकट होनेवाले गुणसे रहित निर्विकल्प अर्थात् एकरस रहनेवाले और निरीह चेष्टारहित और सूक्ष्म और महाकाश में है वास जिनका वा जिनमें दोनों आकाश बसते हैं उनको मैं भजताहूं आकारसे रहित और ओंकारका मूल और तुरीय अर्थात् जाग्रत् सुषुप्तिसे परे वचन ज्ञान इंद्रियोंसे परे ईश कैलासके स्वामी और कराल जो महाकाल है उसकेभी आप महाकालहैं कृपालु गुणोंके आगार संसारसे परे हो मैं आपको नमस्कार करताहूं ॥ २७ ॥

१ उत्कृष्ट । २ दशहजार । ३ नीचगति-शिर नीचे पूँछ ऊपर । ४ कठिन । ५ दुःख ।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं, मनो भूतकोटि प्रभाःश्री शरीरम् ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भाल बालेंदु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम् ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकर सर्वनाथं भजामि ॥२८॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखंडं अजं भानु कोटिप्रकाशम् ॥
त्रयीशूल निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी, सदा सज्जनानंद दाता पुरारी ॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ २९ ॥
नयावत् उमानाथ पादारविंदं, भजंतीहलोके परे वा नराणाम् ॥
नतावत्सुखं शांति संतापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥
नजानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोहंसदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ॥

आप हिमाचल पर्वतके समान गौरवर्ण और गम्भीर हैं और करोडों कामके समान शरीरकी शोभाहै और मस्तकपर गंगा आनन्दसे शोभित हैं और ललाटमें दूजका चंद्रमा और कंठमें सर्प शोभितहैं जिनके कानोंमें कुंडल हलरहे हैं बडे विशाल नेत्रहैं जिनका मुख प्रसन्न कंठ नीलहै और दयाके घरहैं सिंहका चर्म मुंडकी माला जिनको प्रिय हैं ऐसे जो सबके नाथ आप शंकर अर्थात् कल्याणकारक हो सो तुम्हारे स्वरूपको मैं नमस्कार करताहूं॥ २८॥
प्रचंड अतिउत्तम अति ढीठ बडे ईश्वर खंडरहित अज कोटिभानुवत् प्रकाशित तीनों शूलके नाश करनेवाले त्रिशूल हाथमें लियेहुए भावसे प्राप्त होनेयोग्य भवानीपतिको मैं नमस्कार करताहूं कलासे परे कल्याण और कल्पांतके करनेवाले सदा सज्जनोंके आनंद देनेवाले त्रिपुरासुरके शत्रु चैतन्य आनन्दके वासन और मोहके हर्त्ता प्रभु मेरे ऊपर कृपा करके रक्षाकरो ॥ २९ ॥
हे उमानाथ! जबतक सबजीवोंसे सेवित भक्तजन आपके चरणारविंदकी नहीं सेवा करते तबतक इसलोकवा परलोकमें उनलोगोंको सुख शान्ति नहीं और संतापका नाश नहीं होता योग जप पूजाको मैं नहीं जानताहूं और हेशिवजी! मैं सदा तुमको नमस्कार करताहूं और बुढाई जन्मके दुःखोंके समूह करके जो

जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं, प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ॥३०॥

श्लोक-रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ॥
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शम्भुःप्रसीदति ॥ ४ ॥

दोहा-सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव, देखि विप्र अनुरागु ॥
पुनि मन्दिर वाणी भई, हे द्विजवर वर मांगु॥१६०॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ॥
निजपद भक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥१६१॥
तव मायावश जीव जड, सन्तत फिरै भुलान ॥
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिन्धुभगवान १६२
शंकर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ॥
शापानुग्रह होइ ज्यहि, नाथ थोरही काल ॥ १६३ ॥

इहिकर होइ परम कल्याना ॐ सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
विप्रगिरा सुनि परहित सानी ॐ एवमस्तु इति भइ नभ बानी ॥
यदपि कीन यह दारुण पापा ॐ मैं पुनि दीन क्रोधकरि शापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी ॐ करिहौं इहिपर कृपा विशेषी ॥
क्षमा शील जे पर उपकारी ॐ ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी॥
मोर शाप द्विज वृथा नहोई ॐ जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥
जन्मत मरत दुसह दुख होई ॐ इहिकहँ स्वल्प न व्यापिहि सोई॥
कौनिहु जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना ॐ सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ ॐ पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ॐ राम भक्ति उपजहि उरतोरे ॥
सुन ममवचन सत्य अब भाई ॐ हरि तोषक व्रत द्विज सेवकाई ॥

मैं दुःखी हूं आपकी शरणमें हूं हेप्रभो! आप रक्षा करो मैं आपको हे ईश! नमस्कार करताहूं ॥ ३० ॥

श्लोकार्थ-इस रुद्राष्टकको पढकर ब्राह्मणने महादेवजीको प्रसन्न किया जो कोई इसको पढैंगे उनपर शिवजी कृपा करैंगे ॥ ४ ॥

१ रामचन्द्र । २ कृपा ।

अब जनि करसि विप्र अपमाना ❋ जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्रकुलिश[1] ममशूल विशाला ❋ कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥
जो इनकर मारा नहिं मरई ❋ विप्ररोष पावक सो जरई ॥
अस विवेक राखेहु मनमाहीं ❋ तुमकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
औरौ एक आशिषा मोरी ❋ अप्रतिहत[2] गति होइहि तोरी ॥
दोहा—सुनिशिव वचन सप्रेम गुरु, एवमस्तु इति भाषि ॥
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शंभुचरण उर राखि॥१६४॥
प्रेरित काल सुविंध्यगिरि, जाइ भयउँ मैं व्याल ॥
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल॥१६५॥
जो तनु धरौं सु तजौं पुनि, अनायास हरियान ॥
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान ॥१६६॥
शिव राखेउ श्रुति नीति विधि, मैं नहिं पावकलेश ॥
इहिविधि धरेउँ विविध तनु,ज्ञान न गयउ खगेश१६७
त्रिजग योनि जो जो तनु धरेऊँ ❋ तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊँ ॥
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ ❋ गुरुके कोमल शील स्वभाऊ ॥
चर्म[3] देह द्विज कर मैं पाई ❋ सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहाँ बालकन मीला[4] ❋ करौं सकल रघुनायकलीला ॥
प्रौढभये मोहिं पिता पढावा ❋ समुझौं सुनौं गुणौं नहिं भावा ॥
मनते सकल वासना भागी ❋ केवल रामचरणलयलागी ॥
कहु खगेश अस कवन अभागी ❋ खरी[5]सेव सुरधेनु[6]हि त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई ❋ हारेउ पिता पढाय पढाई ॥
भयउ कालवश जब पितु माता ❋ मैं वन गयउँ भजन जनत्राता[7] ॥
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावों ❋ आश्रम जाइ जाइ शिरनावों ॥
पूँछौं तिनहिं रामगुण गाहा ❋ कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा ❋ अव्याहतगति शंभुप्रसादा ॥

१ वज्र । २ जहाँ जी चाहे तहाँ चलाजावे । ३ अन्तमें । ४ समान । ५ गदही । ६ कामधेनु । ७ परमेश्वर ।

छूटी त्रिविध ईषणा गाढी ❀ एक लालसा उर अति बाढी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं ❀ तब निजजन्म सफलकरि लेखौं ॥
जेहि पूँछौं सो मुनि असकहई ❀ ईश्वर सर्वभूतमय अहई ॥
निर्गुण मत नाहिं मोहिं सुहाई ❀ सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥
दोहा–गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ॥
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षणक्षण नवअनुराग १६८॥
मेरु शिखर बट छाया, मुनिलोमश आसीन ॥
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन १६९॥
सुनि मम वचन विनीत मृदु, मुनि कृपालु खगराज॥
मोहिं सादरबूझतभयउ, द्विजआयउ केहिकाज १७०
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुणब्रह्म आराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥ १७१ ॥
तब मुनीश रघुपति गुणगाथा ❀ कहेउ कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी ❀ मोहिं परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा ❀ अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा ❀ अनुभवगम्य अखंड अनूपा ॥
मनगोतीत अमल अविनाशी ❀ निर्विकार निरवधि सुखराशी ॥
सो तैं ताहि तोहिं नाहिं भेदा ❀ वारि बीचि इव गावहिं वेदा ॥
विविधभाँति मोहिंमुनिसमुझावा ❀ निर्गुणमत ममहृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा ❀ सगुण उपासन कहहुमुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना ❀ किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना ॥
सोइ उपदेश कहहु करि दाया ❀ निजनयनन्ह देखौं रघुराया ॥
भरिलोचन विलोकि अवधेशा ❀ तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा ॥
पुनि पुनि कह हरिकथा अनूपा ❀ खंडि सगुणमत अगुणनिरूपा ॥
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी ❀ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥

१ सुत वित्त लोकमर्य्यादापर ममता। २ परमप्रवीण। ३ कलारहित। ४चेष्टारहित। ५ नामरहित। ६ अनुभवकरके प्राप्तहैं। ७ मनवाणीतेपरे। ८ षट्विकाररहित। ९ जिनकी मर्य्यादाकी थाह नहीं। १० देखि। ११ शिक्षा। १२ जिसकीतुलनानहीं।

उत्तर प्रत्युत्तर मैं कीन्हा ❀ मुनि उरभयउ क्रोधकर चीन्हा ॥
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा कीये ❀ उपज क्रोध ज्ञानिहके हीये ॥
अति संघर्षण करै जो कोई ❀ अनेल प्रगट चन्दन ते होई ॥

दोहा–बारहिं बार सकोपि मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ॥
मैं अपने मन बैठि तब, करौं विविध अनुमान १७२ ॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि विनु, द्वैत कि विनु अज्ञान ॥
मायावश परिछिन्न जड़, जीव कि ईश समान॥१७३॥

कबहुँकि दुख सबकरहित ताके ❀ त्याहि कि दरिद्रपरसमणि जाके॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका ❀ परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
वंश कि रह द्विज अनहित कीन्हे ❀ कर्मकि होहिं स्वरूपहि चीन्हे ॥
काहुहि सुमति कि खलसँग जामी ❀ शुभगतिपाव कि परतियगामी॥
राजकि रहै नीतिविनु जानें ❀ अघं कि रहै हरिचरित बखाने ॥
भवकि परहिं परमारथ विंदक ❀ सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक ॥
पावनयश कि पुण्य विनु होई ❀ विनु अघ अयश कि पावै कोई ॥
लाभ कि कछु हरिभक्तिसमाना ❀ जेहि गावहिंश्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग इहिसम कछु भाई ❀ भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि विना तामस कछु आना ❀ धर्म कि दयासरिस हरियाना ॥
इहि विधि अमितयुक्ति मनगुणेऊं ❀ मुनिउपदेश न सादर सुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा ❀ तब मुनि बोले वचन सकोपा ॥
मूढ परम शिख देउँ न मानसि ❀ उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य वचन विश्वास न करही ❀ वायस इव सबहीं सन डरही ॥
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला ❀ सपदि होहु पक्षी, चण्डाला ॥
लीन्ह शाप मैं शीश चढाई ❀ नहिं कछु भय न दीनता आई॥

दोहा–तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनिमुनिपद शिरनाइ ॥
सुमिरि राम रघुवंशमणि, हर्षित चलेउँ उड़ाइ १७४॥

१ अनादर। २ रगड। ३ अग्नि। ४ प्रतिपादन–व्याख्यान। ५ यहइतनाहै ऐसा अनमा पाहुआ। ६ उत्तमबुद्धि। ७ दुष्ट। ८ परस्त्रीरमनेवाला। ९ पाप। १० । क्रोध। ११ गरुड़।

उमा जो राम चरण रत, विगत काम मद क्रोध ॥
निज प्रभुमय देखहिं जगत, कसन करहिं विरोध ॥ १७५ ॥
सुनु खगेश नहिं कछु ऋषिदूषण ❀ उर प्रेरक रघुवंशविभूषण ॥
कृपासिंधु मुनिमति करि भोरी ❀ लीन्हीं प्रेमपरीक्षा मोरी ॥
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना ❀ मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी ❀ रामचरण विश्वास विशेषी ॥
अतिविस्मय पुनि पुनि पछिताई ❀ सादरमुनिमुहिं लीन्ह बुलाई ॥
मम परितोष विविध विधि कीन्हा ❀ हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप रामकर ध्याना ❀ कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा ❀ जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा ॥
मुनि मोहिं कछुक काल तहँ राखा ❀ रामचरित मानस सब भाखा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई ❀ पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा ❀ शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकर जानी ❀ ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
रामभक्ति जिनके उरनाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तेहि पाहीं ॥
मुनिमोहिं विविधभाँतिसमुझावा ❀ मैं सप्रेम मुनि पद शिरनावा ॥
निजकरकमल परशि ममशीशा ❀ हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
रामभक्ति अविरल उर तोरे ❀ वसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥
दोहा—सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभगुण भवन अमान[1] ॥
कामरूप[2] इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान ॥ १७६ ॥
ज्यहि आश्रम[3] तुम वसब पुनि, सुमिरहु श्रीभगवन्त ॥
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन एक प्रयन्त ॥ १७७ ॥
काल कर्म्म गुण दोष स्वभाऊ ❀ कछुदुखतुमहिंनव्यापिहिकाऊ ॥
राम रहस्य[4] ललितविधि नाना ❀ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
विनु श्रम तुम सब जानब सोऊ ❀ नित नव प्रेम रामपद होऊ ॥

१ मानरहित । २ कामरूपकहीजोइच्छाकरहुगे सोरूपमातहोवे । ३ स्थान । ४ चरित्र ।

जो इच्छा करिहौ मन माहीं ❀ हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनिमुनि आशिष सुनु मतिधीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगनगँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनि ज्ञानी ❀ यह मम भक्त कर्म मन बानी॥
सुनि नभगिरा हर्ष मन भयऊ ❀ प्रेम मगन मम संशय गयऊ ॥
करि विनती मुनि आशिष पाई ❀ पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई ॥
हर्षसहित यहिआश्रम आयउँ ❀ प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
इहाँ वसत मोहिं सुनु खगईशा ❀ बीते कल्प सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना ❀ सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा ❀ धरहिं भक्त हित मनुज शरीरा॥
तब तब जाइ अवधपुर रहऊं ❀ शिशुलीला विलोकि सुख लहऊं॥
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा ❀ इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई ❀ कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी ❀ रामभक्ति महिमा अति भारी॥

दोहा—ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ राम पद नेह ॥
निज प्रभु दरशन पायउँ, गयउ सकल संदेह ॥ १७८॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महाऋषि शाप ॥
मुनिदुर्लभ वर पायऊं, देखहु भजन प्रताप ॥ १७९ ॥

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं ❀ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी ❀ खोजत आकेफिरहिं पयलागी॥
सुनु खगेश हरि भक्ति बिहाई ❀ जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु बिनुतरणी ❀ पैरि पार चाहत जड़करणी ॥
सुनि भुशुण्डके वचन भवानी ❀ बोलेउ गरुड हर्षि मृदुवानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुण ग्रामा ❀ तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना॥

१ ब्रह्माकी वाणी। २ मंदार। ३ दूध। ४ त्यागके। ५ नौका। ६ दुष्कृत्यकरनेवाले, पार्वती।

सो मुनि तुमसन कहेउ गोसाईं ❀ नहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं ॥
ज्ञानहि भक्तिहि अन्तर केता ❀ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता[1]॥
सुनि उरगारिवचन सुख माना ❀ सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहि भक्तिहि नहिं कछु भेदा ❀ उभय हरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर ❀ सावधान होइ सुनहु विहगवर ॥
ज्ञान विराग योग विज्ञाना ❀ ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती ❀ अबलाअबल सहज जड़ जाती॥
दोहा–पुरुष त्यागि सक नारिकहँ, जोविरक्त मतिधीर॥
नतु कामी विषया विवश,विमुख जोपद रघुबीर१८०
सो०–सोमुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधुमुख[2]निरखि
विकल होहिं हरियान, नारि विरंचि माया प्रगट१६॥
यहाँ न पक्षपात कछु राखों ❀ वेद पुराण सन्मत भाषों ॥
मोह न नारि नारिके रूपा ❀ पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ ❀ नारि वर्ग जाने सब कोऊ ॥
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी ❀ माया खल नर्तकी विचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया ❀ ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी ❀ बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई ❀ करि नसकै कछु निज प्रभुताई ॥
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी ❀ यांचहिं भक्ति सकल गुणखानी॥
दोहा–यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जानै ते रघुपति कृपा, स्वप्नेहु मोह न होइ ॥ १८१ ॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण ॥
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण ॥१८२॥
सुनहु तात यह अकथ कहानी ❀ समुझत बनै न जात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी ❀ चेतन[3] अमल सहज सुखराशी ॥

१ कृपाके स्थान । २ चन्द्रवदनी । ३ चैतन्यरूप ।

सो मायावश भयउ गुसाईं ❋ बँध्यो कीर मर्कटकी नाईं ॥
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परिगई ❋ यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तबते जीव भयो संसारी ❋ ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहें उपाई ❋ छूटन अधिक अधिक अरुझाई ॥
जीव हृदय तम मोह विशेषी ❋ ग्रन्थि न छूटै परे न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई ❋ तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ❋ जो हरि कृपा हृदय बस आई ॥
जप तप व्रत यम नियम अपारा ❋ जो श्रुति कहे सुधर्म्म अचारा ॥
सोइ तृण हरित चरै जब गाई ❋ भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा ❋ निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धर्म्ममय पय दुहि भाई ❋ अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै ❋ घृतसम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै विचार मथानी ❋ दम अधार रज सत्य सुवानी ॥
तब मथि काढि लेइ नवनीता ❋ विमल विराग सुभग सुपुनीता ॥

दोहा-योग अग्नि कर प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरिजाइ ॥ १८३ ॥
तब विज्ञानं निरूपणी, बुद्धि विशद घृतपाइ ॥
चित्त दिया भरि धरै दृढ, समता दिअटिबनाइ १८४ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपासते काढ़ि ॥
तूल तुरीय सवाँरि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि ॥ १८५ ॥
सो०-यहिविधि लेसो दीप, तेज राशि विज्ञानमय ॥
जातहिं तासु समीप, जरहिं मदादिक शलभसब १७ ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा ❋ दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा ❋ तब भव मूल भेद भ्रम नाशा ॥

---

१ सुवा । २ माया । ३ जीव । ४ विषय-वासना अंधकार । ५ वेदगुरुवाक्यमें प्रतीति । ६ जै अक्षरका मंत्र होइ तै हजार नित्त जपै भूतशुद्धि प्राणायाम करके । ७ येनकेनइन्द्रियतको दमनकरै । ८ एकादशी चान्द्रायण इत्यादिक । ९ माखन । १० अपनास्वस्वरूप ११ जीवस्वरूपास्वरूपब्रह्मदोकी एकताको निरूपण । ११ पतंग । १२ ब्रह्मज्ञान ।

प्रबल अविद्या कर परिवारा ❀ मोह आदि तम मिटै अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा ❀ उर गृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई ❀ तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ❀ विघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई ❀ बुद्धिहिं लोभ दिखावै जाई ॥
कलबल छलकारि जाइ समीपा ❀ अंचल वात बुझावै दीपा ॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी ❀ तिन्हतनचितवनअनहितजानी॥
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी ❀ तो बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय बयारी ❀ ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उर गृहजाई ❀ तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकाशा ❀ बुद्धि विकलभइ विषय बताशा॥
इन्द्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई ❀ विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी ❀ तेहि विधि दीपको बार बहोरी ॥

दोहा—तब फिरि जीव विविध विधि, पावैं संसृति क्लेश ॥
हरिमाया अति दुस्तर, तरि नजाइ विहँगेश ॥ १८६ ॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक॥
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ १८७ ॥

ज्ञान कि पन्थ कृपाणं के धारा ❀ परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई ❀ सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद ❀ सन्त पुराण निगम आगम वद ॥
रामभक्ति सों मुक्ति गुसाईं ❀ अनइच्छित आवै बरिआई ॥
जिमि थलबिनुजल रहि न सकाई ❀ कोटि भाँति कोउकरै उपाई ॥
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरि भक्ति विहाई ॥
अस विचारि हरि भक्त सयाने ❀ मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत विनुयतन प्रयासा ❀ संसृति मूल अविद्यानाशा ॥

१ देवता । २ दरवाजा । ३ पवन । ४ जन्ममरणके दुःख । ५ कठिण । ६ विघ्न । ७ तरवारि-दुधारा । ८ विनाचाहे ।

भोजन करिय तृप्ति हित लागी ❀ जिमि सो अशन पचवै जठरागी ॥
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई ❀ को अस मूढ न जाहि सुहाई ॥
दोहा-सेवक सेव्यभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ॥
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त विचारि १८८ ॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य १८९ ॥
कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई ❀ सुनहु भक्ति मणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर ❀ बसै गरुड जाके उर अन्तर ॥
परमप्रकाश रूप दिन राती ❀ नहिंकछु चहियदियाघृतबाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहिं ❀ लोभ वात नहिं ताहिं बुझावहिं ॥
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई ❀ हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकटनहिंजाहीं ❀ बसै भक्ति मणि जेहिउरमाहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई ❀ तेहि मणि बिनुसुखपाव न कोई ॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जेहिके वश सब जीव दुखारी ॥
राम भक्ति मणि उर बस जाके ❀ दुख लवलेश न स्वप्नेहुँ ताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं ❀ जे मणि लागि सुयतन कराहीं ॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई ❀ रामकृपा बिनु कोउ न लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे ❀ नर हत भाग्य देत भटभेरे ॥
पावन पर्वत बेद पुराना ❀ रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ❀ ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥
भाव सहित जो खोजै प्रानी ❀ पावभक्ति मणि सब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा ❀ रामते अधिक रामकर दासा ॥
रामसिन्धु घन सज्जन धीरा ❀ चन्दन तरु हरिसन्त समीरा ॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई ❀ सो बिनु सन्त न काहू पाई ॥
अस विचारि जो करुसतसंगा ❀ रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥

१ भोजन । २ जीव । ३ श्रीरामचन्द्र । ४ विष । ५ अमृत । ६ वैरी । ७ खानि ।
८ जे वेद पुराण रूप पर्व्वतके अंतर मणि रूप भक्तिको लखैं । ९ पवन ।

दोहा—ब्रह्म पयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि ॥
कथा सुधा मथि काढहीं, भक्ति मधुरता जाहि ॥११०॥
बिरति[1] चर्म[2] असि[3] ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि ॥
जय पाई सोइ हरिभगति, देख खगेश बिचारि ॥१११॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ ❀ जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी ❀ सप्तप्रश्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❀ सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड़दुख कवन कवन सुख भारी ❀ सो संक्षेपहि कहहु बिचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु ❀ तिन्हकरसहजस्वभाव बखानहु ॥
कवनपुण्य श्रुतिविदित विशाला ❀ कहहु कवन अघ परमकराला ॥
मानस रोग कहहु सब गाई ❀ तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती ❀ मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नरसमान नहिं कवनिहु देही ❀ जीव चराचर याचत जेही ॥
नरकस्वर्ग अपवर्ग निसेनी ❀ ज्ञान विराग भक्ति सुख देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जेनर ❀ होंय विषयरत मन्दमन्द तर ॥
कंचन कांच बदलि शठ लेहीं ❀ करते डारि परसमणि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं ❀ सन्तमिलन सम सुख कछु नाहीं ॥
परउपकार वचन मन काया ❀ सन्त सहज स्वभाव खगराया ॥
सन्त सहहिं दुख परहित लागी ❀ परदुख हेतु असन्त अभागी ॥
भूर्जतरु[4]सम सन्त कृपाला ❀ परहित सहनित विपति विशाला ॥
शणइव खल परबंधन करहीं ❀ खाल कढाइ विपति सहि मरहीं ॥
खल बिनुस्वारथ पर अपकारी ❀ अहि[5] मूषक[6] इव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदा विनाशि नशाहीं ❀ जिमि कृषि[7] हति हिम उपल[8] बिलाहीं ॥
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू ❀ यथा प्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू ॥
सन्त हृदय सन्तत सुखकारी ❀ विश्व सुखद जिमि इंदु[10] तमारी[11] ॥

---

१ वैराग्य । २ ढाल । ३ तलवारि । ४ भोजपत्र । ५ सर्प । ६ मूस । ७ खेती ।
८ पाला । ९ मन । १० चन्द्र । ११ सूर्य ।

परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा ❁ परनिंदासम अघ नगरिंसा ॥
हरि गुरु निन्दक दादुर होई ❁ जन्म सहस्र पाव तनु सोई ॥
द्विजनिंदक बहुनरक भोग करि ❁ जग जन्मैं वायस शरीर धरि ॥
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी ❁ रौरव नरक परहिं ते प्राणी ॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत ❁ मोह निशाप्रिय ज्ञान भानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं ❁ ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा ❁ जेहि ते दुखपावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिन कर मूला ❁ तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला ॥
काम वात कफ लोभ अपारा ❁ क्रोध पित्त नित छातीजारा ॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई ❁ उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❁ ते सब शूल नाम कोजाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई ❁ हर्ष विषाद गहर बहुताई ॥
परसुख देख जरइ सो छई ❁ कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई ॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ ❁ दम्भ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी ❁ त्रिविध ईषणा तरुण तिजारी ॥
युग विधिज्वर मत्सर अविवेका ❁ कहँलगि कहौं कुरोग अनेका ॥
दोहा—एक व्याधि ते नरमरहिं, ये असाध्य बहुव्याधि ॥
सन्ततपीडहिंजीव कहँ, सोकिमि लहहिंसमाधि १९२
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ॥
भेषजपुनि कोटिन्ह करहिं, रुज न जाहिं हरियान १९३ ॥
यहिविधि सकलजीव जगरोगी ❁ शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये ❁ हैं सबके लखि विरलन्हि पाये ॥
जाने ते छीजहिं कछु पापी ❁ नाश न पावहिं जन परितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे ❁ मुनिन्ह हृदय कानर बापुरे ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा ❁ जो इहि भाँति बनै संयोगा ॥

१ किसी जीवको दुःखनपहुंचाना। २ घोरपाप। ३ मेढक। ४ कौवा। ५ घूघूपक्षी। ६ दुःख। ७ साज्ञ। ८जलन्धर-त्रिमदा ९ दन्द्वज्वर। १० औषधी। ११ रोग। १२मायी।

सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा ❀ संयम यह न विषयकी आशा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी ❀ अनोपान श्रद्धा अति रूरी ॥
इहविधि भले कुरोग नशाहीं ❀ नाहिं त यतन कोटि नहिं जाहीं ॥
जानिय तब मन विरुजं गोसांई ❀ जब उरबल विराग अधिकाई ॥
सुमति क्षुधा बाढै नितनई ❀ विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञान जल पाइ अन्हाई ❀ तब रहु रामभक्ति उरछाई ॥
शिव अज शुकसनकादिकनारद ❀ जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद ॥
सबकर मत खगनायक एहा ❀ करिय रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं ❀ रघुपति भक्ति बिना सुखनाहीं ॥
कमठपीठ जामहिं बरु बारा ❀ वंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहि नभ बरु बहुविधि फूला ❀ जीवन लहसुखप्रभुतमतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना ❀ बरु जामहिं शश शीशविषाना ॥
अन्धकार बरु रविहि नशावै ❀ राम विमुख सुख जीव न पावै ॥
हिमते प्रकट अनल बरु होई ❀ विमुख राम सुख पाव न कोई ॥

दोहा-वारि मथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल ॥
बिनु हरि भजन न भवतरिय, यहसिद्धांत अपेल ॥१४॥
मशकहि करहिं विरंचि प्रभु, अजहिं मशक ते हीन ॥
अस विचारि तजि संशय, रामहिंभजहिंप्रवीन॥१५॥

"श्लोक-विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ॥
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरंति ते" ॥ ६ ॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा ❀ व्यास समासस्वमति अनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी ❀ राम भजिय सबकाम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही ❀ मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा ❀ कीन्ह नाथ मोपर अति छोहा ॥
पूँछेउ राम कथा अति पावनि ❀ शुकसनकादिशम्भुमनभावनि ॥

---

१ निरोग २। प्रवीण। ३ कछुआ। ४ सींग। ५ पाला। ६ अग्नि। ७ पानी।
८ बालू। ९ विस्तारपूर्वक। १० थोरेमें।

सतसंगति दुर्लभ संसारा ❀ निमिष दण्ड भरि एको बारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदय विचारी ❀ मैं रघुवीरचरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सबभाँति अपावन ❀ प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन॥

दोहा–आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपिसबविधि हीन ॥
निज जन जानि राम मोहिं, संतसमागम दीन १९६॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय ॥
चरित सिन्धु रघुनाथ कर, थाह कि पावै कोय १९७ ॥

सुमिरि रामके गुणगण नाना ❀ पुनिपुनि हर्ष भुशुण्डि सुजाना॥
महिमा निगम नेति कहि गाई ❀ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिव अज पूज्य चरण रघुराई ❀ मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस स्वभाव कहुँ सुनौं न देखौं ❀ केहि खगेश रघुपति सम लेखौं॥
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी ❀ कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ॥
योगेश्वर अरु सुतापस ज्ञानी ❀ धर्मनिरत पण्डित विज्ञानी ॥
तरहिं न विनु सेये मम स्वामी ❀ राम नमामि नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसे अघराशी ❀ होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥

दोहा–जासु नाम भव भेषज, हरण घोर त्रयशूलै ॥
सोकृपालु मोहिं तोहिं पर, सदारहहिं अनुकूलै १९८॥
सुनि भुशुण्डिके वचनवर, देखि रामपद नेह ॥
बोले गरुड़ सप्रेम अति, विगत मोह संदेह ॥ १९९ ॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी ❀ सुनि रघुवीर भक्ति रस सानी ॥
रामचरण नूतन रति भई ❀ माया जनित विपति सबगई ॥
मोहजलधि बोहितै तुम भयऊ ❀ मोकहँ नाथ विविध सुख दयऊ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा ❀ वन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी ❀ तुम सम तात नकोउ बड़भागी॥

१ पक्षियोंमेंनीच । २ जेमुक्तिकी साधनाकरतेहैं मुमुक्षु । ३ सम्पूर्ण सिद्धी जिनके हस्तामलकहैं । ४ त्रिकालदर्शी । ५ जिनकेअष्टांगयोगसिद्धहैं । ६ नमस्कार करताहूं । ७ औषध । ८ काम, क्रोध, लोभ । ९ प्रसन्न । १० कृतार्थ । ११ नवीन । १२ उत्पन्न । १३ मोहरूपीसमुद्र । १४ जहाज ।

संत विटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्त हृदय नवनीत समाना ❀ कहा कविन पै कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता ❀ परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता ॥
जीवनजन्म सफल मम भयऊ ❀ तवप्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु सदा मोहिं निज किंकर ❀ पुनि पुनि उमा कहैं खगवरवर॥

दोहा–तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर॥
गरुड़ गयो वैकुंठ तब, हृदय राखि रघुवीर ॥ २०० ॥
गिरिजा संत समागम, सम न लाभ कछु आन ॥
बिनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं वेद पुरान ॥ २०१ ॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा ❀ सुनत श्रवण छूटहिं भवपाशा ॥
प्रणत कल्पतरु करुणापुंजा ❀ उपजै प्रीति रामपद कंजा ॥
मन वच कर्म जनित अघ जाई ❀ सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ॥
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ योग विराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना ❀ संयम नियम यज्ञ जपनाना ॥
भूतदया द्विज गुरु सेवकाई ❀ विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी ❀ सब कर फल हरिभक्ति भवानी॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई ❀ राम कृपा काहू यक पाई ॥

दोहा–मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास॥
जो यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥२०२॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता ❀ सोइ महिमंडन पण्डित दाता ॥
धर्म परायण सोइ कुलत्राता ❀ रामचरण जाकर मनराता ॥
नीतिनिपुण सोइ परम सयाना ❀ श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना ॥
सोइ कवि कोविद सोइ रणधीरा ❀ जो छल छांड़ि भजै रघुवीरा ॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ❀ धन्य सो देश जहां सुरसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई ❀ धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई॥

१ वृक्ष। २ नदियां। ३ पर्वत। ४ मासन। ५ सेवक। ६ सतसंग। ७ बंधन। ८ तीर्थोंकाफिरना। ९ चराचरजीवमेंदया। १० नम्रता। ११ पृथ्वीको भूषण। १२ रक्षक। १३ पण्डित। १४ श्रीगंगाजी। १५ राजा। १६ ब्राह्मण।

सोधन धन्य प्रथमगति जाकी ❀ धन्य पुण्य रतमति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❀ धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा ॥
दोहा-सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥२०३ ॥
मतिअनुरूप कथा मैं भाषी ❀ यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई ❀ तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यह नहिंकहियशठहिंहठशीलहिं ❀ जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं॥
कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं ❀ जोनभजै सचराचर स्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं ❀ सुरपतिसरिस होइ नृप जबहूं ॥
रामकथा के ते अधिकारी ❀ जिनके सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरुपदप्रीति नीति रत जोई ❀ द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह विशेष सुखदाई ❀ जाहि परमप्रिय श्रीरघुराई ॥
दोहा-रामचरणरति जो चहै, अथवा पद निर्बान ॥
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवणपुटपान॥२०४॥
राम कथा गिरिजा मैं वरणी ❀ कलिमलशमन मनोमलहरणी॥
संसृति रोग सजीवन मूरी ❀ राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
इहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ❀ रघुपति भक्ति केर पथ नाना ॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई ❀ पावँ देइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावै ❀ जो यह कथा कपट तजि गावै॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❀ ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई ❀ गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गतसंदेहा ❀ रामचरण उपजा नव नेहा ॥
दोहा-मैंकृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश ॥
उपजी रामभक्ति दृढ, बीते सकल कलेश ॥२०५॥
यह शुभ शंभु उमा सम्बादा ❀ सुखद सदा अरु शमनविषादा ॥
भव भंजन गंजन सन्देहा ❀ जनरंजन सज्जन प्रिय येहा ॥

१. नव-सुशिक्षित। २ इंद्र। ३ भक्ति। ४ ज्ञानकरके कैवल्यमुक्ति। ५ सप्तकाण्ड-सीढी। ६ विचारतेहैं। ७ नाश।

राम उपासक जे जगमाहीं ❀ इहिसम प्रियतिनकहँकछु नाहीं॥
रघुपति कृपा यथा मति गावा ❀ मैं यह पावन चरित सुहावा॥
इहि कलिकाल न साधन दूजा ❀ योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❀ सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं॥
जासु पतित पावन भगवाना ❀ गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना॥
ताहि भजिय तजि मनकुटिलाई ❀ राम भजे केहि गति नहिं पाई॥
छं०—पाई नगतिकेहिपतितपावनरामभजसुनुशठमना।
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादिखलतारेघना॥
आभीर यवनकिरातखलश्वपचादि अति अघरूप जे
कहि नाम बारेकतेऽपि पावन होतराम नमामि ते३१॥
रघुवंश भूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं॥
कलिमलमनोमलधोइबिनु श्रम रामधामसिधावहीं॥
शत पंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं॥
दारुण अविद्या[2] पंचजनितविकार श्रीरघुपतिहरैं॥३२॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो॥
सो एक राम अकाम हित निर्वाण[3]पद सम आनको॥
जाकी कृपा लवलेशते मतिमंद तुलसी दासहूं॥
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ३३॥
दोहा—मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर॥
अस विचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भवभीर २०६
कामिहिं नारि पियारिजिमि, लोभिहिं प्रिय जिमिदाम
ऐसे होइके लागहू, तुलसीके मन राम॥२०७॥
इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञान
वैराग्यसम्पादनोनाम सप्तमःसोपानःउत्तरकाण्डःसमाप्तः॥७॥

---

१ अहीरव्रजके। २ तमअविद्या, मोहअविद्या, महामोह अविद्या, तामिस्रअविद्या, अन्धतामिस्रअविद्या। ३ निर्वाणकही मोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सार्ष्टि।

अथ आरती श्रीरामायणजीकी

आरतिश्रीरामायणजीकी ॥ कीरतिकलितललितसियपीकी टेक॥गावत ब्रह्मादिकमुनिनारद॥ वाल्मीकि विज्ञानविशारद॥शुक सनकादि शेष अरु शारद॥ वरणिपवनसुत कीरति नीकी ॥१॥ संतत गावत शम्भु भवानी॥घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥ व्यास आदि कविपुंगवखानी कागभुशुण्डि गरुडके हियकी ॥२॥चारिउ वेदपुराणअष्टदश ॥छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनिकोरस ॥ तन मनधन संतनकोसर्वस॥सार अंशसम्मतसबहीकी ॥३॥कलिमल हरणि विषयरस फीकी॥सुभगशृंगार मुक्तियुवतीकी॥हरणिरोगभवमूरि अमीकी॥तातमात सबविधितुलसीकी४

श्लोक-यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविनाश्रीशम्भुनादुर्गमंश्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यैव रामायणम् ॥ मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतंस्वान्तस्तमःशांतयेभाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥१॥ पुण्यम्पापहरं सदाशिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ॥ श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ते संगारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्तिनोमानवाः ॥ २ ॥ यःपृथ्वीभरवारणाय दिविजैःसंप्रार्थितश्चिन्मयः संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥ निश्चक्रं हतराक्षसःपुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां कीर्तिं-पापहरां विधायजगतां तं जानकीशं भजे ॥ ३ ॥

इदं तुलसीकृतरामायणे उत्तरकाण्डं खेमराज श्रीकृष्णदासेन मुम्बय्यां स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रायन्त्रालयेऽङ्कितम् ।
शकाब्दाः १८२३, संवत् १९५८.

॥ श्रीः ॥

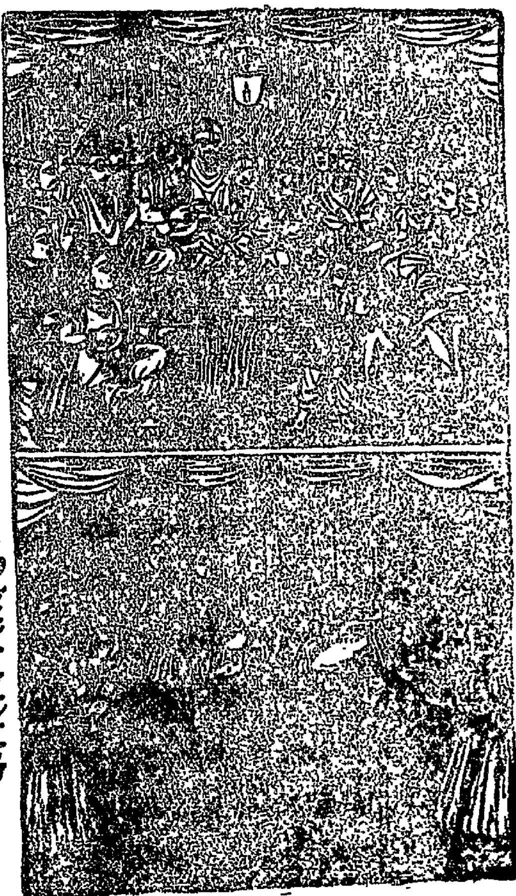
अथ

श्रीस्वामि तुलसीदासकृत रामायणान्तर्गत-

रामाश्वमेध लवकुशकाण्डम् ।



चौपाई-सोई सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता । सोई महि मण्डन पण्डित दाता ॥
धर्मपरायण सोई कुल त्राता । राम चरण जाकर मन राता ॥



दोहा-जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥

श्रीः।

अथ रामाश्वमेधलवकुशकाण्डप्रारंभः।

श्रीवेंकटेशाय नमः।

दोहा-सुनि भुशुंडिके वचन मृदु, देख राम पद नेह॥
बोले प्रेम सहित गिरा, गरुड विगत सन्देह॥ १॥

छं०नमामीश घनज्ञान रघुवंशदासं, सदानन्ददाता सुविद्या प्रकाशम्॥ विशद शैलनीलं कृपालुं निवासं, पादाब्जवै सेवितं पापनाशं॥ गतंमोहमारादिशूलं विशालं, हरततापसंतापभवशोकशालं॥ नमोकाक पादंसुबुद्धि सुशीलं,सदाभक्तवात्सल्यवासाद्रिनीलं प्रसन्नाननं नीलवदनं सुश्यामं, नमोपाहिशरणंसुरा माभिरामं॥भाष्योउमानाथयशनाथनामं, देख्योकृ पासिंधुकोरामधामं॥इच्छावपुषकाककल्याणकारी, जिन्हें एक आशाअयोध्याविहारी॥ भागीसकल वासना त्रासभारं, दयानाथकीन्हों अविद्या प्रहारं॥ सगुणब्रह्मलीलाधराभारनाशं,सुनो राम अवतार मो हविनाशं॥ जान्योदनुजनाशनंविश्वासं, चिदामो हसंदोहभक्तिविलासं॥ अचलज्ञानगोतीतमंत्रांविशा लं,पायोकृपानाथनिजभाग्यभालं॥ विगतषष्ठरोगं अयोग्यं दयालुं,नमोपाहिशरणंनमामीकृपालुं॥१॥

दोहा-सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अवमोर॥

जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदांबुज तोर ॥ २ ॥

सुने सकल गुण गण प्रभुकेरे ❀ पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद वायस कुलनाथा ❀ हृदय बसहिं अब प्रभुगुणगाथा॥
मन संतोष न हृदय समाहीं ❀ यथा उदधि सरिता सब जाहीं ॥
पशु पक्षी जड जंगम जाती ❀ चरअरुअचर वरणकिहि भाँती॥
सकल अवधवासी सुखधामा ❀ लिये संग सादर श्रीरामा ॥
तजि तव अवध गये सहदेहा ❀ यह मोहिं नाथ परम संदेहा ॥
अब प्रभु मोहिं कहो समुझाई ❀ जानि पिता मैं करौं ढिठाई ॥
यह इतिहास पुनीत कृपाला ❀ जिमिमख कीन्ह राम महिपाला॥

दोहा-अस कहि गद्गदकंठ मृदु, पुलकावली शरीर ॥
सुनि सप्रेम हरि विशद यश, वायस कुल मतिधीर॥३॥

धन्य धन्य धनि तुम खगराया ❀ कीन्ही अमित मोहिंपर दाया ॥
राम कृपा तुमरे मनमाहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रमनाहीं ॥
अति प्रिय वचन रहस्य तुम्हारे ❀ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे॥
तव मन प्रीति देखि खगराया ❀ मिटे अमंगल कोटिहुमाया ॥
सुन अब राम रहस्य अनूपा ❀ चरित अनूप अवधपुर भूपा ॥
अज अद्वैत विगत अविनासी ❀ रहितसकलकलिमल भवफाँसी॥
नौ सहस्र नौसै दश बीसा ❀ कीन्ह चरित रहिपुर जगदीशा॥

दोहा-विधिवर वचन सम्हारि उर, राजत करुणाऐन॥
युग जोरीशोभा निरखि, लजित कोटि शत मैन ॥४॥

अनुज सचिव प्रभु प्रजा बुलाये ❀ गुरुगृह सादर तिन सँग आये॥
मकर मास रवि पर्व सुहावा ❀ विदा माँगि प्रभु पद शिरनावा॥
काशी क्षेत्र धर्म जग जाना ❀ चले सकुल सब साजि साजि याना॥
चतुरंगिनी अनी सब साथा ❀ यहिविधि गमन कीन्हरघुनाथा॥
बीच वास करि शिव पुर आये ❀ सादर पुरिहि शीश तिन्ह नाये॥
आय सुरसरी कीन्ह प्रणामा ❀ अमित अमित सुख पायो रामा॥

महिसुर दंडि यती संन्यासी ❀ पूजे कृपासिंधु सुखरासी ॥
दीन दान कछु वरणि नजाई ❀ धनद कुबेर सुरेश लजाई ॥
दोहा–यहिविधिरहिप्रभुविपुलदिन, सुखीकियेमुनिवृंद
आये पुनि निज नगर महँ, हर्षित करुणा कंद ॥ ५ ॥
प्रतिदिन अवध अनंद उछाहू ❀ दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
हठ परपंच न दुःखी काहू ❀ कुवचन कबहुँ नसुन खगनाहू ॥
सुनहिं जहाँ तहँ वेद पुराना ❀ दूसर धर्म न काहू जाना ॥
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना ❀ अति आनंद सकल पुर जाना ॥
शत संवत परिमाण हमारी ❀ भये शोच वश राम खरारी ॥
अश्वमेध मख करौं सुहाई ❀ गाय तरहिं नर भव समुदाई ॥
पुनि निज धामहिं तुरत सिधावौं ❀ विधि वर वचन न चूक लगावौं ॥
प्रात जाइ गुरु भवन सप्रीती ❀ कहौं करौं सब सुंदर रीती ॥
दोहा– अस विचार उर राखिकर, कृपासिंधु मतिधीर ॥
करत चरित नाना अमित, हरन शोक भवभीर ॥ ६ ॥
कहौं सुनहु रघुपति प्रभुताई ❀ जो पुराण ऋषि नारद गाई ॥
राम राज जस निर्मल भयऊ ❀ तसकछुआदिकविननहिंकहेऊ ॥
मैं मति लघु वरणौं किहि भाँती ❀ सोहै हंसकि बगुला पाँती ॥
सुनिय न पुहुमि कतहुँ अघ काना ❀ पढहिं चतुर नर वेद पुराना ॥
गावहिं प्रभु गुण भव भयहारी ❀ निंदहिं अमर लोक नर नारी ॥
आज्ञा मात पिता गुरु करहीं ❀ जप तप दान सदा अनुसरहीं ॥
प्रजा अनंद राज प्रभु केरे ❀ मानहु इंद्र कुबेर घनेरे ॥
राजहिं सब रनिवास अनंदा ❀ सुखी चकोर शरदलखिचंदा ॥

छंदगीतिका ।

जिमिशरद चंद चकोर देखति मातु प्रभुमुख जोहहीं ॥
तिमि भरत लछमनशत्रुसूदन वेषलखि मनमोहहीं ॥
नित जात प्रभु चौगान खेलन साथलै चतुरंगिनी ॥
जबगये भूतल भारटारन संगले मर्कट अनी ॥

चढ़िवाजिगज रथनगरदेखहिं अमितपुनिगृहआवहीं॥
सारंग हेमविलोकि सादर त्रान विन प्रभु धावहीं॥
जोकुसुम कंटक अंगलागत मोरमुख मुसकावनी॥
सोशत्रुसन्मुख सही तीक्षण शक्ति असिरिपुदावनी॥
निशि नींद वासर भूख साधत वर्ष चौदह सारही॥
व्यंजन बनत षट रसअमितघृतमधुरविन जेवत नहीं॥
पुरसखा सँगले करत क्रीडा खेलते ठल वारही॥
निज भक्त हेतु समेत लक्ष्मण प्रौढ रिपुमारयो सही २

दोहा—रघुवर राजविराजअति,सकलअवनिअघभाग॥
विचरहिं मुनिकानन विपुल,प्रीति सहित अनुराग ७॥

अवनि सुहावनि कानन चारू ❀ खग मृग इक सँगकरहिंविहारू॥
वैर न सुनिय रामकेराजा ❀ रहैं वैर विन सुन खगराजा॥
सुख संपति गृह गृह प्रगटाई ❀ गाइ न सकहिं राम प्रभुताई॥
शारद चतुरानन गौरीशा ❀ कोटि कोटि अनगनित अहीशा॥
कवि कोविद जहँ लगि जग माहीं ❀ राम राज गुण वरणि न जाहीं॥
असित आदि कज्जल गिरिभूरी ❀ पात्रपयोनिधि सरितारूरी॥
करहिं लेखनी सुरतरु भारी ❀ सप्त द्वीप महि पत्र विचारी॥
वाणी हरि हर विधि समुदाई ❀ सहसकल्प शत लिखहिंबनाई॥

सो०—तदपि नपावहिंपार, रामराजकौतुक अमित॥
सुनु अब चरित अपार, जसखगपति आगेभयो॥ १॥

राजत राजसभा सब भ्राता ❀ तहँ आयो यकद्विज विलखाता॥
कटुक कहत मुख करत पुकारा ❀ हंस वंश बूडो ❀ संसारा॥
रघुदिलीपशिवि सगर भुवारा ❀ अमित प्रभाव को जानन हारा॥
यह अनुगति लखितजौं पराना ❀ प्रभु अंतर्यामी सब जाना॥
नरलीला करि राम कृपाला ❀ लगे विचार करनतिहिकाला॥
कारण कवन मृतक सुत भयऊ ❀ द्विजको देखि विकलप्रभुभयऊ॥

प्रभु चित देखि गगनभइवानी ❀ शूद्र तपो सुनि सारँग पानी ॥
विंध्याचल गँभीर वनमाहा ❀ द्विजसुत हेतु मरन नरनाहा ॥

छंदगीतिका ।

यहि हेतु द्विज सुतमृतकसुनिरथसाजिप्रभुआतुरचले॥
द्वैपरम शैल विलोकि पावन मुदितनयि सन्मुख भले ॥
शुचि रुचिर आश्रम वेदिका तहँ देखि मुनिमनभावनी॥
बहु बाग सुभग तडाग गुंजत मंजु मधुकरसावनी ॥
पिक मोर हंस चकोर किलकहिं कीर शोभापावहीं ॥
वनवृद्धकोल किरात सादर सर्वदा तहँ आवहीं ॥
तकि क्रोध शक्ती विशिख छांडे माथले सुरपुर गयो ॥
वरभक्ति आरति जानितिहितहँ आपु तीरथव्रत कियो॥
दोहा-द्विजवर बालक मृतक जो, उठि बैठो हरषाय॥
आये पुर रघुपति भगत, भय भंजन सुखदाय॥ ८ ॥

ताहि समय एक श्वान पुकारी ❀ पाहि पाहि प्रणतारतहारी ॥
विनअघ नाथ कृपालु खरारी ❀ हत्यो मोहिं द्विज अतिबलभारी॥
सुनि प्रभुवचन दीन निजकाना ❀ सपदिदूत पठयो भगवाना ॥
आन्योविप्रतुरत तेहि काला ❀ कहे वचन तब दीनदयाला ॥
हन्यो श्वान कहु किहि अपराधा ❀ सुन सर्वज्ञ न कछु क्षत बाधा ॥
क्रोध विवश प्रभु विनहि विचारा ❀ नाथ प्रबल मैं या कहँ मारा ॥
कहहु दण्ड द्विज सकल समाजा ❀ विप्र अदंड देव रघुराजा ॥
उचित दण्ड तस देउ बनाई ❀ कहौ श्वान जस तुमहिं सुहाई ॥
दोहा-कीजिययाकोमठपती, मन भावत सुखसैन ॥
तुरत मँगावा पीतपट, गज कुंडल सुखदैन ॥ ९ ॥

पूजि चरण गज विप्र चढायो ❀ दुंदुभि बाजत मठ कहँ आयो॥
कहहिं परस्पर सब नरनारी ❀ देखहु श्वान दंड अतिभारी ॥

कीन्ह रंकते राउ कृपाला ❀ कीन्ह चरित यह कौन दयाला॥
विनती अधिक श्वान जब कीन्हा ❀ उचित सुफल प्रभु वैसहि दीन्हा॥
तासु अनंद देखि नरनारी ❀ कहो दण्ड फल कृपा खरारी॥
पूछो ताहि कही सो बाता ❀ पूरब सब प्रसंग सुखदाता॥
काशीवास विप्र मैं भयऊ ❀ शिव सेवा सादर चित दयऊ॥
हिमऋतु होम सो कीन्ह सप्रीती ❀ घृतनख रहेउ नाथ जिमिभीती॥

दोहा-तातोदन भोजन करत, खाय गयो सो भाग॥
भ्रमत फिरो योनिन विविध, मिटत न सो अनुराग॥१०॥

राजसभहि शिरनाइ बहोरी ❀ चला श्वान मन त्रास न थोरी॥
उठि मध्याह्न कीन्ह रघुनंदन ❀ पूजिपुरारि भक्त उर चंदन॥
भोजन रैन जगतपति कीन्हा ❀ निजनिज धाम सबन पगदीन्हा॥
रहा दिवस जब घटिका चारी ❀ जुरी सभा तब आय खरारी॥
सुनि पुराण सब अनुज समेता ❀ संध्याभयो दान सब देता॥
सबही संध्या वंदन कीन्हा ❀ भवन चले प्रभु आयसु लीन्हा॥
सप्त कोटिचर अवधिसिधावहिं ❀ सायंकाल सब खबर सुनावहिं॥
पृथक पृथक सुनि चरबरबानी ❀ बोलन एक सो सुनहु भवानी॥

छंद गीतका।

कछु कही नाहिं सो पूँछि सादर वचन वेग न आवई॥
इकरजक पत्निहि कहत डाटत व्यंग्यकहिसमुझावई॥
सुनि वचन कृपानिधान चरके मध्य उर राखेहरी॥
निशिस्वप्नदेखत जगतपति पुनि जागिदारुणदुख करी॥

दोहा-बीती अवधिप्रमाण युग, कीन्ह विचार कृपाल॥
एक सहस पितुराज्यशुचि, करौं सत्य यहिकाल॥११॥

त्याग्यो जनकसुता मनमाहीं ❀ राखौं श्रुति पथ धर्म नजाहीं॥
दैमन ठीक सिया पहँ आये ❀ सादर बोले वचन सुहाये॥

सुखसुखि न कछु मांगो केहुकाला ❀ हँसिकह कृपानिकेत दयाला ॥
निज छाया महिराखि विनीता ❀ रहो जाय निजधाम पुनीता ॥
प्रभुपद वंदि गई नभसोई ❀ जीव चराचर लख्यो न कोई ॥
तासन प्रभु अस कह्यो बुझाई ❀ मन भावत माँगो सुखदाई ॥
नाथ साथ मुनि धाम सुहाई ❀ आई तजिगृह मन सकुचाई ॥
मुनि त्रियभूषण सकल सुहाये ❀ पहिराऊँ प्रभु जो मनभाये ॥
हँसि कह कृपानिकेत सकारे ❀ पूजहिं मन अभिलाष तुम्हारे ॥

दोहा–होत प्रात जब जगतपति, जागे रमा निवास ॥
याचक जन गावत मुदित, शोभितकंज प्रकाश॥१२॥

भरत शेष रिपुदवन समेता ❀ आये प्रभु जहँ कृपानिकेता ॥
कीन्ह प्रणाम माथ महिलाई ❀ बोले कछु नहिं श्रीरघुराई ॥
वदन विलोकि सशंकित अंगा ❀ श्रीहत देखि वपुष कर रंगा ॥
थरथर काँपत तीनौं भाई ❀ जानिनजाइ चरित रघुराई ॥
इक विश्वास ताकि समो सुजानी ❀ बोले गूढ मनोहर वानी ॥
वचन मोर उररारखेहु भ्राता ❀ लै वन जाहु जानकी जाता ॥
सुखिसहमि सुनि वचन कराला ❀ जरेगात उपजी उर ज्वाला ॥
हँसत कि सत्य कहत रघुराया ❀ असमंजस उर सुनि खगराया ॥

दोहा–भरत आदि व्याकुल अनुज,नहिं आवतकाहिबैन
जोरयुगलकर शत्रुहन, कहत नीरभरि नैन ॥ १३ ॥

सुनि प्रभुवचन हृदय विलखाना ❀ जगतजननि सिय सब जगजाना॥
जगत पिता प्रभु सब उरवासी ❀ सत चेतन घन आनँदरासी ॥
कारण कौन जानकी त्यागी ❀ मनवचक्रम तवपद अनुरागी ॥
सुनु सर्वज्ञ सगर्भ निजानी ❀ रिसपरिहासकि सत्य सुवानी ॥
पंकज नयन नीर भरि आये ❀ कहे वचन मृदु दनुजसताये ॥
आयसु मोर जुटारहि ताता ❀ रहहिं न प्राण तात मम गाता ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना ❀ तुम कहँ तात सदा कल्याना ॥

यह मम वचन पालि लघुभाई ❀ भ्रात जानकिहि जाइ लिवाई ॥

सो०—सुनि प्रभु वचन कठोर, भरतजोरि कर कहन लिय
नाथ हमहिं मति भोर, सुनु विनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २ ॥

हंस वंश जगमें विख्याता ❀ दशरथ पितु कौशल्या माता ॥
त्रिभुवन पति प्रभु सब जगजाना ❀ गावहिं जाहि शेष श्रुतिनाना ॥
सत्य शक्ति तव प्रगट गुसाँई ❀ वरणि नसकहिं वेद अहिराई ॥
शोभाखानि जनककी जाता ❀ रहित अमंगल मंगलदाता ॥
छाया जासु पतिव्रत धरहीं ❀ ते नारी भव कूप न परहीं ॥
सीता विपिन अकेल न रहिहीं ❀ तुम्हैं विहायछिनककिमिजियहीं॥
जल विनु मीन कि जियै कृपाला ❀ होइ कृषी बिनु वारिद माला ॥
अस तुम बिन छिन जियैकि सीता ❀ ज्ञानवंत अति निपुण विनीता ॥
सुनि करुणामय वचन सप्रीती ❀ कही भरत तुम सुंदररीती ॥

दोहा—तदपि नृपहि चाहिय सदा, राजनीतिधनधर्म ॥
प्रजापालने सोचनहिं, वचननीतशुचि कर्म ॥ १४ ॥

दूत चरित जस सुन्यो सु कहेऊ ❀ कुल कलंक यह दारुण भयऊ॥
तरिणि वंश अति अमल अपारा ❀ एक ते येक जान संसारा ॥
रघु दिलीप स्वायंभू जाना ❀ सगर भगीरथ वेद बखाना ॥
दशरथ विदित जान जगनीके ❀ वचन नदीन्हों लालच जीके ॥
तिहि कुल रंचक सुनिय कलंकू ❀ रहै जीवजग अधम अशंकू ॥
सुन सर्वज्ञ सकल भय हारी ❀ रहित कलंक विदेह कुमारी ॥
विधि हरि हर दिव देखि सुहाई ❀ पावक अवटि कनक समभाई ॥
जे सुर नर मुनि सपनेहु माहीं ❀ यह चरित्र जग कहि हरषाहीं ॥

दोहा—तेहठि रौरव नरक महँ, कोटि कल्प भरिवास ॥
रहहिंकोटिशतरोगवश, भोगहिं नरक निवास ॥ १५ ॥

रिस रुख देखि नयन वरतीछे ❀ आये भरत लषणके पीछे ॥
सुनु सौमित्रि छाँड हठ सोचू ❀ जगभल कहै कहै किन पोचू ॥

तजि आज्ञा प्रतिउत्तर करिहौ ❀ मोहिं विनसोच जन्म भरि परिहौ

जनकसुताहि रथ तुरत चढाई ❀ गंग समीप फिरव पहुँचाई ॥

अति गहवर वन जहाँ नकोई ❀ छाँडिसुतात जानि जब सोई ॥

फेरी मति कह वचन उदासा ❀ मरन ठानिकर चले निराशा ॥

सुभग विमान सीव बैठाई ❀ पट भोजन भरि धरे बनाई ॥

अति अनंद मन चली जानकी ❀ अतिशय प्रिय करुणानिधानकी

दो.-विवरनशेष निहारि सिय, चकृत विकल भइ बाल ॥

झुकतहृदयनहिं कह सकत, मणिबिन व्याकुल व्याल१६

उतरि देवसरि यान सुहावा ❀ अति उद्यान देखि भय पावा ॥

कारन अपर जानि भय भीता ❀ बोली वचन मनोहर सीता ॥

दिखियतनहीं मुनिनके धामा ❀ जात कहां प्रभु अनुज सकामा॥

खग मृग जीव विविध हरि व्याला ❀ करिकेहरि हरि बाघ शृगाला ॥

कोउ मुनि मिलत न आवत जाता ❀ निकसत प्राण तात मम गाता॥

सीय विकललखि मनहिं अहीशा ❀ कीन्ह कहा विधि हरि गौरीशा॥

मूर्छित रथ ते भयविकरारा ❀ भूमि गिरत तब आपु सँभारा ॥

सिय विलोकि मन धीरज आना ❀ तृपा विना अब निकस पराना ॥

दोहा-धरणिसुताव्याकुल निरखि, प्राणकंठ गतजानि

तजन चहत तनु शेष तब, धृगधृगजीवन मानि॥१७॥

प्राण विना लक्ष्मण कहँ देखी ❀ गगनगिरा तव भई विशेषी ॥

सुन सौमित्रि जाहु सिय त्यागी ❀ जनक पुत्रिका जिशहि सभागी॥

गगन गिरा सुनि धीरज कीन्हा ❀ हाथ जोर पर दक्षिण दीन्हा ॥

लैरथ चरण वंदि सिय केरे ❀ चले अवध उर त्रास घनेरे ॥

जागी सिया सकल दिशि देखा ❀ नहिं रथ अश्व नाहिं न तहँ शेषा॥

लहि दुख प्रथम रहे हैं प्राना ❀ पुनि सोइ चहत न करत पयाना॥

करुणा करत विपिन अति भारी ❀ वाल्मीकि आये वनचारी ॥

सुनी वाल्मीकि मुनि जाना ❀ वन आवन निज चरित बखाना॥

दोहा–मुनि पुत्री हौं जनककी, रामप्रिया जगजान ॥
त्याग न जानौ हेतु कछु, विधि गति अति बलवान ॥ १८ ॥
देवर लषण इहाँ ले आये ❀ हेतु न कछु जानो मुनिराये ॥
सुन कन्या मिथिलापति मोरा ❀ परमशिष्य सब विधि पितु तोरा ॥
चिंता अब जनि कर सुकुमारी ❀ मिलिहैं तोहिं शेष हितकारी ॥
सादर परनकुटी सिय आनी ❀ पुत्री करु मज्जन अस जानी ॥
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा ❀ सिय सुरसरि तब मज्जन कीन्हा ॥
सुमिर राम मूरति उर राखी ❀ दीन्हे फल सुंदर मुनि भाषी ॥
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा ❀ कहहिं सुनहिं सिय संग विहंगा ॥
ज्ञान अनेक प्रकार दृढाये ❀ लक्ष्मण अवधपुरी तब आये ॥
छं. आयेजुलक्ष्मणत्यागसीतहिविकलनिजआश्रमगये ॥
बहु भाँति रोदन मातु सनकहि सीय दुख दारुण भये ॥
सुनिसहमिमूर्च्छितमातु वाणीविकलजिमिफणिमणिगये ॥
तिमिमातुविलपतिजातव्याकुलकौशलहिसबदुखमये ॥
रोदति वदतिकेहि भाँति को कहविपतियहदारुणभये ॥
सुनि सोरराउरसहित लक्ष्मण राम निज मंदिरगये ॥
निजज्ञानदै समुझाइ मातन खुलेपट अंतर नये ॥
हम जानि तुम सुत मान प्रभु जगभूलिभ्रमफंदन भये ॥
अब करि कृपा जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ॥
जेहिखोजमुनि योगीशतापस देहु अविचल पावनी ॥
वरचहेउसोइ सोइ लयो मातन दीन्ह करुणाकरतबै ॥
तनु शोधिकरि शुभ योग अग्नि जात भईं सादरसबै ॥
दोहा–योग अग्नि तनु भस्म करि, सकलगईं पति धाम ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, शोक भवन श्रीराम ॥ १९ ॥

विधिवत कर्म सकल श्रुति गाये ❀ प्रभु शतगुण सादर करवाये ॥
दीन्ह दान तहँ कोटि प्रकारा ❀ को अस जग जो बरणै पारा ॥
धेनु बसन मणि हाटक हीरा ❀ जटितजमोतिन कोटिक चीरा ॥
रथ गज बाजि भूमि धन धामा ❀ दीन्ह कीन्ह परिपूरण कामा ॥
रही न साध याचकन केरी ❀ रंकन धनद बड़ाई फेरी ॥
वेद पढहिं द्विज देहिं अशीशा ❀ चिरंजीव दशरथ सुत ईशा ॥
गृह द्विज याचक सकल सिधाये ❀ अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
विप्र दंड तापस वध कीन्हा ❀ सुरपुरवास मात कहँ दीन्हा ॥

दोहा-करौं अक्षै मख एक पुनि, अश्वमेध जग जान ॥
कलुष सकल संताप दह, अंगदादि हनुमान ॥ २० ॥

एक बार गुरु गृह सुखदाई ❀ गे सँग अनुज सचिव रघुराई ॥
कीन्ह दंडवत महि शिरनाई ❀ सादर हर्षि मिले मुनिराई ॥
पूँछी कुशल देखि मृदु गाता ❀ कुशल देखि तव पद जलजाता ॥
गुरु पद वंदि जोरि शिरनाई ❀ बैठे प्रभुवर आशिष पाई ॥
कहत पुराण नवल इतिहासा ❀ सुनत कृपानिधि परम हुलासा ॥
आइन अमित परम सुख दीन्हा ❀ मुनितनचितै प्रेम कें चीन्हा ॥
दो कर जोरि सच्चिदानन्दा ❀ बोले वचन भानुकुलचंदा ॥
नाथ सकल तव चरण प्रसादा ❀ भइ जग विपुल धोरि मरयादा॥

दोहा-समय समुझि करुणायतन, सादर वचन बहोर॥
प्रभु अंतर्यामी करहु, सफल मनोरथ मोर ॥ २१ ॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका ❀ कीन्हे अमित येक ते येका ॥
नाथ सकल पुरजन मनमाही ❀ देखा अश्वमेध प्रभुचाही ॥
प्रगट भरत नाहिं तुम्हैं सुनावहिं ❀ नितरासतउरमोहि जनावहिं ॥
अस कछु आयसु दीजै नाथा ❀ सो सब करौं नाय महि माथा ॥
मुनि पुलके सुनि वचन सप्रीती ❀ कस न कहौ तुम सुन्दर नीती॥
पूजहि विधि अभिलाष तुम्हारा ❀ उठहु भरत अब करहु विचारा॥

सुनि मुनि वचन भरत रिपुदवनू ❀ हर्षसचिव लक्ष्मण ... नंदनं॥
विविध प्रकार चरण करि सेवा ❀ चले भरत सँग बहुतहि देवा॥
दोहा–सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाइ॥
हाट बाट पुर द्वार गृह, रचहु वितान बनाइ॥ २२॥
चले सकल सेवक सुनिवानी ❀ सुनि रावर हर्षीं सबरानी॥
रचहिं वितान अनेक प्रकारा ❀ देखि अवधनिजपतिविविहारा॥
लगे सँवारन रथ गज बाजी ❀ सुनि क्षत्र गगन दुंदुभी बाजी॥
सुनत सचिव चर चतुर बुलाये ❀ कहि जयजीव माथ तिन नाये॥
जाहु मुनिनके थल वनमाहीं ❀ सादर निवत देहु सब पाहीं॥
वहाँ राम पूँछा गुरु देवा ❀ आज्ञा होइ करौं सोइ सेवा॥
प्रभु मनकी गति मुनिवर जानी ❀ बोले अति सनेह मय वानी॥
पठवहु दूत जनकपुर आजू ❀ आवहिं जनक समेत समाजू॥
दोहा–सुनहु राम रघुवंश मणि, न्योतसकल सुर जाति॥
वरुण कुबेर सु इंद्रयम, मुनि महिसुर गुरुज्ञाति॥ २३॥
गुरु समेत प्रभु अवधहि आये ❀ देखि बनाव बहुत सुखपाये॥
मिथिलापुर चर चतुर सिधाये ❀ देश देशके नृपति बुलाये॥
जाम्बवन्त सुग्रीव विभीषन ❀ अरु नल नील द्विविदकुलभूषन॥
आये सब जहँ राम कृपाला ❀ वरुण कुबेर इन्द्र यम काला॥
चढ़ि विमान सुरत्रिया सुहाई ❀ करत गान कलकण्ठ लजाई॥
आवहिं मुनि गण यूथ घनेरे ❀ देहिं कृपा करि सुन्दर डेरे॥
शशि रवि हरि हर विधि सनकादी ❀ आये सुर जे परम अनादी॥
विश्वामित्र संग मुनिचारी ❀ सहससात सब इच्छाचारी॥
दोहा–पाराशर भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य॥
आये यूथप सकल मुनि, देवल सहित पुलस्त्य॥ २४॥
मख स्थल अति देखि सुहावा ❀ नाना भाँति देखि सुखपावा॥
मिथिलापुर जो दूत सिधाये ❀ देखि नगर वासिन सुखपाये॥
द्वारपाल सन खबर जनाई ❀ अवध नगर ते पत्री आई॥

विधिवत दूत सहसा उठि धाये ❀ तनमन पुलकि नैन जल छाये ॥
भयो भूप मन आनँद जेता ❀ कहि न सकें शारद अहितेता ॥
शिथिल अंग नृप द्वारे आये ❀ देखि दूत अतिशय सुख पाये ॥
कहहु कुशल रघुपति सब भाई ❀ पत्र देय सब प्रश्न सुनाई ॥
हृदय राखि पुनि नयन लगाई ❀ गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥
दोहा-भूप समयतिहि अवसरहिं, को वरणै मतिधीर ॥
तुलसी भवन उछाह बड़, जय जय जनक गँभीर २५ ॥
बाँचत प्रेम न हृदय समाता ❀ चरचर बोलि कह्यो हँसि बाता ॥
नगर गाउँ पुर मंगल साजे ❀ अमित अपार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि निज पत्री दीन्ही ❀ उठिकरजोरिविनयकरि लीन्ही ॥
पढ़ी साचिव अति प्रेम अनंदा ❀ सुमिरि राम कोशलपुर चंदा ॥
घर घर खबर व्याप छिन माहीं ❀ मंगल कलश धरे सबकाहीं ॥
भयो अनंद न जाइ बखाना ❀ कीन्हे विविध दान नृप दाना ॥
धरि तनु अमित देव नभ बासी ❀ आये भूप नगर सुखरासी ॥
कहहिं वचन नृपके हितकारी ❀ चलहु अवध सब काज बिसारी ॥
दोहा-कहि कहि सुर सादर चले, वाहन रुचिर बनाइ ॥
जोरि युगलकर मुकुटमणि, स्तुतिकरत सुहाइ ॥ २६ ॥
छंद-पद सुमिरि करुणा कंद श्रीरघुचंददशरथनायकं ॥
सिय सहित अनुजनाशिष्ठ पदरतिबसोमसउरजायकं ॥
अम्भोज नयन विशाल लाल कृपाल दशरथ नंदनं ॥
शतकोटि मार उदारशोभा अतुल बल महि मंडनं ॥
साजितूण कटि कर शरशरासन कपट मृगमद गंजनं ॥
वैदेहि अनुज समेत कृपानिकेत जन मन रंजनं ॥
मम हृदयवास निवासकरु करुणायतन करुणामयं ॥
महिमा न कोउ जनजान मुन हारियानज्ञान विशालयं ॥
सो हेतु करु वृषकेतु प्रभु खरदूषणादि निकंदनं ॥

नर अधम पामर काम वश मति भजत नहिं रघुनंदनं॥
तव ललित लीलावसहिजेहि उर सगुणप्रभु धरणी धरं॥
कहिसक न शारद शेष नारद जानिकिमि जन बापुरं॥
सोइ आनि तुलसीदास निज उरशरन अब काकीगहौं॥
सुख पाइ मन वच काइ नहिं गति दूसरीसपने लहौं॥
सबकुशलपूंछिप्रसादरविहँसिअनंदउरमहिअतिछयो॥
मन भाय पाय सुनाय विधि पद दान बहु विप्रनदयो॥
गज वाजि भूषण भूमि सुरभी वस्तु नानाको गनै॥
यक बारलै नृप द्वार दीन्ही कहहु कवि कैसे भनै॥
सनमानिकै परतोष कीन्हो सबै आदर भावसों॥
मन हर्षपुलकित कहहिंजयजय सुनहुखगपति रावसों॥
दोहा—पूजे विविध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि॥
गुरु गृह गवने मुकुटमणि, पाइ पदारथचारि २७॥
सकल कथा महिपाल सुनाई ❀ शतानंद आनँद अधिकाई॥
चलहु नृपति मख देखिय जाई ❀ साजहु जाइ सकल कटकाई॥
करि विनती नृप मंदिर आये ❀ सादर सेवक सकल बुलाये॥
सजोसैन चतुरंग सुहाई ❀ भवन गये सबही समुझाई॥
पत्री सहित रानि गृह आये ❀ बांच नृपति पुनि सकल सुनाये॥
आनँद सब रनिवास बुलाई ❀ दिये दान महिदेवन आई॥
बहु बखसीस याचक न दीन्हे ❀ सादर बोलि युगल चरलीन्हे॥
विलगि विलगि सब पूछत बासा ❀ सुनहिं रामके पूरण कासा॥

छंदगीतका।

शुभकाम पूरण रामके सुनि विपुल बाजन बाजहीं॥
पुरद्वार घर रखवार राखे सैन भट सब साजहीं॥
दशसहसरथ सिंधूर पटशत बाजि पदचर को गनै॥

जगमगति पाखर जटित जीन विलोकि कविकैसेभनै ॥
चढि शूर नवल प्रवीनजे असि सब चलत सादर भये॥
सुखपाल परम विशालयुग चढि गुरुहिलै सादर नये ॥
महिडोलधसकतकमठअहिदलदेखिअमितविदेहको॥
भटयूथपदचर अमित कहिको मूढलेखा करतसो ॥७॥

दोहा-चल्योराउमुनिगणसहित, विपुलबजाइनिसान॥
प्राततीसरे पहरको, अवध नगर नियरान ॥ २८ ॥
नृप अगवान विचार प्रभु, सादर आये लेन ॥
मिले परस्पर प्रीति अति, चले सुथल थलदेन ॥२९॥

पुरबाहर सरयू शुचितीरा ❀ वास दीन्ह हर्षित रघुवीरा ॥
सौंपि अनुज कहँ राज समाजू ❀ आये प्रभु जहँ नृप मनराजू ॥
मिलिपुनि नृपति निकट बैठारे ❀ गदगद ह्वै मृदु वचन उचारे ॥
वदन चूमि निरखे तन गाता ❀ आनँद उमगि न हृदय समाता॥
प्रभु विनती करि सब सेवकाई ❀ सचिव भरत पुनि लीन्ह बुलाई॥
नृप सेवा सब भरत सँभारी ❀ सुन खगपति अनंद उर भारी॥
आइ गुरुहि सादर शिरनाई ❀ मन भावत वर आशिष पाई ॥
फिर प्रभु सकल देव गुरु वंदे ❀ अमित आशिषा पाइ अनंदे ॥

दोहा-दश सहस्र मुनिवर सहित,आये प्रभुमखधाम ॥
बोले वचन विचित्र गुरु, मंत्र सुनहु मम राम ॥३०॥

धर्म सकल जे वेद बखाने ❀ संत पुराण लोक सब जाने ॥
बिन त्रिय सफल न होइ खरारी ❀ अब चाहिय मिथिलेशकुमारी॥
सुनि सुनि वचन मष्टह्वै रहेऊ ❀ सत्य असत्य न येको कहेऊ ॥
सत्यप्रण विरद जानि मुनिराया ❀ रहे सुकृतजाहि करुसोदाया ॥
दोउ गुरु मिलि नारद सनकादी ❀ वचनकहेउ सुन पुरुष अनादी॥
कनक जटित मणि सुंदर बाला ❀ रचि सिय रूप सुशील विशाला॥
अंग अंग सब भूषण साजे ❀ तासु रूपछवि रतिपति लाजे ॥

सहसालखि न सकहिं नरनारी ❀ लिय देखेउसब अचरज भारी ॥
दोहा-तेहि अवसर शोभा अमित, को कविवरणे पार ॥
जगदातार कृपालु प्रभु, कीन्हे चरित अपार ॥ ३१ ॥
जटित कनक सुंदर मृगछाला ❀ तिहि आसन आसीन कृपाला ॥
सियासहितलखि सुर सुखकारी ❀ कीन्ह प्रणाम सबन हरषारी ॥
भीर अमित लखि गुरु विज्ञानी ❀ सिद्धिन बोलि सकल सनमानी ॥
कहा कि जाहु उचित सब करहू ❀ जस चाहिय कछु सो अनुसरहू ॥
सुनि रजाइ छत्रपति रुखपाई ❀ रचे कोट गृह विधिहि लजाई ॥
सुर सुरभी सुरतरु सुखखानी ❀ शारद शेष न सकहिं बखानी ॥
पुर गृह बाहर भली अटारी ❀ भारि सुगंध सब सुकृत सँवारी ॥
रहे तहाँ दिक्पाल अनेका ❀ जो परमारथ निपुणविवेका ॥
छं०-जेनिपुण परम विवेक पावन भरतलैराखेतही ॥
निजभाग्य प्रबल सराहि निंदहिं धनदकी पदवी कही ॥
आये त्रिलोकिक नाग खग सुर असुरजे विधिनेरचे ॥
सनमानि सकल सनेह सादर रामसनकोनहिं बचे ॥८॥
दोहा-वाण सहस वर विप्र युग, सुंदर परम प्रवीन ॥
जानहिं श्रुति करमतसकल, राहिमख संग अधीन ३२ ॥
मकर मास दुतिधौल सुहाई ❀ मख मंडल बैठे रघुराई ॥
तब बोले गुरु वचन सुहाये ❀ आनहु बाजि जे वेद बताये ॥
लक्ष्मण सुनि गुरु वचन अनंदे ❀ बार बार पद वारिज वंदे ॥
हयशाला सादर चलि आये ❀ विविध अभूषण तेहि पहिराये ॥
श्वेतवर्ण सुंदर श्रुतिकारे ❀ रवि हय लजित मनोजसँवारे ॥
जीन जराव नजाइ बखाना ❀ रविरथ हय आवत जगजाना ॥
माथे मोर [illegible] मणि लागे ❀ सो नभ नखत देखि अनुरागे ॥
सेवक चारु पाटअयडोरी ❀ दामिनि दमकनिपट अतिथोरी ॥
दोहा-षष्टि सहस दश वीर वर, रामानुजरणधीर ॥
मध्य ताहि राख्यो तहाँ, जहाँ राम रघुवीर ॥ ३३ ॥

पूजा हय प्रभु जय जग हेतू ❀ जस कछु कह्यो गाधिकुलकेतू ॥
दीन्ह विविध विध दान अनेका ❀ लिख्यो पत्र सो करि अभिषेका॥
एक वीर कौशल पुर माहीं ❀ अरिदल दलन सुरेश सकाहीं ॥
तेहि बल होइ गहै सो बाजी ❀ दंड देहु वन जाहु कि भाजी ॥
लिखि बाँध्यो हयशीश सवाँरी ❀ तहँ सुनि चरित आव मुनिचारी॥
भार्गव आदि सकल मुनिसंगा ❀ आये जहँ कुल कमल पतंगा ॥
कथा सकल लवणासुर केरी ❀ मुनिन त्रास जिन दीन घनेरी ॥
सुनि ऋषि वचन नैन जल छाये ❀ बहुरि राम निजतूण मँगाये ॥

दोहा-दीन्होरिपुसूदनहिसो, बाणअमोघ कराल ॥
मंत्र मोरपढि ताहि हति, जीतेहु सकल भुवाल॥ ३४॥

बहुरि विभीषण राम बुलाये ❀ सादर आइ माथ तिन्ह नाये ॥
लवणासुरके चरित अपारा ❀ पूछे दिनमणि वंश उदारा ॥
कर वर जोरि निशाचर नाहा ❀ सत्य कहौं अब सुनु अवगाहा ॥
बहिनिविमात्र नाथ सो मोरी ❀ कुंभनिसातेहि नाम बहोरी ॥
मधु दानवको रावण दीन्ही ❀ बहु विनतीकै तिहि तब लीन्ही॥
तनय तासु लवणासुर भयऊ ❀ शिव सेवा सादर जिन्ह कियऊ॥
अगम तासु तप शंकर जाना ❀ दीन्ह शूल सुनु कृपानिधाना ॥
तेहि कर रहै अस्त्र सो भारी ❀ चौदह भुवन जीति सब झारी ॥

दोहा-तेहि बल प्रभु सोनहिं गनै, अमर दनुज नरनाग॥
जीति सकल निजवश किये, पंथसबहिके लाग॥ ३५॥

तासु चरित सुनि मन मुसिकाने ❀ रिपुहंतहिबल दै सनमाने ॥
सैन संग चतुरंग बनाई ❀ रहे साथ दोउ तनय सुहाई ॥
सुनि प्रभु वचन निसान अपारा ❀ तीन सहस्र हने इक बारा ॥
धसकी वसुधा कुंजर गाजे ❀ दश सहस्र रथ रवि रथ लाजे ॥
पूर्यो शंख चले दल साजी ❀ अमित अकाश दुंदुभी बाजी ॥
पुरबाहर सब अनी सँभारी ❀ तनय युगल लखि परमसुखारी॥
डा[illegible] दिने बास मग माहीं ❀ पहुँचे जाय यमुनतट पाहीं ॥

दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती ❀ पूजहिं हरिपद दिनऔराती ॥
दोहा-रवितनया मज्जन कियो, सादर पूजि पुरारि ॥
चल्योशत्रुसूदन सुमिरि, स्वामीराम खरारि ॥ ३६ ॥
चमू चपल अति सुभट जुझारा ❀ घेरचो नगर बीर वरियारा ॥
विपुल निसान हने तेहि काला ❀ सुनि निश्चरपति गर्वविशाला ॥
षष्टि सहस वर शूर जुझारा ❀ लवणासुर सँग अनी अपारा ॥
सुभट प्रचारत गर्जत आवा ❀ देखि कटक निज अति सुख पावा
मारहु धाइ धरहु नृप बाँधहु ❀ जेहि जय होइ जतनसो साधहु ॥
असकहि सन्मुख फौज चलाई ❀ कज्जल गिरि जनु आँधी आई ॥
मारू शब्द सुनहिं भट गाजहिं ❀ विपुल बाजनेदुहुँदिशिवाजहिं ॥
निज प्रभु कहि जय जोरी जानी ❀ हरषि भिरे भट हठमन ठानी ॥
छं०-हठठानिशूर प्रवीन जेअसि भिरे अतिरिपु प्रबलयो
यक मल्लयुद्ध सराहि सकहि नयेकयेकहि कर्षयो ॥
शरशक्ति तोमर परशु पटहिं कृपाण शूल चलावहीं ॥
कर चरण शिर हति तीर धारहिं भूमि जानन पावहीं ॥
भटगिरहिंपुनिउठिलरहिंमरहिंनकरहिंमाया अतिघनी
प्रभु तनय सुंदर वीर बाँके हनहिं रिपु निश्चर अनी ॥
देखहिं परस्परयुद्ध कौतुक सुभट यक येकहि हनै ॥
सजि कोटि रथसुरआइनभपथसुमनझरिजयजयभनै१
दोहा-विचलत अनी विलोकि निज, लवणासुरबलबंड॥
संगतनय मातंग भट, दूसर केतु अखंड ॥ ३७ ॥
प्रभु सुत जेठ सुबाहु विशाला ❀ भिरचो मतंगहिजनु दुइकाला ॥
यूपकेतु अरु केतु प्रचारी ❀ लरहिं सुसेन नमानहिं हारी ॥
लवणासुररिपु अति बल भारी ❀ कौतुक करहिं प्रचारि प्रचारी ॥
अनी समूह जानि निज जोरी ❀ अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी ॥

विषम युद्ध लखि देव सकाने ❀ पूछो सुरगुरु कहि सनमाने ॥
जनि जिय शोच अमरपति करहू ❀ राम प्रताप क्षणक उर धरहू ॥
यूपकेतुकरि कोप अपारा ❀ हति रिपु केतु खंड महिडारा ॥
वहाँ सुबाहु मतंगहिमारा ❀ कर पद काटि अवनिमहँ डारा॥

छंद गीतका ।

महिडारि करपदशीश आतुर तूणशर प्रविशतभये ॥
रवि वंशके अवतंश दोनों समर महँ शोभितहये ॥
सुनिमरन युग सुत विकलनिश्चर भूमि विनमारेगिरो ॥
पुनि जागि शूल सँभारि प्रभुके समर सन्मुख सोभिरो ॥
दोउ प्रबल वीर प्रताप अगणित सैन दुहुँदिशिमुरिचली ॥
शिरबाहु चरण उड़ात नभपथ योगिनी आनँदभली ॥
बहु रुधिर मज्जन करहिंसादर गुहहिं नरशिर मालिका ॥
आनंदमें मन मुदित गावहिं गीतखेचरकालिका ॥
धुनिपढहिंशंख मृदंगकी सुनि शूर हर्ष बढावहीं ॥
गतिलेत नृत्यत प्रेत तिय शिरमाल हरहि चढावहीं ॥
कहुँ करति पान प्रमानरण महँ भरे शोणित शाकिनी ॥
सब मेद माँस अहार करिनभमुदितडोलहिंडाकिनी १ ॥

दोहा-मारे रघुवर वीरबहु, परे समर रणधीर ॥
क्षणमहँ निश्चर वध निरखि, अंतरहै बलवीर ॥ ३८ ॥

करि छल प्रगटसिविबुध वरूथा ❀ अस्त्र शस्त्र गह सब सुर यूथा ॥
धाये अज हरि शिव सनकादी ❀ जे मुनि अपर कहे श्रुति वादी ॥
शक्ति शूल असिचर्म सुहाये ❀ गदा परशु धनु वाण बनाये ॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं ❀ लरहिं सुभट विस्मितह्वै रहहीं ॥
निशिचर प्रबल पाइ बलनाथा ❀ कितिको वीर मलहिं निज हाथा॥
सेन विकल लखि नारद आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये ॥

रिपुसूदन प्रभु विशिष सँभारी ❀ डारेउ सुमिरि समर त्रिपुरारी ॥
जिमितम अचवै तरणि गुसाईं ❀ समर अमर नहिं देखिय काई॥
दोहा–मंत्र प्रेरि चल कोटि शर, रहेजहँतहँनभछाइ ॥
मनहुँबलाहक प्रबल बहु, मारुतदेखि विलाइ ॥ ३९॥
सुर समाज कतहूँ नहिं देखा ❀ चल्यो सुबाहु काल जनुवेखा ॥
खल सँभारु गहु शूल विचारी ❀ अस कहि गदा क्रोध उरमारी॥
सहि न सक्यो सो तेज अपारा ❀ मूर्च्छितअवनिपरचो विकरारा॥
निजपति विकल देखि भट भारी ❀ तारुक तनय चल्यो उरगारी ॥
कैटभ नाम वीर बलवाना ❀ मूर्च्छित लवणासुर मन जाना ॥
तीनि सहस्र सैन रण गाढे ❀ आइ सुबाहु साधुहे ठाढे ॥
कटुक वचन कहि छांडेसिबाना ❀ काटे प्रभु सुत तीव्र कृपाना ॥
तब खिसियान शूलले धावा ❀ जूपकेतुके सन्मुख आवा ॥
सो०–मारेसि हृदयसँभार, गिरेजपतकरुणाअयन ॥
मूर्च्छित बेर पुकार, रामचंद्र दिनमणितिलक ॥ ३॥
मूर्छित बंधु सुबाहु विलोकी ❀ भइ रिस अमित रहत नहिंरोकी॥
कठिन बाण करि क्रोध अपारा ❀ छांडेउ तीनिकोटि इक वारा ॥
ताहि विकल करि अनुज समीपा ❀ आतुर आये निज कुलदीपा ॥
लागो बाण तासुतनु माही ❀ परचो अवनि मानो पशु आही॥
ऐंचिलाँगि तनु बाहिर कीन्ही ❀ रामनाम पर औषध दीन्ही ॥
उठि शुचि अंग अनुजके संगा ❀ लीन्ह विहँसि धनुवान निषंगा॥
आइ समर महँ सुभट प्रचारे ❀ बाणन विपुल देव अरिमारे ॥
मूर्च्छागत कैटभ बलवाना ❀ मधुसुत देखि बहुत पछिताना॥
लेकर गदा अनी विचलाई ❀ घेरि रहे निश्चर समुदाई ॥
माँग्यो रथ आन्यो बलवाना ❀ ताहि चढाइ उपाइ विधाना ॥
दोहा–करि उपाइ रथ राखितेहि, भवन पठै रणधीर ॥
आपसमरगाजत भयो, संगमहाबल वीर ॥ ४० ॥
जाग्यो निश्चर देव लडाई ❀ पठइसिकुंभक सँगनिज भाई ॥

सुरवैरी तेहि कालसकाई ❀ हार समर महँ सुन खगराई ॥
जान्यो कैटभ जाम्यक आवा ❀ समर धीर नाहिं चलै चलावा ॥
नायो माथ आनिकर जोरी ❀ तात समर रुचि पूजी मोरी ॥
रावण रिपु लघु भ्राता जानू ❀ तनयतासुबल शील निधानू ॥
कोटिन शूर समर हम मारे ❀ बालक नृपति निरखि हिय हारे॥
रिपुबल सुनि कर हृदय कलापू ❀ पठयसि मोहिं जानजिय आपू ॥
रवितनयागहि सैना डारौं ❀ तनय समेत अनुज रिपु मारौं॥

छंदगीतका।

रिपु अनुजमारहुँसैनयमुनाहिं डारिनृपरणरज करौं ॥
तजसोचसैनसँभारि चलुभट वेगिजेहि हर पापरौं ॥
दोउ मत्त गर्व विसाल निश्चर आइ रणगर्जतभयो ॥
इत जूपकेतु सुबाहुधनु शर हाथले आतुर गयो ॥
भट भिरे निज निज जथाति कहि निज जानि जोरीसमरकी॥
शिरकटतखंडन चरण योगिनि खातबालक बालकी॥
उड़िगीधजंबुक काकशोणित पियहिंअतिसुखपावहीं॥
बहुदानदेहिं अनेक विधि मन विहँसि मंगल गावहीं ॥
दोहा-भिरेशूर सारोष अति, फिरे श्रकानेकूर ॥
लागे लोहे हठि रहे, समरबीरबलपूर ॥ ४१ ॥

कहैं सुशूर होत किन ठाढे ❀ फिरे लजाइ क्रोध अति बाढे ॥
भिरे प्रचार सुभट समुदाई ❀ भयोयुद्ध अति वरणि नजाई ॥
बरषहिं समर शूर शर कैसे ❀ प्रगटत जलद पावसहिं जैसे ॥
रथ पग उठे धूर नभछाई ❀ भयो प्रदोष मनहु निशि आई॥
समरखेत रिपु प्रबल चलाये ❀ प्रभु समीप सुत सादर आये ॥
देख तनय मल विपुल विशाला ❀ रिपुहन हर्ष मनहु सुरपाला ॥
यातुधान बल बुद्धि गवाई ❀ निशिपुर गयो पराजय पाई ॥
निशि निशिचर सब बात बिचारी ❀ होत प्रात सब लाग गुहारी ॥

दोहा-साजिवाजिगज वाहनी, गहगह हने निसान ॥
आयोसमर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥४२॥
सुमिर शिवहि गहि शूल विशाला ❀ रिपुदल परो मनहुँ यमकाला ॥
क्षणकमाहिं मारे बहु योधा ❀ चल्योसकोपअनुज करि क्रोधा॥
आवत शूल हनेसि प्रभु छाती ❀ घुर्मित धरणिपरो रिपु घाती ॥
मूर्च्छित देखि खड्ग लैधावा ❀ निरखिसुबाहु क्रोध उर छावा ॥
प्रबल गदा रथ सारथि भंज्यो ❀ विहँसि महाबलकरि दल गंज्यो॥
रथ विहीन व्याकुल महि माहीं ❀ मूर्च्छित अवनिपरो सुधि नाहीं ॥
पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी ❀ अस्त्र सँभारि क्रोध अति भारी॥
विस्मित विकल देव जब जान्यो ❀ राम बाण अति सादर तान्यो ॥
दोहा-सुमिर अवधपतिचरणयुग,छाँडेउ तीव्र नराच॥
पर्‍यो अवनितल भिन्न ह्वै,व्याकुल निपट पिशाच ४३॥
तासु मरन सुनि सब सुरयूथा ❀ चढि विमान नभसकल वरूथा॥
बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला ❀ आज नाथ बीती सब शूला ॥
देहिं अशीश वेद ध्वनि करहीं ❀ जयतिमंत्र वर आशिष पढहीं ॥
यातुधान पति हीन विलोकी ❀ केटभजातक नाहिं रिसरोकी ॥
करि किलकार गर्जि अति घोरा ❀ शिलायेकमेली बहु जोरा ॥
शरहति शैल सुबाहु प्रचारी ❀ काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
वदन पसारि ताहितकिधावा ❀ बाण वेध महि माथ गिरावा ॥
परत धरणि करि घोर अपारा ❀ कठिन कृपाण खंड केडारा ॥
दोहा-यूपकेतु तब क्रोधकरि, कैटभहन्यो प्रचारि ॥
वरषिदेव झरि सुमन अज, अति प्रसन्न त्रिपुरारि ४४॥
बाजहिं निकर निसान सुहाये ❀ जयजय जयकहि सुरसबगाये ॥
पढहिंवेद मुनि आशिषदेहीं ❀ वंदीजन निवछावर लेहीं ॥
देहिं दान जो जिहि मन भायो ❀ सुनासीर आतुर चलि आयो ॥
जोरि युगल कर अति अनुरागे ❀ बोले वचन प्रेम रस पागे ॥
अस्तुति योग जीभनहिं नाथा ❀ हम दिति सुर सब कीन्ह सनाथा॥

सुर सुरपति लखि प्रभु निज भाई ❀ कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई ॥
तव प्रताप हति खल समुदाई ❀ राम कृपा हम जय जग पाई ॥
अस्तुति विनय शक्र बहुकीन्ही ❀ बारबार अति आशिष दीन्ही ॥
दोहा-देवन सहित सुदेवगुरु, आये जहँ सुखधाम ॥
समाचार सादर कहे, सकल सबनके नाम ॥ ४५ ॥
तहँ शुभ नगर रचे अति रूरे ❀ राखे तनय युगल बल पूरे ॥
मधुरानाम जगत यश जाना ❀ देश विदेश जु वेदबखाना ॥
जेठ तनयबल बुद्धि विशाला ❀ नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
राख्यो यमुनातट बल भूरी ❀ विदित नगर पश्चिम बहु दूरी ॥
यूपकेतु पुनि सो थल पावा ❀ राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
सौंपि नगरबहु आशिषदीन्ही ❀ नृप मणिगवनाविजय कहँ कीन्ही ॥
चिरंजीवकहि हने निसाना ❀ दक्षिण अश्व चला जब जाना ॥
सचिव तनय राखे सुत संगा ❀ उतरे सब दल यमुन तरंगा ॥
दोहा-रवितनयापद वंदिकरि, चली सैन हय संग ॥
हरषहिं सुरवरषहिं सुमन, निरखि सैन चतुरंग ॥ ४६ ॥
वाल्मीकि थल वाजि समेता ❀ कानन सघन मुनीशनिकेता ॥
सियसुत युगल वीरवरबंडा ❀ भुजबल विपुल दिनेशप्रचंडा ॥
वीर चली हय देखेउ आई ❀ बाच्यो वाँच सुपत्र बनाई ॥
कसि कटि तूण हाथ धनु तीरा ❀ समरहेतु बैठे बल वीरा ॥
सूर सहस्र सहायक साथा ❀ आय गये जहँ रघुकुल नाथा ॥
तरु तर बाँध्यो वाजि विलोकी ❀ बालक जानि सकल रिसरोकी ॥
दे तुरंग गृह जाहु सुहाये ❀ धन्य मातु पितु जिन्ह तुम जाये ॥
माँगहु भीख समर चढि भाई ❀ क्षत्रिय कुलहि कलंक लगाई ॥

छंदगीतका ॥

जनि क्षत्रिकुलहि कलंक लावहु समरशूर सुहावने ॥
बलहीन तुरे तुरंग छाँडौ जाहु नतगृह आपने ॥
सुनि वचन कठिन कठोरबालकजानिभट धावत भये ॥

शरतान येकहिबाण लव हँसि हने तनु जर्जर कये ॥
महि गिरेपुनि उठि फिरेयोधा जाइ रिपुहन सोंकह्यो ॥
मुनि बालहत संग्राम सैनहि, वाजिलै रणमें रह्यो ॥
मनकोपकरिरिपु शत्रुहंता सैनलै धावत भयो ॥
रण माँझगाजतवीरबाँके, वेपलखि लाजतनयो ॥१२॥
सो०–सुनु मुनि बाल मराल, देहु अश्वनिजकोपतज ॥
पूजितुम्हैं ततकाल, करियसफल निज जन्म प्रभु॥४॥
कौन नाम नृप केहि पुरवासू ❀ फिरहु विपिन निज सैन्य प्रकासू॥
छाँडेहु बाजि हेतुकिहि ताता ❀ लिखोपत्र बाँधो यह गाता ॥
नहिं तव तनु बल पौरुष भाई ❀ छोडहु पत्र बाजि गृह जाई ॥
सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने ❀ गहहु अस्त्र अस कहि मुसकाने ॥
हमहिं प्रचारत नृप बलभारी ❀ डरपहिं सिंह बजाये तारी ॥
अस कहि धनुषबाण कर लीन्हे ❀ मुनिवरचरण विनयचितदीन्हे॥
मार्‍यो रथ सारथी तुरंगा ❀ कोटिन बाण हने सब अंगा ॥
करि मूर्छित सब कटक सँहारा ❀ खाहिं अमिष खग गिद्ध करारा॥
दोहा–एकहि एक प्रचारिकरि, हने सकल रणशूर ॥
आये सब रघुबीर पहँ, कायर करनी कूर ॥ ४७ ॥
पूछेउ सबहि भानुकुलनाथा ❀ रिपुके सकल कहो गुण गाथा ॥
सुनि बालक सुनि विकल खरारी ❀ पुनि सहसा करि कह्यो हँकारी॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❀ मुनि बालक बाँधहु बरियाई ॥
मारेहु जनि आनेहु पुरमाहीं ❀ ऋषिसुतवधवउचितभलनाहीं ॥
चली शेषसँग सैन अपारा ❀ आये तुरत समर जहँ भारा ॥
समरभूमि देखेउ भट जाई ❀ परे अवनि जनु मूर्च्छा आई ॥
लै घर जीव जाहु मुनिबालक ❀ दिनकरवंश देव द्विज पालक ॥
आँखिन ओट होहु अब ताता ❀ गावत क्रोध चढत सम गाता ॥
दोहा–सुनि लक्ष्मणके वचन वर, विहँसे बालक वीर ॥

अनुज विलोकि लजाइ घर, जाहु महारणधीर ॥४८॥
अनुज विलोकि वचन सुनि काना ❀ धनुष चढाइ गहे कर बाना ॥
वेष विलोकि बाल मुनि जानी ❀ निजकुलसमुझिकरहुँमनकानी ॥
निजसहाय शठ आनि बुलाई ❀ केवल तोहिं न हते भलाई ॥
सुनि कुश कठिन बाण संधाना ❀ काँपी पुहुमि शेष अकुलाना ॥
छूटे विशिख रहे नभ छाई ❀ बाण भानु प्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहि प्रबल लखि चले सकोपी ❀ मुरो नसनहिं रहा रथ रोपी ॥
काटहिं विशिख विशिखसनआई ❀ कौतुक करहिं विविध विधिधाई ॥
झपटि गदा लक्ष्मण तब मारी ❀ मूर्च्छित कुशहि विलोकेउभारी ॥
दोहा-मूर्च्छित कुशहि निहारिकै, धाये सब करि सोर ॥
आवतही शर उर हन्यो, पर्‌यो न सहि बल जोर ॥४९॥
मल्लयुद्ध दोउ भिरे सुखारी ❀ लरहिं सुखेन न मानहिंहारी ॥
सुमिर कौशलाधीश खरारी ❀ मार्‌यो बाण विकल लव डारी ॥
सुमिर सिया मुनिचरण सुहाये ❀ गत मूर्च्छा कुश आतुर आये ॥
धनुष बाण लै आगे धाये ❀ देखि क्रोध लक्ष्मण उर छाये ॥
शक्रजीत अरि जे शर मारे ❀ ते सब बाल काटि महि डारे ॥
दोहा-राम अनुजविस्मय विकल, देखिसबलआराति ॥
सिय त्यागे उर शोच बड़, प्राण देहुँ किहि भाँति ॥५०॥
कुश करि क्रोध विशिखसोलीन्हा ❀ ब्रह्मप्रेरि मुनिवर जो दीन्हा ॥
नाक रसातल भूतल माहीं ❀ यह शर छुटे बचै जग नाहीं ॥
मोहन बाण जगत सब जानै ❀ विष्णु विरंचि शंभु तेहि मानै ॥
मार्‌यो ताक शेष उर माहीं ❀ पर्‌यो धरणितलसुधिकछुनाहीं ॥
चली भाजि सब अनी अपारा ❀ कौशलपुर महँ परी पुकारा ॥
वरणी सकल युद्धके करनी ❀ लक्ष्मण वीर परे जिमि धरनी ॥
वयकिशोर द्वौ बल अधिकाई ❀ बालक वीर वरणि नहिं जाई ॥
दोहा-भरतजोरिकर कहनलिय, वचनअमितविलखाइ ॥
सिय त्यागी फल दीन्ह विधि, बोले श्रीरघुराइ ॥५१॥

अनुज समरमहँ तुमहियहारे ❀ साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
रहो यज्ञ रिपु देखों जाई ❀ बालक रावणके दुखदाई ॥
तीव्रवचन सुनि भरत लजाने ❀ बहुतभाँति रघुपति सनमाने ॥
प्रथमसखा सब लेहु बुलाई ❀ हनुमदादि अंगद समुदाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषन ❀ द्विविद मयंद नील कुलभूषन ॥
रिपुहि मारि की समर भगाई ❀ तातअनुज दोउ आनहु जाई ॥
माथनाइ सँग कटक विशाला ❀ चले भरत उपजी उर ज्वाला ॥
शोणित सरिता समर विलोकी ❀ डरपे वीर आशु रण रोकी ॥

दोहा–समर सीय सुत वीर दोउ, आइ गये बलवान ॥
देखि डरे सब भालु कपि, तब पूँछो हनुमान ॥ ५२ ॥

धन्य मातु पितु जिन्ह तुम जाये ❀ पुरुषयुगल गृह जाहु सुहाये ॥
समरविमुख सुनि भट खिलखाना ❀ कीन्ह क्रोध कह सुनु हनुमाना ॥
नहिं बल होइ जाहु घर भाई ❀ हतौं नखेत जु रण कदराई ॥
भाषे भरत वचन सुनि काना ❀ लेहु सँभारि बाल धनुबाना ॥
कटकटाइ कपिभालुसमूहा ❀ लीन्ह उपारि शैल तरु जूहा ॥
एकहि बार सकल मिलि मारा ❀ सकल काटि लव तिल करिडारा ॥
रिपुशर काटि निमिष इक माहीं ❀ यथामनोरथ खल मिटि जाहीं ॥
करिलव क्रोध बाण फटकारे ❀ मारे वीर निमिष महि डारे ॥

छंदतोटक ।

गजबाजि घने रथ भूमि परे, तहँ शोणित वीरवरूथ भरे ॥
लव तानि शरासन बाण भले, रिपु संगरवीर प्रचारिदले ॥
कहुँ झूमहिं कुंजरपुंज खरे, महिलोटहिं शोणितभारभरे ॥
शरलागत घाइल वीर गिरे, तहँ हाँक उठैरण धीर धरे ॥
रणवीर वरूथनभालु कटै, गिरिसे जनु मेदिनि खंडपटै ॥
रणशोणितकीसरिताउमडीअतितीक्षणधारअपारबडी ॥
तहँयोगिनिभूत पिशाचघने, भखपालक कंककरालबने ॥

छंद हरि गीतिका ॥

पल भषहिं कंक कराल जहँ तहँ गृध्रगण प्रफुलित भये ॥
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत व्याह प्रति मंगल ठये ॥
तहँ डाकिनी मन मुदित डोलहिं शाकिनी शोणित भरी ॥
दोउ कर नखैंचहिं कालिका शिव गण करत लीला खरी
अंतावरी गहि ख्याल खेलहिं पियहिं शोणित आतुरे ॥
गज खाल खैंचहिं भूत शंकर प्रेत संगर चातुरे ॥
वैताल वीर कराल करवर करी कर यक कर धरे ॥
हैभार रुधिर प्रवाह पूरन पान करत हरे हरे ॥
रघुवंश समर सराहि दुहुँ दिशि करहिं निज मन भावने॥
गज बाजि नर कपि भालु जहँ तहँ गिरमहि शुभ पावने
दोउ राम तनय प्रचारि बहु विधि निकट कोउ न आवहीं
जेत्रसित व्याकुल त्राहि त्राहि सुवीर निज गुहरावहीं १४॥

दोहा-विषम युद्ध दोउ बंधु किय, जीते कपि संग्राम ॥
आये पुनि जहँ नृप भरत, सुमिरि विधाता वाम॥५३॥

कपि भालुहि घायल सब आवाहिं ❀ बाण त्रास मन अति दुख पावहिं॥
जाम्बवंत कपिराज बुलाई ❀ अंगद हनूमान सुखदाई ॥
सब मिलि सहित निशाचर राजा ❀ धरि आनहु दोउ बाल समाजा ॥
आइ जुटे कपि भालु भवानी ❀ निज प्रभु महिमा कछु नहिं जानी॥
बोले कुश सुन बालि कुमारा ❀ तव बल विदित जान संसारा ॥
पितु हिमराइ भ्रातु परहेली ❀ सकल लाज आये तुम ठेली ॥
सो फल लेहु समर महि आजू ❀ त्यागहु सकल कलंक समाजू ॥
सुनत क्रोध अंगद उरछावा ❀ गहि गिरि एक ताहि पर धावा॥

दोहा-आवत शैल विशाल लखि, तिल सम शर हति कीन्ह॥
अंगद गर्व अपार अति, तस प्रभु उत्तर दीन्ह ॥५४॥

तमकिताहि कुशबाण चलावा ❀ अंगद नील अकाश उड़ावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपिभारी ❀ मारावाण प्रचारि प्रचारी ॥
इत उत जान कतहुँ नहिं पावै ❀ पवन वहै जिमि महि नहिं आवै ॥
छिन अकाश छिन भूतलमाहीं ❀ बोलै शरण शरण प्रभुपाहीं ॥
रह्यो गर्व श्रुहिं कृपानिधाना ❀ अग जग नाथ न मैं पहिचाना ॥
पाँच वाण वेधे कपि दोऊ ❀ दीन जानि त्यागे हरि सोऊ ॥
परे भरतके सन्मुख जाई ❀ दशा देखि कपि दशा भुलाई ॥
जाम्बवन्त हनुमान कपीशा ❀ धावत गिरि तरुलै बहु कीशा ॥

दोहा-कुश कपि देखि हँसे तबहिं, अनुजहि कह्यो बुझाइ ॥
आजु भरत जीतहु समर, भालु कपिन बिलगाइ ६५ ॥

प्रभु सुत समर कीन्ह जो करनी ❀ निगम शेष शारद नहिं वरनी ॥
चरित ताशु सुनु शैलकुमारी ❀ मारे समर शूर कपि भारी ॥
समर धीर दोउ बाल बिराजे ❀ निरखि भालु कपि मन अति लाजे ॥
ऐंच धनुष गुण छांडेउ सायक ❀ कपिपति आदि हने कपिनायक ॥
मूर्च्छित सैन परी महि माहीं ❀ बचो न कपि घाइल जो नाहीं ॥
देखि भरत सब सैनानिपाती ❀ कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
परयो मूर्छि कुश देखि रिसाना ❀ चाप चढाइ शरासन ताना ॥
मूर्छित देखि साँगि लै धावा ❀ भरत हृदय सत शूल चलावा ॥

दोहा-समरभूमि सोये भरत, लवहि लीन्ह उरलाइ ॥
सुमिरमात गुरुचरण युग, रहे समर जय पाइ ६६ ॥

आये खबर लेन चरचारी ❀ भरत सैन तिन सकल निहारी ॥
शोणित सरिता देखि डराने ❀ हय गज बहे जात रथ जाने ॥
ग्राह नाक झष जंतु घनेरे ❀ देखि दूरिते तिन मुँह फेरे ॥
लहर तरंग बीर उलथाहीं ❀ घायल परे तीर लगिजाहीं ॥
फिरेउ दूत कोशल पुर आये ❀ समाचार सब बरणि सुनाये ॥
चरचर वचन सुनत दुखपावा ❀ त्याग्यो मख निज कटक बनावा ॥
चले सकोप कृपालु उदारा ❀ आये जहाँ कटक संहारा ॥

सुनि बालक वर देखिसुहाये ❁ शर निवारि प्रभु निकट बुलाये ॥
दोहा-पूछेउबाल बुलाइ दोउ, कहो मात पितुनाम ॥
देश नाम निज कहहु सब, बड़जीतेउ संग्राम ५७ ॥
गहहु अस्त्र जनि कहहु कहानी ❁ पूछेउ स्वर्ग लोक अस जानी ॥
समरघात बहु अति कदराई ❁ छाँडि सोच अब करो लराई ॥
वंश नाम बिनु पूछे ताता ❁ हतौं न बाल मनोहर गाता ॥
माता सीय जनककी जाता ❁ बाल्मीकि मुनि पालेउताता ॥
पिता वंशनहिं जानहिं आजू ❁ लवकुश नाम विपिन करकाजू ॥
सुनि सबकथा राखि मनमाहीं ❁ बाल बिलोकि बधव भलनाहीं ॥
आवत सुभट समूह हमारे ❁ लरिहहिं तुम सन समर सुखारे ॥
अस कहि अंगद नील उठावा ❁ जाम्बवंतकपिपतिहि बुलावा ॥
छं०-कपिराज अंगद जाम्बवंतहिबोलिनिश्चरनायकं ॥
हनुमंत द्विविदमयंदनीलहि सुभट जे अतिलायकं ॥
तव हरणशूलहि पापनाशंकह्यो हँसि रघुनदंनं ॥
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खलमदगंजनं ॥
लंकेश आदिक सुभट मारे वीरजे महिमंडनं ॥
ते आज बालकविप्रसोंरण परे रिपु मदगंजनं ॥
कुलकानि अब निज जानि सुभटन शैल तरु बहुलैभले ॥
देहुह वानर जूह पर्वतडारिपुनि रण मुरिचले ॥ १५ ॥
दोहा-सावधान धनु बान ले, धाये लव बलवान ॥
सन्मुख आइ विभीषणहि, बोले बहुत रिसान ॥ ५८ ॥
सुनु शठ समरहि बंधु जुझाई ❁ शत्रुहि मिल्यो परम कदराई ॥
पिता समान बंधु बड़ तोरा ❁ त्रियातासुलैघर बर जोरा ॥
पापी मातु कहेउ कइवारा ❁ सो पती यह धर्म तुम्हारा ॥
बूडि मरहु सागर महँ जाई ❁ मरु गरु काटि अधर्म अन्याई ॥
समरभूमि मम सन्मुख आवा ❁ लाज होत नहिं गाल बजावा ॥

आँखिन आगे टरि जो जाई ❀ नाहित मृत्यु निकट खल आई॥
सुनखिसियान गदा कर लीन्ही ❀ शरहत खँड खंड सो कीन्ही ॥
सप्त बाण मारे करि क्रोधा ❀ उछरत शर लागत भट योधा॥
गिरत कोप करि शूल चलावा ❀ लवतनु तडितसमान समावा ॥
दोहा–दूरिशूल करि बंधु युग, देख दैत कर घात ॥
जाम्बवंत कपिराज नल, अंगदऊ विलखात ॥ ५९ ॥
जो गिरि तरु कपि डारहिं जाई ❀ रज सम करि तेहि देहिं उडाई॥
निज बाणन कपि घाइल कीन्हे ❀ जेहि जसउचितसोतसफलदीन्हे॥
रघुकुल तिलक प्रचारत पाछे ❀ वीर धुरीन बने अति काछे ॥
अंगद हनूमान भट भारी ❀ ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डार शैल दुइ भिरे रिसाई ❀ खड्गनहने वीर वरिआई ॥
कपिन कोप करि उर हत तेही ❀ जिमि खग मशक चाटि गज देही॥
हति दूनौ कपि भूमि गिराये ❀ जाम्बवंत कपिपति पहँ आये ॥
यहि तनु कोटिक समर लराई ❀ जीते लरे बहुत हम भाई ॥
दोहा–येबालक त्रिभुवन बली, जीतिसकै नहिं कोइ ॥
चलहुप्राणदीजिय समर, अजय जगत नहिं होइ६० ॥
आवत भालु बली भट जाना ❀ तानि शरासन शर संधाना ॥
हृदय ताकि लवमार्यो सायक ❀ योजन सात गयउ कपि नायक॥
घायल भालु लपेटे जाई ❀ मल्ल युद्ध कुश कीन्ह बनाई ॥
निज बल भालुहि अवनि पछारा ❀ दोउ कर चरण बाँधि विकरारा॥
हनुमंतहि बाँध्यो लव जाई ❀ राख्यो निकट अश्व थल आई॥
रथवारी लव छाँडेउवीरा ❀ आपु चले रघुनायक तीरा ॥
देखे रथपर श्रीपति सोये ❀ फिरे वीर निज लाजविगोये ॥
सुभग अस्त्रपर भूषण नाना ❀ लवधरि अश्व चले हनुमाना ॥
छंदगीतका ।
शुभ अस्त्र भूषण भालुकपिसँग अश्वलै सादर चले ॥

सियनिकट नायोमाथ दोउ सुत भेंटि भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपिसबनिरखि भूषण सहमिसुनिसियअति डरी
यहि बीच मुनिवर सघन आयेसिया उठि विनतीकरी
हनुमंत नीलहिछोरि बंधन त्यागि बहुसमझाइयो ॥
रिपुदवन लक्ष्मण सहित भरतहि राम रणपौढाइयो ॥
सुतकीन्ह कर्म कलंक कुल महँ मोहि विधिविधवाकरी
तजिसोच चंदन अगर आनहु जाउँ पियसँगअबजरी॥
मुनिधीर दीन्हो तनय लीन्हो संगलै सादरचले ॥
रणदेखिबालक चिह्न आनंदविहँसिमुनिवर अतिभले॥
रथ देखि हय पहिचानि प्रभुको जाइ मुनि चरणनपरे॥
उठि बैठ कौशलनाथ आरत तनय तब आगे खरे १६॥
सोरठा-सुनि मुनिवर वर बैन, जागे रघुपति भय हरन
विहँसि उघारेनैन, लीन्हे हृदय लगाइ मुनि ॥ ५ ॥
प्रभुहिं देखि मुनि अतिहरषाने ❀ बार बार निज भाग्य बखाने ॥
जेहि विधिशेषसीय वन आनी ❀ मुनिवरसो सब कथा बखानी ॥
लवकुश कथा सकल मुनिभाषी ❀ शिव विरंचि सूरज करिसाखी ॥
मिलेतनयदोउ हृदय लगाये ❀ सुधावरषि सुर सैन्य जियाये ॥
भरत आदि जागे सब भ्राता ❀ लक्ष्मण चले जहां सियमाता ॥
तात वचन मम मानहु भाई ❀ सियसन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
लक्ष्मण जाइ शीश तबनावा ❀ लवकुशकहँ बहुविधि समुझावा॥
हरिइच्छा सियमन अस आवा ❀ शेष सहस फणिआनि दिखावा॥
दोहा-जटित मणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढाइ॥
भयो अलोप पताल कहँ, महिमा किमि कहि जाइ६१
लक्ष्मण चरित देखि सब ठाढे ❀ नयन प्रवाह चलत अति गाढे ॥
सकल चरित मुनि कृपानिधाना ❀ चलन हमार सीय मन जाना ॥
तनय सहित प्रभु निजपुर आये ❀ दानदीन्हशुभ यज्ञ कराये ॥

जेहि जेहि विधि गुर आयसु दीन्हा ❀ कोटिकोटिविधिप्रभुसोइकीन्हा ॥
कोटिन धेनु धाम धनधरणी ❀ दीन्हकृपानिधि सक को वरणी ॥
भोजन विविध भाँति करवाई ❀ विदाकिये मुनि वृंद बुलाई ॥
जनकहि पूजि विदा प्रभु कीन्हा ❀ दोउ गुरु पूजिपदोदक लीन्हा ॥
आये जनकहि गुरु पहुँचाई ❀ बैठे प्रभु महिसुरन बुलाई ॥

दोहा—लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाइ ॥
एक एक विप्रनदये, हर्षित कौशलराइ ॥ ६२ ॥

गे सब मुनि सज्जन निजधामा ❀ पाये अमित अमित सुखरामा ॥
पुरवासी आवहिं सबझारी ❀ सुनि पुराण सो होहिं सुखारी ॥
जे जड चेतन जीव घनेरे ❀ सचर अचर कोशलपुर केरे ॥
तिन सुख बढ़त सुनत सुरराया ❀ कराहिं विनोद विहाय अमाया ॥
यहिविधिविपुलकाल पुनिगयऊ ❀ निजपुर गमनसु अवसर भयऊ ॥
बीती अवधि ब्रह्म जब जानी ❀ नारद मुनि सन कहा बखानी ॥
निजपुर आवन चहतखरारी ❀ धर्मराज कहँ कहहु हँकारी ॥
विनती बहु विरंचि भवभाषी ❀ चलेउधर्म रघुपति उरराखी ॥

दोहा—आयोयम रघुवीर पुर, मुनिवर वेष बनाइ ॥
तेज पुंज सुंदर तरुण, कटि मृग चर्म सुहाइ ॥ ६३ ॥

द्वारपाल लक्ष्मण न कहँ जानी ❀ बोलेउ तापस काहि मृदुवानी ॥
तुरत शेषसो खबर जनाई ❀ सुनत वचन आये रघुराई ॥
मुनिहिं निरखि प्रभुकीन्ह प्रणामा ❀ सादर उचित कहेउ विश्रामा ॥
अर्घ्य दीन्ह आसन बैठारी ❀ मुनिवर सादर गिरा उचारी ॥
सुनु सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा ❀ आयउँ मैं मुनिवरके भेषा ॥
मैं तुम रहौं अवर नहिं कोई ❀ तिसरे सुनत नाश तेहि होई ॥
सुनहि वचन तेहि देउँ शरापू ❀ शिव हरि विधि जो आवहि आपू ॥
सुनहु लषण बैठहु चलि द्वारे ❀ नहिं कोउ आव न गिरा उचारे ॥
ममकर वध आवै पुनि कोई ❀ मरिहहि सत्य मृषा नहिं होई ॥

दोहा—बोले तापस वचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ ॥

कहो सकल इतिहास मुनि, कहि पुनि नायउ माथ ६४

प्रभु इच्छा भावी बलवाना ❀ दुर्वासा मुनि आइ तुलाना ॥
मुनिहि देखि लक्ष्मण चलिआगे ❀ गये निकट विनती अनुरागे ॥
पूछा मुनिकहँ रघुकुल ईशा ❀ तहाँ जाव मैं सुनहु अहीशा ॥
जो प्रतिउत्तर करिहौ आजू ❀ भस्म करौं तव घर पुर राजू ॥
काँपे लषण सुनत मुनि बानी ❀ निजवध जानि सुचले भवानी ॥
दोउ कर जोरि कहो प्रभु पाहीं ❀ दुर्वासा मुनि आवन चाहीं ॥
तात कीन्ह अति अवगुण भारी ❀ काल कर्मगति टरै न टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुलकेतू ❀ सुन खग अपर कथा करहेतू ॥

दोहा–तुरत कहो मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ॥
चलियवेगि मुनि बोलि अब, कहा राम भगवान ६५॥

छंदगीतका ।

अति तेजपुंजविलोकिआवतउचित उठिआसनदियो॥
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदकलियो ॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेगिसो सादर करौं ॥
बहु कालक्षुधित कृपायतनविनअशन दिनअणिसैंमरौं॥
मन भाव भोजनदीन्ह रघुपति बहुत विधिविनती करी॥
संतोष पाइमुनीश अस्तुतिविनय करि आशिष भरी ॥
करि विदा मुनिवरदेखि लक्ष्मण हृदयदुखदारुणभये ॥
भरतादि अनुज समेत पुरजन ताहि छिन देखन गये ॥
पद वंदिठाढे जोरि कर दोउ वदन लखि अति काँपहीं ॥
भरिनैन पंकजनीर आरत भरतसों प्रभुभाषहीं ॥
अबगुरुहिं आनहु वेगि सादरदुखित अति आतुरचले॥
सब कथा गुरुहि सुनाइ आरतयान चढि आवत भले ॥
आये वशिष्ठ विलोकि रघुपति सकल उठिचरणनपरे॥

संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागिहैं अब तनुहरे॥
सुनि वचनशेष विचारि निजउर रामबिन धृग जीवनो॥
गहि चरण सरयूतीर आये देखि जल शुभपावनो॥११॥
दोहा-कटिप्रयंत जल मध्यमें, कीन्हो ध्यान अखंड॥
योग यत्न करिराम कहि, फोर्यो निज ब्रह्मंड॥६६॥
राम धाम पहुँचे लषण, तुरत चरित मन भाग॥
सुनि व्याकुल रघुपतिभरत, मिटेसकल अनुराग६७॥
मैं नहिं तजो तजो मोहिं ताता ❀ करु सोइ यतनु देखौं भ्राता॥
करहु भरत पुर राजसुखारी ❀ सुनत गिरे महि व्याकुल भारी॥
चहत चलन अबप्राण गुसाईं ❀क्षण लक्ष्मण बिनु रहिनसकाईं॥
तात चलहु कहि तनय बुलाये ❀ कीन्ह तिलक बहु नीतिशिखाये॥
भरत तनय सुशीलवै नामा ❀ दक्षिण नगर दीन्ह तेहि रामा॥
दूसर पुष्कर जेहि जगजाना ❀ पुहकर नगर दीन्ह भगवाना॥
प्रथम दैत्य हति तहाँ बसाये ❀ दीन्ह कृपानिधि जेहि मन भाये॥
शुचितनु चित्रांगद रणधीरा ❀ लक्ष्मण तनय सुभग गंभीरा॥
दोहा-पश्चिम देश पिशाच बहु, जीतहते संग्राम॥
तहँराखे सुत सरिस दोउ, विलगविलग कहि नाम ६८
अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी ❀ सिखै नीति पुनि कह्यो निहोरी॥
भ्रातन पर सुत दया करेहू ❀ राजनीति उर सादर धरेहू॥
उत्तर नगरसु उत्तर दूरी ❀ सुख संपदा जहाँ अति भूरी॥
लवकहँ दीन्ह कृपानिधि सोई ❀ पट तरि अवध नगर नहिं कोई॥
आठ सहस रथ तुरग पचासा ❀ दश सहस्र गज जेमद आशा॥
लजहिं इन्द्रगज तिनहिं विलोकी ❀ दिगपालन निज प्रभुतारोकी॥
यक यक सुतन दीन्ह रघुराया ❀ बरणि कोसकै सुनौ खगराया॥
धनदकोटि सम भरे भँडारा ❀ यथा योग करि भाग उदारा॥
दोहा-सकल तनयपरतोषकरि, बिदाकीन्हरघुबीर॥
विप्रवृंद याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर॥६९॥

धेनु बसन धरणी धन धामा ❀ दीन्ह कीन्ह परिपूरणकामा ॥
याचक सबै अवधके दासी ❀ बोले प्रभु सुनु अज अविनासी॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी ❀ अंतकाल अब होत अभागी ॥
जो जनजानिलेहु प्रभु साथा ❀ करहु कृपानिधि सबहि सनाथा॥
सुनि सनेह मय वचन सुहाये ❀ चलहु कह्यो प्रभु अति सुखपाये॥
समय जानि कपिपति तब आवा ❀ अंगद राज दीन्ह सुखपावा ॥
जाम्बवंत लंकापति वीरा ❀ नल अरु नील द्विविद रणधीरा॥
कोटिकीश जे सुर औतारी ❀ आये जहाँ कृपालु खरारी ॥

सोरठा-कहप्रभु सुनुलंकेश, राज करहु शत कल्पतुम॥
वचन अचल मन शेष, अंत अमरपुर तात तोहिं॥६९॥

जाम्बवंत सुनु मम मृदुवानी ❀ रहु द्वापर भरि अस जियजानी ॥
कृष्ण रूप धरि मिलिहों तोहीं ❀ समर भूमि तब जानिसिमोहीं ॥
सब कहँ सब विधि धीरज दीन्हा ❀ आपु गवन सरयूतट कीन्हा ॥
दक्षिण भरत वाम रिपुदमनू ❀ पुरवासी सब निजकुल तरनू ॥
अग्नि वेद गायत्री छंदा ❀ धरि निजरूप चले सुरवृंदा ॥
पीतांबर पट सुंदर धारी ❀ जड चेतन चर अचर सुखारी ॥
प्रथम रूप धरि सुंदर आई ❀ जस प्रभु कीन्ह सो सुनु खगराई॥
समयजानि तब पवनकुमारा ❀ बोले वचन कृपालु उदारा ॥

दोहा-चिरंजीव सुतरहहुतुम, जबलगिरविशाशिशेष ॥
तुहिसेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश॥७०॥

चतुरानन पहँ धर्म सिधाये ❀ सरयूतीर जगतपति आये ॥
चले देव अज भव सनकादी ❀ जे मुनि अपर अलोक अनादी॥
कोटिन रथ वाहन विधिनाना ❀ अरुण अकाश न जाइ बखाना॥
नाना सुर जय जय धुनि होई ❀ पावहिं सुर याचहिं जोइ जोई ॥
देखिनाक रथमग पर छाही ❀ जिमिगिरि कृमिनभपंथ उडाही॥
करिपुरसजग देव तनुधारी ❀ पाइ चतुरभुज रूप सुखारी ॥
चढि विमान प्रभु धामसिधाये ❀ सकल अमर पति कहँ सकुचाये॥
सुमन वृष्टि नभ होइ अपारा ❀ होइ नाद विधि वेद उचारा ॥

छंदगीतका।

उच्चरत वेद भे चक्कृत भरत कृपालु हँसि सादरलयो॥
जलपरसिकरि रिपुदवन सादर पवनराजा भयो॥
कपि आदि यूथप सखा प्रभुके सकल निजलोकन गये
सुग्रीव प्रभु पद वंदि बारहिबार रवि मंडलभये॥
सुरसहित दिनकर वंश भूषण आनि जल आश्रित रहे॥
तेहिसमय बोलि अनादि प्रभुजू वचन पावन मयकहे॥
यकमास रहियहितीर तुम मम पुरी जीवजे आवहीं॥
तेहि सुभग देहु विमान पद निर्वान जो मम पावहीं॥
यह परम पावन भूमिसरयू येक पलजे आवहीं॥
तरिजात सुरपुर सकल सादर सर्वदा तेहि पावहीं॥
ये जन्म भरि मम संगवासी रहे निशि वासरसदा॥
ते तुरत आनहु सहित आदर सुनहु मम वाणी मुदा॥
कहि वचन अंतरध्यान प्रभुज्यों दामिनी घन सोहयो॥
नभजयतिजयजयकारजयमयजपतिजपतानमहयो॥
यहि भाँति रघुपति चर चराचर सकललै निजधामको
सो कह्यो उमहि कृपायतन उरराखि सादर रामको॥

दोहा—गिरिजा संत समागम, सम न लाभ कछु आन॥
बिन हरि कृपा न होइसो, गावहिं वेदपुरान॥ ७१॥
यहि विध सब संवाद सुनि, प्रफुलितगरुड शरीर॥
बारबार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर॥७२॥
गये गरुड वैकुंठ इमि, भयो सुभग संवाद॥
अश्वमेधशोध्यो सकल, द्विज ज्वाला प्रसाद ७३

इति श्रीरामचरित्रे लवकुश जन्मकथा रामधाम गमने गुसाईं तुलसीदास कृते रामाश्वमेध भवसागर निवारण वंश उदारन मुक्तभान भाषा अष्टमकाण्डं समाप्तम्॥

॥ इति रामाश्वमेधलवकुशकाण्डंसमाप्तम्॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

श्रीरामचंद्रके चतुर्दश वर्ष वनवासका

तिथि पत्रम् ॥

दोहा-सुमिरि रामसियचरणशुभ, सकल सुमंगलदानि
अग्निवेश मत कहौं कछु, तिथि वनवास बखानि ॥१॥

चैतशुक्लनवमी जगजानी ❋ तेहिदिन जन्म लियो सुखदानी॥
वर्ष चतुर्दश चारहु भाई ❋ बालचरित्र किये सुखदाई ॥
वर्षपंचदश माहिं सुहाये ❋ विश्वामित्र बुलावन आये ॥
पंद्रहदिवस संग मुनिनाथा ❋ काज सँवारे श्रीरघुनाथा ॥
पुनि प्रभु मिथिलापुर जब आये ❋ जनकरायने दर्शन पाये ॥
धनुषभंगकर जय जिमि पाई ❋ पन्द्रहदिवस रहे रघुराई ॥
हिमऋतु अगहनमास सुहावन ❋ शुक्लपक्ष पांचैं तिथि पावन ॥
मीनलग्न वृश्चिकके भानू ❋ भयो व्याह आनंद निधानू ॥
वर्ष पंचदशके भगवाना ❋ सीय वर्षछःकी जगजाना ॥

दोहा-करि विवाह आये घरहिं, मंगल मोद अपार ॥
द्वादशवर्ष विलासयुत, रहे कृपा आगार ॥ २ ॥

वर्ष सताइसयें रघुनाथा ❋ कीन गवन वन लक्ष्मण साथा ॥
तीन दिवस बीते जलपाना ❋ कियो राम सीता जगजाना ॥
चौथे दिवस लषण रघुराई ❋ शृंगवेरपुर फल कछु खाई ॥
पँचयें दिन श्रीकृपानिधाना ❋ सुरसरि उतरि चले भगवाना ॥
भरद्वाज आश्रम सुखदाई ❋ रहे तहां यक दिन रघुराई ॥
वाल्मीकिसे मिल सुखपाई ❋ चित्रकूटमें कुटी बनाई ॥
तहँ जयन्त सिखदीन्ह रमेशा ❋ वासकीन्ह कछु दिन अवधेशा॥

दोहा-चित्रकूटसे चल बहुरि, वध विराध कर कीन्ह ॥
मिल सुतीक्ष्ण शरभंगसे, ऋषि अगस्त्य सुखदीन्ह ३॥

इहिविधि द्वादशवर्ष बिताये ❀ पुनि प्रभु पंचवटीमें आये ॥
वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा ❀ खरदूषणवध कीन्ह रमेशा ॥
माघशुक्ल आठैं जब आई ❀ दिन मध्याह्न दशानन जाई ॥
छलकरि हरी सीय महरानी ❀ लेगयो निज लंका रजधानी ॥
पुनि जटायुको कर उद्धारा ❀ दुष्ट कबन्ध निशाचर मारा ॥
शबरिहि गतिदे पंचममासा ❀ मिलि अषाढ सुग्रीव हुलासा ॥
वालिहि मार मास तहँ चारी ❀ रहे प्रवर्षण पर असुरारी ॥
पुनि सीतहि खोजन कहँ वानर ❀ जेहिविधि चले बुद्धिबलआगर॥

दोहा-मार्गशीर्ष कृष्णा शुभग, हरि वासर हनुमान ॥
सिंधुलांघि लंकहि चले, महाधीर बलवान ॥ ४ ॥

त्रयोदशी ढूंढा हनुमाना ❀ पुनि अशोकवन माहिं समाना॥
जनकसुताके दर्शन पाई ❀ मुद्री प्रभुकी दीन्ह गहाई ॥
पुनि अशोकवन सकल उजारा ❀ चौदशको अक्षय कहुँ मारा ॥
लंक दाहकर सियतट आई ❀ चूडामणिले , चले सुहाई ॥
वारिधि लांघ सेननिज आये ❀ समाचार सुन सब हर्षाये ॥
चले तहांते सब सुखपाई ❀ पांचदिवस मग माहिं बिताई ॥
अघहन शुक्लाछठ सुखदाई ❀ किष्किधा सब पहुँचे आई ॥
शुक्रवारसप्तमी सुहाई ❀ जनकसुताकी सुधि प्रभुपाई ॥

दोहा-अघहनशुक्ला अष्टमी, सेनसहित भगवान ॥
उत्तराफाल्गुनि नखतमें, लंकहि कीन पयान ॥ ५ ॥

सातदिवस मगमाहिं बिताये ❀ पूनोको वारिधितट आये ॥
पोष तृतीयातक सुखराशा ❀ तीनदिवस तहँ कीन निवासा ॥
पोष चतुर्थीकृष्ण सुहाई ❀ आये शरण विभीषण धाई ॥
पोष अष्टमीतक रघुराई ❀ विनय कीन सागर तट आई ॥
नवमी विप्ररूप धरिसागर ❀ आये शरण रामनयनागर ॥
दशमीपोष सेतु दृढ भारी ❀ दशयोजन कपि रच्यो विचारी॥
एकादशि कहँ योजनवीसा ❀ बारस तीस बँध्यो वारीशा ॥

चालिसयोजन तेरसवासर ❀ रच्यो सेतु नल नील उजागर ॥
दशयोजन आयत रच दीन्हा ❀ शतयोजन विशाल कपि कीन्हा ॥
दोहा-चौदशसे द्वितियातलक, उतरे सागर पार ॥
दशमीतक गढ लंक कहँ, घेरयो सहित विचार ॥ ६ ॥
पौष शुक्ल हरिवासर आई ❀ शुकसारन कपिसेन दिखाई ॥
द्वादशिमें प्रभु यह मत भावा ❀ चारि भाग निज कटक बनावा ॥
छत्र मुकुट रावणके जोई ❀ काटे प्रभु ताही दिन सोई ॥
सैन्य दशानन की दिन तीनी ❀ भइ सन्नद्ध युद्ध रंगभीनी ॥
माघकृष्ण प्रतिपद जब आई ❀ अंगद फिरि आये समझाई ॥
द्वितियासे नवमी तक आई ❀ दोउदल कीन्ह युद्ध हरषाई ॥
नागफांस घननाद चलाई ❀ दशमी गरुड काटगये आई ॥
द्वादशितक कर युद्ध अपारा ❀ मरयो धूम्रलोचन बलभारा ॥
दोहा-मावसतक कपिसैन ने, मारे दैत्यसुधीर ॥
माघशुक्लकी चौथतक, लरयो दशाननवीर ॥ ७ ॥
पांचैसे आठैं तक जाई ❀ कुम्भकर्ण कहँ दियो जगाई ॥
नवमीसे चौदसतक आई ❀ लरयो मृत्यु रघुपतिसे पाई ॥
माघशुक्ल पूनोदिन पावन ❀ लरयो नशोच ग्रसित रह्यो रावन ॥
फाल्गुण पांचैतक भगवाना ❀ कियो नरान्तक वध बलवाना ॥
पुनि आठैतक दैत्य अपारा ❀ मारे श्रीरघुनाथ उदारा ॥
कुंभ निकुंभ दैत्य बलवाना ❀ तेरसतक मारे भगवाना ॥
पुनि शुक्ला द्वितिया जब आई ❀ मारो जम्बुकदैत्य रघुराई ॥
फागुन शिवतेरस घनदाना ❀ मरो भयो देवन अहलादा ॥
चौदसमें शोकित दशभाला ❀ युद्धकियो नहिं दुःख विशाला ॥
दोहा-फाल्गुणशुक्ला पूर्णिमा, लरँन चल्यो दशशीश ॥
मारे सब सेनापती, आठैं तक जगदीश ॥ ८ ॥
चैतकृष्ण नवमी जब आई ❀ मारीशक्ति लषणके जाई ॥
पुनि हनुमान सजीवन लाये ❀ मूर्च्छित लषण चेत तब पाये ॥

दशमी दिवस युद्ध अतिभारी ❀ कीनो रावणसे असुरारी ॥
मातलि हरिवासर कहँ आयो ❀ रघुपति को रथ प्रभुहित लायो॥
द्वादशि रथारूढ भगवाना ❀ आये सेनसहित मैदाना ॥
तेहि दिनसे अष्टादश वासर ❀ रावणसे भयो युद्ध भयंकर ॥
चैत्रशुक्लचौदस जब आई ❀ मरो दशानन जगदुखदाई ॥
पूनोंके दिन देह दशानन ❀ दाह विभीषण कियो दुखितमन॥

दोहा-प्रतिपद कहँ वैशाखकी, इन्द्र अमिय वरषाय॥
भालु कीश जे रणपरे, तिनको दियो जिवाय ॥ ९ ॥

पुनि द्वितियाके दिन भगवाना ❀ राज्य विभीषण दीनसुजाना ॥
तृतियाको श्रीजनकदुलारी ❀ आय अनलमें प्रविश सुखारी ॥
दिनदश और मास दशचारी ❀ रहीं लंकमें सीय दुखारी ॥
निकसि अनलते अवनिकुमारी ❀ भयो कपिनमन अचरज भारी॥
चौथ कपिनसँग बैठ विमाना ❀ कीन्ह अवधकहँ राम पयाना ॥
पांचै तिथी प्रयाग अन्हाई ❀ छठको मिले भरतसन आई ॥
इहिविधि वर्ष चतुर्दश बीते ❀ आये रामभये मनचीते ॥
कृष्णसप्तमी माधवमासा ❀ सबके मन अति भयो हुलासा ॥

दोहा-इकतालिसवें वर्षमें, रामचंद्र भगवान ॥
आयुः बत्तिस वर्षकी, जनकसुता गुणखान ॥ १० ॥

तेहि दिन सिंहासन भगवाना ❀ बैठे राजतिलक जगजाना ॥
भादोंकी नवमी जब आई ❀ गर्भवती भइ सीय सुहाई ॥
चैत्र द्वादशी शुक्लदुखारी ❀ आज्ञा लषण राम उरधारी ॥
जनकसुताको त्यागो जाई ❀ आश्रम वाल्मीकि मुनिराई ॥
वाल्मीकि तहँ रक्षा कीन्ही ❀ पुत्रीसम सीतहि तिन्ह लीन्ही ॥
नवमीमास अषाढ मनोहर ❀ जन्मे लव कुश दोउ सुन्दरवर ॥
नौसे छयासठ वर्ष दुखारी ❀ रहीं विपिनमहँ जनकदुलारी ॥
ग्यारहसहस्र वर्ष भगवाना ❀ कीन्हो राजधर्म विधिनाना ॥
पुनि लवकुश कहँ दीन्हेउ राजू ❀ गये लोक साकेत समाजू ॥

दोहा-अग्निवेशको सारले, द्विज ज्वालापरसाद ॥
वर्णौं रामचरित्र कछु, जेहि सुनि मिटहिं विषाद ॥ ११ ॥
श्रीगुरु ज्वालानाथ के, चरणकमल मनलाय ॥
वर्णौं तिथि वनवासकी, सुनि संशय भ्रमजाय ॥ १२ ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज सुखदान ॥
तिनकहँ दीन्ही भेंट यह, याहि न छापै आन ॥ १३ ॥

इति श्रीरामचरित्रवनवासतिथिपत्रं श्रीयुत मिश्रसुखानंद
सूनु पण्डित ज्वालाप्रसादविरचितं सम्पूर्णम्

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ बरवारामायण प्रारंभः

बरवाछंद ।

केशमुकुत सखि मरकत मणिमय होत ॥ हाथलेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १ ॥ समसुबरन सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सीयअंग सखि कोमल कनक कठोर ॥२॥ सियमुख शरदकमल जिमि किमिकहिजाइ निशिमलीन वह निशिदिन यह विगसाइ ॥ ३ ॥ बड़े नयन कट भृकुटी भालविशाल ॥ तुलसी मोहत मनहि मनोहर बाल ॥ ४ ॥ चंपकहरवा अँगमिलि अधिक सोहाइ ॥ जानिपरे सियहियरे जव कुँभिलाइ ॥५॥ सियअतुअ अंगरंगमिलि अधिक उदोत ॥ हारवेलि पहिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरलस्वभाव ॥ रामनीतरत काम कहाँ यह पाव ॥ ७ ॥ कुंकुमतिलक भाल श्रुति कुंडल लोल ॥ काकपक्षमिलि सखि कस लसत कपोल ॥ ८ ॥ भालतिलक शरसोहत भौंहकमान ॥ मुख अनुहरिया केवल चंद्र समान ॥ ९ ॥ तुलसी बंकविलोकनि मृदु मुसकानि ॥ कस प्रभु नैन कमल अस कहौं बखानि ॥१०॥ कामरूपसम तुलसीरामस्वरूप ॥ कोकवि सम सरकै परै भवकूप ॥ ११ ॥ चढत दशा यह उतरत जात निदान ॥ कहउँ नकबहूं करकस भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्य नमकृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृपमुख भये मलीन ॥ १३ ॥कमठपीठ धनुसजनी कठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि एतोरिहि कहब महेश ॥१४॥ नृप निराशभये निरखत नगर उदास ॥ धनुषतोरि हरि सबकर हरेउहरास ॥ १५ ॥ काघूँघट मुखमूँदहु नवला नारि ॥ चांदस्वर्गपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गरबकरहु रघुनंदन जनि मनमाँह ॥ देखहु आपनिमूरति सियके छाँह ॥ १७ ॥ उठी सखी हँसि मिसकरि कहि मृदुबैन ॥ सिय रघुवरके भये उनींदे नैन ॥ १८ ॥ सौंकधनुष हितासिखन सकुचि प्रभु लीन ॥ मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसि दीन ॥ १९ इति बरवै रामायणे बालकांड समाप्तः ॥ १ ॥ सातदिवस भये साजत सकल बनाउ ॥

कापूछहु सुठि राउर सरलस्वभाउ ॥ २० राजभवनसुख विलसत सियसँग राम ॥ विपिन चले तजिराज्य सुविधिवड़वाम ॥ २१ ॥ कोउकह नरनारायण हरि हर कोउ ॥ कोउकह विहरत वनमधु मनसिज दोउ ॥ २२ ॥ तुलसी भइमति विथकित करि अनुमान ॥ राम लषणके रूप न देखेउ आन ॥ २३ ॥ तुलसी जनि पगधरहु गंगमहँ साँच ॥ निगा नांगकरि नितहि नचाइहि नाच ॥ २४ ॥ सजलकठौता करगहि कहत निषाद ॥ चढहु नाथ पगधोइ करहु जनिवाद ॥ ॥ २५ ॥ कमलकंटकित सजनी कोमल पाइ ॥ निशि मलीन यह प्रफुलित निति दरशाइ ॥ २६ ॥ (वाल्मीकिवचन) हैंभुजकर हरि रघुवर सुंदरवेष ॥ एकजीभकर लक्ष्मण दूसरशेष ॥ २७ ॥ इति श्रीवरवै रामायणे अयोध्याकांड समाप्त ॥ २ ॥ वेदनाम कहि अँगुरिन खंडि अकाश ॥ पठयो शूर्पणखाहि लषणके पास ॥ २८ ॥ हेम लता सियमूरति मृदु मुसुकाइ ॥ हेमहरिणकहँ दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९॥ जटामुकुट करशर धनुसंग मरीच ॥ चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु वीच ॥ ३० ॥ (रामवाक्य) कनकसलाक कलाशशि दीप सिखाउ ॥ तारासिय कहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥ ॥ ३१ ॥ सीयवरणसम केतकि अतिहिय हारि ॥ किहेसि भँवरकर हरवा हृदय विदारि ॥ ३२ शीतलता शशिकीरहि सवजग छाइ ॥ अगिनि तापहै हमकहँ सचरत आइ ॥ ३३ ॥ इति श्रीवरवैरामायणे आरण्यकांड समाप्त ॥ ३ ॥ श्यामगौर दोउमूरति लछमनराम ॥ इनते भइ सितकीरति अतिअभिराम ३४ ॥ कुजनपालगुण वर्जित अकुलअनाथ ॥ कहहु कृपानिधि राउर कस गुणनाथ ॥ ३५ ॥ इति श्रीवरवैरामायण किष्किंधाकांड समाप्त ॥ ४ ॥ विरहआगि उर ऊपर जवअधिकाइ ॥ एअँखियाँ दोउ वैरिनि देहिं बुझाइ ॥३६॥ डह कुन है उजियरिया निशिनहिं घाम ॥ जगतजरत अस लागुमोहिं विनुराम ॥ ३७ ॥ अब जीवनकी है कपि आश न कोइ ॥ कनगुरियाकै मुँदरी कंकन होइ ॥ ३८ ॥ राम सुयश कर चहुँ युग होत प्रचार ॥ असुरनकहँ लखि लागत जगअँधियार ॥ ३९ ॥ (कपि

वाक्य) सियवियोग दुख केहिविधि कहेउँ बखानि ॥ फूलबानते मन्सिज बेधत आनि ॥ ४० ॥ शरदचाँदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहि जोरिकर विनवति कुलगुरु जानि ॥ ४१ ॥ इति श्रीवरवै रामायण सुंदरकांड समाप्त ॥ ५ ॥ विविध वाहनी विलसत सहित अनंत ॥ जलधिसरिस कोकहै रामभगवंत ॥ ४२ ॥ इति श्रीवरवैरामायण लंकाकांड समाप्त ॥ ६ ॥ चित्रकूट पयतीरसो सुरतरुवास ॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥४३॥ पय नहाइ फलखाहु परिहरिय आस॥सीय रामपद सुमिरहु तुलसीदास॥४४॥ स्वारथ परमारथ हित एक उपाय॥ सीय रामपद तुलसी प्रेमबढाय॥४५॥कालकराल विलोकहु होइ सचेत॥रामनाम जपु तुलसी प्रीतिसमेत ॥४६॥ संकटशोच विमोचन मंगलगेह ॥ तुलसी रामनामपर करि असनेह ॥ ४७ ॥ कलि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइआखर हिय हितु जासु ॥ रामलषणसम तुलसी सिखव न आसु ॥ ४९ ॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकर नाम ॥ तुलसी जेहि नसोहाइ ताहि विधिवाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्याण नीक परलोक ॥ ५१ ॥ तप तीरथ मख दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक राम जपु तुलसीदास ॥ ५२ ॥ महिमा रामनामकी जानमहेश ॥ देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि तुलसी नाम प्रभाव ॥ उलटा जपत कोल ते भये ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलशयोनि जिय जानेउ नाम प्रतापु ॥ कौतुकसागर शोषेउ करि जिय चापु ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरतराम सुलभ फलचारि ॥ वेद पुराण पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसी नेह निबाहु ॥ यहिते अधिक न यहिसम जीवन लाहु ॥ ५७ ॥ दोषदुरित दुखदारिद दाहक नाम ॥ सकलसुमंगलदायक तुलसी राम ॥ ५८ ॥ केहिगनती महँ गनती जस बनघास ॥ राम जपत भये तुलसी तुलसीदास ॥ ५९ ॥ आगम निगम पुराण कहत करिलीक ॥ तुलसी नामराम कर सुमिरण नीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नामरामकर सेवहु

साधु ॥ तुलसी उतरि जाहु भवउदधि अगाधु ॥ ६१ ॥ कामधेनु हरिनाम कामतरु राम ॥ तुलसी सुलभ चारिफल सुमिरत नाम ॥६२॥ तुलसी कहत सुनतसब समुझत कोय ॥ बडेभाग्य अनुराग रामसन होय ॥ ६३ ॥ एकहि एक सिखावत जपत न आप ॥ तुलसी राम प्रेमकर बाधक पाप ॥ ६४ ॥ मरत कहत सब सबकहँ सुमिरहु राम ॥ तुलसी अबनहिं जपत समुझि परिणाम ॥ ६५ ॥ तुलसी राम नाम जपु आलस छाँडु ॥ रामविमुख कलिकाल को भयो न भाँडु ६६॥ तुलसी रामनामसम मित्र नआन ॥ जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान ॥ ६७ ॥ नामभरोस नामबल नामसनेहु ॥ जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥६८॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहिदेहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिब नामसनेहु ॥ ६९ ॥ इति श्री गोसाईं तुलसी दासजीविरचितं बरवैरामायण उत्तरकांडसमाप्तम् ॥७॥ शुभम्भवतु।

इति बरवैरामायणं समाप्तम् ॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) प्रेस–(बंबई)

अवस्था४–जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, इनके विभु ये हैं; जाग्रत्के विश्व, स्वप्नके तैजस, सुषुप्तिके प्राज्ञ, तुरीय के ब्रह्म.

अविद्या–जीवोंकी अल्पज्ञता.

अंग–वेदके अंग छः हैं; शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, छंद, ज्योतिष, वेदके पढनेकी विधिको शिक्षा कहते हैं, कल्प उसे कहतेहैं जिसमें सब कर्मोंके करनेकी रीति लिखीहै, व्याकरण उसे कहतेहैं जिससे शब्दोंकी शुद्धताका ज्ञान हो, जिसमें वेदके कठिन शब्दोंका अर्थ लिखाहुवाहै उसे निरुक्ति कहतेहैं, जिसमें अक्षर मात्रा वृत्तका ज्ञान हो उसे छंद कहतेहैं.

आश्रम–चार आश्रमहैं; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास.

आकर–चारहैं, पिंडज अर्थात् जो देहके साथ उत्पन्न होतेहैं जैसे मनुष्य, पशु आदि; अंडज जो अंडेसे होतेहैं जैसे पक्षी, सांप, आदि; स्वेदज जो पसीनेसे उत्पन्न होतेहैं जैसे चीलर, ढील आदि; उद्भिज्जजो पृथ्वीको फोडके होतेहैं जैसे वृक्ष आदि.

आभरण–बारहहैं नूपुर, किंकिणी, हार, चूरी, मुँदरी, कंकन, बाजूबंद, कंठश्री, बेसर, विरिया, टीका, शिरफूल.

उपवेद–सामवेदका गन्धर्व वेद अर्थात् संगीतशास्त्र, ऋग्वेदका उपवेद आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक, यजुर्वेदका उपवेद धनुर्वेद, अथर्ववेदका उपवेद शिल्पविद्या वा वास्तु

ऋतुछः हैं-वसंत-चैत, वैशाख । ग्रीष्म-जेठ, आषाढ । पावस-श्रावण, भाद्रपद । शरद-क्वार, कार्तिक । हेमन्त-अगहन, पूष । शिशिर-माघ, फाल्गुन.

कल्प-चारोंयुगको चौकडी कहतेहैं और हजार चौकडीका एक कल्प होताहै.

गुण तीनहैं–सत, रज, तम, राजाके चार गुण साम, दाम, दंड, भेद.

चतुरंगिनीसेना–जिस सेनाके चार अंगहैं हाथी, घोडा, रथ, पैदल.

तत्त्व–पांचहैं; पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश.

त्रिताप–तीन प्रकारका दुःख; अध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक.

त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु महेश.

त्रिविधकर्म–संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण.

दिक्पाल–पूर्वदिशाके इंद्र, आग्नेयके अग्नि, दक्षिणके यम, नैर्ऋतके नैऋत. पश्चिमके वरुण, वायव्यके वायु, उत्तरके कुबेर, ईशानके ईशान.

पुराण–जिसमें पांचवस्तुओंका वर्णन हो सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वन्तर, वंश, वंशानुचरित–अठारहहैं.

भक्त–चारप्रकारके होतेहैं आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, विज्ञाननिवास.

भक्ति–नवप्रकारकी है श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरणसेवा, अर्चन. वंदन. आत्मनिवेदन, दासता, सख्य.।

युग–चारहैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग.

योनि–चौरासीलाख योनिहैं नवलाख जलचर, सत्ताईसलाख स्थावर, ग्यारहलाख कृमि, दशलाख पक्षी, चौपाये तेईसलाख, मनुष्य चारलाख.

राम–तीनहैं; परशुराम, बलराम, श्रीरामचन्द्र.

विद्या–ईश्वरकी सर्वज्ञताको विद्या कहतेहैं

शास्त्र–छःहैं वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक.

शृंगार–सोलह प्रकारका शृंगारहै, अंगशुचि, मज्जन, अमलवसन पहरना, जावक, केश सँवारना, माँगमें सेंदुर लगाना, भालमें तिलक, चिबुकपर तिल बनाना, मेहँदी लगाना, अरगजा अंगमें लगाना, भूषण, पुष्प, सुगंध लगाना, मुखराग दाँतरंगना, अधरराग, काजर लगाना.

सप्तऋषि-कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, जमदग्नि, गौतम.

समीर–शीतल, मंद, सुगंध.

सिद्धि८हैं अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व.

अक्षौहिणीकी संख्याप्रमाण वर्णनम् ।

संज्ञा.	रथ.	हाथी.	अश्व.	पदचर.	जोड.
पत्ती	१	१	३	५	१०
सेनामुख	३	३	९	१५	३०
गुल्म	९	९	२७	४५	९०
गुण	२७	२७	८७	१३५	२७०
वाहनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
पृतना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
चमू	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
[illegible]नी	२१८१	२१८१	६५६१	१०९३५	२१८७०
अक्षौहिणी	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००

॥ श्रीः ॥

विक्रय्यपुस्तकें.

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-रामायण।

नाम.	की. रु. आ.
श्रीरामचरितमानस—(गोस्वामि तुलसीदासजीकी हस्तलिखित प्रतिसे चतुर्थावृत्ति केसरियानिवासी कोदौरामजीके द्वारा प्राप्तकर मोटे अक्षरोंमें छापी है)	३–०
श्रीरामचरितमानस उत्तम छोटा गुटका (पाकिटबुक) सुनेहरी जिल्दका	०–१०
" सादी जिल्दका	०–८
तुलसीकृत रामायण सटीक लवकुशकांडसहित प्रत्येक दोहा चौपाईका अर्थ पंडित ज्वालाप्रसादजी कृत भाषाटीका अतिउत्तम संपूर्ण क्षेपकोंके अर्थ और माहात्म्य तुलसीदासजीका जीवनचरित्र व गूढ़ार्थ व रामवनवासतिथिपत्र, कोष और हनुमान्जीका चित्र व सूर्यवंशका वृक्षसहित सुन्दर जिल्द	८–०
तथा रफ् कागजकी	७–०
तुलसीकृत रामायण सटीक ऊपरके सर्व अलंकारों समेत सुन्दर छोटे अक्षरमें छपी तयार है	५–०
तथा रफ्	४–०
तुलसीकृतरामायण बडे टाईपका अतिउत्तम मये श्लोकार्थ, गूढ़ार्थ, प्रसंगार्थ छन्दार्थ व अष्टम लवकुशकांड व इतिहास व तुलसीदासजीका जीवन चरित्र और पंचीकरण, रामचंद्रजीके वनवासका तिथिपत्र व दृष्टांत व बरवारामायणसहित ३८०० टिप्पणी के जिसमें संपूर्ण क्षेपक और कोषभी है ग्लेज	५–०
तथा रफ् कागजका	४–०

नाम.	की. रु. आ.
तुलसीकृतरामायण क्षेपकसह मझले टाइपका अति उत्तम मये श्लोकार्थ व गूढ़ार्थ व छन्दार्थ व प्रसंगार्थ व अष्टम लवकुश कांड व इतिहास व दृष्टांत व रामवनवास तिथिपत्र व तुलसीदासका जीवनचरित्र व बरवारामायण व माहात्म्य व हनुमान्जीका बड़ा चित्र व सूर्यवंशकावृक्ष सहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं ग्लेज	२–४
तथा रफ् कागजका	१–८
तुलसीकृतरामायण बारीक गुटका श्लोकार्थ, गूढ़ार्थ प्रसंगार्थ छन्दार्थ व अष्टम लवकुशकांड व इतिहास व दृष्टांत व रामवनवास तिथिपत्र व बरवारामायण व माहात्म्यसहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं देशाटनकरनेवालोंको अत्यंत उपयोगीहै थोड़े दाममें चोखाकाम ग्लेज कागजका चित्रितपुट्ठा......................	१–२
तथा रफ् कागजका	०–१४
तुलसीदासजी रचित षोडश रामायण अर्थात् १६ काव्य एकत्र उत्तम विलायतीकपड़ेकीजिल्द......................	२–०
तुलसीकृतरामायण सुंदरकाण्ड	०–२
" किष्किंधाकाण्ड	०–२
दोहावलीरामायण	०–४
विनयपत्रिकातुलसीदासकृत ग्लेज कागज	०–६
विनयपत्रिका सटीक	२–०
कवित्तरामायण	०–४
कवित्तरामायण सटीक	१–०